राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—फतहसिंह, एम० ए०, डी० लिट्०

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १०३

कविराजा ठाकुर बुधसिंह-कृत

देवीचरित

प्रथम भाग

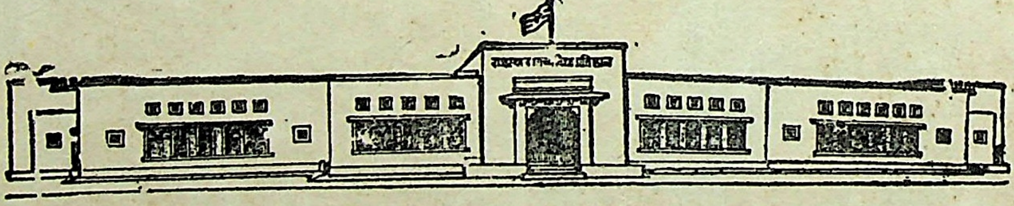

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

जोधपुर (राज०)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—फतहसिंह, एम० ए०, डी० लिट्०

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १०३

कविराजा ठाकुर बुधसिंह-कृत

देवीचरित

प्रथम भाग

सम्पादक

श्री हुक्मचन्द चतुर्वेदी, एम० ए०

... क्र. 9.0.1
... दिनांक
3 12-...
...
... जोधपुर

प्रकाशक

राजस्थान राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

१९६८ ई०

प्रथमावृत्ति : ७५०

मूल्य : १३.२५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कवित्व

ठा० बुधसिंहजी पिंगल् तथा डिंगल-काव्य के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इन्होंने संस्कृत-काव्यग्रन्थ 'देवीभागवत' का काव्यानुवाद व्रजभाषा में किया जो काव्य-प्रेमियों के समक्ष है।

कविराजा की कवित्व-शक्ति इतनी प्रखर थी कि वे एक दिन में, व्रजभाषा के लगभग दो सौ दोहे अथवा डिंगल के कई 'गीतों' की रचना कर देते थे। इनका प्रस्तुत विशाल ग्रन्थ 'देवीचरित' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इन्होंने १४ वर्ष की अवस्था में ही सर्वप्रथम ईश्वर-भक्ति-विषयक एक 'गीत' की रचना मरुभाषा में की थी जो इनके फुटकर काव्य के अन्तर्गत संकलित है। इनके फुटकर काव्य में कुछ रचनाएँ भक्तिरस की हैं तथा वीररस की कविताओं में तत्कालीन राजा-महाराजाओं के शौर्य एवं औदार्य के प्रसंग वर्णित हैं। नरसिंहगढ़-नरेश सौभाग्यसिंहजी के महाराजकुमार चैनसिंहजी, जो विक्रमी सं० १८८१ में (स्वातंत्र्य-संग्राम की प्रथम क्रान्ति सं० १९१४ के पूर्व) अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध रणक्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हुए थे, इसी प्रसंग को लेकर कविराजा ने वीररस की सुन्दर काव्य-रचना की जिसमें युद्ध-वर्णन एवं भारतीय जनमानस की स्वतंत्रता की भावना का भव्य चित्रण हुआ है। विदेशी शासनकाल की यह काव्य-रचना निःसन्देह कवि के देश-प्रेम, राष्ट्रीयता एवं निर्भीकता की परिचायक है।

चारित्रिक विशेषताएँ

ठा० बुधसिंहजी स्वतंत्र प्रकृति के निर्भीक सत्यवक्ता, स्वामिभक्त तथा कर्त्तव्यपरायण पुरुष थे। इनमें इन कविजनोचित दुर्लभ गुणों के अतिरिक्त सभाचतुर्य्य का विशिष्ट गुण भी विद्यमान था। फलस्वरूप विभिन्न अवसरों पर अनेक राजा-महाराजाओं द्वारा इन्हें सम्मानित किया गया, जिसके प्रमाण आज भी उनके वंशजों के पास उपलब्ध हैं। इनके रुचिवैचित्र्य का यह पुष्ट प्रमाण है कि काव्य-साधना के साथ-साथ योगाभ्यास, वैद्यक एवं स्वरोदय में इनका ज्ञान पर्याप्तमात्रा में परिपक्व था। ये प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्त में योगविद्या में समाधिस्थ रहते थे तथा इनके (अपने छोटे) घरेलू चिकित्सालय में आयुर्वेदिक पद्धति से दीन व आर्त्तजनों का निःशुल्क उपचार किया जाता था। इनकी दानशीलता का यह प्रमाण है कि दीन-दुखियों के लिये भोजन को व्यवस्था भी की जाती थी जो इनके जीवनपर्यंत बनी रही।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कविराजा ठा० बुधसिंहजी इस भौतिक संसार में रहते हुए भी इससे कितने निर्लिप्त थे, यह उनके जीवनकाल की एक प्रमुख घटना से स्वतः सिद्ध हो जाता है—'एक बार इनके अपने गांव मदौरा के घर में भयंकर आग लग गई। ऐसी स्थिति में ये अपने इसी स्वरचित ग्रन्थ 'देवीचरित' की पाण्डुलिपि को लेकर घर से बाहर निकल पड़े तथा सीधे अपने 'बाग' में चले गये, जहाँ 'करणीमाता' के चबूतरे पर बैठ कर काव्य-रचना में तल्लीन हो गये।' हजारों की सम्पत्ति को अपने समक्ष स्वाहा होते देखकर अनदेखी कर देना एवं उस ओर ध्यान तक नहीं देना, कविराजा की अद्भुत 'ईश्वर इच्छा प्रबल' की भावना, काव्यानुरागिता, धीरता एवं भौतिक निःस्वार्थता की द्योतक है जो वास्तव में स्तुत्य है।

देहावसान—

कविराजा ठा० बुधसिंहजी का देहावसान वि० सं० १६५८ में आश्विन शुक्ला नवमी को हुआ। इन्होंने अपने देहावसान का दिन एवं समय पहिले ही सूचित कर दिया था तथा ये अपने देहत्याग के एक मास पूर्व अन्नग्रहण करना छोड़ केवल गाय का दूध सेवन करने लगे थे। अन्त समय के पन्द्रह दिन पूर्व इन्होंने दूध भी त्याग दिया तथा केवल 'गंगाजल' ग्रहण करते हुए, योगाभ्यास एवं इष्ट (भक्ति) में लीन रहने लगे। अपने देहान्त के दस दिन पूर्व इन्होंने एक कठोर आदेश दिया कि उनके पास कोई स्वजन (पुत्र-पौत्र आदि तक) नहीं आवें।

इस अवधि में केवल एक अठारह वर्ष का स्वामिभक्त एवं विश्वसनीय सेवक—'विरदा दरोगा' उनकी इच्छानुसार निरन्तर उनकी सेवा में उपस्थित रहा। देहावसान से पूर्व ही इन्होंने अपने द्वादशकर्म का कार्यक्रम निश्चित कर दिया था, जिसमें हरिद्वार में अस्थि-विसर्जन तक का स्पष्ट उल्लेख है। वह लिपिबद्ध कार्यक्रम आज भी इनके पौत्र के पास सुरक्षित है। कविराजा के निर्देशानुसार 'मातमपोशी' का आयोजन नरसिंहगढ़-नगर के 'रघुनाथजी के मन्दिर' में किया गया, जिसमें तत्कालीन नरेश एवं राज्य के गण्य-मान्य व्यक्तियों ने परम्परानुसारं भाग लिया।

वंश-परम्परा—

कविराजा के तीन पुत्र हुए थे, जिनमें से एक का देहान्त युवावस्था में ही हो गया था। इस घटना ने उनके हृदय पर चोट पहुँचाई, अतः वे सांसारिक मोह-माया से विरक्त होने लगे थे। इनके बड़े पुत्र पीरदानजी नरसिंहगढ़-नरेश

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रंथावलि

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम० ए०, डी० लिट्०
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर.

ग्रन्थाङ्क १०३

देवीचरित

प्रथम भाग

प्रकाशक
राजस्थान-राज्याज्ञानुसार
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)
१९६८ ई०

वि० सं० २०२५. भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९०

मुद्रक : जगदीशचन्द्र स्वर्णकार, अजन्ता प्रिन्टर्स, जोधपुर.

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रधान-सम्पादकीय

हिन्दी और उसकी उपभाषाओं में राम तथा कृष्ण-चरित को आधार मानकर अनेक ग्रन्थों की रचना हुई है और इधर शिव-चरित्र पर आधारित महाकाव्य भी लिखे गये हैं, परन्तु देवी के चरित पर आश्रित कोई भी महाकाव्य अभी तक प्रकाश में नहीं आया था। इस दृष्टि से प्रस्तुत ग्रन्थ हिन्दी-साहित्य की अद्वितीय कृति मानी जायगी। यह ग्रन्थ मूलतः संस्कृत के देवीभागवत-पुराण पर आश्रित होकर भी अपनी पृथक् विशेषता रखता है। देवी द्वारा महिषासुरादि शत्रुओं का विनाश किये जाने के विविध वृत्तान्त तो इसमें दिये ही गये हैं, परन्तु इसके साथ ही लेखक ने उस दार्शनिक पृष्ठभूमि को भी दृष्टि में रखा है जिस पर उक्त कथानक अवलंबित है।

कवि-परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता कविराजा ठाकुर श्री बुधसिंहजी राजस्थान के ही एक रत्न थे। उनका जन्म वि० सं० १८८६ में जोधपुर-राज्य के मोगड़ा-ग्राम में चारणों की सिंहढायच-शाखा में हुआ था। इनके पूर्वज मध्यप्रदेश के नरसिंहगढ़-राज्य में परमारवंशी शासकों के कृपापात्र रहे। उनको वहां महाराजाधिराज श्री हनवंतसिंहजी, श्री प्रतापसिंहजी एवं श्री महताबसिंहजी ने विविध प्रकार से सम्मानित किया और प्रथम श्रेणी के ताजीमी जागीरदारों में स्थान दिया। ठा० बुधसिंहजी को महाराजाधिराज श्री हनवंतसिंहजी ने कविराजा की उपाधि देकर उनकी कवित्व-शक्ति को सम्मान प्रदान किया।

विक्रमी सं० १६२६ में नरसिंहगढ़ नरेश महाराजा हनवन्तसिंहजी की सुपुत्री विजयकुंवर बाईजी का विवाह जोधपुर के महाराजकुमार जसवन्तसिंहजी से, कविराजा ठा० बुधसिंहजी की मध्यस्थता में सम्पन्न हुआ। फलस्वरूप बाईजी ने अपने पिताश्री से निवेदन कर, कविराजा को नरसिंहगढ़ से मांग कर जोधपुर में, अपने कामदार के रूप में नियुक्त किया। यद्यपि ये इस पद पर उनके जीवनपर्यन्त रहे, फिर भी इनका नरसिंहगढ़ राज्य से निरन्तर संपर्क बना रहा।

विक्रमी सं० १६४६ में महाराजाधिराज जसवन्तसिंहजी ने जोधपुर रियासत की ओर से इन्हें ताजीम एवं पैर में स्वर्णभूषण प्रदान किया। नरसिंहगढ़ के महाराजा महताबसिंहजी के देवलोकवासी होने पर विक्रमी सं० १६५२ में ये 'रिजेन्सी' कौन्सिल के सदस्य रहे थे।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कवित्व

ठा० बुधसिंहजी पिंगल् तथा डिंगल-काव्य के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इन्होंने संस्कृत-काव्यग्रन्थ 'देवीभागवत' का काव्यानुवाद ब्रजभाषा में किया जो काव्य-प्रेमियों के समक्ष है।

कविराजा की कवित्व-शक्ति इतनी प्रखर थी कि वे एक दिन में, ब्रजभाषा के लगभग दो सौ दोहे अथवा डिंगल के कई 'गीतों' की रचना कर देते थे। इनका प्रस्तुत विशाल ग्रन्थ 'देवीचरित' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इन्होंने १४ वर्ष की अवस्था में ही सर्वप्रथम ईश्वर-भक्ति-विषयक एक 'गीत' की रचना मरुभाषा में की थी जो इनके फुटकर काव्य के अन्तर्गत संकलित है। इनके फुटकर काव्य में कुछ रचनाएँ भक्तिरस की हैं तथा वीररस की कविताओं में तत्कालीन राजा-महाराजाओं के शौर्य एवं औदार्य के प्रसंग वर्णित हैं। नरसिंहगढ़-नरेश सौभाग्यसिंहजी के महाराजकुमार चैनसिंहजी, जो विक्रमी सं० १८८१ में (स्वातंत्र्य-संग्राम की प्रथम क्रान्ति सं० १९१४ के पूर्व) अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध रणक्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हुए थे, इसी प्रसंग को लेकर कविराजा ने वीररस की सुन्दर काव्य-रचना की जिसमें युद्ध-वर्णन एवं भारतीय जनमानस की स्वतंत्रता की भावना का भव्य चित्रण हुआ है। विदेशी शासनकाल की यह काव्य-रचना निःसन्देह कवि के देश-प्रेम, राष्ट्रीयता एवं निर्भीकता की परिचायक है।

चारित्रिक विशेषताएँ

ठा० बुधसिंहजी स्वतंत्र प्रकृति के निर्भीक सत्यवक्ता, स्वामिभक्त तथा कर्त्तव्यपरायण पुरुष थे। इनमें इन कविजनोचित दुर्लभ गुणों के अतिरिक्त सभाचतुर्य्य का विशिष्ट गुण भी विद्यमान था। फलस्वरूप विभिन्न अवसरों पर अनेक राजा-महाराजाओं द्वारा इन्हें सम्मानित किया गया, जिसके प्रमाण आज भी उनके वंशजों के पास उपलब्ध हैं। इनके रुचिवैचित्र्य का यह पुष्ट प्रमाण है कि काव्य-साधना के साथ-साथ योगाभ्यास, वैद्यक एवं स्वरोदय में इनका ज्ञान पर्याप्तमात्रा में परिपक्व था। ये प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्त में योगविद्या में समाधिस्थ रहते थे तथा इनके (अपने छोटे) घरेलू चिकित्सालय में आयुर्वेदिक पद्धति से दीन व आर्त्तजनों का निःशुल्क उपचार किया जाता था। इनकी दानशीलता का यह प्रमाण है कि दीन-दुखियों के लिये भोजन की व्यवस्था भी की जाती थी जो इनके जीवनपर्यंत बनी रही।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कविराजा ठा० बुधसिंहजी इस भौतिक संसार में रहते हुए भी इससे कितने निर्लिप्त थे, यह उनके जीवनकाल की एक प्रमुख घटना से स्वतः सिद्ध हो जाता है—'एक वार इनके अपने गांव मदौरा के घर में भयंकर आग लग गई। ऐसी स्थिति में ये अपने इसी स्वरचित ग्रन्थ 'देवोचरित' की पाण्डुलिपि को लेकर घर से बाहर निकल पड़े तथा सीधे अपने 'बाग' में चले गये, जहाँ 'करणीमाता' के चबूतरे पर बैठ कर काव्य-रचना में तल्लीन हो गये।' हजारों की सम्पत्ति को अपने समक्ष स्वाहा होते देखकर अनदेखी कर देना एवं उस ओर ध्यान तक नहीं देना, कविराजा की अद्भुत 'ईश्वर इच्छा प्रबल' की भावना, काव्यानुरागिता, धीरता एवं भौतिक निःस्वार्थता की द्योतक है जो वास्तव में स्तुत्य है।

देहावसान—

कविराजा ठा० बुधसिंहजी का देहावसान वि० सं० १९५८ में आश्विन शुक्ला नवमी को हुआ। इन्होंने अपने देहावसान का दिन एवं समय पहिले ही सूचित कर दिया था तथा ये अपने देहत्याग के एक मास पूर्व अन्नग्रहण करना छोड़ केवल गाय का दूध सेवन करने लगे थे। अन्त समय के पन्द्रह दिन पूर्व इन्होंने दूध भी त्याग दिया तथा केवल 'गंगाजल' ग्रहण करते हुए, योगाभ्यास एवं इष्ट (भक्ति) में लीन रहने लगे। अपने देहान्त के दस दिन पूर्व इन्होंने एक कठोर आदेश दिया कि उनके पास कोई स्वजन (पुत्र-पौत्र आदि तक) नहीं आवें।

इस अवधि में केवल एक अठारह वर्ष का स्वामिभक्त एवं विश्वसनीय सेवक—'विरदा दरोगा' उनकी इच्छानुसार निरन्तर उनकी सेवा में उपस्थित रहा। देहावसान से पूर्व ही इन्होंने अपने द्वादशकर्म का कार्यक्रम निश्चित कर दिया था, जिसमें हरिद्वार में अस्थि-विसर्जन तक का स्पष्ट उल्लेख है। वह लिपिबद्ध कार्यक्रम आज भी इनके पौत्र के पास सुरक्षित है। कविराजा के निर्देशानुसार 'मातमपोशी' का आयोजन नरसिंहगढ़-नगर के 'रघुनाथजी के मन्दिर' में किया गया, जिसमें तत्कालीन नरेश एवं राज्य के गण्य-मान्य व्यक्तियों ने परम्परानुसार भाग लिया।

वंश-परम्परा—

कविराजा के तीन पुत्र हुए थे, जिनमें से एक का देहान्त युवावस्था में ही हो गया था। इस घटना ने उनके हृदय पर चोट पहुँचाई, अतः वे सांसारिक मोह-माया से विरक्त होने लगे थे। इनके बड़े पुत्र पीरदानजी नरसिंहगढ़-नरेश

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

महाराजा अर्जुनसिंहजी एवं विक्रमसिंहजी के कृपापात्र रहे। इनके छोटे पुत्र शक्तिदानजी ग्राम में ही निवास करते थे। पीरदानजी के तीन पुत्र इस समय विद्यमान हैं जिनमें से सबसे बड़े नाथूसिंहजी तथा छोटे कुमेरसिंहजी (भू० पू० नरसिंहगढ़ राज्य) मध्यप्रदेश में अपने ग्राम मदौरा में निवास करते हैं तथा मध्य के पुत्र माधोसिंहजी राजस्थान-राज्य के जोधपुर-जिलान्तर्गत अपने मूल निवास स्थान-मोगड़ा ग्राम में ही रहते हैं। ये स्वयं विद्या-प्रेमी एवं अच्छे कवि हैं। शक्तिदानजी के पौत्र चैनसिंहजी हैं जो अपने (उक्त) ग्राम मदौरा में ही रहते हैं। आज भी इनके परिवार में प्रायः सभी व्यक्ति शिक्षित एवं विद्याप्रेमी हैं।

इस ग्रन्थ के संपादक पं० हुक्मचन्द चतुर्वेदी न केवल इस ग्रन्थ की भाषा से भली-भाँति परिचित हैं, अपितु संस्कृत के विद्वान् होने के कारण उनके लिये संस्कृत की देवीभागवत की परम्परा भी सुलभ रही है जिसको लेकर यह ग्रन्थ लिखा गया है। श्री चतुर्वेदीजी स्वयं देवी के परमभक्त और साधना के रहस्यों में रुचि रखने वाले हैं। अतः उन्होंने बहुत ही सरल भाषा में देवीतत्व की जो व्याख्या अपनी भूमिका में प्रस्तुत की है, वह बड़े महत्व की है। आशा है विद्वान् सम्पादक इस विषय को और अधिक विस्तार के साथ दूसरे भाग में प्रस्तुत करेंगे। उन्होंने अनेक कठिनाइयों के होते हुये भी, जिस लगन और तत्परता के साथ इस ग्रंथ का सम्पादन कर, ठीक समय पर प्रेस में भेज दिया है, उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी और विनयसागर ने जो परिश्रम किया है, उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। कवि के जीवन-परिचय देने के लिये जो सामग्री देवीचरितकार के प्रपौत्र श्री देवीसिंह चारण से हमें प्राप्त हुई है, उसके लिये उनके हम बहुत आभारी हैं। मोगड़ा-ग्राम निवासी ठा० माधोसिंहजी के हम विशेष रूप से कृतज्ञ हैं, जिन्होंने यह ग्रन्थ हमें उपलब्ध कराया और लेखक की फुटकर अन्य कृतियों से भी परिचय कराया। श्री माधोसिंहजी देवीचरितकार कविराजा श्री बुधसिंहजी के पौत्र हैं और स्वयं अच्छे विद्वान् और कवि हैं। मुझे खेद है कि वे अन्य कार्यों में व्यस्त रहने के कारण इस ग्रंथ के संपादन का भार स्वयं नहीं स्वीकार कर सके। आशा है, उनकी विद्वत्ता और अनुभव से प्रतिष्ठान को आगे लाभ प्राप्त होता रहेगा।

धन्वन्तरि-त्रयोदशी वि० सं० २०२५.
जो ध पु र.

—फतहसिंह

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कविराजा ठा० बुधसिंहजी
प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना करते हुये
[ग्रन्थकार के प्रपौत्र श्री देवीसिंहजी चारण के सौजन्य से प्राप्त]

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विषयानुक्रम

प्रथम-स्कंध

	छंद से छंद तक
वंदना	१—१०
अट्ठाईस व्यासों के नाम	११—१५
अठारह पुराणों के नाम	१६—१९
उपपुराणों के नाम	२०—२२
पुराणों के पाँच अंगों की व्याख्या	२२—२८
कृष्ण द्वैपायन व्यास की पुत्र-इच्छा-प्रसंग	३२—३९
व्यास का नारद से अपनी चिन्ता का कथन	४०—४३
नारद द्वारा ब्रह्मा-विष्णु संवाद कथन	४४—५८
विष्णु के सिर कटने और तुष्टा द्वारा जोड़े जाने का आख्यान	५९—११३
जिसमें—वेदों द्वारा देवी की स्तुति	
मधुकैटभ के वध का आख्यान	११४—१७२
शुकदेव के जन्म का आख्यान	१७३—१८६
शुकदेव को व्यास का उपदेश और इस हेतु जनक के पास भेजना	१८७—२०६
शुकदेव-जनक संवाद	२०७—२६२
शुकदेव का जीवन-वृत्त	२६३—२७१
शुकदेव के महाप्रयाण पर व्यास का मोह	२७२—२७७
व्यास का माता सत्यवती के दर्शनार्थ-गमन	२७८—२८०
शांतनु-मरण तथा उनके पुत्रों का निःसंतान निधन एवं व्यास द्वारा क्षेत्रज-उत्पत्ति जिससे धृतराष्ट्र, पांडु और विदुर के जन्म	२८१—३०५

द्वितीय-स्कंध

शांतनु-सत्यवती के विवाह का आख्यान	१—१११
जिसमें—	
वसु-उपरचर से वासवी के जन्म का उपाख्यान	

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छंद से छंद तक
पाराशर मुनि और वासवी से कृष्णद्वैपायन के जन्म का उपाख्यान	"
महाभिख नरेश और गंगा के शाप का उपाख्यान	
अष्ट वसुओं के शाप का उपाख्यान	
वसुओं द्वारा शाप-मोचन हेतु गंगा से विनय	
शांतनु से गंगा के विवाह का उपाख्यान	
गांगेय का जन्म और गंगा का शांतनु को त्यागने का उपख्यान	
सत्यवती के दोनों पुत्रों की निःसंतान-मृत्यु	११२—११३
धृतराष्ट्र, पांडु और विदुर के जन्म का आख्यान	११४—११६
धृतराष्ट्र और पांडु के पुत्रों की जन्म-कथा	११७—१७७
जिसमें—	
कुंती को दुर्वासा से मंत्र-प्राप्रि का उपाख्यान	
कर्ण के जन्म का उपाख्यान	
पांडु के शाप का उपाख्यान	
पांडु के निधन की कथा	१७८—१८४
पांडवों का द्रौपदी से विवाह	१८५—१८६
अभिमन्यु जन्म और उसके गर्भस्थ पुत्र की कृष्ण द्वारा रक्षा	१८७—१८९
महाभारत के अठारह वर्ष पश्चात् धृतराष्ट्र, गांधारी, कुंती आदि का वन में तप हेतु गमन	१९०—१९८
युधिष्ठिर आदि का माता कुंती आदि के दर्शनार्थ वनगमन	१९९—२०६
विदुर का शरीर त्याग	२०७—२११
व्यास द्वारा कुंती, गांधारी आदि को मृत-पुत्रों का दिखाना	२१२—२१७
युधिष्ठिर के लौट जाने पर आग लगना और उसमें धृतराष्ट्र, कुंती आदि का जलकर मरण	२१८—२२०
यादव-वंश-विनाश तथा कृष्ण, बलराम आदि का देह त्याग	२२१—२२६
अर्जुन का द्वारकागमन और लौटते समय भीलों द्वारा उनका लुट जाना	२२७—२३०
व्यास द्वारा अर्जुन का समाधान	२३१—२३५
युधिष्ठिर आदि का विकल होना और राज्य का त्यागना	२३६—२४३
परीक्षित का राज्याभिषेक, शासन, मृत्यु	२४४—२७४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद से छंद तक

जिसमें—

परीक्षित के शाप का उपाख्यान

तक्षक द्वारा धन देकर कश्यपमुनि को लौटाने का उपाख्यान

तक्षक द्वारा अन्य सर्पों को आदेश संबंधी उपाख्यान

जनमेजय का राज्याभिषेक, उनके द्वारा नागयज्ञ और व्यास द्वारा देवी-भागवत सुनने का उपदेश २७५—३१५

जिसमें—

ऊतंक मुनि और तक्षक का उपाख्यान

ऊतंक मुनि द्वारा जनमेजय को पिता के वैर का तक्षक से प्रतिशोध लेने की प्रेरणा

तृतीय-स्कंध

देवीमंडप का वर्णन १—५

जनमेजय के प्रश्न ६—११

उत्तर में व्यास द्वारा उद्धृत नारद-व्यास-संवाद १२—१५२

जिसके अंतर्गत—

नारद द्वारा उद्धृत नारद-ब्रह्मा-संवाद

ब्रह्मा-विष्णु-महेश का देवी के साथ विमान में भ्रमण

मणिद्वीप का वर्णन

विष्णु द्वारा जगदंबा की स्तुति

शिव द्वारा जगदंबा की स्तुति

ब्रह्मा द्वारा जगदंबा की स्तुति

देवी द्वारा उत्तर और आदेश

त्रिदेवों का लक्ष्मी, सरस्वती और गौरी का प्राप्त करना

त्रिदेवों का विमान द्वारा वापिस लौटना

ब्रह्मा द्वारा नारद से सृष्टि-रहस्य-वर्णन और निर्गुण का रहस्य कथन

सत्यव्रत का आख्यान, विभिन्न प्रकार के यज्ञों सहित १५३—१८६

विष्णु कथित देवी-यज्ञ का वर्णन १८७—२३६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद से छंद तक

शत्रजित और सुदर्शन का आख्यान २३७—३५५

जिसके अंतर्गत—

अयोध्यानरेश ध्रुवसिंधु और उनकी मृत्यु का कथानक

ध्रुवसिंधु की छोटी रानी लीलावती के पुत्र शत्रुजित की ओर से

अवंतीनरेश जुधाजित द्वारा युद्ध और उसका राज्याभिषेक

पराजित होकर बड़ी रानी मनोरमा और उसके पुत्र सुदर्शन का भारद्वाज

आश्रम में निवास

काशीनरेश की पुत्री शशिकला का स्वयंवर

सुदर्शन को निमंत्रण

शशिकला का सुदर्शन से विवाह

शत्रुजित और जुधाजित द्वारा युद्ध

स्तुति से प्रसन्न हो सिंहवाहिनी देवी का प्रकट होना

देवी द्वारा शत्रुजित और जुधाजित का वध

सुदर्शन का अयोध्या का राजा होना और उसके द्वारा

देवी पूजा का प्रचार और विधि

सुशील नामक वैश्य का आख्यान ३५६—३६५

राम का संपूर्ण जीवन चरित्र ३६६—३४४१

जिसके अंतर्गत—

अयोध्यानरेश दशरथ के राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के जन्म और

शैशव-जीवन-वृत्त ३६६—३७६

राम-लक्ष्मण का विश्वामित्र के साथ गमन ३७७—३८३

विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण का मिथिला को प्रस्थान और

अहिल्या का उद्धार ३८३—३८५

मिथिला वर्णन और सीता-स्वयंवर ३८५—४०३

दशरथ को निमंत्रण, बरात का प्रस्थान, उसका मिथिला आगमन,

स्वागत तथा राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का सीता तथा

उसकी बहिनों से विवाह सम्पन्न होने पर बरात की विदा ४०४—१५४

बरात का अयोध्या पहुँचना एवं वहाँ के आमोद-प्रमोद तथा

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद से छंद तक

उत्सवों का वर्णन ५५५—५७१

राम को युवराज बनाने का दशरथ का निर्णय और कैकेई द्वारा विघ्न डालना ५७२—५७९

राम, लक्ष्मण और सीता का वनवास के लिये प्रस्थान ५८०—५९२

राम के वनगमन के पश्चात् अयोध्या की स्थिति का वर्णन ५९३—५९८

भरत का शत्रुघ्न आदि के साथ राम को वापिस लाने के लिये वनगमन ५९९—६००

भरत का राम की चरणपादुका लेकर वापिस लौटना ६०१—६०५

पंचवटी में सूर्पनखा का आगमन और लक्ष्मण द्वारा उसके नाक-कान काटना ६०६—६१८

राम का खर-दूषण से युद्ध एवं उनका ससैन्य-संहार ६१९—६९२

सूर्पनखा का रावण के पास जाना, उससे दुःख-कथा कहना एवं मारीच की सहायता से रावण द्वारा सीता-हरण ६९३—७२६

रावण-जटायु-संघर्ष ७२७—७२८

राम और लक्ष्मण द्वारा सीता की खोज में प्रस्थान ७२९—७३४

राम-जटायु भेंट ७३४—७४१

राम-शबरी भेंट ७४२—७४५

राम-हनुमान भेंट ७४६—७५८

राम-सुग्रीव मैत्री ७५९—७६१

राम द्वारा बाली-वध ७६१—७९१

प्रवर्षण पर्वत पर राम के विह्वल होने पर लक्ष्मण द्वारा समाधान करना ७९२—८०५

नारद का आगमन और उनके द्वारा राम-लक्ष्मण को उपदेश तथा आशीर्वाद ८०६—८१५

राम द्वारा नवरात्रि-व्रत, भगवती का प्रकट होना और वर देना ८१५—८१८

राम द्वारा लक्ष्मण को सुग्रीव को सचेत करने के लिये भेजना ८१९—८२७

हनुमान का वानरी सेना एकत्रित करने के लिये प्रस्थान और विभिन्न स्थानों में भ्रमण ८२८—८६०

सुग्रीव, अंगद आदि का यूथपतियों के साथ राम के पास पहुँचना ८६१—८७०

सीता की खोज के लिये वानरों और रीछों का विभिन्न दिशाओं में प्रस्थान ८७१—८७७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छंद से छंद तक
अंगद-हनुमान आदि की संपाती से भेंट	८७८—८८१
हनुमान का सीता की खोज के लिये लंका प्रस्थान, विभीषण से भेंट, अशोक-वाटिका में पहुँचना, सीता से मिलना और उनकी शंका का समाधान करना	८८२—९१५
हनुमान द्वारा क्षुधा-निवृत्ति के लिये फलों को तोड़ना, रक्षकों द्वारा रोकना, उनका संहार, अक्षयकुमार का वध, मेघनाद से युद्ध तथा हनुमान का नाग-पाश में बंधना	९१६—९३५
हनुमान का रावण के सम्मुख उपस्थित होना, उसे अपना परिचय देना तथा रावण द्वारा हनुमान की पूँछ में आग लगाने का दंड देना—फलस्वरूप लंका दहन	९३६—९६२
सीता से विदा लेकर हनुमान का लंका से प्रस्थान तथा अंगद-जामवंत आदि के साथ राम के पास पहुँचना और उन्हें सीता का संदेश देना	९६३—९७७
राम-लक्ष्मण का सेना सहित लंका को कूच और समुद्र-तट पर पहुँचना	९७८—९८७
मंदोदरी द्वारा रावण को समझाना	९८८—९९६
विभीषण का रावण के पास जाना, उसकी विनय करना, उसके चरण स्पर्श करना, रावण का क्रोधित होकर चरण-प्रहार करना और विभीषण का राम की शरण जाना	९९७—१०१०
राम द्वारा विभीषण को लंका का राज-तिलक	१०११—१०१९
राम द्वारा समुद्र की प्रार्थना	१०२०—१०२१
रावण के दूतों का छद्मवेश में आना, उनका भेद खुलने पर वानर सेना द्वारा उन्हें पकड़ना, तंग करना, लक्ष्मण द्वारा उनकी मुक्ति एवं रावण को संदेश भेजना	१०२२—१०३७
रावण और उसके दूतों का संवाद	१०२८—१०३९
रावण द्वारा दूत के चरण-प्रहार और उसका राम से मिलना	१०३९—१०४०
राम द्वारा समुद्र पर क्रोध, बाण-प्रहार, घबड़ाकर समुद्र का आना, भेंट करना और पुल-निर्माण की विधि बतलाना	१०४०—१०५१
समुद्र पर सेतु-निर्माण	१०५२—१०६३
सेना सहित राम का समुद्र पार करना, पड़ाव डालना और रावण का विचलित होना	१०६४—१०७२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छंद से छंद तक
मंदोदरी का रावण को एक बार फिर समझाना	१०७३—१०८०
लंका को घेरकर आक्रमण और युद्ध	१०८१—१११३
अंगद को दूत बनाकर भेजने का निर्णय, अंगद का जाना और रावण को संदेश देकर संघर्ष करके वापिस लौटना	१११४—११५६
राम-रावण सेनाओं का प्रथम दिन का प्राचीर के निकट युद्ध	११५७—१२०६
रात्रि के समय का युद्ध जिसमें मेघनाद द्वारा आकाश में अदृष्ट रहकर राम-लक्ष्मण को मूर्च्छित करना एवं उनका नाग-पाश में बंधना	१२०६—१२९६
रावण की आज्ञा से त्रिजटा द्वारा सीता को पुष्पक विमान में बैठाकर युद्ध-स्थल दिखाना	१२९७—१३०२
शर-शय्या पर मूर्च्छित, मृतकवत् राम-लक्ष्मण को सीता द्वारा देखना और विलाप करना	१३०३—१३१६
त्रिजटा द्वारा सीता का समाधान	१३१७—१३२३
कुछ चेत होने पर तथा लक्ष्मणको देखकर राम का विह्वल होना और चिंता करना	१३२४—१३२८
विभीषण की चिंता करना, गरुड़ का आगमन, नाग-पाश को काटना और राम को स्वस्थ करके उनका प्रस्थान	१३२९—१३४३
प्रभात होने पर वानरी सेना का आक्रमण, लंका में आश्चर्य, संदेशवाहकों द्वारा रात्रि की घटनाओं का रावण को समाचार देना	१३४४—१३६६
रावण की चिंता और प्रलाप एवं अपना तथा अपनी सेना का बल-वर्णन	१४६७—१४३६
सेनापति प्रहस्त का उत्तर	१४३७—१४३९
दुर्मुख की गर्वोक्ति	१४४०—१४४४
वज्रदंष्ट्र की गर्वोक्ति	१४४५—१४४८
निकुंभ की गर्वोक्ति	१४४९—१४५०
बज्रहनूं की गर्वोक्ति	१४५१—१४५४
अन्य योद्धाओं की गर्वोक्ति	१४५५—१४६१
माल्यवान की मंत्रणा	१४६२—१४९३
रावण द्वारा माल्यवान की भर्त्सना और युद्ध करने का दृढ़ निश्चय प्रकट करना	१४९४—१५१४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छंद से छंद तक
रावण के आदेश से धूम्राक्ष का युद्ध-क्षेत्र में प्रयाण, प्रबल युद्ध तथा हनुमान द्वारा उसका वध	१५१५—१५७२
धूम्राक्ष, के मरण के पश्चात् रावण के आदेश से वज्रदंष्ट का युद्ध-क्षेत्र में प्रस्थान उसके द्वारा भीषण-संग्राम तथा अंगद-द्वारा अंत में उसकी मृत्यु	१५७३—१६१५
वज्रदंष्ट के वीरगति प्राप्त होने पर रावण द्वारा अकंपन को भेजना, उसके द्वारा विकट-युद्ध एवं अंत में हनुमान के प्रहार से उसकी मृत्यु	१६१६—१६५८
रावण द्वारा त्रिकूट पर चढ़कर मोर्चा देखना, प्रहस्त को समझाना, उसे आश्वस्त करना और युद्ध-क्षेत्र में भेजना	१६५९—१६७१
प्रहस्त का युद्ध क्षेत्र को प्रस्थान, भीषण युद्ध तथा नील के घातक प्रहा द्वारा उसकी मृत्यु	१६७२—१७१८
बलाबल देखने के लिये स्वयं रावण का मेघनाद, अंतकाय, महोदर, त्रिशिरा, कुंभ, निकुंभ, नरांतक आदि के साथ युद्ध-क्षेत्र में प्रयाण, घमासान युद्ध, रावण और हनुमान की मुक्का-मार, रावण की शक्ति के प्रहार से लक्ष्मण का मूर्च्छित होना, राम द्वारा स्वस्थ करना, राम-रावण युद्ध में रावण का थकना, रावण का लंकापुरी को लौटना	१७१८—१८५९
रावण द्वारा सभासदों से वेदवती के शाप का वृत्तांन्त कथन	१८६०—१८६७
रावण द्वारा कुंभकर्ण को जगाने की चेष्टा	१८६८—१८८०
रावण-कुंभकर्ण संवाद	१८८१—१९१२
कुम्भकर्ण का युद्धक्षेत्र में प्रस्थान, भीषण-युद्ध और राम द्वारा उसका संहार	१९१३—२०११
कुंभकर्ण की मृत्यु से संतप्त रावण का त्रिशिरा द्वारा समाधान,	२०१२—२०२१
देवांतक, नरांतक, अतिकाय, महापारस एवं महोदर के साथ त्रिशिरा का युद्ध क्षेत्र में प्रयाण, अत्यंत भीषण-युद्ध, अंत में देवांतक और त्रिशिरा का हनुमान द्वारा, महापारस का ऋषभ द्वारा, महोदर का नील द्वारा, नरांतक का अंगद द्वारा तथा अत्यंतबली अतिकाय का लक्ष्मण द्वारा संहार	२०२२—२१४९
मेघनाद द्वारा अत्यंत संतप्त अपने पिता रावण को आश्वस्त करना,	

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद से छंद तक

उसका युद्ध क्षेत्र में प्रस्थान, अत्यंत भीषण-युद्ध जिसमें ब्रह्मास्त्र द्वारा राम, लक्ष्मण सहित सभी यूथपतियों का मूर्च्छित और घायल होना एवं सड़सठ करोड़ वानरी-सेना का संहार करना २१५०—२१६१

जामवंत की प्रेरणा से जड़ी-बूटियाँ लेने के लिये हनुमान का कैलाश पर्वत को प्रस्थान, जड़ियों सहित पर्वतशृङ्ग को लाना तथा उनकी गंध के प्रभाव से समस्त वानरी-सेना का स्वस्थ और सबल होना २१६२—२२२८

सुग्रीव की आज्ञा से बानरी-सेना द्वारा लंका में रात्रि के समय आग लगाना तथा विध्वंस कार्य में प्रवृत्त होना, रावण द्वारा कुंभ, निकुंभ को उत्पात-शान्त करने के लिये निर्देश देना, भयंकर युद्ध, अंत में कुंभकर्ण के दोनों पुत्रों—कुंभ और निकुंभ का क्रमशः सुग्रीव तथा हनुमान द्वारा संहार २२२९—२३०६

खर के पुत्र मकराक्ष का रावण की आज्ञा लेकर रण-क्षेत्र में जाना, भीषण-युद्ध करना तथा अंत में राम द्वारा उसका संहार २३०७—२३५२

घननाद द्वारा रावण को आश्वस्त करना, रावण द्वारा अपने हृदय की व्यथा का व्यक्त करना तथा अंत में मेघनाद का युद्धस्थल पर जाना—भीषण संग्राम करना तथा हनुमान के समक्ष कृत्रिम सीता का बध करना एवम् २३५३—२३८७

हनुमान का हतोत्साह होकर भागना, हनुमान से सीता-बध का संदेश पाकर राम का विह्वल होकर मूर्छित होना तथा लक्ष्मण का समझाना २३८८—२३९७

विभीषण द्वारा मायावी मेघनाद की माया मात्र बतलाकर राम को आश्वस्त करना और यह कहना कि सीता-बध करना मेघनाद के लिये असम्भव, जिस सीता का बध दृष्टिगोचर हुआ-वह कृत्रिम सीता का बध होगा— २३९८—२४०४

विभीषण द्वारा राम को यह समाचार देना कि मेघनाद निकुंभला में देवी-होम कर रहा है तथा यह परामर्श देना कि यज्ञ में विघ्न डालकर मेघनाद का अविलंब बध किया जाय। २४०५—२४१५

लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान आदि का ससैन्य निकुंभला को प्रस्थान, यज्ञ में विघ्न डालना, लक्ष्मण और मेघनाद का भीषण संग्राम तथा

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छंद से छंद तक
अन्त में इन्द्रास्त्र से लक्ष्मण द्वारा मेघनाद का संहार	२४१६ २५०४
मेघनाद के संहार पर रावण का दुःखी होकर सभा में सब संघर्ष की मूल सीता का बध करने का विचार व्यक्त करना तथा महापारस मंत्री द्वारा ऐसा अधर्म कार्य न करने की मंत्रणा देना	२५०५—२५१२
रावण द्वारा सेनापति महापारस को ससैन्य रण-स्थल पर भेजना, राक्षसी सेना द्वारा भयंकर युद्ध, राम का गंदर्भ-अस्त्र से उसका संहार करना एवं उसका पलायन	२५१३—२५५५
लंकापुरी में घर-घर युद्ध सम्बन्धी चर्चा, वार्ता, आलोचना,	२५५६—२५६२
रावण का ससैन्य युद्ध क्षेत्र में जाना, भीषण युद्ध और सुग्रीव द्वारा विरूपाक्ष का संहार	२५६३—२६१२
महोदर की सुग्रीव से तथा महापारस की अंगद के प्रहारों से युद्ध में मृत्यु	२६१३—२६६८
रावण द्वारा भीषण संग्राम, बानरी सेना का संहार तथा लक्ष्मण के त्रिदेव-अभिमंत्रित शक्ति का प्रहार, लक्ष्मण का मूर्च्छित होना	२६६९—२७१०
राम का लक्ष्मण को संभालना, शक्ति को खींचना, यथा अवसर युद्ध भी करते रहना और भ्रातृ-मरण की आशंका से भावनाओं को व्यक्त करना	२७११—२७२८
सुखेन द्वारा संजीवनी आदि जड़ी लाने के लिये हनुमान को भेजना, तथा हनुमान का पर्वत को शृङ्ग जड़ी सहित लाना और लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर होना	२७२९—२७४५
इन्द्र द्वारा अपना रथ राम के पास भेजना, राम-रावण का भीषण युद्ध, रावण का श्रमित होना, मूर्च्छित होना तथा सारथी का रावण के रथ को युद्ध क्षेत्र से बाहर लेजाना	२७४६—२८१३
मूर्च्छा दूर होने पर रावण का सारथी पर क्रोध करना एवम् सारथी की उक्ति से समाधान होने पर उसे पुरस्कृत करना तथा युद्ध करने के लिये फिर युद्ध क्षेत्र में आना	२८१४—२८३६
युद्ध क्षेत्र में अगस्त्य मुनि का आगमन, राम को सूर्य-स्तोत्र बतलाना, राम द्वारा तीन वार युद्ध-स्थल पर ही सूर्य-स्तोत्र का जाप, अगस्त्य मुनि का प्रस्थान, सूर्य देव का वरदान	२८३७—२८५५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छंद से छंद तक
राम-रावण युद्ध—सात दिन तक भीषण संग्राम—अंत में ब्रह्मास्त्र से रावण की मृत्यु	२८५६—२९६८
रावण के शव को पड़ा देख विभीषण का विह्वल होना	२९६९—२९८०
राम का विभीषण को सांत्वना देना	२९८१—२९८९
विभीषण की प्रार्थना पर रावण की विधिवत अंत्येष्टि-क्रिया करने के लिये राम द्वारा आज्ञा देना,मंदोदरी आदि रानियों का युद्ध-स्थल में पहुँच कर विलाप करना,रावण की अंत्येष्टि-क्रिया का सम्पन्न होना	२९९०—३०४८
राम द्वारा समस्त यूथपतियों का सत्कार करना, उनसे मिलना और इन्द्र के सारथी को विदा करके शिविर को लौटना	३०४९—३०५८
विभीषण को लंका का राज्यतिलक करना	३०५९—३०६५
सीता के पास राम द्वारा हनुमान को संदेश लेकर भेजना तथा हनुमान द्वारा सीता का राम को संदेश लाकर देना	३०६६—३०८०
सीता का वस्त्राभूषणों से सुसज्जित अशोकवाटिका से युद्ध क्षेत्र तक पालकी में और वहां से शिविर तक पैदल आना	३०८१—३०९८
राम-सीता का प्रेमयुक्त मिलन	३०९९—३१०३
राम द्वारा सीता से अपनी शंका को प्रकट करना तथा उन्हें त्यागने का निश्चय व्यक्त करना	३१०४—३११०
सीता द्वारा भाव व्यंजना तथा चिता में पतिव्रत धारण के साक्षी स्वरूप प्रवेश करना, ब्रह्मा का आना, राम को सम्बोधन करना एवम् अग्नि द्वारा प्रकट होकर निष्कलंक सीता को राम को भेंट करना	३१११—३१४७
राम द्वारा सीता की प्रशंसा	३१४८—३१६२
दशरथ का स्वर्ग लोक से आना और सीता, राम, लक्ष्मण को आशीर्वाद देना	३१६३—३१६७
इंद्र द्वारा स्तुति करना तथा राम की इच्छा को पूर्ण करने के लिये वानरी सेना को जीवित करना	३१६७—३१७२
पुष्पक विमान द्वारा यूथपतियों सहित राम, लक्ष्मण, सीता का प्रस्थान	३१७३—३१९३
सीता को मार्ग के विभिन्न स्थलों को दिखाते हुए राम का पुष्पक	

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छंद से छंद तक
विमान त्रिवेणी पर पहुँचना और वहाँ उतरना	३१९३—३२३५
हनुमान को भरत के पास भेजना और यह संदेश भेजना कि राम, लक्ष्मण और सीता सकुशल कल पहुँचेंगे	३२३६ ३२३९
हनुमान का भरत को समाचार देना तथा भ त का प्रसन्न होकर बधाई देना	३२४० — ३२८४
अयोध्या में राम के शुभागमन पर स्वागत की तैयारियाँ एवं पुष्पक विमान द्वारा नंदिग्राम के निकट प्रभात के समय पहुँचना	३२८५—३३०९
राम का भरत, शत्रुघ्न, गुरु वशिष्ठ, माताओं आदि से मिलना, नंदिग्राम में ठहरना, भरत की प्रार्थना पर राजा बनने के लिये तैयार होना तथा अयोध्या पुरी में होकर राज-सवारी का निकलना तथा राजमहलों में जाना	३३१०—३३९७
राम का राज्य-तिलक	३३९८—३४२२
राम द्वारा भरत को युवराज बनाना तथा अन्य व्यवस्था करना	३४२३—३४३१
राम के राज्य का वर्णन	३४३२—३४४५

चतुर्थ स्कंध

	छंद से छंद तक
जनमेजय के प्रश्न	१—२४
उत्तर में व्यास द्वारा कर्म की गति की व्याख्या	२५—३८
ब्रह्मा द्वारा कश्यप को शाप का कथानक	३९—४३
दिति द्वारा अदिति को शाप का प्रसंग	४४—६२
जनमेजय के पूरक प्रश्न	६३—७०
व्यास द्वारा माया की प्रबलता की व्याख्या	७१—७७
नर-नारायण का जीवन-वृत्त, इन्द्र द्वारा उनके तप में विघ्न डालने का प्रयास, कामदेव और बसंत द्वारा उनको मोहित करने के प्रयत्न, अप्सराओं का विफल होना, नारायण द्वारा अपनी जंघा पर थाप देकर नई अप्सराएँ उत्पन्न करना, उन अप्सराओं द्वारा पति बनने के लिये नारायण से प्रार्थना	७८—१३७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छंद से छंद तक
नारायण और प्रह्लाद के युद्ध का विवरण और इसी प्रसंग से च्यवन ऋषि का पाताल पहुँचना, प्रह्लाद से मिलना तथा उन्हें विभिन्न तीर्थों के माहात्म्य को बतलाना, प्रह्लाद का तीर्थ यात्रा के लिये प्रस्थान तथा बद्रिकाश्रम पर पहुँच कर बाणों को पेड़ पर बँधे हुए देखकर शंका करना, नारायण के साथ वाक्-युद्ध और तदनंतर शस्त्र-युद्ध करना	१३८—१७७
विष्णु का प्रह्लाद को दर्शन देकर उसकी शंकाओं का निवारण करना और प्रह्लाद का प्रस्थान	१७८—१८३
व्यास द्वारा अहंकार की प्रबलता बतलाना और इसी प्रसंग में भृगु द्वारा विष्णु को शाप देने का प्रकरण—दैत्यों की देवताओं से युद्ध में पराजय होना, उनके द्वारा शुक्राचार्य से प्रार्थना करना, शुक्राचार्य का महादेवजी के पास कैलाश गमन, दैत्यों की रक्षार्थ मंत्र प्राप्ति के लिये महादेवजी द्वारा बतलाया हुआ तप करना—इस अंतरिम काल में देवों द्वारा दैत्यों से युद्ध करना—दैत्यों का भागकर शुक्र की माता की शरण में जाना, शुक्र की माता द्वारा सभी देवताओं को निद्रा-निमग्न कर देना, इन्द्र आदि देवताओं की विष्णु की शरण जाना—विष्णु द्वारा मंत्र प्रयोग से देवताओं की निद्रा भंग करना, शुक्र की माता का कुपित होकर भक्षण करने के लिये दौड़ना, विष्णु द्वारा उनका चक्र से बध करना—भृगु को यह समाचार प्राप्त होना और उनके द्वारा इस अनाचार के लिये विष्णु को शाप देना तथा अपने पुण्य बल से अपनी पत्नी को पुनर्जीवित करना	१८४—२२९
इन्द्र द्वारा अपनी पुत्री जयंती को तप-निरत शुक्राचार्य की सेवार्थ भेजना, सौ वर्ष के उग्र तप के पूर्ण होने पर महादेवजी द्वारा उन्हें वर देना, जयंती की सेवा से प्रसन्न हो शुक्राचार्य द्वारा उसके साथ दस वर्ष तक विहार करने का वर देना, और इस अवधि में अदृष्ट रहना—	२३०—२४०
इन्द्र द्वारा बृहस्पति को दैत्यों को मार्ग-भ्रष्ट करने के लिये उनके पास भेजना, बृहस्पति का शुक्र के रूप में दैत्यों के गुरु बनकर रहना और उन्हें मोक्ष का उपदेश देना—दस वर्ष पूर्ण होने पर शुक्राचार्य का प्रकट होना, दैत्यों के पास जाना, वहाँ बृहस्पति को अपने रूप में देखना, दैत्यों को सावधान करना, दैत्यों को उनका विश्वास न करने पर शाप देना	२४१—२७०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छंद से छंद तक
वृहस्पति का दैत्यों को छोड़कर जाना, इन्द्र का दैत्यों पर आक्रमण, दैत्यों की पराजय, उनका शुक्राचार्य के पास जाकर क्षमा-याचना करना और अंत में शुक्राचार्य का शांत होकर प्रह्लाद को आश्वस्त करना	२७१—२८४
बलि-इन्द्र भेंट और संवाद	२८५—२८८
प्रह्लाद का दैत्यों को युद्ध को छोड़कर पाताल में जाकर बसने की मंत्रणा देना, किन्तु प्रह्लाद के नेतृत्व में दैत्यों का देवों से युद्ध करना और उन्हें पराजित करना—देवताओं का जगदंबा की शरण में जाना, उसकी स्तुति करना और देवी का प्रकट होना—जगदंबा का दैत्यों के निकट जाना, प्रह्लाद द्वारा स्तुति करना, जगदंबा द्वारा प्रह्लाद को आश्वस्त करना और उसे पाताल में जाकर बसने की आज्ञा देना—प्रह्लाद द्वारा इस आज्ञा को मानना	२८९—२९८
विष्णु के अवतारों का वर्णन	२९९—३०२
जनमेजय के नर-नारायण तथा कृष्ण विषयक प्रश्न	३०३—३२०
शिशुपाल, कंस आदि के अनाचारों से त्रस्त हो कर भूमि का गाय के रूप में इन्द्र, ब्रह्मा, विष्णु से प्रार्थना करना, उन सब देवताओं द्वारा जगदंबा की स्तुति करना, उसका प्रसन्न होकर प्रकट होना, सभी देवताओं को अवतार लेने का आदेश देना—देवताओं और भूमि का प्रसन्न होना—भगवती का अंतर्ध्यान होना	३२१ – ३४९
कृष्णावतार प्रसंग में माया के प्रेरक शक्ति के रूप में अनेक दृष्टांतों का उल्लेख	३५०—३६२
वसुदेव-देवकी के विवाह सम्पन्न होने पर कंस द्वारा प्रफुल्लता से विदा करना—उसी अवसर पर आकाशवाणी होना- कंस का अपनी बहिन देवकी को मारने के लिये उद्यत होना—वसुदेव द्वारा देवकी के गर्भ से उत्पन्न शिशुओं को उसे सौंप देने की प्रतिज्ञा करना—कंस द्वारा देवकी को जीवित छोड़ना	३६३ – ३७३
देवकी के प्रथम पुत्र का प्रसव होना, प्रतिज्ञानुसार वसुदेव द्वारा कंस को उसे ले जाकर सौंपना; कंस द्वारा वसुदेव की सत्यनिष्ठा से मुग्ध हो उस शिशु को वापिस करना	३७४—३८२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छंद से छंद तक
नारद का कंस के पास आगमन, उसके हृदय में आकाशवाणी के संबंध में शंका उत्पन्न करना तथा उन नवजात शिशु को मारने की मंत्रणा देना	३८३—३८५
नारदजी के इस व्यवहार के संबंध में जनमेजय की शंका और व्यास द्वारा समाधान	३८६—३८८
देवकी के छह नवजात शिशुओं के पूर्व जन्म और शाप सम्बन्धी विवरण	३८८ ३९९
देवकी के सप्तम गर्भ का योगमाया द्वारा आकर्षित करके रोहिणी के गर्भ में स्थापित करना	४००—४०२
कृष्ण तथा उनके समकालीन अन्य प्रमुख पुरुषों के विभिन्न देवताओं तथा दैत्यों के अंशों से उत्पत्ति का विवरण	४०३—४२८
बलराम जन्म, कृष्ण जन्म, आकाशवाणी का होना, पूर्व-व्यवस्थानुसार वसुदेव का नवजात शिशु को लेकर गोकुल जाना	४२९—४३१
वहाँ उसे यशोदा को सौंपना, वहाँ से उसके उत्पन्न पुत्री को लेकर लौटना	४३२—४६४
कंस का सूतिकागृह में जाना, कन्या को हाथ में लेकर मारने का प्रयास करना, बिजली कड़कना, कन्या का हाथ से छूटकर आकाश में जाना और योग-माया रूपी कन्या द्वारा कंस से यह कहना कि तेरे मारने वाला अन्यत्र उत्पन्न हो गया।	४६५—४७२
कंस का चिंतित होना, क्रूरकर्मा अपने साथियों को नवजात शिशुओं को मारने की आज्ञा देना, पूतना बकासुर आदि की मृत्यु	४७३—४८७
केशी द्वारा धनुष यज्ञ, कृष्ण-बलराम को निमंत्रण, वहाँ चाणूर, कुवलय, कंस आदि का बध	४८८—४९४
कृष्ण-बलराम का मथुरा में वसुदेव-देवकी के साथ निवास, यज्ञोपवीत आदि संस्कारों का होना, काशी में विद्याध्ययन, जरासंध से सत्रह बार युद्ध, यदुवंशियों के साथ द्वारिका में जाकर रहना	४९५—५०३
कृष्ण का मथुरा लौटना, काल-यवन का पीछा करना, उसे अयोध्या की एक गुफा में ले जाकर मुचकन्द द्वारा उसको भस्म कराना	५०४—५०८
कृष्ण की आठ पटरानियों का विवरण	५०९—५१४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद से छंद तक

रुक्मिनी-पुत्र प्रद्युम्न का सूतिकागृह से हरण होजाना, कृष्ण का महामाया की स्तुति करना, देवी का प्रकट होना और शंबरासुर द्वारा उसके अपहरण की बात बतलाना तथा आश्वस्त करना कि सोलह वर्ष की आयु प्राप्त होने पर वह उनके पास आ जायगा। ५१४—५२३

कृष्ण की अनभिज्ञता के सम्बंध में जनमेजय द्वारा शंका करना और व्यास द्वारा माया की प्रबलता बतलाकर अनेक दृष्टान्त देकर समाधान करना— ५२४—५५७

इसी प्रसंग में कृष्ण द्वारा महादेव की आराधना, शिव और गौरी का प्रकट होना, उन्हें पुत्र प्राप्ति का वर देना तथा उनसे यह कहना कि सौ वर्ष व्यतीत होने पर विप्र-शाप से यदुवंश का विनाश होगा माया की प्रबलता का वर्णन

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भूमिका

स्वनामधन्य श्री बुद्धसिंहजी चारन द्वारा रचित 'देवीचरित' का आधार प्रधान-रूप से देवीभागवत है। प्रथम स्कंध के आरम्भ में ही कवि ने इस आभार को व्यक्त किया है :—

भाषा देवी भागवत, पावन कथा प्रवाय।
कहत सोई विस्तार कर, छन्द बन्द चित चाय ॥

किन्तु तीसरे स्कंध के अंत में कवि की निम्नलिखित स्वीकारोक्ति यह स्पष्ट करती है कि इस देवीचरित का एक मात्र आधार देवीभागवत ही नहीं है :—

कछू ऊक्त तुलसी कही, व्यास ऊक्त कछु बात।
जुद्ध कथा बरनो जिती, बालमीक वचनात ॥

इसका कारण भी स्पष्ट है। देवी-भागवत में राम का चरित संक्षेप में वर्णन किया गया है और वह भी इस प्रसंग में कि किष्किंधा में सीताहरण के पश्चात् नारदजी के उपदेश से श्री राम ने देवी-यज्ञ किया जिसके फल-स्वरूप वे समुद्र पर पुल बाँधने एवं रावण का वध करने में सफल हुए तथा अपहृत सीता को पुनः प्राप्त कर सके। किन्तु जन-जन में व्याप्त रामकथा का विस्तृत वर्णन देवीचरित के रचयिता को अभीष्ट था; अतएव बालमीकि-रामायण को आधार बनाने में कवि ने संकोच नहीं किया।

देवीचरित की शैली देवीभागवत तथा अन्य पुराणों के समान ही है। पुरातन प्रश्नोत्तर प्रणालो को ही अपनाया गया है। प्रश्नोत्तर प्रणाली आधुनिक शिक्षा-प्रणाली में भी यत्र-तत्र रूपान्तर के साथ चलती है। गूढ़तम रहस्यों के उद्घाटन एवं शंकाओं के समाधान का यह व्यापक, सरल और सर्वग्राह्य तरीका है।

देवीचरित में कवि ने सर्वसाधारण की भाषा का प्रयोग किया है। यहां यह भी स्पष्ट हो जाता है कि देवीचरित देवीभागवत का अक्षरशः अनुवाद मात्र नहीं है। हृदयंगम करने के उद्देश्य से जहां देवीभागवत का अनुक्रम अपनाया गया है, वहाँ कवि ने जहां आवश्यक समझा है और विशेषतया कथा-प्रवाह को

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बनाये रखने के लिये काट-छाँट, हेर-फेर भी की है; किन्तु साथ ही कवि ने यह सावधानी वरती है कि ये न्यूनतम हों।

देवी-भागवत में 'देवीमाहात्म्य' के स्कंध के अतिरिक्त बारह स्कंध ही हैं। देवीचरित में भी बारह स्कंध ही हैं। 'देवीमाहात्म्य' का पृथक् स्कंध नहीं है। प्रथम स्कंध में ही कवि ने संक्षेप में गणपति, सरस्वती तथा अपनी इष्टदेवी 'करणी देवी' की स्तुति कर देवो-चरित का समारम्भ किया है।

देवी-भागवत के समान देवीचरित में भी व्यास-जनमेजय तथा सूत-सौनकादिक की प्रश्नोत्तरी-रूप में कथा चलती है। न देवी-भागवत किस्से कहानियों का संग्रह मात्र है और इसीलिये न देवी-चरित ही। जितने कथानक एव आख्यान-उपाख्यान हैं उन सब को हृदय की उन गुत्थियों को सुलझानें के लिये लाया गया है जिनमें मनीषी और विचारक बुद्धि-प्रस्फुटन काल से उलझते आये हैं।

सूत-सौनकादिक-संवाद व्यास-जनमेजय-संवाद के उद्धरण मात्र हैं। केवल वे संवाद व्यास-जनमेजय-संवाद के उद्धरण रूप में दिखाई नहीं देते जो स्वयं व्यासजी के जन्म तथा उनके जीवन से सम्बन्धित हैं। तत्त्व-निरूपण, सृष्टि-उत्पत्ति एवं कतिपय अत्यंत पुरातन आख्यान-उपाख्यान ऐसे हैं जो देवर्षि नारद के माध्यम द्वारा स्वयं ब्रह्मा से प्राप्त हुए हैं। इन सबका यथास्थान उल्लेख किया जायेगा।

द्वादश स्कंधों में विभिन्न आख्यान और उपाख्यान जो जहाँ तहाँ बिखरे हुए हैं, उनके संबंध में कुछ लिखने से पूर्व देवी, उसके स्वरूप एवम् उसके विभिन्न चरित्रों का जहाँ जहां प्रत्यक्ष उल्लेख हुआ है, उसका विवरण देना समीचीन होगा।

प्रथम स्कंध की निम्नलिखित पंक्तियाँ मनन-योग्य हैं :—

अबिनाशी बिभु अलख अज, आतम ब्रह्म अनूप।
चेतन सक्ती चेतना, संज्ञा द्वै यक रूप॥ छं० २. स्कं० १
जुगल नाम इक जानीये, मङ्गल रूप महाँन।
भरम छाँड जिय परम भज, नित्त लहहु निर्वांन॥ छं० ३. स्कं० १

इसी स्कंध में व्यासजी द्वारा नारदजी से यह प्रश्न करने पर कि पुत्र-प्राप्ति के लिये मैं किस देवी या देवता की आराधना करूं, उन्होंने जो ब्रह्मा-विष्णु

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संवाद उद्धृत किया वह देवी की सर्वोच्च स्थिति के संबंध में अच्छा प्रकाश डालता है। विष्णु ने ब्रह्मा से कहा :

राजसी सक्ति लै तुम रचंत, सातुकि हम पालन अनुसरंत।
मृत्युंजय सक्ती सृष्टि माँहि, तामसी पाय संघरत ताहि।। छं० ४८. स्कं० १
बिन सक्ति तुमहु हम शिव विशेस, लोकेश काज पावँहि न लेस। छं० ४९. स्कं० १
भगवती कृपा कौ पाय भाव, पुन भये पूज्य ताही पसाव। छं० ५२. स्कं० १
सुनियै अज नाहि न हम सुतंत्र, परियाय पिछानहु पारतंत्र। छं० ५४. स्कं० १

इसी स्कंध में एक प्रकरण और आया है जिसमें ब्रह्मा द्वारा प्रेरित वेदों ने आदिशक्ति देवी की स्तुति की जिससे ऐसा कुछ उपाय निकल आये कि विष्णु का कटा हुआ मस्तक फिर प्राप्त हो सके। कथा विवरण इस प्रकार है :—

एक बार ब्रह्मा, रुद्र आदि देवता यज्ञ अनुष्ठान करने के लिये विष्णु के पास मन्त्रणा के लिये गये। विष्णु कहीं अन्यत्र दैत्यों से दीर्घकालीन युद्ध से श्रांत हो धनुष का सहारा लेकर पद्मासन पर बैठे हुए निद्रा में निमग्न थे। सोये हुए व्यक्ति को जगाना अनाचार है अतएव उनकी निद्रा-भंग करने को कोई तैयार नहीं हुआ। अंत में ब्रह्मा ने वम्रियों (दीमकों) से यह कहा कि तुम धनुष की डोरी खा डालो। डोरी काटने पर जो भयंकर ध्वनि होगी उससे विष्णु जाग जायेंगे। इससे एक अप्रत्याशित घटना घट गई। रस्सी के कटने पर धनुष की नोक से जिसका विष्णु सहारा लिये हुए थे उनका मस्तक कट कर समुद्र में जा गिरा। उस समय किंकर्तव्यविमूढ़ ब्रह्मा आदि देवताओं ने वेदों द्वारा उस देवी की स्तुति कराई जो :

जग-जननी माया रूप जोत, इहि सबहि जक्त तातैं उदोत। छं० ८५. स्कं० १

देवी स्तुति से प्रसन्न हुई और यह आकाशवाणी हुई :—

कट्यौ सीस कोऊ कारना, देवन नहि तुम दोस। छं० १०६. स्कं० १
त्वष्टा हय सिर ताहि तें, जोरहु विष्णु जगाय।
सुफल होय कारज सकल, नीत रीत इहि न्याय।। छं० ११२. स्कं० १

इसी स्कंध में देवी के संबंध में स्पष्ट उल्लेख वहाँ आता है कि जब मधुकैटभ के तप से प्रसन्न हो आकाशवाणी हुई और उन दानवों को यह वाञ्छित वर मिला :—

'वरदान देहु मोहि जक्त बीच, मुख मागें जब ही होय मीच'। छं० १३३. स्कं० १

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इन्हीं मधुकैटभ से युद्ध करते करते जब विष्णु श्रांत हुए तो यह सोचने लगे कि ये दानव पराजित क्यों नहीं होते। उन्हें योगदृष्टि से यह ज्ञात हुआ कि वे देवी के वरदान प्राप्त हैं। उन्होंने तब देवी की भावनायुक्त आराधना की। देवी प्रकट हुई और मधुकैटभ को मारने की यह युक्ति बतलाई :—

आजाँन भुजा जुध करहु ऊठ, अंगना बनहुँ मैं दुति अनूठ।
वरदान लेहु तुम कहहुँ बात, मति हरन करहु मैं अकसमात।। छं० १५९. स्कं० १
मुख तें जब लैहै माग मीच, बिन सीस करहु तुम जुद्ध बीच। छं० १६०. स्कं० १

अंत में देवी की बतलाई हुई युक्ति से विष्णु मधुकैटभ का सहार करने में सफल हुए।

द्वितीय स्कंध में व्यास, कौरव-पांडव, परीक्षित, जनमेजय आदि संबंधी जीवन-वृत्त का विवरण है। वैशम्पायन मे भारत के श्रवण के पश्चात् भी जब जनमेजय का चित्त शांत नहीं हुआ तो व्यासजी ने उन्हें देवीभागवत सुनने के लिये प्रेरणा दी जिससे उनके चित्त का भ्रम मिटे। उन्होंने कहा :—

सुनै भागवत कथा सयानैं, जिय संका मिट है हिय जानैं। छं० ३१५. स्कं० २
सब पुरान कौ सार सुधासम, आद अंत सो लखहु अनुक्रम। छं० ३१६. स्कं० २

द्वितीय स्कंध में देवी संबंधी केवल इतना ही उल्लेख है।

तृतीय स्कंध में देवीचरित संबंधी निम्नलिखित आख्यान आये हैं :—

१. देवी के ब्रह्मा, विष्णु, महेश को दर्शन, उसके द्वारा आदेश एवं उनके द्वारा उसकी स्तुतियाँ।

२ देवदत्त का आख्यान।

३ सत्रुजित और सुदर्शन की कथा।

४. एक वणिक् की कथा।

५. राम द्वारा किष्किंधा में देवीव्रत जिसके फलस्वरूप रावण-वध एवं सीता की पुनः प्राप्ति हुई।

इनका यथाक्रम संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :—

१. नई सृष्टि की रचना से पूर्व ब्रह्मा कमलासन पर आश्चर्य-चकित हो इधर-उधर देखने लगे और विचार करने लगे कि मेरा आधार क्या है? वे

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कमल-दंड के सहारे-सहारे चले और उन्हें विष्णु के दर्शन हुए। वहीं महेश भी आ गये। उस समय इन तीनों को एक उज्वल स्वरूप के दर्शन हुए जो विष्णु के शब्दों में 'मनोहर देवीय मूरत मूल. थिती जग-कारन सुक्षम थूल' (छंद०३२. स्कं०३) थी। उसने उन तीनों को सृष्टि के कार्य में अर्थात् यथाक्रम उत्पत्ति, पालन और संहार में प्रवृत्त होने का आदेश दिया। जब उन्होंने कुछ विस्तृत आदेश की प्रार्थना की तो देवी ने एक विमान मँगाया तथा ब्रह्मा, विष्णु और महेश सहित उस पर आरूढ़ होकर रवाना हुई। उस विमान पर विहार करते हुए जब जल पार होने पर थल आया तो नाना प्रकार के पशु-पक्षियों, देवों, गंधर्वों तथा ब्रह्मलोक, वैकुंठ, कैलाश, न्द्रपुरी आदि के वैभव को देखते हुए वे ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ उन्हें आदि-शक्ति के दर्शन हुए।- विष्णु ने कहा :—

'सनातन देवीय आद स्वरूप, इहै जग-कारन बीज अनूप। छं० ५२. स्कं० ३

उसने उन्हें संबोधन करते हुए कहा :—

कह्यौ हरि जेम करचौ जहां कांम, बिरंचन संकर छांड़ बिराम। छं० ५५. स्कं० ३

वहाँ इन तीनों की यह स्थिति हुई कि स्त्री-रूप में उसकी सेवा करते हुए वे सौ वर्ष तक वहाँ रहे।

भई त्रहु देवन की गत भाय,मिले हुय अंगना अंगना माहि।
रहे पग सेवन में अनुरत, समापत ह्वै गये बच्छर सत॥ छं० ५८. स्कं० ३

दोहा—सुध भूल जहाँ हमहु सिव, नारिन मिल हुय नार।
कहाँ तै आये कौन हैं, नहीं जान्यौ निरधार॥ छं० ६१. स्कं० ३

उस समय तीनों ने उसका स्तवन किया और आदि-शक्ति देवी ने उत्तर दिया। इनके कुछ अंश नीचे उद्धृत किये जाते हैं :—

विष्णु की स्तुति से—

विधात्री तुहीं प्रकृती रूप वामाँ।
महा सच्चदारूपनी आद माता॥ छं० ६३. स्कं० ३
स्थिती व्यापकं ब्रह्म की तूं सथाई।
नही तूं जहाँ ब्रह्म हूं ना रहाई॥ छं० ६७. स्कं० ३
हितू येक तूं स्वामिनी है हमारी।
महंमा कहाँ लो कहैगे तुमारी॥ छं० ७३. स्कं० ३
महंमाय तू वेद की आवमाता। छं० ७७. स्कं० ३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

शिव की स्तुति से—

तुही त्रगुनी तै रचे देव तीनूं।
खै ज्ञान सौं ह्वै सबै सु प्रवीनूं ॥ छं० ८०. स्कं० ३
स्रज पालना और तूंही संघारं।
निमित्तं व्रती मात्र आपौ निहारै ॥ छं० ८१. स्कं० ३
दसंद्री तुही तत्व पाँचू दिपावै।
अहंकार बुद्धी सुभावं उपावै ॥ छं० ८२. स्कं० ३
हीयैं अग्यता म्लान कौं दूरहे री।
तरे आदमाया कृपा पाय तेरी ॥ छं० ८६. स्कं० ३

ब्रह्मा की स्तुति से –

करता जग हमको कहै, पोखत सारंगपान।
सिंभु ताहि कह संघरत, ये सब परम अयान ॥ छं० ९२. स्कं० ३०
करता सब तेरी कला, संघरता पुन सोय।
जानहु पालन रीत जिहि, जीय जानी द्रग जोय ॥ छं० ९३. स्कं० ३

भुजंगप्रयात—कहै अद्वती ब्रह्म है येक कोऊ।
स्वयं आपको रूप है दिव्य सोऊ ॥
तथा और कोऊ जहाँ भिन्न तामें।
उपज्जै हुदै बीच संदेश यामें ॥ छं० ९५. स्कं० ३

देवी के उत्तर से—

परंमातमा येक हूँ ओत प्रोतं।
वहूँ अद्वती रूप जानौ उदोतं ॥ छं० ९७. स्कं० ३
अहूँ अद्वती ब्रह्म ना भेद यातै।
निहारै कछू भेद उत्पाद नातै ॥ छं० ९८. स्कं० ३
मती श्री धृती कीरती सुमृती हूँ।
छिसा और मेधा पिपासा छती हूँ ॥ छं० १०१. स्कं० ३
गनौ ब्राह्मी रुद्री सिवा और गौरी।
कुबेरी इंद्रानी कुमारी किसोरी।
वराही तथा वैस्नवी वारुनी हूँ।
नृसंघी कृतंती सु नारायनी हूँ ॥ छं० १०४. स्कं० ३

अंत में आद्यदेवी अंबिका ने ब्रह्मा को सरस्वती, विष्णु को लक्ष्मी तथा शिव को गौरी प्रदान की और उन्हें त्रिगुणी सृष्टि रचने का आदेश दिया। तदुपरांत वे सब उसी विमान पर वापिस आ गये तथा बीज-मंत्र का जप करते हुए सृष्टि-कार्य में संलग्न हुए।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

(२) अयोध्यापुरी में देवदत्त नामक ब्राह्मण रहता था। वह पुत्रहीन था। तमसा नदी के तट पर पुत्रप्राप्ति की इच्छा से एक यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें याज्ञवल्क्य, गोभिल आदि सम्मिलित हुए। गोभिल ने सामवेद के मंत्र का उच्च स्वर से गायन प्रारम्भ किया। उसमें उनका स्वर भंग हो गया। देवदत्त ने ऋषि गोभिल से कहा कि आप यह कैसे पढ़ते हैं ? इस पर क्रोधित होकर गोभिल ने शाप दिया कि तुम्हारे जो पुत्र होगा वह बहरा होगा। देवदत्त द्वारा अनुनय विनय करने पर ऋषि गोभिल द्रवीभूत हुए। उन्होंने कहा कि प्रारम्भ में तो पुत्र मूर्ख ही होगा किन्तु बाद में पंडित होगा और देवी का कृपापात्र बनेगा।

कालान्तर में ऐसा ही हुआ। उस मूर्ख पुत्र से पीडित होकर देवदत्त ने उसे वन में छोड़ दिया। मूर्ख तो था किन्तु वह तपस्वी और सच्चा था। अतएव उसके नाम सत्यतपा और सत्यव्रत पड़ गये। इसी प्रकार सत्य आचरण और तप में वन में उसके चौदह वर्ष व्यतीत हो गये। एक दिन उसके आश्रम के निकट एक निषाद ने एक सूकर के तीर मारा। घायल और पीडित सूकर को देखकर उस मुनि के मुख से 'ऐं ऐं' शब्द निकले। सरस्वती के इस बीज मंत्र के मुख से निकलते ही वे मुनि तत्काल मेधावी हो गये। वे सत्यव्रत मुनि वाल्मीकि के समान कवि हुए। यह देवी की अनुकम्पा से हुआ। सत्यव्रत के माता पिता को जब ये समाचार प्राप्त हुए तो वे उसे घर ले गये।

(३) अयोध्या-नरेश ध्रुवसंध के दो पत्नियाँ थीं—मनोरमा तथा लीलावती। मनोरमा ज्येष्ठ थी। इन दोनों के एक-एक पुत्र था। सुदर्शन मनोरमा का पुत्र था और सत्रुजित लीलावती का। एक बार ध्रुवसंध आखेट के लिये गये। वहाँ सिंह से मुठभेड़ हो गई। राजा ने सिंह को मार दिया किन्तु स्वयं भी मारे गये। अब प्रश्न उपस्थित हुआ उत्तराधिकार का।

मनोरमा अपने पिता कलिंग-नरेश के यहाँ पहुँची और लीलावती अपने पिता अवंती-नरेश के यहां। कलिंग-नरेश वीरसेन और अवन्ती अथवा मालवा-नरेश जुधाजित में घोर संग्राम हुआ। अंत में मालवा-नरेश की विजय हुई और सत्रुजित का राज्याभिषेक हुआ। मनोरमा अपने पुत्र सुदर्शन के साथ भारद्वाज मुनि के आश्रम में चली गई। वहां मुनि-बालकों ने विनोद में सुदर्शन से क्लीब कहा। सुदर्शन की शैशव अवस्था थी। वह क्लीब शब्द का अर्थ न समझा किन्तु क्ली शब्द को रटता रहा। अनुस्वार रहित क्ली देवी का उत्तम मंत्र है और एक प्रकार

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

से उसका जाप होता रहा। सुदर्शन का भारद्वाज मुनि के आश्रम में यज्ञोपवीत संस्कार हुआ तथा उसकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था की गई। वहाँ उसे सरस्वती के दर्शन हुए और उसी के मंत्र के प्रताप से वह धनुर्विद्या में पारंगत हुआ।

कालान्तर में काशी-नरेश ने अपनी कन्या शशिकला का स्वयंवर रचा और विभिन्न राजाओं को निमंत्रण भेजा। स्वयंवर से बहुत पहले शशिकला को स्वप्न में सरस्वती के दर्शन हुए। उस कन्या ने सुदर्शन की चर्चा सुनी थी और उसे वरण करना चाहती थी। सरस्वती ने स्वप्न में यह वरदान दिया कि जिसे तू अपना पति बनाना चाहती है वह तुझे प्राप्त होगा।

इधर शशिकला ने एक ब्राह्मण को भेज कर सुदर्शन को स्वयंवर में अवश्य उपस्थित होने के लिये संदेश भेजा। भारद्वाज मुनि का आशीर्वाद लेकर तथा अंबा का ध्यान करके वह अपनी माता मनोरमा के साथ स्वयंबर में पहुँचा। वहाँ अनेकों राजा एकत्र हुए जिनमें मालवा नरेश जुधाजित भी था। उसने काशी-नरेश से स्पष्ट कह दिया कि यदि संघर्ष नहीं चाहते तो कन्या को यह परामर्श दो कि वह सत्रुजित को वरण करे। शशिकला इस पर तैयार नहीं हुई। अन्त में अपनी पुत्री के परामर्श को मानकर उन्होंने उसी रात्रि को शशिकला का सुदर्शन के साथ पाणिग्रहण संस्कार कर दिया। प्रभात होते ही वे वर-वधू को बिदाकर गंगापार करने के लिए रवाना हुए। जब जुधाजित तथा अन्य राजाओं को इसका पता चला, तो वे अपनी सेनाएँ लेकर उनका मार्ग अवरोध करने के लिये पहुँचे। छः दिन तक घोर युद्ध हुआ और अन्त में सत्रुजित ने काशी-नरेश सुबाहु तथा सुदर्शन को घेर लिया। तब उन्होंने देवी की स्तुति की—

> इतके न उतके रहे अबतौ, पाहि देवी पाहिके। छं० २९९. स्कं० ३
> बृजराज विरद बिचार कै, गजराज तारचौ ग्राह सौं।
> अब तौ उबारहु ईश्वरी, अवगाह विरद उछाह सौं॥ छं० ३००. स्कं० ३

बीज मंत्र के उच्चारण मात्र से सिंह-वाहिनी देवी प्रकट हुई। उन्हें देखकर भी जब जुधाजित और सत्रुजित वाण प्रहार करते रहे तो चंडी ने क्षण भर में उन दोनों को तलवार से मार डाला।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

काशी-नरेश सुबाहु की स्तुति से प्रसन्न हो याचना करने पर देवी ने उन्हें यह वर दिया कि दुर्गा-नाम से हम तुम्हारे द्वार पर निवास करेंगीं :

'देवी कह्यौ बसत तुव द्वारहु, दुर्गा-नाँम धाँम ध्रुव धारहु' । छं० ३१०. स्कं० ३

सुदर्शन को भी आश्वस्त कर तथा मार्ग-दर्शन करके देवी अंतर्धान हो गई और सुदर्शन अयोध्या आकर वहाँ का न्याय-नीति से शासन करने लगे ।

(४) अयोध्या में सुशील नाम का एक वैश्य था । उसका परिवार बड़ा था । अपने धर्म के अनुकूल आजीविका-उपार्जन करने का भरसक प्रयत्न करता किन्तु उसका दारिद्रय दुःख मिटता न था । वह इस कारण चिन्ता-निमग्न रहता था । एक दिन कुछ ब्राह्मण उसके यहाँ आये । उसने उनसे दरिद्रता-निवारण का उपाय पूछा । तब ब्राह्मणों ने उसे बीज-मंत्र दिया और नवरात्रि-व्रत करने को कहा । नौ वर्ष तक विधिपूर्वक व्रत करने पर देवी ने उसे दर्शन दिये तथा भवानी की कृपा से वह सम्पन्न हो गया ।

(५) राम-कथा अत्यन्त विस्तार के साथ वर्णित की गई है । इस कथा के विस्तृत वर्णन का कारण निम्नलिखित पंक्तियों में निहित है । जनमेजय ने पूछा :—

रांवन को रघुवीर पै, बिपत परी कहा बात ।
किसकंधा कैसे करचौ, राम-बरत नव-रात ॥ छं० ३६६. स्कं० ३
देवी जैसैं वर दयौ, मिल कपि पुरी मुकाँम ।
पुल बाँध्यौ पाथोद पै, रांवन मारचौ राम ॥ छं० ३६७. स्कं० ३
वैदेही पाई विजय, अवध पधारे ईस ।
व्यास देव इह बारता, बरनहु बिसवा-बीस ॥ छं० ३६८. स्कं० ३

इक्ष्वाकु-वंशी अयोध्या-नरेश महाराज दशरथ के कौशल्या, कैकेई तथा सुमित्रा—ये तीन रानियाँ थीं । कौशल्या सबसे बड़ी थी । कौशल्या के राम, कैकेई के भरत तथा सुमित्रा के दो पुत्र हुए-लक्ष्मण और शत्रुघ्न । राम ईश्वर के अवतार थे ।

एक दिन विश्वामित्र उनके यहाँ आये तथा राम और लक्ष्मण को मारीच, सुबाहु आदि राक्षसों से यज्ञ की रक्षा के निमित्त उनके साथ भेजने की प्रार्थना की । दशरथ ने अपने दोनों पुत्रों को ऋषि विश्वामित्र को सौंप दिया । वन में राम ने सुबाहु का संहार किया तथा मारीच को उछाल कर दक्षिण दिशा में

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दूर फेंक दिया। इस प्रकार विश्वामित्र तथा अन्य ऋषियों का यज्ञ निर्विघ्न समाप्त हुआ।

मिथिला-नरेश जनक के यहाँ सीता-स्वयंवर के समाचार पाकर विश्वामित्र भी राम और लक्ष्मण के साथ स्वयंवर देखने गये। वहाँ एकत्रित सभी प्रत्याशी नरेश महादेवजी के धनुष को उठाने और उसे तोड़ने में असफल रहे। अन्त में विश्वामित्र की आज्ञा से राम उठे और उस धनुष को चढ़ाकर उसे तोड़ दिया। सीता ने वरमाला उनके गले में डाल दी।

जनकजी ने विश्वामित्र से परामर्श करके यह निश्चय किया कि अपने भाइयों की अन्य पुत्रियों का विवाह भी अयोध्या-नरेश के अन्य पुत्रों के साथ कर दिया जाय तो कितना उत्तम रहे। अस्तु, उन्होंने इसी प्रकार का पत्र राजा दशरथ के पास भेजा। अतः दशरथ भी बरात लेकर आये और राम का सीता, भरत का मांडवी, लक्ष्मण का उर्मिला तथा शत्रुघ्न का श्रुतिकीर्ति के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। बरात वर-बधुओं के साथ अयोध्या लौट आई।

कुछ समय पश्चात् राजा दशरथ ने राम को युवराज बनाने का निश्चय किया। कैकेई ने जब यह सुना तो वह रुष्ट हो गई। उसने राजा दशरथ से दो वरदान जो उनके पास धरोहर थे, माँगे। उसने एक वर तो यह माँगा कि भरत युवराज बनें और दूसरा वर यह माँगा कि राम तपस्वी के वेश में चौदह वर्ष वन में निवास करें। दशरथ किंकर्तव्य-विमूढ़ हो गये।

अपने पिता के वचनों को सत्य करने के लिये राम सहर्ष वन को चले। साथ में लक्ष्मण और सीता भी गये। जब भरत अपनी ननिहाल से लौटकर आये तो उन्होंने देखा कि राम के वियोग में दशरथ स्वर्गवासी हो चुके थे। अन्तिम क्रिया करने के पश्चात् भरत, शत्रुघ्न, गुरु वसिष्ठ आदि वन में गये। भरत ने राम से अयोध्या लौटने का आग्रह किया किन्तु राम ने लौटना अस्वीकार कर दिया। उनकी चरण-पादुका लेकर भरतजी अयोध्या लौट आये।

लक्ष्मण और सीता के साथ राम चित्रकूट-पर्वत पर रहने लगे। वहाँ रावण-भगिनी शूर्पणखा आई और उनके सौंदर्य पर मुग्ध हो उनके साथ विवाह करने का प्रस्ताव रखा। जब उसका प्रणय-प्रस्ताव ठुकरा दिया गया तो नैराश्यजनित क्रोध में वह सीता को भक्षण करने के लिये दौड़ी। अन्त में राम

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

की आज्ञा से लक्ष्मण ने शूर्पणखा के नाक और कान काट दिये और इस प्रकार रावण को चुनौती दी।

शूर्पणखा अपने भाई खर और दूषण के पास गई और उन्हें दल-बल-सहित ले आई। राम ने दल-बल-सहित खर और दूषण का संहार कर दिया। तदनंतर शूर्पणखा रावण के पास गई। रावण ने विचार कर मारीच की सहायता ली। मारीच स्वर्ण-मृग बनकर राम की कुटी के निकट पहुँचा। सीता के आग्रह पर राम उसे मारने के लिये चले। मारीच ने बाण लगने पर मरते समय लक्ष्मण को पुकारा कि मेरी रक्षा करो। सीता ने भयभीत हो कर लक्ष्मण से भाई की सहायता के लिये जाने को कहा। सीता का शासन मानकर लक्ष्मण राम की खोज में चले और इधर रावण पर्णकुटी से सीता का हरण कर ले गया।

जटायु ने उसका मार्ग अवरुद्ध किया किन्तु रावण ने उसे घायल किया और उसके पंख काट डाले तथा उसे वहीं पड़ा छोड़, वह सीता को लंका ले गया और उन्हें अशोक वाटिका में रखा। राम-लक्ष्मण जब वापिस लौटे तो पर्णकुटी में उन्हें सीता नहीं मिली। खोजते हुए वे दक्षिण दिशा की ओर चले। मार्ग में जटायु मिला। उससे यह समाचार मिला कि रावण बलपूर्वक सीता को ले गया और उसी ने उसकी वह दशा की। आगे चलने पर सुग्रीव से भेंट हुई, हनुमान् के माध्यम से राम और सुग्रीव में अग्नि को साक्षी देकर मित्रता हुई। राम ने वाली को मार कर और सुग्रीव को राजा बनाकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

वर्षा व्यतीत होने पर वानर और रीछ विभिन्न दिशाओं में सीता की खोज के लिये भेजे गये। हनुमान, अंगद, जामवंत आदि दक्षिण दिशा में भेजे गये। किन्तु जब वर्षा प्रारम्भ हुई थी तो राम और लक्ष्मण प्रवर्षण-पर्वत पर रहने लगे थे। वहां एक दिन देवर्षि नारद उनके पास आये और कहा कि आपका जन्म ही आततायी रावण के संहार के लिये हुआ है। उन्होंने उनसे नवरात्रि-व्रत करने के लिये अनुरोध किया जिससे वे कृतकार्य हों और रावण का संहार कर सकें। आश्विन-मास निकट होने के कारण नवरात्रि-व्रत करने का स्वर्ण अवसर भी उपस्थित हो गया है। जब अष्टमी की रात्रि आई तो राम ने आदिशक्ति की आराधना की। सिंह पर आरूढ हो चंडी स्वयं प्रकट हुई और कहा—

केऊ बार भक्त सहाय कीनी अवनी भार उतारनै।
अब ग्रेह दसरथ अवतरें महाराज रावन मारनै॥ छं० ८१७. स्कं० ३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चढ़ जाहु लंक निसंक चत्वर घंख रन की धारीयँ।
संघार खल सीय संग लैं प्रभु फेर अवध पधारीयँ ।। छं० ८१८. स्कं० ३

देवी भी वरदान देकर वहां से अपने स्थान को चली गई।

सीता की खोज में हनुमान, अंगद आदि जो दक्षिण दिशा में गये, उनकी समुद्र-तट पर पहुँचने पर जटायु के भाई संपाती से भेंट हुई। सपाती ने कहा कि जो समुद्र को लांघ कर लंका पहुँच सके वह सीता की खोज ला सकेगा। अंत में हनुमान् को यह काम सौंपा गया। वे छोटा रूप धारण कर लंका में पहुँचे। खोज करते-करते उनकी वहां विभीषण से भेंट हुई। उनसे ज्ञात होने पर कि सीता अशोक वाटिका में हैं, हनुमानजी वहां पहुंचे और जिस वृक्ष के नीचे वे बैठी थीं उसके ऊपर बैठ गये। जब रावण तथा अन्य राक्षसियाँ वहां से चली गईं तो अवसर पाकर हनुमान् ने राम की मुद्रिका नीचे डाल दी। सीता को पहले तो आशंका हुई किन्तु अन्त में विश्वास होने पर राम के समाचार प्राप्त करके उन्हें प्रसन्नता हुई।

हनुमान्, सीता से आज्ञा ले उद्यान में लगे फलों को खाने के लिये गये। रक्षकों ने उन्हें रोका इस पर संघर्ष छिड़ गया। जब रावण के पास समाचार पहुंचे तो उसने अपने पुत्र अक्षयकुमार को भेजा गया। जब उसका भी वध हो गया तो मेघनाद को भेजा गया। अंत में मेघनाद हनुमान् को नागपाश में बाँध लाया। रावण ने हनुमान् को यह दंड दिया कि कपड़ा लपेट कर उसकी पूँछ में आग लगा दी जाय। दूत होने के कारण उन्हें प्राणदंड नहीं दिया गया। इस का परिणाम यह हुआ कि हनुमान् लंका-दहन करने में सफल हुए। अंत में समुद्र में कूद तथा अपनी पूंछ बुझाकर वे सीता के सम्मुख उपस्थित हुए। चिह्नस्वरूप कंगन लेकर और सीता से विदा लेकर हनुमान् ने वहाँ से प्रस्थान किया।

हनुमान् से समाचार प्राप्त होने पर राम-लक्ष्मण, सुग्रीव तथा वानर और रीछों की विशाल सेना लेकर रवाना हुए और शीघ्रातिशीघ्र समुद्र तट पर पहुँचे। वहाँ रावण से तिरस्कृत उसका अनुज विभीषण उनकी शरण में आया जिसे राम ने लंकेश के रूप में स्वीकार किया। तदुपरान्त नल और नील की सहायता से समुद्र पर पुल बाँधा गया और सेना सहित राम समुद्र-पार हुए।

अंगद को दूत बनाकर रावण के पास भेजा गया किन्तु व्यर्थ। अंत में भयंकर संग्राम छिड़ गया। कई दिनों तक घमासान युद्ध हुआ जिसमें रावण के

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अनेकानेक योद्धा, भाई और पुत्र सब रणकौशल दिखाकर एक-एक कर मृत्यु को प्राप्त हुए। इस युद्ध का अत्यंत विशद वर्णन किया गया है। कुछ अवसर ऐसे भी आये जब राम की विजय अत्यन्त संदिग्ध दिखाई देने लगी। मेघनाद ने अदृश्य रूप से युद्ध करते हुए राम और लक्ष्मण दोनों को नागबाणों से वेधकर मूर्छित कर दिया। इस स्थिति में पड़े हुए राम और लक्ष्मण को जब पुष्पक विमान में बैठाकर सीता को दिखाया गया तो सीता ने सहज रूप से जो करुणा-क्रंदन किया उसका वर्णन अत्यंत मनोवैज्ञानिक है। इसो प्रकार हतोत्साहित हनुमान् द्वारा यह समाचार मिलने पर कि जब युद्ध होरहा था मेघनाद ने सीता को उनकी आँखों के सामने वध कर के फेंक दिया, राम अत्यंत विह्वल होकर मूर्छित होगये। विभीषण ने अन्त में यह कह कर शंका का समाधान किया कि मायावी मेघनाद की यह माया-लीला है। जब तक रावण जीवित है वह सीता का वध कर नहीं सकता, इसी प्रकार ब्रह्मास्त्र-प्रहारों से जब सभी वानरी सेना, जामवंत आदि यूथपति तथा स्वयं राम और लक्ष्मण भी निर्जीव से हो गये तो जामवंत की प्रेरणा से कैलाश-पर्वत के निकटवर्ती औषध सहित पर्वतशृंग को हनुमान् उखाड़ लाये। उन औषधियों की गंधमात्र से सब सजीव और सबल हो गये। जब मेघनाद की ब्रह्मशक्ति से लक्ष्मण निष्प्राणप्राय हो गये तो सुखेन की प्रेरणा से पुनः हनुमान् संजीवनी जड़ी-सहित नील-गिरि से पर्वतशृंग उखाड़ कर लाये और लक्ष्मण को पुनर्जीवन प्राप्त हुआ। इस अवसर का बंधु-वियोग की आशंका से राम का विकलता-जनित भावावेश-प्रसूत प्रलाप पठनीय है। अन्त में रावण का बध होने पर राम की विजय हुई और विभीषण लंका के राजा बने। जब सीता को ससम्मान लाया गया तो राम ने उन्हें अग्नि-परीक्षा के पश्चात् ही स्वीकार किया।

लक्ष्मण, सीता तथा अन्य यूथपतियों सहित राम पुष्पक-विमान पर आरूढ़ होकर अयोध्या के लिये रवाना हुए। मार्ग में सीता को सभी महत्व-पूर्ण स्थलों को दिखाते हुए वे अयोध्या पहुंचे। अयोध्या में अत्यंत उत्फुल्लता से उनका स्वागत हुआ। इन सभी का विशद वर्णन किया गया है। शुभ मुहूर्त में राम का राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने एक सहस्र ग्यारह वर्ष न्यायनीति से शासन किया।

इसी स्कंध में विष्णु द्वारा आयोजित देवी-यज्ञ का विशद वर्णन आया है जिसमें अन्यान्य देवता सम्मिलित हुए।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चतुर्थ स्कंध में विशिष्ट रूप से कृष्णावतार की कथा है किन्तु तीन प्रकरण ऐसे आये हैं जिनमें देवी ने प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होकर मार्ग-दर्शन किया।

प्रथम प्रकरण उस समय का है जब दैत्यराज भगवद्भक्त प्रह्लाद के नेतृत्व में दैत्यों ने देवताओं को परास्त कर दिया तो इंद्र आदि देवताओं ने शक्ति की स्तुति की। वह प्रकट हुईं और देवताओं की अग्रणी बनकर दैत्यों की सेना के सम्मुख चलीं। जब दैत्यों ने शक्ति को आते देखा तो भयभीत हुए किन्तु प्रह्लाद ने उनका स्तवन करते हुए आदेश मांगा। आदि शक्ति प्रसन्न हुई और दैत्यों से कहा कि तुम निर्भय होकर पाताल में जाकर बसो। इस प्रकार देव और दैत्यों में शांति हुई।

दूसरा प्रकरण उस समय का है जब द्वापर-युग की समाप्ति के पूर्व मदांध क्रूर राजाओं से पीडित पृथ्वी ने ब्रह्मा आदि देवताओं से अपने भार को दूर करने के लिये प्रार्थना की। ब्रह्मादिक देवता विष्णु के पास गये। विष्णु ने उनसे स्पष्ट कहा कि हम स्वतंत्र नहीं हैं। जैसी आदिदेवी की आज्ञा होती है वैसा करते हैं। अंत में आदिशक्ति की आराधना की गई और उसने प्रकट होकर कहा—

मगधाधिप आदक मंद मती, जिह भार दयौ अतसै जगती।
तिह मारन कारन देव तितै, अवतार लहौ तुम जाय ईतै॥ छं० ३२८. स्कं० ४
सगती हम जुक्त चलौ सबही, मिल भार उतारहि जाय मही।
अदती सुत कस्यप जाय वहाँ, जदुवंस लहै अवतार जहाँ॥ छं० ३२९. स्कं० ४
वसुदेव रु देवकी होय बसं, दिती श्राप निवारन त्यौं दरसै।
हुय है भृगु श्राप सौं पुत्र हरी, पुन होवहु मैं जसुदा पुतरी॥ छं० ३३०. स्कं० ४
महिमाय कही जब बात मुखी, सब देव चले सुन होय सुखी।

तीसरा प्रकरण उस समय का है जब श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न को सूतिका-गृह से अवसर पाकर शंबासुर उठा ले गया। कृष्ण ने व्याकुल होकर महामाया का स्मरण किया। जब देवी ने दर्शन दिये तो स्तुति करने के पश्चात् अपने पुत्र प्रद्युम्न के सम्बन्ध में पूछा कि वह कहाँ अदृष्ट हो गया तो अम्बिका ने कहा—

सुत रावरौ सुख-दांन, मत करहु सोच मुरार। छं० ५०९. स्कं० ४
वह कांम को अवतार, हर संबरासुर हाथ।
सब रीत कुसल सुभाय, सो सुता हित सरसाय॥ छं० ५१०. स्कं० ४
सोई अब्द सोरह संग, वह करहि व्याह अनंग। छं० ५११. स्कं० ४
पहुँचाय है तुम पास, उर नहिन होहु उदास। छं० ५१२. स्कं० ४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पंचम स्कंध में जनमेजय द्वारा यह प्रार्थना करने पर :

'कछु चरित्र देवी कहो, सुभ गुन ज्ञान समथ्य' ।

व्यासजी ने निम्न लिखित चरित्रों का वर्णन किया :

(१) महिषासुर, उसकी उत्पत्ति और देवी द्वारा उसका वध।

(२) शुभ-निशुंभ-उनके तप तथा उनके एवम् रक्तबीज आदि उनके सहायकों का देवी द्वारा वध।

(१) पुत्रेच्छा से यज्ञ तथा मंत्र जप में निरत रंभक और रंभ नामक दो दैत्य बंधुओं में से रभक को इन्द्र ने ग्राह बनकर भक्षण कर लिया। इससे रंभ को महान् दुःख हुआ और वह खड्ग लेकर अपना सिर काटने तथा उसे अग्नि में होमने के लिये उद्यत हुआ। उस समय अग्नि देव ने प्रकट होकर आत्म हत्या के जघन्य पाप से उसे रोक उससे वर माँगने को कहा। रंभ ने यह वर मांगा कि मेरा पुत्र इतना बली हो कि वह त्रिलोकी को विजय करे तथा सुर अथवा असुर उसे कोई भी न मार सके। अग्निदेव से उसे वाञ्छित वर प्राप्त हुआ।

रंभ पुत्र-कामना से घूमता रहा किन्तु कोई स्त्री उसे उपयुक्त नहीं जची। एक दिन उसने एक पुष्ट प्रचंड पराक्रम मतवाली महिषी को देखा। उसके साथ रभ ने सहवास किया और वह महिषी गर्भवती होगई। एक महिष ने उसे देखा और उस पर झपटा। रंभ ने उसे रोका और इस प्रयास में वह महिष द्वारा मारा गया। भयभीत महिषी ने यक्षों की शरण ली। जब यक्ष रंभ का दाह-संस्कार करने लगे तो वह महिषी भी स्नेह वश अग्नि में कूद कर जल गई। उस महिषी के गर्भ से तत्काल अतुल पराक्रमी महिषासुर प्रकट हुआ। साथ ही रंभ से रक्तबीज उत्पन्न हुआ।

महिषासुर ने एक लाख वर्ष तक घोर तप किया। हंस पर आरूढ़ हो ब्रह्मा वहाँ पहुँचे और उस से वर माँगने को कहा। उसने यह वर माँगा कि मैं अमर हो जाऊं; किन्तु ब्रह्मा के यह कहने पर कि ऐसा तो संभव ही नहीं है, महिषासुर ने यह वर माँगा कि मुझे सुर, असुर और नर कोई न मार सके, स्त्रियां अबलाएँ होती हैं उनका मुझे भय नहीं है। ब्रह्मा ने उसे वाञ्छित वर दिया।

असुरों को जब यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने उसे अपना राजा बना दिया। शनैः शनैः दैत्यों का बल बढ़ने लगा तथा देवों की स्थिति गिरती गई। दैत्यों

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

के हृदय में देवताओं को विजय करने और स्वर्ग के सुख भोगने की इच्छा प्रबल हुई। महिषासुर ने अपना दूत इन्द्र के पास भेजा और उसके द्वारा संदेश कहलाया कि या तो वह वन में चला जाय अथवा दासत्व स्वीकार करे। परिणाम यह हुआ कि देवों और दानवों में भयंकर युद्ध छिड़ गया। देवताओं की ओर से इन्द्र के अतिरिक्त वरुण, कुबेर, पवन आदि तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी सम्मिलित हुए। अंत में ब्रह्मा, विष्णु, और महेश के युद्ध-स्थल से चले जाने के पश्चात् विजयश्री दैत्यों को मिली। समस्त देवता पर्वत-कंदराओं में जाकर रहने लगे। देवपुरी में महिषासुर का राज्य हो गया। देवता जब यज्ञभाग से भी वञ्चित हुए तो पुनः उन्होंने अपनी रक्षा के लिये ब्रह्मा से प्रार्थना की। ब्रह्मा महेश के पास गये तथा वे दोनों वैकुंठ-पुरी में विष्णु के पास पहुँचे। विष्णु ने कहा—

मरै न पुरसहु मात्र तैं बिध दीनों बरदांन।
जानत हो सब देवजन, महिष बली अप्रमांन ॥ छं० २८६ स्कं० ५
ऐसी कौन त्रीया प्रवर, जिह मारै तहाँ जाय।
तेज अंस सब देवतन, प्रगटै करहु उपाय ॥ छं० २८७ स्कं० ५
तातै बनहै एक त्रीय, संकट मिटहै सोय।
याद करो सुरराय कौं, करुणा कर सब कोय ॥ छं० २८८ स्कं० ५

विष्णु द्वारा बतलाई हुई विधि से कार्य करने पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यम वरुण और इन्द्र आदि सभी देवताओं के ईश्वरीय अंश से एक देवी प्रकट हुई।

सब देवन तेज ही की समुदा, प्रगटी इक देवीय ह्वै प्रमुदा।
दस आठ भुजा दनु कौं दहनी, विकराल मनौ प्रलया वहनी ॥ छं० २९४ स्कं० ५
महा लछीय स्वछछीय रूप महा, कहीयै तिनकी उपमा जु कहा।
तिह के प्रतिअंग रु अंग तथा, जिह जांनहु देवीय रूप जथा ॥ छं० २९५ स्कं० ५

सभी देवों ने उसे वस्त्र और आयुध भी अर्पण किये।

महिषासुर ने जब ये समाचार सुने तो उसने अपने दूतों को उसकी खोज में भेजा। दूतों ने यह समाचार दिया कि अष्टादश भुजाओं वाली एक अनुपम सुन्दरी स्त्री है जो आकाश में स्थित है। वह न सुरी है न दानवी, न किन्नरी है और न नरी। देवतागण घेरे हुए उसका जयकार कर रहे हैं। महिषासुर ने तब उसके पास यह संदेश भेजा कि वह दैत्यराज के साथ विवाह करने की कृपा करे। किन्तु उनका जन्म तो दैत्यों के विनाश के लिये हुआ था, उनके साथ प्रणय सम्बन्ध स्थापित करने के लिये नहीं।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अंत में उस महाशक्ति को कामिनी-मात्र समझ कर उसे बल से प्राप्त करने के लिये दैत्यगण तत्पर हो गये। अत्यन्त भयंकर संग्राम हुआ जिसमें महिषासुर के अनेकानेक प्रचंड पराक्रमी योद्धा एक-एक कर मारे गये। अंत में महिषासुर स्वयं आया और उसने भी वही प्रस्ताव रखा जिसकी आवृत्ति अनेकों बार की जा चुकी थी, तो उस सिंहवाहिनी महाशक्ति ने उत्तर दिया—

नही तुम मोर पिछानत नाह, रचै सोई स्रष्ट चलावत राह। छं० ५१८. स्कं० ५
वही पुरसोतम ऊत्तम् अंग, सदाँ सुख पाय रहूँ तिह संग॥
भजूँ नहि और कहूँ भरतार, निरंजन संग रहूँ निरधार। छं० ५१९. स्कं० ५
अचेतन रूप सदा मुहि अंग, सचेतन होय ग्रहूँ तिह संग। छं० ५२०. स्कं० ५
रमा मोहि नाँम तथा सुरराय, सदाँ सुर आरूव ताहि सिहाय। छं० ५२१. स्कं० ५
हीयँ तुम जीवन की कछु हाँम, बसौ अधलोकही लै बिसराँम। छं० ५२२. स्कं० ५
अरूपा जाँन अजन्माँ ऊह, बनूँ कोई कारन कायक व्यूह। छं० ५२४. स्कं० ५

अन्त में अत्यंत भीषण युद्ध हुआ और उस महाशक्ति ने महिषासुर का वध कर डाला। अवशिष्ट दानव पाताल-लोक को भाग गये। देवों की रक्षा हुई और उन्हें देव-लोक प्राप्त हुआ।

(२) शुम्भ निशुम्भ दो दैत्य बंधुओं ने पुष्कर में दशसहस्र वर्ष तक उग्र तप किया। ब्रह्मा उनके तप से प्रसन्न हुए और उनसे वर मांगने को कहा। उन्होंने भी प्रथम तो अमर होने का वर मांगा। किन्तु ऐसा होना तो असंभव था, अतएव उन्होंने यह वर मांगा कि सुर, असुर, मनुष्य, पशु कोई भी हमें न मार सके। स्त्रियाँ अबला होती हैं, उनका हमें भय नहीं है। ब्रह्मा ने 'तथास्तु' कहकर वहाँ से प्रस्थान किया।

भृगु ने शुभ मुहूर्त में शुंभ का राज्याभिषेक किया। दशों दिशाओं में दैत्यों का प्रभुत्व बढ़ने लगा। दैत्य योद्धा चंड और मुंड भी अपनी सेना सहित उससे आ मिले। वहाँ रक्तबीज भी आगया।

दानवों ने मदोन्मत्त हो अपने राज्य का विस्तार करना प्रारम्भ किया और पुराने वैर का स्मरण कर देवताओं से युद्ध किया और उन्हें परास्त कर दिया। देवेन्द्र इन्द्र भी भाग गये। और देवगण ज्यों-त्यों अपना समय-यापन करने लगे। देवगुरु बृहस्पति से जब उन्होंने परामर्श किया तो उनकी मंत्रणा से उन्होंने महिषासुर को वध करने वाली महाशक्ति का आराधन किया। महाशक्ति प्रकट हुई और देवताओं को आश्वस्त करके वहाँ से रवाना हुई।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चढ़ सिंघ चली ईक रंग छटा, घट कालका सोहत स्याँम घटा। छं० ६५४. स्कं० ५
भजमान विचारत दर्प-भरी, पहुँची जुगरूपा य संभुपुरी।
गहरे स्वर गावत राग गरे, वर बाटका पुष्प जहाँ बिहरे॥ छं० ६५५. स्कं० ५

जब शुंभ को यह ज्ञात हुआ तो उसने अपना प्रणय-संदेश उसके पास भिजवाया। तब –

मुस्काय कह्यो सुरराय मुखा, सब जाँनतहू मति की समुखा। छं० ६६७. स्कं० ५
वर-दायक सुंभ निसुंभ बली, थित खोस करी जिह देवथली।
सुभ लछ्छन की गुन-रास सही, जग जाँनत सूर उदार सही। छं० ६६८. स्कं० ५
सुर जीत लये भिर संगर में, रूपके पल ना गिर भ्रंगर में।
अपनै बल ऊन्नत जाँन अहो, करहै वर तो कॅह जाय कहो। छं० ६७१. स्कं० ५
हीय हेर ईहै मम दर्प हरौ, कर मंगल फेर विवाह करौ॥ छं० ६७४. स्कं० ५

दूत ने यह संदेश शंभु को दिया। पहले तो शुंभ ने इसे दूत की वाचालता-मात्र समझा किन्तु जब दूत ने बल देकर कहा तो उसकी बात का विश्वास करना ही पड़ा।

बच कहत व्याज विधाँन, सोई सुनहु नृपत सुजाँन।
बिच कही सखियन बात, बलवंत वीर विख्यात॥ छं० ६९५ स्कं० ५
जिह संग करहु जुद्ध अवलोक पौरुख ऊद्ध।
पश्चात् करके प्यार; भजहू सोई भरतार। छं० ६९६ स्कं० ५
मिथ्या न आश्रम मोर, कर लेहु जतन करोर। छं० ६९८. स्कं० ५

एक अबला की चुनौती स्वीकार न करके क्या हँसी करायेंगे, यह विचार कर शुंभ ने धूम्रलोचन, चंड और मुंड आदि महापराक्रमी योद्धाओं को क्रम-क्रम से भेजा किन्तु वे सभी उस कालिका देवी के हाथों मारे गये। फिर उसने रक्तबीज को भेजा जिसकी विशेषता यह थी कि उसके रक्त की जितनी बूँदें भूमि पर गिरतीं उतने ही रक्तबीज उत्पन्न होजाते थे। ऐसी स्थिति में—

जब रक्तबीज तै भयो जंग, सुर मिली सक्तीयाँ आय संग। छं० ९१९. स्कं० ५
कोऊ हंस चढ़ी कोऊ धीर कंध, चढ़ गरुड दनुज कहि चिंघ चिंध।
आई सु कोऊक केकी अरोह, संड पै चढी कोऊ मंड छोह॥ छं० ९२०. स्कं० ५
गह पूर पीठ बैठी गजिन्द्र, देखी हम सुनीयँ दानविन्द्र।
नर-प्रष्ट चढी कोऊ लखी नार, प्रेत की प्रष्ट कोऊ बल प्रचार॥ छं० ९२१. स्कं० ५
छह-आनन आनन कोऊक च्यार, नव-दून भुजा नीके निहार। छं० ९२२. स्कं० ५
जग बीच देवता जिती जात, देवीयाँ तिती संगर दिखात।
तामें इक काली दनु कृतंत, बाहै न पराक्रम आद अंत॥ छं० ९२५. स्कं० ५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

साथ ही उस कालिका देवी ने अपने मुख का विस्तार करके कृत्रिम रक्त-बीजों का भक्षण कर लिया। रक्तबीज का रक्त भूमि पर गिरने ही न दिया गया। कालिका देवी उसे उदरस्थ कर उस सब को पचा गई। इस प्रकार रक्तबीज का भी वध हुआ। तदनंतर निशुंभ युद्ध-क्षेत्र में गया किन्तु वह भी वीर-गति को प्राप्त हुआ। दैत्यराज शुंभ भी यह सोचकर युद्ध में गया कि :

मार्यौ खेत निसुंभ कौं, मम भ्राता कुल-मौर।
बिसरं ऐसै बैर कौं, वह कातर कोई और।। छं० १०६२. स्कं० ५
जैहै धन तन जायगो, रहै न आसुर राज।
जस तौहू नंह जायगो, आखर ईही इलाज।। छं० १०६३. स्कं० ५

अत्यंत भयंकर युद्ध हुआ किन्तु अन्त में शुंभ भी मारा गया। अवशिष्ट दानव पाताल-लोक को चले गये।

इसी स्कंध में कतिपय ऐसे व्यक्तियों का भी वृत्तान्त आया है जिन्हें मधु-कैटभ आदि से संबधित कथाओं के श्रवण, पाठ एवम् देवी की आराधना से महत् फल प्राप्त हुआ। उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(१) स्वारोचिष मन्वंतर में एक अत्यंत धर्म-परायण राजा थे जिनका नाम सुरथ था। पर्वत-प्रदेशीय म्लेच्छ राजा ने उन पर आक्रमण किया। राजा को ऐसा आभास हुआ कि उनके मन्त्रिगण भी शत्रु से मिल गये हैं। चिन्तित और व्यथित सुरथ वहाँ से चल दिये और सुमेधा ऋषि के आश्रम में पहुँच, वन में रहने लगे। वहां पुत्र-कलत्र द्वारा निष्कासित समाधि-नामक एक वैश्य भी आ गया। दोनों ने उस ऋषिवर से अपनी-अपनी दुःख-कथाएं कहीं। ऋषि-श्रेष्ठ ने उन्हें देवी की आराधना-विधि बतलाकर उन्हें नवाक्षर-मन्त्र भी दिया। तीन वर्ष तक उन दोनों ने तपस्या की। अन्त में महादेवी ने प्रकट होकर उनसे वर माँगने को कहा। राजा ने यह इच्छा व्यक्त की कि मेरा राज्य पुनः प्राप्त हो जाय। देवी ने मनोवाञ्छित वर दिया और यह कहा कि तुम दस हजार वर्ष तक राज्य करने के पश्चात् सूर्य से जन्म लेकर सावर्णि-नामक मनु होंगे। वैश्य ने केवल ज्ञान-प्राप्ति का वर मांगा, वह उसे प्राप्त हुआ।

छठे स्कंध में निम्नलिखित आख्यान आये हैं जो देवी के प्रत्यक्ष प्रकट होने, उसके द्वारा वरदान देने एवं संकटों के निवारण से संबंधित हैं।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पहला प्रकरण वृत्रासुर के वध का है। वृत्रासुर को विश्वकर्मा ने तप करके यज्ञ की अग्नि से उत्पन्न किया था। वृत्रासुर ने वरुण, कुबेर, देवताओं सहित इन्द्र को पराजित कर उसे भगा दिया। वृत्रासुर ने तप करके ब्रह्मा से वर भी प्राप्त किया और देवपुरी का शासन करने लगा। विष्णु से जब देवताओं ने प्रार्थना की तो उन्होंने देवी की आराधना करने का परामर्श दिया। साथ ही विष्णु ने यह भी कहा कि इन्द्र के वज्र में प्रवेश करके मैं वृत्रासुर के वध में सहायक हो जाऊंगा।

जब देवताओं ने महाशक्ति की आराधना की तो उन्होंने प्रकट होकर उन्हें सफल होने का वर दिया। साथ ही उन्होंने यह भी वचन दिया कि मैं वृत्रासुर की बुद्धि को मोहित कर दूंगी।

इधर देवलोक-वासी ऋषियों और मुनियों की मध्यस्थता से वृत्रासुर और इन्द्र में संधि हुई जिसके अनुसार इन्द्र ने यह प्रतिज्ञा की कि गीले या सूखे किसी अस्त्र-शस्त्र या वज्र से मैं वृत्रासुर पर आघात नहीं करूँगा।

किन्तु यह संधि तो काल-यापन का एक तरीका था। एक दिन जब वृत्रासुर अकेला समुद्र तट पर गया हुआ था तो इन्द्र ने अवसर देखकर समुद्र के फेन में डूबे हुए वज्र से उसे मार डाला। विष्णु ने वज्र में प्रवेश करके और देवी ने वृत्रासुर को इन्द्र का विश्वास करने के लिए प्रेरित करके तथा सागर को फेन-प्लावित करके सहायता की। तदनंतर इन्द्र देवपुरी के शासक हुए।

दूसरा प्रकरण उस समय का है जब इन्द्र ब्रह्महत्या के पाप और निन्दा से निस्तेज हो गये और प्रायश्चित्त करने के लिये मान-सरोवर के निकट अज्ञात वास करने लगे। इन्द्र की अनुपस्थिति में नहुष को इन्द्रासन प्राप्त हुआ। इन्द्रासन पर बैठ, नहुष इन्द्रपत्नी शची की इच्छा करने लगे। पतिव्रता शची ने देवी की आराधना की। देवी ने दर्शन दिये और उसे इन्द्र के अज्ञातवास का स्थान भी बतलाया। साथ ही देवी ने यह भी आश्वासन दिया कि उसके पातिव्रत-धर्म के पालन में वह सहायक होंगी। देवी की अनुकम्पा से शची अज्ञात स्थान में काल-यापन करने वाले अपने पति के दर्शन कर सकी। अश्वमेध यज्ञ द्वारा इन्द्र की ब्रह्महत्या के पाप से मुक्ति हुई किन्तु शची का संकट तब भी दूर नहीं हुआ।

शची बहुत विचार के पश्चात् अन्त में नहुष के पास गई और उनसे यह विनति की कि यदि वे सप्त-ऋषियों द्वारा वहन की हुई पालकी में आरूढ होकर

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आयें तो वे उन्हें ग्रहण करेंगी। कामांध नहुष ने ऋषियों की अनुनय-विनय की तथा उन्हें पालकी ले चलने के लिये मना लिया। जाते समय नहुष ने ऋषियों से शीघ्र चलने के लिये 'सर्प-सर्प' कहा। ऋषियों ने क्रोधित होकर उसे शाप दिया कि तू सर्प हो जा। नहुष इन्द्रासन से च्युत हो गये और तदनंतर इन्द्र के वापिस आने पर शची के कष्ट की निवृत्ति हुई।

तीसरा प्रकरण हैहय-वंशीय क्षत्रिय राजाओं से संबधित है, जिन्होंने भृगु-वंशी सभी ब्राह्मणों को पीड़ित कर दिया। सभी ब्राह्मण-स्त्रियाँ दुःखी हो, हिमाचल पर जाकर, गौरी की एकान्त आराधना करने लगीं। तब देवी ने प्रकट होकर उन्हें यह वर दिया कि तुममें से किसी एक के उरःस्थल से मेरे अंश से संतति होगी, वह तुम्हारे संकट दूर करेगी। कालान्तर में उन ब्राह्मण-स्त्रियों को देख, हैहय-वंशीय क्षत्रिय उनके पीछे भागे। उस समय उस कातर स्त्री के उरःस्थल से एक अत्यंत तेजस्वी पुत्र निकला जिसके देखते ही वे सब क्षत्रिय अंधे हो गये। अंत में अनुनय-विनय करने पर उस तेजस्वी ऊर्व ऋषि ने उन क्षत्रियों को दृष्टि प्रदान तो की किन्तु साथ ही उनसे यह प्रतिज्ञा कराई कि भविष्य में वे ऐसा अनाचार नहीं करेंगे।

सप्तम स्कंध में सूर्य और सोम-वंशों का विवरण है। त्रिशंकु, हरिश्चन्द्र आदि के आख्यान आये हैं। एक प्रकरण ऐसा भी आया है जिसमें देवी को शताक्षी के रूप में प्रकट होकर रक्षा करनी पड़ी। कथानक इस प्रकार है—

हिरण्याक्ष के वंश में दुर्गम नाम का दैत्य उत्पन्न हुआ। उस ने यह विचार किया कि देवों का बल ब्राह्मण हैं और ब्राह्मणों का बल वेद है। यदि ब्रह्मा की आराधना करके मैं उनसे वेद प्राप्त करलूँ तो ब्राह्मण वेद-ज्ञान-विहीन हो जायेंगे, यज्ञादि न कर सकेंगे तथा देवता इस प्रकार यज्ञ-भाग से वञ्चित होकर क्षीणबल हो जायेंगे। यह विचार कर एकसहस्र वर्ष तक उसने कठोर तप किया। ब्रह्मा प्रकट हुए और उस दैत्य ने यही वर माँगा :—

हमकौं हु दीजै वेद हंसग बिप्र जानत जिह बिधी।
जग बीच जेतक मंत्र जप सुर असुर साधत जिह सिधी।
सब जीत कै हम ह्वै सुखी बिस्तारहूँ जस बसुमती।
रुचि भक्ति करहू रावरी सतधृती दाता सुकृती॥ छं० ८३३. स्कं० ७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वाञ्छित वर उस दैत्य को मिला किन्तु ब्राह्मण स्नान, संध्या, वेद, स्मृति आदि सब को भूल गये तो दानवों ने देवपुरी को घेर लिया। देवता-गए वहां से भाग कर पर्वत-कंदराओं में समय-थापन करने लगे। यज्ञ के अभाव में त्राहि-त्राहि करने लगे। जब ब्राह्मणों ने विचार कर आदिशक्ति की आराधना की तब प्रसन्न होकर आदिशक्ति ने पार्वती के रूप में उन्हें दर्शन दिये—

मनि नील-सम जिह नैन निर्मल नील रंग निरंजनी।
ऊन्नत उरोज अनूप आकृत भूख जन-गन भंजनी॥ छं० ८३९. स्कं० ७
नव रात लौं जल नयन सौं वरसाय चहु दिस विष्थुरचौ।
अन्नाद ऊन्नत ओसधी त्रप्ती भई दुरभिख टरचौ। छं० ८४०. स्कं० ७

तब देवता और ब्राह्मण सभी ने उस महाशक्ति का स्तवन किया जिसका कुछ अंश इस प्रकार है :

कूटस्थ सतचित-रूप कारन नित्य तूं निर्दोखनी।
भुवनेश्वरी तूं भगवती परमात्मनी जग-पोषनी।
हम क्षुवा-आतुर हेर हीय द्रग दिव्य रूप दिखाय कै।
सत-सहस नैनन धार संचर वार दीय वरसाय कै॥ छं० ८४२. स्कं० ७
माता सताक्षी भूंम-मडल नांम कल्पत सुर-नरा। छं० ८४३. स्कं० ७

जब दैत्याधिपति दुर्गम को यह समाचार मिला तो वह सेना-सहित वहां पहुँचा। देवता और मुनियों में भगदड़ मच गई। उस समय—

संवोध देवी सुरन कौं अवलंब दैन उतावरी।
पुन आप तन कीय अगन परगट समुभ माया सावरी।
चहुँ ओर फेरी चकर दै विच देवजात बचाय कै।
कलकारनं बाहर बढी रमनीक रूप रचाय कै॥ छं० ८४८. स्कं० ७

दानवों से युद्ध करने के लिये उस निरंजनी देवी ने अनेकों रूप प्रकट किये। तारणी, बाला, त्रिपुरा, कालिका, मातंगी, भैरवी, बगलामुखी, रमा, तुलजा, छिन्नमस्ता, कामाक्षी, मोहिनी, जृम्भिणी आदि उत्पन्न हो गईं।

इन छोर चवसट भई अवरं सस्त्र अस्त्र सँभार कै।
जुध करन लागी जहां तहां विकराल रूप विचार कै॥ छं० ८५२. स्कं० ७

दस दिन भयंकर संग्राम हुआ जिसमें सभी दानव-सेना नष्ट हो गई। अंत में ग्यारहवें दिन स्वयं दुर्गम युद्धस्थल पर उपस्थित हुआ। उसने सभी शक्तियों को पराजित कर दिया। उस समय शताक्षी ने तीक्ष्ण बाणों से उसका संहार किया।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुर और ब्राह्मणों की स्तुति से संतुष्ट होकर शताक्षी ने श्रीमुख से कहा—

चिद वेद है मोहि अंग च्यारहु, घ्यांन धारहु धारना। छं० ८५७ स्कं० ७
वेधेय भये सब वेद बिन, निज हृदय में निरधारीयै।
दुरगम संघारचौ खेत दांनव मोह दुर्गा मानीयै॥ छं० ८५८. स्कं० ७
दुर्गा कहौगे माहा दुख में आय करहुं ऊ बेल कौं।
साकंभरी कहि करहु सुमरन अन्न देहुं ऊभेल कौं।
सुमरन सताक्षी करहु साधन वृष्ट करहुं वारकी॥ छं० ८५९. स्कं० ७

अष्टम स्कंध में देवी की आराधना-विधि के साथ सृष्टि-वर्णन आया है। साथ ही ब्रह्मा-पुत्र स्वायंभुव मनु की सृष्टि-रचना के उद्देश्य से महाशक्ति की आराधना का उल्लेख है। आराधना से प्रसन्न हो देवी प्रकट हुई और उन्हें यह वर दिया कि उनका सृष्टि-रचना-कार्य निर्विघ्न समाप्त होगा।

नवम स्कंध में दान-धर्म-फल, नरक, कुंडों और पातकों आदि का विवरण है। साथ ही उस महाशक्ति के एकांगी स्वरूपों से संबंधित जैसे दक्षिणा देवी, षष्ठीदेवी, मंगलचंडी, मानसी देवी, सुरभि देवी आदि के महत्व का विवरण है।

दशम स्कंध में मन्वंतरों का विवरण है। इन मन्वंतरों में स्वायंभुव मनु, स्वारोचिष मनु, चाक्षुष मनु तथा सावर्णि मनु का विवरण कुछ अधिक विस्तार के साथ दिया गया है। इसी स्कंध में भ्रामरी देवी का चरित्र भी दिया गया है जो इस प्रकार है :—

अरुण नामक एक दैत्य पाताल-लोक से आगया। उसने गंगा-तट पर प्राणायाम एवं गायत्री-मंत्र के द्वारा अत्यंत उग्र तप किया। यहाँ तक कि उसके शरीर से भीषण ज्वाला निकलने लगी जिससे सभी दग्ध होने लगे। देवगण ब्रह्मा की शरण गये। ब्रह्मा ने आकर अरुण को मनोवाञ्छित वर दिया। उसने मांगा—

जुध मरूँ न मैं सस्त्र जोग सौं, रत ह्वं आधी व्याध रोग सौं। छं० १६९. स्कं० १०
सुर नर नारी घात न साधै, बपु चौपद द्वीपद नही बाधै। छं० १७०. स्कं० १०

वर प्राप्त करके जब वह दैत्य विख्यात हुआ तो सभी दैत्यों ने एकमत से उसे अपना राजा बना दिया। देवगण त्रस्त हो शिव की शरण गये। उनके पीछे पीछे दैत्यगण भी गये। किंकर्तव्यविमूढ़ हो जब वे सोचने लगे तो आकाश-वाणी हुई कि आप भवानी की आराधना करें। आकाश-वाणी यह भी हुई—

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विबुधन गिरा कहीं फिर बाचा, सुत दिती इहै भक्त है साँचा ।
जप गायत्री करत है जौलौं, तुम सौं इहै मरं नहीं तौलौं ।। छं० १५४. स्कं० १०

देवगण तब गुरु बृहस्पति के पास गये । उन्होंने उन से कोई ऐसा उपाय करने की प्रार्थना की कि जिससे अरुण दैत्य गायत्री-जप को त्याग दे। गुरु बृहस्पति दैत्यराज के पास गये और उससे कहा—

गायत्री जप करचौ गोय कैं, जान्यौ नहीं जजमान जोय कैं ।
आयौ मैं करने उपदेसा, रह्यौ न राग द्वेष कौ रेसा ।। छं० १५७. स्कं० १०
स्वर्ग भोग भोगहु सुखदाई, बसहु होय निर्भय बरदाई । छं० १५८. स्कं० १०

इतना कहकर गुरु बृहस्पति तो चले गये किन्तु दैत्यराज के मन में भ्रम उत्पन्न हो गया तथा उसने गायत्री-जप छोड़ दिया ।

इधर देवगणों ने देवी भवानी की आराधना करना प्रारम्भ कर दिया । देवी प्रसन्न हुई और प्रकट हुई । देवताओं ने स्तुति के पश्चात् यही इच्छा प्रकट की कि आप अरुण दैत्य से हमें मुक्ति दिलाइये जिससे हम निर्भय हों । भवानी ने प्रकट होकर अपनी मुट्ठी खोली । मुठ्ठी के खुलते ही असंख्य विषैले भ्रमर निकल पड़े । उन्होंने चुन-चुन कर सभी दैत्यों का विनाश कर दिया । वह देवी भ्रामरी देवी के नाम से प्रसिद्ध है ।

एकादश स्कंध में शौच स्नान, संध्योपासन, गायत्री-पुरश्चरण आदि का वर्णन हैं ।

द्वादश स्कंध में गायत्री, उसके ऋषि, उसके हृदय आदि के साथ अन्त में जनमेजय के देवी-यज्ञ का वर्णन है ।

देवीचरित्र-सम्बन्धी आख्यानों के अतिरिक्त देवीचरित के विभिन्न स्कंध में अन्य आख्यान, उपाख्यान भी प्रसंगवश आये हैं ।

देवीभागवत और इसी कारण देवीचरित के वक्ता और श्रोता के रूप में दो प्रमुख पात्र द्वैपायन व्यास तथा जनमेजय हैं । उनके जीवन-वृत्त के सम्बन्ध में विवरण आना स्वाभाविक है । इसके अतिरिक्त सत्-असत्, पाप, पुण्य, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य-सम्बन्धी जनमेजय की शंकाओं का आधार भी तो प्रमुखतया वे जीवन वृत्त थे जिनमें उनकी अभिरुचि थी । उनका विवरण आना भी स्वाभाविक है । इनका संक्षिप्त कथा-वृत्त देवीचरित के आधार पर निम्नलिखित है-

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

द्वैपायन व्यास

द्वैपायन व्यास के पिता पाराशर मुनि तथा उनकी माता सत्यवती थी। पाराशर मुनि को एक दिन गंगा-पार जाना था। केवट की कन्या बासवी अथवा मत्स्यगंधा उन्हें अपने पिता की आज्ञा से नाव द्वारा पार करने गई। संयोग से पाराशर मुनि काम-पीडित होगये। उस कन्या ने कतिपय आपत्तियाँ उपस्थित कीं। पहली आपत्ति तो यह थी कि उसके शरीर से मछली की गंध आती है और दूसरी आपत्ति यह थी कि दिन का समय है। अपने तप के प्रभाव से पाराशर मुनि ने उसकी दुर्गंध ही दूर नहीं की, उसे योजनगंधा बना दिया। दिन के प्रकाश को कृत्रिम कुहरा उत्पन्न करके दूर कर दिया। सहवास के पश्चात् बासवी ने जब यह पूछा कि अब मेरा क्या होगा तो उन्होंने कहा कि तेरा कन्यात्व यथावत् बना रहेगा और जो पुत्र होगा वह विष्णु का अवतार अत्यंत यशस्वी होगा। उस दिन से बासवी अथवा मत्स्यगंधा सत्यवती हुई। उसके जो पुत्र हुआ वह जन्म के पश्चात् ही तप करने चला गया और कालान्तर में द्वैपायन व्यास के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

शंका यह रह जाती है कि बासवी के शरीर से मछली की गंध क्यों आती थी। इसका विवरण इस प्रकार दिया गया है। महाराज उपरचर जो वसु-उपरचर के नाम से प्रसिद्ध हैं, एक बार आखेट खेलने गये। घर पर उनकी पत्नी ऋतुमती थी। वन में पहुँच कर उनका वीर्य-स्खलन हुआ। उन्होंने उस वीर्य को अपनी पत्नी के पास श्येन पक्षी द्वारा भेजा। मार्ग में दूसरा श्येन मिल गया जिससे उसका युद्ध हुआ। वह वीर्य घृताची नाम की अप्सरा जो शापवश मछली के रूप में रहती थी, निगल गई। कालान्तर में मछलहारे ने उसे पकड़ा और जब उसके पेट को चीरा तो दो शिशु उसमें से निकले—एक पुत्र और दूसरी पुत्री। पुत्र को राजा ले गया किन्तु पुत्री उसी केवट के पास रही। मछली के गर्भ से जन्म लेने के कारण उसके शरीर में मछली की गंध आती थी और इसी कारण इसे बासवी अथवा मत्स्यगंधा कहते थे।

कालान्तर में इसी सत्यवती का विवाह महाराज शांतनु से हुआ।

जनमेजय

जनमेजय प्रसिद्ध पांडव अर्जुन के प्रपौत्र, वीर अभिमन्यु के पौत्र, तथा परीक्षित के पुत्र थे। उन्होंने उत्तंक मुनि द्वारा प्रेरित होकर नागयज्ञ किया।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इस यज्ञ को करने का उनका उद्देश्य यह था कि उनके पिता परीक्षित को डसने वाले तक्षक से प्रतिशोध लिया जा सके। तक्षक का अपराध यह नहीं था कि उसने परीक्षित को डसा किन्तु उसका अपराध यह था कि उसने कश्यप ऋषि को जो तक्षक द्वारा डसे जाने के पश्चात् परीक्षित को पुनर्जीवित करने को जा रहे थे, द्रव्य देकर अर्धमार्ग से ही वापस लौटा दिया। इस घटना से शाप की घटना गौण होगई और तक्षक की कुप्रवृत्ति प्रमुखरूप से सम्मुख आगई।

शान्तनु

भरतवंशी नरेशों में शांतनु का स्थान अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। कौरव और जनमेजय के पूर्वज पांडव जिनके मध्य महाभारत युद्ध हुआ—उन दोनों के ये प्रपितामह थे। यदि वे सत्यवती के साथ विवाह करने के लिये अत्यंत इच्छुक न होते तो महाभारत जैसे महायुद्ध की संभवतः बुनियाद ही न पड़ती और न गांगेय को आजन्म अविवाहित रहने तथा राजसिंहासन के त्याग की प्रतिज्ञा करने का अवसर ही आता और न संभवतः ययाति के वंश की रक्षा के लिये नियोग द्वारा संतति-उत्पन्न करने की आवश्यकता पड़ती। शांतनु एवं जनमेजय के अन्य पूर्वजों का संक्षिप्त विवरण निम्न लिखित है—

इक्ष्वाकुवंशी महाभिख नरेश को तपस्वी जीवन तथा वाजपेय यज्ञ करने के कारण स्वर्ग की प्राप्ति हुई। एक बार ये ब्रह्मा के यहाँ गंगा तथा अन्य देवताओं के साथ बैठे हुए थे। वायु के वेग से गंगा का वस्त्र खुल गया। अन्य देवताओं ने अपनी आँखें नीची करलीं। महाभिख नरेश गंगा को यथापूर्व देखते रहे। गंगा की आँखों में भी प्रेम की झलक थी। ब्रह्मा ने यह देखकर दोनों को शाप दिया कि तुम दोनों मृत्युलोक में जन्म लेकर सुख-दुःख भोगो। ये महाभिख नरेश ययातिवंशी प्रतीप के पुत्र शांतनु हुए।

गंगा को भी शाप के कारण स्त्रीरूप धारण करके भार्या बनना पड़ा। किन्तु स्वयं शापित होते हुए भी गंगा ने अष्टवसुओं की उनके शाप-परिपालन में सहायता की।

वसिष्ठ मुनि ने आठों वसुओं को पृथ्वी पर जन्म लेने का इस कारण शाप दिया कि उन्होंने उनकी नंदिनी-नामक गाय को चुरा लिया था। इन अष्ट-वसुओं में द्यौसु नामक वसु प्रधान अपराधी था अतएव वसिष्ठजी ने अनुनय-विनय

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करने पर अन्य सात वसुओं का दंड घटा दिया और कहा कि वे एक-एक वर्ष में ही शापमुक्त हो जायेंगे किन्तु प्रधान अपराधी द्यौसु की शाप की अवधि यथावत् रहेगी।

गंगा ने शाप को सत्य करने के लिये स्त्रीरूप-धारण किया। शांतनु ने उसे देखा, मोहित हुए और विवाह की इच्छा व्यक्त की। गंगा ने इस शर्त पर विवाह करने की स्वीकृति दी कि जिस समय वे उसके इच्छापूर्वक काम करने में बाधा डालेंगे, वह उन्हें छोड़ कर चली जायगी।

गंगा के शांतनु से आठ पुत्र हुए जो अष्टवसु थे। जन्म होते ही गंगा उन्हें गंगा नदी में प्रवाहित कर देती थी। जब अष्टम पुत्र का जन्म हुआ तो शांतनु ने बाधा उपस्थित की। गंगा पूर्वप्रतिज्ञा के अनुसार शांतनु को छोड़कर चली गई। यह अष्टम पुत्र ही गांगेय अथवा भीष्मपितामह थे।

कुछ समय पश्चात् योजनगंधा सत्यवती को शांतनु ने देखा और उस पर मोहित होगये। सत्यवती के पिता ने यह शर्त्त रखी कि यदि उसका दौहित्र राजगद्दी को प्राप्त करे तो वह विवाह करने को तय्यार है। शांतनु तो किंकर्तव्य-विमूढ होगये किन्तु जब गांगेय को यह ज्ञात हुआ तो वह आजन्म अविवाहित रहने एवं सत्यवती के पुत्र को ही राजा बनाने की प्रतिज्ञा करके उसे ले आये और उन्होंने अपने पिता की इच्छापूर्ति की।

कौरव और पांडव

शांतनु के सत्यवती से दो पुत्र हुए—चित्रांगद और विचित्रवीर्य। एक दिन चित्रांगद आखेट के लिये गया। वन में गंधर्वपति से उसका संघर्ष होगया जिसमें वह मृत्यु को प्राप्त हुआ। विचित्रवीर्य की दो पत्नियाँ थीं—अंबा और अंबालिका। नौ वर्ष वैवाहिक जीवन व्यतीत करने के पश्चात् भी उसके कोई संतति नहीं हुई तथा उसकी क्षयरोग से मृत्यु होगई।

स्थिति विचित्र होगई। अंत में गांगेय के अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहने के कारण यही उपाय सोचा गया कि वंश-रक्षा के लिये नियोग द्वारा संतति की उत्पत्ति की जाय। द्वैपायन व्यास अपनी माता की आज्ञा से इस कार्य के लिये तैयार हुए। विचित्रवीर्य की पत्नियों से धृतराष्ट्र और पांडु का जन्म हुआ। धृतराष्ट्र जन्म से अन्धे थे और पांडु पीतवर्ण के थे। तीसरी बार जब प्रयत्न

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

किया गया तो विचित्रवीर्य की कोई भी पत्नी व्यास के पास नहीं गई। उन्होंने एक दासी को भेज दिया जिससे विदुर का जन्म हुआ।

धृतराष्ट्र के गांधारी से सौ पुत्र हुए। पांडु को एक मुनि ने, जब वह आखेट को गये हुए थे तब यह शाप दे दिया कि जब तुम विषय-भोग करोगे तो तुम्हारी मृत्यु हो जायगी। पांडु के दो पत्नियां थीं-कुँती और माद्री; किन्तु शाप के कारण संतति की सम्भावना ही समाप्त होगई। ऐसी स्थिति में देव-आह्वान के उस मंत्र का जो कुँती को दुर्वासा ऋषि की कृपा से प्राप्त हुआ था, उपयोग किया गया। पांडु की अनुमति से कुँती ने क्रम से यम, पवन और इन्द्र का आह्वान किया और उसके युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन हुए। इसी प्रकार माद्री के अश्विनीकुमारों से नकुल और सहदेव हुए।

जब महाभारत के युद्ध में अभिमन्यु तथा पांडवों के अन्य पुत्र भी मारे गये तो कृष्ण ने अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भ में स्थित शिशु की रक्षा की। यह पुत्र परीक्षित हुआ। राज्यपद प्राप्त करने के कुछ वर्षों के पश्चात् एक दिन संयोगवश उन्होंने एक तपस्वी के गले में मरा हुआ सर्प डाल दिया। उस तपस्वी के पुत्र ने यह शाप दिया कि जिस व्यक्ति ने यह अनाचार किया है, उसे एक सप्ताह में तक्षक डस लेगा।

इन परीक्षित नरेश के पुत्र ही जनमेजय थे जो देवीभागवत और इसलिये देवीचरित्र के प्रधान श्रोता हैं। यह संपूर्ण विवरण प्रथम तथा द्वितीय स्कंध में आया है।

कृष्ण

कृष्ण नारायण अथवा विष्णु के अंशावतार थे। उनके जीवन की अनेक घटनाओं के सम्बन्ध में जनमेजय के हृदय में अनेकों शंकाएं थीं। कृष्ण अवतारी पुरुष तो थे ही, साथ ही उसके प्रपितामह अर्जुन के सखा और मार्गदर्शक थे। उनके जीवनवृत्त में जनमेजय की अभिरुचि का होना स्वाभाविक थी। चतुर्थ स्कंध में उनका जीवनवृत्त विस्तार से चित्रित किया गया है। अत्यन्त संक्षेप में उनका जीवनवृत्त निम्नलिखित है।

कृष्ण वसुदेव और देवकी के पुत्र थे। देवकी का भाई कंस मथुरा-नरेश था। विवाह सम्पन्न होने पर जब वसुदेव-देवकी की बिदा हो रही थी तो

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आकाश-वाणी हुई कि देवकी के गर्भ से उत्पन्न आठवां पुत्र कंस का हनन करेगा। रंग में भंग होगया। देवकी और वसुदेव के संकटपूर्ण जीवन का श्रीगणेश होगया। कंस ने देवकी को इस शर्त पर जीवित रहने दिया कि देवकी की प्रत्येक संतति को वसुदेव अविलंब उसे सौंप देंगे। आशंकावश उन्हें कारागार में भी डाल दिया गया।

कृष्ण का जन्म मध्यरात्रि को हुआ। मायावश सभी द्वारपाल सो गये और कारागार के द्वार भी खुल गये। वसुदेव कृष्ण को लेकर मथुरा से गोकुल गये। वहां से पूर्वयोजना के अनुसार नन्द-यशोदा की नवजात पुत्री को ले आये। वसुदेव के वापिस आने पर ही द्वारपाल जागे। कंस को जब पुत्री के जन्म का समाचार मिला तो वह तत्काल आया और जब उसका बध करने को था तो वह उसके हाथ से छूटकर आकाश में विलीन होगई। उस समय यह आकाश-वाणी भी हुई कि तेरा मारने वाला उत्पन्न होगया।

कंस ने विकल हो यह व्यवस्था की कि जितने भी उसके राज्य में नवजात शिशु हैं उनका संहार कर दिया जाय। इस अभियान में पूतना मारी गई। अंत में कृष्ण और उनके भाई बलदेव को कंस ने मथुरा बुलवाया। कृष्ण ने कंस का संहार करके उसका राज्य उसके पिता उग्रसैन को दे दिया।

कृष्ण द्वारिका-पुरी चले गये। वहां उन्होंने राज्य स्थापित किया। उनके सोलह हजार रानियां थीं। ये वे अप्सराएं थीं जिन्हें अपनी पत्नी बनाने का नारायण ने वर दिया था।

कृष्ण ने अपनी पत्नो जामवती द्वारा अनुनय-विनय करने पर उसके पुत्र होने की कामना से शिवजी की आराधना की। पार्वती ने उन्हें यह वर दिया कि केवल जामवती के ही नहीं, उनकी प्रत्येक पत्नी के दश-दश पुत्र होंगे। किन्तु साथ ही उनसे यह भी कहा कि अहंकार और परस्पर द्वेष के कारण वे सभी बड़े होने पर नष्ट हो जायंगे, उस समय वे दु:खी न हों।

कृष्ण का अवतार जिस उद्देश्य से हुआ था (अर्थात् अनाचारी उद्दंड राजाओं के विनाश के लिये) उसके पूर्ण होने पर तथा यादववंश के जिस विनाश का पूर्वसंकेत पार्वतो ने उन्हें दिया था, उसका आभास होने पर कृष्ण ने अपना शरीर-त्याग दिया।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वंश-वर्णन आदि की संगति

देवीचरित का प्रधान आधार देवीभागवत है जो एक महापुराण है। प्रत्येक पुराण के पांच अंग होते हैं—सर्ग, उपसर्ग, वंश, मन्वंतर और वंशानुचरित। इन पांचों की व्याख्या देवीभागवत में इस प्रकार है।

निर्गुणा या सदा नित्या व्यापिकाऽविकृता शिवा।
योगगम्याऽखिलाधारा तुरीया या च संस्थिता॥ १६, स्कं० १
तस्यास्तु सात्विकी शक्ती राजसी तामसी तथा।
महालक्ष्मीसरस्वतीमहाकालीति ता: स्त्रिय:॥ २०, स्कं० १
तासां तिसृणां शक्तीनां देहांगीकारलक्षण:।
सृष्ट्यर्थं च समाख्यात: सर्ग: शास्त्रविशारदै:॥ २१, स्कं० १
हरिद्रुहिणरुद्राणां समुत्पत्तिस्तत: स्मृता।
पालनोत्पत्तिनाशार्थं प्रतिसर्ग: स्मृतो हि स:॥ २२, स्कं० १
सोमसूर्योद्भवानां च राज्ञां वंशप्रकीर्तनम्।
हिरण्यकशिप्वादीनां वंशास्ते परिकीर्तिता:॥ २३, स्कं० १
स्वायंभुवमुखानां च मनूनां परिवर्णनम्।
कालसंख्या तथा तेषां तत्तन्मवंन्तराणि च॥ २४, स्कं० १
तेषां वंशानुकथनं वंशानुचरितं स्मृतम्। २५, स्कं० १

देवीचरित के प्रथम स्कंध के छंद २३ से छंद २८ तक इन्हीं पांच अंगों की व्याख्या की गई है जो इस प्रकार है—

सक्ती निर्गुण अगुणस्वरूपा, रुचिर देह धारिक सुचरूपा॥ छं० २३, स्कं० १
यह पुरान महि सर्ग उचारै, विदुष भेद बहुरूप विचारै।
विश्व करत उतपत्ति बिरंचन, पुन हरि करत ताहि कौ पालन॥ छं० २४, स्कं० १
शिव सृष्टी ताही संघारै, यह प्रतिसर्ग बिचार उचारै।
बंस सौम अरु सूरजवंसी, अरु हरनाक्षहु दईतन अंसी॥ छं० २५, स्कं० १
इहि बंसहु की कथा अनेकहु, इही बंस कहियत अबरेखहु।
मनवंतर स्वायंभुव मानहु, वृग आवक और अनमानहु॥ छं० २६, स्कं० १
इहि मनवंतर नाम उचारै, विविध भांत गन समय विचारै।
तिन मनुअन कौ बंस तहांही, किय बरनन इहि कथा कहांही॥ छं० २७, स्कं० १
इहि बंसानुचरित्त अनूपहु, लख पुराण इहि तत्यसु लेखहु॥ छं० २८, स्कं० १

देवीचरित में भी देवी के चरित्र के अतिरिक्त उपरोक्त सभी का वर्णन देवीभागवत के अनुसार आया है जिसका उल्लेख संक्षेप में ऊपर किया जा चुका है।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मूल प्रश्न

जनमेजय के सम्मुख एक बड़ी समस्या यह थी कि वह किसे आप्त पुरुष माने जिसके वाक्यों और चरित्रों को जीवन के लिये प्रमाण एवं प्रकाशस्तंभ माना जा सके। देवाधिदेवों के चरित्रों में भी जब छिद्र दिखाई देते हैं तो कौन ऐसा है जिसे आप्त माना जा सके। यदि लब्धज्ञान ऋषियों, मुनियों तथा देवाधिदेव इन्द्र, विष्णु आदि के जीवन में दुर्बल स्थल दिखाई देते हैं तो ऐसा क्यों है ?

ये दोनों प्रश्न संग्रथित हैं। सृष्टि के चक्र में आने पर कोई भी देव हो, मनुष्य हो या तिर्यक् योनि में हो, ब्रह्मा हो, विष्णु हो, इन्द्र हो अथवा कोई ऋषि, मुनि हो—सब त्रिगुणात्मक प्रकृति के अधीन हो जाते हैं। दूसरी बात यह है कि सत्, रज अथवा तम सदैव ही मिश्रित रूप में उपलब्ध होते हैं। जिस गुण की प्रधानता होती है उसी के आधार पर सुविधा की दृष्टि से वर्गीकरण कर लिया जाता है। यही कारण है कि श्रेष्ठतम व्यक्तियों, देवताओं तथा देवाधिदेवों के चरित्र में दुर्बल स्थल दिखाई देते हैं।

सृष्टि का मूल ही कर्म है। इसके बंधन में पड़कर जन्म लेने पड़ते हैं और भोग भोगने पड़ते हैं। इन्द्र, कश्यप और विष्णु जब सत्पथ से गिरे तो उन्हें भी उसका फल भोगना पड़ा। कर्म का फल तो सभी को भोगना पड़ता है—छोटा हो अथवा बड़ा। इन्द्र ने जब अकारण ब्रह्महत्या की तो वे निस्तेज हो गये। विष्णु ने जब बलि को छला तो वामन तो हुए ही, उन्हें द्वारपाल का काम भी करना पड़ा। कर्म की सार्वभौम प्रधानता के स्पष्टीकरण के लिये इन विभिन्न दृष्टान्तों का समावेश किया गया है।

त्रिगुणात्मक होने के कारण इस सृष्टि का आधार ही अहंकार है जिससे मोह उत्पन्न होता है और जब जो अहंकार के कारण इस त्रिगुणात्मक माया में ग्रसित हो जाता है, चाहे अल्प काल के लिये ही हो, वह सत्पथ से विचलित हो जाता है। महानतम व्यक्तियों और देवाधिदेवों के चरित्र के दुर्बल स्थलों का यही कारण है। जैसा ब्रह्माजी ने नारद से धर्म-अधर्म, कर्म-अकर्म, सृष्टि आदि के संबंध में प्रश्न करने पर उत्तर दिया है—

इहाँ नहीं रागीय को अधिकार।
विरागीव जानत जाहि बिचार॥ छं० २२, स्कं० ३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इसलिये राग और द्वेषरहित स्थिति होने पर ही आप्त-वाक्य की प्रामाणिकता आती है और दुर्बलताओं से मुक्ति होती है। कवि की वाणी में ये भाव इस प्रकार व्यक्त हुए हैं :—

सब माया अधीन गनौ सुर कौं, अरु मानवहू फिर आसुर कौं।
ऊतपत्त करं ब्रहमंड अजा, पुन पालन नासन आज प्रजा ।। छं० १६ स्कं० ५.
जग में जड़ जंगम जीव जिते, रचना प्रकृती कृत कर्म रते।
प्रकृती अहंकार ऊपावत है, जड़ जंगम जीव जनावत है ।। छं० १७ स्कं० ५.
बिध और हरी हर देव बने, गुन तीनहु सौं उतकृष्ट गने।
अहंकार बिना अहु होत इहै, गुनहू कौ सुभाव सु कैसे गहै ।। छं० १८ स्कं० ५
अहंकार तै मोहहु होत उदै, बिच बंधन कै कहि जीव बँधै।
जग पालक सोय जनार्दनहू, गुन और अहंकार जुतं गनहू ।। छं० २२ स्कं० ५.
अहंकार की धार में बिस्नु इही, ममता बस बूढत मोह मँही। छं० २३ स्कं० ५.

प्रश्न यह है कि सृष्टि का आधार ही जब अहंकार है और बहुधा अहंकार से जब मोह उत्पन्न होता है तो इससे मुक्ति कैसे संभव है ? एक बात जो इस संबंध में विचारणीय है वह यह है कि गुणों के क्रम से अहंकार भी सात्विक, राजस और तामस होता है।

.... गुनहू क्रम सौं अहंकार गनौ। छं० २४, स्कं० ५

स्पष्ट है कि शनैः शनैः तामस और राजस अहकार का शमन करके सात्विक अहंकार को प्रबल बनाने में साधक की साधना है। किन्तु सात्विक अहंकार से भी तो मोह उत्पन्न हो सकता है जिसके लिये महामाया की आराधना अपेक्षित है।

आधुनिक शब्दावली का प्रयोग करें तो कहा जा सकता है कि व्यष्टि की सत्ता का आधार ही 'अहं' अथवा 'मैं' है। जब तक व्यष्टि की सत्ता है' मैं' रहेगा। 'मैं' अहंकार का पर्यायवाची है। अहंकार शुभभावना-प्रेरित भी हो सकता है और अशुभभावना-प्रेरित भी, संकीर्ण भी हो सकता है और व्यापक भी, लोक-हित-साधक भी हो सकता है और लोकहित-बाधक भी। लोकहित-साधक, व्यापक और शुभभावना-प्रेरित अहं को उत्तरोत्तर प्रबल बनाना तथा लोकहित-बाधक, संकीर्ण और अशुभभावना-प्रेरित अहं के शमन करने का अभ्यास करना ही साधना है। शुभ कार्य में भी अधिक वासना होने पर उस कार्य की सम्पन्नता-हेतु असन्मार्ग का अनुसरण करने की प्रवृत्ति हो जाती है—यही

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सात्विक अहंकारजनित मोह है। विष्णुसंबंधी आख्यानों में जिन दुर्बल स्थलों का उल्लेख है वे इसी मोह के प्रतीक हैं।

महामाया

माया, मैया, माता, अंबा—ये सभी शब्द पर्यायवाची प्रतीत होते हैं और इस दृष्टि से मायाशब्द की व्युत्पत्ति माँ, मैया अथवा माता से मानना युक्ति-संगत है। अधिक प्रचलित अर्थ में माया शब्द भ्रम, मिथ्या, 'जो नहीं है' का पर्याय है। इस प्रचलित अर्थ के मूल में वह द्वंद्व प्रतीत होता है जिसके आधार पर पुरातन काल में समाजों का गठन मातृ-प्रधान अथवा पितृ-प्रधान हुआ था। इस विचार के मूल में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष धारणाएँ हैं। प्रत्येक जीवधारी की उत्पत्ति माँ के गर्भ से होती है। प्रत्यक्ष रूप से किसी जीवधारी की माँ को ही जाना जा सकता है। जहाँ तक पिता का संबंध है वह अप्रत्यक्ष है और उसके पिता होने की प्रामाणिकता का आधार भी माँ ही है। वीर्य को प्रधानता देने वाले व्यक्ति माँ के गर्भ को भूमि के सदृश मान कर यह कह सकते हैं कि संतति को माँ की मानना एक भ्रम है और इसी कारण जो प्रत्यक्ष है वह भ्रम है, उत्पत्ति का वास्तविक कारण तो पुरुष का वीर्य है। संभवतः इसी कारण माया का अर्थ भ्रम, मिथ्या आदि समय के प्रवाह के साथ हो गया।

इसी व्यष्टि-प्रधान विचार को जब समष्टिरूप प्राप्त हुआ तो जगत् की सृष्टि के विवेचन में प्रकृति और पुरुष का प्रादुर्भाव हुआ। मूल कारण की कल्पना में ब्रह्म और परा-प्रकृति की कल्पना हुई। निम्नलिखित पंक्तियां उस समन्वय की प्रतीक हैं जिसके बिना सृष्टि-संबंधी कोई भी विवेचन अपूर्ण था—

> अविनाशी विभु अलख अज, आतम ब्रह्म अनूप।
> चेतन-सत्ती चेतना, संज्ञा द्वै यकरूप॥ छं० २. स्कं० १

जगत्-जननी महामाया जगदंबा है, सब की माता है, शक्तिस्वरूपिणी है। उन्हीं की आराधना से संसार में सब कुछ संभव है।

सत्, रज, तम की साम्य-स्थिति में सृष्टि का मूल कारण महामाया है एवं इन गुणों की विषमता में ही सृष्टि की उत्पत्ति निहित है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश, सरस्वती, लक्ष्मी और भवानी-रूपिणी शक्तियों से युक्त होने पर ही शक्ति-सम्पन्न होते हैं।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बीजमन्त्र

देवीचरित के विभिन्न आख्यानों में बीजमन्त्रों का उल्लेख हुआ है। उदाहरण के लिये तृतीय स्कंध में यह आख्यान आया है कि सत्यव्रत तपस्वी और सच्चा तो था, किन्तु था मूर्ख। उसके मुख से 'ऐ ऐ' इस सरस्वती के बीजमन्त्र के उच्चारित होते ही उसके मेधावी बनने का श्रीगणेश हो गया। इसी स्कंध में यह आख्यान भी आया है कि राजकुमार सुदर्शन शैशव-अवस्था में 'क्ली' अक्षर का जप करता रहा। अनुस्वाररहित 'क्ली' देवी का उत्तम बीजमन्त्र है। इसके प्रभाव से उसके सभी कार्य सिद्ध हुए। देवी ने प्रत्यक्ष सहायता भी की। इसी प्रकार और भी बीजमन्त्र हैं।

इन बीजमन्त्रों के संबंध में अधिक लिख सकना संभव नहीं है किन्तु इतना स्पष्ट है कि विशिष्ट ध्वनियां मस्तिष्क के शिराजाल में विभिन्न प्रकार के स्पंदन उत्पन्न करती हैं। यदि कोई शिशु मूढ हो, अस्थिर चित्त हो अथवा उसमें किसी अन्य प्रकार की मानसिक या बौद्धिक त्रुटि हो और यदि अभीष्ट प्रकार का स्पंदन शिराक्षेत्र में उत्पन्न किया जाय तो संभव है कि जिस प्रकार की उपलब्धियों का आख्यानों में उल्लेख है—उन्हें प्राप्त किया जा सकता है। किन्तु यह प्रयोग से संबंधित है। प्रयोग द्वारा ही किसी निश्चित परिणाम पर पहुंचा जा सकता है कि किस आयु में, कितने समय तक और किस प्रकार इन बीज-मन्त्रों का जप करने पर कितनी सफलता प्राप्त हो सकती है।

काव्यसंबंधी साधारण विवेचन

देवीचरित के रचयिता चारण थे, अतएव उनकी रचना में उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप आजाना स्वाभाविक है। जहां-जहां युद्धों, मनोरम स्थानों तथा शृंगार आदि का वर्णन आया है कवि की मुक्त लेखनी विशद चित्रण करने में सफल हुई है।

देवीचरित एक विशाल ग्रंथ है जिसमें बारह हजार से अधिक विभिन्न प्रकार के छंद हैं। देवी-भागवत के अनुक्रम को अपना कर इतनी बड़ी रचना करना ही इस बात की साक्षी है कि श्री बुद्धसिंहजी उच्च कोटि के कवि थे।

देवीचरित की भाषा व्रज और पिंगलमिश्रित है जिसमें स्थानीय बोल-चाल के शब्द भी यथास्थान आये हैं। इसमें दोहा, सोरठा, हरिगोतिका,

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

त्रोटक, नाराच, कवित्त, उधोर, मुक्तादाम, द्वै अखरी, भुजंगप्रयात, पद्धरी आदि विभिन्न प्रकार के छंदों का प्रयोग हुआ है। विषयविवेचन के प्रसंग में जो उद्धरण दिये गये हैं उनसे काव्य-शैली एवं भाषा की कुछ झलक प्राप्त हो जायगी। यदि रस और भाषा-संबंधी सोदाहरण विशद विवेचन किया जाय तो भूमिका का कलेवर बहुत अधिक बढ़ जायगा। इस आशंका से हम इतना लिख कर ही संतोष कर लेते हैं।

संपादन-संबंधी संकेत

संपादन करने में मूल प्रति के पाठ को अपनाया गया है। अर्थ की संगति बैठाने की दृष्टि से पदच्छेद करने में आवश्यक सावधानी बरती गई है। प्रतिलिपि में निम्नलिखित न्यूनतम संशोधन किये गये हैं—

१. अनुस्वार में आवश्यकतानुसार ँ का चिह्न लगा दिया गया है।

२. कहीं कहीं गति-भंग दोष को दूर करने के लिये 'ई' की मात्रा के स्थान पर 'इ' की मात्रा करदी गई है।

३. जहां मूल प्रति में अक्षर स्पष्ट नहीं हैं अथवा अक्षर मिटे हुए हैं वहां [ ] का चिह्न लगा दिया गया है।

४. मूल प्रति से जहां पाठ-भेद किया गया है वहां पाद-टिप्पणी में इसका स्पष्ट उल्लेख कर दिया गया है।

५. प्रत्येक पृष्ठ के अन्त में पाठकों की सुविधा के लिये कुछ पाद-टिप्पणियां दी गई हैं।

इसी प्रसंग में देवीचरित की मूल प्रति के विषय में भी कुछ निवेदन करना आवश्यक है। यह मूल प्रति लेखक के वंशजों ने बड़ी अच्छी तरह से सुरक्षित करके रखी, परन्तु फिर भी प्रारंभ के कुछ पृष्ठ किसी कारणवश क्षत-विक्षत हो गये, अतः उनको उन्होंने पुनः लिखवाकर मूल प्रति में जोड़ दिया। प्रति में लिपिकार ने कुछ वर्तनी की अशुद्धियां अवश्य करदी हैं, परन्तु कुल मिलाकर प्रति शुद्ध और सुन्दर है। राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ने इस प्रति को संगृहीत करके हिन्दी के लिये बहुत उपयोगी कार्य किया है, क्योंकि यही एक मात्र ग्रन्थ है जो कि देवी के चरित्र को आधार बनाकर लिखा गया है।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आभार प्रदर्शन—

ग्रन्त में मैं राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के निदेशक माननीय डॉ० फतहसिंहजी एम. ए., डी. लिट्, का अत्यन्त ही आभारी हूँ कि जिन्होंने इस प्रति को उपलब्ध करा के इस ग्रन्थ के संपादन का मुझे अवसर प्रदान किया। इस ग्रन्थ के प्रूफ संशोधन में प्रतिष्ठान के जिन-जिन व्यक्तियों ने कार्य किया है उनको मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ। पं० लक्ष्मीनारायण गोस्वामी ने समय-समय पर मुझे सम्पादन में जो परामर्श और सहायता प्रदान की है, उसको भी नहीं भुलाया जा सकता, अतः मैं गोस्वामी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

—हुक्मचन्द चतुर्वेदी

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

प्रथम स्कंध

श्रीगणेशाय नमः । श्रीसरस्वती नमः । श्रीगुरुदेवाय नमः ।

अथ श्रीदेवीचरित ग्रंथ राजश्री जागीरदार बुद्धसिंहजी चारन सँडायच-मोंजा मदोरा रियासत नरसिंहगढ़ सो० श्रा० कृत प्रारंभ—

दोहा— श्रीसरस्वति गणपति सुमिर, बरजत विघन[1] विशाद[2]।
मङ्गल-हित बन्दत मुनी, यह परिपाटी श्राद[3] ॥१
अबिनाशी विभु अलख अज, आतम ब्रह्म अनूप।
चेतन-सक्ती चेतना, संज्ञा द्वै यक[4] रूप ॥२
युगल नाम इक जानिये, मङ्गलरूप महांन।
भरम छांड़ जिय परम भज, नित्त[5] लहहु निर्वान ॥३

कवित्त— करनी तें इन्द्र सुरवृन्द हू सुधारचो स्वर्ग,
करनी तें शेश[6] सीस धार राखी धरनी।
करनी-प्रभावहू से रंक ही तें राव होत,
करनी की कर्मकथा बेद-हू नें बरनी।
द्रव्य[7] देह धार सोई करनी प्रगट भई,
चारन के वंश श्राय तारन-हू तरनी।
ताहि को उचारें नाम बिघन बिलाय जाय,
मङ्गल को करन श्रमङ्गल की हरनी ॥४

दोहा— इही समय बिच अवतरी, करनी नाम कहाहि।
जङ्गलधर गङ्गाजु ही, जग कीरति है जाहि ॥५
देवल देवो दूसरी, प्रगटी देस पछाहि[8]।
देवल करनी द्रव्य दुति[9], जग पुज्जत[10] है जाहि ॥६

---

१ विघ्न। २ विषाद। ३ आदि। ४ एक। ५ नित्य। ६ शेष। ७ दिव्य।
८ पश्चिम में। ९ द्युति। १० पूजत।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हिंगलाज अवतार हुय[1], सकव[2] भक्त-गृह सोय ।
इस्ट[3]देव मांनत यहै, मङ्गल - दायक मोय ॥७

करनी बन्दन चरण कर, ध्यान सुदेवल धार ।
आद्या देवी ईश्वरी, बरनत कथा विचार ॥८

निमसारन[4] में आन निध, सूत कही समुझाय ।
सोंनकादहू श्रुत सुनी, सबहि रिषन समुदाय ॥९

भाषा देवी-भागवत, पाँवन कथा प्रवाय ।
कहत सोई बिस्तार कर, छन्द-बन्द चित चाय ॥१०

छन्द· द्वैपायन श्रीव्यास विमल दुति, बिय[5] कर जोर चरन तिह् बन्दति ।
हेमकरी—प्रथम व्यास संख्या कहि पाछे, रुचिर कथा देवी चित राचै ॥११

†प्रथम व्यास ब्रह्मा परजापति[6], शुक्र व्यास अरु व्यास बृहसपति ।
सविता मृत[7] मघवा वासिस्टहु[8], सुनहु सारसुत[9] व्यास सपस्टहु ॥१२

[ता पाछे][10]भये व्यास त्रधामा[11],त्रवृख[12]व्यास किय काज तमामा ।
भरद्वाज अरु अंतरिक्ष भय, धर्म त्रयारुण[13] व्यास धनंजय ॥१३

मेधातिथ वृत्ती अत्री गोतम, उत्तम हरियातमा[14] अति उत्तम ।
बेंनों बाजश्रवा[15] किये बरनन, पुन सुन लेउ सोम पुस्पायन[16] ॥१४

त्रनहि बिन्दु[17]भार्गव अरु सक्ती, जात करन[18] किय पावन जगती ।
सत्ताईस व्यास उत्तर सुन, द्रड मति भये व्यास द्वीपायन[19] ॥१५†

सत्तवती पारासर संभव, भये अवतार बिस्नु तारन भव ।
अस्टावसहु पुरांन उचारे, सुभग ज्ञांन विज्ञांन सुधारे ॥१६

‡जिनके नाम अनुक्रम जानहु, मच्छे[20] मारकानडेय[21] प्रमानहु ।
बिमल भागवत कथा बखानी, सुधा समान श्रवन सुखदानी ॥१७

अरु भवस्य[22]ब्रहमंड अखंडत, मुदित ब्रह्म-वैब्रत किय मंडत ।
ब्रह्म और बामन बाराहा, विष्णु वायु अग्नी निरवाहा ॥१८

---

१ हुआ । २ सुकवि । ३ इष्ट । ४ नैमिषारण्य । ५ बिय=दोनों । †-†चिह्नान्तर्गत २८ व्यासनाम । ६ प्रजापति । ७ मृत्यु । ८ वसिष्ठ । ९ सारस्वत । १० प्रति में नहीं है । ११ त्रिधामा । १२ त्रिवृष । १३ त्र्यारुणि । १४ हर्यात्मा । १५ वेन बाजश्रवा । १६ सोम आमुष्यायण । १७ तृणविन्दु । १८ जातुकर्ण । १९ कृष्ण द्वैपायन । ‡पद्य १७ से १९ तक अट्ठारह पुराणों के नाम । २० मत्स्य । २१ मार्कण्डेय । २२ भविष्य ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नारद पद्म लिंग जिह नामा, गरुड पुरांन कथा गुनग्रामा।
कूरम[1] और सकन्धहु[2] कीना, परम अरथ हित जान प्रबीना ॥१९
†उपरानन बरनै जिन येते, सनतकुम्हार[3] नृसंघ[4] सहेते।
नारदीय शिव[5] जान निधाँना, पुन दुरवासा[6] कपिल पुराँना ॥२०
मानव और ओसनस[7] मानहु, बारुन काली साम्ब बखानहु।
नन्दीश्वर सूरज कों जानौ, पारासर आदत्त[8] प्रमानौ ॥२१
माहेश्वर भागवत महाना, पुन वासिस्ट पुरांन प्रमाना।
सर्व पुरांन सर्ग प्रति-सर्गा, बंस कथा मनवंतर बरगा ॥२२
वर वंसानु-चरित जुत[9] बरनत, पुन पंचहु लक्षन सोइ परनित।
सक्ती निरगुण अगुण-स्वरूपा रुचिर देह धारिक सुच-रूपा ॥२३
यह पुरांन महि[10] सर्ग उचारै, विदुष भेद बहु रोत बिचारै।
विश्व करत उतपत्ति बिरंचन, पुन हरि करत ताहि कौ पालन ॥२४
शिव सृष्टी ताही संघारे यह प्रति-सर्ग विचार उचारै।
बंस सौम अरु सूरज वंसी, अरु हरनाक्षहु दईतन[11] अंसी ॥२५
इति बंसहु की कथा अनेकहु, इहो बंस कहियत अबरेखहु।
मनवंतर स्वायंभुव मानहु, इन आदक औरं अनमानहु ॥२६
[इहि मन][12]वंतर नाम उचारै, विवध भांत गन समय विचारै।
तिन मनुअन कौ वंस तहां हो, किय बरनन[इहि क][13]था कहां हीं ॥२७
इहि बंसाँनुचरित्त[14] अनूपहु, लख पुरान इहि तत्व सुलेखहु।
स्याम[15]अथरबन[16]रघु[17]जजुसारा[18], चार वेद खट आय विचारा ॥२८
अक्षर अंक सिखावन शिक्षा, पुननिन[19] मिलवन कल्प प्रतक्षा।
सब्द अर्थ पहचांन सु कीजै, कवि-मति सौं व्याकर्न[20] कहीजै ॥२९
सब्द चाल जुत छन्द सकोई, जोतिस[21] तिथि नक्षत्र गृह जोई।
आवै बोलन जुक्ति अभंगा, इहि निरुक्त जानहु खट अंगा ॥३०
वेद च्यार कौ सार विचारहु, उपनिसदन[22] सारह ओंकारहु (ॐ)।
वेदव्यास के वचन विचारा, अमृत-पाँन तें सरस अपारा ॥३१

---

१ कूर्म। २ स्कन्द। ३ सनत्कुमार। ४ नारसिंघ। ५ शैव। ६ दुर्वासा।
७ औशन। ८ आदित्य। ९ जुत। †पद्य २० से २२ तक उपपुराण-नाम। १० में।
११ दैत्य। १२-१३ प्रति में नहीं है। १४ चरित्र। १५ साम। १६ अथर्व। १७ ऋग्।
१८ यजु। १९ पुण्यों। २० व्याकरण। २१ ज्योतिष। २२ उपनिषद।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिहत कर्म मुनिवर विज्ञानी, धरम-धुरंधर परम धियानी।
अमित उदार विष्णु अवतारा, विविध रीत नय नीत बिचारा ॥३२
सरसति[1] तटनी तीर सुहावन, परम पुनीत महाथल पावन।
बैठे जह मुनिवर विज्ञानी, निज आस्रम जीवन निर्वानी ॥३३
सुभग सुहावनी पावनि सूरत, मनहु सांत रस माधुर मूरत।
जहां वरती इक बात जबै ही, ताकह देखी व्यास तबै ही ॥३४
दुइ चिटिका पक्षी पति दारा, चाँचन तनय चुगावत चारा।
चुम्बुन करत पुत्र मुख चितवत, रहत सदाँ सोइ प्रीत रीत रत ॥३५
व्यास देख इहिं चरित बिहंगम, भये मोहबस छाय हृदय भ्रम।
धर मन ध्यान धीर्य तब धरहू, करत विचार हृदय कछु करहू ॥३६
स्वारथ[2] विगत विहंगम सुत सों, माया मोह लख्यौ जिह मतिसों।
उपजी व्यास हियें इहां आई, बिना पुत्र जग सुन्न[3] बसाई ॥३७
पालन लालन सुत सुख प्रीती, पूरी लखी न रीत प्रतीती।
वेद पुरान अनेक बखाना, सार सबन कौ एक समाना ॥३८
पावे गत[4] एकहु नहि प्रानी, पिंड-दान दीनै बिन पानी।
जीवत सुख सुत कौ नहिं जान्यौ, मृतक अदेसौ[5] सोउ उर मान्यौ ॥३९
विकल भई मति व्यास बशेशा[6], इहि उपजी मन क्षोभ अशेशा[7]।
व्यास विकल हुय तनय विचारा, नारद आये व्यास निहारा ॥४०
पाँव अरघ[8] बंदन कर प्रीती, नारद व्यास सनातन नीती।
नारद कही व्यास सों[9] नीकी, जाँन विविध घबराहट जी की[10] ॥४१
किहि कारन मुनि विकल कहीजें, लाभ सकल मन वांछत[11] लीजें।
व्यास कही नारद सुन वानी[12], सुनिये मेरी बात सुज्ञानी ॥४२
चिन्तातुर हम इही बिचारा, सुत बिन सकल सुन्य[13] संसारा।
कौन देव समरथ[14] इहि कहिये, लाभ पुत्र को तासें लहिये ॥४३
नारद कही व्यास सुन लीजें, कर विचार साधन पुन[15] कीजें।
बहु दिन की इक कथा बखानत, सावधान होय सुनहु सोय श्रुत ॥४४

---

१ सरस्वती। २ स्वार्थ। ३ शून्य। ४ गति। ५ अंदेशा = आशंका।
६ विशेष। ७ अशेष। ८ अर्घ। ९ प्रति में सोंहे। १० हृदय की। ११ वांछित।
१२ वाणी। १३ शून्य। १४ समर्थ। १५ पुनि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छन्द पद्धरी

बिध जुक्त कही नारद विचार, सुन लेहु व्यास इहि समाचार।
विध[1] गये विष्णु के लोक बीच, मधुसूदन बैठे आंख मीच ॥४५
विधि-पूर्वक पूंछी ध्यान बात, तुम नाभ[2] कमल तें प्रगट तात।
हम रचत जगत कों सहित हेत, दृढ़ ज्ञान सोइ तुम सदाँ देत ॥४६
आप तें बड़ौ को देव आन[3], धर बैठे ताकौ हृदय ध्यान।
बैकुंठ[4] कही सुनिये बिरंच, राखहुँ नहिं हिय में व्याज[5] रंच[6] ॥४७
राजसी सक्ति लै तुम रचंत, सातुकि हम पालन अनुसरत।
मृत्युंजय सक्ती सृष्ट माहिं, तामसो पाय संघरत[7] ताहि ॥४८
बिन सक्ति[8] तुमहु हम शिव विशेस[9], लोकेश काज पावहिं न लेस[10]।
सोवत हम सेज्या शेश[11] सोय, हिय विगत ज्ञान तें विवस होय ॥४९
कबहूं पुन[12] सूकर धरत काय[13], कहुं कच्छ मच्छ वामन कहाय।
तिरियक योंनी लहि हमहु तात, बध करत दनुज सोइ जग विख्यात ॥५०
इन्दरा सयन सुख छांड ऐंम[14] नित भ्रमत रहत क्यों सहित नेंम[15]।
मनिद्वीप त्रिया इक प्रथम मित्त[16], विष्णू हम ह्वै गये सहित बित्त ॥५१
भग्वती - कृपा कौ पाय भाव, पुन भये पुज्य[17] ताही पसाव।
मधु कैयटभं दानव सोइ मदंध, काटचौ हम ताकौ तबहिं कंध ॥५२
बस माया कीन्है तिही बेर, जब दुष्टन कों हम किये जेर।
तुम द्रगन[18] लखी सब सुरन तथ्थ[19], मुर्वी धनु कटचौ हमहि मथ्थ ॥५३
सिर तुष्टा जोरचौ जबहि सोय, हम उठे हयानन-रूप होय।
सुनियें अज नाहिन हम सुतंत्र[20], परियाय पिछानहु[21] पारतंत्र ॥५४
विधि सन इमि भाखी विष्णु बात, महिमा इहिं जानहु आद मात[22]।
आराधन देवी करहु आप, जिग होंम तथा तप मंत्र जाप ॥५५
नारद सुनाय आख्यान नीत, पुन व्यास हृदय आंनी प्रतीत।
इहि सुनी बादरांयन[23] उदंत[24], सिर परबत[25] पहुचे महां संत ॥५६
सोनकादिकन सों कह्यौ सूत, उर बाढ्यौ विस्मय अत अभूत।
दांमोदर सुनियत आद देव, भल रीत पिछानहु जास भेव[26] ॥५७

---

१ विधि=ब्रह्मा। २ नाभि। ३ अन्य। ४ वैकुंठ में रहने वाले विष्णु। ५ कपट। ६ किंचित्। ७ संहार करते हैं। ८ शक्ति। ९ विशेष। १० लेश। ११ शेष। १२ पुनि। १३ काया शरीर। १४ इमि=इस प्रकार। १५ नियम। १६ मित्र। १७ पूज्य। १८ दृगों से। १९ तथ्य। २० स्वतंत्र। २१ पहिचानों। २२ आदिमाता। २३ द्वैपायन व्यास। २४ वृत्तांत। २५ पर्वत। २६ भेद।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सिर कट्यौ प्रतंचा[1] तिहि सधीर, पुन देवन के उर भई पीर।
सब कहहू कथा समुझाय सोय, हमहू विसमय तें बिगत होय ॥५८
कहि तबहि सूत दै सुनहु काँन, श्रोता सब होवउ सावधाँन।
बीती कोउ वासर प्रथम बात, संग्राम कियौ हरि दनुज साथ ॥५९
अनुबच्छर[2] बीते अयुत येक[3], बपु श्रमत भये तातै बिसेक[4]।
अति भये प्रमीला लीन अंग, सुभ सांत रूप तम श्रम प्रसंग ॥६०
थिर चित्त देख साँमान थान[5], सुखपूर्वक कीनै समाधान।
मन मुदित पद्म आसन मुरार, धनुकोटी बैठे कंठ-धार ॥६१
सब देव रुद्र बिध सुर समाज, कछु सप्ततंतु कौ करन काज।
बयकुंठ[6] गये पूंछन विचार, मध[7] ग्रेह मिले नाहिन मुरार ॥६२
सुर ध्यान-जोग तें लख्यौ साथ, निर्भय होय पौढ़े रमानाथ।
जह[8] पहुचे आतुर सबहि जाय, निंद्रागत देखे सुर-निकाय ॥६३
इहि अवसर कछु कीन्हौ उपोह, मन विभ्रम छायौ अधिक मोह।
पुरहूत[9] कही तब मन उपंग, भव[10] करहु जतन ह्वै नीद भंग ॥ ६४
दीनौ इहि उत्तर महादेव, भल सोचहु हिय में धर्मभेव[11]।
पुन निंद्रा मेंटन महापाप, कछु हम तौ नहिं बोलहै कदाप[12] ॥६५
सुन सक्र[13]कियौ विध[14]सों सबाल,कछु और जतन[15]कीजै क्रपाल[16]।
बिध सोचे हिय तें जुत बिबेक, कीनो उपनिद्रा प्रगट केक ॥६६
कहि देवन कौ तुम करहु काज, मुरवी[17]धनु काटहु महाराज।
ज्याघात-सब्द ह्वै है जरूर, दामोदर[18] निंद्रा[19] होय दूर ॥६७
बम्री[20] तब बोली हिय[21] बिचार, येसौ न करह हम अनाचार।
सुप्तक जगाय कर कथा छेद, भरतार नार[22] डारै सुभेद ॥६८
पितु मात पुत्र कौ हृथन[23] प्यार, येते सब कहियत अनाचार।
कह लाभ हमहिं इहि करहिं काम, सुनकें हिय बोले लोक स्यामँ[24]॥६९
भुव[25]होय पतित सोइ लेहु भक्ष, पावसा आद जानहु प्रतक्ष।
जिग[26] करन काज देवन जरूर, द्रुत करहु हमारौ दुख्य[27]दूर ॥७०

१ प्रत्यंचा। २ अनुवत्सर। ३ एक। ४ विशेष। ५ स्थान। ६ बैकुंठ। ७ मध्य। ८ जहाँ। ९ इंद्र। १० महादेव। ११ भेद। १२ कदापि। १३ इन्द्र। १४ विधि–ब्रह्मा। १५ यत्न। १६ कृपालु। १७ मोर्वी। १८ विष्णु। १९ निद्रा। २० वम्री=दीमक। २१ हृदय। २२ पति–पत्नी। २३ हृत करना–नष्ट करना। २४ स्वामी। २५ भूमि। २६ यज्ञ। २७ दुःख।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बलमीक[1] पितामह लहि विचार, धनु-अग्रभाग कौं चित्त धार।
सिज्या दिये भक्षन लारा साथ, निहसंक[2] होव को रमानाथ ॥७१
घन प्रलय जेम[3] हुय प्रबल घोर, भइ दूर प्रतंचा प्रबल घोर।
छित होय चतुर्दस चहूं छोभ[4], उलकान पात बाढी असोभ ॥७२
चल चंड प्रभंजन दिसा चार, डगमगत भूमि गिर पर दरार।
खलभलिय[5] सात सामुद्र खोर, भइ अंधकार जग अधिक भीर ॥७३
मकराकृत कुंडल सहित मथ्थ, उड गयौ सुरन पायौ न अथ्थ[6]।
उतमंग[7] हीन हरि देख अंग, भयभीय भये सब चित्त भंग ॥७४
कर रोदन हाहा रव करंत, सब रमानाथ के परम संत।
अच्छेद अधोक्षज तनि अभेद, भवतव्य कछू पायौ न भेद ॥७५
हरि कौ धनु तूट्यौ पनन्चहूत, बिधि रुद्र आदि जान्यौ न ब्यूत[8]।
कहाँ जाँय करें कीसौं पुकार, निरबल[9] हुय बैठे निराधार ॥७६
लख सके पलादन[10] असुर लाग, इहि देवन मिल कीनौ अभाग[11]।
कासीन कऊ भुनकीन फाँक, आपकी अँगुरिया फुटी[12] आँख ॥७७
सुर येक[13] विष्णु तें ह्वं सनाथ, इक[14] नाथ बिना सब हो अनाथ।
बिलपत सब मिल-मिल देव वृंद, द्रग[15] देख कह्यौ गरु[16] छाड़ द्वंद ॥७८
दहु जानहु सम पौरुष दईब[17], जुर[18] जतन करहु थिर[19] राख जीव।
सुन चित्र[20] सिखंजक कहो आँन, मघवान[21] दियौ उत्तर महान ॥७९
निरसंसय पौरुष उर निहार, ध्रक[22] क्रिया प्रतज्ञा कहत धार।
हरि करन[23] त्रान तें भयें हींन, द्रग लखत देव सब भये दींन ॥८०
बिध युक्त बात बोलत विचार, है ईस अधीनहि हौंनहार।
बोले बिरंच बाचा बहोर, माहेश विडार्‌यो सीस मोर ॥८१
दुर[24] बैठ्यौ पंकज मध्य देस[25], श्रीचिन्ह सहित सोहो सुरेस।
त्रपुरारि बुद्धि बिपरीत तौर, मेहन बिन बैठे सुरन सौर[26] ॥८२
सब उमाँनाथ जानहु सुभाय, पुन लौंन-उदध में परचो पाय।
बन आवै जैसी तज विराम, कोजिये समय अनुसार काम ॥८३

१ दीमक। २ निःशंक। ३ जिमि। ४ क्षोभ। ५ खलबली। ६ अर्थ, प्राप्ति। ७ उत्तमांग=मस्तक। ८ क्योंत-उपाय। ९ निर्बल। १० दैत्य। ११ अभाग्य—भाग्यहीनता। १२ फूट गई। १३,१४ एक। १५ दृग। १६ गुरु, बृहस्पति। १७ देव। १८ मिलकर। १९ स्थिर। २० चित्त। २१ इन्द्र। २२ धिक्कार। २३ कर्ण। २४ छिपकर। २५ मानसरोवर प्रदेश में। २६ शोर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जग में शंचर धर[1] जिते जीव, सुख दुख्य[2] उभय होवत सदीव[3] ।
बेदन सौं[4] बोले पुन बिरंच, इहि ग्रमर काज जानहु उदंच[5] ॥८४
जग जननी माया रूप-जोत[6], इहि सबहि जक्त[7] तातैं उदोत ।
शुर[8] करहु ध्यान साधन समाध, बहु बेद करहु तुम ग्रर्थवाद ॥८५
प्रत छन्द धार तहाँ छन्द पेख, बर्नना[9] करन लागे बिशेख ।

सोरठा— हाथ जोड़[कर]ध्यान(न),ग्राद सक्ति निरंजनो ।
माता करहु सहाय, सबहि देव ग्राधीन तव ॥८७

छन्दबद्ध ताराच वेद स्तोत्र
नमो नमो निरंजनी समस्त विस्व स्वामनी,
ग्रदभ्र दभ्र जीव जे जनेसु जक्त जाँमनी ।
समष्टि व्यष्टि रूप तूं ग्रद्रष्टि की ग्रभावनी,
रचे मलष्ट मष्ट के प्रविष्ट द्रष्ट पावनी ॥८८
त्वमेव मूत भूँमका प्रमेय प्राँनदा[10] तुही,
क्षिमाँ[11] उमां रमाँ क्षती शशक्ति सक्ति[12] तूं सही ।
समाध ध्यान साधना सिथती[13] तुहीं ग्रतिस्थरी,
प्रथग्विधी प्रकाम[14] पुञ्ज[15] मातु तूं महेस्वरी[16] ॥८९
ग्रलिष्ट में ग्रलिष्ट तूँ बलिष्ट में बलिष्टता,
सपष्ट[17] मैं सपष्ट तूँ ग्रधिष्ट में ग्रधिष्टता ।
ग्रकार ग्रौ उकार पै मकार ग्रर्ध मात्रका,
बिरंच बिष्णु बाँमदेव ग्रद्वती[18] ग्रमात्रका ॥९०
सपक्ष दक्ष तूँ सदा प्रतक्ष पिंड पोषनी,
ग्रलक्ष लक्ष ग्राक्रती समक्ष ताप सोखनी ।
हृदय ग्रखंड हेय ज्ञाँन गृ(गे)य सृ(श्रे)य सिद्धदा ।
ग्रजेय ग्रप्रमेय तूँ बिधेय मंत्र वृद्धिदा ॥९१
ग्रनेक रूप एक तूँ ग्रनेक नाम ग्रावली,
ग्रनेक देव शेव में भूमें मनो भूमावली ।

---

१ शरीरधारी, पृथ्वी पर विचरने वाले । २ दुःख । ३ सदैव । ४ से । ५ उदंत । ६ ज्योति । ७ जगत् । ८ सुर । ९ वर्णन । १० प्राणदा । ११ क्षमा । १२ सशक्ति । १३ स्थिति । १४ प्रकाश । १५ पुञ्ज । १६ महेश्वरी । १७ स्पष्ट । १८ ग्रद्वितीय ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रकाश ज्ञाँन आसपास बनास कौं बिनासनी,
अगाध तूं अबाध तूं प्रमाद कौं प्रनासनी ॥९२
स्वछन्द मात तूं सदां अनन्द कौं उपावनी[1],
बिनोद के बिकास सौं सदां तुहीं सुहावनी।
असाध[2] आध[3] व्याध कौं समाध हेत साधनी।
अभेद तूं अछेद तूं अखेद तूं अराधनी ॥९३॥
घटाहु के मठाहु के कटाहु इंड केकरी।
प्रबाहु पंच तत्व में सुभाव होय संचरी।
अनेक भेक[4] आकृती अनेक जीव ऐरकें।
रमाय तूं रही रमा घुमाय घेर घेर कें ॥९४॥
अचिन्त चित्त आपने रचंत केक[5] रूप कौ,
अनंत संत उद्धरे सुचित कें स्वरूप कौं।
पवित्रहू चरित्र कौं विचत्रहू विचार कें,
गहैन ज्ञान गर्मता[6] पहै[7] न वार-पार कें ॥९५॥
त्वमेव पाय तर्पणा समर्पणा सुधार कौ,
करै न कर्पणा[8] कहूं विसर्पणा बिकार कौं।
सुसप्त[9] जागृ[10] स्वप्न वस्थ[11] सत्त रूप सावरी,
अलोक लोक एकसी विभाँत[12] हू बिभावरी ॥९६
बनाय चार खांन वानि पंच प्राँन पालनी,
दसिंद्री देवहू द्रवा करै सदां कृपालनी।
बिजोग[13] औ शँजोग[14] बीच भोग जोग श्यासनी,
सुधर्म कर्म सत्य पर्म[15] प्रांन को प्रकाशनी ॥९७
सदस्क[16] जोबना सदाँ सदस्क देह सुन्दरी,
रचाय स्टष्ट में रमें उपाय कें अन्दरी।
अनंग मेखला अलो अली अनग आतुरी,
अनेक शेव देवियाँ चितै प्रशाद चातुरी ॥९८

१ उत्पन्न करने वाली। २ असाध्य। ३ आधि। ४ वेष। ५ अनेक।
६ गंभीरता। ७ प्राप्त करे। ८ कृपणता। ९ सुसुप्ति १० जागृति।
११ अवस्था। १२ अनेक भांति या प्रकार से। १३ वियोग। १४ संयोग।
१५ परम। १६ सदा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

श्रुती पुरांन संमृती उदार नीत उद्धरी,
मृजाद सौं अजादि लौं प्रजाद रीत पद्धरी।
अभाव भाव ईक्षणा[1] प्रवाह पुन्य पाप सौं,
बंधे अनेक बन्ध में उपाय जीव आप सौं ॥९९
त्वमेव मात पुष्टि तुष्टि मंजुला मनोहरी,
सुधा श्रधा[2] दया सुसांति उग्र(प्र) कांति ईश्वरी।
मती सती धृती महांन प्रकृती उरा पुरा,
सुभा अनूप सोहनी बिमोहनी विसंभरा ॥१००
विलंभ बित्त बिस्व को बितीत दंभ बिक्रिया,
पसाव[3] पाव पायकें धरंन ध्यांन धि क्रिया।
करे प्रपूर्ण कांमना ललाम कञ्ज लोचनी,
प्रकास पुञ्ज तेज कौ मलीन अंघ मोचनी ॥१०१
जनायहू जनाय ना गनाय कें अहू गुनी,
अनाद अंबका अछेह त्र्यंबका तिलोचनी।
सहाय काज शंकरे सुरव सर्व संजुरे,
बरात[4] हीन देख विष्णु भीत चित्त में भरे ॥१०२
लखै तऊ लखी न जाय अशु कस्त[5] आदकौं,
चरंन[6] की सरन्न[7] चाह बीसरै[8] विवाद कौं।
सुधा समुद्र बीच साल नित्त तूं निवासिनी,
बिलास बेश विस्तरै हुलास चारु हासिनी ॥१०३

दोहा— बेद करी असतुत[9] तबै, आराधन पुर आंन।
श्रीपति करन सहाय कौं, बिमल भई नभ-बांन[10] ॥१०४
इहिं स्तोत्र मम उच्चरहिं, पुन करहै कोउ पाट[11]।
महां ताप संकट मिटहिं, उतपाटन उच्चाट[12] ॥१०५
आद-देव है विष्णु यह, पालत सृस्टी पोख।
कटयौ सीस कोउ कारना, देवन नहि तुम दोख ॥१०६

---

१ इच्छाएं। २ श्रद्धा। ३ कृपा। ४ मस्तक। ५ किंचित्। ६ चरण।
७ शरण। ८ बिसरना=भूलना। ९ स्तुति। १० आकाशवाणी। ११ पाठ।
१२ उच्चाटन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रमाँ देख मुख रहस[1] सौं, हरी हँसे कँहु हेर।
प्रकृत[2] ताँमसी पाय पुन, बिकल भई तिंहि बेर ॥१०७

अच्युत सिर धरतें अलग, हौंनहार बस होय।
कहै इन्दरा[3] कौ कट्यौ, श्राप प्रतापहि सोय ॥१०८

बासर कछु बीतें जबै, ह्वैहै अरथ[4] तुम्हार।
बिबुध सुनहु इहि हेत से, भये हयग्रींम भुवार[5] ॥१०९

दरसन हम ताकौं दियौ, वह माग्यौ बर एहु[6]।
हम सद्रस[7] मोकह हनै, देवी वाचा देहु ॥११०

तथा अस्तुता कह तहाँ, गयौ कह्यौ सोइ ग्रेह।
काल पाय बिग्रह करहि, सुरन नाँहि संदेह ॥१११

त्वष्टा[8] हय सिर ताहितें, जोरहु विष्णु जगाय।
सुफल होय कारज सकल, नीत रीत इहि न्याय ॥११२

कह्यौ गिरा तैसौ कियौ, समुझ सबै सुर साथ।
जागे श्रीपति नींद जिम, सबही करन सनाथ ॥११३

जब मारचौ हरि जाय कैं, हयग्रीवा हयग्रीव।
देवी के वरदान तें, सुरन सिसायस[9] दीव[10] ॥११४

सौंनकाद सुन सूत सौं, सबही परम सयान।
मधु कैटभ के मरन कौ, अरु[11] पूछ्यौ आख्यान ॥११५

सौनकाद साँ[12] सूत कहि, सुनहु चित्त दै सौय।
कथा बिबिध बिध कहत हूं, जुक्त उक्त हिय जोय[13] ॥११६

पाँच ज्ञान इन्द्री प्रगट, उत्तम दोय अनूप[14]।
सुनैं श्रवन लोचन सुलभ, रुचर लहै सोइ रूप ॥११७

श्रवनहु तीन प्रकार सौं, सातुक[15] राजस सोय।
तांमस जानहु तीसरौ, कह कोबिद सब कोय ॥११८

बेद सास्त्र आपत[16] बचन, इहिं सातुकि अभिराम।
राजस साहित[17] श्रीरमन, ता हित कथा तमाँम ॥११९

---

१ रहस्य। २ प्रकृति। ३ लक्ष्मी=शक्ति। ४ अर्थ=कार्य। ५ भूमि पर। ६ यह। ७ सदृश। ८ एक देवता। ९ सांस। १० दी। ११ और। १२ सौं=से। १३ देखकर। १४ अनुपम। १५ सात्विक। १६ आप्त। १७ साहित्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तामस जुद्ध कथा तिती. परदोखाद[1] प्रकास ।
उत्तम मध्धम[2] अधम ये, अनुक्रम इतिहास ॥१२०
साहित तीन प्रकार सौं, सुकिया उत्तम संग ।
गनका मध्धम अधम गन, सदाँ परक्रिया[3] संग ॥१२१
तामस पुन जानहु त्रधा, उत्तम उत्तम आय ।
मधम[4] सुनहु बैरी [सौ][5] अधम कह मुनिवरन निकाम[6] ॥१२२
मोक्षदाय उत्तम मधम, स्वर्गदाय फल संग ।
भोगदाय मध्धम[7] भनत, समुझहु त्रधा प्रसंग ॥१२३
इहि पुराँन इतिहास कौ, उत्तम गनहु उदत[8] ।
सौंनकाद सुनिये समुग[9], सबहि सयाने संत ॥१२४

छन्द द्वै अक्षरी-
इहि सूत कहन लागे उदंत, सोनकादिकहु तुम सुनहु संत ।
बीती सोइ जानहु प्रथम बात, त्रय लोक भये जलमग्न तात ॥१२५
जगदीस जनार्दन समय जान, नागाधिप[10] संस्तर[11] थिर निदाँन ।
निद्रागत पोंढ़े रमाँनाथ, तहा गिरचौ पिजूखाँ[12] श्रवन ताथ ॥१२६
मधु कैटभ दानव अत मदंध, सो भये प्रगट ताही समंध[13] ।
बीते दिन केतक जल निहार, पुन लह्यौ नाहि कछु वार-पार ॥१२७
सोचे उर अंतर दनुज सोय, कहतैं हम आये हमहि कोय[14] ।
उतपत्त[15] भूम का कौंन आहि, जब नीय कहां लग पार जाहि ॥१२८
उर उपज्यौ व्रिस्मय जबहि आय, विस्र भ[16] भयो कछु सक्ति भाय ।
बिद्वत[17] तब चमको दुति[18] बिसेस, द्रढ रूप ग्रहन किये हृदय देस ॥१२९
तिहि सब्द मंत्र कौ लह्यौ तंत[19], उरमैंय प्रीत बाढ़ी अतंत[20] ।
जब लागे ताकौ करन जाप, तन तैं जब नासन भयौ ताप[21] ॥१३०
विस्वास बढ्यौ [तब तब][22] विसेस, दरसी इक मूरत दिव्य देस ।
पासांकुस पुस्तक धरैं पाँन[23], सरस्वती-रूप विद्या सुजाँन ॥१३१

---

१ परदोष आदि । २ मध्यम । ३ पर-स्त्री । ४ मूल प्रति में अधम है । ५ मू. प्र. में अंश अधिक होने से गति भंग होती है । ६ मू. प्र. निकाम = व्यर्थ का युद्ध । ७ मू. प्र. अध्धम । ८ वार्ता । ९ समोद । १० शेष । ११ शय्या । १२ मल । १३ सबंध = प्रसंग । १४ कौन । १५ उत्पत्ति । १६ विश्वास । १७ विद्युत् । १८ द्युति । १९ तत्व । २० अत्यंत । २१ दुःख । २२ मूल प्रति में अस्पष्ट है । २३ पाणि = हाथ ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हिरदैं विचार भये निराहार, धर ध्यान प्रतज्ञा रहे धार।
बच्छर[1] सहस्त्र तप करत बीत, आकाशबाँन[2] तब भइ अभीत ॥१३२
बंचत[3] वर मागहु उभय बोर, पुन जो कछु तुम्हरे[4] हृदय पीर[5] ।
वरदान देहु मोह जक्त[6] बीच, मुख मागें जब हीं होय मीच[7] ॥१३३
कहि तथा-अस्तु देवी क्रपाल, तहां दनुज प्रबल भये तातकाल।
मधु कैटभ बिचरत जल मझारं, चितवन प्रसिद्ध लख बदन च्यार[8] ॥१३४
थित पद्मासन थित पद्मथान, गुन सांत रूप उर उदित ज्ञान।
बैठे निहार दनु कही बात, तुम लायक आसन नहिन[9] तात ॥१३५
हम भुजा खुजावत इहीं हेत, संगर उठ कीजे बल सहेत।
समता न लरन की परम संत, तज देहु पद्म-आसन तुरंत ॥१३६
बिध सोचे उर अंतर विसेक, ऊदम[10] उपाय नहिं फुरयौ एक।
हरि करी सलाघा[11] विध सहेत, अत पाय प्रमोला सोइ अचेत ॥१३७
जागे न रमांपति हृदय जाँन, बस भये जोग निद्रा विधाँन।
जाचंन्या[12] कीनी जोगमाय, मारियें दनुज कौं जुद्ध माय ॥१३८
अथवां कि जगांवहु सुरन-ईस, सोइ करहे ताकौ दूर सीस।
बिध बिकल देख निद्रा बिहाय, उपदेस बिरंचहु दियौ आय ॥१३९
जब जाचे हरि सौं करन जोर, ठिक[13] आय बरस दिय तिहीं ठौर।
बिनये बिध हरि सौं कही बात, मधु कैटभ दानव अकसमात[14] ॥१४०
आयकें इहाँ हम कही ऐहु[15], दुति धाम ग्रेह छुटकाय देहु।
संगर नत कीजें उभय सथ्थ[16], मिल कें दल काटहि च्यार[17] मथ्थ[18] ॥१४१
हम बिकल भये इहि देख हाल, कीजिये स्याय जल-सय[19] क्रपाल।
विध बात करन लागो न बार, यिक संगर की उर बीच धार ॥१४२
दनु[20] उभय आय पहुचे तुरंत, हाकार पुकारत हंत–हंत।
बिध सौं सोइ बोले उभय बीर, और की सरन ताकत अधीर ॥१४३
हन प्रथम तोहि स्याहिक[21] हकार, उभय के हाथ लैहूं उखार।
चतुरानन दूसर भुजा च्यार, बिप्रोत[22] रीत देख्यौ बिचार ॥१४४

१ बत्सर। २ वाणी। १३ वाञ्छित। ४ तुम्हारे। ५ पीड़ा। ६ जगत्।
७ मृत्यु। ८ ब्रह्मा। ९ नहीं है। १० उद्यम। ११ मंत्रणा। १२ याचना।
१३ ठीक। १४ अकस्मात्। १५ यह। १६ साथ। १७ चार। १८ मस्तक।
१९ जलाशय अथवा जलशायी विष्णु। २० दनुज। २१ सहायक। २२ विपरीत।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नहिं डरत तुम्हारे साँग देख, द्रग लख तुमहीं हम बढ्यौ द्वेस[1]।
बिध विष्णु उभय हम उभय बीर, सझ करहु जुद्ध आतुर सधीर ॥१४५
विष्णु तब बोले उर बिचार, तुम उभय एक हमहू तयार।
सिर पद्म जहां अंतर समंद, मधु आय भिरचौ दानव मदध ॥१४६
जाजुल्य[2] लग्यौ तहां हौन जुद्ध, बनमाली मधु बाढ्यौ विरुद्ध।
इक थकंत येक भिर परत आय, सरसावत पौरुस ज्यूं सिवाय[3] ॥१४७
देवी बिध देखत घाव दाव, भये अतुल जुद्ध दारुन अमाव।
घन प्रलय जेम रव होत घोर, हलचलत सिंधु बाढ़त हिलोर ॥१४८
अकुलाय भिरत पौरुस उदग्ग[4], उठी जल अंतर मनहु अग्ग[5]।
सलभलत जंतु बहु आयु खुट्ट, अत मच्छ कच्छ खावत उलट्ट ॥१४९
जल उछ्ल अद्ध आकास जात, अधगिरत मनहु बरखत अघात।
उठ चले नु बुद-बुद अनंत, गर-गरी मनहु दधि छुटी गंथ[6] ॥१५०
मधुसूदन मधु जूटत महाँन, मिल खीर[7] उदध मंड्यौ मथाँन।
बिध लखत हियें बाढचौ बिरोग, जल-प्रलय बीच हुव प्रलय जोग[8] ॥१५१
परवच्छर बीते सहस पंच, अत भिरत करत आहव उदंच।
दनु उभय एक हरि समर दाव, उर विजय हेत उपज्यौं अभाव ॥१५२
इहि कारन कछु कीनो उपोह[9], मन बिसमय छायौं अधिक मोह।
मधु कंटभ बोले लख मुरार, हम सौंनि युद्ध तुम गये हार ॥१५३
दासोसिम[10] कहु हम छांड़ देत, खंभ कौं होर नत[11] लरहु खेत।
हरि कह्यो नाहि कछु जीत हार, विधयुक्त हृदय में लहि बिचार ॥१५४
जुग तुमहि येक हम करत जुद्ध, इहि तें हम पौरुस गनहु उद्ध[12]।
बहु काल भये संगर बहाल, करहैं विलंब कछु अल्प काल ॥१५५
संगर[13] फिर करहैं उभय साथ, बर जानहु बिसवा बीस बात।
विस्रंभ[14] पाय तब उभय बीर, स्वस्ताय रहे दांनव सधीर ॥१५६
उर ध्यान जोग हरि लखी ऐह, इहि देवी बर तें दनुज ऐह।
देवी की अस्तुत बेव-देव, भल रीत करन लागे समेव[15] ॥१५७

१ द्वेष। २ जाज्वल्य। ३ सवाया। ४ मू. प्र. उद्धग। ५ अग्नि। ६ गांठ।
७ क्षीर। ८ अवसर। ९ विचार। १० दासोस्मि=दास हूं। ११ नहीं तो।
१२ अधिक। १३ संग्राम। १४ विश्राम। १५ भाव सहित, अनेक प्रकार से।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तब दियौ दरस देबी तुरंत, कल बिथत[1] देख तब रमां-कंथ[2] ।
विष्णु सौं आद माया विचार, सुख पाय कहे इहि समाँचार ॥१५८
आजाँन भुजा जुध करहु ऊठ, अंगना[3] बनहु मैं द्रुति अनूठ ।
बरदान लेहु तुम कहंहु बात, मति हरन करहु मैं अकसमात ॥१५९
मुख तें जब लेहै माग मीच, बिन सीस करहु तुम जुद्ध बीच ।
उपदेस दियौ देबी उंदत, किय काज ज्युही[4] पुन रमाँकंत ॥१६०
कछु काल कियौ हरि जुध करूर, पुन देखत देबी प्रेमपूर ।
मति हरन लखे दांनव मदंध, किल मृतु[5] आय बैठो सुकंध ॥१६१
मधु कैटभ सौं बोले मुरार, सब भाँत जुद्ध लायक सुरार ।
जुध बीच करे हम कैऊ जेर, बलवान लखे तुम इहीं वेर ॥१६२
मागहु बर देहैं तुम महाँन, करहै हम तातें जुद्ध कांन ।
सुन श्रवन दनुज संगर सधीर, बाचा तब बोले महावीर ॥१६३
हम कहा वनायक गनें हेर, जुध बीच किये हम तुमहि जेर ।
चितवहु हमहीं कब होव चाह, आश्रव[6] जुत बोले हरि उछाह ॥१६४
इहिं सुनत रमाँपति कहि उचार, मम हाथन सें तुम सहहु मार ।
वांनी सुन विष्णू उभय बीर, अकुलाय चित्त बोले अधीर ॥१६५
नहि बंचक जानें अथम न्याय, हम छले गये कहा कहैं हाय ।
बर मागत तुमसां उभय बीर, निम्न देस होय तहां विगत नीर ॥१६६
तुम करहु निसूदन हमहिं तात, बरदान देहु हमसौं बिख्यात ।
जीव तें अधिक हम बचन जांन, प्रन तजें नाहि इहि जाहु प्रान ॥१६७
इहि सुदर्शन कियौ याद, अंत चंड तेज मंडत अगाध ।
बिस्तारी जंघा हरि बिसाल, मस्तक अल मानहु सयल[7] माल ॥१६८
निरजल[8] थल आवहु इहि निहार, करतन सिर करहू जुत करार ।
सुन ऐह[9] दनुज जोजन[10] सहंस[11], पुन देव द्विद्ध[12] कीनी प्रसंस ॥१६९
जब द्वै सहस्र हरि जंघ देस, बिस्तार करी दुइ गुन बिसेस ।
मायक[13] हरि जानें दनु महांन, उतमंग[14] जंघ पर धर्यो आंन ॥१७०

---

१ व्यथित । २ कंत । ३ अग्रणी । ४ उसी प्रकार । ५ मृत्यु । ६ प्रतिज्ञा, विश्वास ।
७ शैल । ८ निर्जल । ९ यह । १० योजन । ११ सहस्र । १२ दीर्घ ।
१३ मायिक=मायावी । १४ उत्तम अंग=मस्तक ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मधु कैटभ भ्राता अत मदंध, किय कलपन ताही समय कंध।
भय पूर अवुधी[1] मेद भाग, थित भई उरवरा थित अथाग ॥१७१
मेदनी नाम तातैं महंत, उच्चार करहि जग आद अंत।
मृत्यका[2] भक्ष सम भक्ष मेद, नय रीत बिदुख[3] मानत निसेद[4] ॥१७२
सुकदेव जन्म आख्यान सोय, सब आद अंत जानहु सकोय।
परबत शुमेर[5] कै जाय पास, हित पुत्र बिचारहु जुत हुलास ॥१७३
उर ध्यान धरचौ देबी अखंड, मुनि एकाक्षर जप मंत्र मंड।
हट[6] जोग करत भये निराहार, बीते सत बक्षर तप बिचार ॥१७४
सिर जटाजूट पावक समान, भये तेज-पुञ्ज तप उदित भान[7]।
अकुलाय सिंभु सौं कही इंद्र, मम पुरीन लैहै इहि मुनिंद्र ॥१७५
कर इंद्र सबोधन शिव कराल, हित व्यास देवकौ जान हाल।
पुन आये शङ्कर ब्यास पास, वरदान दियौ ब्यासहिं बिसास[8] ॥१-६
तुम पुत्र हेत इहिं करत जाप, सोइ पैहौ पुन पूरन[9] प्रताप।
वरदान पाय शिव चरन-बन्द, मन मुदित धाम आये मुनिंद ॥१७७
बीते कैऊ बासर धाँम व्यास, अग्नी हित अरनी किय अभ्यास।
सोचे उर अंतर तँह सभाग, अरुनी तें परगट होत आग ॥१७८
इम[10] होय पुत्र उतपत्त[11] अंग, पुन त्रिया हमारें कहा[12] प्रसंग।
इहि उपजत ईक्षा[13] मुनि अधीस, अपछरा घृताचो सुरन ईस ॥१७९
अत रूप मनोहर अंग अंग, ऊरध नव जोबन[14] जुत अनंग।
दुइपायन[15] देबी ताहि द्रष्ट, बपु काम-कला बाढ़ी बलिष्ठ ॥१८०
संगम नहिं बाच्यौ मुनि सधीर, पुन सहन करी तन समर पीर।
बन सुकी घृताची निकट बास, नभ तें थल आई तिहिं निबास ॥१८१
रोक्यौ न रुक्यौ मुनिराज-रेत, निज गिरचौ सोई अरनी निकेत।
सुकदेव पुत्र ब्यासहि समाँन, गुन प्रगट रूप उर उदित ज्ञान ॥१८२
गंगाजल मज्जन सुद्ध गात, जिहि वेद रीत किय कर्मजात।
वृंदारक जय जय करत बांन, गंध्रव(धर्व)मिल किन्नर मधुर गाँन ॥१८३

---

१ अंबुधि=समुद्र। २ मिट्टी। ३ बिदुख=विद्वान्। ४ निषेध। ५ सुमेरु। ६ हठ। ७ भानु=सूर्य। ८ विश्वास। ९ पूर्ण। १० इमि। ११ उत्पन्न। १२ कहाँ। १३ इच्छा। १४ यौवन। १५ कृष्ण द्वैपायन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अत बोलत जन विध बिध असीस, सुभ सुमन-वृष्ट ह्वै डिंभ[1] सीस।
आनक बढ़ ऐहट की अवाज, बर बांनक केउ बादित्र बाज ॥१८४
बिस्वाबसु नारद रिसी बृन्द, आवत सब पावत अनन्द।
बिद्द्याधर तुम्मर-गन बशेस[2], आये व्यासृमें[3] सुख असेस ॥१८५
सुत सौं घृताची सुकी संध[4], सुकदेव नाम दिय इहिं समंध।
नभ सौं कृष्णाजन[7] गिरे निच, अरु दंड कमंडल चिब[5] उदंच ॥१८६
सुकदेव अरंनज व्यास अंस, परकास[6] तपोबल हिय प्रशंस।
तन पींन भयौ तातैं तुरंत, सुभ रूप मनोहर परम संत ॥१८७
जग्योपवीत किय कर्म-जुक्त, भग्वती चरन जुत प्रेम भक्त।
गुरु चित्र सिखंडज[8] किय गँभीर, धर बृह्मचरिय[9] बृत महाँवीर ॥१८८
पढ़ वेद धरम अरु नीत-पंथ, गत हृदय अविद्या छुटी ग्रं(गृं)थ।
दक्षना गुरू कां भेंट दीन, पुन पिता ग्रेह आये प्रबीन ॥१८९
पद बंद व्यास कौं कर प्रनाम, जुत प्रेंम नेंम सिर सूघ जाँम।
बिद्याँ पढ़वै की सुनत बात, आँनन्द पाय नाहिन अघात ॥१९०
सुत पिता बढ़त नित-नित सनेह, दुति[10] अमित पुत्र-मुख उदित देह।
पितु कहत एक दिन सहित प्यार, निगम को रीत जुत करहु नार ॥१९१
संततहि बढ़हि तातैं सदीव[11], जब पित्रन मुक्तिय होय जीव।
ऊरन[12] जब रन तें होय ऐंम, पैहें गत हमहू सहित प्रेंम ॥१९२
तिहि हेत कियौ हम उग्र ताप, सुत अबस मोहि मेंटहु संताप।
सुत कथा व्यास दोनों सुनाय, जिह रीत तपस्या करी जाय ॥१९३
अनुकंपा देवी बरहु ईस, रचना वृतंत नारद रिषीस।
सुख पाय सुनी सुकदेव श्रांन, गुन रीत प्रकास्यौ हृदय ज्ञांन ॥१९४
संसार सुख्य[13] जेतक सपष्ट, दुख गर्बत[14] देंखहु हृदय द्रष्ट।
परतंत तिया कौं कंठ पास[15], रँहि तौ नँहि फांसत तजहु आस ॥१९५
हतकरिया वैरी बन्द होय, सोइ छूट जात जानत[16] सकोय।
प्रिय पुत्र त्रिया की बिखम[17] पास, नँहि बंध सुगम होवत विनास ॥१९६

---

१ शिशु। २ विशेष। ३ व्यास-आश्रम। ४ संयोग। ५ छबि=सुन्दर। ६ प्रकाश। ७ कृष्णाजिन=काले मृग की चर्म। ८ बृहस्पति। ९ ब्रह्मचर्य। १० द्युति=कांति,शोभा ११ सदैव। १२ उऋण। १३ सुख। १४ गर्भित=युक्त। १५ पाश=फांसी। १६ मू. प्र. में जाननत है। १७ विषम=कठोर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हम आप अजोनी[1] रूप होय, जौंनीं[2] किम भजहै भाव जोय।
कैउ पिस्नोतर[3] पितु पुत्र कीन, पर पुत्र न मानी ज्ञांन पीन[4] ॥१९७
पुन व्यास पुत्र सौं लाय प्रेंम, नइ रीत कहत हम सहित नेंम।
बेदोक्त बिहत[5] कर्मंहि बिधांन, मन तनय बीच हिय बिगत मान ॥१९८
नित बित्त करत उतपत्त न्याय. सुर पित्र आस पुज्जत सुभाय।
ऐसे ग्रहस्थ सम नांहि ऑर, करहू तिय धारन वय किशौर ॥१९९
संतत हित साधहु सुत सयान जुत जुवा अवस्था धर्म जान।
तप कीनहु कौसक मुनिह तेम, पर बधे मेंनका पास प्रेम ॥२००
कन्या सकुन्तला प्रगट कीन, खट अर्ध अब्द तप भयौ खींन[6]।
भये पारासर मुनि बृत भंग, पुन छले दास कन्या प्रशंग ॥२०१
निज कंन्या जोबन दुति निहार, चित बिकल भये सोइ बदनच्यार[7]।
सुत कह्यौ हमारौ सुनहु आन, गृह-आश्रम साधहु परम ज्ञांन ॥२०२
तुम जुवा अवस्था करत त्याज[8], मम तजहु ग्रहस्थाश्रम समाज।
हिय लोचन तैं हम कहत हेर, बोलैं कहा तातैं बेर-बेर ॥२०३
प्रत पढहु भागवत सुन पुरांन, नव धर्म रीत लैहौं सुजांन।
पुन पढ़े भागवत सुक[9] पुनीत, चाह्यौ न ग्रेह आश्रमहु चीत[10] ॥२०४
जब व्यास कही सुक मुनी जान, मेरौ निदेस इहि लेहु मान।
सुत जावहु मिथला-पुर सकाज, राजा बिदेह तहा करत राज ॥२०५
जीवन-मुक्तो सोउ लखहु जाय, पैहौ प्रतीत जाके पसाय[11]।
बिध जुक्त व्यास सौं सुनी बात, पुन ऊठ चाले[12] ताही प्रभात ॥२०६
देखत कोउ अंतर पंथ देस, बन पर्वत आदिक पुर बिसेस।
बीच में लगी मुनि सुकहि बेर, सोइ दोय बर्ष लंघत सुमेर ॥२०७
इक बर्ष हैंम-गिर चले उद्ध, पुर मिथला पहुँचे सुक प्रबुद्ध।
सतकार पाय आदर सहेत, नृप बास दयौ उपबन निकेत ॥२०८
सब प्रोहित मंत्री लिये संग, आये मुनि-दर्शन-हित उमंग।
सिंहासन आसन दै सुभाय, पुन बन्दन कीनै परस[13] पाय ॥२०९

---

१ अयोनि। २ योनि। ३ प्रश्नोत्तर। ४ पुष्ट = समृद्ध। ५ विहित। ६ क्षीण = नष्ट। ७ चतुरानन = ब्रह्मा। ८ त्याग। ९ शुकदेव। १० चित्त,चाहा। ११ कृपा। १२ मु. प्र. चले। १३ स्पर्श करके।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बजुला[1] इक तंबा तिहीं बेर कीनी सुभेंट सुकदेव केर।
कुसलात पूँछ अरु विनय कोन, धिन[2] भाग[3] पधारे गिन अधीन ॥२१०
धर धीरज कहिये सुमत धाँम, कछु लायक जो मम होय काँम।
बोले मुनि तासौं बिमल बाँन, मम पिता व्यास जानत महाँन ॥२११
हित व्याह चहत कारन हमेस, उर उपज्यौ मेरे कछु अंदेस[4]।
भेज्यौ सोइ मेंटन काच भूप, सुध पाय लख्यौ तेरौ स्वरूप ॥२१२
तुम जीवन मुक्ती[5] सुनै तात, विप्रीत[6] यहै नृप समुझ बात।
हम आगम जानहु इही हेत, निरससय[7] कीजे मति-निकेत ॥२१३
समुझाव कहहु नृप तुमहु सोय, हिय संसय सौं हम विगत होय।
तप तीरथ ब्रत अरु जिज्ञ[8] तात, स्वाध्याय ग्यान बिज्ञान साथ ॥२१४
हित साधन मुक्ती जुवत होय, समुझायं कहहु नृप हमहु सोय।
जब बोले राजा जनक जान, सुनियं मुनि ह्वै कें सावधान ॥२१५
मोक्ष के मार्ग आश्रतहु[9] मित्त, चाहियें विप्र कौं इहै चित्त।
जग्योपबीत कर प्रथम जाय, पुन विद्या गुरु के शेव पाय ॥२१६
अध्ययन[10] बेद करकें उधार, दक्षना समर्पन कर सुधार।
निज ग्रेह आय कुल सुद्ध नार, ब्याहिये बेद-रीतहु बिचार ॥२१७
वृति संतोखहु[11] ग्रह साथ बित्त, थिर चित्त करं अगनोत्र[12] थित्र[13]।
सत बचन प्रकाशत रहै सुद्ध, अविरोध होय अघ - रहित्त उद्ध ॥२१८
उतपत्त पुत्र पोत्राद[14] आद. स्त्री सौंप अष्ट धारे समाध।
अथवा कि लहै संगहु उदास. बन बीच करै सोइ जाय बास ॥२१९
जहाँ काम क्रोध रिपु लोभ जीत, मद मछर[15] आदक सुनहु मीत।
इंद्री सुख साँतहु होय ऐम, निज होय बिरागी सहित नेम ॥२२०
सन्यास धरम थित[16] होय सत्त, अभलाख[17] काँम कौ तजै अत्त।
सन्यास ग्रहन अधकार[18] सोय, जानहु बिरक्त कौं निगम जोय ॥२२२
सुभ निस्सेकादिक[19] संसकार, चालीस अष्ट जानहु विचार।
जिहि प्रथम ग्रहस्थहु हेत जान, चालीस प्रमुख लीजै पिछान ॥२२३

---

१ पात्र। २ धन्य। ३ भाग्य। ४ अंदेशा = आशंका। ५ मुक्त। ६ विपरीत। ७ निःशंसय। ८ यज्ञ। ९ आश्रित। १० मूल प्रति में अधयन है। ११ संतोष। १२ अग्निहोत्र। १३ स्थित होकर। १४ पौत्रादि। १५ मत्सर = ईर्ष्या। १६ स्थित। १७ अभिलाषा। १८ अधिकार। १९ निषेकादिक।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सम दमहु आद है अष्ट सोय, सोइ मुक्ति निमत[१] जानहु सकोय ।
आश्रम सौं आश्रम गवन अग्र, सुख-पूर्वक जानहु मुनि समग्र ॥२२४
बोले बिदेह प्रति सुक बिचार, दीजै हम उत्तर मति-अधार ।
बैराग ज्ञाँन बिज्ञाँन बास, नित करत हियैं जाकै निवास ॥२२५
ग्रह बास गहै किन बिपन गौंन, समुझाय करावहु नृपति श्रौंन ।
बोले विचार कर तहाँ बिदेह, उत्तर हम ताकौ कहत एह ॥२२६
बपु इन्द्रिय ग्राँमहु है बलिष्ट, करत है बिक्रिया[२] अमित कष्ट ।
आपक्क[३] जती कै तन अनेक, विघ्न कीं करत मधृत[४] बिबेक ॥२२७
सुख संयन पेख समियानुसार[५], पुन पुत्र नार सौं उपज प्यार ।
बृत भंग करै हुय जती बेष, बृत भंग भये हानी बिशेष ॥२२८
भय पाय करै जौलौं न भोग, रुच भोग बढ़ावत जाल रोग ।
बासना नास कै हित बिचार, नित क्रम क्रम सौं त्यागैं निहार ॥२२९
सयनीय[६] उद्ध सुख चहै सोय, हिय पतित हौन सौं दुखत हाय ।
अधसाई[७] नाँहिन भीत येक, बिध जुक्त बिचारहु लहि बिबेक ॥२३०
सन्यास तजै जो समाधांन, है उभय लोक की अँभय हाँन ।
हीनांगी तरवर साख हेर, फलं सनै-सनै सुख लहै फेर ॥२३१
आतुर हुव[८] पंखी लहि उडांन, थक बैठत देखहु थाँन[९]-थाँन ।
क्रम-क्रम सौं जो कोउ करै काज, सुभ दायक जाँनहु सुख समाज ॥२३२
मनकौं अजेय जाँनहु महाँन, आस्त्रम क्रम-क्रम तैं आस्त्रमाँन ।
मद कांम जीत कै जीत मोह, दुख दुंद[१०] छाँडकै छाँड द्रोह ॥२३३
चित सांत सुमत गत हृदय चाह, हाँन में सोक लाभ न उछाह[११] ।
क्रम वेद-बिहत चिंतत करत, उतपत्त न्याय-पथ अनुसरत ॥२३४
संतुष्ट रहै लहि समाधांन, सोइ आत्मबांन जानहु सुज्ञाँन ।
आस्त्रम ग्रह ग्रेही सोइ अनूंप, सर्बथा मुक्त जाँनहु स्वरूप ॥२३५
तज कांम क्रोध गहि नीत-तत्व, महि प्रजा आद पालन महत्व ।
निरपक्ष[१२] होय कै करत न्याय, सत्रु षा दंड लायक सुभाय ॥२३६

१ निमित्त । २ विपरीत क्रिया । ३ अपरिपक्व । ४ मध्य में । ५ समयानुसार । ६ भोग । ७ अर्धस्वामी = अपरिपक्व । ८ होकर । ९ स्थान । १० द्वन्द्व । ११ उत्साह । १२ निष्पक्ष ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिभबाद[1] राज की नहिंन बाध, उरमी[2] न करत कोउ हिय उपाध।
बित बिलसत इन्द्री करत भोग, अनुसार समय जोगहु अजोग ॥२३७
अबिचरत जहाँ तहाँ छांड़ आस, फाँसै न चित्त काँ[3] बंध फांस।
कछु ग्रहन कियौ नहिं तज्यौ कोय, हम ग्रही न त्यागी रहे होय ॥२३८
जीवन-मुक्ती तउ[4] कहत जक्त बितराज[5] गहै मांनत बिरक्त।
हमरौ जिह बिध सौं लिख्यौ हाल, कीजियै ग्रहन-मुनिवर कृपाल ॥२३९
संसार पदारथ द्रस्य[6] सोय, किय करै अद्रस्य[7] हि बस्य[8] कोय।
संसार अचेतन द्रव्य साथ, इति जीव सचेतन बंधै आथ[9] ॥२४०
नभ मुष्टी जाँनहू ग्रहन न्याव, आतमा बंध मानहु अभाव।
नित मुक्त निरंजन निराकार, पुन आद अंत नहिं बार-पार ॥२४१
जड़ पंच तत्त[10] बांधे न जाहि, अनबद्ध अखंडत गनहु आहि।
परकास करत दीपक पतंग, ढ़क सकै पदारथ कवन ढंग ॥२४२
सुख दुखः प्रांन सूक्षम[11] सथूल[12], मन तरवर साखा सोइ मूल।
मन निर्मल निर्मल सकल मान, ह्वै उदय आय सुकृत महाँन ॥२४३
मन जौलौं निर्मल नहीं मित्त, बिध जुक्त फलं तीरथ न व्रत्त।
जीव कौ मोक्ष कारन न जाँन, इन्द्रीगन देहन लखहु आँन ॥२४४
ब्रह्म अरु जीव में भेद बुद्धि. यह लखहु अविद्या बल असिद्ध।
ब्रह्म अरू जीव जाँनै अभेद, बिद्या सो गावत च्यार वेद ॥२४५
जानबे जोग[13] इहि उभय जाँन, छाया रु धूप सुख दुख समाँन।
जौलौं न अबिद्या लखी जाय, बिद्याजुत आदर नहिं बसाय ॥२४६
पथ बेद सदां ऊतम प्रयाँन[14], कीजै नहिं तातै कबहु काँन[15]।
बोले तहाँ सुकमुनि हिय बिचार, तुम कहत बेद-पथ तत्वसार ॥२४७
तामै बहु हिंसा गनहु तात, बाढ़ै अधर्म हिंसा बसात।
जाँनहु अधर्म को बढ़ै जोर, मुक्त कौं लहै न्ही[16] सुनहु मोर ॥२४८
बिध जुक्त दयौ ऊतर निदेह इहि बेद-रीत सिद्धांत एह।
हिंस्या[17] हू अहिंस्या जग्य हेत, उपजत नहिं जातै कछु अहेत ॥२४९

---

१ वैभव आदि। २ राग द्वेष आदि। ३ को। ४ तो भी। ५ वीतराग। ६ दृश्य। ७ अदृश्य। ८ वस्य=वश में। ९ अथ=प्रारम्भ में। १० तत्व। ११ सूक्ष्म १२ स्थूल। १३ जानने योग्य। १४ प्रमाण। १५ उपेक्षा। १६ नहीं। १७ हिंसा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जब सुक मुनि बोले समय जाँन, संदेह हमारौ सुनहु स्राँन ।
अबिद्या बिदेह जो सुनत ग्राद, बंसानुरीत परिग्राय-बाद[१] ॥२५०
बपु सार्थक निर्मत गुन बिसेस, अथवा क नाम-मात्र ही ग्रसेस ।
अबलोक राज-बैभव अनेक. आपनौ परायौ गिनत एक ॥२५१
कटु मिष्ट राज-काजहु अकाज, तन सुख दुख आदिक ग्रहन त्याज ।
सब हय गय बित सैना सँभार, निज रूपवती ग्रह बसत नार ॥२५२
हिय जुद्ध पराजय हित अहेत, लो रकै ब्रीह बट प्रजा-लेत ।
इहि राज-काज कारन उपाध, सुख होय ग्रहन कैसैं समाध ॥२५३
चिन्तातुर जौलौं रहै चित्त, तब लाँ[२] नहि पावै तुरिय तत्त ।
भल जीबनमुक्तो लह्यौ भेब, इहि बात असंभव त्रप अजेब[३] ॥२५४
मुनि बाँनी सुनकै अप महाँन, संका कौ कीनौ समाधाँन ।
तुमरे पितु हमरे गुरू तात, व्यास की कही सोइ सत्य बात ॥२५५
बन गबन करहु पितु छांड बास, घर माँडहु पत्रन[४] तथां घास ।
जल अग्न चाह ह्वैहै जरूर, पुन ऊपल[५] ईंधन समय पूर ॥२५६
तरु-बल्ली छाया धूप तेज, पुन ग्रहन करन अथवा परेज ।
सुख दुखः देह कै सदाँ संग, पुन तजै न मन ताही प्रसंग ॥२५७
बन में हु[६] संग खग मृग निबास, सुभ असुभ रूप बाँनी बिलास ।
आहार कंद फल फूल ग्राद, इह लाँबन[७] की चित में उपाध ॥२५८
गुन अवगुन पाँचन केउ गरिष्ट, मन माँनत ताकौ कटुक मिष्ट ।
मृगचर्म दंड अरनी मथाँन, जल-पात्र कमंडल ग्राद जाँन ॥२५९
चिंता है तुमरै इहीं चित्त, बिध इहीं हमारै राज बित्त ।
संकल्प बिकलपहु ग्रहन संग, आये इहीं जात्रा सुनि असंग ॥२६०
हम राज प्रजा पालत हमेस, दुबिधा नहीं राखत हृदय देस ।
याही दुबिधा तें हुय उदास, बिच रहौ ग्रेह किन बिपन[८] बास ॥२६१
जग दुबिधा बंधन परयौ जीव, कारन पद धारन सदाँ क्लीब ।
पितु मात भ्रात परबार पूत, आये न संग जैहै अहूत[९] ॥ २६२

१ पर्यायवाद । २ लाँ=तक । ३ अद्भुत । ४ पत्रों=पत्तों । ५ गोबर के उपले ।
६ भी । ७ लाने की । ८ विपिन=वन । ९ आहूत=बुलाये ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हम चिंता त्यागी देख हाल, करियै नहिं चिंता मुनि क्रपाल।
चिंता अभाव तैं इही चित्त, निर्बान लहै पद जीव नित्त ॥२६२
सब सुनी ब्यास पितु कही आँन, उपदेश जनक नृप दयौ आँन।
गवनै सुक-मुनहू पिता ग्रेह, सुक लह्यौ निबारन उर सँदेह[2] ॥२६३
पितु हुकम जनक उपदेस पाय, 'पीवरी' पित्र कन्या पसाय।
बिध बेद कियौ सोउ मुन बिबाह पुन संतति कौ बाढ्यौ प्रबाह ॥२६४
रत जोग जुक्त अरु भक्त रीत, पावन पद ध्यावन पर्म प्रीत।
द्युति क्रस्न गौर प्रभ भूर देब, सुती पुत्र च्यार जानहुँ सभेव ॥२६५
कीर्ति इक कन्या सुभग काय, सुरू संतति जानहु इँह सुभाय।
कन्या का बिबांही आज केर, अंगज[1] अनूह के संग एर ॥२६६
बर बीर प्रतापी राजअंस, पुंन ब्रह्मदत्त सुत तिह प्रसंस।
राजा प्रनीत[2] सब नीत रीत, बहु काल किये सुखमय बितीत ॥२६७
उपदेस पाय नारद अनूर, भुय[3] राज पुत्र कौं सूंप[4] भूप।
सो गयौ बद्रकास्रम सिधाय भगवती भक्त जानहु सुभाय ॥२६८
जहाँ बीज-मंत्र कौ करत जाप, पद सोई पायौ तप प्रतापं।
सुकदेबहु त्यागन कियौ संग, अष्टापद[5] पहुचे गिर उतंग ॥२६९
धर हृदय अखंडत जोग ध्यांन, सब रीत पर्म पद सावधांन।
अष्टहू सिद्ध[6] अनिमाद[7] आद, पाये मुनिंद्र माया प्रसाद ॥२७०
मुन नभग्रह होवत ब्राजमान[8], भ्राजत प्रदीप्त मनु द्युतिय भाँत,।
उठुकै[9] जब जावन लगे उद्ध[10], मुनिराज भये केउ मोह मुद्ध[11] ॥२७१
भये सब्द असंभव महा सूर, डगमगिय अद्र हुंय संध दूर[12]।
पोहमी प्रसिद्ध उलकान पात, पितु ब्यास हियै बाढ़ी प्रबात ॥२७२
हित पुत्र पुकारत कहत हाय, अबलंब न पावत कहु उपाय।
बनजंतु आद खग मृग वियोग, सबहिन सुक पायौ महा सोग[13] ॥२७३
बस सोक अनास्रय[14] देख ब्यास, बहु रीत सदासिव दिय बिसास[15]।
समझाय ब्यास नहिं सोच नाय, जस लायक जानहु पुत्र जाय ॥२७४

---

१ पुत्र। २ प्रणीत। ३ भूमि। ४ सौंप। ५ पर्वत के शिखर का नाम। ६ सिद्धियां। ७ अणिमा आदि। ८ विराजमान ९ उठ कर। १० ऊर्द्ध्व = ऊपर। ११ मुग्ध। १२ संधि = जोड़। १३ शोक। १४ आश्रयरहित। १५ विश्वास।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिनती सिव कीनी बेदव्यास, आंनन बिन देखे मन उदास।
कर क्रपा सिंभु बोले क्रपाल, हिय बेदव्यास कौ जान हाल ॥२७५
चित होय पुत्र को दरस चाह, छाया सुक देखहु जुत उछाह।
बिलपत कछु पायौ उर बिसास, वर पाय सिंभु सौं चले व्यास ॥२७६
मुनिबर तब आये निज निकेत, हिय सोक-ग्रस्त अति पुत्र-हेत।
सिख बैसंपायन असित सोय, जैनिनि सुमंत देबल सु जोय ॥२७७
बहु किओ संबोधन तिन बहोर, ठहरे न ब्यास निज भवन ठौर।
माता के दरसन हित मिलाप, उठ चले भूम का जन्म आप ॥२७८
दासन नै भासन करचौ देख बय-वृद्ध हमहि जननी विसेख।
हित दरसन आये इहाँ हाल, तुम हमहि दिखाबहु तातकाल[1] ॥२७९
तब कह्यौ दास जातन तुरंत[2] सांतन नृप ब्याही सुनहू संत।
तब गये सरस्वति नदी तीर, साधन तप लागे मुनि सधीर ॥२८०
चित्रांगद बीरज बिचत्र[3] चाहि, मांने निज भ्राता चित्त माहि।
सांतन जब कीनौ बास सग[4], बर पाछे तीनहु बंधु-वर्ग ॥२८१
गंगेव[5] पुत्र गंगा गरिष्ट[6], तिंह लह्यौ राज पद नाँहि तिष्ट।
सुत सत्यवती रहि उभय सेख[7], भय चित्रांगद राज्याभिसेख ॥२८२
सब राज काज पूरन समत्थ, उतपत्त न्यायसीलहु अरत्थ।
स्रघिया[8] हित चित्रांगद महीप, सो पँहुचे कुरक्षेत्र हि समीप ॥२८३
चित्रांगद गंध्रब[9] पत च छोह दहु कैकिह कारन बढ्यौ द्रोह।
भिर परे जहां संगर भयान, मुर[10]अब्द[11] तहाँ बीते महाँन ॥२८४
पाछे नहिं दीनै नैक पाँव, भूपन तन त्यागौ बीर भाव।
भीसम बिचत्रबीरज हि भूप, सिंघासन दीनौ तिंहो सूंप ॥२८५
भज गंध्रब-पत सौं बयरभाव[12] चित चाह करन लागे चढ़ाव।
मंत्रीगन भीसम कह्यौ मांन, जाकौं रन दीनै नहीं जांन ॥२८६
कछु औध[13] बतीतत राज-काज, राच्यौं सु सुयंबर कासिराज।
जहाँ देस-देस के नृपत जाय, भये जमा स्वयंबर बीच भाय ॥२८७
कन्य।त्रय भीसम हरन कीन, पौरख प्रभाव जहां भुजा पीन ॥२८८

१ तत्काल। २ शान्तनु। ३ विचित्रवीर्य। ४ स्वर्ग। ५ गांगेय = भीष्म। ६ कठोर वृत्ति। ७ शेष। ८ मृगया। ९ गंधर्व। १० तीन। ११ वर्ष। १२ वैर-भाव। १३ अवधि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा— इक अंबा अंबालका, अबर अंबका एहु।
ब्याहन लगे बिचित्र कौं, सब लघुभ्रात सनेहु ॥२८६
बोली अंबा विनय कर, मैं चाह्यौ पति मोर।
सालु[1] स्वयंबर के समय, बरहूं ताहि बहोर ॥२९०
पन[2] मेरौ पालहु प्रथम; परम धुरंधर धीर।
समज भीस्म ताही समय, बिदा करी बर बीर ॥२९१
ब्याही है लघु बीर कौं, बिध-बत वेद - बिधान।
पँहुची अंबा साल्व पँह, मन सौं निज पति मान ॥२९२
साल्व नटूयौ ताही समय, आई चित उपरांम।
पत जाचे गंगेब पुन, नटे ब्याह के नाम ॥२९३
पितु के गेह गई न पुन, अंबा परम उदास।
तप बपु साधन हेत तिह, बिपन कियौ निज बास ॥२९४
राजयच्छमा[3] रोग तैं, मरचौ बेस सुकमार ॥२९५
बीते संगहि नव बरस, संतत भई न सोय।
सत्यवती कहि भीस्म सौं, करहु राज सहकोय ॥२९६
तेरे लघु भ्राता त्रियन, प्रहन करहु निज ग्रेह।
संतति-उतपत हित समुझ, यामें कारन येह ॥२९७
जैहै बंस जजात[4] कौ, तुमहि छतैं[5] इह तात।
पन बीतैं पछताहुगे, बिध जुत मानहु बात ॥२९८
सत्यवती की बात सुन, बोले भीसम बांन।
अनुचित काम न आदरु, निरनय कहत निदान ॥२९९
पितु के सनमुख कीन पन, सो गये स्वर्ग सिधाय।
पितु आवहि तौ तजहु पन, निज जननी यह न्याय ॥३००
बिप्र कुलीन बुलाय कैं, सौंपहु त्रिया समाज।
तातैं ह्वैहै संतती, अब तौ इंही इलाज ॥३०१
सत्यबती सुत समुझ कैं, ब्यास बुलाय बिचार।
हित संतति कीनौ हुकम, नटे न ब्यास निहार ॥३०२

---

१ शालु, शाल्व। २ प्रण=प्रतिज्ञा। ३ राजयक्ष्मा=क्षय रोग। ४ ययाति। ५ क्षत होने पर, रहते हुए।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अंध जन्म भये अंबका, सुत धृतराष्ट्र सधीर।
येक जन्यौ अंबालका, सुबरन[1] पड्डु सरीर ॥३०३
व्यास बुलाये बिपन तैं, गये सु सैनागार।
रानी गई न रमन कौं, उभयन किय अनुकार[2] ॥३०४
दासी मिल भेजी वहुन[3], सुत भये बिदुर सुजाँन।
जातै बंस जजात की, हुंई न नैकहु हाँन[4] ॥३०५

---

१ सुवर्ण। २ इनकार। ३ दोनों ने। ४ हानि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

द्वितीय स्कंध

दोहा— सुनी सौंनकादिकन स्त्रुत[1], देहु सूत उपदेस।
जिह विध सत्यवती जने, व्यास कुमारी वैस[2] ॥१
सोई सत्यवती सती, सांतनु राजा संग।
कियौ ब्याह पूरन कथा, पुन इह कहऊ प्रसंग ॥२

छंद उधोर—सुन कहन लागे सूत, ईतिहास परम अभूत।
ध्रुव चेदपुर तिह धाम, नृप सो ऊपरचर[3] नाम ॥३
द्वज[4] भक्त पर्म दयाल, सुभ कर्म धर्म सुचाल।
सोई सत्य बाचा सूर, दुरबिस्न[5] तै चित दूर ॥४
तप बृद्ध जानति नूह, सब भांत सुखद समूह।
परहूत[6] प्रीत पछाँन, मनि फटिक दीव्य[7] बिमान ॥५
बिच अंतरीक्ष बिराज, बिचरंत सोइ निर्व्याज।
निज त्रिया गिरका नाम, अनुराग जुत अभिराम ॥६
सुत पांच तिह समरथ्थ, अनदेस सोंपे अथ्थ।
भइ रितुमती सोइ भाँम, हित स्राध[8] पितु कर हाँम ॥७
म्रघ[9] कह्यौ लावहु मंस,[10], पापार्थ जांउ प्रसंस।
निज रितुमती तज नार, आखेट गयेउ उजार[11] ॥८
उर काँम की अभिलास, तिय रह्यौ सुमरन तास।
जिह गिरचौ ताही जोग, आनन्द प्रभव अमोघ ॥९
बहु पत्र-पत्र बिचार, नलका धरचौ हित नार।
संग सैन काज सिकार, सौंप्यौ सु ताहि सभार ॥१०

---

१ श्रुति=कान। २ वयस=अवस्था। ३ राजा का नाम—वसु उपरचर। ४ द्विज।
५ दुर्व्यसन। ६ पुरुहूत=इन्द्र। ७ दिव्य, दिया। ८ श्राद्ध। ९ मृग।
१० मांस। ११ उजाड़=वन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गिरका सिजावहु[1] ग्रेह, द्रुत ताहि कौं तुम देह।
सुन भूप बायक[2] सैन, गहि उड्यौ नलका गैन ॥११
लाग्यौ सुँ तिह इक लार, सीचान पलल सुमार।
आकास मारग उद्ध, जम[3] भयौ दारुन जुद्ध ॥१२
निम्नगा जमुना नीर, पुन पतित ह्वै रन पीर।
अद्रका अछ्छर[4] एक, बस बिप्र - स्राप बसेख ॥१३
भई इवेत कोलक-भेस, निगल्यौ सु रेत नरेस।
जोइ परो धीबर जाल, बस काल होय बिहाल ॥१४
जिह सुद्धि कारन जास, तिह उदर फारचौ तास।
सिसु दोय एकहि संग, पुन निकर ताहि प्रसंग ॥१५
सब रीत दास सु जाँन, लै गये नृप निजरौन[5]।
नृप उपर-चर सुत लीन, द्रढ़मछ्छ संग्या दीन ॥१६
दिय कंनका सोइ दास, हिय दास पाय हुलास।
आयौ सु निज ग्रह येह, लरकी सु सुंदर लेह ॥१७
निज सुता लालन नेम, पालन करी जुत प्रेम।
कन्या सुलोचन कंज, मन - मोहनी छिब[7] मंजु ॥१८
अत उदित जोबन अंग, सोइ रहत पितु के संग।
कालिंद्री नद की कूल, क्रम जीवका अनुकूल ॥१९
भर पथक-जन की भीर, नवका[8] उतारन नीर।
मुनि परासुर महाराज, कर तीर्थ जात्रा काज ॥२०
तिह आय तटनी तीर, कही पार करहू कीर।
तिह कह्यौ भोजन त्यार, इहि काज रहउ अबार ॥२१
कही बासबी[9] काँ कीर, तटनीहु जानत तीर।
रय[10] कन्यका मुनिराज, जल पार करहुं जहाज ॥२२
जब बासबी मुनि जाँन, प्रेरी सु नाव प्रयाँन।
जल बीच नवका जात, ह्वै काम आतुर हाथ ॥२३

---

१ सिषावहु, सजाओ। २ वाक्य। ३ यम, युग्म = दोनों। ४ अप्सरा। ५ रनिवास।
६ संज्ञा। ७ छवि। ८ नौका। ९ मत्स्यगंधा। १० रय = शीघ्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पकरचौ जहाँ मुनि पेख, द्रग प्रेमजुत तिह देख।
कन्या कह्यौ मुसकाय, निरधार[1] सोचहु न्याय ॥२४
दासेर[2] हम तौ दीन, कृत कर्म आप कुलीन।
अनब्याहता[3] दिन और, मोह लखत है पितु मोर ॥२५
दुरगंध जुत इह देह, अरदास[4] दासी येह।
पुन कह्यौ मुनि हित पूर, दुरगंध ह्वै है दूर ॥२६
सो गंध तन सरसाय, जोजन प्रमानहि जाय।
इह लख्यौ अचरज अंग, पुन विनय कीन प्रसंग ॥२७
दिन रत निसेध[5] दयाल, कीजे विभावरी काल।
किय प्रगट तप करतूत, अत कुहर छाँह अभूत ॥२८
सुख पाय कीनौ संग, अकुलाय बाँन अनंग।
मुनि भये लज्यामांन[6], हित बासबी लख हान ॥२९
बिनती करी तिह बेर, कर जोर मुनिवर केर।
हम कहा ह्वैहै हाल, कर कृपा कहहु कृपाल ॥३०
जब कह्यौ मुनिवर जाहि, सतमती[7] सुनहु सुभाय।
पन कन्यका जुत पेम, नहि होय खंडित नेम ॥३१
सुत होय मोहि समाँन, विद्या विवेक विधाँन।
अरु विस्नु कौ अवतार, सब कहहि ताहि संसार ॥३२
बरदान दै तपवृद्ध, सुख पाय बाचा सिद्ध।
कर सलल[8] मंजन काय, सो गयउ पार सिधाय ॥३३
गुरबनी[9] आई ग्रेह, उर बनी चित अछेह।
दस मास बीतत देर, वै जनत्र समुझी बेर ॥३४
सुत जन्यौ कुंज समीप, दुर[10] बैठ जमुना दीप[11]।
सुत जनम तैं ही साथ, मुख बोल कै कहि बात ॥३५
हम जात बनमें हाल, तप करन हेत त्रकाल।
कछु होय हमसौं काँम, तुम याद करहू ताँम ॥३६

१ निर्धार=निश्चय। २ दासपुत्री। ३ अविवाहिता। ४ अर्ज, प्रार्थना। ५ निषेध=मनाही। ६ लज्जावान्। ७ सत्यवती=मत्स्यगंधा। ८ सलिल=जल। ९ गुर्बिणी=गर्भिणी। १० दुरि—छिप कर। ११ द्वीप।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मैं आय कै निज माय, पग बंदहूं सुख पाय।
गई बासवी पितु गेह, दक[1] धोय कै निज देह ॥३७
अवतार विस्नु अनूप, स्वछंद व्यास - स्वरूप।
बासष्ट[2] मुनि के बंस, अबदात मति अबतंस ॥३८
जिह रचे कलजुग जान, पुन अष्टदसहु पुरान।
बहु बेद भेद बिचार, चिद भाग किय जिह च्यार ॥३९
अनुसार मति के उद्ध, जस पांडुबन - कुरु जुद्ध।
तिन कीन भारत[3] त्यार सब बेद कौ लहि सार ॥४०
इह व्यास की उतपत्त, सुखरूप जानहु सत्त।

दोहा— सत्यवती सांतन सुनहु, बिधवत कीनौ ब्याह।
कहत कथा बिसतार कर, अनुभव सहित उछाय[4] ॥४१
उपजे कुल ईख्याक[5] में, महाभिख[6] न्रपत महान।
अस्वमेध किय सहस इक, सुनहू परम सयान ॥४२
बाजपेय इक सत बहुर, जग्य किये नृप जास।
इन्द्रपुरी अमरावती, बसे जाय सोइ बास ॥४३
दरस पितामह[7] देवता, सोउ नृप पहुचे संग।
सेब करत ताही समय, ग्रेह प्रमेष्टी[8] गंग ॥४४
पवन लाग उछ[9] द्योसु[10] पट, उघरचौ गंगा अंग।
दृगन नमाये देख कै, सब देवन इक संग ॥४५
राजा सोइ देखत रह्यौ, गवर[11] अंग चिब गंग।
दृगन गंगहू देख कै, पायौ प्रीत प्रसंग ॥४६
दीनौ उभयन देख कै, सरोरुहासन[12] स्राप[13]।
मृत्यु - लोक में मृत्यु ह्वै, सुख दूख सहहु सँताप ॥४७
चाह्यौ गंगा चित्तबन, पितू हित नृपत प्रतीप।
बीच मिले अष्टहु बसू, स्राप बसिष्ट समीप ॥४८
अष्ट बसहु उद्यान में, बिचरत करत बिलास।
दोउ बसु तिय उपदेस तैं, नंदनि लई निकास ॥४९

---

१ उदक=जल। २ वसिष्ठ। ३ महाभारत। ४ उत्साह=उच्छाह। ५ इक्ष्वाकु। ६ राजा का नाम। ७ ब्रह्मा। ८ परमेष्ठी। ९ उछल कर, ऊपर उठ कर। १० दिवस। ११ गोर। १२ ब्रह्मा। १३ शाप।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दियौ स्राप वासिष्ट द्रुत, अष्ट बसू अबरेख।
परपंथ के रत पाप पथ, द्रगन लेय हम देख ॥५०
द्यौ आदक मृत देह कै, सुख दुख भोगहु संग।
परासकंधी[1] पाप कौं, इह फल लेहु अभंग ॥५१
बसु बोले वासिष्ट सौं, द्यौउ पर मोखी[2] देख।
पसितोहर[3] हम सात पुन, बिधबत न्याय बिसेख ॥५२
दंडनीत लख दीजियै, करहै अंगीकार।
मुनिवर आप महान मति, न्याव करहु निरधार ॥५३
बोले मुनहुं बिचार कै, सातहु कौं मम स्राप।
अल्प काल में उद्धरहु, प्रत दोउ[4] दीरग पाप ॥५४
जैसी करनी जाहि की, भुगतै जैसोइ भोग।
इही न्याव घर ईस कै, जनहु सुख दुःख जोग ॥५५
पापहु में बसु पुन्य तैं, भई गंग सौं भेंट।
अरज करी हम उधरहुं, पोषहु तोषहु पेट ॥५६
कह्यौ बसुन मंदाकनी[5], करहु न सोक कदाप।
इक इक बच्छर उद्धरहू, सात पुत्र कौ स्राप ॥५७
विस्नुपदी[6] महमा बड़ी, निज प्रभाव रत न्याय।
आप स्राप बस अनुसरत, जीव उधारत जाय ॥५८
भूँकौ तौ पाँनी भलौ, करता आतिथ[7] काज।
स्रापत गंगा बसुन कौं, किय पन तारन काज ॥५९
पुन महांभिसहु प्रतीप कै, भये सुत सांतन भूप।
पितु गमन्यौ बन हेत तप, सबहि राज कौं सूंप ॥६०
सांतनु नृपत सिकार कौं, गये बिपन लहि गैल।
खोजन लागे मृगन खग, सैवलनी[8] तट सैल ॥६१

छंद मुक्तादाम

हीयै जब गंग उमंगीय हेत, कीयौ नृप अंग अनंग निकेत।
प्रभाव सु पुन्य पराक्रम-पुंज, मनो मकरध्वज दूसर मंजु ॥६२
बनी तब गंगहु अंगना[9] बेस, अलंकृत धारन कीन असेस।
अनूपम भीन टंबर आंन, मनोहर आँनन की मुसकान ॥६३

१ चोरी। २ मुक्ति। ३ पश्यतोहर=चोर। ४ द्योसु नामक वसु। ५-६ गङ्गा। ७ आतिथ्य। ८ शैवालिनी=नदी। ९ स्त्री।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रह्यो अत सोभन जोबन रंग, उहासत[1] चंद्रमनी दुति अंग।
तिया सोइ गंग तरंगनी[2] तीर, घरी नृप आवत देखत धीर ॥६४
पहुँचीय आय कै ताहि समीप, पुकारीय ता कह नंद प्रतीप।
कहौ तुम मानुखी देविय कौन, जु पै तुम किन्नरी गंध्रबी जौन ॥६५
लियौ मन मोह कै संग लगाय, जगाय कै काँम कहाँ तुम जाय।
कह्यौ तब नार सुनौ नृप कान, भये तुम बंस जजात के भाँन[3] ॥६६
कहै हिय प्रांजल होय कै कथ्थ, सबै बिध नीतहु रीत समथ्थ।
कियौ कछु आस्रव[4] चाहत कोय, सुनौ हिय प्रांजल ह्वै तुम सोय ॥६७
करै हम जोय सुभा-सुभ काँम, निसेध न कीजियै लीजियै नाम।
सुनै स्रुत अप्रिय बानीय सोर, चली हम जावँहगी तुम छोर ॥६८
करचो पन भूपहू अंगियकार[5], बिसारद हारद[6] चित्त बिचार।
लियै अबरोधन[7] बीच ललांम, बसाइय चंदमुखी निज बाँम ॥६९
बिधोबिध राचत भोग बिलास, हियै नित बाढ़त प्रेम हुलास।
सजै तन अंबर भूखन सैंन, रमै सुख पाय रहै दिन रैन ॥७०
इतै बिच धारिय गर्भ-अधाँन[8], जम्यौ हिय आँनद अंकुर जाँन।
बिसर्जन औध[9] के मास बसाय, ऊपजिय अंगज[10] गंगहु आय ॥७१
वही सुत बार की धार बहाय, अनंदत ही अवरोधन आय।
जनै सुत सातहु अब्द जितेक, इहीं किय सातन की गत एक ॥७२
रह्यौ नृप देखत रानिय राह, प्रनासत पुत्रन तोय[11] प्रवाह।
भयौ सुत अष्टम द्यौवसु भेस निहार कै बोलेयु गंग नरेस ॥७३
जनै सुत नीर में बोरत जाय, अहै कुल बृद्धिय कौन उपाय।
बिनासन देहुँ न मो सुत बाँम, करौ मन मानत जो कछु कांम ॥७४
निहार कै गंग कही नृप नीक, कियौ तुम आस्रव मोर अलीक।
हमै नहिं जानिय ना कछु हाल, भई बस स्राप कें गंग भुवाल ॥७५

---

१ खिलना, प्रकाशमान होना। २ नदी। ३ भानु, भुवन=सूर्य, भुवन। ४ आश्रव=आश्वासन। ५ अंगीकार=स्वीकार। ६ हार्द=हृदय का, प्रेम। ७ अवरोध=तट, रुकावट, बन्धन। ८ आधान=रहना, धारण। ९ अवधि=सीमा। १० पुत्र। ११ जल।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बसी तुव ग्रेह विचारहु बाँम, महा अघ मैटन कौन मुकाँम।
बसू भये मो सुत अष्टहु बीर, अभैपद[1] हेत बहावत नीर ॥७६
भये अघ मोचन सात भुआल, लहौ इह अष्टम मो सुत लाल।
पलै नहि मात बिनां कोउ पूत, इहै परपाटिय आद अभूत ॥७७
बिचार कै सौंपहु मोर बरिष्ट, इहै लहि सिद्ध करौ तुम इष्ट।
जबै सुत होवहै बेस जबान, इहै तुम सौंपहुगी फिर आन ॥७८
नरेश्वर तोरहु[2] के पन न्याय, बसू पन मोरहु जेम बसाय।
तज्यौ तुम त्यांनहि[3] त्यागत तौन, भली बिध जानत जाबत मौन ॥७९
इहै कहि गंग गई निज ऐन[4] बिसास न पावत आवत बैन।
बिचारत रानीय पुत्र बिजोग, सोइ हिय भूप बढ्यौ अत सोग ॥८०
हुदै लख आश्रव की फिर हाँन, विमासत सासत सांज[5] बिहांन।
समै इक भूपत काज सिकार, नदी तट गंगा गये निरधार ॥८१
तही बन हात(थ) गहै धनु तीर, बिलोकिय डिंभ महा बरवीर।
निहारिहु आक्रत[6] ताहि निदान, इहै मम पुत्रन है अनुमान ॥८२
कह्यौ नृप कौन के राजकुमार, महातनु दीसत[7] के सुकमार।
नहीं तिह उत्तर दीन नरेस, पयोनद अंतर कीन प्रबेस ॥८३
जबै सुत आपुन जानिय जांन, सलाघाय[8] गंग करी सुखदान।
मिली धर संचर[9] गंग उमंग, इहै सुत रावरौ लेहु अभंग ॥८४
नृभै इह बिस्नुपदीदत नाम, धराबहु मो सुत कौ चिब धाम।
संबोधन दै गइ गंग सिधाय, लयौ सुत भूप ही कंठ लगाय ॥८५
पिता सुत बाढ़त नेह परीख[10], सिखावत नीत तनं-धय[11] सीख।
भये कैंउ काल बितीत भु बाल, अहेरन हेरन चाल उताल ॥८६
जोई रविनंदनी के तट जाय, सिकार कौं खेल खिलै सुख पाय।
जहाँ इक द्यौस भयौ इह जोग, उपज्जय आय सुगंधीय ओघ ॥८७
धरचौ नृप ध्यान सुगंधिय घोर, बहीं हित चाह चल्यौ जिह ओर।
जहां तहाँ भूपत देखत जाय, अहै कहुं मालती चंपक आय ॥८८

१ निर्भयपद। २ तुम्हारे। ३ उन्हें। ४ अयन=स्थान। ५ सायं। ६ आकृति। ७ देखने में। ८ श्लाघा=प्रशंसा। ९ शरीर। १० परख कर=देखकर। ११ स्तनन्धय=बालक, पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लई रख हेर प्रभंजन लार, निरखीय [स][1] सुंदर संचर नार।
मलीनस अंबर अंग मझार, सुसोभत[2] नाहिन कोय स्रंगार[3] ॥८९
प्रकासत जोबन की दुति पिंड, महा रमनीय पयोधर मंड।
निहारिय कंजन[4] गंजन नैंन, अनूपम इंदुमुखी चिब अैन ॥९०
कहो तिह भूप अहो तिय कौन, तलासत जात पिता हम तौन।
कुमारिय दीसत बेस किसोर, छल्यौ हय देख लयौ चित चोर ॥९१
चली मम तीय गई कर छंद[5], अहो पटरानीय होहु अनंद।
कह्यौ तब सत्यवती सुन कान, नरेश्वर आप तौ नीत निधांन ॥९२
कहाँ तुम छत्रीय जात कुलीन, अहो हम धीवर जात अलीन।
बनै हमरौ तुमरौ किम ब्याह, सपेखहु नीक बिचार सलाह ॥९३
हुई कछु चाह तुमैं हिय हेर, बिचारहु मो पितुतैं इह बेर।
चले नृप दास के पास बिचार, अवेसन[6] कारन कथ्थ उचार ॥९४
दहूँ कर जोर कही तब दास, अहो नृप लेहु न होहुं उदास।
तथाँ इक बीनती यामह तौंन, जिहीं बिध आस्रव[7] जानहु जौंन ॥९५
सुता-सुत[8] होय कहूँ सुख साज, रहै सोइ पट्टप[9] पावहि राज।
सुनै नृप दास के वायक श्रौन, भये मन भंग गये निज भौन ॥९६
उपज्जिय आयकें चित अछेह, दहै निस बासर हीं दुख देह।
बका[10] उदयान भयौ मन ताहि, थिराबत नाँहि न पावत थाह ॥९७
बिना जल ज्यां सितकोलक[11] बृंद, रहै अकुलावत चित्त नरिंद।
निहारिय बिस्तुपदींदत नैंन, उपज्जिय भूपत कोन अचन ॥९८
अमातन[12] बोल कही अकुलाय, कहा दुख मो पितु कैं इह काय।
न आवत नैनन नींद निसाह[13], लहा तन खाद न ओदन लाह ॥९९
सबै मिल पूंछहु भूपत सथ्थ, कहौ मम आय कहै सोइ कथ्थ।
अमात्यहु ऊठ चलें अकुलाय, जुहारिय भूपत के ढिग जाय ॥१००
कही सब प्रवृत[14] राजकूमार, संबोधन धीसख[15] बुद्ध सुमार।
कह्यौ नृप मंत्रिन सौं निज काज, सुनौं श्रुत मंत्रीय और समाज ॥१०१

---

१ मू० प्र० में यह अधिक है। २ सुशोभित। ३ शृङ्गार। ४ खञ्जन। ५ छल। ६ विवाह। ७ आश्रव=आश्वासन, प्रतिज्ञा। ८ दौहित्र। ९ सिंहासन पर। १० विकलता। ११ एक प्रकार की मछली। १२ अमात्य=मंत्री। १३ निशा=रात्रि। १४ प्रवृत्त, प्रभृति=वृत्तान्त, आदि। १५ मंत्री।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नही इक पूत में पूत निदान, ज्युही इक आँख में आँख न जाँन।
उपज्जिय मो चित येह अँदेस, निरंतर बात प्रकास नरेस ॥१०२
निरखीय ब्रिस्नुपदी सम नार, कुमारीय बेस नई सुकमार।
मनोरथ सिद्ध करी मिल मोहि, सुता तुम दास की लावहु सोय ॥१०३
दीयै वह कन्यका सुंदर दाँन, विचारहु जायकै ताहि बिधाँन।
गये सब मंत्रीय पास गंगेव, भली बिध भूप कह्यौ इह भेव ॥१०४
मिले तब मंत्रीय राजकुमार, गये सोइ दास के पास अगार[1]।
अहो तुम पुत्रीय माँगन आय, मनोरथ पुज्ज बनावहिं माय ॥१०५
निहार कै उत्तर दीन निखाध[2] उपज्जीय जो कछु चित्त उपाध।
सबै मिल मेटहु मोर संदेह, अमातन बात सुनौ श्रुत एह ॥१०६
जिही घर जानबी-पुत्र[3] जवान, नरेश्वर यंभन[4] राज निदान।
दीयै कछु भाग न दास दुहित्र, परामुख होवहै पुत्रीय-पुत्र ॥१०७
कछू इह जत्न प्रकासहु कोय, ततौ[5] हम पुत्रीय देवह तोहि।
कहो सुन मंत्रीहु राजकुमार, बिसासीय[6] धीवर बात विचार ॥१०८
सुता तुहि होवहिगे सुत सोय, समापहि[7] ताकह राज स कोय।
करै पन[8] दूसरहू सुन काँन, बढ़ावहिं संतति नाहि बिधांन ॥१०९
सँवेसन[9] नारन तै तज सुद्ध, इहै हम आश्रब धारेउ उद्ध।
सवै कहु स्वप्नहु नारीय संग, लहै असि-पुत्रीय[10] छेदन लिंग ॥११०
कियौ पन भीसम येह करूर[11], सराहन लागीय स्वांतक सूर।
सुकन्याय दास दई तिह सूंप, बिबाहन कारन सांतनु भूप ॥१११
बिबाह कै सत्यवती तिह बेर, करी पटरानीय राजन केर।
उभैं[12] सुत सत्यवती नृप अंस, बढ़े नहिं ताहीय तै कछु बंस ॥११२
भयौ सोइ सत्यवती सुत भूप, स को रजधानीय भीसम सूंप।
मरयो रुज[13] एक मरयौ रन मंड, रही नृप एक कै द्वै तिय रंड[14] ॥११३
तबै सुत ब्यास कौं बासवी टेर, बिचार कै भीसमहू तिह बेर।
तहाँ कहि सत्यवती तुम तात, जजात के बंस कौं राखहु जात ॥११४

---

१ आगार=गृह। २ निषाद=धीवर। ३ जाह्नवीपुत्र=गांगेय, भीष्म। ४ यमराज
५ तब तो। ६ विश्वासार्थ। ७ समर्पित कर। ८ प्रण। ९ संवेशन=सम्बन्ध १० तलवार,
कटार। ११ क्रूर=कठोर। १२ उभय=दोनों। १३ रोग। १४ रंडा=विधवा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करी सुन व्यासहु मात की कांन[1], दीयै ऋहुँ भ्रात तीया सुत दान ।
बिचत्रहुबीरज[2] की कुल वृद्ध, सोई सुत क्षेत्रज तै भई सिद्ध ॥११५
भयौ धृतराष्ट्रहु जेष्टन भूप, सोई निज अक्षमिताक्ष[3] स्वरूप ।
सिंघासन साँतनु राज समस्त, हुयौ सोइ पंडु नरेसुर हस्त ॥११६

दोहा — भीसम की मति सौं भवौ[4], पांडुय-राज प्रतिष्ठ ।
बिमल राजमंत्री बिदुर, कीनै भ्रात कनिष्ठ ॥११७
रमनी द्वै धृतराष्ट्र कै, गंधारी निज ग्रेह ।
बैस्या[5] दुती[6] बखानियै, निपुन तीया जुत नेह ॥११८
कुंती माद्री पांडु कै, रूपवती रमनीय ।
राजा मन रंजन रहस, कंज-नयन कमनीय ॥११९
सुत गंधारी येक सत, सुत बैसी मति सुद्ध ।
नाम जुजूछू[7] जानियै, पितु धृतराष्ट्र प्रसिद्ध ॥१२०
सूरसैन कन्या सुघर[8], कुंती तन सुकमार ।
कुंतभोजनिह कन्यका, पुत्रीय लीय जुत प्यार ॥१२१
अग्नहोत्र थित ऊद्धबँह, सूरसैन कीय सूप ।
अवसर दुरबासा वहीं, आये परम अनूप ॥१२२
कुंती मुनि सेवा करी, च्यार मास रहि छाय ।
कुंती कां करकै कृपा, मंत्र दीयौ समुझाय ॥१२३
जिह देवन कौं जाचहै[9], ऐहै करत ही याद ।
सिद्ध मनोरथ फलहि सब, बिघ्न न करहु बिखाद[10] ॥१२४
मुनि दुरबासा महत मति, सोइ पुन गये सिधाय ।
कुंती आवाहन कियौ, परख[11] अरक[12] सुख पाय ॥१२५

छंद मुक्तादाम— कुमारीय कुंतीय बेस किसोर, जगै तन जोबन की दुति जोर ।
करै मन रंजन मंजन काय, दियै चख[13] खंजन गंजन दाय ॥१२६
छुटे कच साईय बस सरीर, भ्रमै भृ(भ्र)मरावल मानहु भीर ।
दमंकत दीपसिखा सम देह, ठमंकत लागत पायल ठेह ॥१२७

---

१ वचन, आज्ञा । २ विचित्रवीर्य । ३ अन्ध । ४ हुआ । ५ वैश्या = वैश्यकन्या । ६ द्वितीय । ७ युयुत्सु । ८ सुघड़—सुंदर । ९ याचना करेगी । १० विषाद । ११ परीक्षा । १२ अर्क = सूर्य । १३ चक्षु = आंख ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उरोजन बाढत सोभ श्रहीन, जगै चिब पाट पटंबर झीन।
उह्रांसत आनन पूरन इंदु, बनी तिह भाल में रंजन बिंदु ॥१२८
भली बिध सोध करी सुच भूंम, धुकाय कै गंधपिसोचका-धूम।
सुधारीय सिंदल[1] तेल सुगंध, धरे कहुँ कुंकम धूलीय गंध ॥१२९
पसारोय गुंफत माल प्रसून, करी निरहारीय च्यारहु फून।
प्रचारीय ठौरई कंत प्रयोग, जपे रबि-मंत्र निमंत्रन जोग ॥१३०
बने नर संचर[2] सुंदर बेस, दयौ दरसाबहु आय दिनेस।
भई अबलांचत[3] कुंतीय भेख, दहूं द्रग सूरज कौ तप देख ॥१३१
कियौ अभिबंदनहू कर जोर, नमाय कै सीस प्रसंग निहोर।
करी तुम पावन दासीय केर, विभावर[4] आय मिले इह बेर ॥१३२
कियौ मन-बंच उदंचत कांम, सिधावहु मंडल कौं जगसाँम।
दियौ तब सूरज देव निदेस, बिचारहु आस्तिक नास्तिक बेस ॥१३३
निमंत्रण बेमुख[5] देत निकार, इहीं मम नीक कीयौ अपकार।
उपज्जीय मो तन आय अनंग[6], सु भामनि पाय लहौ सुखसंग ॥१३४
भयौ मन बंचत[7] तोरहू भांम, करौ मन बंचत मोरहु कांम।
कह्यौ तब कुंतीय बेस कँवार[8], दिनेसम जानत मोहि उदार ॥१३५
इहै तुम सासन[9] देत अजोग, भये वृत-भंग कहा सुख भोग।
दयौ तिह ऊत्तर सूरज देव, भली विध कन्यका जानत भेव ॥१३६
लगै बृत-भंग न पाप लगार, करौ मन-बंचत राजकुमार।
पराक्रम मो सम दाँनीय पूत, उपज्जहै तोहि पिचंड[10] अभूत ॥१३७
न तौ तुम मंत्र बतावन-हार, सराप कै जावहै गेह सिधार।
सुनी इह कुंतीय बात दिनेस, नमाय कै नैनन मान निदेस[11] ॥१३८
दयौ रतिदान सु सूरज देव, उदारनो कुंतीय होय अभेव।
गये रवि मंडलहूँ निज ग्रेह, इहाँ गत कुंतीय की भई एह ॥१३९
बसी सोई जाय इकंत में बास, अनूपम देख कै गुप्त अबास।
लखे नहीं मात पिता अरु लोय,[12] सिवाय न दासीय कै इक सोय ॥१४०

---

१ चन्दन। २ शरीर। ३ अबलोचित, अभिलाञ्छित, अभिलाषित। ४ सूर्य। ५ विमुख।
६ कामदेव। ७ वाञ्छित। ८ कुमारी। ९ शासन=आज्ञा। १० प्रचण्ड।
११ निदेश=आज्ञा। १२ लोक, लोग।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अनूँपम कुँडल कंकट अंग, उपज्जीय संग ही धार अभंग।
लख्यौ सुत आनन मात ललाँम, अनूरम सूर ज्युही अभिराँम ॥१४१
भयौ मन व्याकुल तागन[1] भाय, उचारीय दासीय साँ अकुलाय।
बहाबहु पेटीय कै धर बीच, नहाबहु मोहि अभागनि नोच ॥१४२
कीयौ तब दासीय जेम कहाय, जहाँ तट गंग तरंगनि जाय।
बहाय कै पूत नहाय कै बार[2], सबै तन आईय गेह सँबार ॥१४३
लखी सोई पेटीय जाबत नीर, तिहो अधरथ्थ[3] गहो नृप तीर।
दई निज रानीय कौं सोई दत्त, अपुत्रहु पुत्र लह्यौ अधरथ्थ ॥१४४
जिही तिह राधका रानीय जोय, कीये सुत मंगलहु सह कोय।
अनंदत पालन लालन आद, बिसंभर[4] मैटीय मोर विषाद ॥ १४५
विचार कै या विध भूप विचत्र, महामुद पोषीय अंगज मित्र।
करन[5] हु नाम धरयौ तिह केर, बदै जस ताहि बिभात की बेर ॥१४६
स्वयंबर कुंतीय पंडुव[6] साथ, बिबाहृत कीनीय बीर विख्यात।
स्त्रीया तिह दूसर मद्र नरेस, बिचच्छन रूपवती नव बेस ॥१४७
सोई नृप कांतर[7] बीच सिकार, आवांतर आंतर देस उजार।
गयौ तहाँ एह भई गति गूढ, महा क्रम जोग लई मति मूढ ॥१४८
जहाँ मुनि एक तीयासु जमीन, क्रिया पसुताहि प्रसारत कीन।
तिहीं मृग जानकैं बान कौं तान, हन्यौ जिह प्राँन कौं कारक हान ॥१४९
लग्यौ तिह भूप गयौ अकुलाय, वढी मुनि देख कै ज्वाल बलाय।
दयौ तहाँ स्राप जिही मुनि देख, इही गत लेबहुगे अबरेख[8] ॥१५०
त्रीया रत[9] चाबहुगे तब तात, सुसंग सौं जाबहुगे जम साथ।
भयौ मुनि स्राप गयौ निज भौंन, गह्यौ मन सोक लयौ बन गौन[10] ॥१५१
तज्यौ निज राज लियै संग तीय, सतीवृत-साधन नेम सुकीय।
कहूं तट गंग कुटी नृप कीन, घटी तन आय लखी चित घ्रोन[11] ॥१५२
धवै[12] पद धूरजटी[13] धर धीर, बसै जिम पंचबटी रघुवीर।
गहै तप देख लहै कहु ज्ञान, बहै वृत तीरथ जोग विधान ॥१५३

---

१ त्याग। २ वारि। ३ अर्थ रास्ते में। ४ विश्वम्भर। ५ कर्ण। ६ पाण्डु। ७ कान्तार = वन। ८ अभिलेख = निश्चित। ९ रति। १० गमन। ११ घृणा। १२ धवै = ध्यावे, ध्यान करे। १३ धूर्जटि = शिव।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुनै कहु बेद पुरांनन श्रांन, धरै कहु ईस बिसंभर ध्यान।
सुन्यौ कहु सुमृती[1] कौ तत सार, बिना सुत मुक्त न होय बिहार ॥१५४

दोहा— सुन कै नृप पांडु श्रबन, अति चित भयौ उदास।
तियन[2] कह्यौ समुझाय कै, परम मंत्र परकास ॥१५५
तज्यौ राज बपु करत तप, जप साधन अरु जोग।
बिना पुत्र सब ही बिफल, पद निर्वान प्रियोग[3] ॥१५६
तिह उतपत सुनहू तीया, दस प्रकार कहि देत।
वेद सुमृति आपत[4]-बचन, सब कोई कहत सहेत ॥१५७
आप तीया के उदर में, उपजत अपनै अंस।
जाकौं अंगज जानीयै, बिबध बढ़ावत बंस ॥१५८
जाच[5] करै जामात तें, सुता बिवाहत साथ।
सुत लावै हित संतती, बिदुष बिचारत बात ॥१५९
पत[6] ह्वै रोगी पिड सौं, और बीज उपजाय।
जाकौ क्षेत्रज जानीयें, सबहि कहत समुझाय ॥१६०
पत जावत परलोक कौं, त्रीय बिधवा ह्वै तत्र।
उपजै ऊतम अंस सौ, पुन वह गोलक पुत्र ॥१६१
पति जीवत जाकी प्रीया, पुरुष और परसंग।
सोई पुत्र कुंडज समुझ, बिदुष बखानत व्यंग ॥१६२
गरभ कँवारी तीय गहै, परनै जनै सपूत।
सो सहोढ़ समुझहु सकल, सूत तथाँ अनसूत ॥१६३
पिता गेह कन्यापनहि, उपजत जार अधीन।
जनै सु सुत एकांत जिह, कहत बिदुष कानीन ॥१६४
उचत गरथ दै अपुन कौं, विक्रीय अरथ बसाय।
क्रीत पुत्र ताकौं कहत, बिधबत[7] रीत बसाय ॥१६५
बन में परचौ सुभाग बस, ग्रहि कै लावै ग्रेह।
प्रापत ताहि प्रमानीये, अनुक्रम जानहु एह ॥१६६

---

१ स्मृति। २ मू०प्र० में=श्रीयन है। ३ प्रयोग=अनुष्ठान। ४ आप्त=विश्वस्त। ५ याचना। ६ पति। ७ विधिवत्।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मात पिता असमर्थ ह्वै, पलै न जासां पुत्त।
औरन कौं देबै अरप[1], दसम सोय सुत दत्त ॥१६७
इह बिध पांडू त्रीयन सौं, कही न्याय जुत कथ्थ।
तपसी द्वज तै अबस[2] तुम, पुत्र करहु उतपत्त ॥१६८

छंद तब कह्यौ कुंतीय तीय, दृढ़ मुनि कुसारनि[3] दीय।
अघोर— पुन करत मंत्र प्रीयोग, जिह सुर निमंत्रन जोग ॥१६९
सोई आय करहै सिद्ध, उर कांमना अबिरुद्ध।
तब कही पांडू तीय, कृत काज है करनीय ॥१७०
कीय जाप मंत्र कृतंत[4], तिंह आय साध्यौ तत।
तिह जोग ही सौं ताय, उपज्यौ जुजुष्टर[5] आय ॥१७१
सिसु भयौ पुष्ट सरीर, घर औध केतक धीर।
पुन कियौहु मंत्र प्रयोग, जिय जानकै रितु जोग ॥१७२
वँह ठौर वँह बिध आय, बपु धार कै पुन वाय[6]।
भय तहो अंगज भीम, सुत पवन तै बल सीम ॥१७३
पुन दुती सुत भय पुष्ट, अरु मंत्र साधेउ इष्ट।
पुन आय इंद्र पुनीत, पहचाँन कुंती प्रीत ॥१७४
सुत भयौ अर्जुन सूर, कलि विजय कौ अंकूर[7]।
सुत भये तीन समाँन, विख्यात जग बलवान ॥१७५
जीय हेत कुंतीय जांन, दीय मंत्र माद्रीय दांन।
सुरबैद पाय प्रसंग, इक जीव जिह दुई अंग ॥१७६
दुई नकुल अरु सहदेव, सुत भएउ पडू समेव।
सुत पांच क्षेत्रज साख, उतपंनि कीय अभीलाख ॥१७७
बिध जोग इक दिन बांम, कँहु गई कुंतीय कांम।
नृप पंडू माद्री निहार, कीय तही रत बलकार[8] ॥१७८
भय प्रांन त्याग भुआल, बस हौंनहार बिहाल।
माद्री भई बस मोह, सुत सौंप कुंतीय सोय ॥१७९

---

१ अर्पण। २ अवश्य। ३ दुर्वासा। ४ कृतांत=धर्मराज। ५ युधिष्ठर। ६ वायु। ७ अंकुर=बीज। ८ अधिक।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पति संग गई जुत प्यार, बपु जार कै तिह बार।
निज पुत्र कुंतीय लेह, गई हस्तनापुर गेह ॥१८०
जब भीस्म बिदुर सुजांन, पुर बासीयन परधांन।
कुंती सु कियेउ कहाय, भय पुत्र इह किह भाय ॥१८१
बस स्राप पंडू बिसेस, सुत भये किह बिध सेस।
सुर बोल बोलीय सोय, सुन लेह बात स कोय ॥१८२
भल कह्यौ देवन भेव, सुत पांच हमकौ सेव।
इह पुत्र लीध उपजाय, नृप पांडू सासन न्याय ॥१८३
ध्रुव धार कै होय धीर, गंगेव बिदुर गँभीर।
थिर राख लीनै थांन, इहि जान बाहु आजांन[1], ॥१८४
द्रोपद स्वयंबर दाय, जहां पांच बंधव जाय।
जहां द्रोपदी लीय जोय, सामांन तीय कीय सोय ॥१८५
नब जोबना तिह नार, लघु जेष्ट अनुक्रम लार।
सुत जने पांच समांन, पति पांचहू परबान ॥१८६
श्रीकृस्न भगनी साथ, पुन व्याह कीनौ पाथ[2]।
अभमन्यु[3] कुवर उदार, महारथिनि लीय तिह मार ॥१८७
सुत द्रोपदी के सुद्ध, जो मरे बीच ही जुद्ध।
अभमन्यु तीय उतराहि[4], तिह उदरमें सुत ताहि ॥१८८
जिह अस्वथांमा जोग, पर अस्त्र कीन प्रयोग।
श्रीकृस्नचंद सिहाय[5], तिह चक्र तैं कीय ताय[6] ॥१८९
सुत अंधनृप[7] सत संग, जे मरे ताहो जंग।
ध्रतराष्ट दुहु कर धोय, बैठे रहे कुल बोय ॥१९०
गंधारी जा तिह ग्रेह, इह अंध नृप तीय एह।
जिह पितु जुजुष्टर[8] जान, सोई करन सेब सुग्यान ॥१९१
लघु भ्रात बिदुर ही लार, सो करत अंध सँभार।
कटु बाद भीम कहंत, सुन अंध भूप सहंत ॥१९२
इहि अब्द दस अरु अष्ट, कीय टेर घोर कलिष्ट।
कहनी जुजुष्टर कीन, हित कीया पुत्रन हीन ॥१९३

१ आजानु=घुटनों तक। २ पार्थ=अर्जुन। ३ अभिमन्यु। ४ उत्तरा। ५ सहाय
६ ताहि। ७ धृतराष्ट्र। ८ डुबाकर। ९ युधिष्ठिर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कोय बृकोदर[1] जुत कोह[2], मन मोह उपजत मोह।
कछु द्रव्य हम इह काज, तुम देहु नृप सिरताज ॥१९४
सुत कीया करकै स्राध, बन बसहिगे निरबाध[3]।
जब जुजुष्टर पितु जाँन, दीय द्रिव्य कारन दाँन ॥१९५
गये अंध नृप कर गाँन, सँग बिदुर भ्रात सयान।
संजय गयौ फिर साथ, अरु सुबलजा[4] तीय आथ ॥१९६
अरु गई कुंती आप, तिह संग में हित ताप[5]।
नद गंग पावन नीर, त्रन[6]-कुटी कर-कर तीर ॥१९७
बस रहे बन में बास, अत होय जक्त उदास।
रहे बरख षट तज राग, परलोक हित हीय पाग ॥१९८
नृप जुजुष्टर जुत नेम, इक स्वप्न देख्यौ ऐम।
कुंती सु दुर्बल काय, बन रहो वास बसाय ॥१९९
जब कह्यौ बंधुन जोय, हीय मोहि बिस्मय होय।
तुम चलहुगे बन तात, मुख देखहौं पितु मात ॥२००
सुभद्राहु द्रोपदी संग, अभमन्यु की अरधंग[7]।
निज पंच बंधु नरिंद, वहाँ गये जहाँ नृप अंध ॥२०१
पितु-मात परसे पाय, सुखरूप सबन सुहाय।
ध्रतराष्ट नृप सौं धर्म[8], पूँछ्यौ बृतंत सु पर्म ॥२०२
पित्रब्य[9] विदुर पवित्र, तिह दरस चाहत तत्र।
ध्रतराष्ट बोले धीर, बन इहीं बिचरत बीर ॥२०३
नही ताहो है थित नेम, तपसी विरक्तही तेम[10]।
कहुँ बैठ ठौर इकंत, आराध भक्ति अनंत ॥२०४
सुन प्रथम दिन इह स्राँन, दिन दूसरै सुख-दाँन।
गंगा सु जाबत गैल, मन तनहि धोवन मैल ॥२०५
मिल गये बिदुर महाँन, जिह दरस दीनौ जाँन।
कर जोर बंदन कीन, पुन धर्म भूप प्रबीन[11] ॥२०६

---

१ भीम। २ क्रोध। ३ निर्बाध=निर्विघ्न। ४ धृतराष्ट्र की पत्नी सौबली, गान्धारी। ५ तपस्या। ६ तृण। ७ अर्धाङ्गी=स्त्री। ८ युधिष्ठिर। ९ पितृव्य=चाचा। १० वह। ११ प्रवीण=श्रेष्ठ, चतुर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जहाँ बिदुर निकसी जोत[1], द्रग लखत सबही उदोत[2] ।
मिल जुजुष्टर तन माँहि, सो गई बदन समाय ॥२०७
जिह दाह कारन जाँन, उपलाद[3] इँधन आँन ।
जब भई जिह लख जेम, आकास-बानी ऐम ॥२०८
नही देहु दाघ[4] नरेस, इह पर्म हंस असेस ।
जब जिय जुजुष्टर जान, सुरनदी करकै स्नान ॥२०९
तत आय आस्रम ताँम, पितु मात कीय परनाँम ।
ध्रतराष्ट्रहू धर धीर, सुन बिदुर त्याग सरीर ॥२१०
पूछी सु नृप जुत प्रेम, जिह कही देखी जेम ।
जब व्यास अवसर जाँन, मुनि कालकर्म[5] महाँन ॥२११
आये सुजन केऊ और, ठिक जहाँ आस्रम ठौर ।
जब बादरायन[6] जाँन, कुंती कह्यौ तज काँन ॥२१२
सुत जन्यौ रवि सँ सोय, हुथ भयौ परबस होय ।
तिह मुख दिखावहु तात, मन मोद मानहूँ मात ॥२१३
जब सुबलजा कहि जाहि, मैं सुजोधन[7] की माय ।
निज पुत्र आनन नेह, अभिलाष नैनन एह ॥२१४
तब कहि सुभद्रा तात, मैं कुँवर अभमन-मात ।
सिसु हन्यौ दुज्जन सोय, मुख तिह दिखावहु मोहि ॥२१५
सुन बादरायन स्राँन, धर जोग माया ध्याँन ।
सब को दिखाये संग, जो मरे बीचहि जंग ॥२१६
पुन कीय बिसर्जन पेख, अभिलाष पूर असेख ।
सब करत व्यास सराह, उर जोगबल अवगाह ॥२१७
गये व्यासहू बन ग्रेह, द्रग मोद सबकाँ देह ।
पितु मात अग्या पाय, सब भवन चलेउ सिधाय ॥२१८
गये जुजुष्टर कर गाँन, अह[8] तीन पाछै आँन ।
बिकराल आग बलाय, तागी सु तिह थल लाय ॥२१९
ध्रतराष्ट्र जुत अरधंग, अरु जरचौ कुंती अंग ।
इहि बच्यौ संजय एक, लाचार बिध कै लेख ॥२२०

१ ज्योति=प्रकाश । २ उद्योत, उदित । ३ उपलादि=गोबर के ऊपले आदि । ४ दाह । ५ कालकर्मा=नारद (?) । ६ व्यास । ७ सुयोधन=दुर्योधन । ८ दिन ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जो गयौ तीरथ जात, अत देख कै उतपात।
इह कही नारद आय, सुत धर्म कौ समुझाय ॥२२१
कीय सोक सुनकै कथ्थ, सुख दुखः भावी सथ्थ।
भये जब ही कुरु भारथ्थ, छतीस हायन[1] छत्त[2] ॥२२२
मदरा पीयैं बस मोह, दल बढ्यौ जादव द्रोह।
ह्वै मूढ अपने हाथ, सब ही कटे इक साथ ॥२२३
पुन कृस्न बारुनी-पेय[3], दुख इही त्यागी देह।
बसुदेव सुन इह बात, तन त्याग कीनौ तात ॥२२४
अरजुन गयौ अकुलाय, परभास क्षेत्र पलाय[4]।
समपराबिक[5] इह सुद्ध अंतहुँ क्रीया कर उद्ध ॥२२५
अठ राँनीयैं-पट अंग, सो जरी कृस्नहीं संग।
रेवत-सुता[6] बलराँम, लै जरी सग ललाँम ॥२२६
पुन द्वारका गये पाथ, सब जननि कारन साथ।
अबरोध[7] सहित उदास, बिध जुक्त दै बिसवास ॥२२७
सब काँ निकासत साथ, पाथोद[8] उभले पाथ[9]।
लीय पुरी ताही लील, इहि भयौ तहाँ असलील ॥२२८
लै चल्यौ सब कौं लार, मग इंद्रप्रस्थ मझार।
पुन मिले बीच पुलंद[10], द्रढ घेर कीनौ द्वंद ॥२२९
लीय लूट कै संग लाग, उर सोक बाढ़ी आग।
नर[11] इंद्रपस्थ निकेत, हीय हेर कै कर हेत ॥२३०
अनरुद्ध सुवन[12] अनूप, भल बज्र[13] कीनौ भूप।
पुर हस्थना गये पाथ, इहि कह्यौ सब उतपात ॥२३१

दोहा— व्यास कही बहु बारता, मेंटन सोक महाँन।
व्यास किरीटी[14] बचन सुन, पुन कीय प्रस्न प्रमाँन ॥२३२
मग आवत तसकर[15] मिले, करी लूट तज काँन।
कहा कहूँ मेरी कथा, हुई सकल बल हाँन ॥२३३

---

१ वर्ष। २ व्यतीत। ३ मदिरा पीने वाले=बलराम। ४ पलायन कर=भाग कर। ५ अन्त क्रिया। ६ रोहिणी। ७ जनाना, रनिवास। ८ समुद्र। ९ जल। १० पुलिन्द=भील। ११ अर्जुन। १२ सुत, पुत्र। १३ नाम (?)। १४ अर्जुन। १५ तस्कर=चोर, डाकू।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उत्तर दीनौ व्यास इहि, नर सुनहू निरधार।
गये नारायन संग गयौ, उर सज कौ आधार ॥२३४
जब नारांयन जनमहै, अवतरहै नर आय।
कहै तोर पराक्रमहु, निसचय जाँनहु न्याय ॥२३५

छंद हथनापुर पथ्थ गयौ हलकै, महाराज जुजुष्टर साँ मिलकै।
त्रोटक— कर जोर हकीकत क्रस्न कही, सुन लीन जुजुष्टर बात सही ॥२३६
जिस देह रही जीय जावत पै, पिछतावत थाह न पावत पै।
सिसि[1] जोत सरोज समाजहु कौं, जिम राह गह्यो दुजराजहो[2] कौ ॥२३७
बहुरै रितु दीसत है बरसा, निरबद्दर बिद्धत[3] जाँन निसा।
अरु आवत बूड़ीय ज्यौं अध में, नवका कहु साह पयोनिध में ॥२३८
मनु सेस[4] गई फन तें मन[5] ज्यौं, धनवत कौ चोर लयौ धन ज्यौं।
सुकीया मनु सीलवती सतिही, परदेस में छांड़ चल्यौ पति हो ॥२३९
रनवास सबै सुन रोवत है, निज नैनन नीर निचोवत है।
उमड़े द्रुपदी अत आँसुरबा, धुर के मनु आय झुके धुरबा[6] ॥२४०
रसना इक क्रस्नही क्रस्न रटै, कहो क्रस्न बिना दुख कौन कटै।
स्रवनाँ सुभद्रा इँह बात सुनी, बिललावत सोक बढ़ी बँहनी[7] ॥२४१
बनधार मनौ सफरी[8] बिछुरी, घन के रस[9] तंरत डूबी घरी।
महाराज जुजुष्टर कींन मतौ, चित तै बहजाय कै सोक छतौ ॥२४२
सब मंत्रिन बोल समाजन कौं, लीय कुंकुम थारीय लाजन[10] कौं।
हीय माझ बिचार घनै हित कै, कीय चर्चक[11] भाल परीछत कै ॥२४४
अनु बछर सो छब-तीसई[12] तै, छितराज कीयौ ध्रमराज छतं।
जोई छोड़ चल्यौ हरि जावत ही, गुन क्रस्नही के पुन गावत हो ॥२४५
तत भ्रात गये द्रुपदा तरुनी, धर ध्यांन हिमाचल की धरनी।
तहाँ जाय कै त्याग कीयौ तन कौं, क्रम क्रस्न लगाय जिहीं मन कौं ॥२४६
छित[13] में भयौ राज परीछत कौ, बिध नीत लहै परजा[14] बित[15] कौं।
परबच्छर साठ बितीत परै, धर भूप रह्यौं सोइ छत्र धरै ॥२४७

१ शशि = चन्द्र। २ द्विजराज = चन्द्र। ३ विद्युत = बिजली। ४ शेषनाग। ५ मणि। ६ छोटे बादल। ७ भगिनी = बहिन। ८ शफरी = मछली। ९ जल। १० लाजा = अक्षत, चावल। ११ तिलक। १२ छत्तीस। १३ क्षिति = पृथ्वी। १४ प्रजा। १५ वित्त = धन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मृघीया हित भूप गयौ बन में, मति मूढ़ भयौ उपजी मन में।
मुनि ध्यांनीय देख कै कंठ मही, अरुझाय दीयौ इक मृत्यु अहो[१] ॥२४८
मुनि की तँऊ नाहीं समाध मिटी, गव जात लख्यौ सुत ताहि घटी।
अति क्रोध भयौ तिह तें उर में, कहि कै जल अंजुली लै कर में ॥२४६
कुमती पितु मो अपमान कर्यौ, धमनो[२] पवनासन[३] ताहि धर्यौ।
वह दुष्ट सहो जमलोक बसै, दिन सप्त तक्षक आय डसै ॥२५०
सोइ श्राप उदंत[४] नरिंद्र सुनी, घट ताहि उपज्जोय पीर घनी।
तिह धीसख बोल लीये तबही, कहा कोजीयै ताहि उपाय कही ॥२५१
मिल मंत्रिन मंत्र बिचार महा, कर संमत कै मुख गौर कहा।
मुन श्राप क्षमापन मागन कौं, गबिजात के जावहु आँगन कौं ॥२५२
मुन कौं उत भेज कही मिल कै, हितगार रु आय किते हल कै।
स्रत जालोय मूंद सँकेतन में, नृप वैठ निकेत इकतन में ॥२५३
श्रवना इँह कस्यप बात सुनी, मिखहारक[५] मंत्र अभग्य[६] मुनी।
चित में बित की कर चाह चले, मग में तिह तक्षक आय मिले ॥२५४
कर बिप्र कौ रूप तिहीं कपटी, छलि कस्यप पूंछ उदंत छटी।
जुत आतुरता कँहां जावत है, कछु कारज मोहि कहावत है ॥२५५
कहुँ मित्र सुन्यौ नृप काटन कौं, द्रुत तक्षक के बिष दाटन[७] कौं।
हम जात परीक्षत के हित कौं, बहुरै बहु लावहिगे बित कौं ॥२५६
इन तें दुज बोलहु होय अहो, निसचै सिध कारज तोहि नहीं।
हम कौं तुम जानोय तक्षकहू, सुन लीजीयै बात सपक्षकहू ॥२५७
जिह काटहिगे सोऊ फेर जीयै, कोउ कोटक मंत्र इलाज करै।
कहि कै बट वृक्ष कौं काटतहीं, इह भस्म भयो उतपाटत हीं ॥२५८
इस वृक्ष कौ फेर उगावहिगे, जब तौ ममहू[६] विष जावहिगे।
जब कस्यप हात[१०] लयौ जल कौं, थित सींचत हीं बट के थल कौं ॥२५६
बट पल्लव पत्र सहेत बन्यौ, गरुआई[११] में तक्षक बिप्र गन्यौ।
अहि बिप्र कह्यौ सुनीयं अरजी, मनबंचत है धन सौं मुरजी ॥२६०

१ अहि = सर्प। २ गर्दन। ३ पवनाशन = सर्प। ४ वृत्तान्त। ५ स्रोत = मार्ग। ६ बिषहारक। ७ अभंग्य = अमोघ, अचूक। ८ मिटाने, उतारने। ६ उत्पादित = उखड़ कर। १० मेरा ही। ३ गौरव।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हम सौं तुम लै अभिलाष हरौ, करकै सिघ कारज गौंन करौ।
मुनिराज लख्यौ तब ध्यांन मही, नृप की कछू आयुर सेस नही ॥२६१
बित लै द्वज प्रेहहु कौं बहुरयौ[1],क्रम तक्षक अग्र प्रयांन करयौ।
जब और भुजंग स्वजातन कौं, भट जोर कह्यौ निज भ्रातन कौं ॥२६२
मुनि स्राप दीयौ अत क्रूर तैं, चिर आयु अजौं[2] नृप मूढ चितै।
कर बंध प्रबेसन[3] संध[4] कुटी, करकै बहु जत्न दुरयौ[5] कपटी ॥२६३
अपराध बिना अपकार कीयौ, द्वज ताहितै दारुन स्राप दीयौ।
द्वज दोषीय कौं निसचै डसहूं, कछु और उपाय करौं सु कहूं ॥२६४
तुम बिप्र कौ भेष करौ तन मै, पहुचौ सब राज-प्रबेसन में।
हम होय क्रमी तनके हरुवा, पहचान सकै नांहि पाहरुवा[6] ॥२६५
फल बोच तथा कहु फूलन में, दुर बैठुहुगौ अथवा दल में।
अहिजात बिचार कै मंत्र इहो मति मान सुतंत्रहु चित्त महो ॥२६६
कहि तक्षक औरन व्याज कीयौ,महाराज के धाम कौ मग्ग लियौ।
पहुचे द्वज ते हथनापुर में, पुन राज गये चल गोपुर में ॥२६७
तहाँ राज प्रवेसन-पाल[7] तहो, कहि कै अटके द्वज क्रत्तम[8] ही।
द्वज वृंद कही दरबारिन सौं, कुल रीत तजी किह कारन सौं ॥२६८
तपसी द्वज द्वार खरे तरसै, सनमानहु दाँन नहीं सरसै।
बिन आदर जाय बिरादर में, कहा बात कहै चित कादर में ॥२६९
अरजी तुम जाय करौ अब हीं, समुझाय कै राजन कौं सब ही।
अवकासही दै कहुं आवन कौं, मुरजी कहु भेंट मगावन कौं ॥२७०
कहै भूप सोई हम आय कहो, अन आदर होत उदास अहो।
सुन कै इह बिप्रन बात सही, कहु जाय हकोकत भूप कही ॥२७१
जीय जाँनतै भेंट चही जिन तै, वहँ आय कही तिह बिप्रन तैं।
द्वज भेंट जबै फल फूल दये, निज आदरतंसोइ भूप लये ॥२७२
फल बीच क्रमो[9] सौई होय फनो[10],नृप कौ बपु काट चल्यौ निगुनो।
हथनापुर हा-रव[11] घोर हुयौ, गहिकै अहिराजन गैल गयौ ॥२७३

---

१ वापस गया। २ अद्यापि=अब भी। ३ प्रवेशन=घुसना। ४ संधि=जोड़, छिद्र। ५ छुप गया। ६ पहरेदार। ७ द्वारपाल। ८ कृत्रिम=बनावटी। ९ कृमि=लट। १० फणी=सर्प। ११ हारव=हाहाकार।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तट गंग चिता रच ताहिय कौ, अगनी कीय दाहन बाहीय कौ।
जनमेजय बालक जाँन जीया, कुल प्रोहित भूपत कोन कीया ॥२७४
तदनंतर देख महूरत कौं, सुभ काल परीछत के सुत कौं।
जन मंत्रि मिले जनमेजय कौं, उर माझ बिचार कै आसय[1] कौं ॥२७५
थिर राज-सिंहासन थर्प दीयौ, क्रत कुंकुम चर्चक भाल कीयौ।
हथनापुर देस सबै हरषा, बरषै अवगाह मनौ बरषा ॥२७६
धनुबेद कृपा कृपधारन तै, कुल रीत पढ्यौ नृप कारन तै।
जिह कै सतसील जुजुष्टर ज्यौं, बपु जाँन बरिष्ट ब्रकोदर ज्यौं ॥२७७
गुरुकर्म विसारद बीर गनौ, मृघ बाँन सरासन जिस्नु[2] मनौ।
सहदेव प्रबुद्ध-पनै[3] सरसै, दुत-रूप ज्युहीं नाकुल दरसै ॥२७८
दुहिता पुन कासीयराज दई, नयनी-म्रघ नारीय बेस नई।
बिहरै नृप मंदर बागन कौ, रुचि पाय सुनै कहुँ रागन कौं ॥२७९
परजा नय-रीत सौं पालन में, लहि कै सुख संपत लालन में।
गन मंत्रीय सूर बिदग्ध गुनी, निज कारज राज बड़े निपुनी ॥२८०
नृप मंत्रन सीख लहै नित ही, जन मंत्रीय सासन लेत जिही।
परजा बढ़ वैभव नीति पखै, सठ धूरत चोर न बोल सकै ॥२८१
जनमेजय राज बढ्यौ जगती, पितु ज्यौं नयनीत महाँ प्रभुती।

दोहा— येक कथा यैसी भई, वही समय बिच आय।
महिला गुरु ऊतंक मुनि, हुकम दीयौ हरकाय ॥२८२
कुंडल इक रानी अमुक, मोहि आँन दै मित्त।
मुनि चाले रानी मिली, वह दोय कुंडल अथ ॥२८३
आवत लै कुंडल उलट, मग सरवर तट मेल।
मंजन हित ऊतंक मुनि, करत रहे जल-केल[4] ॥२८४

छंद इह अवसर तक्षक जहाँ आयौ, पहन आप कुंडल सुख पायौ।
दूंमक्सरी— मुनि ऊतंक आये इतनै में, तसकर करम कीयौ तितनै में ॥२८५
बहु प्रकार कीनी मुनि बिनती, गनै कहासग ताकी गिनती।
जब दीने मुसकल ते जाकौं, सरसे मुनि मन में लख ता कौं ॥२८६

---

१ आशय=रहस्य। २ जिष्णु=अर्जुन। ३ पाण्डित्य। ४ जलकेलि=जलक्रीडा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अन अपराध करी उपहांसी, उपजो हिय मुनि अमित उदासी।
बैर-भाव तिह दिन तें बाढ्यौ, देखौ छली परीछत दाढ्यौ[1] ॥२८७
इह जनमेजय बाल अग्यानी, जब तें अब तौ लई जबानी।
किंह कारन भए ऐसे कातर[2], पितु कौ बैर गयौ सो पांतर[3] ॥२८८
मिल नृप बैर लेंहुंगौ मैं हुं, दोष जताय जायकै देहुं।
इह कर मतौ नृपत ढिग आयौ, जनमेजय कौं सुवत जगायौ ॥२८९
कह्यौ नृपत तुम बैठे कैसें, जागतहू सोवत पुन जैसें।
काज अकाज गिनतहौ एकै, प्रीय अप्रीय हीय समहीं परेखै ॥२९०
सज्जन दुज्जन येक समाना, जानत कैसे भये अजाना।
जब बोले मुनि सों जनमेजय, रहस कहूँ भूले सोई रय ॥२९१
पूछहु मंत्रिन काज पधारो, महाराज तोह पितु कौ मारौ।
जनमेजय सां कही मंत्रिजन, या मैं कहा तक्षक कौ औगुन ॥२९२
द्वजवर श्राप भूप को दोनौं, कारन पाय हथन[4] तिह कीनौ।
बोले मुनि उतंक जन बाँनीं, राज सुनहु मंत्रिन रजधानी ॥२९३
कस्यप चले जिवावन कारन, इह नह कीनौ कहा अकारन।
बित दैकै ताही बगदायौ[5], आप छली हथनापुर आयौ ॥२९४
कृतंम द्वज ताके हित कीनै, छल ताकें तुमने नही चीनै।
दंड मिलै बिन दीरघ द्रोही, कहा सत्रथपन कहहु सकोही ॥२९५
इह सुन भई सकल मति ऊनी, मंत्री साध रहे चुप मूंनी[6]।
मुनि उतंक मतिवान महाँना, धरम-सास्त्र कौ कीय हीय ध्याँना ॥२९६
समुझहु राजा बात सयानी, है यामें तुमरी बहु हानी।
पुत्र लहै नहि बैर पिता कौ, जीवन निसफल जानहु जा कौ ॥२९७
इँह कारन देखत पितु अटके, भूप फिरौ कहा भटके भटके।
जिग अंबा कीजै जाही में, अहि तक्षक होमहु याही में ॥२९८
बैर करहुगे जबही निबेरौ, तब मुक्ति पैहै पितु तेरौ।
इह सुन राजा लीन उदासी, पुन मंत्रिन कौं बात प्रकासी ॥२९९
सामग्री तुम जिग्य सुधारौ, बैर पिता कौ लैन बिचारौ।
राजा हुकम दीयौ जिह रीती, पुन मंत्री लाये परतीती[7] ॥३००

१ डस लिया। २ भयभीत, विह्वल। ३ भूल। ४ हनन = मारना। ५ वापस कर दिया। ६ मौन। ७. प्रतीति = विश्वास।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुच गंगा-तट भूम सँवारी, मंडिप छायौ ताहि मझारी।
सत सतंभ[1] कीनी जिगसाला[2], बेदी कुंड बनाय बिसाला ॥३०१
होता मुनि उतंक जहाँ होई, जारन लगे नाग-कुल जोई।
भए कुलाहल[3] जहाँ भयंकर, कुल नागन सह कोय खयंकर[4] ॥३०२
तक्षक भाग चल्यौ सुन ताही, सरन इंद्र तज सकल सिधाई।
सक्र ताहि कौं अभय सुनायौ, उर बिसास कर नहीं अकुलायौ ॥३०३
सुन उतंक जनमेजय सौंनी, इंद्र सहित जारहु अभिमानी।
इह प्रयोग सुन भागौ आतुर, कौंसक[5] सरन छाँड़ कै कातर ॥३०४
सरन लयौ अस्तिक मुनि सोई, दुरचौ जाय सोई नरपत द्रोही।
मुनि ढिग आय अरथना[6] संगी, इह सुन भूप करी क्रत अंगी ॥३०५
कीजै जग्य बंध मुनि कहिऊ, रिष बानी सुन नृप चुप रहिऊ।
है यामें तुमरी नही हाँनी, बात विचार लेहु विग्याँनी ॥३०६
औगुन पै गुन कौ उपकारा, सब कोई जानत संसारा।
मुनि की बात नृपत सुन माँनी, जिग्य बंध कीनौ जीय जाँनी ॥३०७
पुन आये मुनि बैसंपायन, भारथ श्रवन कराय सुभायन।
तउ मन नृपत बिकल्प न त्याग्यौ, अरु दरसन व्यास ही अनुराग्यौ ॥३०८
बिनती कर नृप व्यास बुलाये, अनुकंपा[7] करकै तहाँ आये।
कर पूजा बंदन पद कीनौ, दरसन कहौ परम हित कीनौ ॥३०९
मै कछु पूंछचौ चहत महाँना, दीजै तिह उत्तर कह दाँना।
भासन सुन्यौं भली बिध भारथ, पुन छत्रिन जान्यौ पुरसारथ ॥३१०
पितु मो मृतु अकाल ही पाई, ईह संका मेरे मन आई।
रंन में मृतक होत तौ रूरौ, पद मुकुती भेटत भरपूरौ ॥३११
विषवत मुकती हेत बतावै, जीय संका मेरी मिट जावै।
पारासरीय जान पितु-प्रीती, निगम पंथ जानी नृप नीती ॥३१२
उत्तर दीयौ व्यास सुन ऐसौ, इंमृतरस ही भागवत ऐसौ।
प्रीय पुरान सुकदेव पढ़ायौ, मन कौ तातै भरम मिटायौ ॥३१३
भारथ स्रवन कीयौ तुम सूपहि, अरु दीनै बहु दान अनूपहि।
तुम कीनी पूजा बहुतेरी, कर कर भाव बहुत मुनिकेरी ॥३१४

१ स्तंभ। २ यज्ञशाला। ३ कोलाहल = शोरगुल, हाहाकार। ४ क्षयंकर = नाश करने वाले। ५ कौशिक, इन्द्र। ६ अर्थना = प्रार्थना। ७ दया।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

येक पिता कहा तरे अनंता, माता पिता पक्ष धीमंता[1]।
सुनै भागवत कथा सयानै, जोय संका मिटहै होय जानै ॥३१५
सब पुरान कौ सार सुधासम[2], आद अंत सो लखहु अनूंकम[3]।
मडप येक बनावहु तामहि, सुनहु भागवत बैठ सभा सहि ॥३१६

---

१ धीमान्—बुद्धिमान् । २ अमृत के समान । ३ अनुक्रम ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

तृतीय स्कंध

छंद मुक्तादाम

सुने नृप ब्यास के वायक स्रांन, बनायहु मंडप तान बितांन ।
खरे कीय तामहि केलीय खंभ, अनूपम चंदन पल्लब अंब ॥१
मिलाय कै लायकै पूलन माल, मढी बहु द्वारन बंदनमाल ।
नहायकै अंगन गग के नीर, बसू[1] सुच कीन महा बरबीर ॥२
रची तिह ऊपरहू फिर रेख, बिचित्रहु चित्र अबीर बिसेख ।
कहूँ मृग-चर्म कुसासन कीन, जुपै कहु तल्प[2] पटांबर झींन ॥३
जथा जिह आसन जांनेउ जोग, लहे नृप सासन ग्यांनीय लोग ।
ठये सब आपनी आपनी ठौर, आमात्यहु भ्रातहु जातहु और ॥४
मिले केऊ चाहिकै आय मुनिंद्र, बिचछन छाय रहे जनबृंद ।
जमाय के ऊरध आसन जास, बिराजेऊ जाही के ऊपर व्यास ॥५
जहाँ नृप प्रस्न कर्‌यौ कर जोर, निहार कै व्यास की ओर निहोर ।
जथा कछू भाखहु देबीय जग्य, अनंदत होय सबै सुन अग्य ॥६
प्रकासहु देवीय भेव पुरांन, कहो यहँ देबीय है पुन कौन ।
भई ऊतपति कहा गुन भेस, प्रकासहु रूप जिहीं परबेस[3] ॥७
वही फिर जग्य कौ कौंन बिधान, निरंतर जांनहूं काज निदांन ।
मँडी ब्रहमंड[4] की जा बिध मंड, ऊपज्जीय कारन तै किह अंड ॥८
त्रहूँ गुन[5] देव भये पुन तींन, इही जग राचत कौंन अधीन ।
चिरायुस है किधु आयुस छेह, दहै सुख दुःखन ता कहँ देह ९ ॥९
बिभूतीय है कहाँ देवन बास, इहै ऊर जांनन की अभीलास ।
दसिंद्रीय द्रव्यन को समुदाय, बने तन सप्तक धातु बसाय ॥१०
बिलछन है इन तें कहुँ वेष, बिचार कै कारन आदं बिसेष ।
जिते हम प्रस्न कीये सुन जास, बिचार कै ऊतर देवहु व्यास ॥११

---

१ बसुधा=पृथ्वी । २ शय्या, आसन । ३ प्रवेश । ४ ब्रह्मांड । ५ त्रिगुण=सत्व, रज, तम ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहे दुईपायन भूप कथंन, सुने हम प्रस्न भये सुप्रसंन।
जजात के बंस की रीत कौं जाँन, भये तुम आय उदै जनु भाँन ॥१२
ईहै ऊर संक उपज्जोय आय, तबै मुनि नारद पूछीय ताहि।
कही हमहुँ प्रत[1] नारद कथ्थ, सुनावत ताहीय कौं इक सथ्थ ॥१३
समै[2] ईक नारद आय मुनेस, बिसारद बुद्ध बिचार बिसेस।
जिहीं हम पूछीय [एक][3] जबाब, सुनाबहु ऊत्तर मंहि सताब ॥१४
इहीं बृहमंड भई उतपत्य, निरंतर नित्य इहैं क अनत्य[4]।
इहै करता बिध[5] श्रीधर[6] ईस[7], सुभाखत केक[8] सहस्त्रक सीस ॥१५
कहै कोऊ सूरज कौं सिसी केक, बिनायक[9] स्याहिक पाय बिबेक।
बृखा[10]इक-पिंग[11] परंजन[12] वाय, सवारत स्त्रष्ट हो काल सुभाय ॥१६
कहै कोऊ कर्मही कौं करतार, निरंजन केक कहै निरधार।
कोऊ कह प्रक्रति ही करनीय, जोई परपत्र उपाजत जोय ॥१७
सदाँ उर अंतर पाय सँदेह, दहै दुःख ताप हृदै[13] मम देह।
थिरावत नाहन[14] एकहु ठौर, भयौ मन पोत[15] समुद्रहु भौंर ॥१८
अधर्महू धर्म न जाँनत एक, अकर्महु कर्मन कों अवरेख।
हटं इंह भर्म[16] जितं नही होय, करैं कहा पर्म तितै करनीय ॥१९
भयौ उदयाँन त्रकामन भाव, निकेतन केतन के पट न्याव।
करौ ऊर संसय-हींन क्रपाल, बिचार कै आरत बुद्ध बिसाल ॥२०
सुनी मम नारद कथ्थ सुजाँन, प्रकासीय ऊत्तर एह प्रधाँन।
पिता बिध मोरहु तें तिह प्रस्न, ईहीं गत जाँन कीयौ मति ऊस्न[17] ॥२१
जबै समुझाय कही पितु जाहि, तिहीं सुत सोच बिचारहु ताहि।
ईहाँ नहीं रागीय कौ अधिकार, बिरागीय जाँनत जाहि बिचार ॥२२
कह्यौ इतीहास तिहीं सुन काँन, धरचौ ऊर अंतर ताही कौ ध्याँन।
भयौ जग पूरब-काल में भंग, सोई जललीन भयौ ईकसंग ॥२३
नहीं रहे सूरज ईदु[18] नछत्र, तहाँ कोऊ बिंबन देखेऊ तत्र।
बढ़ी चित चिंतन चित्त बिसेष, अधारह[19] पंकज दीसत एक ॥२४

१ प्रति। २ समय। ३ मूल प्रति में अस्पष्ट है। ४ अनित्य। ५ बिधि = ब्रह्मा। ६ विष्णु। ७ महेश। ८ कोई। ९ गणेश। १० इन्द्र। ११ कुबेर। १२ वरुण। १३ हृदय। १४ नहीं। १५ जहाज। १६ भ्रम। १७ उष्ण—उग्र बुद्धिमान १८ इन्दु = चन्द्र। १९ आधार।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिचार कै देख चहूँ दिस बार[१], इहै मम श्रासन कौंन श्रधार।
रहे हीय सोचत एहु रहंस[२], समापत ह्वै गये श्रब्द[३] सहंस[४] ॥२५
भई नभ बाँनीय स्राँनन भाँन, गहौ तप देह लहौ हीय ग्याँन।
कीयौ तप श्रब्द सहंस करूर, प्रकासत फेर गिरा भई पूर ॥२६
ऊपावहु[५] स्रष्ट सपष्ट श्रबेर[६], बिचार कै उद्यत ह्वै तिह बेर।
ईतै मधु कैटभ दाँनव श्राय, कीये भयभीत महाबल काय ॥२७
चले हम पंकज-नालीय चाह, श्रभिंतर[७] बुद्धि हीयैं श्रवगाह।
लखे तब लोचन कंज ललाँम, सुबासित पीत जहाँ घनस्याँम ॥२८
ऊजागर सागर के श्रयनीय, सोई हरि सेख[८] रजे[९] सयनीय।
सुदर्सन चक्र गदा श्ररु संख, निरंतर पद्म सुधार निसंक ॥२९
लहै सुख जोग-प्रमीलाय[१०] लीन, प्रभू सोइ पौंढ़ रहे भुज पीन।
जुहारीय जोग सु नींद[११] जगाय, भई थित श्रंबर ग्रेहि सुभाय ॥३०
तहाँ हरि जाग कै ऊठ तुरंत, बिचार कै मोहीय सौं बिरतंत[१२]।
श्ररे मधु कैटभ सौं श्रवगाहि, करचौ सिर चक्र सौं दारत काय ॥३१
महेसहु श्राय मिले सुरमौर, ऊजागर[१३] रूप लख्यौ इक श्रौर।
मनोहर देवीय मूरत मूल, थिती जग कारन सूक्षम थूल ॥३२
जिहौ सु प्रसंन करी कर जोर, बिलोक कै बायक बोल बहोर[१४]।
करौ त्रहु देव[१५] बिचार कै काँम, तिहीं फिर उत्पत पालन ताँम ॥३३
तथा लय श्राद श्रनूक्रम तीन, प्रकासहुं श्रार तै श्राप प्रबीन।
कहौ हम तीनहु नै फिर कथ्थ, थिर गुन-मात्रन इद्रीय थित ॥३४
बिभूतीय भूतन को कहु भेद, बिचारन भाव कहै निरबेद।
मगाय कै ऊतम एक बिमाँन, श्ररोह कै[१६] संग चढो श्रसमाँन ॥३५
लीयै हम तीनहु देवन लार, बिमान में देखत जात बहार।
भये जल पार लहो थल भूँम, लखे तरु फूलनहू फल लूम ॥३६
बिहंगम कूंजत मंजुल बृंद, मधुकर फूल गहै मकरंद।
श्रनुक्रम कांतर[१७] स्रंग उतंग, तरंगनी तोय तड़ाग तरंग ॥३७

---

१ बारि=जल। २ रहस्य। ३ वर्ष। ४ सहस्र=हजार। ५ उत्पन्न करो। ६ अविलम्ब। ७ अभ्यन्तर=मध्य। ८ शेषनाग। ९ सुशोभित। १० यगप्रमीला=योगनिद्रा। ११ निद्रा। १२ वृत्तान्त। १३ उजागर=उज्वल। १४ फिर। १५ त्रिदेव—ब्रह्मा, विष्णु, महेश। १६ आरोह कर=चढ़कर। १७ कान्तर=वन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बने उदपा(या)न[1] सु बापीय[2] बेस, पसू नर नार सु पुज्जत पेस।
निहारीय नैनन एक नरिंद, बिमान पैं संग त्रीयाजन बृंद ॥३८
निहारेऊ देबीय संग नरेस, बिमान में ताही कै जाँन बिसेस।
चलावत जावत यान चछोह, मही चित देख उपज्जीय मोहि ॥३९
चले कछू अग्र बढ़ो उर चाह, तितै बन नंदन देखीय ताहि।
बिलोकीय फूल जितै कलवृछ[3], सरोजहु नीर नदी सर स्वछ ॥४०
अपछर गंध्रब किन्नर आँन, मनोहर सामुंज औ मघवाँन[4]।
परंजन और लखे इकपिंग, प्रकाशत पावक सोम पतंग[5] ॥४१
घनालय[6] बीच रहे हम घूंम, भई द्रग गोचर उत्तम भूंम।
जहाँ बिधलोक परचौं द्रिग जाय, लखे चतुरानन चित्त लगाय ॥४२
बढ़े फिर ताहि तै अग्र बिमान, पंचानन सिंभु लखे दस-पान[7]।
सिलोचय[8] दिव्य लख्यौ कईलास[9], प्रभा चहूँ ओर रही परकास ॥४३
अबाजन बाजन की चहु ओर, सुनें जय-सब्द नमो नम सोर।
चले फिर आन[10] चछोह चलाय, लखो बयकुंठ पुरी चित लाय ॥४४
फबै तन स्याँम उमा[11] रंग फूल, दिपै पर चाहीय पीत दुकूल[12]।
भुजा चहु दिव्य अलंक्रत भेस, बिराजत बिस्नु सनातन बेस ॥४५
गये तिह देखत देखत गैल, सुधादध द्रष्ट परे बन सैल।
रमै जल जंतु किते रमनीय, करै रव[13] कोकलहू कमनीय ॥४६
मिले ध्वन चातक हंस मयूर, रटै चलचंच[14] फलादन रूर।
मनोहर तल्प रही इक मंड, अमोलख अंबर झीन अखंड ॥४७
तहाँ इक ऊतम बैठीय तीय, कीयें पट धारनहू कमनीय।
मजिष्टहु[15] रंगत फूलन माल, बिराजत रंजन बेंदीय भाल ॥४८
सुलोचन रोहित[16] संघ सरोज, उदंचत उन्नत पींन[17] ऊरोज[18]।
रजै तल हाथ ऊदंबर रंग, सुहावन अंघ्रीय[19] मूल सुचंग ॥४९
दमंकत विद्दुत[20] ज्यौं द्युति[21] देह, चमंकत भूषन भार अछेह।
प्रभा परकासत पूरन चंद, मुखा मुसकावत मंदही मंद ॥५०

---

१ उद्यान=बाग। २ बापी—बावड़ी। ३ कल्पवृक्ष। ४ इन्द्र। ५ सूर्य। ६ आकाश। ७ पाणि=हाथ। ८ शिलोच्चय—पर्वत। ९ कैलाश। १० यान=जहाज। ११ पार्वती। १२ दुपट्टा, वस्त्र। १३ रव=शब्द। १४ चकोर। १५-१६ लाल। १७ स्थूल। १८ उरोजः=स्तन। १९ अंघ्रि=चरण। २० विद्युत्=बिजली। २१ द्युति।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ह्लीयंजर पछनि[१] को रव होत, करापता बोलत कीर कपोत।
सहस्रक ग्रानन सीरख[२] स्रांन, प्रकासत नैन सहस्रन पाँन ॥५१
भये बिध ईस सु ग्रद्भुत भाव, कीयौ तब श्रीपत एह कहाव।
सनातन देबीय ग्राद स्वरूप, इहै जग कारन बीज ग्रनूप ॥५२
हुई परपंच[३] जबं जग हाँन, प्रलै निन्न पौढ रहे बट पाँन।
भई भगबंतीय साँ मम भेंट, ग्रंगुष्ट कौं पावन काज ग्रमेठ ॥५३
महा मुद पाय दीयौ मुख माँहि, ईहीं हम धावत[४] पोख पसाय।
भये ग्रबलंचित[५] नांहिन भेस, बिसास कौं पाय कै ताहि बिसेस ॥५४
करौ ग्रभिबंदन पायक ईस, समाय कै हस्त नमाय कै सीस।
कह्यौ हरि जेम करयौ जिहाँ काँम, बिरंचन[६] संकर छांड बिराम ॥५६
लहै बरदान ईडा[७] चित लाय, ऊचारत पाय गए ऊमगाय।
पलोटत दासि खबासनि पग, सुसोभत सुन्दर रूप समग[८] ॥५६
बिधोबिध[९] बाँनक बेस बिचित्र, प्रकासत नैनन बैन पवित्र।
फबै रग ग्रंसुक[१०] किंसुक[११] फूल, झूकै नव जोबना झूलन झूल ॥५७
भई त्रहुँ देबन की गत भाय, मिले हुय अँगना[१२] अँगना माहि।
रहे पग सेवन में ग्रनुरत, समापत ह्वै गये बछ्छर सत ॥५८
पलोटत पावन पाव पसाय, लखे नख दर्पनहूँ चित लाय।
जहा बिध ग्रादक देव जितेक, तहाँ प्रतबिंबत बीच तितेक ॥५९

दोहा—

केतक देखे चमतक्रत[१३], बरनै कहा बिसतार।
ऊतपत वित ग्रासन ग्रमल, कमल लख्यौ करतार ॥६०
सुध भूले जहाँ हमहु सिव, नारिन मिल हुय नार।
कहाँ तै ग्राये कौन है, नहीं जाँन्यौ निरधार ॥६१
रमाँनाथ ग्रस्तुत रची, ग्राराधन ग्रवगाह।
प्रेम भक्ति जुत पालनी, नित्य सक्ति निरगाह ॥६२

---

१ पक्षिगण। २ शीर्ष = शिर। ३ प्रपंच = जगत्। ४ ध्यावत। ५ ग्रभिलाञ्छित। ६ ब्रह्मा। ७ स्तुति। ८ समग्र। ९ विविध। १० वस्त्र। ११ पलाश। १२ ग्रङ्गना = स्त्री। १३ चमत्कृति = चमत्कार।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद भुजंग प्रयात

बिधात्री तुहीं प्रक्रती-रूप बाँमा, कल्याँनी सदाँ पूरना चित्तकाँमा।
तूहीं बृद्ध सिद्धी समृद्धी बसाता, महाँ सच्चिदारूपनी[1] आदमाता ॥६३
सही नित्य संसार-जोंनी-स्वरूपा, रचै स्त्रष्ट कौं पालना लीन-रूपा।
तुहीं स्याँमनी[2] है त्रहूँ लोक ता-की, जिही कारनाहू अधिष्ठान जाकी ॥६४
सदाँ चेतना अर्धमात्रा समाई, ह्रींयंकार ऊँकार ऊर्द्धं रहाई।
लख्यौ रूप तेरौ प्रतक्षं[3] ललाँमं, धरै रावरी सक्ति संसार धामं ॥६५
सबै जक्त की जुक्त बिस्तार जाँनी, प्रकासै तुही पिंड कौं पोष प्राँनी।
परा-प्रक्रती[4] पौरुषं भोग पासै, कला काँम ते ईस तत्वं प्रकासै ॥६६
स्थती व्यापकं बृह्म की तूँ सथाई, नहीं तूँ जहाँ ब्रह्म हूँ ना रहाई।
रमा रूप तूंब्रह्म ही काँ रमाँबै सता[5] सक्त[6] ह्वै जक्त माहो समाबै ॥६७
प्रभावं सदाँ बिस्व काँ पालना की,छती[7] तूँ रती द्रष्ट लेखै छिमा[8] की।
समै-कल्प[9] के तू जबै तल्प सोबै,गती गूढ़ साँ जीव लै अंक[10] गोबै[11] ॥६८
मधू कैटभं दैते[12] कै भीत मारे,परे आपदा में असाता पुकारे।
छलै तै भयौ चक्र साँ कंठ छेदं, भली भाँत जान्यौ सोई तोर भेदं ॥६९
दिखायौ मनीदीपहूदिब्य देसं, बिभौ[13] रावरौ जाँन लीनौ बसेसं।
त्रीहूं देव जाँन्यौ नमै भेव ताकौं, पिछाँने कहा और तेरी प्रभा कौं ॥७०
दिखाए त्रहूँ देव तै दिब्य द्रष्टी, पिनाकी[14] रिषीकेस[15] औरं प्रमेष्टी[16]।
छते[17]हैं तऊ आज लाँ नाहि छीनै[18],किते इंद्र-के-जाल[19]ज्यौं ख्याल कीनै ॥७१
करै बंदना जाचना[20] केर काजा, चहैचरन की सर्नहूँ[21]काँ समाजा।
हियै ध्यॉन तेरौ प्रकासै हमारै, अजा[22] आँनन[23] नाँम तेरौ ऊचारै ॥७२
चितै भावना पुत्र ज्यौं छत्र छाँही[24], निबाजै हमै पास के दासि नाँही[25]।
हितू येक तूँ स्वामिनी है हमारी, महंमा कहाँ लौ कहैगे तुमारी ॥७३
जनै जक्त कै जीव तै सक्त जोई, सुता रावरी साँ करै काँम सोई।
जही रीत साँ भूधराधार[26] जक्ती[27] सुधारी ज्युही भूंम-आधार सक्ती ॥७४

---

१ सच्चिद्रूपिणी। २ स्वामिनी। ३ प्रत्यक्ष। ४ परा प्रकृति। ५ सत्ता। ६ शक्ति ७ क्षिति। ८ क्षमा। ९ प्रलयकाल। १० गोद, हृदय। ११ गोपन करती है, छुपा लेती हैं। १२ दैत्य। १३ वैभव। १४ शिव। १५ हृषीकेश = विष्णु। १६ परमेष्ठी= ब्रह्मा। १७ क्षत। १८ क्षीण। १९ इन्द्रजाल = कौतुक। २० याचना। २१ शरण। २२ अजन्मा। २३ आनन = मुख। २४ छत्रछाया। २५ नांई = समान। २६ पर्वताश्रय २७ जगती = पृथ्वी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भिरें अंतरीक्षं[1] जिते बिंब[2] भासं, प्रभा चंद्र ध्वांतार[3] में तू प्रकासै ।
कला चंचला[4] रूप नित्या कुमारी, निलै जोत नौ-जोबना बेस नारी ॥७५
बिभू[5] ब्रह्म कौं तू अदोषं बसावै, अविद्या असीमं ससीमं न आवै ।
बसै आप्तरूपं हियें होय बिद्या, दिखावै प्रतीभाँन[6] तं सक्त दद्या ॥७६
तुही कीरती काँति लछी[7] तु लज्या, लखावै छिमा-रूप तू रूप लज्या ।
महंमाय तू बेद की आद माता, गनै दक्ष चिद्रूपहू छंद-गाथा ॥७७
सुधा बुद्धि तू स्त्रध्यारूप[8] स्वाहा, प्रभा अद्ध[9] तू ऊद्ध[10] बृद्धी प्रबाहा ।
महाँ मग्न ह्वै मोह पाथोद[11] मांही, भ्रमै आप रूप ही कौ भुलाँ हीं ॥७८
दया देख कै मो अभैदाँन दीजे, लगूं पाय मातेस्वरी सर्न लीजै ।
सिवा रूपनी भूपनी तू सवाँ हो, हृदै ध्याँन तेरौ अखंडं रहाँ हो ॥७९
प्रसंसा करी बिस्नु त्यौही कपाली, बनै मात ऊद्धा तुही बेस वाली ।
तु ही त्रगुनी तैं रचे देव तीनूँ, पखं ग्यान सौं ह्वै सबैहु प्रबीनूँ ॥८०
स्रजं पालना औरं तूं ही सँघारै, निमंतं भ्रतो मात्र आपौं निहारै ।
कला काम तेरी करें नाम काँकौ, रमाँ[12] अस्मिता बोष तैं दूर राखौ ॥८१
वसिद्री तुही तत्व पाँचू दिपावै, अहंकार बुद्धी सुभाउ ऊपावै ।
जनै थावरं जंगमं जीव जेते, तिहारै सबै ख्याल है मात तेते ॥८२
महाँ पंच हू भूत[13] की पंचमत्ता[14], सँबारै तु ही एक साँ एक सत्ता ।
करें पाय तेरी रजा[15] काँम केते, अहूं बिस्नु लोकेसहू देव एते ॥८३
तमं-रूप में हूं सतं-रूपु तैसें, उपाये रमाँनाथहू फेर ऐसें ।
रजो-रूप तैं बेद-गर्भा[16] रचाये, नटै पुत्तरी[17] नाच तेरे नचाये ॥८४
बतायौ हमैंहू बिवाँनं बिहारं, लखे लोक अन[18]लोकहू केक लारं[19] ।
बृहंमा हरी सिंभु औरें बनाये, नहीं ख्याल तेरे बिना ये निपाये ॥८५
नियंत्री[20] इदंभाव साँ जाँन लीनी, भलो भाँत साँ मात तू प्रेम भीनी ।
हीयै-अग्यता म्लान कौं दूर हेरी, तरें आद-माया क्रपा पाय तेरी ॥८६

---

१ आकाश । २ सूर्य, चन्द्र आदि । ३ ध्वान्तारि=सूर्य । ४ बिजली । ५ विभु=व्यापक । ६ प्रतिभा, सामर्थ्ययुक्त । ७ लक्ष्मी । ८ श्रद्धारूपा । ९ अधः । १० ऊर्ध्व ११ मोहसागर । १२ अहंभाव । १३ महापञ्चभूत-पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश । १४ पंचमता, पञ्चमात्रा । १५ आज्ञा । १६ ब्रह्मा । १७ पुत्रिका=कठ पुतली । १८ अन्य । १९ कई एक समूह । २० नियन्त्रण करने वाली, प्रेरक ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

त्रीया-भाव कौं पाय कै सोक त्यागे, लखी मात को नैन सौं पाय लागे।
सदाँ सेव तेरी करैं नेम सेती, अधारैं हीयैं बीनती जाँन येती ॥८७
जपैं जाप त्रैताप[1] इंद्रीन जीतैं, कहा जग्य औ दाँनहू ध्याँन कीतैं।
बसै चित्त तेरे न पादारबिंदं, ऊपज्जै न निर्बांन[2] जौलौं अनंदं ॥८८

दोहा

करी स्तुती हरी जोर कर, बाँमदेव[3] पद बंद।
मात नबाक्षर-मंत्र कौं, देहु मेंट दुख-द्वंद[4] ॥८९
दीयौ सिंभु कौं भक्ति द्रढ़, मंत्र नवाक्षर मात।
जिही पाय लागे जजन[5], ऊर घर मति अवदात[6] ॥९०
बिनती करी बिरंचहू, मात कीये हिय मोख।
अस्मिदाद[7] कौ आद लै, दूर गये सब दोख ॥९१
करता जग हमको कहै, पोषत सारंग-पाँन[8]।
सिंभु ताहि कह संघरत, ये सब परम अयाँन[9] ॥९२
करता[10] सब तेरी कला, संघरता[11] पुन सोय।
जाँनहु पालन रीत जिहि, जीय जाँनी द्रग जोय[12] ॥९३
अहंमत मैटी ईश्वरी, किय मोटौ ऊपकार।
हिय को हरहु बिषाद हम, निगम[13]-न्याय निरधार ॥९४

छंद भुजंग-प्रयात

कहै अद्वती[14] ब्रह्म है येक कोऊ, स्वयं आपको रूप है दिब्य सोऊ।
तथाँ और कोऊ जथाँ भिन्नता में, ऊपज्जै हुदै बीच संदेह यामें ॥९५
सुखी ह्वै परं धाम नाँही समावै, घटी-जंत्र[15] ज्यौं चित्त-वृत्ती घुमावै।
बिचारैं करो दूर मेरो बिषादं, अटी[16] हीय अग्याँनहीं की ऊपाधं ॥९६
दीयौ अंबका ऊतरं एह दानं, प्रमेष्टी सुनो सिद्धता[17] को प्रमानं।
परंमातमा येकहूँ ओत-प्रोतं, दहूँ अद्वती-रूप जानो उदोतं ॥९७

---

१ त्रिताप=दैहिक, दैविक तथा, भौतिक कष्ट। २ निर्वाण=मोक्ष। ३ शिव। ४ दुःख-द्वन्द्व=जन्म-मरण रूप। ५ यजन=पूजा, याग। ६ उज्वल। ७ अस्मदादि=अहंभाव। ८ शार्ङ्गपाणि=विष्णु। ९ अज्ञान=अबोध। १० कर्त्ता। ११ संहर्त्ता। १२ देख कर। १३ वेद। १४ अद्वैत। १५ घटीयंत्र=घड़ी, रहट। १६ अडी हुई है, फैली हुई। १७ सिद्धावस्था।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जतावै कछू भेद अल्पीय जामें, पिछाँनें सोई धाँम निर्बान पामें।
अहूँ अद्वती ब्रह्म ना भेद यातै, निहारै कछू भेद ऊत्पादना तै[१] ॥९८
ऊजासै सहू जोयकै दीप एकौ, उपाधी कहूँ जोग भासै अनेकौ।
फुटे एक आदर्स[२] के अंस फेरा, वही एक में बिंब दीसै अनेरा[३] ॥९९
प्रवर्ती[४]-समै भेद एही पिछानौ, जिही कल्प के काल में येक जानौ।
प्रवर्ती-समै रूप बिष्टी[५] प्रकासै, भये एक तै जीव अन्नेक भासै ॥१००
समष्टी[६] मिलै कल्प में सृष्ट सारी, नहीं पोरसं[७] रूपहू षंड[८] नारी।
मती श्री धृती कीरती सुमृती हूँ, छिमा और मेधा पिपासा छती[९] हूँ ॥१०१
दया और क्षुधा लाज्या औ राग तंद्रा, नृतं[१०]अनृतं[११]बंचना मोह निद्रा।
जरा[१२]निर्जरा साँती काँती जतावै, बिसेसं अबिद्या सुबिद्या बतावै ॥१०२
असक्ती ससक्ती बिचारं अनेका, लहै सप्रहा[१३] निप्रहा[१४] कोंन लेखा।
बसा प्रष्टी[१५] मज्जा तुचा[१६]बाक बाँनी, कहौ मैं नही सो न मानौ कहाँनी ॥१०३
गनौ ब्राह्मी रुद्रो सिवा और गौरी, कुबेरी इंद्रानी कुमारी किसोरी।
बराही तथा[१७] बैस्नबी बारनी हूँ, नृसंधी क्रतंती[१८]सु नारायनीहूँ ॥१०४
धरा धारना सीलता बार (रि) धारा, अरू ऊस्नता आग धारै अँगारा।
ज्युहीं पाँन[१९]में गौन[२०]की सक्ति जाँनौ,महाँकास में पोल ज्युहीं प्रमाँनौ ॥१०५
ज्युहीं चंद में सूर[२१]में जोत जागै, इहीं रीत साँ जानीयै भेद आगै।
प्रकासै सबै स्रष्टि मेरी प्रभा तै, कलाहीन कोऊ करैगे कहाँ तै ॥१०६
अहूँ देव कौं बोध दीनौ तबै हीं, सुन्यौ अ द-माया कह्यौ सो सबै ही।
रह्यौ नाहि अग्याँन कौ अंस रेहा[२२], बिचारचौ कपर्दी[२३] होयै बिस्नु बेहा ॥१०७
प्रसनं भये देव देबी-प्रसादं, बिसारचौ जबै ही बिषादं बिबादं।
बिधाता दई सरसुती दिव्य बाँमा, लई लक्ष्मी तीय बिस्नू ललाँमा ॥१०८
गही सूलपाँनी[२४] महाँसक्त गौरी, जुरी तीन हूँ सक्ति की दिव्य जोरी।
कहौ अंबका त्रैगुनी स्रष्ट कीजै, रजा पाय कै दिव्य धाँमं रचीजै ॥१०९

---

१ उत्पत्ति। २ आदर्श = दर्पण। ३ अनेक। ४ प्रवृत्ति। ५ व्यष्टि। ६ समष्टि। ७ पुरुष। ८ षण्ढ=नपुंसक। ९ क्षति। १० ऋतं=सत्य। ११ असत्य। १२ वृद्धावस्था। १३ स्पृहा=इच्छा। १४ निस्पृहा = अनिच्छा। १५ पृष्ठी। १६ त्वचा = चर्म। १७ मू० प्र० में—स्थां हैं। १८ कृतान्ती = यमशक्ति। १९ पवन। २० गमन। २१ सूर्य। २२ लेश, रेखा। २३ शिव। २४ शूलपाणि = शिव।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वहाँ तै बिदा ह्वै चले याँनहो पै, मधु-कैटभं आयगे मेदनी[1] पै।
सबै बीजमंत्रं जप्यौ भक्ति सेती, ऊपाई सबै स्रष्ट स्वाभाव एतो ॥११०
जगै थावरं जंगमं जीव जेते, त्रहुँ मूरती आद सौं देव तेते।
प्रकृता बहु त्रैगुनी कौ पसारौ,[2] नहीं जानीयै सक्ति सौं जक्त न्यारौ ॥१११

दोहा

अष्ट-स्त्रबन[3] उपदेस दीय, नारद प्रतै निहार।
प्रस्न कीयौ कर जोर पुन, बिध नारद तिह बार ॥११२
सगुन रूप जानौ सुखद, पितु बर राज-प्रसाद।
निगुन पुरष माया निगुन, अबहि बखानहु आद ॥११४

छंद भुजंग प्रयात

बिधाता कह्यौ देखकै ब्रह्म-देवा, भली भाँत कैसे लहौ ताहि भेवा।
नही निर्गुनं रूप कौ पुर्स नारी, बिभू रंग रेखा बिना निर्बकारी[4] ॥११४
अरूपं अलेखं कहाँ द्रष्टि आवै, धरै धारना ग्याँन जोगिंद्र ध्यावै।
पिछाँनै कहूँ जाहि बिस्वास पा कै, वहीं आखतं जाँन लीजें अजा कै ॥११५
परंमातमाँ सक्ति ही कौ पसारौ, नहीं जानीयै आतमा सक्ति न्यारौ।
पढै बेद कौ सास्त्र बांचै पुराँनं, धरै धारना ग्यान बिग्यान ध्यानं ॥११६
समाँधाँन पायौ नहीं मेट संका, इहीं भर्म की भूल भूलै असंखा।
जुरे थावरं जंगमं जीव जेते, अहंकार सौं हीन जाँनौ न एते ॥११७
असंकार कौ हीय जौलौं अंधारौ, नही निर्गुनं देख सकै जु न्यारौ।
ईहै मोह की पुत्र मेटौ ऊपाधी, सदाँ सदगुना ध्याँन लावौ समाधी ॥११८
सुन्यो ब्रह्मदेवं कह्यौ अष्ट-स्त्राँनी, पिता राबरे बाक्य मानि प्रमाँनो।
गुनं रूप कौ बोध दीजे गिरा तैं, जथाँ जुक्त की ऊक्त ह्वै मुक्त जातै ॥११९
प्रमेष्टी मुनी कौ सुन्यौ प्रस्न पूरौ, अनूपं गन्यौ ग्यान ही की अँकूरौ[5]।
गुनूं मैं त्रहू सक्तिहौ की गुराई[6], क्रीया ग्याँनहू द्रब्य सत्ता कहाई ॥१२०
सुनौ सातुकी[7] है सोई ग्यान-सक्तो, बिचारौ क्रीया राजसी की बिभुक्ती[8]।
त्युंहीं तामसी द्रव्य की सक्ति तीजी, क्रतं काज में मुख्य सोई कही जी ॥१२१

---

१ मेदिनी = पृथ्वी। २ प्रसार। ३ अष्ट-श्रवण = ब्रह्मा। ४ निर्विकारी = विकाररहित।
५ अंकुर। ६ गुरुता, बड़ाई। ७ सात्विक। ८ विभुक्ति = विभोग, वैभव।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उपज्जी तिही पंच-मात्रा ऊधर[1] सं, सुजाँनौ सबेदं[2] दिही तै सपर्सं[3]।
रसं रूप गंधं ऊपज्जी रसा तैं, ऊपज्जौ रसं तोय तै आय यातैं ॥१२२
ऊदर्बी[4] उपज्जे लखौ रूप ऐसैं, उपज्जौ सिपर्सं अहीकांत[5] वैसे।
सबद्दं भयौ अंतरीक्षं समाँन, बिसै[6] होय उतपन्न इंद्री बिधाँन ॥१२३
अहंकार है ताँमसी काँम याकौ, दसूं कौ नियंता बिचारै दसा कौ।
निहारौ सदाँ स्रष्टिहू कौ नियंता, इहीं येकही जानीयै आद अंता ॥१२४
लखौ राजसी में क्रीया-सक्त नीकै, समीचीन स्रष्टी बिचारौ सही कै।
अधिष्ठाँन सब्दं तुचाहू ऊपाई, रसज्ञा[7] तथाँ चक्षु नासा रचाई ॥१२५
इहीं जानीयै पाँचहु ज्ञाँन इंद्री, पिछाँनौं ज्युहीं कर्मही की पचिंद्री।
गिरा हस्त औं पाद लिंगं गुदा हो, सरीरस्त[8] हैं वायु पांचुं सदा ही ॥१२६
उपज्जै ज्युहीं प्राँन औरै अपाँनं, ज्युहीं व्यान उद्या[9] साँमाँन[10] जानं।
इहीं रीत सौं स्रष्टि एती उपज्जै, कछू भेद कौ भाव जामै न किज्जै ॥१२७
इहै सात्वकी स्रष्ट ज्ञाता उचारै, बनै ज्ञानसक्ती जु तैही बिचारै।
दिसा वायु है और देवं दिनेसं, प्रचेता[11] रिभूबैद[12] पाबै प्रबेसं ॥१२८
सु है देवता ज्ञाँन-इंद्री समाँनौ, मनं बुद्ध औ चित्त हंकार माँनौ।
गनौ चंद्र ब्रह्मा तथा रुद्र ज्ञाता, सुनौ और क्षेत्रज्ञ ताही सुहाता ॥१२९
ऊभै स्थूल औ सुक्षमं है अनाँदं, परंमातमा नाँहि जामै प्रमादं।
बहै है जु थूलं सोई ध्याँन आव, नहीं सुक्षमं ज्ञाँन-इंद्री लखावै ॥१३०
प्रथमं कह्यौ पचमत्ता[13] प्रबाहं, नियंता जिहौं स्रष्ट पुज्जै निबाहं।
पखै पंचहूँ कनं कै भूत पंचं, प्रकासै सदां ईस जा सौं प्रपंचं ॥१३१

दोहा

तनमात्रा रस कल्पतहु, मन में जाहि मिलाय।
जब हो जाको रूप जल, थूल तत्व सोई थाय ॥१३२
प्रथक प्रथक है अंस पुन, जल में कर कै जाहि।
मिलै सबही ह्वै रसमई[14], जबही जानहु जाहि ॥१३३

---

१ ऊर्द्धं, उदर। २ शब्द। ३ स्पर्श। ४ अग्नि। ५ पवन। ६ विषय। ७ जीभ ८ शरीरस्थ। ९ उदान। १० समान। ११ वरुण। १२ ऋभुवद्य=देवचिकित्सक, अश्विनीकुमार। १३ पंचमात्रा। १४ रसमयी, पृथ्वी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सूतनही के भाग में, चेतन को प्रतिछाँहि।
अहंकार पुन ऊपजै, मिल कै ताही माहि ॥१३४
जाही सौं बिसतार जग, नीयंता जु जगनाथ।
जीवन की उतपत जिती, है ताही के हाथ ॥१३५

छंद हंसखरी

बोले बिध नारद सौं बाँनो, बिधवंत उतपत स्रष्टि बखांनी।
जग चौरासी लक्ष जौन[1] की, है प्रकार जिम क्रम हीं होन की ॥१३६
रूप गुनन के कहत रहंसा, सुन नारद मेटहु हीय-संसा।
सत्व प्रोयात्मक है जासौं सुख, रुचर होत जासौं आर्जव[2] रुख ॥१३७
सत्य सौच स्रद्धा संतोषं, दया क्षमा लज्या निरदोषं।
सांती धारन बरन्[3] स्वेत है. द्रढ़ सुधर्म सौं प्रीत देत है ॥१३८
स्रथा राजसी सक्तब सोई, सदाँ धर्म अप्रीत कर सोई।
द्वेष दंभ मछ्छर[4] मद दंभी, उतकंठा[5] अरु माँन असंभी[6] ॥१३९
गर्व द्रोह ताही सौं गनीयें, संख्या अब तमगुन की सुनीयें।
क्रस्न बरन जामें कुटलाई[7], रोष बिसम परदोष रचाई ॥१४०
मोह बिषाद नींद भय मांनत, बाद बिषादहु फेर बखाँनत।
नास्तिक भाव और क्रपनाई[8], आलस जुत दीनता ऊपाई ॥१४१
अपनौ हित जो चाहै ऊर में, महाँ स्रेष्ट सतगुन है मुर में[9]।
तम रज सनै-सनै द्वै त्यागै, अधिक जाँन सतगुन अनुरागै ॥१४२
पर तीनूं गुन मिस्रित पैखौ, अलग एक तैं नांहिन एकौ।
बिमल पितामह[10] सुन कै बांनी, पिसुन[11] जोर बोले जुग पाँनी ॥१४३
गुन लछन भाखी गरुआई[12], जांन्यौ सकल अनूंक्रम जाही।
बिधवत ताकौ करौ बखांना, मेटौ हीय अज्ञांन महांना ॥१४४
बोले बिंध नारद सौं बानी, जिन गुन रीत हमहु नहीं जांनी।
कहौं सपुष्ट[13] तोहि सौं कैसे, उर उनमान जानीयें ऐसें ॥१४५

---

१ योनि। २ कोमल, सरल। ३ वर्ण=रंग। ४ मत्सर। ५ इच्छा।
६ असम्भव। ७ कौटिल्य=दुष्टता। ८ कृपणता। ९ तीनों में। १० ब्रह्मा।
११ पिशुन=चुगलखोर, नारद। १२ गुरुता, गौरव। १३ स्पष्ट।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तन सुंदर जोबन जुत तरुनी, हाव-भाव सौं पत[१]-चित-हरनी ।
सौ तनकौ दुख दायन सोई, समझहु मिस्रत[२] भाव सकोई ॥१४६
सब कौ है सतगुन सुखदाई, दीखत कही कही दुखदाई ।
राजस गुन के सुनीयै रीती, न्याय-परायन है जुत नीती ॥१४७
सैन्यधिक्ष[३] अरु दक्ष[४] सुमंत्री, कलपत देखे चोर कुमंत्री ।
तम-गुनहू हितकारी तैसै, अहितकार पुन जानहु ऐसै ॥१४८
घन घुमंड आवत जब घटा, चमकत दुर दुर जामै छटा ।
संजोगन[५] नारिन सुख सरसै, तिय प्रोखत-पतका[६] होय तरसै ॥१४९
पुन नारद पूंछहु बिध पाँही, आप आप तै गुन अलगाँही ।
भाव विरोधी सो त्रहु भासै, पर कैसै मिस्रत परकासै ॥१५०
जिही विध अगन दाह कर जैसै, तूलहु[७] तेल-बिरोधी तैसै ।
पुन दीपक मिल करत प्रकासा, जाँनहु दीप-बृती[८] गुन जासा ॥१५१
नारद सुन ऊपदेस निदानं ऊर अन्तर मैट्यौ अज्ञानं ।
अज[९] दीनौ नारद ऊपदेसा, नारद ब्यास सुनाय निदेसा ॥१५२
ब्यास कहे जनमेजय बाँनी, भजबे लायक आद भवाँनी ।
तजीयै भ्रम भजीयें ईक ताही, सुख-दायक है मात सदाई ॥१५३
ऐ ऐ मंत्र कहत अज्ञाँनो, ब्रह्मदत्त भये द्वज बिज्ञाँनी ।
सुनहु नृपत ईतिहाँस सुहाँवन, परघ पुनीत सोई अत पावन ॥१५४
सब लायक भूपत ध्रमसेतू[१०], हम गये तीरथ-जात्रा-हेतू ।
अत पवित्र थल अधम ऊधारन[११], आये तबही नीमष-आरँन[१२] ॥१५५
बंदन कर मुनि बृंद बिसेसा, पुन बैठे जहाँ पाय प्रबेसा ।
जमिदग्न[१३] कीय प्रस्न जहाँई सुर हरी हर आदक समुझाँई ॥१५६
अत ऊदार हित सीघ्र आँमना[१४], काँमी पूरन करे काँमना ।
ईहाँ बिचार मति के अनुसारा, बिवध भाँति मुनि कहहु बिचारा ॥१५७
बोले सुन लोंमस[१५] मुनि बाँनी, महाँसक्ती आराधन माँनी ।
देत सीघ्र फल सो सुखदाई, सुनहु कहत ईतिहाँस[१६] सुहाई ॥१५८

---

१ पति । २ मिश्रित । ३ सेनाध्यक्ष । ४ चतुर । ५ संयोगिनी । ६ प्रोषितपतिका=वियोगिनी । ७ रुई । ८ दीपवर्त्ती=बत्ती । ९ ब्रह्मा । १० धर्मसेतु=धर्मप्राण । ११ उद्धारण=उद्धारकर्त्ता । १२ नैमिषारण्य । १३ जमदग्नि ऋषि । १४ आम्नाय=मार्ग । १५ लोमशऋषि । १६ इतिहास ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुरी अजोध्या तामह पाँवन, बसत देवदत्तहि जहाँ ब्रांमन[1] ।
सो अपुत्र हित पुत्र सुधारी, बिधवत बेद जिज्ञ बिसतारी ॥१५९
मुनि सु होत्र[2] गुरू जागबल्क[3] मिल, भये येकठे पँलहु गोभिल[4] ।
तमसा नद की तोर तहाँ हो, जिग-रचना द्वज करी जहाँ ही ॥१६०
सिवकाई मुनि-वृंद सुधारै, ध्रुव सुत हित आस्रव[5]-ऊरधारै ।
ऊदगाता गोभिल्ल ऊचारचौ, स्याँमवेद कौ गाँन सँवारचौ ॥१६१
भयौ ताहि माँहीं स्वर-भंगा, सुन्यौ देवदत्तहो मुनि-संगा ।
रिष सौं कह्यौ बिप्र रिस-रंगे[6], कहा ऐसैं तुम पढ़त कुढंगे ॥१६२
रिस-बाँनी सुन मुनहुं रिसाए पै अपनी करनी फल पाये ।
कहे बचन गोभिल्ल करारे, महाँमुनिंद्र रीस के मारे ॥१६३
जिज्ञ करत जाके हित जोई, सुत बहरो ह्वै है सुत सोई ।
देवदत्त बोले दुखद ई, भयं पुत्र तौ कहा भलाई ॥१६४
जप तप पूजा दाँन न जोगं, सुत कौ पाय लहै हम सोगं[7] ।
सत्यव्रत कैसे ह्वै संभव, अल्प दोष पै स्राप असंभव ॥१६५
द्वज मुनि सौं बिनती बहु दाखो, भाँत-भांत आरत[8] बहु भाखी ।
कर साँ चरन गए मुनि केरा, मेटहु स्राप दीन द्वज मेरा ॥१६६
तब मुनि भये क्रपाल तिहीं तैं, सोच करहु जन बिप्र सही तैं ।
प्रथम होय मूरख फिर पंडित, अंबा करहै क्रपा अखंडत ॥१६७
श्राप करहि उद्धार तोर सुत, मोर बचन सुन इहीं महाँतम ।
देवदत्त हुय प्रस्न[9] जब ही द्वज, जग्य संपूरन कोन रीत जुज[10] ॥१६८
कोऊ दिन बीते श्राप कहा के, तूँनीसील[11] भयौ सुत ताकै ।
जात-करम कीनौ कुल जैसौ, आह्वय धरचौ ऊतथ्यहु वैसौ ॥१६९
पालन लालन मात पिता की, पै कछू दिनन अवस्था पाकी ।
लायक जाँन पढ़ावन लागे, अक्षर बोलत नहिन अभागे ॥१७०
मात-पिता भये क्षोभत मन में, वह ऊथत छुटकाय बिपन में ।
आये मात-पिता घर अपनैं, सुत कौं याद करै नह सुपनै ॥१७१

---

१ ब्राह्मण । २ होता=हवनकर्त्ता । ३ याज्ञवल्क्य । ४ गोभिल मुनि । ५ आश्रव=व्रत, प्रतिज्ञा । ६ क्रुद्ध होकर । ७ शोक । ८ आर्त्त=दु:खित वचन । ९ प्रसन्न । १० यजुर्वेद, युत । ११ बहरा, गूंगा । १२ नाम ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिचरै तट गंगा बनबासी, एकाकी बृत रहै ऊदासी।
ऊदर फूल फल करै अहारा[1], भूख लगे जब हो दै भारा ॥१७२
मिथ्याँ बात धरै नहि मन में, तपत ताप सहजैं निज उन में।
सत्यतपा तिह नाम महाँना, जाकौ सबही कहत जहाना ॥१७३
पावन बन में रहत पुनीता, बरख[2] चतुरदस ताकह बीता।
सत्य आचरन देख सबैही, दूसर नाम सत्य इन दैही ॥१७४
ढिग आस्रम तिह बन में ढेटा, येक निषाद[3] फिरत आखेटा[4]।
कंकपत्र[5] को खंच करारा, मत आरसिंगल[6] तन मारा ॥१७५
सोई भागौ तिह लगत समाँना, घाय पसाय पीड़ घबराँना।
बमत[7] रुधिर लख दया बिचारा, ऐ-ऐ[8] मुनिवर सब्द उचारा ॥१७६
मंत्र सरस्वती निकरत मुख तै, सो मुनि भए मेघावी[9] सुख तै।
आगै गयौ बराह[10]-अहेरी[11], फिरत खोज आयौ तिह फेरी ॥१७७
धनुस बाँन कीनै कर धारन, मन अकुलावत कारन मारन।
ताहि अहेरी कह्यौ तहाँ ही, सत्यबृत तुम नाँम सुहाँही ॥१७८
घायल सूर गयौ किह घाटै[12], देहु बताय जाय हम दाटै।
बात अहेरी सुन बहुरंतर, ऐ-ऐ जपत रहे ऊर अंतर ॥१७९
मुनि की सुनकै भई ऐसे मत, गही छचुँदर-अही[13] जिहीँ गत।
हिंस्या[14] सत्य कहे तै होवै[15], खोटी झूठ कहै बृत खोवै ॥१८०
दोनो मति ताकौं श्रुत-देवो, कछू समझ्यौ नहि सूकर केवो।
बोले मुनिवर हृदै बिचारी, सुनहु अहेरी मति अनुसारो ॥१८१
जो देखत नही बोलत जानै, बोलत सो नहीँ देख बखानै।
घातक जाहु तुमारे घर कौ, सोधन करहु तथा सूकर कौ ॥१८२
हाल कह्यौ जानत हम जैसौ, तुम बिचार देखहु ऊर तैसौ।
मुनि कौ पन राख्यौ महाँमाया, सुन निषाद श्रुत पंथ सिधाया ॥१८३
सो सतवृत कबि भये सिरोमन[16], मानहु दूसर बालमीक[17] मुन।
ऐ-ऐ इंदु मंत्र आराधै, सिध साधना जुत कोऊ साधै ॥१८४

---

१ आहार=भोजन। २ वर्ष। ३ भील, शिकारी। ४ आखेट=शिकार। ५ बाण। ६ शूकर, सूअर। ७ उगलता हुआ। ८ ऐं-ऐं। ९ मेधावी=बुद्धिमान्। १० सूअर। ११ आहारी=शिकारी। १२ मार्ग। १३ साँपछछूंदर। १४ हिंसा। १५ सरस्वती। १६ शिरोमणि। १७ वल्मीकि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सत्यव्रत ज्यौं होय सुखारी, अति मतिवाँन ज्ञाँन अधकारी।
भेंटे जात भ्रातजन झलकै, मात-पिता लाए घर मिल कै ॥१८५
ईह लोंमस भाख्यौ ईतिहासा, पुन तो सनमैं[1] कीन प्रकासा।
पूजनीय महाँमाया पूजौ, देव नहो देबीसम दूजौ ॥१८६

दोहा

कही व्यास नृप सौं कथा, सुन कै परम सयाँन।
पूछचौ पावन प्रीत जुत, अंबा - जिग - आख्याँन ॥१८७
पूजा-बिध कहीयें प्रथम, साधनहू सह कोय।
करकै सरधा-जुत कहूँ, हमहु क्रतारथ[2] होय ॥१८८

छंद भुजंग-प्रयात

सुनै ब्यास नै भूप के बैन स्रौंनं[3], बखाँन तहाँ जग्य लागे बिधाँनं।
अहू सातुकी राजसी ताँमसी कै, निहारौ बिचारै अहू भेदं नीकै ॥१८९
मुदं सातुकी जग्यकारी मुनिंद्रं, नियंता ज्युहीं राजसी है निरंद्रं।
नृचक्षा[4] मखं[5] तामसी है निराला, बिरागी भई ग्यांन जाँनै बिसाला ॥१९०
अजोध्या पुरी सिंभु-माया[6] ऊजेनीं[7], सुखेत्रं मधुपद्म[8] लौं उच्च स्रेनी।
नदी गंग गोदावरी नर्बदा पै, सुता अर्क[9] ब्राह्मी[10] सुची सर्बदा पै ॥१९१
ऊजेतं[11] सुबेला गिरी अर्बलीहू, थितं पुस्करं ताल आदं थलो हू।
भली भाँत थप्पै जहाँ सुद्ध भोमी, गहै उत्तरा मग्ग[13] घ्यावै खगोमी[14] ॥१९२
बसावै पखै न्याय सौं ब्रीह[15] बित्तं, स्रधापूर्बकं बेद के मंत्र-सहितं।
ईही सातुकी जग्य जाँनौ अनूपं, भलो नीत सोई फलीभूत सूपं ॥१९३
गहै द्रब्य अन्यायही कौ लगावैं, कछू लाभ तातैं न हाथो करावै।
कीये रावरे[16] पूर्बजं जग्य कैसे, जहाँ पुन्य-ग्राही भये क्रस्न जैसे ॥१९४
मनीसी[17] भरद्वाज जैसे महत्वं, बनोवास आई ग्रही पै बिपतं(त्तं)।
मरे राज पुत्रं अरथं मिलाँही, अलिष्ट[18] कहू दोष जातै ऊपाई ॥१९५
कहूँ होत है दोषहू जग्यकर्ता, भले दोष जाँनो कहूँ मंत्रभर्ता।
कहूँ द्रब्य कै द [1] कमाई, लगावै अदोषं मखं बित्त लाई ॥१९६

---

१ सम्मुख। २ कृतार्थ=सिद्धमनोरथ। ३ श्रवण=कान। ४ राक्षसी। ५ यज्ञ। ६ शम्भुमाया=काशी, हरद्वार। ७ उज्जयिनी। ८ मथुरा। ९ अर्क-सुता=यमुना। १० सरस्वती। ११ गिरनार। १२ त्रिकूटाद्रि। १३ मार्ग। १४ सूर्य। १५ व्रीहि=सामग्री। १६ आपके। १७ मनीषी=विद्वान्। १८ किंचित्।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रच्यौ जिग्य निर्दोष ज्यौ दासरथं[1] (थ्थं),ऊपायौ सुनीती लगायौ अरथं(थ्थं) ।
जहाँ च्यार पुत्रं भये राम जैसे, कीये जुद्ध आदं जिही काँम कैसे ॥१९७
छिती-मंडलं जाहि सौभाग्य छायौ, पिता मातहू बास बैकुंठ पायौ ।
करं अंबका-जिग्य निर्दोषकारी, बनावै स्थिती मंडपं धोय बारी ॥१९८
बिधी-पूर्बकं कुड बेदी बनाव, जिहीं कुंड में थपा बन्ही[2] जगावै ।
जहाँ आद ब्रह्म करं पुज्य जाकी, अधारे हीयै प्रीत आद्या-अजा की ॥१९९
सबै सातु की बृत सौं तोष सम्यं, इहीं अंबका-जिग्य जानौ अलभ्यं ।
जिहीं अंबका ब्रह्मबिद्या सुजाँनौ, मती निर्गुनी सर्गुना एक माँनौ ॥२००
सोई जग्य-कर्ता गती कौं समावै, पिता मातहू बास निर्वाँन[3] पावै ।
हुयो ताँमसो जग्य दिःकर्न[4] होमे, जथाँ सातुकी जाँन भाख्यौ सु जो मैं ॥२०१
कहूँ सातुको जिय राजा करौगे, इही बंस के रूँनके[5] ऊद्धरौगे ।
बखाँन्यौ अजा-जग्य कौं बेदव्यासं, बिचारयौ तिही भूप पायौ बिसासं[6] ॥२०२
रमाँनाथ के जग्य की तग्य रीती, प्रकासौ हीये व्यास बाढ़े प्रतीती[7] ।
नृपं जीय की जाँन के हीय नीकी, बखानी कथा ब्यास बिस्तार ही की ॥२०३
दई तीन सक्ती जबे तीन देवं, भवंनेश्वरी[8] दीद्य(ध) अज्ञा[9] सभेवं ।
करौ स्त्रष्ट कौं जाय कैं पुष्टकारो, हितू स्त्रष्ट है बात माँनौं हमारी ॥२०४
मिले देव आए त्रहूँ मेदनो पे, त्रहूँ सक्ति के संग बैठे तहो पे ।
सुधारी महंमाय[10] आधार सक्तो, भई तोयधारी[11] थिरीभूत[12] व्यक्ति ॥२०५
जरे कील ज्यौं सैल ताकों जमाँई, सुमेरू रह्यौ मध्य ताकै समाई ।
जने बिस्वरेता[13] जहाँ पुत्र जेता, मरोची पुलह[14] अत्री ताहो समेता ॥२०६
पुलस्तं क्रतू दक्ष बासिष्ट पूरे, रिषी नारदं आदकं नाम रूरे[15] ।
मरीची सुतं कस्यपं भे महाँना, दई दक्ष तेरे सुता ताहि दाँना ॥२०७
जने दक्षजा देवहु दैत जेते, मनुस्यं पसू पछ्छ चक्री[16] समेते ।
क्रतं कास्यपी स्त्रष्ट ताते कहाई, सोई आज लौं बृद्धि बाढ़े सबाई ॥२०८
स्वयंभू[17] स्वयंभूमनू अंग सेती, जिहो जानीयै दक्षनं संग जेती ।
भई सत्तरूपा[18] सु ता बामभागी[19], स्वयंभूमनू दीन ताही सुभागो ॥२०९

---

१ दशरथ । २ वह्नि = अग्नि । ३ निर्वाण = मोक्ष । ४ विकर्ण = सर्प ।
५ रौनक । ६-७ विश्वास, प्रतीति । ८ भुवनेश्वरी । ९ आज्ञा । १० महामाया ।
११ जलधारा । १२ स्थिरीभूत । १३ विश्वरेता = विश्ववीर्य, ब्रह्मा । १४ पुलस्त्य ।
१५ सुन्दर, प्रसिद्ध । १६ सर्प । १७ ब्रह्मा । १८ शतरूपा । १९ स्त्री ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रीयंवृत्त[1] कौ पुत्र उत्तानपादं, मही आद पाथोद[2] बांधी मृजावं[3] ।
उपज्जी सुता तीन ताते अकूती, पिछांनो जथां देवहूतो प्रसूतो ॥२१०
रची सृष्टि एती जबं विस्वरेता, निकाई जु तैंलोक राचे निकेता ।
सवांरी तबे मेरु के स्त्रंगही पे, द्वती स्वर्न की भर्न के द्रंग द्वीपे ॥२११
रमांनाथ बैंकुंठ तापं रचायौ, सबैं स्वर्न औ रत्न भूं में सचायौ ।
रचो सिभु कैलास जापै रहाए, सबै भूत मेरूं तिहो पै समाए ॥२१२
रच्यौ स्वर्ग तापै जहां इंद्र राजा, सबै देव कौं संग लीनै समांजा ।
मथ्यौ देव दैतं समुद्रं महांनं, थितं पारजाती[4] मिल्यौ थपथांनं ॥२१३
द्विपी[5] ताहिमांहो मिल्यौ च्यार दंता, वही पाय कै सोह बाढ़ी अनंता ।
हुई प्राप्त औरै तहां कांम हंभा,[6] रतनं मिले अछरी[7] आद रंभा ॥२१४
भई च्यार खांनी मई सृष्टि भरती, पसारे जरा ईड़जं[8] लौं प्रवर्ती ।
ज्युहीं ऊदभिजं स्वेदजं जीव जांनो, प्रमेष्टी पिता सृष्टि नीकं प्रमानौं ॥२१५
तिहीं जक्त के ईस है देव तीनूं, पिछांनै जिही भेद नीके प्रबीनूं ।
बिराजे त्रहूं देवहू कीन बासा, प्रभापत्तनं[9] सक्ति भ्यासं प्रकासा ॥२१६
पुरी विस्नु ब्रह्मां कपर्दी प्रभावा, परं दिव्य धांमं प्रकर्ती पसावा ।
ऊपज्जी हुवे विस्नु के आंय ईछ्या, प्रभावं मनोदीप देख्यौ प्रतच्छा ॥ २१७
अनांदी महंमाय की याद आई, बिचारी तिहीं भांत भांतं बधाई ।
क्रतू[10]कारजं अंबका हेत कीजै, रुची पाय कै जाहि सौं माय रीझै ॥२१८
निमंत्रं दीयौ जिग्य काजै निकाई, मिले आय के देव बैकुंठ माहीं ।
गिरीसं[11] गजानंन[12] औ वेदगर्भा,[13] सुनासोर[14]हू संग लीने सुपर्बा[15] ॥२१९
प्रचेता[16] जहां दक्षनासापती[17]हू, थए आय इच्छ्याबसू[18]लो थिती हू ।
उतथ्थानुजं[19] सप्त आदं रिखोसा, धरे चाहिकै आय के जोग धोसा ॥२२०
उदारं वृती सातुकी सोम-याजी, मुनो अध्वरो यग्यहोता समाजी ।
गुनी दक्ष मंत्रं मिले ऊद्‌-गाता[20], विथारी बिधी सप्ततंतु बिख्याता ॥२२१
अकारं करं दच्छनं चंद्र अर्द्धं (र्धं), बनाये जहां कुंड नीके प्रबर्धं ।
खिती[21] कुंड कीनौं द्वती च्यार खूंटा, अरु वृत[22] आकार तोजो अखूंटा ॥२२२

---

१ प्रियव्रत । २ पाथोधि = समुद्र । ३ मर्यादा । ४ पारिजातवृक्ष । ५ द्विप = हाथी, ऐरावत । ६ कामाम्बा = कामधेनु । ७ अप्सरा । ८ अण्डज । ९—पत्तन = शहर । १० क्रतु = यज्ञ । ११ गिरीश = शिव । १२ गणेश । १३ ब्रह्मा । १४ सुनासीर = इन्द्र । १५ देव । १६ वरुण । १७ दक्षिणाशापति = यम । १८ इच्छावसु कुबेर । १९ गुरु । २० उद्‌गाता = सामवेदी । २१ क्षिति । २२ वृत्त = गोल ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

धरे अग्न तापे रचा सामधेनो[1], तरू सुस्कहू डार तामे त्रपनी[2]।
हवी[3] आद सन्नाज[4] पै अग्नहोत्रं, गहै देवता आपनै दाय गोत्रं ॥२२३
ज्युंही और दर्वी[5] गहै दर्व[6] जेते, सनेहुं[7] पनारा परै धार सेतै।
मधुपर्क[8] भुंजे महाँ ज्वालमाला, चमंकै चितंगी मनौ बिज्जु-चा(ज्वा)ला ॥२२४
धुकै ऊढहू जाय कै छाय धूमै[9], घनासं घटा सामनी जांन धूंमै।
सबदं गरज्जै मनौ बिप्र स्वाहा, पुनीतं बरखै अनंदं प्रबाहा ॥२२५
जथां जोग बिप्रावली देव जेवै[10], बिराजे मनो हंस सारंस बे बै।
गंडोलं[11] पिंडोलं मचे भूम गारौ, प्रभा पुन्य अंकूर ऊगौं पसारौ ॥२२६
बिकुर्वां आख्यांन बाख्यान बांचे, रबं दादुरं[12] जांन सारंग राचै।
गुनी गंध्रवं मेघ मल्लार गावै, बिपंची[13] मृदंगा अनूंपं बजावै ॥२२७
कहूँ सारका[14]-दुंदभी लाग ड़क्का, ढ़कै व्यौम कौ भोम आवाज ढक्का[15]।
नचै मोरनी ज्यौ अद्दरी नाच नीकै, कहूँ जानोयै नाँहि काहू कमी कै ॥२२८
रहै इंदरा[16]-गेह में राज-रांनी, बखांनौ कहा जग्य ताही बिधांनी।
अनेकं चतुर-जात के देव आए, परं देबीयां संगही पुज्ज पाए ॥२२९
गिरा आद लौं पुज्ज कै गंग गौरी, समाधांन कं इंदु की सक्ति सौरी।
मुनिंद्रं जु तें बिप्र जामैं महांना, दये दक्षना भक्षना आद दांना ॥२३०
रमांनाथ कै जग्य कौ काम रूरौ, प्रथा पाय सोई भयौ तांम पूरौ।
बिसालं भई एह आकास-बांनी, अहौ बिस्नु ह्वै है सुरां अग्रबांनी[17] ॥२३१
पदं हंस-गं रुद्र इंद्राद पूजे, सबै ज्ञान बिज्ञान के भेद सूझै।
पदार्थं लहै च्यारहू सेव पाखै, रमां आद नौहूं नोघो ग्रेह राखै ॥२३२
हरी जिग्य कै भाग में पुज्ज ह्वैहौ, द्रुतं कांमना आंमना दांन देहौ।
घलै दांनवा देव कां दुःख घेरी, तबै चाहिकै आयहै सर्न तेरी ॥२३३
मिटाये महादुख ओघं[18] मिटैंगे, रसज्ञा[20] सबै नाम तेरौ रटैंगे।
परै काम जैसौ जहां रूप पैहौ, निमंतं चहै जेम औतार लैहौ ॥२३४
गहै बेद के पंथ में धर्म ग्लांनी, मिटैहौ सोई चाँहि कै ताहि म्लांनी[21]।
हमारी सबै सक्तीयां संग ह्वैहै, द्रढं चित्त की चाह ज्यौं कांम दैहै ॥२३५

---

१ सामध्वनि। २ तर्पणीय = समिधा। ३ घी, घृतपात्र। ४ हवनसामग्री। ५ द्रव्यपात्र, दर्भ। ६ द्रव्य। ७ स्नेह = घृतादि। ८ दूध-दही आदि। ९ धूम = धूम्रां। १० भोजन करते है। ११ ग्रास। १२ दर्दुर = मेंढक। १३ वीणा। १४ सारिका = मैना। १५ डमरू। १६ इन्दिरा = लक्ष्मी। १७ सूर्यशक्ति। १८ अग्रणी। १९ ओघ = समूह। २० जिह्वा। २१ मलीनता।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अरूपा अजा दीन बरदांन ऐसौ, करै याद आख्यांन बांचं कहै सौ।
मनो-बंचना[1] कामनां कौं मनाबै, परामाय माहेश्वरी भक्ति पावै ॥२३६

दोहा

बिस्नु-जिग्य की बारता, सुनी व्यास सौं ग्यांन।
जनमेजय बौल्यौ जबही, पूर्बक विनय प्रमांन ॥२३७
कही जिहि बिध मख कथा, महिमा तिह बिध मात।
व्यास सुनाबहु बारता, सबही हौय सुनाथ[2] ॥२३८

छंद हरिगीतका

सुन भूप सौं इह ब्यास ग्यांनन कहन लागे पुन कथा।
नगरी अजोध्या पुस्पनांमक तरून बंसी नृपत थां।
ध्रुवसंध नांमक तनय अधपत[3] जाही पट्ट सुजांनीयै।
भुवपाल बिरद[4] बिसाल निर्भय प्रजापाल प्रमांनीयै ॥२३९
रानीं जु ताहि मनोरमां लीलावती दूसर लहै।
सुखसहित धर्म सुधर्म में नित राज काजन निर्बहै।
रानीं सु जेष्ट मनोरमां सुत तिह सुदर्सन सित सभा।
लीलावती-सुत सत्रु-जित लघु पेखीयै सुंदर प्रभा ॥२४०
सम प्रीत नृप की दहूं सुत सौं पाल लालन प्रेम सौं।
नव निद्ध रिद्ध समृद्ध निर्मत खत्रीया-धृम[5] खेम[6] सौं।
आखेट गए नृप येक अवसर मृगहु खग कहां मारनै।
हठ कुंज में जहां केहरी[7] हर बिफुर निकस्यौ बारनै ॥२४१
तब ढ़ाल कर तरवार लै हठ भूप समुह कां हल्यौ।
समरथ्थ सथ्थह हथ्थ सौं भुक लुथ्थ बुथ्थन ह्वै भिल्यौ।
मृगराज कौं गहि राज मारयौ राज कौं मृघराज कै।
सब सोच राज-समाज में अनचित पाय अकाज कै ॥२४२

---

१ मनोवाञ्छा । २ सनाथ । ३ अधिपति । ४ यश । ५ क्षत्रियधर्म ।
६ क्षेम । ७ सिंह ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

व्याप्रत अमातन बृंद मिल कै क्रोया प्रेतही जिह करी।
बिबहार[1] सार बिचार कै अनुसार बेद ही ऊद्धरी।
रांनी पिता सु मनोरमा कढ आप देस कलिंग सौं।
लीलावती पितु आय लारही द्रुत अबंती-द्रग[2] सौं ॥२४३॥
पुन जुधाजत[3] लीलावती पितु सत्रुजित अंगज सुता।
गुनबंत थपिही राजगादी कही सबसां इह कथा।
नृप बीरसैन कलिंग निर्भय रहि पिता सु मनोरमा।
सुत सुता मेरे सुद्रसन पै छत्र धारहु सिर छिमा ॥२४४॥
मानी न एकहु एक की मति एक एकन ऊपरा।
धिक धेक नाहि बिबेक धारचौ तेख रन में तत्परा।
बिंरदैत भूप कलिंग बासी इतहु नाथ ऊजैन कौं।
रन-खेत आय जुरं उभै समुदाय लै संग सेन कौं ॥२४५॥
पर सस्त्र अस्त्र प्रहार पै रव मार-मार ऊचार कै।
सुर असुर मानहु संजुरें सम बैर आद बिचार कै।
धरनी सु चक्कन तें धुकी सररक्क नासा सेस की।
मुररक्क पिठहु कांमठी कररक्क दृढ़ किरेस[4] की ॥२४६॥
दररक्क दिग्गज अठ्ठ डिग फररक्क लै फंन ने टीयैं।
खररक्क ज्जुगन[5] खपरा[6] भररक्क भुग्गन मेटीयैं।
केऊ जुद्ध बानन तै करै किरवान[7] धारन के कटै।
केऊ खंजरन तें पिंजरनं के फिफरन[8] बुक्कन कटै ॥२४७॥
केंऊ काढ़ कैं जमदाढ़ कौं गहि गाढ़ मारत गात में।
घसजात बार बिसार[9] ज्यौं बहि बाढ़हू बरसात में।
सिरस्त्रांन[10] कंकट सोस पै केंऊ देत मार कुठार की।
खननंक रव ताकी खुलै घननंक ज्यौं घरीयार की ॥२४८॥
आवाज वाज अडंबरा[11] घुररात धुन घनघोर ज्यौं।
हर-बल्ल बाढ़ तहां कहुँ हुररात सिंधु हिलोर ज्यौं।

१ व्यवहार। २ दुर्ग। ३ युधाजित्। ४ वाराह। ५ योगिनी। ६ खप्पर। ७ कृपाण=तलवार। ८ फेंफड़े। ९ मछली। १० शिरस्त्राण=टोप, पघड़ी। ११ जुझाऊ बाजे।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

झटकाँन तें बटकाँन[1] ह्वै खटकांन खग्गन[2] खुपरी[3]।
जगदीस के अटकांन ज्यौं बटकांन भेजा बिखरी ॥२४६
गजराज पैं मृगराज[4] त्यौं जिम बाज तित्तर जानीयैं।
ईम ईक्क ईक्कन तै अरें बल काय निबल बखांनीयें।
बाजंद[5] और गजंद[6] बिढ़ जहां अरें सिंदन[7] जाल का।
चमकात आयुध त्यौं चलै बरसात में जल बालका[8] ॥२५०
झुक केक झुंड कबंध झुमत घनें घूमत घायला।
ईक ईक तै जुरु कैंन आहब[9] बकै ज्यौं मतबायुला[10]।
कट कीन[11] बुथन-बुथ्थ के कहूँ कालखंज[12] परे कटे।
फररक्क फिफर[13] फैल कै अरू बुक्क बुक्कन तें अटें ॥२५१
धमचक्क हक्कन घूम धक्कन अक्क बक्कन ह्वै ईला[14]।
लर फौज लख्खन सूर सख्खन चोह चख्खन तें छिला।
आग्नेय हय गय अग सौं पांनी पनारन ज्यौं परें।
कट भृकुट सुभटन कंधरा[15] चलचिच ऊरध संचरें ॥२५२
असमान में रूक भांन ईछत तुरग[16] बग्गन तांन कैं।
गम पायनों तम द्रुत गही बढ़ छयौ खेह[17] बितांन कें।
हल बीर-संमुह हुंकरें ऊर धंक धार ऊतावरें।
चिललात कातर[18] के चलें बिललात ज्यौं मत बावरे ॥२५३
बरमाल पांन बिवांन में असमांन गांन ऊतावली।
बर स्वच्छ सूर समांन बैठत्त अच्छरन की आवली।
कलहाक[19] हाकन के कजाकन बीर बाकन में बमें।
ड़हकात डाकन धंमधाकन रास साकनहू[20] रमें ॥२५४
असवार अच्छे तच्छ ऊलटत पुन परेवा पच्छ त्यौं।
मारे बरच्छन लोट मंडत तुच्छ जल के मच्छ त्यौं।
गज जुथ्थ जुथ्थ कट गिरे तट भये केक तुखार[21] का।
जल-नाल जूं रस[22]तेज़ जावत गूद माच्यौ गार का ॥२५५

---

१ टुकड़े। २ खड्ग। ३ खोपड़ी। ४ सिंह। ५ वाजीन्द्र=घोड़े। ६ गजेन्द्र=हाथी। ७ स्यन्दन=रथ। ८ बालुका=रेणुकण। ९ आहव=युद्ध। १० मतवाले, पागल। ११ मांस। १२ कलेजे। फेफड़े। १४ इला=पृथ्वी। १५ गर्दन। १६ तुरग=घोड़े। १७ धूलि। १८ कायर। १९ कलह=युद्ध। २० शाकिनी। २१ घोड़ा। २२ रक्त।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कट कालखंज बहै कहूं घरीयार कच्छप घाट का।
पग पिंडुरी जामें पहै पाठीन[1] ज्यौं बिच पाट का।
बपु खंड-खंड बिहंड ह्वै मिल चले तुंबा मुंड ज्यौं।
कहुँ कटी सुंड बितुंड की दिखरात बिष्टर[3] डुंड ज्यौं ॥२५६
कारंड हंस बकोट कागा, झुंड गिद्धन के झुके।
चहकात चंड चपेट चिल्लहु, लेत आमष लकल कैं।
जिम अंत तंतन जाल का, किख[4] कोक ऐंचत कीर से।
बहु त्रस्त बैठे घोरवासी[5], भरे पथकन भीर से ॥२५७
मालव नरेस कलिंग महिपति, जग भौ अति जोर सां।
चल चले च्यारहु चक्क पै, सकपक्क आलम[6] सोर सां।
नृप जुधाजित की सेन कां, खग्गन प्रहारे खेत पै।
बहु सत्रु मार कलिंगवासी, मरचौ सेन समेत पै ॥२५८
ऊजुवाल कै कुल आपनौ, ऊर माल धारै अछ्छरी।
बरबीर बैठ बिमांन में, पहुँच्यौं सु अमरावति-पुरी।
जब जुधाजित नृप सत्रुजित दै राज निज दोहित्र कौं।
द्रुत[7] देस पहुँच्यौ द्रंग कौं, जुर सेन आयौ जत्रकां[8] ॥२५९
रानी सु जेष्ठ मनोरमां, सुत जेष्ठ कौं लै संग पै।
मिल मंत्रि मंत्र विचारकै, गवनी सोई तट गंग पै।
जहां सरन भारद्वज को, द्रढ रहि जाय मनोरमां।
बिसवास दै मुनिबर बसाई, सुत सुदर्सन तिह समा ॥२६०
मुनिवरन कुवर कुमांर मिल, खुश खेल खेलत ख्याल हीं।
कहि क्लीव[9] पै ताही पुकारा, वह न समुझ्यौं बाल ह्वी[10]।
वह छोर बरन बकार कौं, क्ली सब्द अनुजांनै कहा।
अनुश्वार - रहित बकार ऊतम, मंत्र देवी है महां ॥२६१
पुन जपत ही बिसवास पामौ, बेख पंचहु वरख में।
गहि सुदरसन भौ बरस ग्यारहु, हीयै जप जुत हर्ष में।

---

१ मछली। २ हाथी। ३ ठुंठा। ४ लोमड़ी। सियार। ६ संसार। ७ शीघ्र।
८ यहाँ। ९ नपुंसक, कायर। १० होने के कारण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जग्योपवीत कीयो जिहीं, मुनिराज जापै कर मया[1]।
धनु-बेद-नीत पढ़ाय धार्मक, तीव्र जप बल मति तया ॥२६२
सिद्ध दरस दीनौ सरस्वती, तिह मंत्र के परताप सौं।
धनुबान कंकट[2] धारनै, जुत कृपा ताही जाय सौं।
अभ्यास विद्या करत ऊँन्नत, खेल खुरली ख्याल कै।
चित चरन चंचल चाल तै, करबाल[3] हूँ कर ढ़ाल कै ॥२६३
कासी-नरिंद्र-कुमार का, सिसकला सुन्दर सुंदरी।
सुन श्रवन चरचा सुद्रसन की, ऊपज प्रीत अमंदरी[4]।
सो रात सूती स्वप्न में, सुभ दरस दीनौं सरस्वती।
बर मांग कन्या कहौ बांचत, देंहुंगी मै अद्वती ॥२६४
कन्या कह्यौ वर सुद्रसन कौं, मात दीजं मोहिकै।
दीय तथा-अस्तु कह्यौ देवी, सयन जागी सोयकै।
जुत हरख देखी ताहि जननी, पूँछ कन्या प्यार सौं।
कछू कह्यौ नाहिन सिसकला[5], व्रीड़ा[6] प्रभाव बिचार सौं ॥२६५
सो कही कछू सखियान सौं, निस स्वप्न बात निदाँन की।
सब्र सिसकला पित-मातहू सुन, बाक्य के बरदांन की।
सिसकला क्लीन्त[7] सनेह सौं, अत बिरह व्याकुल अंग में।
बन और उपबन बीच बिहरत, सहचरी-गन संग में ॥२६६
ईक बिप्र आयौ वही अवसर, मुनी आस्रम तैं मिल्यौ।
कछू भेद तातै लह्यौ कंवरी, राज-सुत हित चित रल्यौ।
बिरहाग्न बाढी हीय बिखै, तिह सीच कै घृत तेल कौं।
प्रज्वलत कीनो बिप्र पुन, मुरझात निसदिन मेल कौं ॥२६७
अकुलाय बाँन अनंग सां, ऊर अग भंग ऊतावरी।
तलपात पै लोटत तहीं, बिल्पात ज्यौं मति बावरी।
सम सूल लागत फूल सिंवल, बिस्फुलंग[8] बिकार से।
अत सीत मंद सुघंध आसुग[9], तिछ्छ[10] तन तरवार से ॥२६८

---

१ दया = ममता। २ बख्तर। ३ तलवार। ४ अधिक। ५ शशिकला। ६ लज्जा। ७ क्लान्त = व्याप्त। ८ विस्फुलिङ्ग = आग की चिनगारी। ९ आशुग = बाण। १० तीक्ष्ण = तीखे।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आकार गोपन[1] करत ऊर सांकार होत सखीन कौं।
निंद्रा न आवत नैन में, पत पाय बिरहा पींन[2] कौ।
नृप कासीराज सुबांहु निर्भय, देख तन कन्या दसा।
रच्यौ स्वयंबर राज-कंवरी, रुच निमंत्रन पति रसा[3] ॥२६६
मंचांन और बितांन मंडप, बनै केक बिधाँन के।
भडार रिद्ध समृद्ध भर-भर, श्रीद[4] कोध समांन के।
द्रुत भयौ अन-अन[5] देस तै, अन राज आरंभ आवनौ।
पितु-गेह उछ्छव होत पत्तन, गीत मंगल गावनौ ॥२७०
जब सिसकला निज जंननि सौं, संदेह[6] दीनौ प्रति सखी।
पत सुद्रसन परनाय कै, धुर[7] व्याह मेटहु धकधकी[8]।
रानी बुलाय नरेस कौ, कन्या हकीकत सब कही।
दुरभाग कां नही देहगं, सिसकला गुन-संपन्नई ॥२७१
राजा कह्यौ सोई सुन रहो, सिसकला हीय में सोच कै।
इक बिप्र कां बुलवाय कै, संदेह दीनौ सुद्रसन कै।
जिह कह्यौ तिह जाय कै[10], ...
मुनिराज कां निज मात कां, भाख्यौ सुदरतन भेव कों।
मुनिराज कहेऊ मनोरम कौं, सुभ फल्यौ मुनि-सेव कौ।
मुन कह्यौ जबहो मनोरमाँ, सुत जाँहुगी मैं संग में।
जहाँ जुधाजित अरु सत्रुजित, रस-भंग करहै रंग में ॥२७२
पुर-स्त्रंगबेर[11] निषाबा-पतु कोऊ, प्रथम दीनौ दिन कहू।
तिह बैठ रथ पै चढ्यौ तत्पर, संग जननी लै सहू।
कस टोप कंकट बीर-बंकट, धनुस बाँनन धार कै।
उर ध्याँन ध्यायौ अंबका, लीय पंथ हय ललकार के ॥२७३
नगरी बिसाला[12] लखी नैनन, झुंड-झुंडन नृप जुरे।
मद्रेस सिंधु-नरेस मागध, देस केरल द्रावरे[13]।
नय-पाल[14] चोलहु देस के नृप, काँमरूपहु पत कहूँ।
बर बीर धीर बिदर्भबासी, सूर नृप मांलव सहू ॥२७४

१ गुप्त। २ पीन = पुष्ट, प्रबल। ३ रसापति = भूमिपति, राजा। ४ कुबेर। ५ अन्यान्य। ६ सन्देश। ७ धुर = सब से पहले, भार। ८ चिन्ता। ९ दुर्भाग्य, भाग्य-हीन। १० मूलप्रति में आगे का एक चरण नहीं है। ११ शृङ्गिवेर। १२ विशाल = काशी। १३ द्राविड। १४ नीतिरक्षक।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इन आद औरहु भूप आये, करै गिनती कौंन की।
छतोस अक्षोहन[1] सई, चतुरंगनी[2] मिल छोन की।
पहुच्यौ सुदर्सन सिवपुरी[3], माता सु संग मनोरमैं।
अरु सत्रुजित आयौ वहाँ, जिह वाँहनी[4] अत कीय जमाँ ॥२७५
बृताँत कन्या सुन्यौ बिस्मय, हीय नृप सब हेर कैं।
जब जुधजित बोल्यौं जहाँ, ऊर घुमंड छाय अंमेर कै।
हम भार डारै प्रथम ही, सिसकला पावही सुत-सुता।
जब भूप कैरल कह्यौ जासौं, कहत हो कैसी कथा ॥२७६
इहाँ स्वल्क[5] नांहि स्वयंबरं, इछ्या स्वयंवर है इहीं।
कमनीय राजकँवार कौं, मन-बंच करहै पति मही[6]।
लर अनय[7] करकैं राज लीनौ, त्रीया लेवहुगे तिहीं।
बिच बैठ कै नृप ऐंठ बोलत, लाज तुम आवत नहीं ॥२७७
कछू बचन संकुल[8] परसपर कहि, बोल भूप सुबाँहु कौं।
सिद्धान्त पूछ्यौ नृपन सब, बृतांत कन्या व्याह कौं।
जब कही कन्या कहत जैसे, नृप सुबाँहु निदाँन कै।
सब भूप बोले सुद्रसन तैं, जिह अकेलौ जाँन कै ॥२७८
ह्य नाँहि हथ्थी सूर सथ्थी रथ्थ रथ्थी और हौ।
इह स्वयंबर में आप आये कौन के बल से कहौ।
बोलौ सुदरसन नृपन के बिच सुजन काज सुधारनी।
अनवद्य[9] रूप अखंड आद्या विस्व कौं बिसतारनी ॥२७९
जग जननि कौ बल सब ही जग कौं, हमहु कौं बल है वही।
द्रग स्वयंबर कौं देखनै, अवगाह हित आये ईहीं।
सुरस्वती देबी स्वप्न में, दरसाव हमकौं तिह दीयौ।
द्रुत स्वयंबर कौ देखनै, तुम कासीं जाव इहीं कह्यौ ॥२८०
पुन इहाँ आये दरस पाये, सब ही राजन के सुतै।
अरू जाँयगे फिर रिषी-आश्रम, मात जुत आप ही मतै।

---

१. अक्षोहिणी सेना। २. चतुरंगिणी = सेना। ३. शिवपुरी = काशी। ४. वाहिनी-सेना।
५. युद्ध। ६. मही = पृथ्वी। ७. अनीति। ८. समुदाय में। ९. अनवद्य = निर्दोष।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जब सुद्रसन ईह जाब[1] दीनौ, सुन्यौ नृपत सबन ही।
बय-डिंभ[2] देख बिस्रंभ[3] कै, सुससुंभ[4] बोले मिल सही ॥२८१
नृप जुधाजित उज्जैन—पत्तन, सत्रुजित अवधेसहु।
तुम सत्रुगत की नीत यारी, कदन[5] करबे कौं कहूँ।
सुन सावधान रह्यौ सदाँ जो कुसल चाहत जीव कौ।
हित चाह कै हम कहत है, कीजै बिसास न क्लीब[6] कौ ॥२८२
जब सुद्रसन बोल्यौ जहां, सब नृपन कौं समुझाय कै।
बातै विचार बिबेक की, सुन लेहु श्रवन सुभाय कै।
जिह कीयौ निर्मत[7] सबही जग कौं कीये निर्मत हमहुँ कौं।
अरु सत्रु मित्रन सौं उदासी, कहत साँची तुमहु कौं ॥२८३
कहु ईतेंही पै सत्रुता कर, भाव भजहै तौ भलै।
बसू[8] बीज जैसौ बोय है, वह फूल तरु जैसौ फलै।
सब सुद्रसन की बात सुन, नृप सिबर-सिबर[9] सिधायगे।
ग्रह राज-भवन सुबाहु गवने, अंत पै अकुलायगे ॥२८४
कन्या बुलाय ईही कही, बिच गोद कै बहिठार कै।
पुन माल लेय मधूक[10] पुस्पन, बरहु नृपत बिचार कै।
सुन पिता बोली सिसकला, करहौ न ऐसे काम कौं।
कढ़ नृपत आये कुट(टि) ल कांमी, धूम कर कर धाँम कौं ॥२८५
मैं एक कन्या जाहि मन तैं, त्रीया हित सब ताकहै।
बरमाल डारै हम वही ऊर चाह कै अभिलाष है।
सिसकला बारबधू[11] न सौं सिसकला नाहिन स्वैरनी[12]।
सिसकला अंस सुबाँहु संभव, बंस की नहीं बैरनी[13] ॥२८६
पत सुद्रसन परनाय[14] कै, कासीहू सीम[15] निकास मैं।
सब राज कौं सुनवाय कै बस रहौ अपने बास में।
कासी-नरेस सबै कही, बिष-बेल नँहि आँगै बढ़ै।
गढ़पती जाबहु ग्रेह कौं, कन्या न बाहर कौं कढ़ै ॥२८७

---

१. जबाब। २. बालक। ३ विश्वास। ४. स्वीकार करके कि ठीक है--शुभ है। ५. मारना। ६. कायर। ७. निर्मित = रचना, सृष्टि। ८ पृथ्वी। ९. शिविर = डेरे, स्थान। १०. महुआ। ११. वेश्या। १२. स्वैरिणी = स्वतन्त्र। १३. वैरिणी = शत्रु। १४ विवाह, प्रणय करके। १५. सीमा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कछू नांहि बोले अनकहू, जर[१] जुधाजित बोले जिही।
बँधेय[२] भूप बनारसी, अनजांन कीनौ क्रतु ईही।
इहीं दूर देस नरेश आये, क्लेस कीय किह कारनै।
दुहिता सुदरसन देहुगे, बुलवाय लीनौ बारनै[३] ॥२८८
कछू क्षमा करहै नृपत कोऊ, हम न जैहै हार कै।
अब सुद्रसन कौं मार अरु, सकुटंब तोहि संघार[४] कै।
परनाय देहूँ तोर पुत्री, जोर सत्रुहजीत कौं।
सठ[५] कहत हौं समुझाय कै, दुहिता न दै दोहीत[६] कौं ॥२८९
अथवा क राज-समाज में, ईह निरख नैनन नेम सौं।
बर-माल डाल बिचार कै, पति करै धारन प्रेम सौं।
समुझाय कन्या कहौं साँची, हम कहै जिह हाल कौं।
अत होयगौ नहि तौ ऊपद्रव, चाहि छोरहु[७] चाल कौं ॥२९०
सुन आय भूप सुबाहु नै, सिसकला कहि समुझाय कै।
पितु-बारता सुन श्रवन पुत्री, मन रही मुरझाय कै।
तज लाज कै पितुराज कौं, कँवरी हकीकत यौं कही।
परनाय कै निस[८] आज प्रथमही, सीख देवहु हम सही ॥२९१
जब जीत कै लै जाँयगे, निरबैर रहिहै नृप न तै।
पत सुद्रसन के संग पथ, पुन करहु बाहर पतन तै।
कासी-नरेस सुबाहु कन्या, कह्यौ तैसे हीं कीयौ।
बिप्रन बुलाये बेद-बिध सौं, चाहि चित मंडप छयौ ॥२९२
परनाय हरन पसाव[९] दै, गजराज हय दासी गऊ।
सब अस्त्र सस्त्र सँभार कै, सुच वस्त्र वित[१०] दीने सहू।
राजा सुबाहु मनोरमाँ, कर जोर समधन[११] सौं कही।
रुच पाय दासी रावरी[१२], सिसकला नित जाँनहु सही ॥२९३
परमोद[१३] कर ईम परसपर, ऊर मोद बाढ़ उछाह कै।
सनमाँन भूप सुबाँहु नै, जामात[१४] पुञ्जे जाहि कै।

१. जर=जलकर। २. बंधेय=मूर्ख, शत्रु। ३. वरण के लिए। ४. संहार। ५. शठ=मूर्ख। ६. दौहित्र=पुत्री का पुत्र। ७. छोड़ो। ८. निशा=रात्रि। ९. प्रसाद, दहेज। १०. वित्त—धन। ११. सम्बन्धिनी, समधिन। १२. आपकी। १३. प्रमोद—हर्ष। १४. जामाता=जवांई।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सब रात-बीती बात सुन कै, प्रात होवत महिपती ।
मिल साथ कै सब हाथ मीजत, घात रच जुत ग्रीनती[1] ॥२९४
बज जुद्ध बाँनक बंब ग्राँनक[2], ग्रत ग्रचानक ऊपटे ।
भारी भयानक रोष राँनक, थाँन-थांनक तै थटे ।
बढ़ बाट[3] - बाटन घेर घाटन, फौज ठाटन फैल कै ।
पत पार राज-कँवार परन्यौ, गहहु ताकां गैल में ॥२९५
जम-जोर सिंधु-हिलोर ज्यौं, कर सोर च्यारहु कूँनतै[4] ।
ग्रकुलाय ग्ररबर बीर बरबर, घेक धर खग धूँन तै ।
सज सैन भूप सुबाहु सुद्रसन, रोप रन जूझत रहै ।
छह दिवस बीते तीर छूटत, खग्ग खूटत वह खहै[5] ॥२९६
दलमलत कासी द्रंगपै, खलभल छतीसू खोहनी[6] ।
कलकलत रीढक[7] कमठ[8] की, मलचलत नागाधिप[9] ग्रनी ।
गह केक स्यंदन हय गयंदन, ग्रारकंदन[10] ग्राहुरे ।
ध्रुवसंध-नंदन द्वेष द्वंदन, छोर छंदन चाहुरे ॥२९७
कहि बचन करकस[11] बीरबर कस, तांन तरकस तीर कौं ।
हीय घेक धारत मिल प्रहारत, विजय हित बर बीर कौं ।
तहां जुधाजित कर तेख[12] कौं, ग्रवरेख बेर ग्रनाद कौ ।
मरजाद छोर मरोर मुछ्छन, बढत तौर विषाद कौ ॥२९८
रथ घेर लीनौ सत्रुजित, पथ संग भूप सुबाहु कौं ।
चढ खेत चत्वर[13] सूर सत्वर[14], रोक लीनौ राह कौं ।
जामात सुसर[15] घिरे जहाँ, ग्रत परचौ संकट ग्रायकैं ।
इतके न उतके तहे ग्रबतौ, पाहि देवी पाहि कैं ॥२९९
बृजराज बिरद बिचार कैं, गजराज तारचौ ग्राह सौं ।
ग्रब तौ ऊबारहु ईश्वरी, ग्रवगाह बिरद उछाह सौं ।
जप बीज-मंत्र कह्यौ जितै, भगवती ग्राई भीर कौं ।
सुद्रसनहू बोल्यौ सुसर सौं, ध्रुव[16] धरौ नैकहु धीर कौं ॥३००

१. घृणित । २. ढोल, नगाड़े । ३ वाट=मार्ग । ४. कोण । ५ उस सूनि पर । ६. ग्रक्षोहिणी । ७. पृष्ठ । ८. कच्छप, कछुग्रा । ९. सर्पराज, गजराज १०: ग्राक्रन्दन युद्ध, होहल्ला । ११. कर्कश—कठोर । १२. क्रोध । १३ ग्रांगन, चतुर्वाट । १४. शीघ्र । १५ श्वसुर । १६. निश्चय, स्थिरता ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इह सिंघ की असवार कौं, निज दरस कीजै नेम सौं।
ईह पास अंकुस लियै आई, परख आरत प्रेम सौं।
जब जुधाजित अरु सत्रुजित, देखी तऊ रननाँ दटे।
पुन कासोराजहु सुद्रसन पै, मार बाँनंन अटमटे ॥३०१
तब चंडका तरवार लै, कर कोप क्रौं-रव[1] किलक में।
जहाँ जुधाजित अरु सत्रुजित कौं, मार डारे पलक में।
कर क्रपा सुद्रसन स्याहि[2] कीनी, सहित भूप सुबाहु की।
सुन करहु देबी स्याह सबको, जोऊ सुमरै जाहु की ॥३०२
अरु सुमन बरखे इहीं अबसर, देवता सब देख कै।
जय-जयत बोले सब्द जुर कै, भक्त-भाव विसेख कै।
जय सुद्रसन पाई जहाँ, खल[3] मार कै रन-खेत कै।
कासी-नरेस सुबाहुं की, हीय भई सिद्धी हेत कैं।३०३

दोहा

समर[4] सहोदर सत्रुजित, मातामह जुत मार।
भक्त सुदर्सन भक्त की. सब बिध करचौ सुधार ॥३०४
राव[5] करै वह रंक[6] कौ, रंक करै सोई राव।
संकट मेंटे सुद्रसन, कीनौ साच कहाव ॥३०५

छंद हं-प्रखरी

मात सुदरसन संकट मेंट्यौ, भय कौं छोर अभय पद भेट्यौ।
कासी-भूप बरनना[7] कीनी, असरन-सरन भक्त-आधीनी ॥३०६
बिध हरि हर तुहिं बिरद बखाँनै, जीव तुच्छ मति हम कहा जाँनै।
दुहिता अरु जामात दुहूँ कौं, अधम उधारे मात अहूँ कौं ॥३०७
तारे हम जैसे जग तारहु, आरत भक्तन देख उधारहु।
असतुत सुनो सुबाहु ऊचारी, सुन देबी हीय भई सुखारी ॥३०८
बोली सुन देबी तिह बारा, माँग-माँग बर बचन हमारा।
सुन कै देवी बचन सुबाहू, जोर दहू कर अवसर जाहू ॥३०९

---

१. शब्द। २ साहाय्य, रक्षा। ३. दुष्ट। ४. युद्ध। ५. राजा। ६. दरिद्र।
७. वर्णना=स्तुति।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परम भक्त-हीय मोद प्रकासीय, करहु निवास सदाँ बिच कासीय।
देवी कह्यौ बसत तुव द्वारहु, दुरगा - नाँम धाँम ध्रुव धारहु ॥३१०
दीय बरदान इहै जगदंबा, ऊपज प्रतीत सुबाहु अचंबा[1]।
जग पुज्जत जाकौं जग-जननी, गत जाकी महमा अन-गननी ॥३११
सुद्रसन भेंटे चरन सुभागी, लख सिसकला चरन पुन लागी।
देवी अरज सुनहु ममदं[2] यत, कहै कहा हमरौ हीय कंपत ॥३१२
कहाँ बैठ तुम सुमरन करैं[4], ईह भव सागर पार ऊद्धरैं।
भूप कह्यौ देवी भज भावन, पुरी अजोध्या तुमरी पावन ॥३१३
अवर भूप तै भई ऊदासौ, बसहु अवध के हुय तुम बासी।
प्रजा भाग सुख लेहु प्रतीती, न्याय-रीत सौं पारहु नीती ॥३१४
दंपति प्रीत सहित सुखदायक, बसहु जाय निर्भय बर-दायक।
जननी ऊभय येक सम जाँनहु, मनोरमाँ लीलावती माँनहु ॥३१५
परै भीर[4] तौ हमही पुकारहु, तेरे सकल दरिद्र-दुख टारहु।
आठम और नवम तिथ आवै, चतुरदसी हम पुज्ज चढावै ॥३१६
आश्विन प्रथम मास अधकारी, सेवहु नित तुम रहहु सुखारी।
सुचि मधुमास[5] निसा नव सेवहु, लाभ भूप मन-बंचत लेवहु ॥३१७
अंतरध्याँन भई कह एती, सुन्यौ सुदरसन श्रवनन सेती।
सब राजा आये सुद्रसन पै, जुर धाये मंत्री जन जन पै ॥३१८
सबही कहन लगे तुम स्वाँमीं, गनहु हमै अपनै पदगामी।
अंबा-चरन-भक्त अनुरागी, भूप-सिरोमन[6] तुम बड़भागी ॥३१९
करी बालपन में कहा करनी, ता तै बस[7] भई तारन-तरनी।
कछू हमकौं ऊपदेसही कीजै, रमाँ जक्त - जननी लख रीजै[8] ॥३२०
बोले नृपत सुदरसन बाँनी, कहै कहा ईह अकथ कहाँनी।
जग के जीव हमहु कहा जानै, व्रह्माँ बिसन महेस बखानैं ॥३२१
सब ऊतपत पालन संघरनी, सेव करै सौं असरन - सरनी।
निरगुन ध्याँन-जोग मुनि नीकै, सरगुन तुमहु हमहुं सबहो कै ॥३२२

१. आश्चर्य। २. मेरी। ३. भावना से। ४. कष्ट। ५. चैत्र। ६. शिरोमणि।
७. वश। ८. रीझै—प्रसन्न हो।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

काँम-बीज-मंत्र ही जिह केरौ, उर में तिह जप मेट अँधेरौ।
प्रांजल[1] हृदै करी पद प्रीती, जातै बिषम काँमना जीती ॥३२३
दया करी तातैं जगदंबा, सेवक अपनो जाँन ससुंमा[2]।
सुद्रसन कही नृपत सब सुनी, गावत देबी कीरत गुनी ॥३२४
सबही राजा देस सिधाये, अरू सुबाहु नृप कासी आये।
सुद्रसन गयौ अवध-पुर सोई, संग लीनैं त्रीय मात सकोई ॥३२५
परजा मंत्री मिल सुख पाये, बिधवत मंगल-कलस बधाये।
राज-भवन में जाय नरेस्बर, पुन देख्यौ सभही अंतह-पुर[3] ॥३२६
लीलावती माता पग लागें, ऊभय जोर कर तिनके आगें।
मात सुनहु बिनती ईक मेरी, बिधवत बात कहत इह वेरी ॥३२७
मनोरमाँ तै ईधकी माता, करकै क्रपा कहहुं कुसलाता।
सत्रुजीत मम भ्रात सनातन, जुधाजीत विग्रह कीय जातन ॥३२८
कर बिपरीत बन्यौ मम केबी,[4] दंड दीयौ ता काँरन देबी।
सुत मैं तोर करहु सिवकाई,[5] मो पर क्रपा कीजीयै माई ॥३२९
सुद्रसन के सुन बोल सयाँना, लीलावती चित्त ललचाँना।
कहो पुत्र तै सत्य कहाँनी, धारहु धरा ईहै रजधाँनी ॥३३०
कर सर तंत राज तुम कीजै, परजा मंत्री वेख पतीजै।
जीवन मरन सुजस अपजसहू, बिधना हाथ कहा किह बसहू ॥३३१
कीय प्रनाम मातहि कर जोरी, बिनती बहुबिध करी बहोरी।
सुनि बसिष्ठ-आदक मिल मंत्री, तब सुद्रसन कीय तिलक सुतंत्री ॥३३२
श्रीदेवी ? मंदिर कर सुंदर, कमृ[6] मनहु दूसर गिर-कंदर[7]।
प्रतकाया[8] देबी रच पावन, संसक्रीया[9] स्रंगार सुहावन ॥३३३
थित रचना कर करीजु थापन, तब नृप भये विगत त्रहुं तापन।
पुर पत्तन प्रति हुकँम प्रचारा,' सिखरी मँडप बनावहु सारा ॥३३४
पूजा देवी प्रजा प्रचारहु, निगम[10]-पंथ-जुत जन निरधारहु।
रघुराजा जिम रघुवर-रीती, पूजा देबी बढ़ी प्रतीती ॥३३५

---

१ सरस, सरल, निष्कपट। २ अंगीकृत कर। ३. अन्त:पुर=रनिवास। ४ बैरी।
५ सेवकत्व। ६ कम्र=सुन्दर, कमनीय। ७ पर्वत-गुफा। ८ प्रतिकाया=मूर्ति।
९ संस्क्रिया=संस्कार। १. वेद।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

देवी-भक्ति ससक्त द्रढ़ावत, ग्रह-ग्रह ग्राम-ग्राम जस गावत।
मुनि द्वीपायन कहत महातम[1], जनमेजय प्रति ईह बृत संजम[2] ॥३३६
पुस्पकाल[3] रितु सरद प्रमाँनौं, जमद्रष्ट्रा[4] रुज[5]-कारक जानौं।
नवरात्री-वृत तामह नीकौ, जो सुखदायक है निज जीकौ ॥३३६
ईख[6] मास मधु पख[7] उजीयारा[8], क्रमपाटी[9] प्रक्रति[10] सुभकारा।
षोडस[11] हाथ रोप कै खंबा, ऊतम मंडप रचै जु श्रंबा ॥३३८
च्यार हाथ जाके बिच चौंरी[12], ऊरध येक हाथ कर श्रौंरी।
बेदी ऊतँम रूप बनावै, मंडप बंदन-माल मढ़ावै ॥३३९
चंद्रोदय[13] ऊरध कर छाया, मंगल रूप हेत महमाया।
बेद-बिधाँन जाँनबेबारे दुजन बुलाबै मंडप द्वारे ॥३४०
प्रात-काल प्रतिपदा पुनीता, पुन जल-मंजन करै प्रबीता।
समयै बित[14] सरधा[15]-जुत सूझै, पाय श्ररघ बंदन कर पूजै ॥३४१
पाँच तथाँ नव तीन एक पँह, सुमरन पाठ करावै जा सँह।
सिर बेदी धारै सिंघासन, प्रतमा देबी करै प्रकासन ॥३४२
श्रलंकार नेपथ्य[16]-श्रधारै. च्यार भुजा श्रायुध फिर च्यारै।
गदा पद्म कर संख गहाबै, पुस्पमाल ऊतँम पहरावै ॥३४३
प्रतमा कहुँ कारन नही पाई, मंत्र नवाक्षर जंत्र मढ़ाई।
ताही की पूजा श्रनुक्रम तै, करी मुर्ति की जाही क्रम तै ॥३४४
पल्लव पंच रत्न पुन पंचय, संन्यधाँन्य[17] कीजै तहाँ संचय।
हस्त नखत्र परिवाँ दिन होवैं, जानहु श्रत ऊतँम दिन जोबै ॥३४५
ऊपबासा[18] श्रथवा एकासन[19], वृत देबी हित श्रसुभन सावन।
मंगल-गाँन मनोहर मंडै, घन श्रानंद जिह ग्रेह घुमंडै ॥३४६
कन्या पूजन करै कुमाँरी, नियम-जुक्त निज-मत-श्रनुसारी।
द्वै-हायन[20] तै ऊपर देखै, नव हायन जाँनहु बय[21] नीकै ॥३४७

---

१ माहात्म्य। २ संयम। ३ बसन्तऋतु। ४ यमदंष्ट्रा। ५ रोग। ६ इष=आश्विन। ७ पक्ष। ८ शुक्ल। ९ तिथि। १० पक्षादि=प्रतिपदा, पडवा तिथि ११ सोलह। १२ चौड़ी। १३ चांदनी। १४ वित्त=धन। १५ श्रद्धा। १६ नेपथ्य=मंडप, पोशाक। १७ सप्तधान्य। १८ उपवास=निराहार व्रत। १९ एकाशन=एक समय भोजन। २१ बय=श्रवस्था।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पूजै ईक अथवा दुय पेखै, वृद्धमाँन अथवा क बिसेखै।
संख्या जाकी देत सुनाई, लखहु जाहि नीकै चित लाई ॥३४८
बरस जु जुगल कँवारी बेस, हायन त्रय त्रय-मूर्ती[1] हमेस।
कल्यानी चव[2] बरस कहीजै, पंच रोहनी[3] लहि पूजीजै ॥३४९
काली षट्-आयन[4] को कहीयै, सात बरस चंडका[5] सुनवईयै।
सांभवी[6] आठ बरस की सोऊ, कहि दुरगा नव बरस सकोऊ ॥३५०
जाँनहु सदा पूजबे जोगू, लक्षन कहत सुनौ जिह लोगू।
हीनांगी तन की नहीं होवै, कुष्ट[7] घाव-जुत अंध न को ऐ ॥३५१
बहु रोमाकुल दुष्ट बचावै, काँनो और कुरूप कहावैं।
पुस्पवती[8] रुज-सहित परेखौ, लछ्न[9]-हीन अपुज्यही लेखौ ॥३५२
कन्या च्यार बरन अधकारी, है परन्तु द्वज की हितकारी।
नव निस पूजा बनै न नीकी, हितकारी तिथ अष्टमही की ॥३५३
ता पाछै कर हवन तहाँ ही, जींमावै पुन बिप्र जहाँ ही।
दाँन दक्षना बिधवत दैकै, बहुर बिसरजन[10]–रीत बिसेखै ॥३५४
दारद-दोख मिटावन दायक, लछि धाँन धन बृद्धि लायक।
च्यार पदारथ करै चाँवना, भजै भवानी सहित भावना ॥३५५
यामे ईक ईतीहास अनूपा, भली रीत साँ सुनीयै सूपा।
मंडल पुरी अयोध्या माँही, बनक[11] सुसील जु नाम बसाँहीं ॥३५६
पुत्र बढ़े ताके परवारा[12], दारद जैसौई बढ्यौ दिवारा।
कहूँ मजूरी लावै करकै, भोजन ऊदर मिलै नहीं भरकै ॥३५७
करम करत निज धूम-अनुकूला, दारद-दोष भ्रमै मन-झूला।
बैठा सोच करत ईक बारा, द्वज आये केऊ ताके द्वारा ॥३५८
बिप्रन पूछ्यौं बनक बिख्यारी[13], निज सुत सुता तथाँ हम नारी।
धन चाहत नहीं अधिक धरोहर, भोजन चाहत लखौ उदर भर ॥३५९
बिनती करत ऊपाव बतावौ, दारद करै ईतौ निरदावौ।
जब बिप्रन ईह दयौ जनाई, वृत नव रात्री रीत बताई ॥३६०
बीजमंत्र दीनौ जित बिप्रन, महाँमोद-जुत जपहु मनो-मन।
राँवन हरी तीया रघुवर की, परी विपत लंकेसुर[14] पर कौ ॥३६१

१ त्रिमूर्त्ति। २ चार। ३ रोहिणी। ४ अयन=वर्ष। ५ चण्डिका। ६ शाम्भवी। ७ कुष्ठ। ८ पुष्पवती=रजस्वला। ९ लक्षण, चिह्न। १० विसर्जन=छोड़ने की। ११ वणिक्=बनिया। १२ परिवार। १३ विपत्तिग्रस्त। १४ लंकेश्वर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कीयौ बरत देबी किसकंधा[1], वह प्रबाहु जलनिध[2]–पुल बंधा।
जुत परवार हथ्थौ[3] खल जेही, बिजय पाय पाई बैंदेही[4] ॥३६२
बैस्य करहु तुम बरत बिधाँना, नव-रात्री होय हेर निदाँना।
जपहुं बीजमंत्रहु को जापा, पैहौ नवहौ निध ताहि प्रतापा ॥३६३
द्वज ऊपदेस दीयौ बृत देवी, सुन वह बैस्य जिहीं बिध सेबी।
जपत रह्यौ नव बछ्छर जाहू, तिह परताप दरस दीय ताहू ॥३६४
भेट्यौ संपत क्रपा भवाँनी, जाकी कथा सकल जग जाँनी।
ईह इतीहास पढै अरु गावै, बैंस सुसील ज्युहीं सुख पावै ॥३६५

दोहा

रांवन की रघुवीर पै, बिपत परी कहा बात।
किसकंधा कैसें करचौ, राँम बरत नवरात ॥३६६
देबी जैसै बर दयौ, मिल कपि–पुरी[5] मुकाँम।
पुल बाँध्यौं पाथोद[6] पै राँवन मारचौ राँम ॥३६७
बैंदेही पाई बिजय, अवध पधारे ईस।
व्यास-देव ईह बारता, बरनहु बिसवा-बीस ॥३६८
जनमेजय रुच पाय जब, बरनन लागे ब्यास।
सुनन लगे सब जन सभा, अत ऊतम ईतीहास ॥३६९

छंद भुजंगी-प्रयात

अजोध्या-पुरी राजधाँनी अनंदं, मनू-आद[7] इख्याक[8] बाँधी मृजादं[9]।
रघूराज ताही थिती[10] रीत राखी, सब ही प्रजा देत है नीत साखी[11] ॥३७०
तिहीं बंस में औतरचौ अंत त्रेता, जिहीं नाँम दसरथहू जंग-जेता।
मती सुमृती[12]पर्म धर्म महाँना, जिहीं उन्नती क्रीत (क्रीर्ति) जाँनै जहाँना ॥३७१
बड़े सूर दाँनी सोई हंस-बंसी[13], धरां धीर-धारी प्रजा-ताप-ध्वंसी[14]।
रजै राँनीयाँ केक आनंद-रासी[15], रमै सुंदरी मिंदरं[16] इंदरा[17] सी ॥३७२
करी पट्टपी[18] कौंसलाधीस[19]-कन्या, अरु कैंकई त्यौं सुमित्राहु अंन्या।
सबै प्रीत की रीत एकै समाँनी, करै एकहू सौं नहीं आँन-काँनी[20] ॥३७३

---

१ किष्किन्धा। २ जलनिधि=समुद्र। ३ मारा। ४ जनकपुत्री, जानकी। ५ वानर-नगरी=किष्किन्धा। ६ पायोधि=समुद्र। ७ मनु आदि। ८ इक्ष्वाकु। ९ मर्यादा। १० स्थिति। ११ साक्ष्य=गवाही। १२ स्मृति। १३ सूर्यवंशी। १४ दुःखनाशक। १५ राशि=समूह। १६ मन्दिर=गृह, महल। १७ इन्दिरा=लक्ष्मी। १८ पटरानी। १९ कोशल देश के राजा। २० अलगाव, पार्थक्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जिहीं बल्लभा[1] कौंसला[2] राँम जाये, अजं ईस औतार[3] कौं धार आये।
भरथं[4] जनै कैकई भारजा नै, जनै त्यौं सुमंत्रा[5] ऊभै पुत्र जानै ॥३७४
भये सेस[6] औतारहू राँम भाई, जिहीं लछ्छंन नाँम दीनौ जनाई।
लघू नाँम सत्रुघ्न[7] हु और लेखौ बढी भर्त तै प्रीत ताकी बिसेखौ ॥३७५
भये दासरथी[8] जहाँ च्यार भ्राता, गुरू-कर्म[9] लावंन्य[10] दाता सुज्ञाता।
करे वेद की रीत साँ संसकारा, पढ़े भेद बाँनावली[11] वार-पारा[12] ॥३७६
सदाँ यातु[13] मारीच औरैं सुबाहू, रिषी काँ सतावै मनौं चंद राहू।
अजोध्या पुरी चाहि गाधेय[14] आये, जिहीं बेदना दासरथं जनाये ॥३७७
क्रतू-काज में चाहियँ स्याहि-कारी, बलो राँम राँमाँनुजं[15] की बिचारी।
दहू बरि काँ भीर मैं संग दीजै, क्रपाल[16] मुनी-काज कौं सिद्ध कीजै ॥३७८
ऊभै पुत्र कौं साथ त्रसांकु-याजी[17], रिषी सौंप दीने चले होय राजी।
महाँखंड कोडंड[18] लीनैं कुमारा, लगे पंथ कौं जात गाधेय लारा ॥३७९
ईते ताड़का राखसी द्रष्ट आई, रिषी देख बोले हनौ राँम राई।
महाँबाहु ज्याँ ऐंचके बाँन मारचौ, परी पापनी प्रांन ताकौ प्रहारचौ ॥३८०
चढे द्रष्ट पै कष्टकारी नृचक्षा[19], प्रहारे रिषी जग्य के जे निपक्षा[20]।
सुबाहू महाँपातकी[21] कौं संघारचौ, महांदुष्ट मारीच कै बाँन मारचौ ॥३८१
ऊडचौ सुद्ध काँ भूल कै ऊर्द्ध ऐसै, तचै तप्त के बेग सौ तूल तैसे।
मती नीच मारीच कैं बीचिमाली[22], अपाची[23] दिसा बीच गेरचौ उछाली ॥३८२
क्रतू-कर्म गाधेय संपूर्न कीनौ, हुयौ अट्टवो राक्षसी जात हींनौ।
करी बींनती राँम गाधेय काजा, रच्यौ जग्य आरंभ बैदेह राजा ॥३८३
दिखावौ तिहीं चाहि कै जाय देसा, निहारैं तहाँ नीक नाना नरेसा।
मुनी जाँनके राँमचंद्रं मता[24] कौं, परे मैथला[25] पंथ धारैं प्रथा कौं ॥३८४
सिला होय सोई परो मग्ग सारो, अहिल्या गोवतंन[26] नारी ऊधारो।
प्रभू मैथला मग्ग आगै पहूँचे, अटारी लखी द्रंग[27] में स्रंग[28] ऊँचे ॥३८५

---

१ प्रिया, स्त्री। २ कौशल्या। ३ अवतार। ४ भरत। ५ सुमित्रा। ६ शेष। ७ शत्रुघ्न। ८ दाशरथि = दशरथ के पुत्र। ९ गुरुकर्म = विद्या। १० लावण्य = सुन्दर, सलोने। ११ धनुर्वेद। १२ पारावार। १३ यातुधान = राक्षस। १४ गाधिपुत्र, विश्वामित्र। १५ रामानुज = लक्ष्मण। १६ कृपालु। १७ विश्वामित्र। १८ कोदण्ड = धनुष। १९ राक्षस। २० विपक्षी = विरोधी, शत्रु। २१ पापी, दुष्ट। २२ नदी। २३ अवाची दक्षिण। २४ इच्छा। २५ मार्ग। २६ गौतम। २७ दुर्ग। २८ शृङ्ग।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बंधी घाँम-घाँमं पताका[1] बिराजै, बड़े ग्राँनकं थानकं ध्वाँन[2] बाजैं।
गिरा[3] कोकला[4] गायनी[5] गीत गावैं, निकाई जुते बारनारी[6] नचावैं ॥३८६
गहै संग गाधेय चाले गली कौं, थितं जिग्य बैदेह[7] राच्यौ थलो कौ।
मुनीराजहू संग लीनै कुमारा, पती-ग्रौध कै जोध[8] जेता पवाँरा ॥३८७
बडे देस के देस के राजबंसी, परामंच ग्रारूढ बैठे प्रसंसी।
मुनीराज ग्राराध के दीघ[9]-मंचा, ऊभै बीरहू साथ बैठे ऊदचा[10] ॥३८८
प्रतज्ञा करी चाँप[11] की सूलपाँनी[12], सभा बीच राजाँन थप्पौ सु ग्राँनी।
बली तिष्ट कै लस्तकं मुष्ट बंधै नमावैं ग्रधौ[13] ग्रट्टनीकौ लिमंधैं ॥३८९
चटठै[14] ग्रहै ऐंच[15] सिंजा[16] चढ़ावैं, पती भूम सोई सुता भोर पावैं।
खितीनाथ[17] बैदेह नें मर्म खोल्यौ, बढे ग्रागन्या[18] ले तहाँ सूत बोल्यौ ॥३९०
रजा पाय ऊठे जबै राज राँनें, तटी बंध क स्रौनि[19] के संध ताँनें।
भुजा-डंड कोडंड काँ जाय भेंटै, मरोरैं गहै मुष्का माँन मेंटै ॥३९१
खिसैंके हसैंके त्रसै चक्र खावैं, फसैं ग्रंगुलीहू ग्रंगुष्टा फसावैं।
हलै नां चलै नां घलै हाथही कै, पुलेके डुलैके रुलै पाथही कै ॥३९२
खुलै सीस[20] ऊस्नीक[21] कोटीर[22] खूटैं, चले केस-कक्षा[23] कहूँ बंध छूटैं।
कटी-चिंघ[24] लूटैं सटी[25] संध केते, तुटे हार मुक्ता-वलीमाल तेते ॥३९३
हसैं देख कै एक को एक हांसी, तजै तेख के तालतंडै[26] तमासी[27]।
रहे सेष[28] कै लेख नां राव राजा, सही टेक कै सूत भाख्यौ समाजा ॥३९४
हुटे राजबंसी भये ग्रंस-हीता[29], सजै चाहि कै ब्याह काँ कौंन सीता।
कावारी रही मैथलाधीस-कन्या, निछत्रो[30] भई भूँम एती निधंन्या ॥३९५
नमावैं सुनें बैन काँ नैन नीचे, खरौ होय केऊ नही मुछ्छ खींचै।
सुने सूत के बोल गाधेय सोऊ, दई नैन की सैंन[31] पै बीर दोऊ ॥३९६

---

१ ध्वजा। २ ध्वान = ध्वनि। ३ वाणी, स्वर। ४ कोकिला = कोयल। ५ गायिनी = गाने वाली। ६ बारनारी = वेश्या। ७ विदेह = जनक। ८ योद्धा। ९ दीर्घ = बड़े। १० उच्च = ऊंचे, ऊपर। ११ चाप = धनुष। १२ शूलपाणि = शिव। १३ ग्रधः = नीचे। १४ चढावें। १५ खींचकर। १६ प्रत्यंचा = डोरी। १७ क्षितिनाथ = भूमिपति। १८ ग्राज्ञा। १९ श्रोणी = कमर। २० शीर्ष = शिर। २१ उष्णीष = पघडी। २२ मुकुट। २३ जूड़ा। २४ कमरबन्ध। २५ वस्त्र। २६ ताली देकर नाचने वाले। २७ तमाशा देखने वाले। २८ बचे हुए। २९ हीन रहित। ३० निःक्षत्रिय, क्षत्रियरहित। ३१ संकेत।

CC-0. RORI. Digitized by Srj Muthulakshmi Research Academy

ऊठे राम बिक्रांत बाहु-अंजाँना[1], दीयै चाँप की ओर कां सिघड़ोनों।
गहै लेस्तकं[2] भोग को मुष्ट[3] गाढी, चिलां ऐंच कै सिंजनी[4] सीस चाढी ॥३९७
तुट्यौ सिभु-कोडंड भौं तीन टुक्के, धंरां धुज्जके सेस के सीस धुक्के।
परचौ जोर सौं सोर को घोर पूरो, हल्यौ ठौर सां सिंधु सांतूं हिलोरो ॥३९८
मुरे दिक्करी[5] चिक्करैं चींस मारें, अटें ध्यांन कै ईस नैंना उघारैं।
रहीं गाँन रूक्कें चुकी ताले रंभा, उठे चौंक सूत्रांन[6] बाढ्यौ अचंभो ॥३९९
हुलैं सैल के श्रंग लीनों दरारैं, परचौ लंक कौ नाथ बांहे पसारैं।
देसूँ—आंननं[7] म्लांन ह्वै लागं धूरौं[8], इहीं बैर कौ आदे ऊगो अंकूरौं ॥४००
खिसे और राजांन कें पांनं खूटें, ऊठैं मंच तैं खंच चालें अकूटें।
सबै धिक्कंती[9] निक्कंती[10] कैं सिधांयें, बिकुंधांन[11] राघो[12] करीरें[13] बधांयें ॥४०१
दसूं हीं दिसा सुंदरों पुस्प डारैं, अलीं रांनीयाँ सीस मुक्ता ऊंवारैं।
करैं सब्द जैं लुब्ध[14] आनंदकारी, बंरख्खे अवंग्राह मैं जांन वारी ॥४०२
प्रीया पांन लैंके सिया पुस्पमाला, बैंली रांम के कंठ डारी बिसाला।
नमै भूपं गाधेय कें पांय लांगौं, रिषी-रांज लाये भलें संग रांघौं ॥४०३
प्रतज्ञा रहीं मोरें तोही पसावं, भली रीत जान्यौं क्रपां चीत-भावं।
पत्तीं-औधं कौं कुंकमं-लेख-पत्री[15], मुंनीरांज सौं मंत्र लैं बोल मंत्री ॥४०४
लिखाई सोई दूत दीनी सुं लीनी, भलो रीत बातैं कहीं स्नेह-भीनी।
बड़े बांज[16] कौं रांज देहौं बधांई, पिंनाकी धंनुतोरि कै जीत पांई ॥४०५
प्रतज्ञा रही मोर कीनौं पवारी, सुनेही सीयां ब्याह कौ तत्व सारौं।
कनीयातं है ग्रेह मो तीन कंन्या, वही रावरे पुत्र कौं देह अंन्या ॥४०६
क्रतू-कांज में रांवरें द्वैं कुमारा, इहीं कारनैं थंभ रखैं अवांरा।
बने दोयं कें संग सज्जैं बरातीं, पधारें कहे देहगे एंह पाती[17] ॥४०७
सतानंद कौं पूंछ बंदेह सारी, बिंदा दूत कीनौं सुबेला[18] बिचारी।
बिदा दूत ह्वैकें चलौं औध बाटी, घनै बेंग सौं लांघ कै नाल घांटी ॥४०८

१ आजानबाहु = घुटनों तक भुजाओं वाले। २ धनुष की मुट्ठी का भाग। ३ मुष्टि = मुट्ठी। ४ प्रत्यंचा, डोरी। ५ दिग्गज, दिक्पाल। ६ सौत्रामणि इंद्र, देव। ७ दशानन = रावण। ८ धूलि = मिट्टी। ९ धिक्कृति = धिक्कार। १० निष्कृति = असफल, बदला। ११ हर्षध्वनि। १२ राघव = राम। १३ बाँस, कलशी। १४ लुब्ध = लुभावने। १५ आमंत्रणपत्रिका। १६ शीघ्र। १७ पत्री। १८ सुबेला = शुभमुहूर्त।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अजोध्यापुरी जाय देखी अनूंपं, भजै दासरथं प्रजा श्रेष्ट भूपं।
गयौ राज के द्वार पै दूत ज्ञाता, समं जाँन राजाँन ऊधर्स[1] साता ॥४०९
सबै रीत साँ राँम दीनौं संदेसा, बधाई दई भेज दंडी बिसेसा।
मुखी मैथलाधीस कौ दूत मैं हूँ, पती-औध अज्ञा मिलै दर्स पैहूँ ॥४१०
सुन्यौ राँम के नाँम कौं भूप ख्याँनं, थितं आप बोलाय लीने सुथाँनं।
करी भेट नौछावरं भूप फेरी, बधाई दई राँम की ताहि बेरी ॥४११
द्रुतं मैथलाधीस को पत्र दीनौ, ललाँमं[2] लखै भूपनै हात लीनौ।
बढ़े भूप औछाह[3] के ताहि बाँच्यौ, हृदं मैथलाधीस सौं नेह राच्यौ ॥४१२
सपुत्रं[4] सुनी राँम की कीत सारी, बह्यौ नैन साँ ऐंन[5] आनंद-वारी।
बृती बेस सुद्धांत[6] भेजी बधाई, सुनी राँम की मात सोभा सवाई ॥४१३
महाँमोद साँ बोल कै राज-मंत्री, पढ़ाई सबै मैथलाधीस पत्री।
प्रभा औध के ईस की याँ प्रकासी, रजै पूर्नमाँ[7] चंद ज्यौं तोय-रासी[8] ॥४१४
बिजोगी सुतं राँम भागौ[9] बखेरौ, ऊदै[10] भाँन ज्यौं नैन त्याग्यौ अँधेरौ।
सुथाँनं तबै दूत डेरा सिधायौ, छितीनाथ कौ ग्रेह आनंद छायौ ॥४१५
तिहीं जाँन[11] की हौन लागी तयारी, सजी हैदलं[12] पैदलं सैन सारी।
त्रसै सारका तूर[13] बोले त्रहक्का, ढमंकै बड़ी नौबतै बाज ढ़क्का[14] ॥४१६
फबै फील[15] पं ढ़ोल नेजा[16] फरक्कै, धुजा औ पताका मिलैं व्यौम[17] ढक्कै।
बने दुल्लहा भर्थ[18] सत्रुघ्न वेसा, निकासी करी जाँन की याँ नरेसा ॥४१७
गली मैथली भूप बाढ्यौ सुगर्बा, सजै बाहु दंतेय[19] मानों सुपर्वा[20]।
पिले दासरथी बराती प्रयाँनौं, मिले ऊफल्ले सात साँमंद्र माँनौ ॥४१८
मँड़े मग्ग में लग्ग केते मुकाँमा, धमंके धरा धूज पाताल धाँमाँ।
पती-औधको मैथला द्रंग[21] पूगौ, ऊदै-अद्र[22] पै जाँन कै भाँन ऊगौ ॥४१९
ईतं भूप बैदेह आयौ अगौंनी, छिती तोयधारा मनौ बाढ छोनौ[23]।
अजोध्यापती साज आगंतु[24] आये, धकै चाल कै लोग ग्राँमीन धाये ॥४२०

---

१ उद्धर्ष=अधिक हर्ष। २ ललाम=सुन्दर। ३ उत्साह। ४ सुपुत्र=सपूत। ५ कीर्ति। ६ रनिवास। ७ पूर्णिमा। ८ समुद्र। ९ भाग्य। १० उदय। ११ बारात। १२ हयदल=अश्वसमूह। १३ तूर्य=शहनाई। १४ ढोल, डमरु। १५ हाथी। १६ निशान, ध्वजा। १७ आकाश। १८ भरत। १९ इन्द्र, ऐरावत। २० देव। २१ नगर। २२ उदयाद्रि, उदयाचल। २३ क्षोणी=पृथ्वी। २४ आगन्तुक=अतिथि, मेहमान।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुपंथा[१] दुबाजू[२] सपेखं सवारी, पुरी मैथला जाँन बाँहै पसारी।
ऊभै ओर तै भेंट काजै ऊँमाहे[३], ऊभै ओर हूतं उभै भूप आये ॥४२१

पहै बाँह सौ पंचसाखा[४] पलेटै, भलो भांत सौं अंक[५] तै अंक भेंटै।
कथा पूँछ कै सूचकं[६] क्षेमकारी, ऊभै भूप नौंछावरैं हूँ ऊतारी ॥४२२

ऊभै पुत्र गाधेय कै संग आये, पितू औध-के-ईस के लाग पाये।
ऊभै पुत्र देखे नृपं आस्य[७] ओरा, चितै पूनेमा-चंद जैसे चकोरा ॥४२३

लला बोलकै बोल छाती लगाये, लुट्यौ द्रव्य ज्यौं द्रम्य[८] के हाथ लाये।
नरेन्दं भलो भाँत भेंटे मुनिंद्रं, महामोद के बंद पादारबिंद्रं[९] ॥४२४

कह्यौ अंजुली[१०] जोर कै सिद्ध काजा, रिषी-राज ही लाज बैदेह-राजा।
तुठ्यौ ईस-कोडंड कारून्य[११] तेरी, क्रतु-काज बाढ़ी प्रभा रांम केरी ॥४२५

मुनीराज बैदेह सौं नेह मंड्यौ, खत्रीआँन कौ जाँन कै माँन खंड्यौ।
रिखी बाँन ऐसी सुनी दासरथं, सुनौ पुन्य है रावरौ पुत्र सथं ॥४२६

महाँलक्ष्मी मैथली[१२] जोग-माया, रँमाँनाथ औतार है रांम-राया।
जुरौ दंपती[१३] जाहि तै चाहि जोरी, महाबाहु जाँनी कही सत्य मोरी ॥४२७

ईहै बोल गाधेय दीनी असीसै, तितै चाल आये सवारी तसी से।
दिवाये पती-औध कै बाग डेरा, घनी रीत औछाह कीनौ घनेरा ॥४२८

बराती केऊ आय प्रासाद[१४]बीचै, निरे अैन[१५]का केन[१६]का छाय नीचै।
पसारी कहूँ ऐच कै कंड-पट्टी,[१७] ऊरधं तनी बीच ऊल्लोच[१८] अट्टी ॥४२९

दुकूलं दरी रेसमी के दुलीचा[१९], बिछे रल्लकं पल्लक[२०] तल्प[२१] बीचा।
बने केक बेत्रासनं[२२] बेस बाँना, तने रेसमी डोर कै जोर ताँना ॥४३०

जथाँ-जोग के आसनं दीब जाँनी, धनो बिछ्रुरी[२३] आद नीकं धराँनी।
निरे निर्मलं नीर-बंधे निपाँना[२४], थटे स्वच्छ आधार कं वृच्छ-थाँना ॥४३१

बसाई सुथाँनं अनूंपं बराता, हले सोल लै हेत सौं जोर हाथा।
पधारे तबै मैथलाधीस पौरी, करै व्याह को चाहि च्यारूँ किसोरी ॥०३२

---

१ मार्ग, सड़क। २ दोनों ओर। ३ उमङ्ग = उत्साह। ४ पञ्चशाख = हाथ। ५ छाती।
६ सूचक, चिह्न। ७ आस्य = मुख। ८ द्रव्यी = धनी। ९ पादारविन्द = चरणकमल।
१० अञ्जलि = कर। ११ कारुण्य = दयालुता। १२ जानकी। १३ पति-पत्नी।
१४ राजमहल। १५ अयन = स्थान। १६ तम्बू। १७ कनात। १८ चांदनी।
१९ गलीचा। २० पल्यंक = पलङ्ग। २१ बिछायत। २२ बेंत के आसन। २३ बाजोटी।
२४ निपान = कुण्ड, प्याऊ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुरोधा[1] सतानंद मंत्री प्रवीना, कृपा-पातहू[2] एकठे भूप कीना।
सुता मोर च्याहू चहूँ दासरथी, पुजैहौं सबै जायकैं लग्न-पती[3] ॥४३३
जुरे बिप्र कै बेदोये[4] बृंद जोसी, चितै कै छतै चाह आयाचितोसी[5]।
सीयाराम कै नाम कैं लेख सौंनो, त्युहीं ऊर्मला[6] लछनं नाम जाँनो ॥४३४
कुसंध्वज्ज-भ्राता लघु मोर कंन्या, ईहु भर्थ कौं माँड़वी[7] देहु अंन्या।
स्रुतीकीरती[8] व्याह सत्रुघ्न संघा, पिछाँनो भलो सोत लेखौ प्रसंगा ॥४३५
कह्यौ भूप त्यूहीं सतानंद कीनौ, लिखै कुँकमी-पत्रिका तंत्र लीनौ।
समालंभनं[9] साथ साँमान सज्जे, जरीतार पाटंबरं[10] रंम्य रज्जे ॥४३६
अलंकार चाँमीकरं[11] रत्न आला[12], मनी-गूँफ मुक्ता-लता पुस्पमाला।
धूरे स्वर्न दुबर्न[13] नीके घनेरा, करे त्यार पुंगीफलं[14] नालकेरा[15] ॥४३७
दुकूलं[16] जरी झूल कै प्रष्ट[17]डारे, सजे बाज[18] मातंग[19]आभर्न[20]सारे।
बड़े थार औछार मेवा मिठाई, लपे लाजनं[21] चूर्न औबर्न लाई ॥४३८
सतानंद चाले सबै लै समाजा, बजे दुंदभी ढोल आनंद-बाजा।
नचै गीत गावै सखी बारनारी, थितं सीस लोनं-घने-स्वर्न थारी ॥४३९
बढ़े राज के द्वार बाजार बाटी[22], पुरोधा प्रवीनूँ सबै बेद-पाटी[23]।
ललामं गये पत्तनं पार लंघे, ऊछाहं जुतै जांन डेरा ऊमंगे ॥४४०
धुरा[24]के त्वरा[25]चाल जंघाल[26] धाये, जथा दासरथं अमात्यं[27]जनाये।
समालंभनं लेय साथे समाँता, पुरोधा सतानंद आवे प्रधाँना ॥४४१

दोहा

मिल मंत्री बासष्ठ मिल, बाँमदेव जाबाल।
मुनी पुन विस्वामित्र मिल, भाखी कथा भुवाल[28] ॥४४२
जनकराज जामात कौं, करित तिलक-सतकार।
सतानंद प्रोहित सचिव[29], आवत राज ऊदार ॥४४३
जब राजा वासिष्ठ जुत, मंत्री आद मिलाय।
कह्यौ लेहु सतकार कर, बिध-वत वेद बुलाय ॥४४४

---

१ पुरोहित। २ कृपापात्र। ३ पत्री। ४ वैदिक। ५ नेगदार। ६ उर्मिला। ७ माण्डवी। ८ श्रुतकीर्ति। ९ समारम्भण = तिलक। १० रेशमीवस्त्र। ११ स्वर्ण। १२ श्रेष्ठ। १३ चांदी। १४ सुपारी। १५ नारियल। १६ दुपट्टे। १७ पृष्ठ = पीठ। १८ वाजि = घोड़े। १९ हाथी। २० आभरण = गहने। २१ लाजा = चांवल। २२ वाट = मार्ग। २३ पाठी। २४ आगे। २५ जल्दी। २६ हलकारे। २७ मंत्री। २८ भूपाल। २९ मंत्री।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

द्वज गुरू प्रोहित हुकम दिय, कीय मिल सचवन कार।
च्यारहु दुलहा ग्रेह छिव[1], बैठाये दरबार ॥४४५
जाँनी माँढो प्रीत-जुत, मिले परसपर मोद।
लेख-लग्न सतकार लीय, बिधवत बेद बिनोद ॥४४६
सतानंद सनमान कर, मंत्रिन कर सनमाँन।
नेगी बिप्रन आद निज, दीय वर अगनत[2] दाँन ॥४४७
सतानंद बासष्ट सुभ, दिवस महूरत[3] देख।
कीय निसचय भाँमरिकरन,[4] बेला आद बिसेख ॥४४८
सतानंद लै सीख कौं, गये जनासय[5] ग्रेह।
दुहु दिस बाजै दुंदभी, उछ्छव व्याह अछेह ॥४४९

छंद नाराच

बसिष्ट बाँमदेव बेद भाव काँ बिचारकै।
चढ़ाय बींद[6] चीकसाँ चढ़ाय तेल चारुकै।
गहक्क गेय गायनी व्रहक्क डक्क त्रंबका।
मृदंग अंक मडकै ढमक्क सारका ढका ॥४५०
नहाय लाय नीर के मिलाय यक्ष कर्दमं[7]।
अँगोच पौंच ऊतमं कराय कै परोक्रमं।
जनाय चक्रजीवकं[8] बनायकै बिनायकं[9]।
मनाय माय मोद सौं सिवाय देव साहिकं ॥४५१
बसष्ट बाँमदेव आद पुज्य कै पुरोहितं।
असीस लै नमाय सीस बिप्र दाँन दै बितं।
कनेष्ट[10] जेष्ट[11] बै किसोर नंद औधनाथ के।
कला चडोर कंकना[12] सुधार कै सुहात के ॥४५२
जराय मौर[13] जोर कै ऊतार वार आरती।
बधाय स्वस्ति-बाचनं ऊचार कै अनारती[14]।
चले ऊमंग रामचंद्र तीन भ्रात संजुतं।
पदांबुजं नमे पिता सुधार भेट संम्मतं ॥४५३

१ छवि, सुन्दर। २ अपरिणत। ३ मुहूर्त्त। ४ भ्रमरीनख = विवाह। ५ जनाश्रय = जनवासा, मण्डप। ६ वर, दूल्हा। ७ छारछबीला आदि सुगन्धित वस्तुएं, धूप। ८ राजकुमारों। ९ गणपति। १० कनिष्ठ = छोटा। ११ ज्येष्ठ = बड़ा। १२ कंकणडोरा। १३ मोड़, मुकुट। १४ निरन्तर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बरांग[१] सूंघ बारबार लाय अंक नंद कौं।
अनंद पाय औधपं चितं चकोर चंद कौं।
बिलोक च्यार बाँधवं दुती-निकेत[२] दुल्लहा।
पिता प्रसंग पेम सौं ऊमग मोद उल्लहा ॥४५४
ठई सु ठौर-ठौर पै तई बरात त्यारीयें।
सहेत भूप सथ्थ कै अनूँप आसवारीयें।
सतंभ[३] बंध छोरकै बिलंभ कै महाबतं।
कपोल कुंभ बात कुंभ रंग हस्त[४]-संजुतं ॥४५५
रचाय रेख नागरक्त[५] आल[६] कौर-बिंदु की।
जंगाल घोर जत्र पै बिचत्र चित्र बिंदुकी।
बरांग स्याँम बीच पै सुरंग पीत सोहनी।
मरीच[७] भाँन मान अभ्र संघ ज्यौं अरोहनी ॥४५६
ऊछाल-दंत[८] ऊजरे जराव बंगरी जरी।
सँवार तार सोवनी[९] सुधार मंड कै सिरी[१०]।
सरीर रंज मंज संझ अंजन गिरंद से।
असीस बोल ऊचचकै[११] कसीस बंधने[१२] कसे ॥४५७
ऊरभ्र[१३] प्रष्ट अंबरं[१४] लसंत पीत लालरी।
जरी सुतंत[१५]जालका[१६]झुलाय रत्न-झालरी[१७]।
बिचत्र अंब-वारीयें[१८] हवंद्द चित्र[१९] हेम[२०] के।
प्रकास-पुंज्ज पेखीयें खुले निसाँन खेमके ॥४५८
मयंद[२१] मंद मंद मिश्र मंजु जात के मृगा[२२]।
दलं दलंद कालदेय[२३] ध्वांन कै धगा-धगा।
प्रभिन्न[२४]बाल पोत[२५]केक[२६]वक्क कलभ[२७] बेसके।
ऊताल चाल उग्र के दंताल[२८] देस-देस के ॥४५९

---

१ वराङ्ग=शिर। २ द्युतिनिकेत=शोभा के धाम, अतिसुन्दर। ३ स्तम्भ=खम्मा। ४ शुण्डा, सूंड। ५ सिन्दूर। ६ हरताल। ७ मरीचि=किरण। ८ ऊंचे दांत। ९ सोवणी। १० श्री=शोभा, श्रीचिह्न। ११ उच्चकै=ऊंचे। १२ शीर्षबंध। १३ बनात, उरपर्यन्त। १४ वस्त्र। १५ सुतन्तु=तागे। १६ जालिका=जाली। १७ झल्लरी। १८ अम्बाडी। १९ हवदा। २० सोना, स्वर्ण। २१ मातङ्ग=हाथी। २२ पशु। २३ मृत्युप्रद। २४ विचित्र। २५ बच्चा। २६ मयूर=मोर। २७ कलभ= हाथी का बच्चा। २८ दन्ती=हाथी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सिलैट स्यांम सिघली गड़ा चिड़ा मुरंग के।
बटोल मल्लवार के मतंगहू मृघांग के।
समंदहू समीप के मदंध मंदरास के।
प्रचंड पिंड पूरबी घनासरी धरासुके ॥४६०

खतग बिप्र खत्रीयं बयस्य सुद्र बर्न के।
कलाप्क[1] बंध कंध सौं करीन मूल कर्न[2] के।
बिसास बप्प बोलकै कुलाँट अप्प लै कपं।
कपोल कुँभ थप्पकै हले सु बैठ हस्तपं ॥४६१

बिछोर वार बंध कै सुसैल सार[3]-श्रंखलां।
ऊतंग[4] श्रंग ऊठकै चले मनौ हिमांचलं।
धमंक घोर घंट की झमंक अंक झल्लरा।
खनक चंद्र-अंदुकं[5] धमंक पाय कै धरा ॥४६२

डमक डाक देत पै चमंक आप छाँह कौं।
ससंक[6] जात अंकुसं रमंक निठ[7] राह कौं।
भरंत अट्ट भटीयं झरंत डाँन निझरं[8]।
भनंक पंख भ्रामरं झरंत भीर सम्भरं ॥४६३

लक्ष[9] ईख[10] मल्लकं[11] खड्ग[12] रूप खंडनं[13]।
चरंन गोल लोलचाल[14] मंदहाल[15] मंडनं।
गुलाब फूल गेंद से ललाँम कंज-लोचनं[16]।
करंन चारु[17] कंप्र[18] साग-पत्र से सुरोचनं ॥४६४

अनूप राज-बाझ[19] आद हेर भूप हाजरी।
घुमंड साँमनी[20] घटा ऊमंड जाँन ऊल्लरी।
अँनंद कौं ऊपायकै नरंद्र पाय सासनं[21]।
सत्रुघ्न भर्थ लछ्नं अरोह[22] राज-आसनं ॥४६५

चढ़े गजिंद्र रामचंद्र स्यांम रूप सुंदरं।
मुँनिंद्र-बिन्द्र[23] मेल कै अरोह औध इंदरं[24]।

---

१ कलापक=कलापा। २ कर्न=कान। ३ लोहा। ४ उत्तुङ्ग=ऊँचे। ५ सोने की सांकल। ६ भयभीत। ७ कठिनाई से। ८ निर्झर=झरना। ९ पलकदंता। १० इक्षु=सांठा। ११ दांत। १२ खड्गवता। १३ मुमलवता। १४ तेज चलने वाला १५ धीरे चलने वाला। १६ कमल के समान नेत्र। १७ सुन्दर। १८ कम्र=कोमल। १९ राजा की सवारी के योग्य। २० श्रावणी। २१ शासन=आज्ञा। २२ आरोह=चढ़कर। २३ वृन्द। २४ अवधेन्द्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुभट्ट ठट्ट संजुरे गरट्ट मंजु गात के।
सुहीद[1] फूल केसरं सजे बरात साथ के ॥४६६
तुरंग तंग ताँन कै सुरंग रंग सो सनी।
हरी-ऊरभ्र रोहितं[2] सुबर्न तारहू सनी।
पिसंग[3] ऐत[4] पीत के जराव जुक्त जीन तै।
ऊमंग अश्ववारहू[5] अपार त्यार ह्वै ईतै ॥४६७
कुसा[6] कसीस क्लग[7] के उदंग आव जाव कै।
प्रचंड मंड पिंड के बयंड बेग बायु कै।
कुरंग[8] डाँन कूँदते उड़ाँन लै छिकै अटा।
ऊलट्ट औ पलट्ट आद बाद कैं नटा-बटा[9] ॥४६८
लसै अयाल लाल माल जाल ग्रंथनीं जुटी।
फलंग फेर फाल में सनीं गुलाल की मुठी।
बिसाल भाल पुच्छ बाल रोंम-गुच्छ से रंजैं।
धरैं सुचाल धोरतं[10] धरा पताल लौं धुजैं ॥४६९
पहैं न थाह पाँनपैं ऊछाहैं सौं बहैं ऊड़ीं।
लहै सुराह लाह कैं गहै सुडोर ज्यौं गुड़ी[11]।
बजंत जेम बाँसुरी रवंत प्रोथ-रंधरं।
करंभ फाँक केतकी कबाँन जाँन कंधरं[12] ॥४७०
फिराव चक्र ज्यों फिरैं बलोत सूत्र-बेष्टनं।
धुरा सु पंच धारहू त्वरा तुखार तिष्टनं।
बिसार[13] धार अार ज्यौं गहंत राह गाह कै।
घलंत वार घेर में चलंत चित्त चाह कैं ॥४७१
करंत रोम कोमलं तुला[14] सरोज-पात[15] कै।
मंडूक[16] नैन टिटभं[17] गरूर पूर गात के।
बिसाल बत्म[18] बिष्टरं नली सुघाट निस्तुला[19]।
भिरंत सुंम्म भुंम्म सौं झरंत दुंग की झली ॥४७२

---

१ कसैला। २ लाल। ३ पिशङ्ग = नारङ्गी रङ्ग। ४ मिश्रित। ५ अश्वारोही। ६ कुश। ७ वल्ग = लगाम। ८ हरिण। ९ नटपुत्र। १ धोरत चाल। ११ पतंग। १२ ग्रीवा, गर्दन। १३ मछली। १४ समान। १५ कमलपत्र। १६ मेंढक। १७ टिट्टिभ = टींटोडी। १८ वत्र्म, वक्ष = मार्ग, छाती। १९ गोल।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिसुद्ध सुंम्म लुंम्म बाल आँनन[1] ह्रिदावली।
सुजोज्ञ-दाय सबंदा मनोज्ञ[2] अष्ट मंगलो।
सरीर श्वेत सोभनं कितेक अश्व कर्करं।
ललाँम पीत पिंड लाल पिंगलं[3] परापरं ॥४७३

सुपेत पिंग संग कै खुंगाह रंग खैंगहू[4]।
सिराह दुग्ध-बर्न[5] स्याँम रंग के सुंगाहहू।
कीयाह लाल बर्न के निकाय नील नीलकं।
अनाह बर्न[6] के अपूह है हरी जु पीलकं ॥४७४

सपेत बाल हस्तकंध[7] बाल के सुपेत कै।
अपूह अंग ताहि कौ बुलाह रंग केब कै।
बलक्ष [जास][8]बिग्रहं[9] मुकाँम जंघ मेचकं[10]।
ऊराह अंग के अनूंप अश्वहू असेसकं[11] ॥४७५

बिचार संकुकर्न[12] बर्न केसरूह कंक है।
सपेत लाल मिस्रतं[13] पिछाँन पाटलं पहै।
अतल्प[14] पीत अंग के बिसेस स्याँम बक्षनं।
कुलाह रंग घोटकं[15] लखाय जाहि लक्षनं ॥४७६

अनाह लाल पीत के कहंत ऊक्कनाहकं।
निगर्न[16] कर्न[17]स्याँम बर्न[18]लाल एह लायकं।
सरीर रक्त-संधकं[19] सुचंग रंग सोनकं।
हरीत[20] पीत हालकं गहंत पौंन गौंनकं ॥४७७

सपेत काच बर्न[21] सो पिछाँन पिंगुलं पखै।
हलाहलं सुरंग हेर एत रंग के अखै।
कंबोज देस कासमीर बापु[22] के बना पुजा।
बियंड[23] केक बाहलीक पारसीक नीपजा ॥४७८

प्रचंड गंग-पार के बिसाल अंग बंग के।
मुरंड मारवार के सुबीर सिंधु संग के।

---

१ मुख। २ सुन्दर। ३ पीला। ४ घोड़ा। ५ स्वेत। ६ मू०प्र० बरंन। ७ अगला पैर। ८ मू० प्र० अस्पष्ट है। ९ शरीर। १० स्याम। ११ अनेक। १२ गधा। १३ मिश्रित। १४ अत्यल्प = किंचित्। १५ घोड़ा। १६ गरदन। १७ कान। १८ वर्ण। १९ नाल-कमल। २० हरा। २१ स्वेत। २२ बपु = शरीर। २३ घोड़ा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खतंग खेत खाखरं त्रगर्तहू तिलंग के।
केकाँन साल कछ्छ के फबंत के फिरंग के ॥४७९
हरचाँन कंधहार के ड़हाल ऊंड़ द्रावरे।
जुरे सु जन्य जिन्नतीं उछाह साँ ऊतावरे।
धमंक डंक ध्वाँनकं अनेक आँनकं[1] अगं।
तनंक तंत्र[2] ताँनकं झनक सिंजतं[3] झगं ॥४८०
महाँन मंगलीक गाँन ताँन की तरग में।
रचंत रास बारनार[4] रीज[5] राग रंग में।
चली बरात रामचन्द्र मेल आत मंडपं।
मतंग बैठ मोद साँ ऊमँग संग ओघपं[6] ॥४८१
अरोह कै बिमाँन आसमाँन देव आयकै।
अवाज कै अनंद बाज दुंदभी[7] बजाय कै।
गिरा[8]सवाँर[9] गायनी ऊचार गाँन अछ्छरी[10]।
सीया विवाह संचरी चवंत राँम चर्चरी[11] ॥४८२
बरात के ऊतार साँ पधार नग्र गोपुर[12]।
बजार की बहार चारु[13] वार पार चत्वरं[14]।
बिसाल लाल लीलमं बँधी सुमाल बंधनं।
कपूर कासमीर कीज चीज घोर चंदनं ॥४८३
सुरंग येत[15] पीतनं निकेत[16] पै निकेतनं[17]।
जरी सु तार जोर पौर पौर के प्रबेसनं[18]।
कपाट[19] अाट[20]ठाट के सुघाट तोरनं[21] सबै।
पिसंग[22] रंग पीत फूल मालका सुही[23] फबै ॥४८४
बिनर्द[24] पै बिनर्द साल जंभिया घनी सनी।
पवित्र चित्र पुत्तरी ठदंत के बनी ठनी।
अलंद[25]हु अनूप ओप अग्र में ऊदंबरं[26]।
करै बिचित्र कोरनी सवार कै सतंभरं[27] ॥४८५

---

१ नगाड़े। २ तांत्रिक। ३ आभूषणों का बाजा। ४ वेश्या। ५ रीझ=लीन। ६ राजा दशरथ। ७ नगाड़े। ८ बोली=स्वर। ९ संभालकर। १० अप्सरा। ११ स्तुति। १२ द्वार। १३ सुंदर=श्रेष्ठ। १४ चौक। १५ मिश्रित। १६ घर। १७ ध्वजा। १८ प्रवेश-द्वार। १९ किवाड। २० अट्ट=दालान। २१ मुख्य-द्वार। २२ नारंगी रंग। २३ लाल। २४ चौकी। २५ बैठक। २६ देहली। २७ स्तंभ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुनीत धर्म पर्महू समान हर्म[1] सुंदरं।
अखर्ब-खर्ब[2] ऊद्धरे मनौ सुपर्ब[3] मंदिरं[4]।
बिसाल सैल-माल बेस सोह चद्र-सालका[5]।
पुरंध्र पट्टलं[6] समीप जाल-रंध्र[7] जालका ॥४८६
सुहाग धाम सुभ्र चंद्र चंद्रका[8] किधौ छुटी[9]।
ऊतंग स्त्रंग अद्रिराट[10] आस्वनी[11] घटा उठी।
सुगंध तेल सींच अद्ध ऊद्ध पै अटालका।
जगी सुजोत जोनसी मनौ दीपमालका ॥४८७
बिदेह नग्र बींच ग्रेह ग्रेह में गली गली।
प्रपंच हू प्रकास पुंज, मंजुलं झलामली।
जहां तहां महाजनं सरीर दिव्य संजुरे।
ऊमाँह एक एक कै भरंत भीर उम्भरे ॥४८८
सुकंज-आँख[12] सुंदरी गिरा सुगान गायकै।
झरोख झाँक झाँक मंजु घोष[13] हू मिलायकै।
सीया बिबाह राँम संग राग-रंग की रली।
लली कुरंग-लोचना[14] ऊमंग अंग उज्जली[15] ॥४८९
बिलोक च्यार बंधवं बिचित्र अंग बेख सौं।
सरूप गौर स्यामलं अनूंप एक एक सौं।
अबेक रामचंद्र पेख लेख जन्म-लाह[16] कौं।
ऊमाह कै अनंतरं बढ़ै ऊछाह ब्याह कौं ॥४९०
सँवार मौर सोरखं[17] जराव मुक्त[18] जंजरचौ।
सरोज नील सीस जाँन अब्ज-बंधु[19] ऊतरचौ।
बिसाल माल बीच लाल बिंदु मुक्त लाजनं[20]।
ऊदोत अष्टमी सब्रक्रभ[21] समाजनं।

---

१ रनवास। २ छोटे-बड़े। ३ देवगण। ४ मू० प्र० मंदरं। ५ अनेक मंजिलों वाले मकान। ६ छज्जे। ७ छेद। ८ चांदनी। ९ छिटकी हुई है। १० पर्वतराज हिमालय। ११ क्वार की, आश्विन मास की। १२ कमल-नयनी। १३ स्वर। १४ हिरन की आंखों के समान नेत्रवाली=मृगनयनी। १५ उज्वल। १६ जन्म-लाभ। १७ शीर्ष=मस्तक। १८ मोती। १९ सूर्य। २० अक्षत। २१ मंगल।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रंचंत बाल रम्प(म्य)कर्क-राल[1] स्याँम रंग के ।
सुगंध ग्रास संग में भ्रमंत भीर भृंग के ॥४६१[2]
ग्रनूप बूंह[3] ग्रावली करंत ऊभ्र कोयनी ।
ग्रली सँवाँर ऊपरा पसार पंख पोयनो ।
ऊधार च्यारु ग्रंबकं सरोज रक्त संधकं ।
ग्रनदकंद ईछ्छनं[4] सीया प्रीया समंधकं ॥४६२
निकाय रूप नासका प्रकास पुंज दीपकं ।
बिलोक नैन विश्व के बने घने बनीपकं ।
सुरंग रंग सुंदरम प्रबाल[5] ग्रोठ पेखीयै ।
कठोर वज्र की कनी दमंक दंत देखीयै ॥४६३
मुखारबिंद मंद-हास चंद्रका सुचंद्र की ।
प्रकास ग्रासपास पुंज साँझ भोर संध[6] की ।
कपोल गोल बीच कर्न लाल छाँह कुंडलं ।
जलं जमी जनाय ज्यां मरीच[7] चंद्र मंडलं ॥४६४
कपोत[8] कंठ इद्रचंद[9] पेखीयै प्रलंबका[10] ।
जराव जुक्त सुक्तजं[11], लघू कितीक लंबका ।
सकंध संघ केसरी भुजा ग्रजाँन[12] सम्भरं[13] ।
ग्रमोल बंध ग्रंगदं ग्रनूंप रत्न ऊम्भरं ॥४६५
सुवर्न रत्न संजुरे कला चकासु[14] कंकनं ।
मृनाल[15] घेर मंडलं प्रभा मनौं प्रदोतनं[16] ।
बिसाल लाल बेस पंचसाख[17] जाँन कपंजं ।
ग्रनुंप रूप ग्रंगुलो कली सु हेम-पुस्पजं[18] ॥४६६
ग्रमोल गोल ऊर्मका[19] सुबर्ण हू मनी मनी ।
ऊजास कांम-ग्रंकुसं[20] किधुं बरारका[21] कनी ।

---

१ केश-पाटी । २ मू० प्र०—यह छंद छः चरणों का है । ३ भौंहे । ४ देखना । ५ मूंगा । ६ संध्या । ७ किरण । ८ कबूतर । ९ लंम्बा हार । १० कंठियाँ । ११ मोती । १२ ग्राजानु = घुटनों तक । १३ भुजबंद । १४ चमकते हुए, चक्रवत् । १५ कमल-नाल । १६ सूर्य । १७ हाथ । १८ चंपक पुष्प । १९ ग्रँगूठी । २० कामांकुश = नाखून । २१ हीरा ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सपुष्ट रिष्ट[१] मुष्टका[२] बलिष्ट ओपमा बढ़ी।
सुवर्न कोस[३] संजुतं मनोज्ञ[४] रत्ननं मढ़ी ॥४९७
वक्षस्थलं[५] बिसाल दीप्त माल की दुगादुगी।
लसंत लाल लीलमं जराव की जगा-जगी।
गँभीर गर्भगार[६] तुँद-कूपका[७] अनूप त्यौं।
जमी-प्रवाह[८] भौंर ज्यूं सुभाँ निपाँन रूप त्यौं ॥४९८
कटी[९] सुच्याह केसरी[१०] नितंब-भार निस्तुलं[११]।
करी-सुहस्त[१२] कलभ केल संनिभा जु सस्थलं।
समान धर्म सुंदरं प्रभा अनूंप पिंडुरी।
गंगेय[१३] चर्न ग्रंथ[१४] पै जराव स्रृंखला जरी ॥४९९
सरोज पाँव सुंदरं सकोमलं सुवाहनैं।
बिरंच बाँमदेव पर्म ध्याँन पूज्य पावनैं।
रचाय बाहलीक[१५] रंग अंग झीन अंबरं।
जने-जने जुहार लें बने-बने बिसंभरं ॥५००
प्रसिद्ध सिद्ध ता पहै न ओपमा अनंग[१६] तैं।
लखे बिबर्न लोचनं प्रीया सीया प्रसंग तैं।
निहार कै निबेसनं प्रबेसनं[१७] पधार कै।
प्रकार[१८] क्षोम[१९] पूरनं बने सकंध-बारकं[२०] ॥५०१
बलक्ष[२१] कंगुरावली सपक्ष[२२] रक्षसं जुरी।
श्रृंगार पौर सोवनं भृंगार[२३] दीप्त कंभरी।
घनाश्रयं[२४] घटा घुमंड मंड जाँन मिंदरं।
मढ़ी सुभाल मंगलीक सोह द्वार सुंदरं ॥५०२
बिदेहराज बिस्तरं अमात्य[२५] बीर आद कै।
अनेक-पाट-अंबरं[२६] पंडे क्रमं मृजाद[२७] कै।

---

१ तलवार। २ मूठ। ३ म्यान। ४ मनोहर। ५ छाती। ६ पेट। ७ नाभि। ८ यमुना। ९ कमर। १० सिंह। ११ गोल। १२ सूंड। १३ सोना। १४ चरणग्रंथि=टकना। १५ केसर। १६ कामदेव। १७ प्रवेश-द्वार। १८ प्राकार=कोट। १९ रेशमी वस्त्र। २० रनिवास के कमरे। २१ उज्वल, सफेद। २२ बराबर=समान। २३ कलश। २४ आकाश। २५ मंत्री=कर्मचारी। २६ पग-मंडा। २७ मर्यादा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिदेह भूप बेख कै अनूंप भूप औधपं।
अमात्य बीर भीर आय ऊतरे अनेकपं[1] ॥५०३
हिले मिले पसार हाथ अंक भेट अंक सौं।
निछावरै[2] पसाव[3] नेग[4] राव होत रंक सौं।
अनंद कौ अधार कै अरोह सिंघ-आसनं।
अनूंप थान-इंद्रकं[5] सभा प्रचार सासनं ॥५०४
ठये सु ठौर-ठौर पै सुभट्ट-ठट्ट धीसखं[6]।
सुधा-पयोद[7] के समाँन मोद ऊझल्यौ मखं[8]।
बिदेह अंतबास[9] सिंघ-द्वार[10] राँम संचरे।
तहाँ सुबंद तोरनं अनेकपं सु ऊत्तरे ॥५०५
अनंद कंद ईछना[11] बिलोक च्यार बंधवं।
महाँन ध्वाँन[12] मंगलीक गाँन होत गंध्रवं।
बिदेह अंतबास में बिचार के बिनोद सौं।
बढ्यौ ऊछाह ब्याह को महाँन चाह मोद सौं ॥५०६

दोहा

जिह घर जनमौ ज्याँनकी, माया बेद मृजाद।
जनक द्वार ठाढ़े जहाँ, अज अबिनासी आद ॥५०७
जिह ध्यावत जोगिंद्र जन, सिव सनकादिक सेस।
कुंभकार[13] बंधत कलस, महिमा धिन[14] मिथलेस ॥५०८
सुरग[15] निवासी देव सब, बन पुरबासी बेख।
मगन भये मिथला मिलन, द्रगँन राँम छिव[16] देख ॥५०९
सुर-तीय जेती संचरी, अंतहपुर आगार।
मिली जनक रनवास-मह, साँग[17] सुधार-सुधार ॥५१०
निरख-निरख दंपति नयन, परख राँम सीय प्रीत।
सावंत्री गावत सकल, गिरा[18] गौर[19] मिल गीत ॥५११

---

१ हाथी। २ न्यौछावर। ३ अनुग्रह। ४ नेगियों का प्रतिफल। ५ सभास्थल। ६ मंत्री, सलाहकार। ७ अमृत=सागर। ८ यज्ञ। ९ रनिवास। १० मुख्यद्वार। ११ देखकर। १२ शब्द। १३ कुम्हार। १४ धन्य। १५ स्वर्ग। १६ छवि=शोभा। १७ वेश। १८ सरस्वती। १९ गौरी=पार्वती।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद त्रोटक

सहनाई मेल सजैश्वर कै, घन बाँनक आँनकहू घुरकै।
महला[1] केऊ झुंडन झुंड मिलै, झुक कोकल बैंनीय राग झिलै ॥५१२
भर कुंकुंम मंगल-भाजन की, लीय कंचन-थारीय लाजन की।
ध्रुव केतक पूरन कुंभ[2] धरैं, मृदु पल्लव[3] श्रोरन मौंर भरैं ॥५१३
ललना बहुरै दध[4] दूब लीयें, अजुवाल झलामल आरतीयें।
जनकाधिप की महिषी[5] जहवाँ, सकुटंबनी[6] आय मिली सहवाँ ॥५१४
गुन-गाँन उचारत द्वार गली, चहूँ बींद[7] बधावँन काज चली।
इक तैं इक देखत कौं ऊझकै, झमकात अलंकृत-भार झुकै ॥ ५१५
ऊछटै पट धूँघट-अंचर की, सुध भूल रही केऊ संचर[8] की।
अवलोकन काज सीयावर कौं, अवलं चत[9] चाह चढ़ी ऊर कौं ॥५१६
ऊमगी मन मंगल-गाँन अली, रघुनाथ सबंधन राग-रली।
दुति सोहत माँग सिंदूर दीयें, कुरु-बिंदु[10] की भाल में बिंदु कीयें ॥५१७
लँहगा सुही[11] पीतन सारी लगी, जर तारि किनारीय जोत जगी।
दमकै दुति बिग्रह[12] दाँमन[13] सी, कमनीय मनोभव-[14] काँमन[15] सी ॥५१८
जनु पूरन चंद-मयूख[16] जगीं, ऊरमी[17] सरता-पति[18] की ऊमगी।
कमनीय प्रभा कर-कंकन की, अनीयारीय[19] झंखन[20] अंखन की ॥५१९
मुसकानन आस्य[21] अमोलन की, तिन में छवि देत तमोलन[22] की।
कर कै परहास मिलैं किलकैं, मधुरी अधुराँन[23] चले मुलकैं ॥५२०
ठुमकैं धर पाव चलै ठटकै, ईक की ईक ओट लहै अटकै।
पनुहीं खग काँम मनौं परवा, झमकै पग जेहर जाँझरवा ॥५२१
मृदु चाल चलै तरवा मुरकै, धर माट मजीठ मनौ ढुरकै।
राय अंगन साँ बढ़कै रमनी[24], थित तोरन पौरन जाय ठनी ॥५२२

---

१ महिला=स्त्रियाँ। २ कलश। ३ पत्तो। ४ दही। ५ पटरानी। ६ उसी परिवार की स्त्रियाँ। ७ वर=दूल्हा। ८ शरीर। ९ चित्त। १० हिंगूल। ११ कसूमल रंग। १२ शरीर। १३ बिजली। १४ कामदेव। १५ कामिनी=रति, स्त्री। १६ चंद्र-किरण। १७ ऊर्मि=लहर। १८ समुद्र। १९ अनोखी। २० झांकना। २१ आस्य=मुख। २२ तांबूल=पान। २३ अधरों। २४ रमणी=स्त्री।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बपु स्याँमल गौर चहूँ बनरे[१] , खितोनाथ बिदेह के द्वार खरे ।
लख आँनन नैनन लाह[२] लयो, भर आनंद सौं होय हर्षं भयो ॥५२३
तब भद्र-करीर[३] बधायत हो, सुभ सस्रु का[४] आरती कीन सही ।
मिल आरती कीन झलामल की, भर मौंतन थाल भलाभल की ॥५२४
जहाँ लौकिक वेदक नीत जिती, कर भद्र ही कारक रीत किती ।
सतकार लह्यौं सुसरार सबै, कहनी कहि जावत ताहि कबै ॥५२५
गुरू प्रोहित सासन[५] लै गवनै, बिच अंगन मंडप छाय बनै ।
थिर कंचन मानक थंभ[६] थपै, जगमग्ग जराय की जोत जुपै ॥५२६
कलसा तिह ऊपर कंचन के, सुभ घाट ढरे सोई संचन के ।
लघु केक बिसाल लगी लहरैं, चिब[७] चन्द्र नछत्रन की चहरैं ॥५२७
मृदु पल्लव अंब कदंब मढ़े, छद[८] चंदन जामुन चाह चढ़े ।
बहु पंकज फूलन जालि बनी, तिह ऊपर बंदन-माँल तनी ॥५२८
तुचसार[९] हरी रंग ताहीय में, अत कीन खरे अंगनाईय[१०] में ।
केऊ मंड[११] प्रकंडहु केलीय के, बर पत्रन बेलीय[१२] वेलीय के ॥५२९
सुभ सूचक रूप घने सरसैं, द्रग कौं सुख दायक जे दरसैं ।
मिल पत्रनहू द्रुत मंजरीया, पुहपावलि लाल सु पिंजरीया[१३] ॥५३०
रचना कीय तामह रत्नन को, जुर दीप्त साँ दीप्त जगी जिनकी ।
कहूँ लीलँम[१४]लाल रु हीर-कनी, बहु बिद्रुम[१५]मोंतीय-माल बनी ॥५३१
जरी अंबर मध्य[१६] बितांन जुरे, बढ ग्रंथनि जाल जहाँ बिथुरे ।
कुरु-बिंद रु चंदन घोर करी, तल कुंकम कर्दम कीम तरी ॥५३२
सब सिंदल[१७] तेल फुलेल सिंची, रँमनीय बिचत्रन चित्र रचीं ।
बिच बार अनूंप बिराजत है, लख काँम के मंदर लाजत है ॥५३३
ईम च्यारहु मंडप कीन ऊदै, जिन के प्रति द्वार पगार जु दै ।
पुन सासन लै गुरू प्रोहित सौं, मध जाय ठये दुलहा मीत सौं ॥५३४
सिनगार कै दुल्लहनों सबहीं, जुर संप्रति दंपत जोरि जिहीं ।
समधी तरु सुस्क[१८]संजोय सबै, जहाँ बिप्रन होंम प्रकास जबै ॥५३५

१ वर । २ लाभ । ३ कलश । ४ सास । ५ आज्ञा । ६ मंडप के स्तंभ । ७ सुन्दरता । ८ पत्र = पत्ते । ९ बांस । १० आंगन । ११ मंडप । १२ बेलों । १३ पीला । १४ नीलम । १५ मूंगा । १६ मू० प्र० मध । १७ इत्र । १८ शुष्क = सूखा ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिध वेद के मंत्रन सौं बहुरै, रव मंगल-दायक जाहि ररै।
गहरै स्वर गायनि[1] गावत है, बहु दंपत नेह बढावत है ॥५३६
दुलहा छिव[2] देखत दुल्लहनी, घुमँड़ी सखीयाँ सरसात घनी।
सकुटंबनी देखत होय सुखी, मन मोद बिदेह लहै महिषी[3] ॥५३७
ऊदवाह[4] अनंत ऊछाहन सौं, निज बेद स्तुती निरबाहन सौं।
कर भाँवरै जाय बिदेह कह्यौ, गुरू प्रोहित भूपहु संग गह्यौ ॥५३८
दुहिता दुहिता पति दोवन कें पग पुज्जन कीन लहै पन कें।
अबिनासीया रूप अनंत अखी, रज बंदत है अज[5] रुद्र रिखी ॥५३९
अवगाहत ध्याँन न आवत है, पग ग्रेह बिदेह पुजावत है।
अज ईस ज्युहीं सीय रूप अजा[6], गुन सारद[7] गावत है गिरजा ॥५४०
जोई ग्रेह बिदेह-सुता जनमी, रुचता बय बालक ख्याल रमी।
सीय कौ परभाव गिनौ सगरौ कुल मात-पिता जु पबित्र करौ ॥५४१
सुत औध-के-नाथ के च्यार सही, दुहिता मिथलेसहु च्यार दही।
मुद मंगल गाँन कै याँन[8] मही, दुहिता दुहिता पत सोख दही ॥५४२
मिथलेस के भ्रात अमातन में, बढ़ आयेऊ साथ बरातन में।
लख नैनन सौं सुख-लाभ लीयौ, हरख्यौ अबधेस कौ देख हीयौ ॥५४३
बज आँनक भेर अबाज बढ़ी, चँहुं दुल्लह की असवारी चढ़ी।
सुभ-बेलाय[9] होत सबेरन में, दुलहा ऊतरे चँहुं डेरन में ॥५४४
पद बंद बसिष्ट पुरोहित के, अरू कौंसक[10] आद ऋषी ईतके।
संग लै दुज[11] बृंद सखा सिगरे, पती औध-पती सुत पाय परे ॥५४५
ऊर भेट ईतै सिर सूंघ अभै[12], सुत दोनोय भूप असीस सबै।
बहु बिप्रन कौं बगसे बित कौं, अरू मागध सूत अयाचित[13] कौं ॥५४६
गुनबंतँन गंध्रब गाँयँन कौं, निज दासि खवासन नायन कौं।
मन बंच[14] ऊदंचत दांन मिल्यौ, झर भाद्रँव मास ज्यौं द्रव्य झिल्यौ ॥५४७

१ गानेवाली। २ छवि। ३ पटरानी। ४ उद्वाह = विवाह। ५ ब्रह्मा। ६ अजन्मा। ७ शारदा = सरस्वती। ८ यान = सवारी, डोला। ९ शुभवेला = शुभमुहूर्त। १० कौशिक = विश्वामित्र। ११ द्विज = ब्राह्मण। १२ अभय। १३ नेगियों को। १४ वाञ्छित।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सब आय कै साथ जनास्त्रय सौं, निज पुत्रीय लोकक लैं नय सौं ।
मिथलेस के आय कै मंदर कौं असवारि ऊतारीय अंदर कौं ॥५४८
मन-मोदमई सब मात मिली, रुचता-जुत गावत राग-रली ।
मिथलेस प्रचारीय मोद महाँ, रुच स्वादन रिद्ध समृद्ध रहाँ ॥५४९
मनुँहार बरातिन मोदमई, निबहै अत पुज्जत नित्य नई ।
अवरोध[1] में दुल्लह आवत है, जनवासहु कौं चढ़ जावत है ॥५५०
बिहरै बन बाग बजारन में, सहलै कहुँ सैल सिकारन में ।
बितए दिन केक बधाईय में पति औध रहे पहुँनाँइय में ॥५५१
पति-औध के मंत्रिन ने पहिलै, मिथलाधिप मागीय सीख मिलै ।
सब भाँत अलंकृत[2] साथीय कौं, बगसे बहु बित्त बरातीय कौं ॥५५२
दुलहा दुलहींन दहेज दयौ, करकै गनती[3] नहीं जात कह्यौ ।
बर बस्त्र जिते जर-तार बनें, गजराज गऊ रथ घोरे घने ॥५५३
दोय दासन दासी सु दायज[4] में,जिनकाँ दुहिता[5] हित कोन जुमै[6] ।
मिथलाधिप सौं हिल कै मिल कै, दसरथ्थ चले संग लै दल कै ॥५५४
पँहुचे सोई जाय कै औध-पुरी, घन नौंबत भेर[7] अबाज घुरी ।
बहि कै[8] जन आय बधाँवन कौ, सुख संपतिहू सरसाँवन कौं ॥५५५
कलसा लीय भेंट निछावर कै, भल मोंतिन-थार घने भर कै ।
घनस्याँम लखे जन जाहि घरि, कलधौत[9] रु हाटक[10] वृष्ट करो ॥५५६
पँहुंचे जबहीं दरवाजन पै, बढ़ एटह दुंदभी[11] बाजन पै ।
ललना बसु[12] सीस करीर[13] लोयं, कमनीय सपल्लव गुच्छ कीयं ॥५५७
गुन-गाँन बधाईय गावत हैं, सुख नैनन कौं सरसावत है ।
नृप देन बधाईय नारन कौं, भर द्रव्य करीरन भारन कौं ॥५५८
बिथुरे[14] बहु रत्न बजारन में, नवछावर के निरधारन में ।
पहुँचे निज जाय कै गोपुर[15] कै, घन बाँनक आनकहू घुर कै ॥५५९
महिलाँ सब राँनीय संग मिली, ऊछरंग सौं गावत राग अली[16] ।
अवरोधन-द्वार अगारन में, पँहुँची कैंऊं पार पगारन में ॥५६०

---

१ रनिवास । २ अलंकृति=गहने । ३ गणना=गिनती । ४ दहेज । ५ लड़की ।
६ जिम्मेदारी में । ७ भेरी=ढोल । ८ चलकर । ९ चांदी । १० सौना, बाजार ।
११ दुन्दुभि=ढोल, नगाड़े । १२ मिट्टी । १३ कलश, बांस की डार । १४ बिखेरे ।
१५ द्वार । १६ सखियां ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुभ सूचक लै दध दूब सखी, सबही सु सथाँन रही सुमुखी ।
दुलहा दुलहो दरवाजन सौं, सब बेख[1] सुधार समांजन सौं ॥ ५६१
जुत भ्रात लखे रघुनाथ जबै, सिवका[2] दुलही संग जाँहि सबै।
अत आँनद मात गह्यौं ऊर कौं, पुलकावली आय चढी पुर[3] कौं ॥५६२
अबग्राह में जाँन घटा ऊमगी, भुव भीर मनौं दुरभक्ष भगी।
बहुरै सुख सौं मन बंचन कै, अत कंचन[4] पाय अकिंचन[5] कै ॥५६३
बिछुरी सफरी[6] जिम बारही[7] में, धस जावत बाढ की धारही में।
बिरहा सुत माँतन दूर बह्यौ, लख नैनन आँनद पाय लयौं ॥५६४
अपढी[8] कर आड ऊतार अली, लीय दुल्लहनी केऊ संग लली।
गहि अंचर ग्रंथनी जोर गुही, रखवारीय कारन संग रही ॥५६५
सुत दंपत देख कै होय सुखी, सब ही तहाँ मात भई समुखी।
सुध-अंत[9] बधाय कै लीन सबै, जुवतीगन मंगल गाय जबै ॥५६६
जुर दंपत[10] जोरीय[11] चाह जहाँ, अँगनाईय कारन कीन ईहाँ।
कुल-मात[12] के बंदन पाय करे, धुर[13] प्रोहित नारीय भेट धरे ॥५६७
पुन पुज्जक नारींय के पग कै, लीय ताहि असीस अभै लगकै।
निज मात के पाय लगे नम कै, सबही रनबांस गने सम कै ॥५६८
बगसीस दई बनरा-बनरी[14], घन-मोल[15] अलंक्रत जाहि धरी ।
सुच हर्म[16] बसाय बहू सुतकौं, रमनीय घने खट[17]-ही-रित कौं ५६९
बिच काच के अंगन जाहि बने, छत और दिवाल सुबनैं चुने।
दुत रत्न-जरे तिनकी दमकै, चकचाँधीय[18] नैनन में चमकै ॥५७०
द्रग देखत सास जबै दुलही, अत प्रेम हीयं भर कै ऊलही।
सुन राजनहू सुत के सुख सौं, रत-आँनद में रुचता रुख सौं ॥५७१
रघुनाथ सपूतीय देख रहै, गरूकर्म[19] बिसारद नीत गहै।
ध्रम छत्रीय बंस कौं धारन में, अत संमृथ[20] दीन ऊबारन में ॥५७२
खल धूरत के छल खंडन में, मरजाद सनातन मंडन में।
सब रीत सराह प्रजा सुन कै, गरूआई में रांम बड़े गन कै ॥५७३

१ वेश=पोशाक। २ शिविका=पालकी। ३ शरीर। ४ स्वर्ण। ५ दरिद्र। ६ मछली। ७ वारि=जल। ८ कनात। ९ रनिवास। १० वर-वधू। ११ जोड़ी। १२ कुलमाता=कुलदेवी। १३ पहले। १४ वर-वधू। १५ अमूल्य। १६ हर्म्य=प्रासाद, महल। १७ षट्=छह। १८ चकाचौंध। १९ गुरुकर्म=विद्या। २० समर्थ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुघराई[1] में राज के सेवन कौं, दसरथ्थ बिचारीय देवन कौं ।
पदवी जुवराज प्रचारन कौं, कीय रिद्ध जमाँ तिहि कारन कौं ॥५७४
सुन कैंकई बात बड़े सुत की, ममता-बस सुद्ध[2] गई मत कौं ।
नृप कौं बुलवाय तहाँ निगुनी, कलहंतर ता कीय या कहनी[3] ॥५७५
पति मो बरदाँन दीयें पहिलै, मुख माँगतहूँ अब मोहिं मिलै ।
मम पुत्र काँ राज की देहु मता, बन राँम बसै गहि कै बिपता ॥५७६
जोई अब्द[4] चतुर्दस जाय जितै, चित साँ सुपनै नहीं औध चितै ।
कहनी नहीं राज बृथाँ करीयै, अपनी मति आप ही ऊद्धरीयैं ॥५७७

सोरठा

सुन दसरथ नृप स्राँन, कही जथा जो कैंकई ।
मुख रुक लीनौ मौंन, हीयौ[5] गयौ[6] सत टुक ह्वै ॥५७८
कँवसल्या सुन काँन, सौमित्रा सोऊ सुनी ।
ग्रह-ग्रह मंगल-गाँन, बंध भये दुंदभी बजत ॥५७९
बोले रघुवर बाँन, लघु भ्राता सुनीये लखन ।
है मंगल-मह[7] हाँन, जाँन परत मम जीव में ॥५८०
ईतनै ही में आँन, कही कथा कहुँ कैंकई ।
श्रीरघुवीर सुजांन, सोचे मन में जिह समय ॥५८१
होय पिता की हाँन, बचन गयै जीवन बृथाँ ।
करहुँ राज-सुख काँन[8], लखन कही रघुनाथ लख ॥५८२॥

छंद भुजंगीप्रयात

सुनी राँम की बात सौमित्र[9] सोऊ, द्रढं जायगे बीच आरंन्य दोऊ ।
लगे स्राँन[10] भूताँन[11] कोडंड[12] लीने, दहूँ जाय कै मात काँ बोध दीने ॥५८३
पिता कौ करैं जो बृथां कौल[13] पुत्रं, वहाँ तै भलौ जाँनीयै जो अपुत्रं ।
कपुत्रं सोई पुत्र लोकं कहाँनौं, जोई जीवतौ मृत्यु के तुल्य जाँनौ ॥५८४
हमाँरे ज्युही तोर कै पुत्र हेतू, सबै रीत सौं भर्थ[14] है धर्म-सेतू[15] ।
बिताये सबै औध कें औधबाटी[16], पिता-मात के दर्स पैहौं प्रपाटी[17] ॥५८५

---

१ चतुरता । २ सुधि । ३ कहनी = बात । ४ वर्ष । ५ मू०प्र० हीय्यौं । ६ मू०प्र० गय्यौ । ७ में । ८ त्याग, दूर । ९ सौमित्र = लक्ष्मण । १० श्रोणी = कमर । ११ तरकस १२ धनुष । १३ वचन, प्रतिज्ञा । १४ भरत । १५ धर्मनिष्ठ । १६ अयोध्या । १७ परम्परा ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुनं राँम के बैंन माता सबै हीं, जको[1] चित्त की पुत्तरी ह्वं जबै हीं ।
द्रुतं औरहू भेट कै भ्रात दोऊ, सीया के गये हर्म में संग सोऊ ॥५८६
प्रीया[2] प्राँन सीया सुनौ छाँड़ प्रीती, निभायौ सबै धर्म कौं न्याय नीती ।
अहो सासरै की तजौ चित्त आसा, बसौ चाहि कै मायकं जाय बासा ॥५८७
बनौबास कौं जायगे जुग्म बीरं, धरौ बल्लभा[3] चित्त में नैंक धीरं ।
बिजोगं समा[4] अष्ट-सप्टं[5] बिताई, भलं आय है भौंन कौं जुग्म भाई ॥५८८
बिदेही सुनी राम की एह बाँनी, कही स्याँम साँ ताँम साँची कहाँनी ।
प्रभू रावरे संग सारंग-पाँनी[6], धरा धाँम जानौं वहीं राजधाँनी ॥५८९
सु पै प्राँन की हाँन बाजी सभूँगी, तऊ रावरौ साथ नाही तजूँगी ।
कही ज्याँनकी बाँन ऐसी करारी, खिती-आत्मजा[7] संग लोनी खरारी[8] ॥५९०
पिता-दर्स लीनौं अहूँ लाग पाँऊ, रही कैंकई चंद्र ज्याँ घेर राहूँ ।
तहाँ कैंकई ऊठ कं बारताई, लता बल्कला[9] आजनं[10] दौर लाई ॥५९१
सुमंत्रेय[11] दीने अरू राँम सीता, सबै अंग में धार लीने सुभीता ।
पिता-मात के बंद पादारबिंदं, चले अट्टवी[12] बास कौं रामचंदं ॥५९२
बढ़ो राज के ग्रेह हा-हंत[13]-बाँनी, धुकी धूँम ज्यूँहीं सबै राजधानी ।
अजोध्या पुरी ताहि छायौ अँधेरौ, तहाँ तेज कौ नाँहि दासं तरेरौ ॥५९३
गये भर्थहू मातुलं[14] दूर गेहा सत्रूघ्नं भए ताहि संगी सनेहा ।
बनोबास दीनौ पिता दोय बीरा. सिधाये सुमंत्रेय राँमं सधीरा ॥५९४
अनैसी प्रजा बात देखी अनंता, सबैं धीसखं राज के पर्म संता ।
मिले राज-द्वारं मही और मत्री, ऊवासीनता पाय आये अनंत्री ॥५९५
दसा राज के ग्रेह की एह देखी, बिधू लेखीयै दीह[15]में ज्याँ बिसेखी ।
गये राज के पासहू सारग्राही[16], तहाँ जाय देख्यौ प्रभाध्वंस ताही ॥५९६
सुनी कैंकई की तिहीं घात सारी, इहीं राज में रैंन[17]कीनो अँधारी ।
कही धिक्रती [18]बात मंत्री अँनेका, बिचार्यौ नही नैंक राँनी बिबेका ॥५९७

१ मूर्च्छित, दुःखित हुई । २ मू०प्र० प्रोय्या । ३ प्रिया । ४ वर्ष । ५ चौदह । ६ शार्ङ्गपाणि = धनुर्धर । ७ क्षित्यात्मजा = जानकी ८ राम । ९ वल्कल = भोजपत्र, पेड़ की छाल । १० अजिन = मृगचर्म । ११ सौमित्रेय = लक्ष्मण । १२ अटवी = जंगल । १३ हाहाकार । १४ मामा के । १५ दिन में । १६ बुद्धिमान् । १७ रजनी = रात्रि । १८ धिक्कृति = धिक्कार ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कछू दीह बीते तजी भूप काया, मही राजधाँनी सबै छोर[1] माया।
सबै राज सूंनौ लख्यौ मंत्रि साथा, समाँचार भेजे भर्थं सुज्ञाता ॥५९८
अजोध्यापुरी भर्थ-सत्रूघ्न[2] आये. प्रजा औ सुमंत्री सबै धीर पाये।
कछू दीह बीते जबै-भर्थ काजा, सबै जोर कै राजमंत्री समाजा ॥५९९
जुतै मात भ्राता लये संग जाहा, अरंनं गये राँम लैनै ऊमाँही।
रहे चित्रकूटं गिरी सीस राँमं, तहाँ जाय भेंटे सुमंत्री तमामं ॥६००
मिले भर्थ सत्रूघ्नहू और माँता, सबै राजधाँनी लखी हींन साता[3]।
कीयौ भूपहू बास बैकुंठ केरौ, घनै दुःख कौं छाय कै चित्त घेरौ ॥६०१
करचौ राँमहू तौय[4] दै संसकारा, बिलापं बढे मौह साँ नैन बारा।
पुरोधा[5] बसष्टं दयौ बोध पेखै, भई जो कछू बात भाबी बिसेखै ॥६०२
भरथं कह्यौ चालीयै राँम भ्राता, अजोध्यापुरी रावरी है अनाथा।
सबै राजमंत्री प्रजा आद सूंनी, ईकै नाथ राँमं बिना बात ऊँनी ॥६०३
जबै राँम बोले बनोबास जेहूं, पिता की प्रतज्ञा जबै पार पेंहूँ।
अजोध्यापुरी देखहूँ नैन आई, भली औ बुरी लेखीयै बात भाई ॥६०४
भरथं सुनी राँम नै एह भाखी, रजा[6] लै तहाँ पादुका सीस राखी।
अजोध्यापुरी चाल कै भर्थ आये, सुमंत्रेयहू राँम आगं सिधाये ॥६०५
बसे डंडकारंन[7] में जाय बासा, कुटी बाँध कै पंचबट्टी[8] प्रकासा।
रिखी-राज भेंटे घने राँम-राई, जहां बेदना[9] जातुआँनं[10] जनाई ॥६०६
सबै ही मुंनी-बृंद ह्वै हौ सुखारी, अभैदाँन दीनौ ईहीं आसुरारी[11]।
सुखी ह्वै रिखी धाँम-धाँमं सिधाये, बिचारे तहाँ राँम बासौ बसाये ॥६०७
सुपन्खा[12] पती-लंक की बहन सोऊ, द्रगं देख लीने कहूँ बीर दोऊ।
भ्रमीं बुद्धि काँमाँतुरा होय मेटी, मनोज्ञं रच्यौ रूप औ लाज मेटी ॥६०८
कह्यौ राम साँ चाहि कै ब्याह कीजै, पती पाय कै चित्त मेरौ पतीजै।
अहूं एक-पत्नी सीया संग एकै, वृतं राँम मैं धार लीनौ बिसेखै ॥६०९
सुपनखा जबै जाय कै सेस[13] जांच्यौ, हृदै काँम साँ छाय कै प्रेम राच्यौ।
सुमंत्रेय बोले जती-बृत्त[14] साधूं, उपज्जै नही काँम की मो ऊपाधूं[15] ॥६१०

१ छोड़ कर। २ भरत, शत्रुघ्न। ३ सात = कल्याण, सुख। ४ तोय = जल। ५ पुरोहित। ६ आज्ञा। ७ दण्डकारण्य। ८ पञ्चवटी। ९ कष्ट। १० यातुधान = राक्षस। ११ असुरारि = राम। १२ शूर्पणखा। १३ शेषावतार लक्ष्मण। १४ यतिव्रत। १५ उपाधि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मदंधा[1] तहाँ क्रुद्ध[2] कीनौ महाँना घरचौ मंथली भक्षनै काज ध्याँना ।
भयंकार कीनौ जबै रूप भारी, डरी देख सीता भई सो दुखारी ॥६११
ईतै दौर कै आय सेसावतारं. बँने आततासी[3] प्रहारं बिचारं ।
गही केस-पाँसी[4] जिहों हाँथ गाढो, ठगारी तहो ह्वै रहो भूँम ठाढो ॥६१२
सुमत्रेय बोले जबै राँम सेती, अनाचार में रुष्ट है पुष्ट येती ।
सुनी बिप्र मेदोज[5] आरंन माँही, दये सो रिखी आय नैनाँ दिखाई ॥६१३
महाँराज रात्रीचरा[6] माँरनै को, प्रतज्ञा करी सो सही पारने की ।
नहीं राक्षसी जात साँ येहु न्यारो, सीया भक्षनै काज दौरी सुरारी[7] ॥६१४
रजा होय सो दंड याकौं रचीजे, कछू नाँहि कारू न[8] यामें करीजे ।
सुनी राँम भाखो सुमंत्रेय सोऊ, कही राँम यामें नहीं संक कोऊ ॥६१५
तऊ नार-जाती ईहै आतताई, नहीं प्राँन कौ दंड दीनै निकाई ।
ईतौ जान कै कीजीयै हींन अंगी, प्रभा:व्रंस देखै तिहीं के प्रसंगी ॥६१६
सोई क्रुद्ध ह्वै आय है एक साथा, नृचक्षा[9] करू अट्टवी के निपाता ।
कह्यौ राँम त्यूँहीं सुमंत्रेय कीनौ, द्रढं प्राँन कौ दंड ताकाँ न दीनौ ॥६१७
कुरूपा करी काँन औ नाक कट्टी, चली सो गई राह की पाय छुट्टी ।
सीया कौ करचौ बोधहू प्रेंम सीचै बिराजे तबै राँमहू धाँम बीचै ॥६१८

दोहा सोरठ(ठा)

कटे नासका काँन, सुरपनखा लोहू स्रवत ।
जाय जुहारी जाँन, दूखन खर बंधव दुहन ॥६१९
खर दूखन जय खंभ, सबही पूँछी सुपनखा ।
बोली पाय विश्रंभ, कहूं सकल सुनीयै कथा ॥६२०
कोऊक राज-कुमार, कर कै पंचबटी-कुटी ।
बासौ करचौ बिचार, नहीं आँवन दे नार-नर ॥६२१
त्रीया संग ईक ताहि, सुभग सलौंनी सुंदरी ।
देखन कौं सुखदाय, मैं हूँ गई मुँकाँम मँह ॥६२२
काटे मेरे काँन, काटी फेर बिकूँनका[10] ।
नहीं अपराध निदाँन, अल्प दोष अरु दड अत ॥६२३

---

१ मदान्धा । २ क्रोध । ३ आततायी = दुष्ट, पापी । ४ केशपाश = चोटी । ५ हाड । ६ राक्षस । ७ राक्षसी । ८ कारुण्य । ९ राक्षस । १० नासिका ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहो सुपनखाँ काज, खर दूखन अरु त्रसर खल।
ईह मम भुज-बल आज, देख लेहु तेरे द्रगँन ॥६२४

छंद मुक्तादाम

सजे खर दूखनहूँ निज साथ, पलादँन[1] पौरुष पूर प्रपात।
सजे सब आयुध अंग सनाँह[2], तुरंगन[3] पख्खर[4] डारोय ताहि ॥६२५
कसै कोऊ बीच हृदै अधिकंग, जटैं सिर-त्राँन[5] हूँ रक्षन-जंघ।
तुलै तुदत्राँन[6] रु बाहुल[7] तेम, निचोलक केक सजे रन नेम ॥६२६
कसीसत कम्मर खग्ग[8] कुठार, धरै जमदाढ़[9] हु तिछ्छन[10] धार।
गहै परघातन[11] मंड गरूर, सजे केऊ संकु[12] सक्तीय[13] सूर ॥६२७
तहाँ ग्रह केतक हाथ त्रसूल, मिले सब यातु ऊपाध के मूल।
चठठत सिंजनि[14] चाँप[15] चढाय, सरास्त्रय[16] बंध करें सरसाय ॥६२८
बढै तहाँ आँनक भेर अवाज, सबै खर दूखँन जोर समाँज।
पताकन[17] फीलन[18] पै फहरात, ऊदायुध जुद्ध चले अकुलात ॥६२९
झुके सिर गिद्धंन चिल्लन झुंड, फलंगत सगत लाग फिरंड[19]।
चली रज डम्मर अंबर छाय, दिनंकर[20] धुंधरौ नैन दिखाय ॥६३०
चढी चकढोल धरा धँमचक्क, रह्यौ तिह बेर प्रभंजन[21] रुक्क।
मचक्कीय सेसहु की फँन-माँल[22], कसक्कीय काँमठी-पिठ्ठ[23] कराल ॥६३१
करक्कीय दढ्ढ तहाँ भर कोल[24], ललक्कत फौज बढ़ो गत लौक।
करै घुँन माँरहुं राजकुमाँर, सँभारहु आयुध ह्वै हुसयार ॥६३२
बकै केऊ जीवत कै कर बंध, करै सोई हाजर लै दसकंध[25]।
कहै कोऊ नाँर महाँ कँमनीय, जिहीं लहि छोरहु जीव तजीय ॥६३३
ऊचारत दूखन के अरदास, विपत्त में डोलत है बनबास।
दिखावहि जो कछु पावहो दाव, घलै घट बूझ कै ताकँह घाव ॥६३४

---

१ राक्षस। २ सन्नाह = कवच, बख्तर। ३ घोड़े। ४ पाखर = काठी। ५ शिरस्त्राण = पघडीं, टोप। ६ उदररक्षक। ७ भुजारक्षक। ८ खड्ग। ९ यमदंष्ट्रा = कटारी। १० तीक्ष्ण। ११ लुहांगी। १२ खूंटे, साल। १३ शक्ति। १४ प्रत्यंचा, डोर। १५ चाप = धनुष। १६ शराश्रय = तरकस। १७ पताका = ध्वजा। १८ हाथी। १९ सियार। २० दिनकर = सूर्य २१ वायु। २२ फण माला। २३ कमठपृष्ठ = कच्छप की पीठ। २४ सूकर, सूअर। २५ रावण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिचारत बात चले खल-वृंद, दसूँ दिस दौर मचावत दुंद[1] ।
बकै बहु हल्ल सुगल्ल बजाय, ऊफ्फल्लत सिंधु मनौं ऊफनाय[2] ॥६३५
अडंबर[3] बाजंन होत अवाज, छटा चँमकावत आयुध साज ।
पलादँन मेचक[4] रंग पलाय, सजे मनुं बद्दर[5] की समुँदाय ॥६३६
पताकँन सेत जुरी बुग-पंत[6], करै रव मेख सिवा[7] किलकंत ।
मँडी जिम चाप पुरंदर[8] मंड, दियै ईम चाप गहै भुज-दंड ॥६३७
सुनै बहु सिंधव-राग[9] कें सोर, मिलै रव चातक[10] बोलत मोर ।
घटा घँन आवत फौज घुमंड, असारन[11] धारन बाँन ऊमंड ॥६३८
कही लघु अंधव साँ ईह कथ्थ महाँ खल मार करूँ बिन मथ्थ ।
सीया गिर-कंदर[12] में लहि संग अहो तुँम जावहु बीर अभंग ॥६३९
कह्यौ रघुबीर करचौ सो जई काज,बिचछ्छन[13]लछ्छनहू[14]निरव्याज[15] ।
ईतै बिच आसर[16] आय अनींन[17], प्रचारीय रॉंम जहाँ भुज पींन ॥६४०
तहाँ रघुबीर रहे धनुं ताँन, सँवारीय सिंजनी बांन सँधान ।
अरीदल मारन मॉंनहु ऊद्ध, क्रततहू[18] दंड गह्यौ कर क्रुद्ध ॥६४१
नमूंचीय[19] मॉंरन काज निदाँन, मनौं कर बज्र गह्यौ मघवाँन[20] ।
मनौ मधु-कैटभ काटन मथ्थ, सँभारीय चक्र हरी समरथ्थ ॥६४२
मनौ त्रपुरासुर मेटन मूंल, तक्यौ त्रिपुरारि[21] गहै तिरसूल ।
बिड़ारक तारक-दाँनव[22] वार, किधौं कर सक्त गहो कऊमार[23] ६४३
चमूं-दन[24] भक्षन कौं चल चाल,बढ़ी जनु कालीय[25]जीह[26]बिसाल ।
करीरज[27] सागर पीवन काज, सभ्यौं मुनीराजन कौ सिरताज ॥६४४
मनौ दुरभक्ष कौं मेटन मांन, ऊमडीय जांन घँना घँन आँन ।
बँधे जट-जूट[28] जहाँ रघुबीर, धरी खल आवत देख कै धीर ॥६४५
ईतै खर दूखँन आसर आय, रहे सब घेर जहाँ रघुराज ।
लखे खर दूखँन रूप ललाँम, सरोरुह आँनन[29] संचर[30] स्यांम ॥६४६

---

१ द्वन्द्व । २ उफन कर । ३ जुझाऊ वाजे । ४ काले । ५ वादल । ६ बकपंक्ति = बगुलों की कतार । ७ शिवा = शृगाली । ८ इन्द्र । ९ सिन्धु नामक राग । १० पपीहा । ११ राक्षस । १२ पर्वतगुफा । १३ विचक्षण = चतुर । १४ लक्ष्मण । १५ निर्व्याज। = निष्कपट । १६ असुर । १७ अनीकनी = सेना । १८ कृतान्त = यमराज । १९ नमुचि-नामक दैत्य । २० इन्द्र । २१ महादेव । २२ तारकासुर । २३ कौमार = स्वामी कार्त्तिकेय । २४ दनुजचमू = दैत्यसेना । २५ कालीदेवी । २६ जिह्वा । २७ कुम्भज = अगस्त्यऋषि । २८ जटाजूट । २९ कमल-मुख । ३० शरीर ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गहे धँनुंबाँन गुमाँन गरूर, प्रभा मधुदीप[१] प्रकासत पूर।
बिमांसत आसय बात बिचार, कोऊ इँह छत्रीय-राजकुमाँर ॥६४७
जुरै जुध नाँहिन माँरन-जोग, बसे बनबास कौं पाय बिजोग।
करी भगनी[२] बिन नाँक रु काँन, जिवावत बालक ख्याल क जाँन ॥६४८
बिचार कैं दूत कहो इँह बात, सबै फिरजावँहिगे हम साथ।
त्रीया निज बैर में देवहु ताहि, मिटै दुख छाय रहो बन माँहि ॥६४९
तबै चल दूत गयौ सोई तथ्थ[३], कही रघुनाँथ सौं या बिध कथ्थ।
सुनी रघुनाथ सबै बिध बाँन, बिचार कैं दूत कही इँह बात ॥६५०
अहो सुन दूत महाँ हीय अंध, मिलौ निज स्वामीय सौं मतिमंद।
कहै हम जाय कहौ सोई कथ्थ, अरे तुम जाँन लये असमथ्थ ॥६५१
अंगजित[४] छत्रीय जात अबीह[५], दहै हँम आसर कौं निस दोह।
महाँमुनि दुख्यत कीन मदंध, क्रब्यातन[६] जातन काट है कंध ॥६५२
श्रँगाल के झुंड मिलै कहुँ सथ्थ, कहै मृघराजहु[७] की कोऊ कथ्थ।
अयाँनप[८] जाँन परचौ हम एहु, गहै किन माँरग जावहु गेह ॥६५३
ईतै पर पौरुख है कहुँ अंग, जुरै धँनु बाँनन ताँनहो जँग।
दया कर सत्रुन कौं तज देत, सोई कदराईय[९] जाँन सहेत ॥६५४
सुनी कथ दूत कहो ततसार, बदी[१०] खर दूखन कौं तिह बार।
लगी खर दूखन कै सुन लाय[११], बढ़ी ऊर क्रोध की ज्वुवाल बलाय ॥६५५
गहै जीय गात कहै कोऊ गल्ल, हकार कैं मार लहै कर हल्ल।
बकै दुरबाद[१२] प्रहारत बाँन, पलादन बाद करै अप्रमाँन ॥६५६
करै कोऊ तोमर मार कुठार, तहाँ कर तिछ्छ लैं तरवार।
घने रघुबीर बचाय कै घाव, दयौ धँनु बाँनन आपन दाव ॥६५७
परं रन-मंडल बीच परेख, ईलात के चक्र ज्यु हौं धनुं येक।
छुटे सर भाँन मनौ कर[१३] संग, मिटैं तम तौर[१४] फटै ऊतमंग[१५] ॥६५८
बढ़ै बिसफार[१६] अवाजन बाज, दरार न पब्बय[१७] लेत दराज।
घंनी रघुनाथ करी सर घात, हटी खल फौज हीयै हहरात ॥६५९

१ कामदेव। २ बहिन। ३ तथ्य = सत्य। ४ पुत्र। ५ अभय = निर्भय। ६ क्रव्यादन = राक्षस। ७ मृगराज = सिंह। ८ मूर्खता। ९ कदर्य = कायरता। १० कही। ११ आग। १२ दुर्वाद = दुर्वचन। १३ किरण। १४ उसी प्रकार। १५ उत्तमाङ्ग = शिर। १६ विस्फार = धनुष की टंकार। १७ पर्वत।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

निरालय दीसत औध-नरिंद, छुट्यौ तम-फंद[1] सौं मांनहु चंद।
घने घट लाग पलावन घाव, श्रवें जिहं अंगन लोहु ऐ श्राव ॥६६०
परे रन तूट घने पग पाँन, कटे भुज नासका पाटीय कांन।
गिरे कहुं दंत भरे रत[2] गात, हले सब राखस मींजत हात ॥६६१
पिता कोऊ भ्रात पुकारत पूत, रच्यौ रन घोर लखौ रजपूत।
अनेक के तुल्य लख्यो नर येक, बलाय की लाय लई अबबेक ॥६६२
परे मुह काल के जाय पलाय[3], भई गत सर्प-चचुंदर[4] भाय।
अतौ कर फेर भये मुहमेज[5], तपे खल ग्रीखम-भाँन सतेज ॥६६३
प्रहारत तोमरहू घन प्रास, तहाँ रघुनाथ ऊड़ावत तास।
झपेटन बाँनन लाग झरंत, किते खल घायल ग्राहिं करंत ॥६६४
हुटै भट केक जुटै हरबज्र, ऊठै घठ धूंमत क्रोध ऊझल्ल।
सिटंरन ग्राय कटै तन सूर, रटै मुख हाय मिटै मगरूर[6] ॥६६५
भ्रमैं मति जुथ्थन-जुथ्थ भिरंत, पलादँन लुथ्थ पैं लुथ्थ परंत।
बहै सर लिप्तहु दीप्त बढ़ाय, भुजंगम[7] भींम मनौ भहराय ॥६६६
हलैं रघुनाथ की बाँन हिलोर बहे केऊ धार रहै जलबोर।
बरंगन अंगन करैं बहु बीर, परे गिर-श्रंग ज्युहीं लहि पीर ॥६६७
कहै कोऊ मूढ़[8] कहा खर कीन, पिछाँनेऊ नाँहिन पौरुख पींन[9]।
सबै चढ़ आय गये ईक सथ्थ, बिचारीय नाँहिन ये कहु बत्त ॥६६८
मरैं बिन भाग गयै डर मींच[10], लहै किम कातर तापद नीच।
त्रिमाँसक[11] आय जुटे रघुबीर, तहाँ गहि चांप चलावत तीर ॥६६९
तिनै रघुनाथ करै सत टूक, ऊठी मनुं ज्वाल की माल अचूक।
महाँ क्रत-हस्त[12] भये मन मुद्ध[13], जहाँ रघुबीर को देखत जुद्ध। ६७०
तकै रन दाव रहे धनुं तांन, पलादन पुत्तरी चित्त पखांन।
भये रन संकुल व्याकुल भेस, प्रकंपत गातन पुज्जत पेस ॥६७१
तजी तन ग्रास कटे तन-त्रांन[14], ऊमडिय जुद्ध भये अगवांन।
हँमंल्लँन फौज ऊभल्लन हाथ, घुमंडीय राघव घल्लन घात ॥६७२

---

१ राहु। २ रक्त। ३ दौड़कर। ४ सांप-छूछूंदर। ५ सम्मुख। ६ घमण्ड।
७ सर्प। ८ मूर्ख। ९ पुष्ट, प्रबल। १० मृत्यु। ११ विमनस्क = दुःखी होकर।
१२ सिद्धहस्त। १३ मुग्ध। १४ तनुत्राण = कवच।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तहाँ रघुनाथ गहे धनुं तीर, बिड़ारत नैरत[1] हेरत बीर।
गहे बन-बीच वहे गजराज, मरोरत कंध ज्युहीं मृघराज ॥६७३
मिली रन एक अनेकन मंड़, झरं खल बाँनन झुंडन-झुंड।
पतंगहू दीप लखै परकास[2], परं जर आय कै ताहि के पास ॥६७४
ईहै गत होय पलादन-अंग, जुरं रघुबीर करं जिह जंग।
मँड़े नट खेल मलंगन मार, ऊलट्टत घोरन तै असवार ॥६७५
रहे रघुनाथ जहाँ रन रूठ्ठ[3], बढे झर बाँनन की घँन बूठ्ठ[4]।
खरे कँऊ घूंमत मुंडन खंड दिखावत मांनहु बिष्टर डंड[5] ॥६७६
परे ऊतमंग कटे धर[6] पाव, प्रहारन राधव बाँन पसाव।
तुरंगन तूटत तंग-समेत, परं तहाँ जीन कटं पखरेत ॥६७७
ऊड़े गज-पिठ्ठन केतु[7] ऊचूल[8], हुलै बिच अंबर सेत[9] दकूल[10]।
प्रभा तिह दीसत पाँन[11] प्रसंग, चढ़ी मनुँ ड़ोर बढ़ी केऊ चंग[12] ॥६७८
लटं ईभ[13] बाँनन टक्कर लाग, भ्रमै पग चिक्कर[14] जावत भाग।
भजै खर[15] विस्वर हू कर भूँख, अनी[16] निसचारन[17] बाढीय ऊक ॥६७९
भयातुर डोलत चित्त भ्रमाँत बिह्हबल[18] कातर[19] कै बिललात।
ईतै रन राघव जूझत एक, ऊतै खल दौरत आय अनेक ॥६८०
परं सर लागत ह्वै गत-प्रांन[20], मही सब छाय रही मुरदाँन।
झुकै तिह ऊपर गिद्धन-झुंड, पलादन लाँचत चाँचन पिंड[21] ॥६८१
बिबुल्लत चिल्लन काक बहोर, करै सोई भक्षन कालज[22] कोर।
मृघादन[23] जंबुक[24] खावत मंस, दबावत चावत कै मृघदंस[25] ॥६८२
तहाँ भर खप्पर लै रसतेज[26], पीयै बहू जुगाँन[27] के गँन पेज।
नचं बहु भूत बितालन नाच रहे रम्म ख्यालन ताल नराच ॥६८३
महाँनट लेत है मुंडन-माल, खिलं जहाँ गोरीय देखत ख्याल।
भयौ रन पेख अचंभत भाँन, तुरंगन बग्गन लींनीय ताँन ॥६८४
घटी अत फौज कटी सर घाव, दयौ खर दूखन आयुध दाव।
गहे फरसा कर मंड गरूर, सँभार कै आय जुरं रन-सूर ॥६८५

---

१ नैऋत=राक्षस। २ प्रकाश। ३ रुष्ठ। ४ समूह। ५ डूंड =सिरकटे बृक्ष। ६ धड़=शरीर। ७ ध्वजा। ८ अलग होकर। ९ श्वेत। १० दुकूल=वस्त्र। ११ पवन। १२ पतङ्ग १३ इभ=हाथी। १४ चीत्कार=चिंघाड़ते हुए। १५ गधे। १६ अनीक=सेना। १७ निशाचर=राक्षस। १८ विह्वल। १९ कायर। २० प्राणहीन। २१ शरीर। २२ कलेजा। २३ मृगादन=जरख। २४ सियार। २५ जंगली बिलाव। २६ रक्त=खून। २७ योगिनी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहे रघुनायक सौं कर क्रुद्ध, जुहारीय आय पलावन जुद्ध ।
गने हम कोमल बालक गात, घलो नह ताहीयतैं तन घात ॥६८६
रहौ पग मांड अरे रजपूत, करैं कछू बीरन की करतूत ।
ततौ हम जांनहिगे कछू तोहि, महाँ बलमांन तहै नहि मोहि ॥६८७
सुन्यौ रघुनायक बाँनीय-सोर, बिचार कै बोलेऊ कथ्थ बहोर ।
न जांनत छत्रीय जात निसंक, सुनावत बाच मनावत संक ॥६८८
लई भट ओट रह्यौ बललार, मिली नह बाँनन की तन मार ।
गरज्जत मूढ बजावत गाल, सहै किन बाँनन के नटसाल ॥६८९
टँका-रव[1] कीन तहाँ धनुं ताँन, बकार कै[2] राघव मारेऊ बाँन ।
कटे कर आसर के कर-क्रुद्ध, बक्यौ मुँह फार कै ध र बिरुद्ध ॥६९०
कटे सर मारकै दंत कुदार, चढ्यौ तऊ आय हीयैं निसचार ।
भरयौ मुख बाँनन तिग्धन[3] भार, परयौ अरराय भयौ भव[4] पार ॥६९१
मरे खर दूखँन देख मदंध, बरख्खत फूल जहाँ सुर-ब्रन्द ।
सुखी मन मोद लह्यौ रिखि संग, पराक्रम राघव पाय प्रसंग ॥६९२

दोहा

जय पाई रघुवर जहाँ, खर दूखँन बल खंड ।
सँग निसचर चवदा सहस[5], बीर परे बल बंड ॥६९३
करबर[6] सर मारयौ कटक[7], भूंम ऊतारयौ भार ।
सुर नर मुंनि जाँने सकल, ईह हरि कौ अवतार ॥६९४
आये सीय लछमन ईतै, रोखारुन[8] लख राँम ।
पग-बंदन कीने परम, सुभग रूप घनस्याँम ॥६९५
के कुंजर पिंजर कटे, अश्व और असवार ।
बन नारा ज्यूंही बहत, धरा रुधर की धार ॥६९६
महाँमोदमय मैथली, बिहसत लछमन बीर ।
सबै बात पूंछत समर[9], धर ऊर में कछु धीर ॥६९७
सीया लखँन बतरात सम, रोख मिट्यौ रघुनाथ ।
दहुन दिखावत खेत[10] दृढ़, हाथन सौं गहि हाथ ॥६९८

---

१ धनुष की आवाज। २ चुनौती देकर। ३ तीक्ष्ण। ४ संसारसागर। ५ सहस्र = हजार। ६ राक्षस। ७ सेना। ८ रोषारुण = क्रोध से रक्तवर्ण। ९-१० युद्ध।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

समर-भूँम का देख सब, आये रघुवर आप।
मेल्यौ धनुष मुंकाँम-मह, कट-पट[1] छोर कलाप ॥६६९
भाग सुपनखां स्रमत[2] भय, गई लंकपत-ग्रेह।
खर दूखँन दोनो खँबर, निसचर मरे निरेह ॥७००
नर निसचर मारे निरख, प्रहरन ग्रहन पिनाक[3]।
श्रवन[4] काट नारी समुझ, निरभय काट्यौ नाक ॥७०१
दसकंधर[5] तेरी दई, कोट[6] दुहाई क्रूर।
येकहु नहि मानीं ऊनहिं, गहै गुमान गरूर ॥७०२
सुरपनखा को तिह समय, बूझी रावन बात।
आये बन में कौंन ईह, असह करत उतपात ॥७०३

छंद भुजंगी प्रयात

सुपनख सुनी रांवन बात सारो अजोध्यापती कथ्थ सांची उचारो।
दहू बीर है दासरथ्थौ[7] दुलारे, सुबहू जिहीं ताड़का कां सँघारे ॥ ७०४
ईखू[8] मार मारीचहू कां ऊड़ायो, छुटै चंग ज्यां बेग ताही चढायौ।
अपाची[9] दिसा आय छायौ अजां ही, निहारैं उदीची[10] दिसा नैन नांही ॥ ७०५
पिनाकी[11]-धनुर्तोर कै जीत पाई, बरांगी[12] जिहीं ज्यानकी कौं बिवाही।
पिता पाय अग्या बनोबास पाये, ऊभ भ्रात नारी त्रहूँ संग आये ॥ ७०६
प्रतग्या रिखीवृंद कौं या प्रचारी, सबं मारहूँ भार भूँमै सुरारी।
बिरूपा करी मोहि कौं रांम बीरं, पुकारी खर-दूखनं पाय पीरं ॥ ७०७
बढ़े सों कढ़े बैर लेनं त्रिचारा, सोई ह्वै गये काल के ग्रास सारा।
सुपनखा बिसासी[13]कह्यौ ताहि सेती अहो चित्त ना कीजीयै चित एती ॥ ७०८
लखो हौं सबै ताहि सां बैर लेहूँ, महांबाहु जांनो पती लंक मैं हूँ।
बिरूपा गई ग्रेह कौं ताहि बेरी घली हीय लंकेस चिंता घनेरी ॥ ७०९
कसे सिंदनं[14] जोर कै संकुकनं[15], बड़े बेगवारे जिहीं धुम्र-बर्नं[16]।
पती लंक को सिधु चाल्यौ प्रतीरा[17], प्रकासी तहां चाय मारीच पीरा ॥ ७१०
तबै बोल मारीच लंका-पती कौं जनाई कथा सांच की जांन जीकौ।
खर दूखनं मार भूमै खपाए, जती-रूप तोहू पती औध जाये ॥ ७११

---

१ कटिपट = कमरबन्द। २ थकी हुई। ३ धनुष। ४ कान। ५ रावरण।
६ कोटि = करोड़। ७ दाशरथी = दशरथ के। ८ इषु = बाण। ९ अवाची = दक्षिण।
१० उत्तर। ११ शिव। १२ सुन्दरी। १३ सान्त्वना दी। १४ स्यन्दन = रथ।
१५ गधा। १६ धूम्रवर्ण = काले। १७ तट।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहुँ भूल के बैर जासाँ न कीजै, सु बीती कथा मोहि सेती सुनीजै।
वही बाँन कै बेग मारं ऊछारचौ, सु पै आज लौं चित्त नाँही सँभारचौ ॥ ७१२
सुनी राँवनं बात मारीच सारी, अजै भीरुकं[1] भाव कौं तूं सुरारी।
सु पै बीर कौं भाव ह्वै सावधांनं हलै संग मेरी कहा लाभ हाँनं ॥ ७१३
जबै राँवनं हीय सिद्धांत जाँन्यौ, तबै नीच मारीच हु संग ताँन्यौ।
कह्यौ लंक कै राज ज्यौं व्याज[2] कीनौ भये इवनं के बनं कौ ऐन[3] मोनौ ॥ ७१४
पहूँच्यौ सोई राँम के धाँम[4] पासें, प्रभा अंत सौ क्रंत[5] माँही प्रकासें।
बिलोक्यौ तँही अट्टवी में बदेही, ऊचारी तहाँ राम सौं कथ्य ऐही ॥ ७१५
ईही ऐन कौं मार कै क्रंत आँनै, महाँबाहू मेरौ हीयौ साँच माँनै।
सीया की सुनी बात राँमं सनेही, चले चाँप लै बाँन लीने चुने ही ॥ ७१६
जहाँ लच्छनं राँम दीनौ जताई, ईहाँ जातुधाँनं फिरै आततताई।
सीया ही प्रीया की जुतै सावधानी, रुखारी करौगे थिरा[6] है बिराँनी[7] ॥ ७१७
चले अट्टवी कौं जबै रामचंद्रं कहुँ नाल[8] हेरं कहुँ रंध्र. छिद्रं[9]।
अगै सौं अगै हू भगै जाय ऐनं, दगै दाव नाँहो जगै बाँन देनं ॥ ७१८
गये दूर लै अट्टवी काँ गहीरा धरी अंत को चाहि कै जंतु धीरा।
अबै राम आगै नहीं ऊबरूँगौ, मुगत्ती[10] मिलंगी सुमत्ती मरूँगौ ॥ ७१९
घरं ध्यानं जोगिंद्र रुद्रादि ध्यावे. वही दौर कै मोर कै पिट्ठु आवै।
लखूँ नैन सौं रूप स्याँम ललाँमाँ, धरं आँमना काँमना दिव्य धाँमा[11] ॥ ७२०
मती सोच मारीच नं पांव मंडे, चठटे चिला चाप सौ बाँन छंडे।
घल्यौ घात मारीच कै गात गाढी, बिथा[12] प्राँन कै हाँन की ताहि बाढी ॥ ७२१
सुमंत्रेय हा लच्छनं स्याहिकारी[13], हितू होय कै भीर ऐहौ हमारी।
परे नीच माँरीच ऐसौ पुकारचौ, सबै काँम लकेस कौ ताहि सारचौ ॥७२२
लग्यौ घाव साचौ परचौ भूँम लेटे, सोई राँम नं बंध कोनौ समेटं।
बहे[14] ऐन लै राँमहू धाँम बाटी, कैसे पिट्ठु काँ निठ्ठु[15] झेले ककाटी[16] ॥७२३
सुनी बाँन ताही समं धाँन सोता, भई सोक में मग्न बोली सभीता[17]।
सुमंत्रेय मेरी सुनौ बात आँनं, परचो राँम कै संकटं आय प्राँनं ॥७२४

---

१ कायरपन। २ बहाना, कपट। ३ एण=हरिण। ४ स्थान। ५ कृत्ति=चमड़ी। ६ स्थिरा=पृथ्वी। ७ दूसरे की। ८ नाले। ९ कन्दरा रन्ध्र=गुफाछिद्र। १० मुक्ति ११ स्वर्ग, बैकुण्ठ। १२ व्यथा=पीड़ा। १३ सहायक। १४ चले। १५ नीठ, कठिनाई से। १६ गरदन। १७ भयसहित।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

असाता[1] पुकारे जबै नाथ ऐसे, करौ स्याहि[2]नाहीं जबै भ्रात जकैसे।
सीया सासनं[3] पाय सौमित्र सोऊ, गयौ राम कौं जोवनै[4] सो अगेऊ ॥७२५
पती-लंक कै सीय कौं धाँम पाई, अकेली लखी ताहि समीप[5] आई।
कीयौ पर्न-की-साल[6] सौं हर्न[7] काजा, सोया राँम राँमा-लोयं संग साजा ॥७२६
मिल्यौ गिद्ध-राजा जटायू महाँना. ठस्यौ जुद्ध लंकेस सौं बेर ठाना।
वये घाव पँने घनै राँम-द्रोही, छनी पंख काटो जहाँ यं चछोहो ।७२७
गिरचौ भूँम माँही जबै गिद्ध गाता, बद्यौ रथ्थ काँ हाँक कै सो बिख्याता।
बिलोके जहाँ बृंद साखा-बिलासी[8], रटै राँम को नाँम आँनंद-रासी॥७२८
सुन्यौ ध्वाँन[9] कौं आँन कै कोस सर्बा, ईहै दीन बाँनी पिछाँनी अगर्बा[10]।
द्रुतं ज्याँनकी अंसुकं[11]देख डारचौ, सोई लै बनोका[12]भले ही संभारचौ ॥७२९
पती-लंक लंका गयौ लै पलाई, बिचै बाग कंकेल[13] छाया बसाई।
ईहाँ ऐंन काँ मारकै राँम आये, नदी-तीर गोदावरी नीर न्हाए ॥७३०
सपेखी तबै आय कै पर्नसाला, बदे लछ्छनं बैन बाहू बिसाला।
सीया है कहाँ पै प्रीया प्राँन-प्यारी, दुरी[14] मैथलाधीस देखौ दुलारी ॥७३१
सुमंत्रेय खोजो सबै पर्नसाला, बिलोकी नहीं सीय नैनाँ बिसाला।
सुके दंत वरत्रं रुके हीय स्वासा. बहै नेत्र बारो न पावै बिसासा ॥७३२
बढचौ राँम कै होयहू मैं बिखादं[15], परी वज्र सो आय गाढी प्रमाँदं।
क्रपानाथ चाले जबै हेर-काजै[16] सबै काननं[17] थाँन-थाँनै समाजै ॥७३३
गिरी-किंदरा[18] खाल नाली गहीरा, तरू अट्टवी कुंज ही ताल तीरा।
अपाची[19]दिसा चाल कै जाय आगे लख्यौ गिद्ध-राजा परचौ घाय लागै ॥७३४
जहाँ राँम पूँछचौ जथाँ-जोग जाही, करे अंग कौं भंग कौनै कसाई।
जटायू कहा राँम भाखी जथा सौं, महाँ जुद्ध लंकेस कीनौ म तासौं ॥७३५
हरो ज्याँनकी लै चल्यौ ताहि हेरी, मती आतताई परचो द्रष्ट मेरी।
करचौ जुद्ध तौहू सरचौ नाहि काजा, धरा मं परचो तूट राजाधिराजा ॥७३६
सुनी राम बाँनी ईहै गिद्ध सेती, रची घाव में पौंच कै[20] ताहि रेती।
धरे सीस पै हाथ बोले अधीसा, खरौ भक्त मेरौ तुही है खगीसा ॥७३७

१ दुखी। २ सहायता। ३ आज्ञा। ४ देखने, खोजने के लिये। ५ सामीप्य = नजदीक। ६ पर्णशाला = कुटी। ७ हरण। ८ वानर। ९ शब्द, ध्वनि। १० गर्वरहित। ११ वस्त्र। १२ पर्णकुटी। १३ अशोक वृक्ष। १४ छिप गई। १५ विषाद = दुःख। १६ खोजने के लिये। १७ वन। १८ गिरिकन्दरा = पर्वतगुफा। १९ अवाची। २० पौंछ कर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लखावै तुमैं नीक सो दाँन लीजै, कछू कांमना होय सो सिद्ध कीजै।
जटायू तहाँ येहु बोल्यौ जवाँनी, धरैं ध्यांन जोगिंद्र बृह्माद ध्यांनी ॥७३८
वहै अंत कै तंत में नाम आवै, पसं बं[1] जिहीं बास निर्बांन[2] पावै।
वहीं देह धारैं खरे मोहि आगें, महाँराज औरैं कहा दाँन मागें ॥७३९
निहाँरे तिहाँरौ ईहै रूपनाँथा, सबै रीत साँ ह्वै चल्यौ हूं सनाँथा।
तहाँ गिद्धराजा वहै देह त्यागी, सिधायौ परं धाँम सभागी ॥७४०
क्रीया दाह कीनी तहाँ गिद्ध केरी, ऊभै भ्रातहू जाँन कीनी अबेरी।
सीया की जहाँ जाँन पाई सबै ही, तहाँ तें चले राँम आगें तबै ही ॥७४१
करैं हाथ लंबे धसे सीस कंधा, कहूँ अट्टवी बीच भेटयौ कबंधा।
तिही मारकै बाँन मारयौ तहाँ हीं, मिल्यौ सदगती जाय तातै महाँ ही ॥७४२
बढ़े काँननं[3] अग्र में राँम बाटी[4], सीया खोज कै काज बाँधे सपाटी[5]।
मिल्यौ भिल्लनी आश्रमं बीच मागा, रही प्रेम भक्ती मही सानुरागा ॥७४३
महाँ कंद-मूलं फलं मिष्ट मेवा; सु धारे सबैं भेंट में श्रेष्ट सेवा।
लये रीझ कै भोग लीने लगाई, भये अग्र जासौं जहाँ जुग्म भाई ॥७४४
दया पाय कै भिल्लनी बोध दीनौ परा-भक्ति कौ ताय पीयूख[6] पीनौ।
भई चित्त में मग्न जोगाग्न[7] माही, द्रगं देखतै स्यांम कै देह दाही ॥७४५
जहाँ काँननं में बढ़े राँम जाते, बतावैं सुमंत्रेय कौं ज्ञान-बाते।
परेख्यौ अगें एक कासार[8] पंपा, चँमेली लता केतकी राय चंपा ॥७४६
बिराजे जहाँ राँम छाया बिलोके, ऊपायौ अनंदं हीया में अनोखें।
कीयौ मंजनं रंजनं धोय काया[9], रजै कोट-कंदर्प-भा[10] राँम-राया ॥७४७
मुनंद्रं जहाँ रामचंद्रं मिलाई, प्रसंनं भये आय कै दर्स पाई।
तहाँ बृंदबृंदारका[11] आय तेतै, करे बंदना अर्घ-हू-बाद केतै ॥७४८
ध्रती[12] धारकै सो गये धांम-धांमं, रहे जोय सीता गये अग्र राँमं।
सँमीपं गये ता समैं मूक सैलं, गहीरं घने छूवते घाट गैलं ॥७४९
बसे ताहि कै सीस सुग्रींव बासा, खरे संग माँहीं भरे भीच[13] खासा।
दुहूँ बीर काँ आवते मग्ग देखै, बढ़ी चित्त में आय चिंता बिसेखै ॥७५०

---

१ प्रसाद। २ निर्वाण = मोक्ष। ३ जंगल। ४ वाट = मार्ग। ५ तेजी से। ६ पीयूष = अमृत। ७ योगाग्नि। ८ तालाब, पम्पासरोवर। ९ शरीर। १० करोड़ों कामदेव की शोभा वाले। ११ देवता। १२ धृति = धैर्य, धीरज। १३ योद्धा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हनूंमाँनकौ दक्ष[1] सुग्रीव हेरं, निहारौ तिहीं जाय कै नीक नेरं[2]।
मतै बाल भेजे नहीं मारनै कौं, धनुर्बांन भूताँनहूँ[3] धारनै कौ ॥७५१
चलै औरहू सैल कौ मेल चेटी[4], सबै बीर कौं साथ लैहौ समेटी।
हनूंमांन बोल्यौ जोर हाथा, मिले राँम साँ जाय कै नाय माथा ॥ ७५२
बृतंतं[5] प्रकास्यौ हनूंमांन बीरा, सुनौ कोन हौ स्याँम गौरं सरीरा।
जबै राम बोले पती औध जाये, ऊभै[6] भूप अज्ञा बनोबास आये ॥७५३
बड़े राँम है नाँम जाँनौ बीसेरवं लघू नाम है लछ्छन ताम लेखौ।
रही संग में सुंदरी इंदरा-सो[7], अरण्यो फिरै ढूंढते ह्वै ऊदासी ॥७५४
सबै बात बीती कही सो सुनी तैं, प्रकासौ हमैं बिप्र आयौ पुनी तैं।
बिलोके ऊभै भ्रात सौं प्रीत बाढी, गही राँम के चर्न की सर्न गाढी ॥७५५
रजो पाय बंदे कह्यौ राम-राई, सु पै दास तेरौ बिचारो सदाई।
हनूंमांन मेरौ कहै नाँम हेरौ, कीयौ संग आरँण्य सुग्रीव केरौ ॥७५६
मिलौ चाहिकैं जाहि कीजैं मिताई[8], सबैं रावरे कीस ह्वैं है सहाई।
करैंगे सबै खोजना सीय केरी महांराज सांची सुनौ बात मेरी ॥७५७
पिछाँनी कपी बात विस्रंभ[9] पायौं, कियौ अंजनी-पूत हू कौ कहायौ।
चढाऐं कपी[10] पीठ लैकै चलाई, भई भेट सुग्रींव सौं जुग्म भाई ॥७५८
ऊभै ओर सौं जोर प्रीती अनंता, महाँराज सुग्रींव के होय मिता[11]।
चितै अग्न-साखी[12] करे सूर-चंदा, प्रचार्यौ हनूंमांन ऐसौ प्रबंधा ॥७५९
कह्यौ राँम कौं मित जानै कपीसा, अहो बात मेरी सुनौ औध-ईसा।
मिटै बेदना[13] जाँनकीहू मिलेगी, घनीं आसरा-अंग घातै घलैगी ॥७६०
तजो सोक कौं होय रैहो नचीता[14], समाँचार मोसौं सुनौ येह सीता।
ईकै बेर बैठे ईहीं अद्र ऊर्द्धं, सुनी राँम नाँमं धुनी स्राँन सुद्धं ॥७६१
निहार्यौ जबै अंतरीक्षं[15] निराला, बदै राम बाँनी गिरा जांन बाला[16]।
लीयें रथ्थ में जात हौ माँग लंका, सोई जांन पोलस्त[17] लीजं निसंका ॥७६२
द्रुतं देखकै नार नै चीर डार्यौ, सोई किंदरा में धर्यौ है सँवार्यौ।
पती-औध आँनं सुनी बात पूरी, जिहीं कौं लखै है मगावौ जरूरो ॥७६३

---

१ चतुर। २ समीप। ३ तरकस। ४ तत्काल। ५ बृत्तांत। ६ उभय = दोनों। ७ इन्दिरा = लक्ष्मी। ८ मित्रता। ९ विश्वास। १० कपि = वानर। ११ मित्र। १२ अग्निसाक्षी। १३ पीडा, व्यथा। १४ निश्चिन्त। १५ आकाश, ऊपर। १६ स्त्री। १७ पौलस्त्य = रावण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जबै आँन सुग्रींव नै चीर झींनौ, दया-सिंधु के हाथ में ताहि दीनौ।
लयौ रांम नै ताहि छाती लगाई, भरे नीर नैना लखे जुग्म भाई ॥७६४
दसा देख सुग्रीव नै बोध दीनौ, पती-औध का सेव[1] काजै प्रबीनौ[2]।
दसूंही दिसा भेजहूं देखबे कौं, अनूंप बली दूत है एक.एकौं, ॥७६५
धरा[3] स्वर्ग पाताल के धाँम-धाँमं, अनेकं लखै अट्टवी औ अरामं[4]।
करं सोधना[5] आय मोकौं कहैगे, बली फौज लैकं तहीं कां बहैगे ॥७६६
पदं पंकजं रावरे ही पसावा, अरी[6] जीत हाँ दाव-धांव ऊपावा।
हूई एह मेरी गती हौनहारी, रहै बाल भ्राता हमाँरौ खरारी ॥७६७
ऊभै भ्रात की देह द्वै प्राँन एकौं, बढी दीह पै दीह[7] प्रीती बिसेकौ।
ईकै बेर कै दुंदभीं देत आयौ, जिहीं बाल[8] कौं अर्ध-रात्रो जगायौ ॥७६८
कपी बाल मोसौं भुजा जुद्ध कीजे, पिछांनूं बली कौं होयौ सो पतीजै।
महाँबाहू ऊठ्यौ गयौ संग में ही, तहाँ तै भग्यौ बाल कौ देखतै ही ॥७६९
धस्यौ दुंदभी किंदरा हू धरा कै, तिहीं पिट्ठु कौ बाल लाग्यौ तराकै।
महाँबाहू जांन्यौ हित् भ्रात मोकै, रह्यौ द्वार ठाढौ जहाँ घाट रोकं ॥७७०
ईकै पक्ष[9] में दुंदभी मार ऐहौं, जबै भ्रात दौनूं पुरी संग जैहौ।
ईती औध कौ होय जो कोय अंता, मरयौ बाल कौं जाँन लैहौ सुमिता ॥७७१
गयौ बाल ठाढौ रह्यौ मैं गली पै, बितै मास कैहू जित्यौ ना बली पै।
बहीं द्वार में रक्त की धार आई, भली भाँत जाँन्यौ मरयौ मोर भाई ॥७७२
सिला द्वार दैकै चल्यौ मैं सभीता, रही राज-हींनी[10]पुरी स्यांम-रीता[11]।
मिले दक्ष मंत्री दयौ राज मोही, द्रुतं बाल आयौ भयौ भ्रात-द्रोही ॥७७३
सबै लूट लीनी मता नार संगी, भग्यौ द्वार मैं हू गई बुद्ध-भंगी।
ईहै श्राप के ताप बाली न आवै, बुरयौ मैं रहूं सैल पै बैर दाबै ॥७७४
कह्यौ रांम बाली भयौ श्राप कैसे, जथा-जोग भाखौ लगी नैन जैसे।
कही बात सुग्रींवहू रांम-काजा, सबै ही तहाँ कीस[12] बैठे समाँजा ॥७७५

---

१ सेवा। २ प्रवीण = चतुर। ३ पृथ्वी। ४ आराम = बाग। ५ शोध = खोज। ६ अरि = शत्रु। ७ दिनों-दिन। ८ बाली। ९ पखवाड़ा, पन्द्रह दिन। १० राजा से रहित। ११ स्वामिरिक्ता = स्वामी से रहित। १२ बानर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बली दुंदुभी देत वारा न पारा[१], पती कीस बाली नियुद्धं प्रचारा।
जुरे बीर दोऊ चतूर्जाम[२] बीते, जिही तै कपी बालहू जुद्ध जीते ॥७७६
पछारयौ ईहीं सैल पै भू पटक्यौ, जिहीं मुष्टका मार सौं देत जक्यौ[३]।
मुनीं की कुटी सैल जाही मभारा, धसी ताहि में श्राय अग्नेय[४]-धारा ॥७७७
मुनींसा गये अंग के मंजनें[५] कूं. भले नीर सौं म्लांनता[६] भंजनें कूं।
मुनंदं मुरे[७] देख कै पर्नसाला, बढी आय कै क्रोध-ज्वाला बिसाला ॥७७८
कह्यौ ता गिरी देखहै जो कपिंद्रा, नसै छार[८] ह्वैके बधै दीर्घ-निद्रा[९]।
ईही भीत सौं बाल आवै न यापै, जुतै मंत्रि-बर्गा रह्यौ आय जापै ॥७७९
सुन्यौ दुख्य सुग्रींव कौ रांम स्रांनं, प्रतज्ञा करी तांम सारंगपांनं[१०]।
ईहीं बाल कौं मारहूँ बाँन येकै, बचै रुद्र की सर्न नाँहीं बिसेकै ॥७८०
कही रांम सौं तांम सुग्रींव कथ्थं, सबै भांत सौं बाल जानौं समथ्थ।
ईहीं ताड़ है अद्ध-चंद्रं-अकारं[११], सोई बाल रोपे कहीं ले सु मारं ॥ ७८१
बली एक ही बाँन सौं सप्त बेधै, खरौ बीर सोऊ कपी बाल खेधै[१२]।
महाँबाहू श्रीरांम लै बाँन माँरयौ, ईकै बेध सौं-मूल[१३] सातूं ऊखारयौ ॥७८२

दोहा

ईहाँ साहँस देख्यौ अतुल, निज भुज-बल रघुनाथ ।
कीय अस्तुत सुग्रींव कपि, हरख जोर जुग हाथ ॥७८३
बार-बार कर बींनती, करी अरज कपी-राज ।
बाल बली कौं काल-बस[१४] अब हम जांन्यौ आज ॥७८४
हुकम होय सो करहि हम, नांथ गरीब-नवांज[१५]।
बाल बली कौ होय बध, ऐसौ करहु ईलाज[१६] ॥७८५

छंद हरगीतका

पत कीस की सुन आँन रघुपत धनुस बाँनन कर धरे।
ऊरजइव[१७] धारन कीयै ऊर में सरन पंपा संचरे[१८] ॥

१ न पारावार = अपरिमित। २ चतुर्याम = चार प्रहर। ३ मरा। ४ आग्नेय = रक्तधारा। ५ मज्जन = स्नान, शुद्धि। ६ मैल। ७ लौटे। ८ क्षार। ९ मृत्यु। १० शार्ङ्गपाणि = धनुर्धर, राम। ११ अर्द्धचन्द्राकार। १२ मारे। १३ समूल = जडसहित। १४ काल के वश में। १५ दीनबन्धु। १६ उपाय। १७ ऊर्जस्व = उत्साह प्रताप। १८ चले।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुग्रींव श्रीरघुबीर की सुन बोल बाल बकार कै।
ऊठ बाल आय अरचौ ईतै धुर खेल संगर[1] धार कै ॥७८६
भिर परे रन की भूंम में झट झूंम-झूंम झपेट कै।
घमचक्क घक्कन धूंम बाढी भ्रात हाथन भेट कै।
बल तिष्ट कै सुग्रींव बाली मुष्ट मारी हीय-मही।
तज तुरत भागौ खेत तह सुग्रींव पीरा नह सही ॥७८७
ईक रूप रघुबर लखे ऊभयन भए बिस्मय-भाव[2] कै।
धनुं बाँन पाँन[3] धरे रहे घाल्यौ न रन में घाल कै।
सुग्रींव भागौ चरन सरनै देख रघुबर कर दया।
तिह पाँन परसत[4] बज्र सम-तन तुरत कीनौं वह तया ॥७८८
सुंम-माल[5] कंठ सुकंठ[6] के पहिराय हित पहिचांन कै।
परचाय कर रन तत्परा जीय मित्र अपनी जाँन कै।
सुग्रीव बाली भिरे संगर उभय भट[7] अकुलाय कै।
कट-कटत विकट सु दाव कर-कर लपट-झपटन लाय कै ॥७८९
पहिचाँन रघुबर परसपर बल सरस बाढत बाज कौं।
लै बिटप[8] ओट ही सर लगायौ करन ताके काल कौं।
हीय बीच लागत बिकल ह्वै धर गिरचौ बाली धूज कै।
पत अवध के लीय दरस कंपिपत पर्म मनसा पूज कै ॥७९०
गहि मुक्त-पद बाली गयौ परलोक-हित पहिचाँन कै।
प्रभू-दरस दे कर सरस पावन[9] जन निरंतर जाँन कै।
सुग्रीव कौं दीय राज सबही सहत तारा सुंदरी।
जुगराज[10] अंगद बाल-अंगज[11] करचौ हित करुनाँ करी ॥७९१
सब राज-मंत्रि-समांज सौं निज काज निरभय निब्बहै।
बरसात-कालही पाय रघुबर गिर प्रवर्खन[12] कौं गहै।
ईक फटक-मन[13] की गुहा अद्भुत नीक राची निर्जरा।
जुग भ्रात बैठे जाय जामह पाय सुख रुख तत्परा ॥७९२

१ युद्ध। २ आश्चर्यभाव। ३ पाणि = हाथ। ४ स्पर्श करते ही। ५ पुष्पमाला। ६ सुग्रीव। ७ योद्धा। ८ वृक्ष। ९ पवित्र। १० युवराज। ११ बाली के पुत्र। १२ निर्वाह करता है। १३ स्फटिकमणि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रत संमृती रू पुराँन की बर बेद भेद बिचार की।
बातै अनेकन निस्तरं छित[1] छत्रीया-धृम-चर[2] की।
लघु भ्रात ईक दिन लक्षमन कौं कहो अनुँभव की कथा।
बैंदेह-नंदनि[3] बिरह बाढत जल तरंगनि बल जथा ॥७६३

केंकई ऊर की काँमना भई सिद्ध सहज सुभाव सौं।
पितु मरन हम बँनवास पायौ पुन तिहीं परभाव सौं।
बिन ज्याँनकी नहि अवध बस है हौनहार सु होय है।
अरु कर्म की गत पर्म अद्भु त धर्म सौं अघ[4] धोय है ॥७६४

निर्भाग[5] मनुंके बंस निमँत[6] हुयौ नाँहिन होयगौ।
मम संग आये तुमहुँ लछमन प्रीत-बस सौं चित पगौ।
अबहूँ सिधावहु अवधपुर कौं बिपत तज बनबास की।
चित हमहु लागी रहस चिंता तुमहु तन के त्रास की ॥७६५

अब नहिन बीसत सुख उजागर बेदना-सागर बिचै।
मन भयौ नवका[7]-भँवर मेरी नाच पुतरी[8] नट रचै।
बस दुष्ट राँवन रहि बिदेही बिपत लहि बिस्तार कौं।
पति-सरित[9] बिच लंकापुरी पावै सु किंह बिच पारकौं ॥७६६

श्रीरांम की कर बात श्रवनन बोल लछमन बीर कै।
बिपता कहा तुम मति बिपश्चत[10] धरहु हीय-मह धीर कै।
भय-चकत[11] ह्वै तुम बचन भाखत है प्रगल्भ[12] हमेस सौं।
विद्वेस[13] अपनौ सबही बिध सौं लहैगे लंकेस सौं ॥७६७

बस सोक हुय कंहुँ अल्पबुद्धी बिपत करहि बिलाप कै।
देखी न यैसी देखहै अनधीरता मन आप कै।
पितु-मरन बिहरन बिपन पुन जिम सीया-हरन सु जाँनियै।
ईह काल को गत करन-अकरन-ऊद्धरन अनुँमाँनीयै ७६८

जिम जोग गनहु बिजोग संजुत भोग रोगहु गर्भता।
ईक एक पाछै होय अबस ही सुखहु दुखहु सर्बथा।

---

१ क्षिति = पृथ्वी। २ क्षत्रिय-धर्माचरण। ३ वैदेह-नन्दिनी जनकपुत्री सीता। ४ पाप ५ भाग्यहीन। ६ निर्मित = रचित। ७ नौका। ८ पुत्तली। ९ सरित्पति = सागर। १० विपश्चित् = विद्वान्। ११ भयचकित = भयकातर। १२ तीक्ष्ण। १३ = विद्वेष = वैर। १४ विपिन = वन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जिह रीत बिछुरी जाँनकी पुन मिलहि अवसर पायकै ।
नहि सोक कीजै नाथ निर्भय बिपत चित्त बसाय कै ॥७९९
बरसात बीतत दिसा बिदसन[1] करहि सुध कपिराजहू ।
हँनमंत अंगद बीर हरबल सकल जोर समाँजहू ।
चढ़ जायगे रन खेत चत्वर[2] घने सत्वर[3] घेर कै ।
पति-लंक कौं कर-जेर[4] प्रहरन[5] बिढ परै जिह बेर कै ॥८००
अथवाँ क भरथहु भ्रात अपनौ अवधपुर सौं आंन कै ।
मिथला-नरेस मिलाय कै मिल घेर दल घमसाँन कै ।
जुर लंक कौं चढ़ जाँयगे जुत चँमूं[6] जोर जमाय कै ।
कछु सोच नाँहि कृपाल कीजै अधिक ऊर अकुलायकै ॥८०१
ईष्वाक कुल[7] की रीत ना ईह पेख लेहु परंपरा ।
रघुराज प्रपितामह रह्यौ धर छत्र भुजबल सहि धरा ॥
चढ़ आप ही रथ बढ चले दस दिसन देस-बिदेस कै ।
वसुमती[8] बिजय बसायकै खल बिपुल दल-बल खेसकै ॥ ८०२
प्रभू-चरन के परताप सौं हम सरन रहत हमेस ही ।
सुर-असुर-जेता समुझीयैं कछू आप मुख जात न कही ।
पति लंक रांवन कौ प्रचारहू जुद्ध करहै जायकै ।
भुज आपने ही भरोस सौं सीय आँनहै सरसायकै ॥ ८०३
बस काल की रात बज्रधर[9] नालीक[10] छिप रहे नाल में ।
पद लह्यौ सुरपति नहुक[11] नरपति कृत्रमी[12] बस काल में ।
पुन श्राप द्विज सौं पतित ह्वै धर परचौ अहमति धार कै ।
पद लह्यौ फिर प्राचीनबरही[13] काल पाय करार कै ॥८०४
कहुं काल की रात कर्म सौं बिपता लही रघुबीरजू ।
साँमर्थ काँ कहा सोक है ऊर तजहु पीर अधीरजू ।
सोंमित्र बतीयाँ सुनत हीं रघुबीर छतीयां सीयरई[14] ।
ह्वै गई ताही बेर हेरत जाँन बंधव रन-जई[15] ॥८०५

---

१ विदिशा । २ आंगन । ३ शीघ्र । ४ नीचा दिखाकर । ५ आयुध, युद्ध । ६ सेना । ७ इक्ष्वाकुकुल । ८ पृथ्वी । ९ इन्द्र । १० कमल । ११ नहुषराजा । १२ कृत्रिम = बनावटी, अवास्तविक । १३ प्राचीनबर्हि = इन्द्र । १४ शीतल हुई । १५ रणजयी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बर मुनी नारद बुध बिसारद ईहीं अवसर आयकै।
दहु भ्रात साथहीं दरस दीय नभ-पंथ[1] सौ नीयराय कै।
कर जोर प्रभू बंदन करी पूजा सरी हीय प्रेम सौं।
घट[2] भयौ आँनद तिहू धरी निज रीत प्रीत सुनेम सौं ॥८०६
बिब भ्रात अरु मुनिराज बैठे पर्म हीय सुख पायकै।
ईतीहास नाना रीत अद्भुत सुमृत-नय[4] सरसाय कै।
बच कहे रघुबर देव ब्रह्मौ आय हम अमरावती।
किय हरन रांवन दुष्ट कहुँ संग पंचबटि सीता सती ॥८०७
सब बिध उदंत जहाँ मुनी ईह जांन आये आपहू।
अबलोक[5] बिपता बेर ईह करीयें न सोच कदापहू।
ईक कथा कीजे श्रवन ईह जाँनकी पूरब-जनम की।
मुनि-कंन्यका तप करत बन में ताहि तीव्र करनें तकी[7] ॥८०८
कर हेत तिह रांवन कह्यौ कंन्या न मानी तिह कही।
भुज आप बल-अभिमान सौं गन अबल-जात[8] तहीं गही।
कंन्या सु बोली कोप कै उतपत्त ह्वै है मथ ईला।
तब नास-हित लैजाहु तुम कहुँ हमहुँ चलहै जुत कला[9] ॥८०९
ईह अंस पद्मा[10] अवतरी पन आपही परभाव सौं।
लै गयौ ताकौं लंकपत निज नास-हित निरबाह सौं।
अज ईस नाथ अनांद आपही अरज देवन अनुसरी।
महाँराज रांवन मारने अवतार लीनौ हित अरी[11] ॥८१०
सोई ईश्वरी सीता सती अज ईस आप आनांद के।
अरु बेद च्यारहू ऊद्धरन मही मंडता मरजाद के।
कर आततांई लंकपत कौं मारहौ रन खेत में।
कछु अरथ शाहत जो कीयौ है सबै धीरज हेत में ॥ ८११
पतिवृत धारें सीया परबस रटत रांमही रांम कौं।
धर ध्यांन रांमही चरन ध्यावत बसत संग ही बांम कै।

---

१ आकाश-मार्ग। २ शरीर। ३ दोनों। ४ स्मृति-नीति। ५ देखकर। ६ कदापि = कभी। ७ कुदृष्टि से देखा। ८ अबला-जाति = स्त्री जाति। ९ इला = पृथ्वी। १० पद्मा = लक्ष्मी। ११ अरि = शत्रु।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पय कांमहंभा[1] पान कर निरबाह अपने नेम कौं।
सोई इंद्र पठवत है सदाँ पन[2] आप गन निज प्रेम कौं ॥८१२
हम निजर--देखी कहत है ईह रांम निश्चय राखीयै।
कुल-नास रांवन कौ करन ऊर समुझ रन अभिलाखीयै।
ताकौ ऊपाय करै तथा जिह जथां-जोगही जांनीयै।
अब मास अइवन[3] आयगौ बृत नउँ-रात्र[4] विधाँनीयै ॥८१३
बिध पूर्ब रीत बिचार कै करनीय काज करायहूं।
बिध[5] बिस्नु हर जिह जिस्नु[6] बिघ सौं जांमदग्न जुतैं जही।
श्रीअंबका के हेत सुमरन कीयौ कौंसक-मुन कही ॥८१४
सुन रांम नारद सीख कौं बिध-जुक्त पूंछी बात कौं।
नारद कह्यौं सुविचार निज भगवती-बृत जुग भ्रात कौं।
आराधना कीय सक्ती-आद्या अष्टमी निस आय कै।
चढ सिंध ऊपर चंडका बर लेहु कहो बतराय कै ॥८१५
जग-ईस रूप अनाद जलसय[7] आय रघुबर अवतरे।
लीय सेषहू अवतार लछमन बिपन-लीला बिस्तरे।
मुरजाद[8] च्यारहु बेद -मंडन खल-बिहंडन खेत में।
अरू देव सब कपि अवतरे रिपु-बंश मेलहि रेत में। ८१६
बाराह कच्छ रु मच्छ बांमन बार केऊ नर-हर[9] बने।
हरनंख[10] हंता हरन कस्यप गहे दानव अनगने।
केंऊ बार भक्त सहाय कीनी अबनी-भार उतारनं।
अब ग्रेह दसरथ अवतरे महाँराज रांवन मारने ॥८१७
चढ जाहु लंक निसंक चत्वर धंख रन की धारियै।
संघार खल सीय संग लै प्रभू फेर अवध पधारीयै।
बरदांन दै रघुबीर कौं सुस्थान देवी संचरी।
ऊपदेसं नारद पाय कं ईह अवध-पत मारे अरी ॥८१८

दोहा

लघु-बंधव सिद्धांत लख, नारद सीख निहार।
बर देवी रघुबीर लै तज्यौ सोक तिह बार ॥८१९

---

१ कामधेनु। २ प्रण। ३ आश्विन=आसोज। ४ नवरात्र। ५ विधि=ब्रह्मा।
६ जिष्णु=इन्द्र। ७ जलशायी=नारायण। ८ मर्यादा। ९ नृसिंह। १० हिरण्याक्ष

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लखन सीया नहि सुध लई, बरखा गई बिहाय[1]।
कपि-पत कौंऊ बातै कही, वही बधू रै बाय ॥८२०
प्रथम जाहु सुग्रींवपह, बात कहो सुबिबेक।
येते पै नहीं आयहै, औरै करहु ऊपाय ॥८२१
पवन-सुतन सुग्रींव प्रत, बात कही सुबिबेक।
मेघागम[2] बीती समय, बरती सरद[3] बिसेख ॥८२२
बाल हन्यौ ईक बान सौ, यैसे संमृथ ईस।
तोहि भरोसे रहे तेऊ, गहब्बर[4] सीस[5] गिरीस ॥८२३
कछु विलंब नहि कीजीयै, काज राम कपिराज।
मंत्र बिचारहु सकल मिल, ईह अवसर है आज ॥८२४
बोले हनमत सौं बिहँस, समय देख सुग्रींव।
सरस धिक्रीया[6] बिसय-सुख[7], जाहि लुभायौ जीव ॥८२५
मूले रघुबर भाव कौं, रहे ग्रेह सुख राच।
पवन-सुतन हम कीयेऊ पन, सो तुम करहू साच ॥८२६
दूत भेज दिस-बि-दस कौं, बंदर लेहु बुलाय।
सैल समंदर बिपन सौं, आवहिगे अकुलाय ॥८२७
सुन अंगद बोल्यौ संमुभ्र, दक्ष समय-गत देख।
औरन कौ नहि कांम ईह, बिन हनमंत बिसेख ॥८२८

छंदा मुक्तादाम

सुने जुगराज के बायक आंन, हल्यो[8] कपि लेवन कौं हँनूमांन।
गयौ सोई पूरब की लहि गैल[9], सबै बन किंदर बासीय सैल ॥८२९
मिल्यौ गव जाय जहाँ हँनमंत, बड़े दल संग लीयैं बलबंत।
कही हनमांन सुनी कथ आंन, प्रचारीय ताहीय बार प्रयांन ॥८३०
पठाय कै ताहि चल्यौ नभ-पंथ, समै तिहु राघव कौं निज संत।
गयौ गिर रोहिन है गमगीर, बसैं जहाँ दुर्धरहू कंपि बीर ॥८३१
कही रघुबीर सुग्रींव की कथ्थ, सबै भट लै चले बीर समथ्थ।
चल्यौ कदली बन कौं कर चाहि, मिल्यौ गज जाय तही पल मांहि ॥८३२

१ बीतगई। २ वर्षा ऋतु। ३ शरद ऋतु। ४ गह्वर। ५ शीर्ष = शिर, शिखर॥
६ धिक्क्रिया = धिक्कार। ७ भोग-विलास। ८ चला। ९ रास्ता।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हकार कै बीर कही हँनूमाँन, सुग्रींव कों भीर परी सुसथाँन।
बुलाईय बंदर लै ईह बेर, हले तुम जाबहु पाबहु हेर ॥८३३
चल्यौ गज फौज लीयै कपि चंड, मचक्कीय सेस हल्यौ बृहमंड[१]।
गही पब-कंकटहू बृज गैल, सभारत बीच घने बन सैल ॥८३४
बली सत पाठर सौं बल बंड, भिले संग केक मिले कपि-झुंड।
बिदा कर ताहि चल्यौ तिह बार, बिचच्छन राँम को काँम विचार ॥८३५
चल्यौ सुत-पाँन-कौ[३]पाँन को चाल, निरख्खीय पब्बय[४]धुंधर नाल।
मिल्यौ कपि जाय सिखंडीय मित्त, तहीं समुझाय कह्यो बरतंत ॥८३६
कराय कै कूंच चल्यौ तिह केर, हल्यौ मग अंजनी पब्बय हेर।
मिल्यौ तहां चाहि कै जाय कुमंद, ऊचारीय कथ्थ बली-मुख-इंद[५] ॥८३७
चल्यौ दल लै संग बीर चछोह, किलक्कत रांवन पै करि कोह[६]।
बढ्यौ हनुमंत जबै बरबंड, पहूँचिय नीलगीरी परचंड ॥८३८
कही सब कथ्थ कसांनु-कुमार[७], बली-मुख नील कौं ताम बकार।
गरज्जत बीर चल्यौ करि गाँन, हरखत[८] होय बढ्यौ हनूँमाँन ॥८३९
मिल्यौ अपरादिस[९] जाय मुकाँम, गिरी गिर कोस चले गुन-ग्राम।
ऊठे कपि बासीय के अरबद्द[१०], सबै रघुवीर करै-जय सद्द[११] ॥८४०
गयौ हनुमंत गिरी गिरनार, पनंस कौं कोन बिदा परचार।
वही दिस तै चल ऊत्तर ओर, जबै हनूमंत चल्यौ बरजोर ॥८४१
धरयौ चित बद्रीयनाथ कौ धाँम, लख्यौ गंध-मादन अद्र ललाँम।
गवाक्षहू ओर कीयो गव गौंन, हकीकत काँन सुने हनुमाँन ॥८४२
बिलोकीय अंजनि पब्बय बास, जुंहारिय ताराय बंधव जास।
सुग्रींव की कथ्थ सुनंत सुखैन, सबै भट बोल लीयै सज सैन ॥८४३
चहै सोई राँम के काँम कौं चित, हल्यौ कनकाचल कौं हनुमंत।
लँगूलन[१२] लै संग केसरीनंद, गहै चिब[१३]सोबृंन[१४]मान मयंद[१५] ॥८४४
करोरन ऊठ चले अकुलाय, बढ़े तन पोरख बीर बलाय।
घनें बन पब्बय लंघत घाट, बढ्यौ किवलास[१५]की मारुत[१६] बाट ॥८४५

---

१ ब्रह्माण्ड। २ हनुमान्। ३ पवनसुत हनुमान्। ४ पर्वत। ५ कपिराज। ६ क्रोध
७ कृशानुकुमार = अग्निपुत्र, नील। ८ हर्षित। ९ पश्चिमदिशा। १० अर्बुद = आबू
११ जयशब्द। १२ लाँगूल = लंगूर। १२ छवि = शोभा। १३ सौवर्ण, सौना।
१४ गजेन्द्र = हाथी। १५ कैलाश। १६ मारुति = हनुमान्।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुलंद सौं बात कही पहिचाँन, बिजै संग भ्रात लयौ बलवाँन।
सुग्रींव सौ रॉम को जान सनेह, चल्यौ निज धाँमहो सौं कर छेह ।।८४६
तबै मयनागिर[१] कौ हनमंत, पयानय[२] कीन गहै नभ-पंथ।
मिल्यौ कपि श्रंडक सौं हँनूमाँन, बिदा कर श्रग्र गयौ बलवाँन ।।८४७
जहाँ जल-बालक[३] ऊपर जाय, सुकंठहू रॉम की बात सुनाय।
बिदा कीय ताहिय बेर बसंत, ऊमंडीय मर्कट[४] संग अनंत ।।८४८
बिजै-गिर ऊपर मारुत बीर, मिल्यौ दुरमुख्ख[५] सौं ह्वै हमगीर।
कही कपिराज सुनी सोई कथ्थ, सँभारीय पौनप गौंन समथ्थ ।।८४६
विवेक कौं केसरीनंद बिचार, पहूँचीय कस्यप सीस पहार।
मयंदह्नी बंदर सौं कर मंत, तिही ऊठ चालेऊ बीर तुरंत ।।८५०
गये गज सग मयद गयंद, निहार कै कारज औध-नरिंद।
हल्यौ पुर कासीय कौं हँनुमाँन, मिल्यौ सोई रिछ्छपती जँमुवाँन[६] ।।८५१
सुकठ को पत्र दयौ सरसाय, चल्यौ सोई सासन[७] सीस चढ़ाय।
अनेकन भाल[८] मिले संग और, चले सोई सादर खादर छोर ।।८५२
निसारन[९] देखके भल्लुक-नाह, ईतै हनुँमंत चल्यौ अवगाह।
गयौ धवला-गिर पै कर गाँन, मिल्यौ कपि दुग्ध सौं ह्वै मिजमाँन ।।८५३
बिदा कीय ताहीय कौं बतराय, ऊदै-गिर जाय चढ्यौ अकुलाय।
कही कपि जायकै कूख कुमंद, सभौ दर कूंच सु जुद्ध समध ।।८५४
सुकंठ के मित भये घँनस्याँम[१०], रघूपति जाहि को नाम है रॉम।
पिता किहु कारन दीन पठाय, ईहाँ बन-बास रहे सोऊ श्राय ।।८५५
सीया अत रूपवती तीय संग, पती-गढ-लक सुन्यौ परसंग[११]।
अकेलीय देख हरी तिह आय, जिही फिर खोजहिगे सब जाय ।।८५६
सुग्रींव को मित्र करचो सुविचार, हन्यौं तिह बैरिय बाल हकार।
रहे गिर छाय प्रबर्षंन रॉम, करै मिल कै कपि ताहो को कॉम ।।८५७
गये सब बंदरहू कर गांन, घनें दल मेल कीयै घमसाँन।
हकीकत जाहि सुनी हनमंत, चले सब बानरहू कर चिंत ।।८५८

---

१ मदनगिरि। २ प्रयाण=प्रस्थान। ३ विन्ध्याचल। ४ वानर। ५ दुर्मुख। ६ जामवन्त। ७ आज्ञा। ८ भालू, रींछ। ९ निस्सारन=प्रस्थान। १० राम। ११ प्रसङ्ग।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सजे तरु आयुध मूसल सैल, गरज्जत सोय गये लहि गैल।
पहूँचिय आय सुग्रीव के पास, जुतै हनुमंत जुहारोय जास ॥८५९
कीयौ ईम रांम कौ कांम कपीस, किते दल लाय बुलाय कै कीस।
पराक्रम पौंन-के-पूत कौ पेख, अचंभत होय सबै अवरेख ॥८६०

दोहा

ईह अवसर आये ईहां, रांमांनुज[1] कर रीस।
जुथ्थप[2] जुथ्थ मिले जिते, सबन नमांये सीस ॥८६१
कपि देख्यौ चहु दिस कटक[3], अगनत नैन अनंत।
राजा अरु जुगराज की, मैंहमां सुन हुंनमंत ॥८६२
सांत भई ऊर संमुभकै, रांमानुज की रीस।
अंगद कौं कर अग्र ईत, परसे[4] पाय कपीस ॥८६३
पुन तारा परसे पगन, लगन कांम सीय लेख।
मगन भये लछमन समुभ्क, द्रगन कटक कपि देख ॥८६४
कोऊ अठारा पदंम कपि, संख्या कहत सयान।
कोऊ कहत अगनत कटक, हाजर[5] कीय हुंनूमांन ॥८६५

छंद हरगीतका

सोंमित्र देखेऊ कटक सब चहुं ओर किसकंधा[6] छयौ।
अनगनत जुथ्थप-जुथ्थ आये लेख परकर ऊर लयौ।
बहुभेख-भेखन के बनोका[7] अधक येकहु येक के।
कोऊ सुकल-बरन[8] रु हरन[9] करबुर[10] रूचर[11] स्यांमल रेख के ॥८६६
पुन सेत रंजन पिंजरू[12] कपि येत धुंमर[13] काय के।
सिल मुसल तरवर लीयं साखा बेग चालत बाय[14] के।
कर जोर लछमन सौं कही जुगराज अवसर जान कै।
दीय आप द्रग[15] अनूंप दरसन परम हेत पिछांन कै ॥८६७
अभलाख[16] सब कै दरस की ऊर रांम सांमल रंग के।
रहि रावरे बस नैन-राजिव[17] ओर करहु ऊमग के।

१ लक्ष्मण। २ यूथपति। ३ सेना। ४ स्पर्श किये, छूए। ५ उपस्थित। ६ किष्किन्धा। ७ वानर। ८ शुक्लवर्ण। ९ हिरण्य, सौने। १० कर्बुर = कवरे, विचित्र। ११ रुचिर = सुन्दर। १२ पिंजर = पीले। १३ धूम्र। १४ वायु। १५ दुर्गनगर। १६ अभिलाषा = इच्छा। १७ नयनराजीव = नेत्रकमल।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुन लखन बांनी समुझ कै कपिराज सौं यैसी कही।
सब जुथ्थ-जुथ्थप संग लै आगै सो चालीयै आप ही ।।८६८
सोमित्र बाँनी ईह सुनी सुग्रींवहूं सरसाय कै।
कपिराज औ जुगराज परकर[1] सैन-जुत सुख पाय कै।
सब लहै लछमन संग सुभटन गिर प्रवषन कौ गये।
कीय दरस रघुवर–चरन–कँमलन ठौर–ठौरन कपि ठये ।।८६९
कर जोर लघु भ्राता कहीं राजीब-लोचन राँम कौं।
कपि-पत बुलाये कोंऊ कपि कौं करन अपनें काँम कौं।
कपिराज सौं पूछी कथा कपिराज कहि हँनमंत कौं।
निज जुथ्थ-जुथ्थप नाँम लै कहि देस धाँम दिगंत कौं ।।८७०
परचंड पिंड अगाध पौरुष बपु[2] बयंड[3] बिधाँन के।
भुज-दंड मंडत सुंड[4] सर भर चंड रुख चहराँन के।
लै नाँम परकर लारही हँनमंत कीनी हाजरी।
दसरथ्थ-नंदन देख कै घन भयौ आँनद तिह घरी ।।८७१
सुग्रींव कौं कहि कै सखा[5] पुन प्रेम-द्रिष्ट पसाव कैं।
सीता कही सुध लैन को ईह करहु प्रथम ऊपाव कैं।
सुग्रींव सिर पर धरयौ सासन करी भासन ईह कथा।
गज दूत और गवाक्ष कौं जाँने सुदक्षहि मति जथा ।।८७२
प्रेरे सु द्वै दिस पूर्व कौं सो सहित सैन समाज कैं।
कपि चले जिह संग सप्त-कोटक करन-सीय सुध काज कैं।
अरू कपि सुखेन मयंद ऊत्तर चूने सत्वर चाहि कैं।
सुग्रींव को धर हुकम सिर पर अमित धार उछाह कैं ।।८७३
ईक पदम संग अनीकनी[6] बनचर[7] बिचक्षन की वही।
धर धूज धवकन सौं धुकी सक्कपक्क नागाधिप[8] सही।
पुन कपि बसत पठाय पछम येक पदम अनीकनी।
सासन दयौ कपिराज कौं सुन ध्यांन धर कवसल-धनी[10] ।।८७४

---

१ परिकर=समुदाय। २ वपु=शरीर। ३ हाथी। ४ शुण्डा=सूंड। ५ मित्र। ६ सात करोड़। ७ सेना। ८ वानर। ९ शेषनाग। १० कौशल्यापुत्र राम।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कपि नील अंगद वज्र-कंकट जाँमवंत सु जाँन कौं।
बोलाय कै कपिराज बोलेऊ बिमल तिह प्रत बाँन[1] कौं।
मैथली हेर निहोर मोरहु काँम है श्रीराँम कौ।
ऊद्धार कारन ऊभय ओरन धाँम अरु परधाँम कौं ॥८७५
तन और मन सौं होय तत्पर करहु याही काज कौं।
ईक मास की है अवध[2] यामहु सबही कपन-समाँज कौं।
सब जाहुं दख्खँन दिसा समिलत[3] धाँम रावन धाय कै।
जहाँ देख द्रगनन होय जैसी ईहा कहीयै आय कै ॥८७६
सुग्रीव कौ सासन सुन्यौ ऊर राम-गुन अवगाह कै।
परसे जुगल-पद पाँन सौं ऊर धार सरस ऊछाह कै।
कर मुद्रका[4] दीय वज्र-ककट लयेऊ सीस नमाय कै।
ह्वै बिदा चाले होय हरबल[5] अधिक ऊर अकुलाय कै ॥८७७
मिल कीस बीस करोर सम्मत गहन गहबर गिर गुहा।
बढ चले खोजत बन रू ऊपवन भाँत-भाँतन भुअरुहा[6]।
ईक बज्रदंड प्रचंड आसर[7] यहां खंडही मे मिल्यौं।
भुजदड अंगद भेंट भव दीय फेट दुष्टही दलमल्यौ ॥८७८
केऊ लखत मिंदर[8] किंदरा पहुँचे समंदर पास कौं।
बिन-पंख ग्रीध जटायु बंधव ताहि लख भय त्रास कौं।
पुन परसपर पहिचाँन ह्वै कपि जाँन रघुवर-किंकरा[10]।
बिसवास दीय संपात बहुबिध कपिन ऊपदेसही करा ॥८७९
बिच रहत सोय असोक उपवन मोहि दीसत मैथली।
तुम जाहु गढ लंका तहो बरबीर धोर महाँबलो।
परताप रघुवर सरत-पत कौं लाँघ सत-जोजन[11] लहौं।
सीय-दरस सौं सुख पायहौ सु विचार कर जाँनहु सही ॥८८०
कहि कथा खग[12] रघुबीर की सहि-गवत होय सिधायगौ।
कर दरस श्रीरघुबीर के पुन परम पद कौं पायगौ।

---

१ बाणी। २ अवधि = समय। ३ सम्मिलित। ४ मुद्रिका = अंगूठी। ५ अग्रणी। ६ भूरुह = वृक्ष। ७ असुर = राक्षस। ८ मारडाला। ९ मन्दिर। १० किङ्कर = सेवक, अनुचर। ११ शतयोजन = चार सौ कोस। १२ पक्षी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बारीस[1] के तट गये कपिवर गहर लहर गँभीर कै।
डिंडीर[2] अरु बुदबुद[3] दिखावत भ्रमर जल-कन भीर कै॥८८१
तिर रहे कुंभी अरु तिमगल[4] कच्छछ मच्छछ भयंकरा।
जुगराज मिल पहुँचे जहां कपिबीर रघुवर-किंकरा।
गज और नील गवाक्षहू नल पनस दधिमुख सबनहीं।
पुन कहि पराक्रम परसपर जुत जाँमबंत रहे जिहीं॥ ८८२
साँमर्थ लंघन नहि समंदर और बंदर की ईहाँ।
हँनमत बिन नहि काज होवँह जोर दल बोले जहां।
सिद्धांत सब कौ श्रवन सुन जब रिच्छछपत[5] जुगराजहू[6]।
हँनमंत सौं बोले हरख कपि सरहु रघुवर काजहू॥८८३
यश अंजनी गून करहु परगट सुत-प्रभंजन[7] ईह समै।
मन बेग ज्यूं तन बेग मंडत लाँघ जैहौं पलक में।
बिरदाय[8] बोले जहाँ बनौका श्रवन धुन हनमंत सुनी।
रस रौद्र अरु तन बीर रस की चंडता[9] बढ चौगुनी॥८८४
कोसीदता[10] मन छेह[11] कीनौ अरत[12]–गरत हीयै अटी।
दृढ भाव सौं सीय करन दरसन चित्त बाढी चटपटी।
इंद्रायतन[13] आभा बढी अत बर्न स्वर्न बिसेखीयै।
कुल राखसी लंका खयंकर दृग भयंकर देखीयै॥८८५
बय-बृद्ध अरु धीय[14]बृद्ध कपिबर रिच्छछपति जुगराज सौं।
कर जोर कैं तहाँ कीय नमसकृत सकल समिल समाज सौं।
गिर श्रृंग देख ऊतंग[15] गहबर अंग धार ऊमंग कैं।
ऊतमंग चढ तज सग औरन छेक-पांव[16] छलंग कैं॥८८६
रघुवीर के रूच रंग सौं जनुं पंख कनकाचल[17] जुटी[18]।
बजरंग चाल्यौ बीर कै चढ चंग डोरी कर छुटी:

---

१ बारीश=समुद्र। २ झाग। ३ बबूले ४ तिर्मिङ्गिल=मगर, मत्स्य। ५ ऋक्षपति =जामवन्त। ६ युवराज=अंगद। ७ वायुपुत्र। ८ प्रशंसा करके। ९ उग्रता। १० आलस्य। ११ क्षय=दूर। १२ आतुरता। १३ इन्द्रियायतन=शरीर। १४ बुद्धि। १५ उत्तुङ्ग=ऊँचे। १६ शीघ्रगामी। १७ सुमेरुपर्वत, सोने का पर्वत। १८ जुड़ गये।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मारी सु हक्क मलंग कै अकवक्क आसर-आवली।
तररक्क नैन तरेर त्यों गोलक्क नालीय लीय गली ।।८८७
आलुक्क[1] धुक्कीय सीस अरु कररक्क पिठ्ठ हू कूरमी[2]।
मद मुक्क धक्कीय विक्करी क्रम[3] जेम चक्क भूमी जमी।
चुक्कीय सँमाँध महेस चित सुन स्वांस रुक्कीय निश्वसा।
नभ-पंथ दच्छन दिस ललक्कीय तक्क लंका तत्परा ।।८८८
परबत ऊदंबर[4] पक्क ज्यौं धमचक्क धरनी मह धस्यौ।
पाथोद खलभल चल परी सरसुक्क सलता जल[5] सुस्यौ।
दुस्तर ऊलंघ महाँ नदध कौं बिवध बिघन बचायकैं।
कर गवन नंदन-केसरी नभ-पंथ सौं नीयराय कैं ।।८८९
ईक बिकट गिर पर चढेऊ ऊत्तर चित्त चातुर बनचरा।
पुन कनक कोट बिसःल पत्तन भूँम खाई जल भरा।
लंका अनूँपँम रूप लालित भूप रांवन आजही।
ईकपिंग[6] द्रंग बिलोक आक्रत जास आँगें लाजही ।।८९०
सोबर्न-मिंदर सुभग सुन्दर द्रग ईकंदर देखीयैं।
जगमगत दीपक जोत सौं ऊद्योत मनि अवरेखीयैं।
पुर आसपास ही पहरुआ[7] कैऊ बीर रखबारी करै।
कांडीर[8] प्रासक[9] खड्ग-धर कैऊ फरस-धर चौकी फिरै ।।८९१
हनमंत रक्षक हेरकै तन मक्षका लघु कीय तहाँ।
सब धांम धांमन सौध कै सोई जाय रांवन ग्रह जहाँ।
सब हर्म[10] सोधेऊ पर्म सुंदर सयन सुख दससीस कौं।
सुर आसुरी रांनी सबै बहु देख बिसवा–बीस कौं ।।८९२
अवरोध[11] सोध बिचार ऊर में, बज्र कंकट पथ बह्यौ।
ईक बभीखन को लख्यो आलय रांम अंकत ह्वै रह्यौ।
पुन पवन सुत पहिचांन कै गवने सु ताही गेह कौं।
तिह बेर तंद्रा ताहि तन सौं छांड कीनो छेह कौं ।।८९३

---

१ शेषनाग। २ कमठ। ३ पैर। ४ गूलर का फल। ५ समुद्र। ६ कुबेर। ७ पहरेदार ८ धनुषधारी। ९ भाले रखने वाले। १० रानियों के महल। ११ रनिवास।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रट रांम रांम हो नांम रसना हेर होय हनुमांन कैं।
बिश्रंभ[१] पाय बिवेक बस जीय मांहि लीनो जांन कैं।
कर बिप्र रूप हो बज्र कंकट मिल बभीखन कर मतौ।
संदेह-हारक रांम कौ सुन प्रीत कर दीनौ पतौ ॥८६४

बैदेह-तनयां बसत है प्रतदुखी बाग प्रसोक में।
प्ररु भीर जहँ दिस प्रासुरी ऊन रहत तिन की रोक में।
गहि बीर चाल्यौ तिह गली मैथली दरसन मेल कौं।
जहाँ देख तर-तर[२] जोय कैं ऊर हेत जाहि ऊबेल कौं ॥८६५

जब लखी नैनन ज्यांनकी वह बिटप ऊपर प्राय कैं।
पल्लवन साखा देख पत्रन सुभट तन सकुचाय कैं।
बिच ताहि देखत बैठ कैं रसना सु सुमरत रांम कौं।
प्रायौ सु रांवन जिहीं प्रवसर कलहि किंकर कांम कौं ॥८६६

सब बिध कह्यौ समुझाय कैं मांनी न बातै मैथली।
तब दुष्ट कर तरवार लैं चल निकट प्रायौ तब छली।
मंदोदरी समुझाय पति-मन सबन लै गई संग कैं।
देखी दसा हनमंत निज द्रग प्रसह[३] लागी प्रंग कैं ॥८६७

जांन्यौ न प्रवसर जाहि सौं जब कछू पराक्रम नहि करयौ।
रघुबीर किंकर देख रूख सौं बलन तरवर बिच दुरयौ[४]।
तनया बभीखन नाम त्रजटा जाहि सौं कहि जांनकी।
ईक मास की कीनी प्रवध पति-लंक मोहि बध प्रांन की ॥८६८

ईह बार प्रनलहि[५] प्रांन दे तन तजें बच हूं त्रास[६] सौं।
प्रब तौं होयं प्रकुलायगो बस राक्षसी ईह बास सौं।
त्रजटा बिचक्षन भक्ति तत्पर कही सुप्न सही कथा।
कबहूं न मिथ्यां होय कारन जानीयैं सांची जथा ॥८६९

ईक प्राय मर्कट[७] बिकट प्राक्रत लंक दीनी लायकैं।
तपनोय[८] नगरी ताप सौं तप पाप रांवन पाय कैं।

---

१ विश्वास। २ वृक्ष-वृक्ष। ३ असह्य। ४ छिपा रहा। ५ अग्नि को। ६ भय कष्ट ७ बानर। ८ सोने की।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अरु बाँनरी फिर सैन आई, रोख जुत रघुराय की।
मिल पीया देवर संग में सोई सीया करन सहाय की ।।९००
भुज बीस काटेऊ सीस दस भय रथारूढ भयंकरा।
पुन दिसा दख्खन कोय प्रयानौ पती लंक वहे परा।
पुन बभीखँन लंकापती रघुबीर कीनौ रीझ कै।
सकुटंब रांवन को सघार्यौ[1] खरारी कर खोज कै।।९०१
सब राखसी बाँनी सुनो अजटा कही सीय ताहि कौं।
सीता नमाये सीस सादर परी तिंह छिन पाय कौं।
ऊपदेश कर सीय देख अरु गँवनी सु त्रजटा गेह कौं।
सीय रही बैठी समट-संचर[2] सुमर रांम सनेह कौं।।९०२
ईह देख अवसर पवन-अंगज मुद्रका डारी मही।
ईत मैथली अवलोक कै गनकै अँगारी कर गही।
लख तेजमय सीयरी[3] लगी हीय होय बिस्मय हेरकै।
अभिरांम रघुवर नांम अंकित ऊर्मका[4] लीय एर कै।।९०३
कंकेल[5] ऊद्ध[6] लख्यो कपी सीय भई विस्मय साथ कै।
भुव ऊतर कै हाजर भयो हनमंत जोरे हाथ कै।
बरबीर कीनी बीनती घर धीर सीता ऊर धरी।
संदेह-हारक रांम को सुन स्वर्न दिन भय सरवरी[7] ।।९०४
सब रीत सौ धरनी-सुता[8] बरनो कथा रघुवीर की।
कुसलात पूँछी बज्र कंकट स्यांम राम सरीर की।
बिनतो करी तिंह बेर में बीती सु पाछै बात की।
सुनके अँनंदत भई सीय रुव जाँन श्री रघुबीर की ।।९०५
जब कह्यो कपि सौं प्रीत जुत हथभाग मो कह हेरीयैं।
पत[9] हु बिसारी दीन पतनी घनै संकट घेरीयै।
दंतावली बिच देखीयै सोमाल रसना सौं करैं।
मैं रहत निस दिन दुख मही बिरदंत सुनीयै बाँकरे।।९०६

---

१ मार डाला। २ शरीर समेटकर। ३ शीतल। ४ अँगूठी। ५ अशोक। ६ ऊपर। ७ शर्वरी=रात्रि। ८ सीता। ९ पत्नी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कंपाक-सुत[1] सीय सौं कही निज हृदय सोक निवारीयै ।
रघुवीर बंदर रीछ की सज सैन सस्त्र सँभारीयै ।
ईह लंक गढ कौं आयके दसकंठ के दल कौं दलै ।
परवार जुत हन लंकपत कौं मोदमय रघुपत मिलै ॥६०७

दोहा

जब बिस्मय जुत जाँनकी, हनुमत बोली हेर ।
कपि की नर सौं प्रीत कह[2], बनी कहा ईह बेर ॥६०८
सब विध बाल सुग्रींव कौ, सिय सौ कहि संबाद ।
हनमत सौं सुन हरख हुय; बिसमय टरी बिषाद ॥६०६
मात सीया हनुंमाँन सौं, समुझ कह्यौ संदेह ।
हैं तुम जैसे और हू, दुरबल बंदर देह ॥६१०
ए आसर[3] परचंड अत, बपु बल बंड बसेख ।
मंड सकैंहि कैसे समर, दंड भाव कर द्वेख ॥६११

छंद नाँराच

सीया सँदेह जाँन श्रेय आंजनेय ऊकन्यौ ।
करंत[4] रोम कंधरा बिसाल आकती बन्यौ ।
प्रचंड मंड पौरुखं घुमंड चंडता घनी ।
प्रभा ऊमंड पिंड[5] की बिसाल सैल सी बनी ॥६१२
भुजाँन डंड भार कौं बितुंड[6] सुंड बेखीयै ।
अखंड बक्रतुंड[7] ओप बीरता बिसेखीयै ।
सीया लख्यौ सरूप सोय आंजनेय अंग कं ।
बिश्रम्भ पाय बात कौ ससुंभ धीर संग कै ॥६१३
असीस दीन आंजनेय कीस[8] रांम काम के ।
बिजै बसाय दूर बिघ्न जाय जाँम-जाँम[9] के ।

---

१ पवनपुत्र हनुमान । २ मू. प्र. कहा । ३ असुर । ४ कृत्त=चमड़ी । ५ शरीर । ६ हाथी । ७ मुख । ८ वानर । ९ प्रहर ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

असीस लै नमाय सीस आय पाय कौं परचौ।
जुहार पंचसाख[1] जोर येहु बाक ऊच्चरचौ ॥६१४
फली बिलोक बाग फूल-गर्भ[2] रोचकं गह्यो।
कटै सु कालखंज[3] कौं कछू न जात है कह्यौ।
मिलै जु मात मोहि कौं सखेप मात्र सासनं।
लखाय लेह[4] लेह सो ग्रहूँ कछूक ग्रासनं ॥६१५
सीया कह्यौ बिलोक संक रक्षकं समाँज कौं।
बिचार कै बचाय बीर खेम लेहु खाज[5] कौं।
उठ्यौ ऊमाँह आंजनेय मात बात मान कै।
ऊकाट कों नमाय कंध जोर पाँन जाँन कै ॥६१६
बिलोक रक्ष बाटका सुघाटका फलीन सौं।
झुकाय दै झपाट का मुकाय[6] मंजरीन सौं।
ऊड़ै फलंम छेक येक येक सौ ऊतावरौ।
गहै सिखा ऊखार गोढ दूठ पौंन-डावरौ ॥६१७
ऊठे अनेक आसपास रूठ बाग-रक्षका।
गिलोल मार गोफना डहंत डंड दक्षका।
ऊठाय संकु[7] आंजनेय जुद्ध क्रुद्ध सौं जुरचौ।
पचार कै[8] प्रहार दै भुजंग भीम ज्यों भिरचौ ॥६१८
किते मरे गिरे किते जरे सुरोख ज्वाल का।
परे कितेक राजपंथ आय कैऊ तालका।
जगाय पौंन जोर कै कही सुकीस की कथा।
सुनी सु पाँन-बीस[9] आँन रोख रंग ह्वै रता ॥६१९
अखै-कुमार अंगजं बकार कै कही बली।
बिगार राज-बाट का छिपै नहीं कही छली।
बिलोक जाय बाग कौं कीयं सुबंध कंधरा।
हमैं दिखाहु हाजरी चढ़ोह कांतराचरा[10] ॥६२०

---

१ हाथ। २ फल। ३ कलेजा। ४ लेने योग्य। ५ भोजन=खाने योग्य फलों को। ६ अलग=पृथक् करके। ७ खूंट=वृक्ष। ८ ललकार कर। ९ रांवण। १० कान्तारचर =बानर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुन्यौ सु राज सासनं बिचार जाय बाग में।
अखै कुमार आय कै उसार हाथ आग में।
सुभट्ट ठट्ठ संग लै गरट्ट बाग घेर कौ।
समट्ट[1] बीर सालुरे बिकट्ट जाहि बेर कैं ॥६२१

अखैकुमार आंजनेय एह बाँन ऊच्चरयौ।
अरे अजाँन कीस आय पास काल क्यौं परयौ।
लिगार[2] वारना लगी करयौ महाँ कुलाहलं।
सुन्यौ सु आंजनेय सोर जोर होय जाजुलं ॥६२२

ऊखार वृक्ष आचसौं[3] पुलाय लाग पिट्ठ कौं।
गिराय कैं दये गरार[4] चाय मार रिट्ठ[5] कौं।
अखै कुमाँर आय कै जुरयौ सु जंग जोर साँ।
क्रव्यात[6] घात केकरी मुरयौं न सो मरोर साँ ॥६२३

असँग आंजनेय की लगी सुअंग लात की।
जवयौ ईतै वही जहीं हठी चपेट हाथ की।
पसार पाँनकौं परयौ प्लबंग[7] मार पाय कै।
अखैकुमार अंतकं[8] जुहार कीन जायकै ॥६२४

महाँ बिखाद मेटकै गँभीर नाँद गज्जयौ।
अग्रज[9] आंजनेय पाय भीरु साथ भज्जयौ।
करी पुकार जायकै सुनाय बीस- श्राँन कौं।
प्रचार[10] इंद्रजीत पूत पीस दंत पाँन कौं ॥६२५

अधीस-लंक आननं कही सु कीस की कथा।
बलाय एहु कौंन बीर जानीयें जिहीं जथा।
अखै-कुमार मार और बाग कौं बिगार कै।
गलार[11] कौं करै गहीर घ्वेख[12] हीय धार कै ॥६२६

सुनी न जाय श्राँन सौं कथा अयान[13] कीस की।
बिसेख दंड दै बिना रुकै न आँच रीस की।

१ समस्त। २ उलाँघकर। ३ हाथ। ४ समूह=झुण्ड। ५ रीढ। ६ राक्षस। ७ बंदर। ८ यमराज। ९ अधिकप्रबल। १० बुलाकर। ११ शोर। १२ द्वेष। १३ अज्ञानी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कराय जेर[1] बंध कंध दुष्ट कौं दिखाईयें।
असोक बाग इंद्रजीत जाहि बीच जाईयें ॥६२७
कही पिता सुनी कथा निहाँर मेघनाद कौं।
चल्यौ नमाय सीस कौं बिचार कीस बाद[2] कौं।
गयौ असोक बाग में घुमंड फौज घेर में।
अरयौ सु आंजनेय सौं बकार[3] जाहि बेर में ॥६२८
बिचार बैर बंधवं लगी सु हीय लाय[4] कै।
धिक्यौ मरयौ परयौ धरा जक्यौ[5] लख्यौ सु जायकै।
बिसार सोक बीर कौं मरोर मुछ्छ माँन सौं।
कपी सुनंद-केसरी प्रहार कीन पाँन सौं ॥६२९
बिसाल आँजनेय बृक्ष आच[6] लै ऊखार कै।
छक्यौ ऊमंग छोह सौं घिल्यौ सु थेल धार कै।
प्रपात कौं प्रचार कै दई सु मार दंड की।
लपेट फेट लाग कै झपेट झौर झुंड की ॥६३०
परी सु कूक आसपास मूँक प्रॉन लै मही।
फिरै ईलात चक्र फेर बाँहनी बही बही।
जुरयो बकार इंद्रजीत सज्जकै सतांग कौं।
भुजाँन के भरोस भाग सैन त्याग संग कौं ॥६३१
मलंग आँजनेय मंड दंड माँर कौं दई।
तुट्यौ सतांग टूँक टूँक पार ह्वै परे पई।
ईतै हूँ बीर बज्र अंग इंद्रजीत ज्यौं ऊतै।
दई[7] दई दुहूँन कौं सुभाव बीरता सुतै ॥६३२
भिरे नियुद्ध भीँम भेस क्रुद्ध होय काल ज्यौं।
हठी हमल्ल हुँकरै खिलंत बीर ख्याल ज्यौं।
भुजाँन-कंट दंत भेट झेन कै झटापटी।
फलंग फेट फेर कै चपेट दै चटापटी ॥६३३

---

१ नीचा दिखाकर। २ झगड़ा। ३ ललकार कर। ४ अग्नि। ५ पराजित हुआ। ६ हाथ। ७ दैव।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मलंग मार मुष्टका हियै दई हुकार कै।
गिरचौ सु इंद्रजीत गात घूज मोह धारकै।
पछार कै अरी प्लवंग वृक्ष पै चढ्यौ बली।
बिसेख धेख भाव सौं छिनेक में जग्यौ छली ॥१३४
सँभार ब्रह्म अस्त्र साध सक्रजीत सालुरे।
प्रहार बाँन पौंन-पूत[1] गात भंग ह्वै गिरे।
निहार मेघनाद हू फसाय नाँग फाँस में।
जुरे सु साथ जातुधाँन पेख आस पास में ॥१३५
भग्यौ सु राज-भौंन कौं दसाँननं दिखावनै।
लगे अनेक लार लोग जोवनै जनै जनै।
बिलोक[2] कीस हाथ-बीस आथरीस ऊचरचौ।
अरे अजाँन आप सौं पलाय बंध क्यौ परचौ ॥१३६
गरूर[3] गात ना गिने सु जातुधाँनु जात कौं।
बिलोक बाल बिफुरचौ प्रहार के प्रपात कौं।
तऊ वृतंत पूछताछ दंड फेर देहुगे।
निदाँन कौं निहार नैक लेख बैर लैहुगे ॥१३७
ऊचारहू बिचार आव कौंन राज किंकरा।
निसंक आय लंक में भरचौ करचौ भयंकरा।
सुनंत बात बीस-आँन कीस हू कथा कही।
त्रलोक-नाँथ[4] ताहि कौं निहार कै लखं नहीं ॥१३८
अजन्म ईस औतरे भले सुभक्त भाव सौं।
अनेक जीव ऊद्धरे पसाव रेनु-पाव सौं।
चढाय सिभु-चाप कौं तिहीं सुतिष्ठ तौर कै।
समेत तोहि भूप सर्व माँन कौं मरोर[5] कै ॥१३९
बिवाह मैथली बरी अनूँप चंद-आननी[6]।
रहै सबीक संग रांम मोद जुक्त माँननी[7]।

१ पवनपुत्र हनुमान्। २ देखकर। ३ घमंड। ४ तीनों लोकों का स्वामी। ५ मर्दन करके। ६ चंद्रमुखी। ७ मानिनी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कीयौ सु बास काँननं पिता निदेस पायकं ।
हरी लंकेस हेर कें अधर्म को ऊपाय कै ॥६४०
खरार बाल खंड कें सुकंठ पाय स्पाहिकं ।
बसाय राँम को बन्यौ निकाय[1] कीस-नायकं ।
बिलोकनै सीया चह्यौ[2] प्रीया सु राँम प्राँन की ।
ऊलंघ वार पार कें जुहार काज ज्याँनकी ॥६४१
लखी सुम्राय लाड़ली जिही सु दूत जाँनीयै ।
फस्यौ सु नाँग-फाँस[3] में ईहीं गनौ अयाँनीयै[4] ।
धिख्यौ लँकेस धार घेख देख धूत[5] दूत कौं ।
बिचार ना गह्यौ बिबेक सूत भ्रो कुसूत कौं ॥६४२
लख्यौं प्रमीत-लायकं[6] कह्यौ सु यातुधाँनु का ।
करचौ सु जाय कीस कौं प्रहार दंड-प्राँन का ।
कही तही बभीखनं जुहार हाय जोर कै ।
रजा सु सीस राज की सभ्भा[7] ईती सजोर कै ॥६४३
अबद्ध[8] दूत आद सौं मृजाद सोय माँनीयै ।
सबै प्रकार सावधाँन जुक्त ऊक्त जानीयै ।
सदा प्रनीत सास्त्रसिद्ध राजनीत रावरी ।
बिचार दंड दै बिसेस कीस हाँन जो करी ॥६४४
हस्यौ सु कीस हेरकै निहार बीस-नैनहू[9] ।
बभीखनं कह्यौ बिचार साथ मित्रि सैंन हूं ।
बिसेस हेत बालधी[10] प्लवंग जात पेखीयै ।
लपेट तूल तेल लाय बस्त्र हू बिसेखीयै ॥६४५
जुराय आग जाहि कों द्रुतं छुराय दीजियै ।
गरीब दूत जाय गैल कांम येहु कीजीयै ।
बिलोक राँम स्याँम बृंद कीसहू कपीसरा ।
बिसार सीय बासना निहार जोर निश्चरा[11] ॥६४६

---

१ स्थान। २ चला। ३ नागपाश। ४ अज्ञानता। ५ धूर्त्त। ६ मारने योग्य। ७ दण्ड। ८ अवध्य = न मारने योग्य। ९ विंशनयन = रावण। १० पूंछ। ११ निशाचर = राक्षस।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कदाच जोर कीसकों ईहाँ बिचार आँय है।
निहार कैं करूं निपात[1] जौ न भाग जाय है।
कही सुरक्ष ईस कीस लूंमकौं[2] लगाय कै।
छुराय दीन चौहटैं कृतंत[3] कौं कुपाय कैं ॥६४७

बजाय ढोल बावरे बधाय कैं बलाय कौं।
गली सु ग्रेह-ग्रेह में लई बुलाय लाय कौं।
ऊंळ्यौ अचित आंजनेय[4] गाज नाद गल्ल कौं।
बळ्यौ प्रवाह लंक बीच आग की ऊभल्ल[5] कौं ॥६४८

चढ्यौ चछोह हर्म[6] स्वनँ भार भर्न भुंजई[7]।
भरी सुभीर भाँमनी[8] डरी करै दई-दई[9]।
लपट्ट औ झपट्ट लाग पट्ट हट्ट प्राझलै।
ऊठी बिसाल काल आल ज्वाल माल जाजुलै ॥६४९

तवै कितेक तोय-तोय[10] ओय-ओय ऊच्चरैं।
ज्वलंत जोय-जोय[11] कै निचोय नैन निझरैं।
पगार औ अगार[12] पैं अंगार धार औसरैं।
गिरै गरार गैंन[13] ज्यौं प्रहार ताव पासरै ॥६५०

ऊबार देख ऊल्लका करंत बुंबकार के।
सँभार ना सरीर की झुलै ऊच्चंड झार के।
अकास छाय अंभसू[14] घटा असंभ ज्यूं घुरै।
बिचाल नंद बाय हू[15] फिरावहू छटा फिरै ॥६५१

गहंत लोल[16] तोल गैंन नाल गोल नाग ज्यूं।
चलंत बक्र चाल में ईलात चक्र आग ज्यूं।
छलंग कैं अलंग छेक बिस्फुलंग[17] बिख्खरैं।
कुलंग पछ्छ[18] त्यौं कहूं मलंग लेत मक्करैं ॥६५२

सुथंत[19] झार सौंध-सौंध[20] द्वार-द्वार देखीयैं।
कुबाट[21] पक्ष द्वार केर अर्गला[22] असेखीयैं।

---

१ मारण। २ पूंछ को। ३ कृतान्त=यमराज। ४ हनुमान्। ५ लपट। ६ हर्म्य=महल। ७ जल कर नष्ट हो गई। ८ भामिनी=स्त्री। ९ दैव-दैव। १० जल-जल। ११ देख कर। १२ आगार=घर। १३ गगन=आकाश। १४ धुंआ। १५ वायुनन्दन=हनुमान्। १६ चंचल। १७ विस्फुलिङ्ग=चिनगारियाँ। १८ पक्षी। १९ स्त्रियों के रहने के स्थान। २० महल। २१ किवाड़। २२ आगल।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भंडार गर्भगार[1] कुप्पसाल[2] चंद्र-सालका[3] ।
बितॉन औ बिछांवने पसार झाल पालका[4] ॥६५३
अनेक रंग अंसुकं[5] प्रछादनं[6] जरै परै ।
अँनूंप कंड-पट्ट[7] ओट आंच लाग अस्तरं ।
बिसेस तालवृंतहू[8] असेख केक आसनं ।
कपूर कासमीरहू सँनेह[10] त्यौं सुबासनं[11] ॥६५४
झमंक पाय जाँझरं गयंद-मत्त-गाँमनी ।
ऊसास[12] लै ऊदास ह्वै भ्रमंत राज-भाँमनी ।
खिसाय[13] खीज-खीज मींज हाथ कौं मदोदरी ।
कहै पीया कीयौ कहा सीया हरी जु सुंदरी ॥६५५
असंख आग-झाल[14] सौं जरंत लंक जोयकै ।
अहो बिना ऊपाय कै करै न स्याहि कोय कै ।
दसाँननं लखी दसा ज्यूँहीं मदोदरी जपी ।
बलाय के बघूल सौं कराल देख कै कपी ॥६५६
अँनेक काँडवाँन[15] कौं बकार कै कीये बिदा ।
कोदंड[16] ताँन काँन कौं जुरे घनै जुदा-जुदा ।
तरेर नैंन ज्यूं तिनूंह चंचला[17] चला-चलं ।
दिखात नाँ दिखात भीर आग की भला-भलं ॥६५७
जके थके रहे जितेक पुत्तरी-पखाँन[18] ज्यूं ।
अंगार आंच आग सौं गहै न चित्त ज्ञान ज्यूं ।
पयोद[19] कौं कह्यौ पुकार जुथ्थ अभ्र[20] जोर कै ।
ऊमंड वार[21] औसरै घुमंड मंड घोर कै ॥६५८
सनेह के संजोग सौं सिवाय लाय सौगुनी ।
बढी बलाय बायु बेग घूंम कै घनी-घौनी ।
मुरे सु मेघ माँन मेट आग फेट सौं ऊड़े ।
पुलाय कै घुलाय पाथ[22] व्योम मग्ग कौं बढे ॥६५९

---

१ गर्भागार = भण्डारगृह । २ कोठे । ३ बहुत मंजिलवाली हवेली । ४ पलङ्ग । ५ वस्त्र । ६ ओढने का वस्त्र । ७ कनात । ८ पंखे । ९ केशर । १० स्नेह = तैल । ११ सुगन्धित । १२ उच्छ्वास । १३ लज्जित होकर । १४ अग्नि ज्वाला । १५ धनुर्धर । १६ कोदण्ड = धनुष । १७ बिजली । १८ पाषाण पुत्तली = पत्थर की मूर्ति । १९ बादल । २० पानी । २१ वारि = जल । २२ पानी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सतंभ बंध सासता प्रलंब साल पायगा।
जली अपूर्ब ज्वालका जरै अनेक जायगा।
खुले गयंद स्रंखला[1] डुलैं पुलैं डरे-डरे।
ज्युंही तुरंग जाँनीयै ज्वला फिरै जरे-जरे ॥९६०

कितेक संकुकर्न[2] बर्न-बर्न के बिसेखीयै।
भ्रमत भूँक भूँक-ऊक[3] देख कै असेखीयै।
बरंत[4] भार बार हौ जितेक धाँन[5] जाँनीयै।
निकाय[6] व्यंजनावली[7] पयस्य बे-प्रमाँनीयै ॥९६१

धुकै धुँआँर धार में अपार गंज आर्जुनी[8]।
जुरै न छार[9] झारनं सुधार कौं सँमाँजंनी[10]।
जराय लंक ज्वाल सौं बचाय कै बभीखनं।
परचौ सु कूँद पारवार[11] बालधी बुझोवनं ॥९६२

सुधार अंग सावधाँन ह्वै लघूक[12] हाल कैं।
सीया हजूर संमुहै[13] जप्यौ सु लंक ज्वाल कैं।
कछूक राँम-कारने दिखाव चीज दीजीयैं।
रजा अधीन रावरौ कपी बिदा करींजीयै ॥९६३

असीस दै सीया दई मनोज्ञ[14] चूड़का-मनी[15]।
जुहार पाँन[16] जोर कैं सँदेह[17] बारता सुनी।
पसाव मात पाय कै बसेस कीन बंदनं।
हल्यौ सु बायु-बेग होय नीक बायु-नंदनं ॥९६४

ऊड़चौ सु सिंधु तीर आय तीर[18] राँम ज्यूँ तरचौ।
ऊतार ठौर आयकै ईभारि-नाद[19] ऊच्चरचौ।
सुन्यौ कपी सबै समूँह पाय कै प्रमोद कौं।
भई प्रतीत भाव सौं बिसास सोघ[20] बोध कौं ॥९६५

ईतेक बीच आँजनेय वार-पार[21] ऊतरचौ।
ऊमाह अंगदाद आद भेंट अंक[22] सौं भरचौ।

---

१ श्रृङ्खला=जंजीर। २ गधे। ३ ओक=स्थान, आकाश। ४ जलने लगे। ५ धान्य=चांवल, अन्न। ६ स्थान, केन्द्र। ७ शाक-सब्जी आदि। ८ घास। ९ क्षार=राख। १० झाड़। ११ पारावार=समुद्र। १२ छोटा रूप बनाकर। १३ सम्मुख। १४ सुन्दर। १५ चूडामणि। १६ पाणि=हाथ। १७ सन्देश। १८ बाण। १९ इभारिनाद=सिंहनाद। २० शोध=खोजकर। २१ पारावार=समुद्र। २२ गोद।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सीया कथा कही सुनाय धाय-धाय धीमता।
ऊछाह आय-आय कै जुहार पाय कं जथा ॥९६६
बिसाल ताल-बृंत सौं करंत पौंन[1] केकहू।
फली कोऊक मिष्ट फूल देत देख-देखहू।
हिले मिले चले हकार गैल सैल[2] गाहि कैं।
कपीस कौंसलेस सौं मिले रजा मनाय कै ॥९६७

दोहा

जामबंत कर जोर कै, बिनय कीन रघुबीर।
पत राखी हम जुत प्रबल, हनमत है हमगीर[3] ॥९६८
लाँघ उदध[4] लंका गयौ, सीया मिल्यौ सुख पाय।
मारचौ अखय-कुमार कौं, लंक दई फिर लाय ॥९६९
आयौ उदध ऊलंघ कै, गयौ ज्युंहीं नभ-गैल।
हरखत धाये सबही हम, सरता[5] लांघत सैल ॥९७०
दरसन कीनै हमहुँ द्रग, राजिव-लोचन शाँम।
पूंछ लेहु हँनमंत प्रत, सीया खबर घँनस्यांम ॥९७१
जग-त्राता रघुबीर जब, संजुत भ्राता सेख[6]।
पाय परचौ हनमंत प्रभु, द्रष्ट पसारी देख ॥९७२
बार-बार पद बंद कै, हनूंमाँन होय हेर।
निजर करी चूड़ामनी, सहनांनीं[7] सीय केर ॥९७३
लै कर सौं रघुनाँथ लख, हीय मेटी हरखाय।
लघु भ्राता दीनी लखन, सो लख सीस चढाय ॥९७४
कह्यौ फेर संदेह कछु, सब रघुबर सुन भ्रांन।
कर सिर धरचौ सराह कर, हरख भयौ हँनुमाँन ॥९७५
सबहिन कह्यौ सुनाय कै, दुख रावँन को दीह।
रहत ज्यांनकी रात दिन, ज्यूं दंतन में जीह[8] ॥९७६

---

१ पवन। २ शैल—पर्वत। ३ अग्रणी। ४ उदधि=समुद्र। ५ सरिता=नदी। ६ शेष=लक्ष्मण। ७ निशानी। ८ जिह्वा=जीभ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

एक मास दीनी अवध,[1] सीता काज सँभार।
ता पाछे तन त्यागहै, ज्वाल अगँन में जार ॥६७७

छंद भुजंगीप्रयात

सुनो राँमहू बात सुग्रींव सोऊ, जुतै जुथ्थपं जुथ्थहू आद जोऊ।
जगी हीय में क्रोध को ज्वाल-माला, कपी काल ज्यूं कल्प[2] रुठे कराला ॥६७८
मिलै ईक्क सौं ईक्क पूंछे मता कै, प्रयानं खरी कीन साखे पताके।
गरं गल्ल सौं केहरी-नाद गाजै, बड़े आँनकं भेर मानौ अवाजै ॥६७६
जुतं सेस सुग्रींवहू राँम जाँनो, पती औध कै लंक कीनौ प्रयानौ।
घनै जुथ्थपं जुथ्थ साथै घुमंडे, ऊदीचो[3] मनौ मेघमाला ऊमंडे ॥६८०
सुरंगे-मुखा कीस फूली सुसंझा,[4] झुकें हैं मनौ लंक पें होय जंझा[5]।
धकें रिछ्छ रिछ्छी ज्युंही लोर ध्यावै, चितं वेग ऊद्योग बायू चलावै ॥६८१
बिचें राँम सोहै प्रभा मेघ-बनं, दियें चाँप[6] बाँमी भुजा यातुदनं[7]।
बिड़ोजा[8] ज्युंहीं चाप आभा बिराजै, भुजा दछ्छनं दीप्त नाँराच[9] भ्राजै ॥६८२
फिरावै तिहीं अद्ध औ ऊद्ध फेरा, तपै चंचला अभ्र[10] माँ ौं तरेरा।
महा-काँतरं[11] चत्वरं होय मग्गं, लगूलं[12] बनोका वहै आभ लग्गं ॥६८३
गिरी गाहटं पाँव आराव[13] गज्जैं, धरा धाँमहू सात पाताल धुज्जैं।
डरे दिक्करी[14] अट्ठहू पाँव डोलै, फनाली[15] पती नाग[16] ऊठं फफोलै ॥६८४
चढ़ी भोंम[17] सौं रेनुका[18] व्यौंम छाई, बढ़ो लंक लौं जाँन दैनं बधाई।
बली एक सौं एक साखा-बिलासी[19], रुके आयकै तीर पै तोयरासी[20] ॥६८५
मिले चोट मोंटे जहाँ पाँव मंडे, थिरा थानकं-थाँनकं सैन थंड़े।
तितै राँम राँमानुजं आय तीरा, गरज्जै अकूपार[21] देखे गहीरा ॥६८६
सबै कीस कौं संग लीनै समाँजा, रहे छाय कै राँम राजाधिराजा।
कही हेरकं राँम सेना कहाँनी, धुखी लंक आतंक सौं राजधाँनी ॥६८७
सुनी अत मैं तंत की बात सारी, पती-लंक मंदोदरी प्राँन-प्यारी।
सही नीत की रीत सौं सो सयाँनी, पखं बीनती जाय कीनी प्रमाँनी ॥६८८

---

१ अवधि। २ प्रलय। ३ उत्तरदिशा। सुसन्ध्या। ५ झंझा=तूफान।
६ धनुष। ७ यातुदलन=राक्षसों को मारने वाले। ८ इन्द्र। ६ बाण।
१० अभ्र=बादल। ११ महाकान्तार = महान् वन। १२ लाङ्गूल=लंगूर।
१३ आराव=ध्वनि। १४ दिग्गज। १५ फणधारी। १६ नागपति=शेष।
१७ भूमि। १८ धूलि। १६ वानर। २० समुद्र। २१ समुद्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सदाँ राज के काज में सावधाँनं, धराधोस पुज्जै सबै जातुधाँनं।
अनीती करी मैथली ग्रेह आँनी, बसाई बिचै बाग नारी बिराँनी[1] ९८९
जपै राँम राँमं करै ध्याँन जाको, हुयै हेत ना सिद्ध तेरे हिया को।
अज्यूं सौंपीयै राँम को अर्द्धअंगी[2], पतो होय निर्व्याधि[3] बंसी प्रसंगी ॥९९०
कही मैं नहीं माँनहौ जो कहाँनी, धरा धाँम जं है सबै राजधाँनी।
ऊलंघे ऊवधं तिहीं दूत आयौ, जिहीं पत्तनं[4] ज्वाल माला जरायौ ॥९९१
बनोका अनेकं जिहीं संग वैसे, कहौ लंक के होंयगे हाल कैसे।
सुन्यौ राँम के बाँन कौ वेग स्त्राँनं, पतो मोर धुज्जै हीयो और प्राँनं ॥९९२
पती-लंक मंदोदरी बात पाई, तहाँ बोल ऊठ्यौ महाँ आतताई।
अहो नार मेरी भरी-भीत ऐसी, ईहै बात कैसी कही है अनैसी ॥९९३
हीयै सोच आवै नहीं आय हाँसी, बिचारे जती कों न साखाबिलासी।
सबै मृतु घेरै चले आँय संगा, परै ज्वाल की माँल जैसे पतंगा ॥९९४
तिहीं हाल कौं देखहै नैन तूंहीं, जुरंगे जती आयकं जुद्ध ज्यूंहीं।
बसाऊँ सबै खाख साखाबिलासी, त्रीया मोर ह्वै के कहा बुद्ध त्रासी ॥९९५
महाँ-निक्रती[5] बात राँनी न माँनी, सिधाई जबै ग्रेह सोई सयाँनी।
सभा जाय बैठो जबै पाँन-बीसा, धरै छत्र माथै जहाँ लंकधीसा ॥९९६
ईतै आय बातायनं[6] बोल ऐसै, जलाधीस पारा लखी सैन जैसै।
ईतै बोव बभीखनं भ्रात आयौ, नृचक्षापती पाय सीसं नमायौ ॥९९७
करी बीनती ऊठकै-राज काजा, अँनीती जहाँ जाँन लीजै अकाजा।
बिदेही हरी बीच लंका बसाई, ईहीं काँम कीनौ महाँ आतताई ॥९९८
सीया दै बिना नाँहि ह्वै है सुधारौ, हितू जाँनकै साँच माँनौ हमारौ।
सुनी मालवानं जिहीं बात सारी, ईहीं बीनती नीत ऐसी ऊचारी ॥९९९
जहाँ क्रुद्ध कोनौ कछू भूप जापै, ऊठ्यौ मालवाँनं गयौ ग्रेह आपै।
लघू-भ्रात तोहू हीयै हेत लाई, सबै रीत सौं नीत बातैं सुनाई ॥१०००
सुनी सो बहाई ब घूरै समीरा[7], न भेदै ज्यूंहीं चीकनै कुंभनीरा।
झुकाया तऊ सीस कौं पाँव झेलैं, ऊचारी तहाँ बींनती कों अकेलें ॥१००१

---

१ परनारी। ३ अर्द्धाङ्गिनी=स्त्री। २ व्याधि रहित। ४ नगर। ५ निष्कृति =बदला। ६ झरोखे। ७ समीर=वायु।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रहारं करयौ पाँव कौ भ्रात पापी, थिति लोपऊ भौ भयौ आप थापो ।
बक्यौ फेर बम्भीखनं एहु बाँनी, ऊचारै कहा क्लीब[1] बाँनी अयानी ॥१००२
भुजा मोहि कौं तोहि नाहीं भरोसौ, क्रतू काज दोसै धरौ सो करौ सौ ।
मिल्यौ जाय बैरी कपी सैन मांहीं, नरा बाँनरा मो कछू भीत नाँहीं ॥१००३
सुनो लंकधीसं ईहीं बात आँनं, गहो बाट बम्भीखनं कीन गाँनं ।
तकी राँम की सनं ऊद्धनं तांहीं, महां भक्त चितं लग्यौ चनं माँहीं ॥१००४
पहूँच्यौ सोई पारसां वार पायौ, लखै मर्कटी-सैन सदेह लायौ ।
अटोक्यौ नही आवनै दीन अग्गै, कपीसं कह्यौ येम जोरैं करग्गै ॥१००५
जाँनै ईहीं भ्रात है रांवना कौ, किधां दूत है भेद के काँमना कौ ।
कपीसं कही राँम सौं जाय कथ्थं, सबै रीत सौं जाँन लीनी समथ्थं ॥१००६
ईतै व्याज[2] सौं सनं आयौ ऊचारं, हितू जाँन लीजै प्रतज्ञा हमारै ।
कहै सनं आयौ तजै जो कहीं कौं, बिसेसं क्रतघ्नी[3] बिचारौ वहीं कौं ॥१००७
लगै कोट बिप्रं बधं पाप लारी, हीयै साच कौ जान माँनौ हमारी ।
करै व्याज तौऊ नहीं हाँन कोऊ, समीचीन आयै लखै है स कोऊ ॥१००८

दोहा

श्रीरघुवर बाँनी सुनी, हरख होय हनूँमाँन ।
सुख-दायक असरन-सरन, जगपति लीने जाँन ॥१००९
अंगद आदक कीस अरू, हनुमंतहू हीय हेर ।
लैन बभीखन कौं चले, बिहस बिहस जिंह बेर ॥१०१०

छंद मुक्तादाम

हितू रघुबीर गन्यौ हीय हेर, वभीखँन जाय मिल्यौ जिंह बेर ।
पती-गढ-लंक कौ भ्रांत पिछाँन, सबै बिध कीन जथां सनमाँन ॥१०११
कीयै अगवाँन लीयै संग कीस, ऊमंगीय देख कै औघ-अधीस ।
सवंधव स्यांमल गोर सरीर, बभीखंन पाय गये रघुबीर ॥१०१२

---

१ कातर=वाणी । २ छल, बहाना । ३ पापी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऊभै कर झेल कै जाहि ऊठाय, लीयौ जन जान कै अंक[1] लगाय।
खुसी पत-लंक सबै बिध खेम[2], निहारकै राँम कह्यौ जुत नेम ॥१०१३
सुनी कपि बाँनीय राँम की सोय, जया जय सद्द[3] कीयौ जंह जोय।
नमो रघुनायक भूप निसंक, लीयै बिन दास दीयौ गढ़ लंक ॥१०१४
कहो रघुनायक बात कपीस, अहो रघुबंसीय में अवनीस[4]।
कहै सोई सत्य निभाँवन काँम, बिचारत नाँहिन फेर बिराँम ॥१०१५
इते दिन काज छतौ तुम येक, सीया कँह लाँवन कौ सवबेक[5]।
बभीखँन थप्पन कारन बीय, कहौ सोई कारज है करनीय ॥१०१६
कपीसहू बोल जहाँ कर जोर, महाँ प्रभू धंन्य रघूकूल-मौर।
सबै सरनाँगत रावरे साथ, निभावहु वृद[6] अनाँथन नाँथ ॥१०१७
सुन्यौ कपि बाँनीय औरहु सोर, जुहारत राँम तहाँ कर जोर।
सुनाय कै आपनौ राँम सिधंत,[7] सबै बिध जाँन बभीखन संत ॥१०१८
क्रपा[8] कर भाल में चर्चक कीन, दयौ पद लंक पती पति-दीन।
जलाश्रय राँवन दुःख सौं जाहु, बभीखँन राख लीयौ गह बाहु ॥१०१९
सराहन लागीय[9] औरहु साथ, बढ़ी दल मर्कट में ईह बात।
तहाँ रघुनायक सिंधु के तीर, बभीखँन कीस-पती जुग बीर ॥१०२०
जुहारीय नीर-पती[10] जहाँ जाय, बिराजेऊ आसन-दर्भ[11] बिछाय।
सबै संग जुथ्थप-जुथ्थ सयाँन, हरोलीय[12] अंगद औ हनुंमाँन ॥१०२१
कीये हीय व्याज[13] बने कपि-काय ईतै बिच राँवन दूतहू आय।
बिचार कै ताहि लख्यौ बरतंत[14], सवाँ रघुबीर ऊबारन संत ॥१०२२
बिलोक कै बंचक[15] कौं कपि बेख, परे कपि गैल ग्रहै सु परेख।
मरोर कै थापन लातन मार, बिचार कै बंध कीयौ तिह बार ॥१०२३
कहै कोऊ काटहु नासका काँन, प्रहारहु केक कहै पग पाँन।
ऊचारत यौं रघुबीर कौं आय, बनोकन दीनेऊ दूत बताय ॥१०२४
बिचच्छंन लछ्छन राँम के बीर, परेख कै कीन निराक्रत पीर।
कीयौ तिह लछ्छन येह कहाव, लिखै हम पत्र बिचार कै न्याव ॥१०२५

१ गोद, छाती। २ क्षेम। ३ शब्द। ४ नृपति। ५ सविवेक। ६ विरद=यश। ७ सिद्धान्त। ८ तिलक। ९ मू० प्र० लगीय। १० समुद्र। ११ डाभ, कुश। १२ अग्रणी। १३ कपट, बहाना। १४ वृत्तांत। १५ धूर्त्त, छली। १६ निराकृत = छुड़ा दिया।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दिखावहु लंकपती कँह दूत, करैं सोई जान कै सूत कुसूत ।
जितैं हम आवत है दल जोर, ऊलंघ कै बारहु-पारु[1] अथोर ॥१०२६
चले सुख-सारन[2] सीस चढाय, कपी दल बीच सौं खेम कढाय ।
गयौ सोई रांवन पैं कर गाँन[3], सदेसन-हारक[4] बुद्धि सयाँन ॥१०२७
बिचार कै रांवन पूँछीय बात, कहौ लघु-भ्रातहू[5] की कुसलात ।
महाँ दुरबुद्ध गह्यौ तन मीच[6], बिरोधीय सोध गयौ दल बीच ॥१०२८
कहौ फिर कथ्थ कितौ दल कोस, निरंतर बैठेऊ पार नदीस ।
कहौ जुग तापस की गत कोन, जुहारत संगर[7] मोपहुँ जोंन ॥१०२९
जहाँ कहि दूत ऊभै कर जोर, मुलाहिज बींनती कीजहु मोर ।
बभीखन जाय मिल्यौ जिहुं बेर, करचौ गढ़ लंकपती तिह केर ॥१०३०
निहाँरीय भल्लुक बंदर नैन, सबै निरसंक[8] असंखन[9] सैन ।
सुकंठहु भूप जही सिरताज, जुरे हनमंत बली जुवराज ॥१०३१
जहाँ कुमदादिक केसरी जोर, मयंदहु नील किते दल मोर ।
बिचछ्‌छन रिछ्छपती वय-बृद्ध[10], सबै अवसासँन जाँनन सिद्ध ॥१०३२
बिलोकत दछ्‌छन[11] ओर बिसेख, धुखै हीय बीच हूतासन[12] धेख ।
भयंकर दीसत है भुज-डंड, खयंकर[13] लंक सबै खल-खंड ॥१०३३
भरे ऊर क्रुद्ध जुरे जुग भ्रात, प्रचारत घीर धरैं निध-पाथ[14] ।
मिलै कछु काल मही नहि मग्ग, अंगजित चाप कौं लेय ऊवग्ग[15] ॥१०३४
सबै जल सोखहि बाँन कौं संध, कँहै हम नैन लखी दसकंध ।
दई ईक पातीय लछ्‌छन देव, भली बिध जाँन लहौ ईह भेव ॥१०३५
लई कर वाम सोई पत-लंक, निहाँर कै धोसख दीय निसंक ।
जिहीं बिच लछ्‌छन लेखेऊ जाब, सीया कँह साँपहु[16] आँन सताब ॥१०३६
बभीखन साँपहु राज विचार, बचैं कुसलातहु सौं परवार ।
मिलै जीय दाँन तुमैं मतिमंद, समैं ईह आय करौ जब संध[17] ॥१०३७
कहै कहा राँम भये प्रतकूल[18], संघारहि तो कहु बंस सँमूल ।
चँहै हम न्याव बिचार कै चित्त, अहो तुम जानहु ना असमथ्थ ॥१०३८

---

१ पारावार = समुद्र । २ सुखशरण = सुखप्रद । ३ गमन । ४ सन्देशहारक = दूत । ५ विभीषण । ६ मृत्यु । ७ युद्ध । ८ निश्शङ्क । ९ असंख्य । १० वयोवृद्ध । ११ दक्षिण । १२ हुताशन = अग्नि । १३ क्षयङ्कर । १४ पाथोनिधि = समुद्र । १५ उदग्र । १६ सौंप दो । १७ संधि । १८ प्रतिकूल = विरुद्ध ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुनी लिख बाँनीय आँनन सेख[1], दसाँनन हाँस रच्यौ तिह देख ।
कीयौ सुक-सारन दूत कहाव, बिना सीय दीनेऊ नाहि बचाव ॥१०३९
लई सुत ताहि प्रहारीय लात, निरादर होय मिल्यौ रघुनाथ ।
तँहाँ जलरासीय की निज तीर, बिते दिन तीन रहे रघुबीर ॥१०४०
कही लघु-भ्रात ही सौं कर क्रुद्ध, ईहै सठ[2] माँनत नाहि ऊदद्ध[3] ।
सरासन[4] लावहुं मोर सताब, जबै कछू देवहै आय जबाब ॥१०४१
दये धँनुं-बाँनन लछ्छन देख, पतो-पुर-कौसल लीन परेख ।
चढाय कै सिंजनी[5] ताँन चछोह, कीयौ जलरासीय पै अतकोह[6] ॥१०४२
सँभारीय पाँनन[7] बाँन सँधाँन, असँभव गाज ऊठ्यौ असमाँन ।
धरा अकुलाय रही तज धीर, निरंतर धूपित ह्वै दध-नीर ॥१०४३
तिमंगल[8] कछ्छप नक्र[9] तपाय, भयंकर पीर ऊठे भहराय ।
भरे तब कंचन[10] थारीय मेट. मनोहर रत्नन लीन सँमेट ॥१०४४
बन्यौ नर ऊतँम रूप बिसेस, नम्यौ पद आय कै औध-नरेस ।
छिमाँकर[11]नाथ न कीजीयं छोह[12],मँहाँ जड़ जाँन दई सिख मोह ॥१०४५
जबै रघुनाथ कही कथ जास, अहो जलरासि न होहु ऊदास ।
तथाँ[13] मम सैन ऊलंघहि तोहि, बिचार कै मंत्र बतावहु मोहि ॥१०४६
कह्यौ तब सिंधु ऊभै कर जोर, कपी नल नील है बेस किसोर ।
दय्यौ यौ रिखीराजनहू बरदाँन, बिचछ्छन-बुद्ध बड़े बलवाँन ॥१०४७
परठुही मोहि के ऊपर पाज[14], मिलाय कै सूत सुनौ महाँराज ।
समै ईह बाँन कौं कीन सधाँन, तजौ ऊतराध दिसा-मह ताँन ॥१०४८
बसै जँहाँ दुज्जन[15] मोर बसेख, प्रहारहु ताकह प्राँन परेख ।
जबै रघुनाथ तज्यौ सर जाँन, मिट्यौ जलरासीय कौ भयमाँन ॥१०४९
महाँप्रभू सायक[16]कौं कीय मोख,रजा दीय सागर कौं तज,रोख ।
निरंतर मानव-रूप निवार, मिल्यौ जलरासीय तोय-मझार ॥१०५०
दिसा उतराध मही ईक देस, बसै मम दुज्जन तोय-मँझार ।
निरंतर मानब रूप निवार, मिल्यौ जलरासीय तोय-मँझार ॥१०५१
महाप्रभु सायक कीनेऊ मोख, रजा दीय ताहि निवारेऊ रोख ।

---

१ शेष=लक्ष्मण । २ शठ=मूर्ख । ३ उदधि=समुद्र । ४ शरासन=धनुष । ५ प्रत्यंचा=डोर । ६ अतिक्रोध । ७ पाणि=हाथों से । ८ तिमिङ्गिल=मत्स्य । ९ मगर । १० काञ्चन=सौना । ११ क्षमाकर । १२ क्षोभ=क्रोध । १३ मू०-प्र० त्यां० । १४ सेतु=पुल । १५ दुर्जन । १६ बाण ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

रजा पाय रघुनाथ की, सिंधु गयौ सुसथाँन ।
सेत बाँधनें की समुझ, ऊदित भये कपि आँन ॥१०५२
राँम कही राँमाँनुजहि, बाँधहु सेत बिचार ।
जाँमबंत बोल्यौ जबहि, बेस-बृद्ध[1] जिह बार ॥१०५३
नाँथ तिहाँरे नाँम सौं, रची सेत जग रेख ।
निगंम[2] कहत खग नाँग नर, ऊतरत पार अँनेक ॥१०५४

छंद ऊद्धोर

कीय अरज पवन-कुमार, बिज्ञाँन हृदय बिचार ।
नृप अवध क्रुद्ध निदाँन, समि-गर्भ[3]--ऊबं समाँन ॥१०५५
नद-ईस सोखेऊ नीर, पुन बढ़ी दँनुंजन[4] पीर ।
द्रग नार क्रंदत[5] देख, बढ गयेऊ फेर बिसेख ॥१०५६
है नीर कटु ईह हेत, सब लखहु सेंन समेत ।
हीय ऊकत[6] सुन हनुंमंत, कपि केंऊ बिनोद करंत ॥१०५७
जब जाँमबंत सुजाँन, कीय नील नलहि कहाँन ।
तुम सेत बाँधहु तात, निज राख हीय रघुनाँथ ॥१०५८
नल नील चतुर निदाँन, सुन ऊदित भेऊ सुजाँन ।
सोई रचन लागेऊ सेत, हीय राँम काँम सहेत ॥१०५९
सब सझेऊ मर्कट-सैन, द्रढ ऊपल[7] लागेऊ देन ।
कपि देत बिष्टर[8] केक, अत तरल सरल अनेक ॥१०६०
अरु कोऊक श्रंग ऊतंग, समुदाय तरवर संग ।
नल नील लेत निहाँर, अतदक्ष परम अपार ॥१०६१
जहाँ चहत जिह बिध जोर, तहाँ देत ताकँह तोर ।
मिल दिवस तीन मझार, तिह सेत कीन तयार ॥१०६२

---

१ वयोवृद्ध । २ वेद । ३ वडवानल । ४ राक्षस । ५ रोती हैं । ६ उक्ति ।
७ उपल=पत्थर । ८ वृक्षों के ठूंड ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

द्रग ताहि रघुवर देख, ऊर मुदित भयेऊ असेख।
बसु[1] परम रंम्य बिचार, तहाँ पूजकै त्रपुरार[2] ॥१०६३
ध्रुब जोग थप्पेऊ[3] धाँम, अघ-हरन जग अभिराँम।
कर बंदना सिव-केर, घँन सुभट मर्कट घेर ॥१०६४
पुन करेऊ लंक प्रयाँन, जुग भ्रात भुज-आजाँन[4]।
कर धरै सर कोड़ंड, घन घेर फौज घुमंड ॥१०६५
कपि झुंड कर किलकार, पँहुँचे सु जलनिध पार।
प्रभू तरेऊ नाँम पखाँन[5], पुन कहा बिलंब प्रयाँन ॥१०६६
बिरचेऊ सकंधा-बार[7], अभिराँम ठौर ऊबार।
आराँम[8] लखेऊ अनेक, बहुफलद फलन बिसेख ॥१०६७
बंदरी फौज बुलाय, रूच पाय कहि रघुराय।
फल करहु भक्षन फौज, मुद पायकै मन मौज ॥१०६८
हटकं[9] जु तुमकों हेर, जिह करहु भटकै जेर[10]।
निज नाँथ सीस नमाँय, ऊठ चलेऊ ऊर ऊमगाय ॥१०६९
कपि चढेऊ सिखरी केक, तहां करत रक्षक तेक।
तिह पकर-पकर तुरंत, द्रग फोर तोरत दंत ॥१०७०
कोऊ नासका श्रुति[11] काट, घट करत दनुज कुघाट।
राँवन पुकारे रोय, खल बात अपनी खोय ॥१०७१
पति लंक द्रष्ट पसार, निज नैंन बीस निहार।
फटचौ सु हीय जिम फूट[12], अवरोध[13] चालेऊ ऊठ ॥१०७२
मय-नंदनी[14] तज माँन, पुन कहेऊ नय पहचाँन।
सुन बंदरन कौ सोर, बोली सुबाच बहोर ॥१०७३
अकुलाय कहत ऊदंत, क्यौं नहीं माँनत कंथ[14]।
श्रीराँम सैन-सहेत, सोऊ ऊतर आये सेत ॥१०७४
सीय देहु पीय कर संध, पहिलैं बिचार प्रबन्ध।
बाढचौ न अबहु बिरोध, कीजै न अनहित क्रोध ॥१०७५

१ पृथ्वी। २ त्रिपुरारि=महादेव। ३ स्थापित किया। ४ आजानुभुज=घुटनों तक भुजाओं वाले। ५ पाषाण। ७ पड़ाव। ८ बाग। ९ मना करे। १० नीचा दिखाओ। ११ कान। १२ ककड़ी के समान फल। १३ रनिवास। १४ मन्दोदरी। १४ कान्त=स्वामी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुन सीख बोलेऊ सोय, मंदोदरी सुन मोंहि।
मैं दंनुज-गंन महांराज, सुर-मनुज-जेता साज़ ॥१०७६
कर जीत बरून कुबेर, जम पवन कीनेऊ जेर।
भुज तोहि नाहि भरोस, अनजांन-पन अफसोस ॥१०७७
सब भांत त्रीय समुझाय, ऊठ सभा बैठेऊ आय।
तहां देख पूंछेऊ तंत्र, मिल सांम-बायक[1] मंत्र[2] ॥१०७८
बोलेऊ प्रहस्त बिचार, नय नीत रीत निहार।
बल प्रबल जुत रघुबीर, तर सिंधु आये तीर ॥१०७९
जो दीयै सीय फिर जाय, ईह संध नीक ऊपाय।
कीय सुनत रांवन क्रुद्ध, मुरझाय गये मन-मुद्ध ॥१०८०
बिच हृदय रांम बिचार, बोले सु ताही बार।
कीजै सु आतुर[3] काज, सब सुनहु सुभट-समांज ॥१०८१
सुन सुकन[4] देवै साख[5], ऊर जुद्ध की अभिलाख[6]।
परचंड पवन-प्रवाह, दिस-बिदिस ऊठत दाह[7] ॥१०८२
भूकंप होत भयांन[8], थरहरत पब्बय[9]-थांन।
बिन बृष्ट बादर बीज[10], कर-करत सब्द करीज ॥१०८३
पल-भक्ष[11] पक्षी-पुंज्ज, गहराय कै कर गुंज्ज।
जल रुधर-जुक्त झरंत, आरक्त[12] मेघ ऊठंत ॥१०८४
मंडल सु सूरज-मांहि, छूटै सु ज्वाला छांहि।
जाहीं सु मृग-गंन जोय, रव करत भय सौ रोय ॥१०८५
रबि कबहु सीतल रूप, धर हुरत चंदा धूप।
नभ जोत-हीन[13] नछत्र, तम गिरे दीसत तत्र ॥१०८६
जांन्यौ सु निसचय-जात, अब होयगौ ऊतपात।
जांन्यौ सु लंका जोग, भुव रुधर लैहै भोग ॥१०८७
लै कोस लसकर[14] लार, तुम होऊ लखंन तयार।
परखाहु[15] जलनिध पाट, घेरीयै लंका घाट ॥१०८८

---

१ मंत्रियों से। २ सलाह। ३ शीघ्र। ४ शकुन। ५ साक्षी। ६ अभिलाषा=इच्छा। ७ ज्वाला। ८ भयानक। ९ पर्व्वत। १० बिजली। ११ मांसाहारी। १२ लाल। १३ ज्योतिर्हीन=प्रकाशरहित। १४ सेना। १५ परिखा=खाई।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुन लखँन बांनी ऋौंन, ऊठ भये दल-ग्रगवांन।
बंदरी-सैंन बुलाय, सासना[1] दीन सुनाय ॥१०८६
सुग्रींव रघुबर संग, ऊठ कवच पहरे ग्रंग।
बेला[2] सु बिजय बिचार, तँहां कीन धँनु-टँकार ॥ १०९०
ग्रनभीत[3] लंका ग्रोर, चाले सु डे़रा छोर।
सझ्झ बिभीखँन सुग्रींव, नल नील दीय रन नींव ॥१०९१
सुत-पवन लछमन संग, ग्ररु जांमबंत ग्रभंग।
ये रांम पीछैं ग्राय, संदोह[4] करत सहाय ॥१०९२
चाले सु रन कर चाह, ग्रनभीत जीत ऊमाँह।
कपि रिछ्छ कीय किलकार, हमगीर-दल[5] हलकार ॥१०९३
धर ढकत ऊठत धुँध, रज ग्राभ मारग रुंध।
कोऊ गहत सैंल कठोर, त्रन[6] जेम तरवर तोर ॥१०९४
बढ़ चले कपि तिह बेर, गढ लंक लीनौ घेर।
केऊ पतन[7] पहुँचे कोट[8], ग्रर रहे राखस ग्रोट ॥१०९५
खाई सु ऊँचे खोम[9], घरहरत जामह धोम।
थँह उत्तर-द्वार ऊतंग, श्रीरांम लछमन सँग ॥१०९६
पहुँचे सु ताही पौर[10], थित लंकपति की ठौर।
दल नील पूरब-द्वार, लै दुबिद मैंद[11] ही लार ॥१०९७
पँहुचे सु ग्रत परचंड, ग्रत साथ फौज ऊमंड।
ग्रंगद सु दछ्छन ग्रौर, पहुँचे सु ताही पौर ॥१०९८
गज रिखभ संग गवाख[12], लै गये लसकर लाख।
ग्रर-रहे[13] कीस ग्रँनेक, हुंकार करत हरेक ॥१०९९
पर जंघ तरस पलाय[14], ए संग हँनमत ग्राय।
पँहुंचे सु पछ्छम पौर, ग्रनगँनत कपि-दल ग्रौर ॥११००
मद्ध के गुलम-मझ्झार, सुग्रींव करत सभार।
लै चपल बंदर लार, प्रेरत प्रचार-प्रचार ॥११०१

---

१ शासन=ग्राज्ञा। २ वेला=समय। ३ निर्भय। ४ समूह। ५ अग्रणी।
६ तृण। ७ पत्तन=नगर। ८ किला। ९ गुम्ज। १० द्वार। ११ मयन्द।
१२ गवाक्ष। १३ ग्रड़ रहे। १४ दौड़कर, शीघ्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुत खबर करत सहाय, जहाँ-तहाँ जिह ढिग जाय।
छतीस कोट चलाक, कपि संग ले यक जाक ॥११०२
कपि-ईस कौ ईह काँम, जिह करत आठौ जाँम।
लछमन बभीखँन लार, दल भेज-भेज दवार[1] ॥११०३
जँहाँ देख जैसौ जोग, पुन हुकँम करत प्रयोग।
संग जाँमवंत सुखेंन, समरथ्थ नै संग सैन ॥११०४
पति-अवघ राखत पीठ, देखत सु चहुँ दिस दीठ।
बंदरी-सैना बीर, पुर लँक दीनी पीर ॥११०५
बपु[2] सिंध-सम[3] बिकराल, कट-कटत दंत कराल।
कर भृकुटि बंक करूर, जम-अंख बदन जरूर ॥११०६
पुन कोऊ नचावत पूँछ, अम्भार बारन ऊँच।
ऊरजस्त हस्थि अथाह, बल बंदरन बेवाह ॥११०७
ऊमड़े सु लंका ओर, जिम टिड्डीयन-दल जोर।
चालंत मिल पदचार, कूँवंत कर किलकार ॥११०८
आकास-मग्ग अछेह, खित ऊठी मानहु खेह[6]।
गढ लंक दुस्तर गौंन, पंछी न पावत पौंन ॥११०९
ईम घेर कै चँहुँ ओर, घहराय कपि घनघोर।
रूठे सु बंदर रीछ, बढ़ त्राह[7] लंका-बीच ॥१११०
बिकराल रांम-वरूथ[8], जम-जाल जूथप जूथ।
घेरचौ सु पत्तन घूंम, भर ओघ चंहु दिस भूंम ॥११११
परखा सु पाटत पूर, कर चूर कोट कँगूर।
केऊ तोर फोर कपाट[9], घल घेर बाटन[10] घात ॥१११२
जह खड़े रघुबर जाय, जाजुल्य[11] फौज जमाय।
मंत्री बिचक्षंन मेल, बोले बभीखँन बेल ॥१११३
करतव्य है कहा काज, सो कहहु कीस-समाँज।
जँहाँ खरे सब कर जोर, अवलोक रघुबर-ओर ॥१११४

---

१ द्वार। २ वपु=शरीर। ३ सिन्धुसम। ४ यमराज, दोनों। ५ क्षिति=पृथ्वी।
६ धूलि। ७ त्रास=भय। ८ राम-सेना। ९ किवाड़। १० वाट=मार्ग।
११ जाज्वल्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

निरभीतं तुम रघुनाँथ, सब नीत में समराथ।
अरजी सु हमरी येहु, दल जुद्ध सासन देहु ॥१११५
ईह लक थाल ऊथाल, जल-रासि करहैं जंबाल,।
राँवना रोपै रार, काँमना मंड करार ॥१११६
भेजीयै अंगद भींच[1], निज राखसिंद्र नगीच[2]।
कहि ऊचित बात करूर, जुध काज होय जरूर ॥१११७
आवै सु बाहिर ऐंन[3], सब घेर लैहै सैंन।
सकुटंब करहि संघार, पति-लंक खेत[4] प्रचार[5] ॥१११८
सुन मंत्र मंत्री साथ, रूच पाय कै रघुनाथ।
बढ़ चल्यौ अंगद बीर, ह्वै लंक दिस हमगीर ॥१११९
जब नमसक्रत[6] कर जोर, रघुनाँथ कीय तज रोर।
बोले सुराँम बिचार, द्रुत जाहु राँवन-द्वार ॥११२०
हम कहत जैसे हाल, कह देहु सोई ततकाल।
खल अबँहु चाहत खेम, तन जीयत मुरदा तेम ॥११२१
ऐस्वर्ज[7]-हींन अज्ञाँन, सिर चढी मीच[8] समाँन।
रिखी देबता गंधर्व, सर्पादि अफच्छर[9] सर्ब ॥११२२
कीय बैर कर्मा-क्रूर[10], जिह लग्यौ पाप जरूर।
मुहमेज[11] धोवहु मेल, गहि लेहु जँम-पुर-गैल ॥११२३
बोये सु जैसे बीज, तरू फल्यौ ग्रेह तुमीज[12]।
भोगहु सु बैठे भौंन[13], ईह समय पँहुच्यौ आँन ॥११२४
अह[14] हरो त्रीय अरधंग, अत मोहि दुर्बल अंग।
तोहि दंड दैन तपाय, ऊभे सु फाटक आय ॥११२५
मतिमंद त्यागहु मोह, कल-बेर[15] भूखँन कोह।
सो सझहु आप सरीर, प्रसमनन[16] ह्वैहै पीर ॥११२६
महरिखी मँनुजन मार, पद दयौ ऊचत प्रचार।
पद लेहु वँह हम पास, ऊर राज की तज आस ॥११२७

---

१ राक्षस। २ पास। ३ अयन=घर, स्थान। ४ युद्धक्षेत्र। ५ ललकार कर। ६ नमस्कृति। ७ ऐश्वर्य। ८ मृत्यु। ९ अप्सरा। १० क्रूरकर्मा=दुष्ट। ११ सम्मुख। १२ तुम्हारे। १३ भुवन। १४ हमारी। १५ युद्ध।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिन स्याहि[1] मेरी बाँम, कीय हरन अनुचित काँम।
बलवाँन बन पुर बीच निज ग्रेह बैंठो नीच ॥११२८
बल वँही देखन बीर, आये सु होय अधीर।
बल बीसभुज बतलाय, अततार्ई[2] सनमुख आय ॥११२९
तेरौ सुभ्राता त्याग, लीय सरन मो पद लाग।
सुख राज भोगहि सोय, खल मरहु भुज-बल खोय ॥११३०
लै सीया सरनौं लेत, दत जीव तुम हम देत।
अब होहु सनमुख आय, बाँनक[3] सु बीर बनाय ॥११३१
लै पाँख अंग लगाय, जो कँहूँ दिस ऊड़जाय।
तऊ ढूंढ माँरहि तोहि, हम द्रष्ट-गोचर होय ॥११३२
परलोक-हेत प्रीयोग[4], जो करहु अवसर-जोग।
ईह लंक-पुर फिर आय, नहो देखहौ नीयराय ॥११३३
बिध दयौ सो बरदाँन, ह्वै गई ताकी हाँन।
कीय घोर-कर्म कुभाय[5], तीय-हरन की अत-ताय ॥११३४
सुन राँम अंगद सीख, ऊड़ चले मग अंतरीख[6]।
बहु राँम कर विश्वास, पँहुचे सु राँवन पास ॥११३५
सब मंत्रीयन संजुक्त, अंगद प्रकासी ऊक्त।
सुन राखसिंद्र सधीर, बिख्यात अंगद बीर ॥११३६
पितू बाल[7] मोहि प्रसिद्ध, सुत ताहि लखहुं सनिद्ध[8]।
जाँन्यौ न ह्वै तौ जाँन, पति-अवध-दूत प्रमाँन ॥११३७
प्रेरचौ सु तेरे पास, सुन लेहु मम सम जास।
तै हरी रघुबर-तीय, पतिबृता जाके पीय ॥११३८
दल लेय् पत्तन-द्वार, रघुनाँथ जाचत रार[9]।
निज भवन तज निर्लाज, कल करहु जमपुर काज ॥११३९
बंभव सु लंक बसात, भोगहि बभीखन भ्रात।
रूठे सु रघुबर रार, सकुटंब करहि संघार ॥११४०

---

१ सहायता। २ आततायी। ३ वेष। ४ प्रयोग। ५ कुभाव=बुरी भावनासे।
६ अन्तरिक्ष=आकाश। ७ बाली। ८ सन्निधि=समीप। ९ युद्ध।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ईह कही अंगद उक्त सुन मंत्रीयन संजुक्त।
जब कहे रॉंम जबाब, सोऊ कहे ताहि सताव ॥११४१
सो सुनत ही बससीस, पर जरचौ दंतन पीस।
बोल्यौ सु सुभटन बीच, नहि जाय बंदर नीच ॥११४२
गहि लेहु येह गवाँर, बरजोर याही बार।
सुन बचन रॉंवन स्रौंन, ऊठ सुभट भुज-आजाँन ॥११४३
झूमैं सु अंगद झेल, परचंड पौरुख पेल।
ईत भिरचौ अंगद येक, ऊत च्यार भट अबिबेक ॥१०४४
पद गहत कोऊक पाँन, भिर परे जुद्ध भयाँन।
झकझोर पिंड[1] झपेट, चल चंड मार चपेट ॥११४५
धसमसत धरनी धूज, ऊर स्वाँस भरत अमूंज।
चँमकंत अंगद छाँह, बजुला सु वारी बाँह ॥११४६
राखसन कारे रंग, अंगद सु पीतन अंग।
घन दाँमनी[2] जिह घेर, बळ चली दुत[3] तिह बेर ॥१०४७
बपु तेज नंदन-बाल[4] जनुं धूम घेरै ज्वाल।
भुज-जुद्ध भिरेऊ भयंद, ईह रीत बीच अलंद[5] ॥११४८
बहु संभासद तिह बेर, ह्वै गये चक्रत[6] हेर।
फिर लगी केतन फेट, हहराय पर गये हेट ॥११४९
अंगद लख्यौ बल ऊद्ध, मन भयौ राँवन मुद्ध[7]।
जुवराज बल जम जेम, आपौ दिखावौ ऐम ॥११५०
ऊछल्यौ सु मग्ग-अकास, पर सुंभट राँवन पास।
चढ महल सिखर चछोह, कीय महाँ दारून कोह ॥११५१
जिह राज-मन्दर जात, लागी सु ऊपर लात।
फट गयौ जैसे फूट, तर परे गुंमज तूट ॥११५२
बपु बाल-सुत बलकार, कूंध्यो[8] सु कर किलकार।
पुन आय रघुबर पास, बल लंकधीस बिनास ॥११५३

१ शरीर। २ दामिनी=बिजली। ३ द्युति=कांति, चमक। ४ बालि-नंदन=अंगद। ५ राजसभा। ६ चकित। ७ मुग्ध, मूढ। ८ कूदा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहि आपनी कुसलात, बीती सु कीनी बात।
सुन मंत्रीयन सबेंत, श्रीरामचंद्र-सहेत ॥११५४
लंका सु पत्तन लूंम, भर रीछ बंदर भूँम।
साँमुंद्र सेंन समिंट, बोटचौ[1] सु जैसैं बिंट ॥११५५
चित चाह आपौ[2] छोर[3], हद[4] लोप लैंन हिलोर।
निश्चर डुबोवन नीर, बढ लहर ज्यूँ कपि बीर ॥११५६

दोहा

जमी सैंन रघुनाथ जब, लंका चहुँ दिस लूँब।
औंन-बीस राँवन सुनो, बाढी निसचर बूँब ॥११५७
गिरचौ राज-मंदर-गुँमज, कोलाहल कीय कीस।
परी बूँब लका-पतन, सुन आँनन दस-सीस ॥११५८
कपि सुखैंन दुर्धर्ष कपि, द्रुपि-सम[5] जिनकी देह।
घेर लंक धूँमन लगे, चारु दिसा अछेह ॥११५९
गर्जंत तर्जंत लंक गढ, भूप राँम के भींच।
सोभा लसत सुग्रींव की बिधु[6] जिम तारन[7]-बीच ॥११६०
परखा सहर पनाह[8] की, तोय-रास की तीर।
गिर किंदर ऊपबन गहन, भई बंदरन भीर ॥११६१
पुर-रक्षक राँवन प्रतैं, कही लखो जिम कथ्थ।
कपि-दल सौं घेरचौ करचौ, श्रीरघुबीर समथ्थ ॥११६२

छंद हरगीतका

सुन कीस घेरचौ बीस-आँनन, पीस दंतन पाँन कौं।
कर रीस कोप्यौ काल-सम कर-बीस रूप क्रसाँन[9] कौं।
चढ धवरहर[10] पं होय चक्रत दीठ बक्रत देखनै।
बँन और ऊपबन बीच बंदर लग समंदर लेखनै ॥११६३

१ वेष्टित किया, घेर लिया। २ अपनापन। ३ छोड़ कर। ४ सीमा। ५ द्विपसम = हाथी के समान। ६ चंद्र। ७ नक्षत्रों के। ८ रक्षा, शरण। ९ कृशानु = अग्नि। १० महल।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अवगाह जुद्ध ऊछाह[1] सौं बेबाह[1] फौज करी बिदा।
वँहि जाहु गहि कै वेग-बल कहि कीस नहि पँहुचै कदा।
ईक रूप सीय कर ऊभय आसा नई अनई[2] नेम की।
मिल सभय बाढी चटपटी मन ऊभय खेम-अखेम की ॥११६४
ईत राँम दीनी जुद्ध-अग्या बंदरन जिह बेर में।
पति लंकहु बहु सैन पेली घनी घूँमर घेर में।
ईत राँम के जोधा अरे प्राकार[3] परखद[4] पाटनें।
ऊत सुभट राँवन आय कै दल कीस लागे दाटनें ॥११६५
गिर-श्रंग लै ईत कीस गर्जंत तोर तरवर तेख सौं।
कंगू गढ कोऊ ऐच करखत[5] धोम बखँत[6] ग्रेख सौं।
बढ चली सैना बंदरी गढ कोट ग्टेह गली-गली।
निश्चरन सैना बढी निर्भय थंभ पाँव थली-थली ॥११६६
जय कहत राँम घने जने जय लखन बोलत जोर सौं।
दिस-बिदस पूरत होय द्रढ सुग्रींव जय की सोर सौं।
कपि गर्जना जिम केहरी किलकार कर-कर कूद कै।
प्राकार गिर आकार पौरन रुपे चँहुँ दिस रूघ[7] कै ॥११६७
जहाँ बीरबाहु सुबाहु जूथप पँनस नल बल पेल कै।
दिस-बिदिस कोट दबाय कै भुक मोर चालीय भेल कै।
बढ कै सकंधाबार[8] लौ घेरे सुनिश्चर घूँम कै।
भट राँम के ठाढे भये भर ओघ राखस भूँम कै ॥११६८
प्राचो सुदक्षन कोंन पर कपि कुमद लै दस क्रोर[10] सौं।
कपि प्रसभ ताहि सिहाय कौं महाँबाहु पँनस मरोर सौं।
दक्षनहू पश्चम-कोन द्रढ सत बली जूथप सालुरे।
कपि बीस कोट अगोट करकस[11] जोट बाँध भरे जुरे ॥११६९
पछंमहू उत्तरकोन पै तारा सु पितु सतबलि तहाँ।
ईक कोट बंदर संग ऊमड़े जुद्ध के कारन जहाँ।

---

१ अगणित। २ अनीति। ३ कोट। ४ खाई। ५ कर्षंत = खींचते हैं। ६ वर्षंत। ७ रुद्ध = रोककर। ८ स्कन्धावार = राजकोट। ९ समूह। १० करोड़। ११ कर्कश।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऊत्तरहू पूरव ओर के पुर-पौर पै श्रीरघुपती।
जहाँ बभीखन चँहुं मंत्रीयन-जुत जुरे लछमनहू जती ॥११७०
सुग्रींव ईनहीं सहाय्र कौं जुध करन कौं दल जोर कै।
जम-जाल-सम क्रम[1] रोप गिर जिम अरे रूप अरोर कै।
महाँकाय जूथप जहाँ मिले गोपुछ्छ-संग गवाछ लै।
ठहराय पग ईक ओर ठहरे ऊपल तरवर आच लै ॥१०७१
रिछपती धूँमर संग रिछ्छन दूसरो दिस दाट कै।
ईक कोट लेय अँनीकनी[2] बढ ठौर लंका-बाट कै।
गज गवय-सर्भह गध-माँदन ईनहि आवन औरहू।
सब कटक काँ संभार साधन द्रुत लगावत दौरहू ॥११७२
पुर लंक कौं पीड़ित करचौ घन घोर कीस घुमंड कै।
रुप रही सैन ऊमंड राघव मेर[3] पाँबन[4] मंड कै।
पति लंक सुनत ऊछंड भ्रटपट सैन बोल निसाँचरा।
गत-लोल बाँधहु गोल गह मह तोल खग रन-ततपरा ॥११७३
सुन लंकपति सासन निसाँचर दिसा-बिदसा दल मिले।
कल-मले चल-चल जुद्ध-कारन भिलम धारत भिलमिले।
घनघोर सब्द कठोर घहरत हुरर सिंधु हिलोर की।
आँनक अवाजन बीर बाजन संख साभन सोर की ॥११७४
हुव नाद भेखन[5] हयन-हेखन[6] गज-बिसेखन गाज की।
पर त्रास जास अकास पूरत ग्रेक रूप अवाज की।
निर्घोक[7] होवत रथन नेमी[8] ताँन धँनु दै टंकरा।
जम-जाल माँनहु कढे जाजुल बढे राखस बंकुरा ॥११७५
आँनन सु संखन मिल असंखन स्वेत रंग सुहावनै।
तन नील जिनके भर तँमोगुन वेख कर लग धाँवनै।
ईम लंकपति सेंना ऊमंडी वान बरखन अतबली।
बुग-पंत[9] संजुत बीजुरी मंड मेघमाला ज्यूं मिली ॥११७६

---

१ पांव। २ सेना। ३ मेरु = पर्वत (सुमेरु)। ४ पैरों को। ५ बख्तर। ६ भीषण। ७ ह्रेषण = घोड़ों का हीसनां। ८ निर्घोष = ध्वनि। ९ नेमिपहिये की पुट्ठी। १० बकपंक्ति = बगुलों की कतार।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुहमेज होय मजेज सौं न हिजेज कोनी निश्चरा।
कर नांद केहर कपि करोरन भद्द[1] से हर जिम भिरा।
जय-जयत श्रीरघुनाथ जंपत जयत लछमन ज्यांनकी।
सुग्रींव जय-जय सद्द सुनीयत हांक-धुन हनुमांन की ॥११७७
आवाज भेर अडंबरा गल गाज कपि-दल गह-गही।
रघुबीर-सेंना रार कौं बढ बार-धारा[2] ज्युं बही।
अहिराय[3] सम कर तेख ऊर गहि राय-कपि घनघोर ज्यूं।
बरसात भद्दर[4] गत बिसेकत लूंब बद्दर-लौर ज्यूं ॥११७८
महु वाल मांनहु मधुकरा[5] करवाल[6] परसत कै कुपे।
बिकराल आग बलाय बढ रन भाल मर्कट थट रुपे।
थित थाल जल जिम द्रंग थरहर आस परहर अंग कै।
गये कूंद कै कपि भाल गरहर रूप नरहर[7] रंग कै ॥११७९
कर पाव घाव अनेक मर्कट दपट पटकत दौर कै।
कर रीस आयुध कर्बुरा[8] मिल कीस लेत मरोर कै।
जुर केक जंग अभंग जोधा चोट दै दै चटपटी।
ऊड़जात कीस अलंग कौं भारत फलंग[9] सु मर्कटी ॥११८०
कोऊ ऊपल लै लै कंगुरन के पुंन्यजन[10] पै परहरें।
तन ताक सिर केऊ दसन[11] तोरत असन[12] मांनहु औसरें।
कोऊ चरन पकरत कंधरा[13] कोऊ करन सौं गहि केस कै।
पुन दै चपेटन धरन पटकत खंभ-ठोरत[14] खेस कै। ॥११८१
कोऊ भुजा-जुद्धहु करत है ऊर क्रुद्ध दुद्धर ऊफ्फनै।
निश्चारु अरु बेंनचार निर्भय रार लागे रूप्पनै।
धमचक्क धक्कन धर धुकी दिक्करी पावन डोलनै।
कररक्क रीढक कंमठ की बररक्क लागी बोलनै ॥११८२
कलहाक हाकन कर कजाकन मेल दल घमसांन कै।
समसमस झाकन सेल-साखन ऊमड़ लाखन आंन कै।

१ भाद्रपद मास। २ वारि धारा। ३ सर्पराज। ४ अद्रि = पर्वत। ५ भ्रमर। ६ तलवार, घूंआ। ७ नरहरि = नृसिंह। ८ राक्षस। ९ फलांग। १० पुण्यजन = राक्षस। ११ दशन = दांत। १२ मुख। १३ ग्रीवा। १४ जांघ ठोकना।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कर खग्ग खेटक[1] लयै करबुर घाव देत घने-घने।
कपि लै कपाटन अर्गला कढ जोर तौर जने-जने ॥११८३
ऊत साँग लै ईत थंभ आटन घाट घाटन घेर में।
सर-चांप ऊत ईत ऊपल सरसत जूँझ रन ऊर झेर में।
पुन भयौ हाहाकार पत्तन भीर लख कपि भाल की।
मिल भाँमनी सब हाथ मीजत बूँबरी[2] बढ बाल की ॥११८४
पर्बताकार प्रचंड पौरुख रिच्छ कीस रिसाय कै।
सिल प्रबल बरखा करी घन-सम झेल व्रछ् छ झुकाय कै।
फिर दौर-दौर चपेट फेटन लै लपेटन लूँम कैं।
नख ऊदर सौं अंतन[3] निकासत झोक दंतन झूँम कै ॥११८५
अत प्रबल जुद्ध भयौ ईहीं प्रथमैं सु सहर पनाह पै।
निसचार अरू बनचार निज-निज रुपे अपनी राह पै।
हौनै सु लागौ बिजय-हित हढ दुँद-जुद्ध दुहूँन कौ।
खग धूंन कै लै ओट खेटक क्रंमत च्यारहु कूँन कौ ॥११८६
मिल मेघनाद मरोर मुछ्छन आय अंगद आहुरचौ।
रव करत घोर रचाय कै भव[4] अंधकासुर जिम भिरचौ।
दुरधर्ख अरू संपात कपि दोऊ जुरे खल पर जंघ सौं।
महाँबली राक्षस जंबुमाली जुटचौ रन बजरंग सौं ॥११८७
खल सत्रुघन जुटे बभीखन गजतपन अवगाह कै।
कपि नील भिरेऊ निकुँभ सौं सुग्रीव प्रघस समारुकै।
बिरूपाक्ष लछमन अरे रन-बिच करन धँनुं लै बाँकुरा।
पति-अवध ओ लंकापुरी-पति ऊभय जय के आँकुरा ॥११८८
रस्मीय[5] केत रिसाय कै ज्यूं अग्नि केतहु जाँनीयै।
जिग कोप अत दुरधर्ष जाजुल मित्र घन परमाँनीयै।
श्रीराँमचंद्र अरे जु संगर लाज लंगर लाय कै।
जय खंभ जंग असंभ जुरकै प्रबल थंभे पाय कै ॥११८९

---

१ ढाल। २ रोने की आवाज। ३ अन्तडियां, आंतें। ४ शिव। ५ रश्मि = किरण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मिले मयंद[1] [illegible] वज्रमुष्टी [illegible] भरे ।
[illegible] तपन [illegible] भरे [illegible] लै [illegible] कर्बुरे ।
[illegible] खेत [illegible] सुखेन सों [illegible] विद्युन्माली [illegible] विफुरयौ ।
[illegible] कपि और राक्षस [illegible] दोऊ[3] [illegible] करयौ ॥११९०
विकट[3] [illegible] बंदरन को [illegible] भयौ घनौ ।
[illegible] अरहरि[4] [illegible] खेत [illegible] जनौ ।
धरा [illegible] दर्वा मई [illegible] धारा[6] मांस-कर्दम[7] मांचा कै ।
सर्प [illegible] संगर बीर [illegible] जम-जम जाच कै ॥११९१
घन [illegible] नांद [illegible] के घट [illegible] गाज कै ।
[illegible] अंगद [illegible] करत [illegible] कै ।
लै [illegible] गदा [illegible] मिलाय [illegible] कै ।
[illegible] कहत [illegible] सौं [illegible] कै ॥११९२
[illegible] चूरत [illegible] संघरे ।
[illegible] भरे ।
[illegible] जंत्र [illegible] कर[1] [illegible] सनमुख [illegible] कै ।
[illegible] कमल [illegible] कै ॥११९३
[illegible] हनुमंत [illegible] कै ।
[illegible] कै ।
[illegible] चक [illegible] ।
[illegible] मिल [illegible] ॥११९४
[illegible] बली ।
[illegible] चक[13] [illegible] कली ।
[illegible] लै लूंट[14] [illegible] ।
[illegible] ॥११९५
विरूपाक्ष कों [illegible] में ।
[illegible] संग्राम [illegible] में ।

---

१ मयंद। २ युद्ध, मारकाट। ३ दोनों। ४ त्याग कर। ५ धूलि। ६ रक्तधारा। [illegible] ११ [illegible] वरुण। [illegible] १२ [illegible]। [illegible]

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अग्नीहू रस्मीकेत[1] अरू जिग कोप सत्रुध्नहू जिते।
रघुनाथ मारे सीस कै रन ऊबरे न भिरे ईते ॥११९६
मूकांन मारचौ बजृमुष्टी कीस मैंद करार सौं।
रथ गिरचौ धरनी होय रज-रज मरे धौंरा मार सौं।
मिल कै निकुंभ सुनील मर्कट रार कीन रिसाय कै।
घन करचौ घायल नील कौ घट बाँन सत बरसाय कै ॥११९७
रुप रार नील रथांग[2] कौं डारचौ सुतोल डराँवनौ।
सिर रथी कटकै स्वारथी[3] जुग भयौ जँमपुर जाँवनौ।
बपु बजृतपरस दुबिद बंदर असनप्रभ राकस अरचौ।
सर असन-प्रभ दै ८ज्रसम कछु दुबिद कौं घायल करचौ ॥११९८
तरु तरल साँखू[4] लेय तमक्यौ दुबिद दौर दबाय कै।
कीय खंड-खंडन दै प्रकंडन मरचौ मन मुरझाय कै।
सोबर्न सझत सताँग[5] पै चढ बिंदुमाली चाल कै।
सोबर्न मूखत चाँप धर सर भरत अयमय[6] भाल कै ॥११९९
तहाँ दई मार सुखेन कै तन बर्ख कै बाँनावली।
हस भयौ हर्खत पर्ख[7] हित कौ चर्ख काल महाँछली।
ऊतकर्ख[8] श्रंग ऊठाय कै मारचौ सुखेन मिलाय कै।
रथ करचौ चूरन महाँरथी रन रुप्यौ कूद रिसाय कै ॥१२००
तिह बच्यौ देख सुखेन तरक्यौ सिला लै कर संमुहा।
महाँक्रोध कर फिर बिंदुमाली गदा लै द्रढ बल गहा।
मारी सु ऊर पग मंड कै लागत सुखेनहु ना-लस्यौ[9]।
मारत सिला कै बिंदुमालो फेफरा कालज फस्यौ ॥१२०१
गिर स्रङ्ग ज्यौं सोऊ धरन गिर गये गौंन कीय जमग्रेह कौं।
लागे सुगिद्धन चाँच लौंचन[10] दौर जंबुक[11] देह कौं।
भय दुंद-जुद्ध भयंकरा राखसहु बंदर रूठ कै।
चहुँ ओर भूत बिताल नाँचत केऊ कबंधहु ऊठ कै ॥१२०२

---

१ रश्मिकेतु। २ पहिया। ३ सारथी। ४ शाखा। ५ रथ। ६ लोहमय। ७ देख कर। ८ उत्कर्ष, विशाल। ९ नहीं गिरे। १० नोचने। ११ शृगाल।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जूझे सु दांनव-देवतन जिम कीस-राखस क्रुद्ध में।
मुरदाँन छाई बसुमती[1] मिल जूझ जागा जुद्ध में।
केऊ परे तूट तुरंग पक्खर काय भाखर कुंजरा[2]।
खिर परें खर जहाँ ऊंट खच्चर रथ-रथी जूरा-जुरा ॥१२०३

दोहा

जुद्ध भयौ अत प्रबल जँहाँ, राखस बंदर रूठ।
भट केते घायल भये, पाछी वई न पूठ ॥१२०४
दुंव-जुद्ध होवत दुसह, सूरज गयौ सुमेर।
लटे कीस हरखन लगे, बढ राखस जिह बेर ॥१२०५
साँझ अंत भई सर्बरी[3], अत तम[4] गुन ईधकाय।
ऊमड़े निसचर सभ्भ अनीं, समर-हेत सरसाय ॥१२०६

छंद त्रोटक

दुरचौ असताचल ओट दिनेस, बढचौ तम च्यारहुँ ओर बिसेस।
सिवा[5] मुख ऊक कढी रब संग, मृगादन[6] कोकत[7] घोक ऊमंड ॥१२०७
कहुँ मृदु-लोमक[8] सद्द करंत, ज्युंही मृग-दंसक[9] बोलत जंतु।
चड़ी नभ पिंगलका[10] चहकात, दिबाँधक[11] बायस[12] भीत दिखात ॥१२०८
मिले प्रतिरोधक[13] जारन[14] मोद, चुरैलन भूत जगे चँहुँ कोद।
नछ्छत्रन-जोत मिली कँहुं नैन, बदे तिह बेर भयंकर बैन ॥१२०९
पलादन[15] जोर बिभावरी[16] पाय, ऊमंडेऊ आयुद्ध ल अनखाय।
गही बँनचारन की तिन गैल सपक्षहु धावत माँनहु सैल ॥१२१०
मिले फिर मर्कट कल्प[17] महेस, भुजंगम पूंछ मरोरत भेस।
भिरे भट संगर रूप भयाँन, निसांचर कीस भये जल लौंन ॥१२११
रुपे निसचारीय मेचक[18] रंग, अरे रन भल्लुक कीस अभंग।
ईतें जय रांम पुकारत आस, ऊतै जय रांवन की अभिलास ॥१२१२

---

१ पृथ्वी। २ हाथी। ३ शर्वरी = रात्रि। ४ अंधकार। ५ शिवा = शृगाली। ६ जरख। ७ बरगड़ा। ८ खरगोश। ९ वनबिलाव। १० भैरवी = चिड़िया। ११ उल्लू। १२ कौवे। १३ चोर। १४ परस्त्रीगामी। १५ राक्षस। १६ रात्रि। १७ प्रलय। १८ काले।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उभै दल मारहि-मार उचार, चढै इक-इक्कन बीर बकार।
महाँ भयकार बन्यौ अवमर्द[1], सबै दिस होत कुलाहल[2]-सद्द ॥१२१३
न देवत पीठ निहार-निहार, रचावत ईठ मचावत रार।
झँझोरत कंध्र मरोरत जोर, करै दुन दावहु घाव कठोर ॥१२१४
मड़ी निसचारन आयुध मार, उहै कर कीस तरोवर डार।
उखारत अंगव पाँन अमेठ, फलादय[3] और लगावत फेट ॥१२१५
बढ़े दल बंदर आग बलाय, पलादन जूहन-जूह[4] पुलाय।
भमे केउ कातर कूह करंत, भयातुर होय उसास भरंत ॥१२१६
अरे रन नैरत सूर उमाह, सुबर्न के भूखन भीर सनाह[5]।
उजासत भासत बीच अँधार, प्रकासत ओसधि जाँन पहार ॥१२१७
बढे तेऊ बंदर के दल बीच, मरोरत कंध्र मिलावत मीच।
जहाँ केऊ बंदरहू कर जोर, लगावत लातन गात लथोर ॥१२१८
चलावत बंदर केक चपेट, फलादय कंटक की फरफेट।
जरे रथ हाटक[7] के जर जाल, भरे रिस घूमत झूमत भाल ॥१२१९
मलप्पत कीस ज्यूँहीं मृगराज, गयंदन कंधन ऊपर गाज।
हडूड़त बाजन[8] की सुन हेख[9], प्रहारत पाखर की दुति पेख ॥१२२०
लथोरत लूम लपेट लगाय, तुरंगीय जंगीय के तरकाय।
चढ़े रथ ऊपर कीस कजाक, करै धुजडंडन खंड कजाक ॥१२२१
दकूलन[10] झूल फटै नख दाँत, भूमैं उड़ ऊपर भाँतन-भाँत।
जरी जर-तारन मौतिन-जाल, मिली नभ जाँन नछ छत्रन-माल ॥१२२२
बिड़ारहु मारहु बोलत बाँन, मरोरत मुट्ठन सोव्रन-म्याँन।
कटै कपि चाप कलाप कलम्ब[11], प्रनासत तोमर[12] साल प्रलंब ॥१२२३
समेटत लेत सक्कतीय सूल, कटै पर-घातन[13] ह्वै प्रतकूल।
मड़ी कपि अंग उतंगन मार, धधुंनत मुक्कन धुक्कन धार ॥१२२४
लगावत लातन घातन लोट, चपेटन हाथन की चल चोट।
बिहब्बल राखस ह्वै बिचलाय, परामुख भागेऊ दूर पलाय ॥१२२५

१ अवमर्द = महायुद्ध। २ कोलाहल। ३ वृक्ष। ४ झुंड के झुण्ड। ५ राक्षस। ६ सन्नाहं = बख्तर। ७ स्वर्ण। ८ बाजी = घोड़े। ९ हिनहिनाहट। १० दुकूल = दुपट्टे, वस्त्र। ११ बाण। १२ भाले। १३ [illegible]

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुरे लेक आस-बिचार प्रमीत[1], जुरे कपि भालुन की लख जीत।
घनी फिर कीय नगारन घोर, सताबीय संख असंखन सोर॥१२२६
ठिले बहु राखस बाँधत ठाट, अडंबर बाजन[2] को सुत आठ।
जुरे तहाँ सैनक संग जमाय, भुरे जिम घोर भुजंगम भाय॥१२२७
हुई तब बाजन भेखत हेख, बड़े द्वीप गाज अवाज बिसेख।
भई निस रात्रीय काल भयाँन, मही सब छाय रही मुरझाँन॥१२२८
परे कपि राखस ऊपर धुंव, चले तउ संगर को कर चाव।
रहे दल बंदर रोकत राह, पिले चल राखस बेपरवाह॥१२२९
भड़ी कीय राघव पै सुर फोक, घनी कर चाँप टंकारन थोक।
ईतं रघुनाथहु चाँप उठाय, सनंकत[3] बाँन तजे सरसाय॥१२३०
जुरे बिव औरन बाँनन जंग, भुमैं भहरावत जाँन भुजंग।
बढ्यौ बहु बाँनन को बिसतार, अँधारीय रैन मही अँधियार॥१२३१
भड़े तम आँखन में रज आर, डरे कपि ओट गहै तरु डार।
बिसेखत देखत कोस बिहाल, तहाँ रघुनंदन बिन्न बिहाल॥१२३२
गह्यौ धनुं लद्दक[4] हस्तन गाढ, चुने सर जोत[5] चिमंटेम चाढ।
लगे दल राखस जाय बलाय, सिखा[5] जंनु पावक[6] की सरसाय॥१२३३
मिल्यौ खल राखस को दल मीच, बढे रन संगर मायेक बीच।
मिलो बजृदष्टहु बाँनन मार, सोई दल राखस को निरधार॥१२३४
परयौ दुरधर्ष न नैक धरोज[7], खरे हुये राखिन संभेव खोज।
ज्यूँही[8] जिम सत्रु असंभव जोष, बढावत साँम राँम बिलोक॥१२३५
महोदर औ सुकसारन मेल, खरे हुय नाहि करयौ रन खेल।
हले महाँ पारस सोभत हाथ, निहार कैं पौरख कौं रघुनाथ॥१२३६
जरे बहु राखस बाँनन-ज्वाल, मिले जिम दीप पतंगन माल।
सुबर्न के बाजत की सुर सोक, उड़ै जिमनूँ जिम अंबर थोक॥१२३७
रची अँधकारीय सायक-जाल, जुरे कपि भालुक राखस काल।
कर्यौ रन कुंभ को बहु जोर, घटा जिम गाज रही घनघोर॥१२३८

१ मस्तक। २ ढक्काऊ बाजे। ३ सनसनाते हुए। ४ अंकुश जड़ मुष्टिका। ५ लौ।
६ अग्नि। ७ धैर्य। ८ वर्षा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परै प्रतिसब्द पहारन पुंज्ज, गुहारन किंदर ऊठत गुंज्ज।
भई प्रज लंक महाँ भयभीत, गवावत नार अमंगल गीत ॥१२३९
सोई निस ह्वै गई माँस समाँन, बिभासत ह्वै कबहूँ न विहाँन[1]।
निसाँचर मेचक रंग निरेह, ईतै कपि नीलहु रिछ्छ अरेह ॥१२४०
भयंकर दीसत है जिम मेस, करै नखमार गृहा-गृह[2] केस।
जहाँ बढ अंगद सौं बरजोर, मिल्यौ घननाद हू मुछ्छ मरोर ॥१२४१
ऊभै भट बीर पराक्रम ऊद्ध, जुहारीय एक सौं एक न जुद्ध।
मड़ी तहाँ एक पै एक न मार, बिसेखन संजुत नाम बकार ॥१२४२
रुप्यौ घननाद ऊतै पग रोप, करचौ ईत अंगद दारुन कोप।
मतौ कर मारन कौं मन-माह, चल्यौ सँनीकखं[3] जबै जय जाह ॥१२४३
ऊतगन श्रंग ऊपार-ऊपार पटक्केऊ सीस प्रचार-प्रचार।
तुटे रथ स्वारथी और तुरंग, ऊड्यौ घननाद समेटत अंग ॥१२४४
लुक्यौ नभ जाय गह्यो मन लाज, सबै जय बोलत कीस-समाज।
बभीखन आदक औरहु बीर, सराहना अंगद कीन सधीर ॥१२४५
जहाँ घननाद खिसाय जरूर, गरज्जीय फेर संभार गरूर।
बृहंमाँ[4] जास दयौ बरदाँन, अंगजित छाय हृदै अभिमान ॥१२४६
ऊपाय कै मायक-जाल[5] अनेक, अनेकन ऊपर सज्जीय येक।
करी भर बाँनन की कर कोह, सबै हुव घायल कीस सँदोह[6] ॥१२४७
करी भर आग अँगारन केर, बढी जल धार-रसा[7] जिह बेर।
घूबै घन-आश्रय[8] श्रोनित-धार[9], श्रवै पल[10] कौंसक[11] गोदरू[12] सार ॥१२४८
परै ऊड धूर जँभोरत पाँन, पसाईय गोलक मार पखाँन।
पिसाँचनो साँकनी डाँकनी प्रेत, ऊचारत बानीय केक अहेत ॥१२४९
न सक्कहि एकन-एक निहार, ऊठ्यौ दिस चथारहु घोर अँधार।
भये बस मोह जबै कपि भाल, ऊचारत आरत[13] बाँन ऊताल[14] ॥१२५०
सुकंठ की फौज लखी बिन-सुद्ध[15], जबै रघुबीर बकारेऊ जुद्ध।
दये रघुनाथहु बाँन अदिष्ट,[16] सँभार कै बोल मिलाय कै सिष्ट ॥१२५१

१ प्रभात। २ ग्रहाग्रह = पकड़ा धकड़ी। ३ सन्निकर्ष = निकट। ४ ब्रह्मा। ५ मायिक-जाल = इन्द्रजाल। ६ समूह। ७ पृथ्वी। ८ घनाश्रय = आकाश। ९ शोणित-धारा = रक्तधारा। १० मांस। ११ हाड। १२ मज्जा। १३ आर्त्त। १४ उत्ताल = ऊंचे स्वर से। १५ बेसुधि। १६ अदृष्ट।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नहीं तन घायल भौ घंननाद, बढ्यौ रघुनायक होय बिखाद[1]।
ईहीं अवसान[2] कौं जाँन अभंग, भरे बिख-बाँन समाँन भुजंग ॥१२५२
तजे रघुनायक पै कर तेख, बढे नभ-मारग आय बिसेख।
अनेकन देख बिचै असमाँन, सपक्षहु[3] तक्षक-नाग[4]-समाँन ॥१२५३
भयंकर जीह[5] दिखावत भाल, ज्युँही फिर तिक्षन[6] दाँतन-जाल।
भयंकर देखत ही कपि भाल, चलाय न जाय पलायन चाल ॥१२५४
खरे रहे पुत्तरी जेम पखाँन, बढे तेऊ राघव पै अहि-बाँन।
सकोमल गात लगे सरसाय, भुजंगम भीम मनौ भहराय ॥१२५५
भिदे तन राघव लछ्छन भाल, बिलछ्छन तिछ्छन दंत बिसाल।
बिलोकत राघव लछ्छन बीर, परेखत लछ्छन राघव पोर ॥१२५६
बिचछ्छन श्रीरघुबीर बिचार, तत छिन जूथप कीन तयार।
सबै लख बात कहो समुझाय, ऊबेल कौं कीजियै सिद्ध उपाय ॥१२५७

दोहा

कपि रिछ्छन अज्ञा करी, बेला कठन बिसेख।
मेघनाद आकास-मह, दुरचौ सु आबहु वेख ॥१२५८
अज्ञा सुन अवधेस की, ऊड़ चाले आकास।
सिल तरबर लै गुरड़-सम[6] पौरुख करचौ प्रकास ॥१२५९

छंद पधरी

चाले ढूंढन कौं सून्य[7] चूर, दस महाबली कपि दूर-दूर।
द्रढमति सुखेन के पुत्र दोय, हेरत तिन संगी नील सोय ॥१२६०
बालि कै पुत्र अंगद बहोर, अरु सरभ दुविद आकास ओर।
हेरन पुन चाले हँनूमाँन, जुत साँनुप्रस्थ कपि रिखभ जाँन ॥१२६१
नभ रिखभ सकंदहु बढे लार, सुत-राँवन कौ आपौ सँभार।
बांनन सौं मारन लग्यौ बीर, भई सराजाल[8] आकास भीर ॥१२६२

---

१ विषाद = दुःख। २ अन्त। ३ पंखसहित। ४ तक्षक सर्प। ५ जिह्वा = जीभ।
६ तीक्ष्ण। ६ गरुड के समान। ७ शून्य = आकाश। ८ बाण-समूह।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कौनिक दसहू दिसि अंधकार, बरसत जित तित बानधार ।
लखि सके नाहिं तिहि अंग लेस, दुरि रह्यौ जिम बादर दिनेस ॥१२६३

घटि राम लखन के करत घात, दस दिसा नाग-सायक बिख्यात ।
बंधि परे पास में उभय बीर, सुधि भूल गये आपन सरीर ॥१२६४

पौढ सरसैया पग पसार, अरबिंद कमल-नयन तन मन बिसार ।
रत स्रवत अंग में लखन राम, सोभित तन गौर और स्याम ॥१२६५

घननाद भजिनी करी घोर, बोल्यौ सु ऊँचे बाम ठौर ।
मो हाथ सों भिर के इंद्र मूढ, गम पाई माया महा मूढ ॥१२६६

बपुरे मानव को कहा बात, भजत जमपुर को उभय भ्रात ।
इहि कहत मारि चाम और, दोनों रघुबर को दौर-दौर ॥१२६७

सुकमारवार जेतक ससेर, तहँ ताकि-ताकि के जरे तीर ।
परवाह पवन लागत प्रचंड, जिम जात सरक ज्यों भुजा-डंड ॥१२६८

गिर परे लखन इम राम गात, फैलाय पाँख खग फरफरात ।
पर गये नाग में नाग-पास, संकत अनेक हु बंध उसाँस ॥१२६९

[illegible] पंक-पंत, [illegible] दंत ।
बच्छ [illegible] जैसे [illegible] भेस ॥१२७०

[illegible] लोह [illegible] बात ।
तिल-तिल बगतर के भये टूँक, ऐसे सर मारे फिर अचूक ॥१२७१

ऊठ भई अँधारी अंत-अंत, भननाय भृङ्ग जैसे भ्रमंत ।
देख के कीस-दल भग्यौ दूर, घर हरत बाँन जिम बाँन धूर ॥१२७२

पौरख सों केतक थंभ पाव, चित्राम-पुतरी बने चाव ।
रोवन लगे बहु कीस रोज, धोवन हाथ हाथन धरोज ॥१२७३

ऊड गये कीस जे अंतरीख, श्रीराम लखन देखे सरीख ।
चेष्टा न करत पग हाथ चाल, बसुमती ऊतरे हु बिहाल ॥१२७४

घननाद भयो चुप देत घाव, बाँच्यौ कपि सेना कछू बचाव ।
सुग्रीव बभीखन आय संग, अंगद मयंद यूथप अभंग ॥१२७५

---

१ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४ बेचारे ५ समं[illegible] ६ [illegible]बाहु ।
७ पवन । ८ [illegible]

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हँनूँमान आद नल नील हेर, फिरनं कौं लागे चहुं फेर।
सब जतन करन लागे सुखेन दल वंदर कौं बिस्वास दैन ॥१२-६
ईत रघुबर की गत भई येह, अवलोरु कीस दुखवत अछेह।
निज फौज समिल कर मेघनाद बोल्यौ निसंक तज कै बिखाद ॥१२७७
जुग भ्रात कहूँ के जती जूंन, खर दूखन काका करचौ खूंन।
बिद्वेख[1] निकाग्यौ ऊभय बीर, सो मरे परे सुंदर सरीर ॥१२७८
द्रग सौं सब मिल कं लेहु देख, बिन स्वास परे दोऊ जती बेख[2]।
बरसात नदी ज्यूं लंक बीच, कींनौं दुखरूपी मलिन कीच ॥१२७६
धोयौ पाँनप[3] की दिव्य धार, पीछौ न होय जाकौ प्रचार।
जूथप कौ निर्बल भयौ जूह[4], सर्द[5] कौं स्वेत बादर-समूह ॥१२८०
सब राखस बंदर सुनत संग, ऊचरचो ऊच्च बांनी अभंग।
गंभीर बाँन कौ सुनत घोर, अवलोक डरत आकास ओर ॥१२८१
ठाढचौ बंदर कौ देख ठाट, कीनौं बिजुरी-सम करकराट।
टंकार धनख तूंजोह[6] ताँन बरसाँवन लाग्यौ फेर बाँन ॥१२८२
जूथन के जूथप जाँन-जाँन, अवलोक बली सौं बली आँन।
दीनैं सर अगनत आँख देख, अहि-पांख लगे जैसे असेख ॥१२८३
नव बाँन लगे कपि देह नील, दोऊ दुबिद मैंद त्रय लगेऊ डील।
बपु जाँमवंत कै एक बाँन, हेर कं दये दस हँनूँमाँन ॥१२८४
दीनैं गवाक्ष कं बाँन दोय, जेतेहु सरभ कै जाँन जोय।
अगद कै दीने सर अनेक, बपु रिछ्छराज कै तन बिसेक ॥१२८५
रबि-किरन बेग सिखी-सिखारूप[7], धर हरत जेठ की मनहु धूप।
ऐसी सर-धारा धर ऊमंड घर हेरऊ फेर पौरुख घुमंड ॥१२८६
डहकाय कीस-सेना डराय, पुर लंका पंहुच्यौ मोद पाय।
जाय कै करचौ दससिर जुहार, सब कहे समर के समाचार ॥१२८७
ईत सोक बढचौ कपि-दल अछेह, दुख मिट्यौ दसानन निसंदेह।
जाँनी जय अंगज इंद्रजीत, पुन करी दसानन ईधक प्रीत ॥१२८८

१ विद्वेष। २ वेष। ३ धनुष। ४ यूथ = समूह। ५ शरद्‌ऋतु। ६ प्रत्यंचा।
७ अग्निज्वाला के समान।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सिर सूंघ दई आसिष सपूत, तूं अमर रहौ तेरी करतूत[1] ।
ईह कह कै भेट्यौ लाय अंक[2], लागी सु बधाई बटन लंक ॥१२८९
ढमकनै दुंदभी लगे ढोल, प्रति गुंज्ज बढी आकास-पोल ।
गावत मंगल के नार गीत, जय-जया बोल कैं ईंद्रजीत ॥१२९०
सुन जूथप सबही ह्वै सभीत, प्रभू रामचन्द्र सौं समुझ प्रीत ।
रुखवारी करनै लगे रोक, सब खरे भये बिसराय सोक ॥१२९१
मिल कैं नल अगद हँनूंमाँन, जूथप सुखैन अरु जाँमवाँन ।
पुन कुमद नील बाहू प्रचंड, अतिबली सतबली गज ऊमंड ॥१२९२
जिम पनस-सरभहू बाँध जोट, ईह रीत रिखभ आयौ अगोट ।
पुन पनस गवाक्षहू साँनुप्रस्थ, प्रधु रँमासुँदहू बल प्रसस्थ ॥१२९३
ईन आद सबही जूथप अनंत, अन हलत जहाँ जावत तुरंत ।
सुग्रींव कटकू आपौ सँभाय, चालीस कोस लौं रह्यौ छाय ॥१२९४
रखवारी सबही करत राँम, ठहरे केऊ बिहरत ठाँम-ठाँम ।
सुध गुप्त प्रकट राखत सुमार, दाखत[3] सुचेत कोऊ खबरदार ॥१२९५
ईह अवसर दससिर-हित ऊपाव, भेजे केऊ राखस भेदभाव ।
नहि लग्यौ दाव जिनकौ निदाँन, ईह अकल ऊपाई हृदै आँन ॥१२९६
त्रजटा[4] बुलाय कै कह्यौ तास, ऊर सीता मोसौं है ऊदास ।
पति राँम भरोसौ करत पूर, सर-सेज्या सूते ऊभय सूर ॥१२९७
जीवै न मृतक हुय कोऊ जीव, पुन मिलहै कैसै सीया पीव ।
आँखन दिखाय लावहु अगार[5], पति समुझै मोकौं सहित प्यार ॥१२९८
सब मिल कै करहू सीया संध, पति मोहि करै जैसौ प्रबंध ।
बैठाय सीया पुस्पक बिमाँन, जुग भ्रात दिखावहु समय जाँन ॥१२९९
ईह राँवन-बाँनी सुन ईकंत, त्रजटा ऊठ चाली तहीं तत[6] ।
लीनी प्रबीन[7] केऊ तीया लार, बैठी बिमाँन पुस्पक बिचार ॥१३००
ऊपबन कौं पंहुची सोई असोक, थित सीया राखसी लीयै थोक[8] ।
मिल मिल त्रिय, पुस्पक-याँन-माँहि, बैठारी सीता पकर बाँहि ॥१३०१

---

१ कृति, करतूत । २ छाती । ३ उच्चस्वर से बोलते हैं । त्रिजटा राक्षसी । ५ आगार, स्थल । ६ तुरन्त । ७ प्रवीण = चतुर । ८ समूह ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

घूँमाय लंक में समर-घाट बीरासन[1] लै गई ऊद्धबाट[2]।
बहु मरे परे जहाँ कोस बीर, सर-साल[3] श्रवत जिनके सरीर ॥१३०२
सर-सेज्या राँमहुं रहे सोय, लघु-भ्रात-सहित स्वाँसा लुकोय।
बगतर के बिखरे केऊ बरंग[4], सर निखर चाँप तुंनीर[5]-संग ॥१३०३
रत श्रवत घाव-मह लगी रेत, लग नाँग-पलेटा बाँन लेत।
देवर-जुत बर कौं सीया देख, बिलपनै लगी क्रंदत विसेख ॥१३०४
हा राँम लखन कहा भयौ हाल, बिच खेत परे बाहू बिसाल।
साँमुद्रिक-ज्ञाता बिप्र सोय, जे कहत हमारौ हाथ जोय ॥१३०५
सुभगा[7] तुम ह्वं हौ कुंवर सीय, पतिबृता अमर अहबात[8] पीय।
नित करहैं तो सौं नेह नाह[9], परवार पुत्र बाढहि प्रवाह ॥१३०६
धर जितै न जावहि नामधेय, पति-संग करहि जिग बाजपेय।
सब भूँठे ह्वं गये येक-साथ, निरजीव होत श्रीग्रवधनाथ ॥१३०७
पटराँनी रेखा पद्म पाँव- भ्रूँहावलि अनमिल[10] बक्रभाव।
कारे रंगवारे नरम केस, अरू देत बिरल ऊजरे असेस ॥१३०८
नैन कौ अंत औ बड़े नैन, अरू घुटना मौटे हाथ ऐन।
नख चिकने सुन्दर रंग लाल, अँगुरी सुमाल[11] बिन अंतराल[12] ॥१३०९
ईक जुरे एक में दोऊ ऊरोज[13], हैस्तन बृत बैठे हनोज।
दूबरी भई तऊ प्रभा देह, छोर कै करचौ नहीं अजौं छेह ॥१३१०
रच रही पेरवा जवन-रेख[14], ऊँची किनार नाभी असेख।
इंद्री दस मन बुध चित्त और, ठहरे अपने सब आप ठौर ॥१३११
निज कहते मंदस्मिता[15] नार, बाँच कै बिप्र पतरा[16] बिचार।
मिथ्याँ सब ह्वंगये बुद्धिमाँन, बेद के भेदवारे बिधाँन ॥१३१२
गत गजब परी सुभ चिन्ह[17] गात, मर गये पती मम अकसमात।
निरभाग भई हूँ राँड नार, जमवार भाँड़ बस परी जार ॥१३१३
हँनूँमाँन लगाई आय हेर, घन कपि-दल को कर घार-घेर।
सामुद्र ऊपरै रची सेत, खुर-गऊ[18] ड़ावरे डुबे खेत ॥१३१४

१ युद्धस्थल। २ ऊर्ध्ववाट = आकाशमार्ग। ३ बाणों से छिन्न। ४ वरांग = शिर
५ तूणीर = तरकस। ६ हस्तरेखादिचिह्नशास्त्र। ७ सौभाग्यवती। ८ सौभाग्य।
९ नाथ। १० पृथक्। ११ कोमल। १२ छिद्र। १३ स्तन। १४ यवरेखा।
१५ मन्दहास करने वाली। १६ पञ्चाङ्ग। १७ चिह्न। १८ गाय के खुर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कितते ईत आयौ कितब[1]-काल, जिह रघुवर बाँधे बाँन-जाल।
जम डरत नाँम जीहा जपंत, ईह कहा अवस्था भई अंत ॥१३१५
हा रांम लखन हम दिना हेर, घट आय परचौ है मृत्यू घेर।
अवसेख रहे कछू स्वाँस और, भय पूरे ह्वै है साँझ-भोर ॥१३१६
ईह कहत, सीया लेवत ऊसास ऊठ गई राखसी ह्वै ऊदास।
त्रजटा सँमीप ईक रहो तीय, संबोधन करनैं लगी सीय १३१७
सुनीयें ईह देवी मम सिधंत[2], अपनै स्वामी को होय अंत।
भट होय ऊदासो दीन भेस, दीसत नहि ऐसौ काल देस ॥१३१८
फौजहू रुखारी करत फेर, जाँनत कछू मुरछा[3] करे जेर[4]।
पुस्पक बिमाँन कौ ईह प्रभाव, पत-हीन त्रीया जो देत पाव ॥१३१९
धर परत दरत[5] ह्वै धूज-धूज, ऊठत न ठौर बैठे अमूँझ।
जिह कारन सीता लेहु जाँन, बैठार चलत पुस्पक-बिमाँन ॥१३२०
मुख दीप्त-सहित सो लखहु मीठ, पाछी अब चालत फेर पीठ।
लक्षमी-सहित आँनन ललाँम, राजीव-नयन दोऊ लखन राम ॥१३२१
माया सौं ऊपज्यौ जाँन मोह, चौकसी फिरत बंदर चछोह।
जीवन की आसा आस जीत, सुग्रींव सेंन कौं लखहु सोत ॥१३२२
बाँनी त्रजटा की सुन बिसेस, सुख भयौ कछू बिस्वास सेस।
मोरचौ बिमाँन कौ त्रिय मिलाय, ऊतरी असोक बन सीया आय ॥१३२३
ईत राँमचंद्र के आसपास, निज सेन होय बैठी निरास।
तिनकौ सबोधन करन तिष्ट, गहि गदा बभीखन अय गरिष्ट॥१३२४
फिर कै सेना के चहूँ फेर, बतराय आयगे तहीं बेर।
ऊघरी रघुवर की नेंक आँख, झुरराय ऊठे लघु भ्रात झाँख ॥१३२५
हा लछमन कैसौ भयो हाल, बोले मुख ऐसैं ह्वै बिहाल।
तुम कौं संग लीनै बिना तात, मुख जाय दिखाहू कहा मात ॥१६२६
जैहै सु समंदर लाँघ जौंन, गिर किंदर बंदर कहि गौन।
सीता न मिलहि निज सुंदरीय, जाँनत पिछतावौ नहो जीय ॥१३२७

---

१ प्रलय। २ सिद्धांत। ३ मूर्च्छा। ४ वशीभूत। ५ फट कर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहि नृपत बभीखन तिलक कीन, मम पास खरौ आँनन मलीन।
हित सत्य प्रतज्ञा भई हाँन, पाछे लछमन के तजहुँ प्राँन ॥१३२८
ईतनी कहि रघुबर ह्वै अचेत, खित[1] ऊपर सोये बीर-खेत।
ईह समय बभीखन निकट आय, परसे रघुबर के ऊभय पाय ॥१३२९
निर्मल जल धोवत ऊभय नैन, बिड़रावत-रोवत कहत बैन।
सोवत सर-सेज्या गौर स्याँम, राजीव-नयन तुम लखन राँम ॥१३३०
ऊर सौं लंका की तजी आस परहूं राँवन की काल-पास।
जाँनत कुपुत्र हूं ईंद्रजीत, करहै का काँमैं कहा कुपीत[2] ॥१३३१
दुख देहै केतक करहि दोख मरकै सुख पैहूँ पाय मोख।
ऐसै कहि कहि कै बचन आँन, ऊठत बिच छाती पय-ऊफाँन ॥१३३२
सुग्रींव बभीखन देख सोक, रोकन कौं लागौ अंमु रोक।
कहा भयौ बभीखन अहो क्लीव[3], श्रीराँम गुरुड़ मैत्री सदीव[4] ॥१३३३
जाँनहि कहु अंतह-करन जोग, राँम कौ मिटावहि नाग-रोग।
सुग्रींव कह्यौ ये तौ सवाल, तहाँ बैनतेय लख तातकाल ॥१३३४
मन बेग ऊड़े तनकौं समेट, फारत तम बाँदर बेग फेट।
अहि ड़रे भूंम पाताल ओक, संननाँट पंख की बाज़ सोक ॥१३३५
ऊतरे रघुबर के निकट आय, बपु टरी नाँग-पाँसी बलाय।
ऊठाय हाथ गृह गरुड़ आप, तन-मन कौ मेट्यौ महाँताप ॥१३३६
जुग भ्रात राँम अरु लखन जोय, खल की छल-बल की पीर खोय।
तब दोऊ भ्रात कौं बैनतेय[5], अंक सौं भेंट-बल अप्रमेय[6] ॥१३३७
कुसलात पूंछ बलवाँन कींन, द्रढ़ बिजय-हेत आसीस दीन।
कर राँम लखनहूं नमसकार. पूंछन को लागे सहित प्यार ॥१३३८
चंदन-अनुलेपन दिव्य चीर, सोभायमाँन आँनन सरीर।
अज ह्वौ किन दसरथ पिता आप, तन मन कौ मेट्यौ महाँताप ॥१३३९
हम बिकल भये जाँनौं न हाल, कीजीयै भेव जाहर क्रपाल।
सुन रघुबर बानी पर्म श्रेय, बोल कै कह्यौ हम बैनतेय ॥१३४०

१ क्षिति। २ कुपित। ३ कायर, नपुंसक। ४ सदैव। ५ गरुड़। ६ अगण्य, महान्।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तुम सखा सँनातन गनहु तात, राखत द्रष्टी में दिवस-रात।
ह.ल-खेत कर्‌यौ ईह बीर खेल, अहि[1]-कष्ट जाँन आयौ ऊबेल ॥१३४१
दुख मिट्यौ सकल अहि गये दूर, सझोयै संगर कौं महाँसूर।
रावँन संघार घर जाहु राँम, कर अमर क्रीत[2] कौ समर काँम ॥१३४२

दोहा

बैंनतेय रघुबीर की, पीर मिटाई पास[3]।
दं कै राँम प्रदक्षना[4], ऊड़े बीच आकास ॥१३४३
चितवत राँम प्रसन्न-चित, आँनन लछमन ओर।
चितवत लछमन राँम छिब[5], जुगल नयन कौं जोर ॥१३४४
जूथप देखत भ्रात जुग, पौरुष प्रबल प्रचंड।
गाजन लागे सिंघ-गत, अगनत कीस ऊमंड ॥१३४५
बाजन लागे बाजने, संख नगारन सोर।
पर्‌यौ लंक आतंख[6] पुन, भयौ ऊदय रबि भोंर ॥१३४६

छंद भुजंगीप्रयात

हले बंदरी-सैन भाख्यौ हरूरौ, पर्‌यौ लंक में फेर आतंख पूरौ।
गली च्यारहूँ द्वार की रोक गाढ़ौं, चँमूँ[7] कोट कंगूर पैं और चाढी ॥१३४७
भयौ नग्र[8] कोलाहलं फेर भारी, पिले के बनोका अगारी पिछारी।
भुजा-बीस आजाँन राजाँन भोरं[9], अवाजाँन बाजाँ सुन्यौ गाज ओरं ॥१३४८
भगे राजमंत्री गये राज-भौंनं[10], प्रभाखी ईहै बीनती कौं प्रधाँनं।
चढे कीस कैसै सवै सीस छाती, पराजीत ह्वै बेर होतै प्रभाती ॥१३४९
धरा नाँद सौं सात पाताल घूजै, ऊड़ी धूसरी आभ स्वाँसा अमूजै।
परी भीर जैसै भगे जात पंखी, ऊलूकाद झंखै तरैं फार अंखी ॥१३५०
हिलोरं चढ्यौ सिंधु बोलै हड़ूड़ा, बड़े तीरं के बृछ्छ जे नीर बूड़ा।
रबी ऊगते हीं समा स्यार रूँना, करी फिक्करी[11] कूकहू च्यार कूँना ॥१३५१

---

१ सर्प। २ कीर्त्ति। ३ नाग-पाश। ४ परिक्रमा। ५ छवि। ६ आतङ्क = भय।
७ सेना। ८ नगर। ९ प्रभात में। १० भुवन। ११ स्यारनी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मिले बिस्वरां[1] औ खरा भूँक मंडी, चकी चिल्लनीं चीकुची बोल चंडी[2] ।
गिरै पत्तनं गिद्ध-माला गहक्की, भरै काक कोलाहलं माँस-भक्की ॥१३५२
सुसै[3] तोय-सोता करी-दान[4] सुक्कै, बँधे अस्व-साला मही अस्व बुक्कै[5] ।
अचीतौ मचायौं करी बिघ्न आई, भरे मोह डूबे परे जुग्म-भाई ॥१३५३
घुमंड्यौ किधौं चाल सौं काल घेरा, मिले हाल कै ठाल कै लंक मेरा ।
किधौं आय कै रांम बिद्वेख काजैं, ईही च्वेक[6] सुग्रींव मारै अवाजं ॥१३५४
किधौ होय बभीखन स्याहिकारी, प्रतज्ञा चहै रांम की पार-पारी ।
अरे च्यारहूँ द्वार कौं रोक ऐसें, करं सोक मैं कीस निर्थोक कैसें ॥१३५५
महाँराज जंघाल कौं गुप्त सेलौ, परै ठीक पाछै अनी सैंन पेलौ ।
डरैंगे फिरैंगे सिला डार डंड़ा, भिरै ना मुरेगे कपी होय भंडा ॥१३५६
हमारी ईहै बीनती राज हेरौ, धरं जायगौ ऊठ कै कीस-घेरौ ।
सुनी लंक-राजानं मंत्री सलाहा, चढी चौकसी की बढी चित्त चाहा ॥१३५७
हकारे घने हेर कै हेरनैं कौं, चलै सैंन सुग्रींव चौफेरनै कौं ।
घनै रीछ देखे जुरे कीस घेरा, तकै अंख सौं लंक लै-लै तरेरा ॥१३५८
धिकै हीय में द्वेख के आग धूँना, करं कीस कोलाहलं च्यार कूँना ।
सिला-श्रृंग लै बृच्छहू सूलबारे, फबैं भौरवारे किते फूलवारे ॥१३५९
लये राखसी फौज सौं सब्ब लोहा, ठिले रात में लात दै मार ठोहा[7] ।
भरे खेत माँही परे सूल भाला, सकती कती कीस के ले बिसाला ॥१३६०
गदा डाँग लीनं सिलासार[8] गोला, दिखावैं दिखाई कपी लंक दोला ।
बिचै रांमहू लच्छ्छनं दोय बीरा, सु सोभै प्रभा स्यांम गोरे सरीरा ॥१३६१
डहै हाथ कोडंड टंकार देते, सफै आंन भूतांन बांनं सहेते ।
तकै लंक को ओर कौं दृष्ट तीखी सता काल की ज्वाल-माला सिरीखी ॥१३६२
घने जूथपं साथ में घेर घेरैं, हलं पैंतरा मंद पै सैंन हेरैं ।
लगे आसहू पास में कीस लारा, बड़े जोर सौं सोर देते बकारा ॥१३६३
खरे बीर दोऊ गृहै हाथ खागै, अजोध्या-पती की बढी सैंन आगैं ।
परे बंध छूटे ज्युँहीं नाँग-पासी, खुली बात हेरू सुनी सोय खासी ॥१३६४

---

१ खच्चर। २ श्यामा पक्षी। ३ सूख जाता है। ४ हाथी का मद। ५ हिन-हिनाते हैं। ६ द्वेष। ७ ठोला। ८ लोहा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

फिरे लंक सैना दिसी पीठ फेरी, सबै हेरकं बेर ताही सबेरी।
दरबार आये ज्युंहीं सैन देखी, बखाँनी सबै रात बातै बिसेखी ॥१३६५
सुनी लंकराजाँन मंत्री सहेता, जगे बीर जंसे दोऊ जंग जेता।
तिहीं स्याहिकारी बनै बैंनतेई, करैगे ज्युंही स्याहि कौं देव केई ॥१३६६
चढो हीय में आय लंकेस चिंता, ईही बात कौं सोच कै आद अंता।
जई रांवनं में दिसापाल जेता, करे दाँनवाँ देवहू जेर केता ॥१३६७
सपुत्रं बली मेघनादं सवायौ, पती देवता जीत कै बृंद पायौ।
जती बांध मारे पती ओघ जाये, ऊमै भ्रात कौं बैंनतेई ऊठाये ॥१३६८
कपी आय घेरौ करचौ लंक केरौ, बन्यौ आय कै फेर बीतौ बखैरौ[1]।
बड़े बाँन जे बासुकी[2] तेज वारे, झगै ज्वाल माला ज्युंही ख्येड़[3] झारे ॥१३६९
कटे बंधनं सो बली होय कैसा, ईहीं ऊपजौ चित्त माँहीं अंदेसा।
करे द्रोह रूठी मनौ साप काला मिली हीय में क्रुद्ध की ज्वाल-माला ॥१३७०
बक्यौ युद्ध कौं भूल कै फेर बाचा, कहा काल के छोकरे पिंड काचा।
मिले आय संगी कपी अंग मोटा, लरैंगे कहा काछ बाँधे लँगोटा ॥१३७१
सिला-श्रंग लै लै भये अंग सूरा, भरै भाथ में वृछ भाखै भरूरा।
बने रांम के स्याहिकारी बिराँनै, घनी राखसी फौज मेरै घराँनै ॥१३७२
धरै अस्त्र सस्त्रं धनी सांम-धर्म्मी, करै बैर जासौं बड़े क्रूरकर्म्मी।
भटाली कटाली भरी मेल-भेला, मिलै राखसी फौज के झुंड मेला ॥१३७३
घने मत्त मातंग आलान धुंमै, चरेरी भरे पोगरा आभ चूमै।
ड़है जुद्ध की बेर खंडा दुधारा, करै व्याल[4] के पूत से फूंतकारा ॥१३७४
ड़िगावै पहारं छटा चोट दैने, प्रहारै अटा कोट कौं दंत पैने।
झरै आठ भट्टी तला डाँन झंना, करै काल सौं चालहू सूपकंना[5] ॥१३७५
भृमै भृंग की भीर सोगंध भूली, फसी रेख सिंदूर की साँझ फूली।
सझै भादवी ज्युं घटा घोर सद्दा रजै छावबी[6] त्युं फिरचौ काठ रद्दा ॥१३७६
गुड़ा पीठ डारै पुड़ा पूर गोई, करै दाबहू घाव ना लाग कोई।
झपेटान हंजीर जंझीर झारं, करै गाँन मांनौं गिरी कज्जरारं ॥१३७७

---

१ बखेड़ा। २ सर्प। ३ क्ष्वेड = विष। ४ सर्प। ५ गधे। ६ चमड़ी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

द्वपी-ईखका-कंडना खाग-दंता, अरा भीर द्वारें भरे है अनंता।
खिजावै खुलें खेत में जाय खूंनो, धिखै आँख की झांख में आग धूंनो ॥१३७८
अनी आँकरी बाँकरी लाग ऊठै, चरख्खी कुरख्खी छटा ज्वाल छूटै।
भरै आस ही पास में भीर भाला, करें जुद्ध में क्रुद्ध ज्यूं नाँग काल. ॥१३७९
दलै दै दकालें तरू तोर ड़ारें, नई अट्टवी बाट घाटी निकारें।
ड़िगै सैल जैसे ड़गैं देत दौरें, करें कर्दमं मार सेना करोरें ॥१३८०
फनो फुंकरें सूंड मारें फराका, करें बिज्जुरी आभ मानौं कसाका।
गहै कनंका[1] ऊँच गाढे गिरंदा, चहै चूंमनै तारका[2] सूर चंदा[3] ॥१३८१
छकें छोह सौं श्रंखला ऐंच चालें, परें औझका धाँम सातौ पतालें।
रुपें जुद्ध में क्रुद्ध ह्वै कुंजरोही[4], दुरंगे कहाँ बापुरे मीर द्रोही ॥१३८२
बधे पायगा जायगा तेज बाजी, तहाँ बिस्वराहू[5] खरा भीर ताजी।
बड़े डील के डौल बारे बितुंडा[6] थली थोक ही थोक के थंड थंडा ॥१३८३
गरें हेखना भेखना[7] आभ गूंजे, धरा टाप की टक्करें लाग धूजे।
खनंका करै श्रंखला नाद खीजें, परें जप्पकं बप्प बोली पतीजें ॥१३८४
ठठका भरें प्रोथ की थूंदरी कौं, कटक्का करें देखकें ऊँदरी कौं।
कवींड़ार[8] झारें कुसा के कसीसा, सु पें अंग झांकै मनो काच सीसा ॥१३८५
पवीनें[9] मंडे ऊपरें पख्खरारी, सताबी मनौं सैल पाँखें सवाँरी।
लगैं फेट की चोट जो लेत लाहै, ढका सौं पका कोट सें लोट ढाहै ॥१३८६
थरक्कें भरक्कें खुरा पाँव थंबा, लगें झाटका साटका पूंछ लंबा।
करें राटकी जुद्ध की बेर कैसे, तरें ऊतरें काट की बीज तैसे ॥१३८७
बढे जोर सौं नाँस[10] की साँस बाजे, गिरा किंदरा[11] को मनो पोल गाजे।
भरे टोकरा ज्यूं गिरें फैल भाँठू[12], ऊड़ै कुंजराली अगें आय आँठू ॥१३८८
धरें धोरतं चाल पाताल धूजे, ऊतेरित सौं मेघमाला अरूझै।
घने कर्बुरे रंग के स्याँम घोरा, किते धूंसरे-अंग लाखाँ करोरा ॥१३८९
पटा पीत पारंद्र चर्मा पबंगा, किते रोछरे केस कूवें कुरंगा[13]।
जबै पार की सैन पै दौर जावें, धरैं चक्र चक्री ज्यूंहीं बक्र धावें ॥१३९०

---

१ सूंड। २ नक्षत्र। ३ सूर्य-चन्द्र। ४ कुञ्जरारोही=हाथी के सवार। ५ खच्चर। ६ वितुण्ड=हाथी। ७ भीषण। ८ कविका=चाबुक। ९ जीन। १० नासिका=नाक। ११ कन्दरा=गुफा। १२ माटे। १३ हरिण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तुरंगी[1] चढ़े पै ऊठै लै तरारा, तुटै आभकै[2] गाभै[3] में जाँन तारा।
जमी रूंद कै खूंद कै जंग जैहै, अरी पाँव की धूसरी[4] मूंद ऐहै ॥१३६१
बने जुद्ध के रथ्थहू बैन[5] केई, जुरैं काठ के पाट लौहा जरेई।
थिरीभूत लागी मही पुष्ट थूंनी, कसी है रसी मंच की च्यार कूंनी ॥१३६२
धुरी चक्रका[6] पिंडका[7] कीलधारा[8], समाजूंसरी और प्रासंग[9] सारा।
गढ़े है रढ़े है चढे गाढ-गाढै, चबी[10] छीतरा व्याघ्र की खोल चाढै ॥१३६३
भयकार दौरै जबै जुद्ध भूंमै, धुजाडंड भूंमैं जहाँ, लोक-धूंमै।
रथी रथ्थ आरोह कै रार रूठै, चलै बाँन के सत्रु के प्राँन छूटै ॥१३६४
पयादी[11] चमूं आस-पासै परीहै, असंख्या दसूं ही दिसा कौं अरी है।
गहै ढाल खड्ग गदा सार[12] गोला, अरा-भीर चौकी फिरै ओल-दोला ॥१३६५
अजाँनै परंदा[13] पतँगाँन आवै, जहाँ सत्रु-सैना कहाँ पैठ जावै।
बने ईंट सोबर्न के कोट बंका, लसैं और च्यारूं बसै बीस लंका ॥१३६६
कँगूरा बने हीर बैडुर्ज[14] केरा, फरक्कै धुजा भूर्जं[15] पै लै फरेरा।
तही पै भरी आग की लाग तोपै, कड़का करै ज्वाल ज्यूं काल कोपै ॥१३६७
छुटै लोल गोला ऊठै छग्ग-छग्गै, धुँआ-घोर आकास लौं धग्ग-धग्गै।
गिलै-ऊगलै सोर कौं घोर गाजै लटा-लूंब आकास कौ मेघ लाजै ॥१३६८
कलाकार लागे बलाकार काँटा, ऊतारै चढावै जुरै सीध आँटा।
मुकै सिष्ट में तिष्ट कै मेल मख्खी, भखै मोरचा ओरचा सोर भख्खी ॥१३६९
वगै दुग्ग[16] पै कोट से लोट देती, करै चोट पै चोट की मार केती।
गढी पै चरख्खी चढी गैल गैलै, फिरै बक्र तुंडो जितै आग फैलै ॥१४००
चलै कोट फेरो दराबीन चढ़ी, डुलै कुंजरा के टलानक्क दढ्ढी।
मुखी-सूकरा कूकरा कोक मच्छा, रजै व्याघ्र चीता-मुखी डौल रिच्छा ॥१४०१
फिरै सूर चंदा चहूं ओर फेरा, नछत्राद झाँकै नहीं लाग नेरा।
त्रहूं नोख[17] की सैल नग्रो त्रबंकी, अरी झाँक सक्कै कहा फार अंखी ॥१४०२
भयंकार खाई चहूंघाँ भरी है, त्रपै नीर सोता अगाधा तरी हैं।
किलोलै करै कच्छ औ मच्छ केते दटै नक्रहू[18] झाटका पूंछ देते ॥१४०३

१ घुड़सवार। २ आकाश के। ३ गर्भ = बीच। ४ धूलि। ५ वर्ण। ६ पहिये। ७ खाल। ८ पूठी। ९ पंजाली। १० खाल। ११ पैदल। १२ लोह। १३ पक्षी। १४ वैडूर्य = पन्ने। १५ बुर्ज। १६ दुर्ग। १७ नोक। १८ मगर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गिरै आय दंती[1] भरै एक ग्रासा, तहीं दौरके लोक देखै तमांसा।
लगे च्यारहू ओर मंचाँन लोहा, सुनेरी करचौ कांम जापै सुसोहा[2] ॥१४०४
घरी बीच संचाँन की बाट घाटी, परे ताँन खैंचाँन के पाट पाटी।
गिरी बिस्वकर्मा पुरी नींम गाड़ी, असी कोस लंबान चालीस आड़ी ॥१४०५
सबै धाँम कौं कांम राच्यौ सुनेरी, घटा मेघ जैसं अटा घेर घेरी।
परदा जरी तार ऊंची पताका, रचे आतपत्रा[3] मनौ चंद राका[4] ॥१४०६
बने चौहट्टा हाट बाजार बीचैं, निरी रत्न रेती परी बाट नीचैं।
बने बाटका घाटका[5] कूप बापी[6], निकारी गली सौं गली भूंम नापी ॥१४०७
भिरे है किला सौं किला च्यार भांती, खुलासाँ सुनौ जाहि विख्यात ख्याती।
नदी च्यारहू ओर नादेय नाँमी, गिरीसौं घिरा पारवतेय[7] गाँमी ॥१४०८
किला बाँन्ध भारी रखी च्यार कूंनी, जुहै क्रत्रमी[8] ईंट भाटा जुराँनी।
कमी च्यार है दुर्ग की नाँहि कोई, जमी चिक्कनी घास ही पास जोई ॥१४०९
अलंगी चरेरी घने श्रंग ऊंचे, लगै ना निसैनी सबै लाग लूंचे।
बसै पूरबी द्वार पै बीर बंका, सहंसं दसं रात दीहा[9] निसंका ॥१४१०
रहै दक्षनी द्वार पै चातुरंगी[10], जुरे लक्ष जोधा बरापूर[11] जंगी।
दसू लक्ष जोधा प्रतीची[12] दुवारै, धरै सूल भाला घने खड्ग धारै ॥१४११
घरईया कहावै जिनूंका घराना, सदां के निवासी भरोसा समांना।
रहै ऊत्तरा द्वार पै कोट रच्छा[13], बली हाथ में साँग लीनैं बरच्छा ॥१४१२
सदां राज के काज में सावधाँना, करै काल सौं आल भालै क्रपांना[14]।
पुरी लंक के बीच बीचैं पडावा, अरे राखसी फौज वारे अड़ावा ॥१४१३
लसै कोट जुद्धार छत्तीस लक्षा, रखै राज के काज को पूर रक्षा।
लगाती[15] जिनूंके असंख्यात लेखै, परै काम तौ ठाँन ठाँमै परेखै ॥१४१४
हनूंमाँन हाँनो करी जास हेरै, फिरै रात ही दीह में दिष्ट[16] फेरै।
हनूंमान सौं सैन सुग्रींव हीतै, जुरैगै जहाँ बेर में जुद्ध जीतै ॥१४१५

---

१ हाथी। २ सुशोभा। ३ आतपत्र = छत्र। ४ रात्रि। ५ वाटिका = बगीची। ६ बावड़ी। ७ पर्वत। ८ बनावटी। ९ दिवस = दिन। १० सेना। ११ भरपूर। १२ पश्चिम। १३ रक्षक। १४ कृपाण = तलवार। १५ साथ लगने-वाले सेवक। १६ दृष्टि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

सबही बात मेरी सुनौ, जाँन अजाँन जितेक।
कीरत जय हित में करे, तुम सौं कहत तितेक ।।१४१६
सैनापत बलवाँन सब, गनती देत गनाय।
आद अंत सौं आज लौ, सेना करत सहाय ।।१४१७
प्रजा सबल लंका पुरी, निबल न जाँनत नाँम।
स्याहि करत निज स्यांम[1] की, कठन परै जो काँम ।।१४१८

छंद मोतीदाम

करे बस नाँगन कौं हित क्रीत[2], जिहीं पुरि भोगवती लीय जीत।
जयौ फिर जिक्षन[3] कौ पुर जाय, कुबेरहु भ्रात गये कदराय ।।१४१९
महेसुर[4] मांनत है जिय मित[5], करै सोई उत्तर बास ईकंत[6]।
प्रजा जग जांनत है दिस-पाल, निधीस्वर[7] जाचत होत निहाँल ।।१४२०
लयौ हम ताहिसौं येहु लगाँन[8], बिसेखन पुस्पक एक बिमाँन।
रखी हम राजन नीत की रीत, पिछाँनीय भ्रातहु सौं नही प्रीत ।।१४२१
दई मयदानव-पुत्रीय[9] दाँन, जँहीं पटराँनी मंदोदर जाँन।
सबै भृगु-सिख्खन[10] कौ सिरदार, बन्यौ बहनोईय बूझ बिचार ।।१४२२
निरंधर जाहर है मधु नाँम, बँसाईय कुंभिनिसी जिह बाँम[11]।
सोई भगनी मम जाँन सयाँन, मधू तिह कारन मांनत माँन ।।१४२३
सदां मम राखत साल सनेह, अहो-निस[12] आवत जावत एह।
परं मुह[13] कांम तो सासत पीठ, धुरंधर बेल महांबल धीठ ।।१४२४
रसातल बासुकी[14] तक्षकराज, सुथाँनक बाँनक नाग-समाँज।
करे जय लूट लये धन-कोस, भुजाबल आपही आप भरोस ।।१४२५
जये जग जाहर दांनव जात, बड़े बरदांनीय[15] बीर बिख्यात।
लरे ईक हायन[16] लौ कर लाग, लगे हम पायन बैर अलाग ।।१४२६
लये द्रब[17] ताहि पै डंड लगाय, फिरे जय दिग्घ[18] धुजा फहराय।
परंजन-पूत घने- बलपूर, करे बहु संगर काँम करूर ।।१४२७

---

१ स्वामी। २ कीर्ति। ३ यक्षों। ४ महेश्वर। ५ मित्र। ६ एकान्त। ७ निधीश्वर=कुबेर। ८ कर, भेंट। ९ मयासुर की पुत्री =मन्दोदरी। १० भृगुशिष्य =दैत्य ११ वामा=स्त्री। १२ अहर्निश =दिन-रात। १३ मेरे। १४ सर्प। १५ प्राप्तवर। १६ वर्ष। १७ द्रव्य। १८ दीर्घ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जई चतुरंगीय-सेन जिनूंन, कढै नहि आजलौं बाहिर कूंन।
जये जमदूतन मृत्यु सजोर, तहीं फिर काल की पासीय[1] तोर ॥१४२८
महाँ ज्वर सागर बेदना मूंल, तरचौ जम लोक गऊ-खुर तूल[2]।
अजाँन ही कालहु झाँकत आय, परै नहि लंकपुरी विस पाय ॥१४२६
जमी पर छत्रीय-जात जुझार, भरे तरू जेम अठारह भार।
प्रफूलत होय जमे दल पूर, सनातन जात गनावत सूर ॥१४३०
कटचौ अभमाँन कौ होय कुठार, निरंधर राँवनहूँ निरधार।
निरंतर पुत्र बड़ौ घननाद, मनावत मात पिता मुरजाद[3] ॥१४३१
करचौ जग ईस रिझाँवन काज, संपूरन जाहि करचौ सुख-साज।
बिचार कै ईस दयौ बरदाँन. जिताहव[4] जाँनत बच जहाँन ॥१४३२
जयौ मघवाँन[5] करचौ बँध जेर[6], फिरायेऊ लंक छुरारेऊ फेर।
लई जय ईंद्रहू सौं सुत लाग, भलौ जग मोहि सौ कोन को भाग ॥१४३३
भयाँनक कुंभकरन ही भ्रात, न जाँनत कोन जँहीं निसनात[7]।
भयाँनक रूप जही भुजडंड बिनासन समृथ है बृहमंड ॥१४३४
जगावहु जाँनहुंगौ जब जोग भलै कपि रीछ लगावहुँ भोग।
कही हम बात सुनी तुम काँन, सभासद जाँनत बुद्धि सयांन ॥१४३५
अबै तुम भासन कीजीयै ऊक्त, जथारथ[8] प्रवृत[9] जुक्त-अजुक्त।
सभा सुन राँवन-मूप-सलाह, रुके कछु सोच बिचारत राह ॥१४३६
प्रथंमहीं सैंनप बोल प्रहस्त, हरोलीय[10] होय मिलाय कै हस्त।
दिगंतर गंधृव दानव देव भली बिध जाँनत नांगन भेव ॥१४३७
पिसाँच हू आव जिते बलपूर मिटाँवन समृथ हैं मगरूर।
कहा जुग भ्रात है राज-कँवाँर सरोरूह-[11]आँनन के सुकमार ॥१४३८
मिले कपि-झुंड जुतं हनुमाँन, गयो कुसलात सुतं कर गौन।
हँनूं सब बंदर सासन होय, जिते गिर-किंदर अंबर जोय ॥१४३६
रहौ निहचिंत[12] सदाँ महाँराज, कहै सोई राज करं हम काज।
प्रहस्त की बोलन राह पिछांन, कुप्यौ दुरमुखहू रूप कसांन ॥१४४०

---

१ पाश फाँसी। २ तुल्य = समान। ३ मर्यादा। ४ आहवजेता = युद्ध-विजेता। ५ इन्द्र। ६ लज्जित। ७ निष्णात = प्रवीण। ८ यथार्थ। ९ प्रवृत्ति = वार्ता। १० अग्रणी। ११ कमल। १२ निश्चिन्त।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहे तिह रांवन जाब करूर, ध्रुबी[1] हम पौरुख ऊपर धूर।
जराय कै लंक कौं कीस जवूंन, कढ्यौ कुसलात ऊतर-सौं कूंन ॥१४४१
जेहीं नहि बांध सके पसु जूंन, निसाँचर जाँन लये बल न्यूंन[2]।
मिलायकै लायकै बंदर मूंढ़, पुकारत मारत हाक पढ़ूढ़[3] ॥१४४२
करै धम-चक्कन धक्कन क्रूर. जती संग लायकै श्राय जरूर।
सुन्यौ नहि जावत बंदर सोर, जुहारत आपहु कौं कर जोर ॥१४४३
बिदा मोहि कीजीयै राज बिचार, हँनूं हँनूंमाँन कौं खेत हकार।
बिजै तुम पावहुगे ईह बेर, जबै सब बंदर होवहि जेर ॥१४४४
सुनी दुरमुख की एह सलाह, ऊठ्यौ बज्रदंष्ट्र होयै अवगाह।
बक्यौ परघातन हाथ बढाय, छवयौ दोऊ भ्रूँहन भाल चढाय ॥१४४५
बडे रघुनायक लछमन बीर, ऊभे रन मंडत होय अधीर।
सुग्रीवहु होय बभीखन संग, मिले केऊ जूथप जुद्ध उमंग ॥१४४६
मतौ कर मारहिगे हनुंमाँन, नहीं सिध होवहि काज निदाँन।
भिजावहु मोकहु दै रन-भार, सँघारहुं जुथ्यपती सिरदार ॥१४४७
भगावहुं बंदर की सब भीर, प्रजा सब लंक की मेटहु पीर।
ऊठ्यौ तब पौरुख छाय असंभ, निरंकुस कुंभ कौ पुत्र निकुंभ ॥१४४८
बड़े तुम राखस हौ बलवाँन, सबैं रहौ आपने ग्रेह सुथाँन।
निरंतर संगत भूप निवास, रूढारूह[4] अंतह[5] कौ सुख-रास ॥१४४९
बकारत जावतहूं ईह बेर, हँनूं रघुनंदन लछ्छन हेर।
सँघारहुं बंदर कौ सब साथ, बुड़ोवहु[6] सागर में भर बाथ ॥१४५०
जहां ईह बज्र-हँनूं सुन जाब, सँबोधन किन्नेऊ ऊठ सताब।
समेट कै खावहु बंदर सैंन, ईकंदर छोटेऊ मोटेऊ ऐन ॥१४५१
अनाँद सौं राखस खात अहार, करे हम हेत बड़े करतार।
बड़प्पन नाहिन है कछु बात, ज़िहीं सब जांनत आपनि जात ॥१४५२

१ ध्रुव, निश्चय। २ न्यून = कम। ३ गरम। ४ उन्मुख, रखवारे। ५ जनाना। ६ डुबा दूंगा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

भूंज भूंज आमख[1] भखौ, मदरा-कर मत-वार।
जात अकेलौ जुद्ध कौं, धँनुख-बाँन कर धार ॥१४५३
कहा राँम लछमन कहा, कपि-दल कहा करूर।
आये जब तै आज लौं सनमुख चढे न सूर[2] ॥१४५४

छंद पद्धरी

सुन बजूहँनूं की बात आँन, सूरमा भये सब सावधाँन।
नःकुंभ रभत महाबल निसंक, बिरूपाक्ष मरोरत भ्रूँह बंक ॥१४५५
सुप्रब्न सुर्जसत्रुक समेत, कोपे महाँपारस रस्मिकेत।
जिग कोप महोदर खल जितेक, पुन अग्निकेतु दुर्धर प्रवेक ॥१४५६
दुरमुःख निसाचर बजूद्रष्ट, तस साँग परघ[3] लै तिष्ट तिष्ट।
घन प्रलय जेम पौरूख घुमंड, डहडहे सब गहि भुजा-डंड ॥१४५७
कलमलत बोल ऊठे कठोर, चल-चलत सिंधु मनु पाज छोर।
सह-सहत वीर राखस-समाँज, गहमत बोल गंभीर गाज ॥१४५८
लागे कहनै कौं लार-लार, बिफुरे आप आपौ बिसार।
भूरे बंदर जो चढे भौंन, कारे रिछ्छन की बात कौन ॥१४५९
भखजैहै जासौं हौय भेट, पापीन पचावहि बीच पेट।
दसरथ राजा के पुत्र दोय, जिनहूं कौं बंधन करहि जोय ॥१४६०
भय तजहु भजहु सिव लंक-भूप, ईह राज-काज करीयै अँनूप।
सब सुभटन की सुन कै सलाह, राँवनहू सोचन लग्यो राह ॥१४६१
गर्जनै लग्यौ ऊत कीस गोल, होय कै जुथ्थ-जुथ्थप हरोल।
जुत अहित सबन के सुन जबाँन, बोल्यौ नृप नाँनाँ माँलबाँन ॥१४६२
सुन राजा राँवन मो सवाल, कटु ओखद[4] में गुन तातकाल।
तेरी रुख देखत कहत तात, भट पुत्र भतीजे कहा भ्रात ॥१४६३
मैं कहत बात सो माँन मंत, ऊर बीस सोच कै आद अंत।
सब बिध सौं राजा सावधाँन, बाँनो बिबेक बिद्या बिधाँन ॥१४६४

---

१ आमिष = मांस। २ शूरवीर। ३ परिघ, परिघा = बरछी, लुहांगी। ४ औषधि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भुव-राज करत ऐस्वर्ज भोग, जाँनत बिचार जोगहु अजोग।
बसि-करन मंत्र एकौ बिचार, बिन ही बिचार ऊठत बिकार ॥१४६५
जहाँ उचत समय पै जोग जाँन, मेल कौं कीजियै त्याग माँन।
बढती आपन की चहै बात, परहर[1] घटती की पक्षपात ॥१४६६
आपसौं अधिक लख सत्रु और, कीजै मिलाप बातै करोर।
लघु अपनै सौं पुन सत्रु लेख, बिगृह[2] बिचार करीयै बिसेख ॥१४६७
लघु जाँन न छोरै सत्रु लार, बाँधै प्रबंध जैसौ बिचार।
सब नीत रीत कौ ईह सिद्धंत मति माँनत जैसो कहत मंत ॥१४६८
महाँराज राँम सौं कर मिलाप, ऊनकी त्रीय साँपहु उनही आप।
सब गंधृव रिखि मुनि सुर सुरिंद्र, चाहत जय लछमन राँमचंद्र ॥१४६९
जातै मिलाप करनौ जरूर, पख कौं लख नीती न्यायपूर।
परमेष्ठी[3] कीने दोय पक्ष, रिभु[4] जाती दूसर दैत रक्ष ॥१४७०
सुर धर्म आसरो[5] करत श्रेय, अधृम असुरन कौं अप्रमेय।
देवता सुनाई धर्म देत, अधरम सौं राखस असुर हेत ॥१४७१
सतजुग जब आवत धर्म सेत, लग लार अधर्मंहि लील लेत।
कलजुग अधर्म को ईहीं कार, लीलत अधर्म लग धर्म लार ॥१४७२
घूंमत तुम निश्चर साथ घेर, जग जीव जात कौं करत जेर।
सुर-पख-वारे रिखी देव साध, बिन धोखै जिनकौं करे बाध ॥१४७३
ऐसे तुम कीने अनाचर, बाँच्यौ न कबहु मन में बिचार।
जिग ताप करत अरु बेद जाप, पुन्यातम[6] भूसुर[7] रहित पाप ॥१४७४
साधन-जुत राखत धर्म सीस, आराधन निस-दिन करत ईस।
जिन में मुख ब्राँमन खत्रि-जात, बैसहू सूद्र धर्मंहि बसात ॥१४७५
आहूत[8] देत है बीच आग, जातै सिध होवत बेद ज्याग।
कारज ऊतँम के करनहार, निज थाँन-थाँन दीने निकार ॥१४७६
यातै फिर अधरम को न और, भय देत न सोचत साँझ-भोर।
खट-करम[9] करत दुज[10] पुंन्य-खेत[11], दुर-दुर[12] आहूती अगिन देत ॥१४७७

---

१ परिहर=त्यागकर। २ विग्रह=युद्ध। ३ ब्रह्मा। ४ ऋभु=देव। ५ आश्रय=भरोसा। ६ पुण्यात्मा। ७ ब्राह्मण। ८ आहुति। ९ षट्कर्म। १० द्विज। ११ पुण्यक्षेत्र। १२ छुप-छुप कर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जिग धूँम ऊठत प्रज्वलत ज्वाल, तन दग्ध[1] होत निश्चर त्रकाल।
बरदाँन दयौ बिध[2] जहीं बेर, कैसै तुम बिसरे जाहि केर ॥१४७८
बिध सनमुख भाखी ईती बात, जीतूँ सुर-दाँनव-जिक्ष-जात।
नर बंदर बपुरे कहा नीच, बढ चढै न सनमुख खेत बीच ॥१४७९
जाँने निर्बल सो प्रबल जोर, घन जेम गर्जना करत घोर।
दिन पलटचौ सूचक साख देत, चिंतत नहि चित सौं ह्वै सचेत ॥१४८०
ईह लंका-पत्तन चहूँ ओर, घरहरत बीजुरी कठन घोर।
मेघावलि बरखै मंद-मंद, बहु बेर रुधर की परत बुंद ॥१४८१
अस[3] हाथी खच्चर गधा ऊँट, छित[4] आँखन आसूँ परत छूट।
ऊड़ धूर पवन सौं आट-बाट, कंचन-महलन कौं भरत काट ॥१४८२
पहिलै ज्यूँ लंका नहि प्रकास, अह-निसा रूप दीसत ऊदास।
सर्पादिक कागा गिद्ध स्यार, भारी स्वर बोलत भंयकार ॥१४८३
जंगल के बासी जिते जीव सब फुलबारी निवसत सदीव।
सुप्न में त्रीया कारी सवास, हेरत दै तारी करत हास ॥१४८४
देत है बायसन[5] बलीदाँन, सोई जोरो[6] सौं भखजात स्वाँन।
गदही सौं ऊत्पत होत गाय, ज्यूँ नौरिन[7] मूखक[8] जनत जाय ॥१४८५
व्याघ्री सौं करत मैथुन बिलार, सुकरी-कुकरो सौं जरख-स्यार।
पीरे पर राते पग कपोत[9], हिल-मिलत ग्रेह एकत्र होत ॥१४८६
सारका[10] घरेलू पच्छि[11] सोय, जंगल में बासो करत जोय।
जंगली घरेलू जिते जीव, सब लरत रहत निस-दिन सदीव ॥१४८७
अरु मृग-गन पक्षी सूर ओर, मिल रुदन करत कंधा मरोर।
नकटा सिर-मुंडत पुरख-नार, देत है दिखाई द्वार-द्वार ॥१४८८
ऐसे निमत्त[12] औरहु अनेक, येक पं दिखाई देत येक।
भूले हम यातै सुखद भोग, जाँनत अनर्थ कौ बन्यो जोग ॥१४८९
बिस्नु कौ रूप रघुनाथ बीर, साख्यात स्याँम सुंदर सरीर।
दल बंदर कौ बल लखत देह देवता अवतरे निसंदेह ॥१४९०

---

१ जल कर भस्म होना। २ विधि = ब्रह्मा। ३ अश्व। ४ क्षिति। ५ कौओं। ६ बलपूर्वक, जबरन। ७ नेवला। ८ मूषक = चूहा। ९ कबूतर। १० मैना। ११ पक्षी। १२ निमित्त = कारण, शकुन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

समुद्र ऊपरै रची सेत[1], द्रढ पौरूख साखी ईही देत।
हँनूँमाँन लंक जारी हड्डूड़, सामुद्र लाँघ कै सहज सूड़ ॥१४९१
जुग-भ्राता बाँधे इंद्रजीत, पहिचाँन सनातन गरूड़ प्रीत।
आये सु छुड़ाये फेर ऊठ, तेऊ घेर रहे पर्वत त्रकूट[2] ॥१४९२
ईतनै पै सोचत नही आप, प्रगट्यौ कोऊ दीरघ आय पाप।
मंन रुचै करहुं सौ महाँराज, ऐहै न काल ईह समय आज ॥१४९३
सब मालवाँन के सुन सवाल, कटु राँवन बोल्यौ गुस्त[3] काल।
छित-जीत मोहि कौं कहत छोट, मेरे दुसमन कौं कहत मोट ॥१४९४
मेरे साहूँस कौं करत मंद, चरचरी[4] बखाँनत राँमचंद्र।
बपु नाँना नातौ तुम बिसेख, द्रोही हम जाँनैं बात देख ॥१४९५
सीय-बिरह भये दुर्बल सरीर, बाप के निकारे ऊभय बीर।
सरनागत बंदर भये सोय, खत्रीया-धर्म मुरजाद खोय ॥१४९६
ईत-ऊत की माँगी धाड़ आँन, जय मोसौं चाहत कहा जाँन।
अहैं चूँन लूँन[5] खावत अनंत, राखसी-फौज हाजर रहंत ॥१४९७
जुध-करन ईसारे साथ जात, बल जँही बिसारे कहा बात।
भये राँम ईधक हम न्यूँन भेस, देख कै कह्यौ कहा काल देस ॥१४९८
कररे तुम बायक कहे केक, बैर सौं सत्रु पख सौं बिसेख।
समज कै करी कछु बात सोच, पारनै कारनै मोहि पोच[6] ॥१४९९
मैं राँवन राजा मालवाँन, जग-जीत क्रीत जानत जहाँन।
भेजने चारु भट पुत्र भ्रात, जुद्ध की तयारी करत जात ॥१५००
पचकारन[7]-कारन तुम प्रबीन, निज बृद्ध बेस में ह्वै नबीन।
अंतर कर नातौ[8] निकट आँन, बतरात अमंगल रूप बाँन ॥१५०१
बयबृद्ध होय कै रचत ब्याज[9], ऊर की प्रतीत[10] सब गई आज।
बन सौं सीय लायौं पकर बाँम, साँपँहुगौ कैसै राँम स्याँम ॥१५०२
कीने न आज्ञ लौ स्याँम कोय, जीते बिस-पालन जोय-जोय।
माँनव सौं स्वाँमी करूँ मेल, राखस-पन पाँनी बहै रेल ॥१५०३

---

१ सेतु = पुल। २ त्रिकूट। ३ ग्रस्त। ४ स्तुति, प्रशंसा। ५ लवण। ६ डरपोक। ७ भय। ८ सम्बन्ध। ९ कपट, बहाना। १० प्रतीति = विश्वास।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मैं चढन जुद्ध कौं अवसमेव, औझका भरत देवहु अदेव।
सनमुख नहि आवत होय सूर, देखत ही भाजत सत्रु दूर ॥१५०४

रांवन हूँ सोई महाँराज, आपै कौ कैसै तजूँ आज।
देह के होय जो खंड दोय, सिर नहीं नमाऊँ अनम[1] सोय ॥१५०५

ईह दोख[2] जन्म सौं लग्यौ अंग, सो छूटै कैसै येक संग।
सुग्रींव रांम लछमन–सहेत, सूरमाँ कहत दध[3] देख सेत ॥१५०६

पुन बंदर है सब च्यार पाद, ईन कांम भारवाही[4] अनाद।
यामें कहा अचरज गन्यौ आप, पुन रांम-लखन ईधकौ प्रताप ॥१५०७

हनुंमाँन जराई लंक हूँत, कहा यामें जादाँ गनी कूँत[5]।
पूँछ के जरत अकुलाय पिंड, खित कूँद-कूँद कै चढ्यौ खंड ॥१५०८

तव बूंद परत जो जरत तेल, पर जरे धाँम हुय रेल-पेल।
यामें कहा पौरुख गन्यौ ऊँच, पट्टह[6] को ड़ंड़ा भयौ पूँछ ॥१५०९

बपु-पास ईंद्रजित छुट्यौ बंध, सो गरुड़ मंत्र-तंत्रक समंध।
जन और पराक्रम भयौ जोय, कछु रांम पराक्रम नहीं कोय ॥१५१०

फिर-फिर कै आवत कीस फौज, धी[7]-जावन कीनौ मैं धरोज[8]।
क्रम-क्रम सौं मेटहुँ जुद्ध काँन, जीय राजनीत प्रीय बात जाँन ॥१५११

मो जाँन कायरे मतीमंद, दसहूँ दिस लागे करन दुंद।
बाहिरे परत ज्यूँ कपि बसेस, हीय संन्यपात[9] बाढत हमेस ॥१५१२

घेरे लंकापुर बाट–घाट, परखाहू दीनी कँहुँ पाट।
कूंद कै कँगूरऩ चढे कोट, छल-बल सौं बंदर मोट-छोट ॥१५१३

ज़ावै जो पीछै जीयत जीव, कहियौ रांवन कौं महा वलीब।
जुत क्रुद्ध कहे रांवन जबाब, सुन मालवाँन ऊठ्यौ सताब ॥१५१४

जय कौं मनाय निज ग्रेह जाय, पीछौ नहि बाहिर दयौ पाय।
रांवन फिर त्यारी करी रार, काहू न अटोक्यौ कर करार ॥१५१५

---

१ अनम्य = नहीं झुकने वाला। २ दोष। ३ समुद्र। ४ बोझ उठाना।
५ कुव्वत, शक्ति। ६ नगाड़े। ७ बुद्धि। ८ धारणा। ९ सन्निपात।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सोरठा

गजंत कीस गँभीर, च्यारूँ फाटक कोट चढ।
भिढन[1] काज बरबीर, तूँ जावहु धूम्राक्ष तित ॥१५१६

रॉँम लखन कर रार, मार प्रथम चढ मोरचैं।
बंदर-फौज बिड़ार, देहु बधाई मोर द्रुत[2] ॥१५१७

सुन लकापति सीख, रूठ चल्यौ धूम्राक्ष रन।
तोर बढ़ावत तीख, भुज दोऊ बृहमंड भिरे ॥१५१८

छंद अरध हरगीतका

धूमृाक्ष पौरुख धारकैं, बढ चल्यौ बीर बकार कैं।
घन-घटा घोर घुमंड कै, ऊठ चली फौज ऊमंड कै ॥१५१९
अतरथी चढ रथ-आँन[3] पैं; के चढे गज के काँन पैं।
खर चढे केऊ धर खूँदते, रव करत मारग रूँदते ॥१५२०
मुद्गरा आयुध मंड कै, कर चाँप सर कोड़ंड कै।
लै गदा फरसा लोह कै, सभ्भ चले अग्र सँदोह[4] कै ॥१५२१
औरैं सु आयुध अनगने, जोधार लेय जने-जने।
सभ्भ कवच[5] टोप सरीर में, भट पटा बाँधेऊ भीर में ॥१५२२
जाँवनै कारन जंग में, अत पहर भूखँन अंग में।
सब जटत जंवर[6] सोवनै, पलकंत मोती पोवनै ॥१५२३
ड़हकावनै कपि ड़र-ड़री, कछु राखसी माया करी।
बाढे सु धारा बार[7] से. काढ़ै सु दंत कुदार से ॥१५२४
मुख नक्र जैसे मेल कै, झख[8] सिंघ-रूप झमेल कैं।
सभ्भ सूकरा खर-सूरतैं, मुख भेड़िया-सम मूरतैं ॥१५२५
बहु बाँन बोलत कलबली, ऊल्लूक जैसे अलबली।
हय अस्वतर[9] खर हेयरी[10], फेकार जैसे फेकरी ॥१५२६
चढ गिगन-मारग रव छयौ, भूकंप कोलाहल भयौ।
घहरात घन ज्यूँ घोर कौं, आतंख[11] पर चहु ओर कौं ॥१५२७

---

१ भिड़ने। २ शीघ्र। ३ रथयान। ४ समूह। ५ बख्तर। ६ जवाहर, रत्न।
७ वारि = जल। ८ झष = मत्स्य। ९ खच्चर। १० हींसना। ११ आतङ्क।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जुर लगे आँगे जावनै. दुंदभी बाज ड़रावनै।
खित ऊठ ड़ंम्मर खेह[1] के. मनु मुद्र[2] संबर-मेह[3] के ॥१५२८
गल गाज घहरत गयन की, हुव हेख मेखद हयन की।
गज-घंट लागे गूजनै, केकान पख्खर कूंजनै ॥१५२९
धूम्राक्ष कछु आँगै धिख्यौ, लंगूल घेरयौ पुर लख्यौ।
ताकत सु ईत-ऊत तोल कौं, बढ़ सुनेऊ हनुमत बोल कौं ॥१५३०
ऊर धिख्यौ क्रुद्ध अपंपरा[4], प्रलीयाग्न रीत-परंपरा।
जब पिछम फाटक जोर कै, मोरी सु बाग मरोर कै ॥१५३१
ये भये असकुन आय कै, गनती सु कहत गनाय कै।
धायौ सुरथ घर घरघरा. गिर परयौ ऊपर गृधरा ॥१५३२
ऊपर पताकन औरहू, जुर गिद्ध-माला जोरहू।
आँगै कबंधहु ऊठ कै, रथ रोक गदहा रूठ कै ॥१५३३
गहराय मेघ गरागरी, तव परी बूंद तरातरी।
बाज्यौ असंभव बायरौ, सनमुःख बेग सिवायरौ ॥१५३४
परकास रिव[5] मंदौ परयौ, अंधार चँहु दिस ऊल्लरयौ।
जिह बीच ज्वाला जाग के, ऊंबार पसरे आग के ॥१५३५
धूमृाक्ष सेना धाय कैं, मंदी परी मुरझाय कैं।
भय भरे लज्याँ भाव सौं, पलटे न पीछे पाव सौं ॥१५३६
देखो सु बंदर दूर सी, पाथोद[6]-बारी-पूरसी।
बाजे सु आँगे बाजने, गल कीस लागे गाजने ॥१५३७
हरखे सु आवत हेर कै, फरके सु पुछ्छैंन फेर कै।
लै अंग बृछ्छ लरा-लरी, तरके सु सिंघ तरातरी ॥१५३८
मिल राखसन सौं संम्मुहा, मेटे सु बाहै मुवरूहा[7]।
प्रेरे सु पथ्थर पेल कै, ऊत्तंग अंगऊ झेल कैं ॥१५३९
धूमृाक्ष बारी-धारका, मारे सु राखस-मारका।
धूमृाक्ष बारी-धारहू, कीनौं सु रव किलकारहू ॥१५४०

१ धूलि। २ मेघ। ३ प्रलयमेघ। ४अपार। ५ रवि। ६ समुद्र।
७ भूरुह = वृक्ष।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रुठे सु पाँवन रोप कै, जाजुल्य जम-सम जोय कै।
तरवार भाला तोक कै, झारे सु फरसा झोक कै ॥१५४१
सत्ती त्रसीरख[1] सर्बला[2], परचंड परघा पर्बला।
परचाय पछ्छुंम पौरचा, मारचौ सु कपिदल मोरचा ॥१५४२
विवधाँन[3] बाँन बराबरो, कोडंड सौं बरखा करी।
धर धूज कै ड़र धाँकरै, सब कोस आये साँकरै ॥१५४३
जब समिल जूथपती जुरे, बिरदंत आतुर बाहुरे।
सिल-श्रंग लै मूसल सबै, तरु कंटकी तोरे तबै ॥१५४४
झारे सु झटपट झेल कै, खुरली[4] सु दावन खेल कै।
कल[5] देख छल-बल काँम लै निज आप-आपन नाँम लै ॥१५४५
कर गर्जना नभ कूद कै, तल लात मारत तूँद[6] कै।
कढ आँत जात करेजवा, बिच ओझरी पर बेझबा ॥१५४६
कोऊ सीस फूटत कनपटी, बिथुरे सु भेजा जिम बटी।
केऊ अधुर[7] तूटै कोरकै, मुख रुधर ऊगलत मोर कै ॥१५४७
केऊ फटी छाती कर्बुरा, फिसलात बुक्का फिफरा।
पासुरी तूटत पासरै, ईक्रतहू[8] तिल्ली आसरै ॥१५४८
अतकटे राखस आय कैं, बपु परे रेत बिछाय कै।
गिर मत्त हाथी जिम गिरी, अस परे खेन अराअरी ॥१५४९
मर अस्वतर खर मार सौं, पथराँन झार प्रहार सौं।
धुज-डंड रथ पसरे धरा, लै डंड कर कपि-दल लरा ॥१५५०
सौवर्न-जटत सुहावने, वह भये अत असुहावने।
गिर परी राखस गोल की, हुद बिनाँ फौज हरोल की ॥१५५१
धूम्राक्ष देखी धार कौं, मुहमेज कपि दल मार कौं।
धूम्राक्ष आतुर धाँख में, चंदोल लायौ चौक में ॥१५५२
भागी सु घेरी भीर कौं, सझ कवच टोप सरीर कौं।
धूम्राक्ष करकै धूंम कौं, भर सुभट खाली भूँम कौं ॥१५५३

१ त्रिशीर्ष = त्रिशूल। २ गुर्ज। ३ व्यवधान। ४ पट्टा-दाव। ५ कलि = युद्ध। ६ बड़े पेट। ७ अधर = होठ। ८ यकृत्।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऊभल्यौं सु पौरुख आग ज्यूं, निज रूप कारे नाग ज्यूं।
कोडंड करखत कान कौं, बिखरूप बरखत बांन कौं ॥१५५४
मुग्दरन मंडी मार कौं, परघा सु देत प्रहार कौं।
तिरसूल सालन तोक कै, भुक परचौ भालन भोक कै ॥१५५५
ईक-एक सौं पुन आहुरे, बहु कीस ह्वै रन-बावरे।
परघा सु मार पछार सौं धर कटे आयुध-धार सौं ॥१५५६
घट तुटे चक्रन घेर में, फरसा स बक्रन फेर में।
तन तुटे कोऊ तरवार सौं, बरछांनवारे धार सौं ॥१५५७
भँननाट बानन भाल कौ, बाजो सु बीन बिसाल कौ।
टंकार मुर्बी[1] तांन कौं, मंजीर-सब्द मिलांन कौं ॥१५५८
हुचकी सु प्रांनन हाल की, ताली सु बाजत ताल की।
गर्जना बीरन गांवनौ, बहुसू--मोद बढावनौ ॥१५५९
जुध भयौ मांनहु जाल कौ, खेलनौ गंध्रव ख्याल कौ।
धूम्राक्ष धनु कर धार कैं, बाहे[2] सुतीत बकार कै ॥१५६०
लागे सुकपि-दल लागनै, ज्वाला सुमांनहु जागने।
अय-पिंड[3] जैसै अंग के, बिखरे सु रीछ लवंग[4] के ॥१५६१
भागे सु आपौ भूल कै दस दिसा लागे डूल कै।
धूम्राक्ष अपनौ धार लै, लाग्यौ सु कपि-दल लार लै ॥१५६२
हनूंमांन जांकौं हेर कै, घट करचौ घायल घेर कैं।
सिल-लरे दौरै सामनै, भननाय लागे आंमनै ॥१५६३
पटको सुरथ पै पांन[5] सौं, अतद्दलो भुज-आजांन सौं।
सिल आवती लख सीस पै, कोप्यौ सु हनुमत कीस पै ॥१५६४
लै गदा ऊतरचौ लोह की, दहकी सु ज्वाला द्रोह की।
सिल गिरो रथ ऊपूर समी, जुत धुजा हय मिलगौ जमी ॥१५६५
रथ तोर हनुंमत रीस कै, पलटे सु दंतन पीस कै।
तरू दिग्ध[6] लीनौ तोर कै, मुट्टी सुपुष्ट मरोर कै ॥१५६६

---

१ मौर्वी = प्रत्यंचा, डोरी। २ चलाये। ३ लोह शरीर। ४ वानर। ५ पाणि = हाथ। ६ दीर्घ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राखसन मारे रोक कै, रन झाटकाड़ा[1] झोक कै।
फूटे सु सिर तरु फेट सौं, लर थरेऊ लाग लपेट सौं ॥१५६७

भागे सु दस दिस भीत सौं, पलटे न जय की प्रीत सौं।
हनूंमांन पर्वत हेर कै, ईक लयो श्रंग ऊखेर कै ॥१५६८

धूम्राक्ष सनमुख धाय कै, अग्राज हाथ ऊठाय कै।
जब देख धूम्राक्षहु जहीं, गाढी गदा कौं कर गही ॥१५६९

हनुंमांन सिर ऊपर हुंनी, घट पीर नहि बाढी घनी।
हनुंमांन पर्वत सिर हुंन्यौ, धूम्राक्षहू मांथौ धुन्यौ ॥१५७०

पर गयौ स्र ंग प्रहार सौं, निखस्यौ[2] सु प्रांन निसार सौं।
बल देख कपि बंजरंग कौ, रव करत जय-जय रंग कौ ॥१५७१

धूम्राक्ष मिलगौ धूर में, सब सितल[3] पर गय सूरमै[4]।
भागे सु लंका-भौंन कौं, कर नाक नीचे कांन कौं ॥१५७२

दोहा

मरन सुन्यौं धूम्राक्ष कौ, दल-जुत पच्छम द्वार।
हरख भयौ हनूंमांन कौं, जांन राम जयकार ॥१५७३

भागे राखस भवन सौं, सो बुलाय दससीस।
बीती सो पूंछी बिगत, बातं बिसवा-बीस ॥१५७४

हनूंमांन की जीत हुव, श्रवन सुनी कथ सोय।
घोरन लागौ बिख घनौ, हथक[5] साप-सम[6] होय ॥१५७५

ब्याकुल होय बुलाय कै, बज्रद्रष्ट बरबीर।
कह्यौ करहु कपि-दल-कदन[7], होय जुद्ध हमगीर ॥१५७६

छंद वृद्धनाराच

सुनी सु बज्रद्रष्ट स्रोंन बीस-पांन[8] बात कौं।
प्रमांन मांन प्रवृती समांन बोल साथ कौं।

---

१ मू० प्र० में–झाट काड़ा रन। २ निकल गया। ३ शीतल = ठंडे। ४ योद्धा। ५ मरे हुए। ६ सर्पसदृश। ७ विनाश। ८ विंशपाणि = रावण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुनाय राज-सासना सझाय संग सैन कौं।
सतंग[1] औ मतंग[2] साथ लीन जीत लेन कौं ॥१५७७
कुरंग चाल के किते तुरंग लेय तक्खरा।
जराव-जुक्त जोन त पबीन-मंड पक्खरा।
चढ्यौ चछोह क्रुद्ध छाय बर्मब्यूढ[3] धीर लै।
बढ्यौ सु जुद्ध बाट कौं टंकार चाप तीर लै ॥१५७८
सझे अनेक अस्त्र सस्त्र साँग डाँग सर्बला[4]।
पटा कटा कुठार पर्घ[5] भिंदपाल[6] लै भला।
प्रचंड पिंड पूरकै ऊमंड कै बढी अनी।
चढी चमंक ज्यूँ छटा घटा घुमंड कै घनी ॥१५७६
लगी थगी धुजा लीयै डिगी सु द्वार दक्खनी।
प्रपात बाल-पुत्र पै डुली अत्रप्र डक्कनी।
बिलोक सैन बंदरी ऊलूक भाँत आवते।
बजाय ढोल होल बोल गीत मौत गावते ॥१५८०
असूचका भये अनेक काक गिद्ध कूकरा।
फिरंड[7] बोल फेकरी समूह आय सूकरा।
अनेक ऊँट आखरे पमंग छूट पक्खरा।
परे ऊलट्ट रथ्थ-पै[8] जंभीर लोह चक्करा ॥१५८१
असूच[9] काग नैन-एक घेख तेख धार में।
कुप्पौ कराल केहरी रुप्पौ सु रूठ रार में।
चढाय चाप बाँन चंड छंडनै लग्यौ छतौ।
धरी न धीर धार ना मिलाय बीर सौं मतौ ॥१५८२
करी झरी कलंब की प्रलंब हाथ[10] पूर कै।
भरे सु कोस भल्लुका डरे सु दूर दूर कै।
अगोट बाँध ना अरे करे न जुद्ध काज कौं।
चढै सु आय चौक में बिचार एहु ब्याज कौं ॥१५८३

---

१ रथ। २ हाथी। ३ बक्तर। ४ गुर्ज। ५ परिघ = लुहांगी। ६ भाले। ७ सियार। ८ रथ का पहिया। ९ अपशकुन। १० बाण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रुकी सु बंदरावली निसाँचरा निहार कै।
चले सु बीच चौक में ऊछंग कीस वार कै।
समेट के समंद सैन बिट जेम बीट कै।
मृजाद छोर के मनौ हल्यो सुनीर हीट कै ॥१५८४

बढी सु बंदरावली जितै-तितै जनौं-जनौ।
मड़ी ऊतंग श्रंग मार घेर साँकरै घनौ।
बिचार बृजद्रष्ट बीर बीर कौं बकार कै।
गिरी सुमेर पाय गाड़ ह्वै खरौ हकार कै ॥१५८५

टंकार चाप तिच्छ तिच्छ गार्ध-पच्छ[1] गेर कै।
बनाय लच्छ[2] रिच्छ बीर ढाहि कीस ढेर कै।
कुठार खड्ग लै कितेक तोक साल तेख में।
रहे सु च्यार कूँन रोक धूँन पर्ब धेख में ॥१५८६

बलाय सैन बंदरी फिरी सु च्यार फेर कौं।
प्रकंड बृच्छ पाँन लै ढहाय श्रंग ढेर कौं।
निसाँचरा निहार ताक ताक कै तरातरी।
फिराक फैल फेर झाँक झोक दै झराझरी ॥१५८७

ऊतै हू बजृद्रष्ट आय अंगदा भिरचौ ईतै।
हुई सु बीर हाक मार-मार की मतै-मतै।
जने जने जुहार एक एक की तकै अनीं।
गहाय खेल गेहरी ठिली चमूं बनी ठनी ॥१५८८

फलंग कीस फेट सौं चपेट मारनै चहै।
अमेठ आच-आच[3] सौं लपेट निश्चरा लहैं।
अरे सुमल्ल जुद्ध आय क्रुद्ध होय काल से।
कराल रूप केसरी बिसैल[4] बाल व्याल[5] से ॥१५८९

घलै अनेक दाव घाव एक देख एक कै।
मलंग मार मर्कटी[6] छलंग जात छेक कै।

१ बाण। २ लक्ष्य = निशाना। ३ हाथ। ४ विषयुक्त। ५ सर्प। ६ बन्दर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

झटा-झटी करंत झाल खेल बीर ख्याल कौं।
दिखाय बक्र चक्र दै चलाक हाथ चाल कौं ॥१५६०
भुजा प्रलंब भेट भाट भ्राट ह्वै झटा पटी।
झटा पटी प्रकंड[1] झाट खाग[2] की खटा-खटी।
मँडी सु अख सख मार कीस श्रौर कर्बु रा।
कटे कटे कटे किते हटे न पाय हर्बरा[3] ॥१५६१
हकार वीर हाक की बकार बाक बोलनौ।
टंकार चाप ताँन कै तुँजीह[4] बान तोलनौ।
नगार संख घोर नाद भेर हू भयंकरा।
करंत कूक कायरा समेट पाय सकरा ॥१५६२
दबे कितेक पाव दोट चोट मोट चौक में।
करचौ सु कीस पीस कीच राह बीच रोक में।
बिलोक बज्रद्रष्ट्र' बीर काल जेम कोप कैं।
खिसाय कैं भयौ खरौ जमाय पाय जोप कै ॥१५६३
झपेट मार झेलकै प्रब्लंग[5] सूम पाछ टै।
लपेट लूँम-लूँम[6] कै अमेठ आच आछटै।
फिराय पाय[7] चीर फार डारनै लग्यौ डरा।
करे सु ग्रास काल के फराय श्रोझ फीफरा ॥१५६४
लखी सु बज्रद्रष्ट्र लाग आग जेम ऊझलो।
धिक्यौ सु बाल-पूत देख बेख के महाँबली।
प्रचंड लै प्रकंड पाँन राकसी-चमूँ रुकी।
कराल डंड काल ज्यूँ धघूँन धू धकाधकी ॥१५६५
बजाय रीठ पौंन-बेग-दौर-दौर दाव लैं।
कुरंग घेर कै कँठीर[8] जाँन श्राव-जाव लै॥
बड़े-बड़े बिसाल सैल-माल आसरावली।
परी सु मार बज्रपात बाल-पूत की बली ॥१५६६

---

१ गोल वृक्ष। २ खड्ग। ३ हड़बड़ा कर = घबरा कर। ४ प्रत्यंचा। ५ प्लवंग = वानर। ६ पूंछ। ७ पाद = पैर। ८ कंठीरव = सिंह।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परे सु रुंड मुंड पिंड थंड़ थंड थंड़ कै।
बितुंड[1] के ऊतंड बाज[2] खेत खंड खंड खै।
मची सु गार मेदनी[3] रची अपार रक्त सौं।
गची मनौ गुलाल गैद गेहरीन गत्त[4] सौं ॥१५९७
सतंग तूट सैरथीन भूँसरी पई भरे।
भयंकरी दिखात भूँम कूक माँच कायरे।
मिलाय मेघमाल ज्यूँ पुलाय जूट पाथरा।
बयार बाल बालके बिखेर दीन बादरा ॥१५९८
मरी परी धरामही बिसेस फौज बाज कै।
दिखी सु बज्रद्रष्ट विष्ट भीरु आय भाजकै।
टंकार चाप ताक ताक बाँन देत बिप्फुरचौ।
बिड़ार कीस बाहनी[5] जनूँन ज्वाल कौं जरचौ ॥१५९९
रहे सु कीस पाँव रोप कोप जुद्ध काल से।
भरी करी पखाँन[6] भार वृछ्छ ले बिसाल से।
निसूद कै निसाँचरा गिराय दीन गात कौं।
करे सुत्रप्त काक कंक स्यार स्वाँन साथ कौं ॥१६००
गिरे कबंध गैन[7] सौं डरावनै दिखात है।
बिहस्त[8] होत बीर हू फिरा फिरी फिरात है।
प्रपात[9] मार पाय कै बिखाद बैर बीसरे।
ऊसास लेत स्वास आस नास-नास नीसरे ॥१६०१
बिलोक बज्रद्रष्ट नष्ट बाँहनी बिगार कौं।
भुकाय चाप बाँन भेल बिफुरचौ बिगार कौं।
तजे सु सीद ताक-ताक लै कजाक[10] लार कौं।
करे सु ऊँन-तीस कीस बेध एक बार कौं ॥१६०२
करे अनेक बार कीस सैंन पै कराकरी।
जमाय बीर जोर खेल माँड़ कै खराखरी।
ऊछंड[11] कीस ओर हू गही सु सनं अंगदा।
जुरे सु जुथ्थ-जुथ्थपं जमाय पै जुदा-जुदा ॥१६०३

१ हाथी। २ वाजी = घोड़े। ३ पृथ्वी। ४ गर्त्त = गड्ढे। ५ सेना। ६ पाषाण = पत्थर। ७ गगन = आकाश। ८ विह्वल। ९ कटक। १० मृत्युकारक। ११ घबड़ाकर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बकार बज्रद्रष्ट्र कौं सपुत्र-बाल सालुरचौ।
मदोनमत्त ज्यूं मतंग बेख सिंघ बिफरचौ।
मड़्यौ सु स्त्रङ्ग मारनै फलंग लै फिरा फिरी।
गिरै गिरा ज्युहीं गिरी सिलाँन की सरासरी॥१६०४
रूप्यौ सु बज्रद्रष्ट्र रार चाँप कौं चढाय कै।
मड़ी अपार बाँन मार बेग कौं बढाय कै।
पखाँन मार पेल बाल-पुत्र कौं बकार कै।
दये सु मर्म-गात[1] देख तीर तार-तार कै॥१६०५
भिदी सु बाल-पुत्र भाल चींछ रत्त छूट कै।
परै पतंग ज्यूं पनार बार मेघ बूठ कैं।
गनी न बाल-पूत गात लाग तीर लोह की।
ऊखार वृछ ऐच कै चल्यौ सुचाल चोह की॥१६०६
हन्यौ सपष्ट द्रष्ट हेर बज्रद्रष्ट बीर पैं।
बिलोक बज्रद्रष्ट बीर तीर दीन तीर पैं।
खिरे प्रकंड खंड-खंड खंड झौर झुंड झूरकै[2]।
बढ्यौ बिसाल काग बेग धेख सौं धरूर[3] कै॥१६०७
जहाँ सुबाल-पुत्र जोय श्रृंग लै समेट कै।
दयौ सु बज्रद्रष्ट्र देख श्राच कौं अमेठ कै।
लख्यौ सु बज्रद्रष्ट लौर मेघ ज्यूं लगा लगी।
चल्यौ सु रथ्थ छोर कै धरै गदा धगा धगी॥१६०८
गिरचौ ऊतंग गैंन सौं सतंग तूट स्वारथी[4]।
परे गधा पसार पै मरचौ बच्यौं महाँरथी।
बलाय बाल-पूत बीर देख बज्रद्रष्ट कौं।
ऊठाय श्रृंग एक ओर सीध ताक सिष्ट कौं॥१६०९
तज्यौ तराक[5] बज्र तेम बज्रद्रष्ट्र वीर पै।
परचौ सु सीस ऊपरा सिला गिरी सरीर पैं।

---

१ मर्मस्थल। २ झड़ कर, नष्ट होकर। ३ धैर्य धर कर। ४ सारथी
५ तत्काल।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गह्यौ सु मोह[1] लै गदा रह्यौ खरौ रुकाय कै।
बह्यौ[2] रगात[3] बार ज्यूँ झरचौ मुखा झुकाय कै ॥१६१०
अचेत होय अंग सौं घुटाय स्वास ह्वै घटी।
ऊठ्यौ गदा ऊठाय के जु मोह की दसा मिटी।
बिलोक पूत-बाल कौ ससीम[4] घेर साँकरै।
हनी गदा हकार कै बकार बीर बाँकरै ॥१६११
परी सु बाल-पूत पै झपेट हाथ झेलकै।
लई सु खोस लार लाग फंक दीन फेल कै।
मँडी अभंग मुष्टिमार तिष्ट-तिष्ट तोल कै।
भिरे भुजा-अजाँन भेट बीर बाक बोलकै ॥१६१२
हटे नियुद्ध हाल कै बलाय पूत-बाल कौ।
ऊखार बृच्छ आँच सौं करचौ सरूप काल कौ।
बिलोक बज्रद्रष्ट ढाल खड्ग हाथ ढाब कै।
चल्यौ चछोह संक छोर दंत ओठ दाब कै ॥१६१३
भिरे ऊभै भुजंग भेस घाव दाव घेर में।
प्रहार एक एक पै बढ़ाहि जाहि बेर में।
दई प्रकंड मार ड़ार बाल-पूत बेग सौं।
हिराय[5] मूँठ हाथ सौं तराक छूट तेग[6] सौं ॥१६१४
लई ऊठाय बालनंद[7] तेग हाथ तोक कै।
करचौ सु वार कूद बज्रद्रष्ट कौं बिलोक कै।
तराक सीस तूट कै गिरचौ धरा गरा गिरी।
चल्यौ सु प्राँन छूट कै प्रकार ज्यूँ परापरी ॥१६१५

दोहा

पति लंका सेनापती, बज्रद्रष्ट बल बृद्ध।
पीछौं फिरचौ न मर परचौ, जुर अंगद सौं जुद्ध ॥१६१६

---

१ मूर्च्छा। २ बहने लगा। ३ रक्त। ४ एक सीमा में, निकट। ५ हट कर। ६ तलवार। ७ अंगद।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

फाटक दख्खन सौं फिरी, राखस सेना रोय।
घायल भट आये घरन, हुथक[1] साप जिम होय ॥१६१७
भूप लंक दुचतौ[2] भयौ, बज्रदृष्ट सुन बात।
घोरन लागौ रीस घट, बीच मसक[3] जिम बात ॥१६१८
देख अकंपन हुकम दीय, सेना-सहित सकोय।
जाय प्रहारहु भ्रात-जुग, बंदर जूथ बिगोय ॥१६१९

छंद मौतीदाँम

अकंपन रांवन की लख ओर, जुहारीय पाय ऊभै कर जोर।
चल्यौ तिह बेर सभा कर छेह, गयौ सोई सैन पड़ाव कै ग्रेह ॥१६२०
तहाँ सब सैनक कीन तयार, सझे तन टोप बख्खतरं सार।
लयौ कर चाप टंकारव लेत, सराश्रय तिक्ष्छन बाँन सहेत ॥१६२१
सँभार कै आयुध बैठ सतंग, मिलाय कै झुंड प्रमंग[4] मतंग।
पलादन[5] जूहन-जूह[6] प्रचार, लसक्कर लीन असंखन लार ॥१६२२
चल्यौ तहाँ आहव[7] की कर चाह, पिले संग राखस बे-परवाह।
कँपै नँह काय करै जब क्रुद्ध, अकंपन नाम धरचौ बल ऊद्ध ॥१६२३
सोई चढ चालेऊ खेत सँभार, भुजंगम-सेस[8] परचौ सिर भार।
लग्यौ दध-नीर[9] हिलोरन लैन, गुहा गिर गूँजन लागेऊ गैन ॥१६२४
कुलाहल सद्द भयौ चहुँ कोद, बढ्यौ ऊर बीरन बीर बिनोद।
गहक्कन लागेऊ ऊपर गीध, कुरालीय काक कजाकन कीध ॥१६२५
भये ऊतपात भयंकर भेस, प्रकंपन[10] संमुह कीन प्रवेस।
ऊड़ी बहु अंबर सौं ऊलकाँन, करी[11] अस[12] मोरन लागेऊ कांन ॥१६२६
फरक्कीय बाँम भुजा चख[13] फेर, करक्कीय बीज अबद्दर केर।
धरक्कीय सात पताल धराह, बरक्कीय आँनन दढ्ढ[14] बराह ॥१६२७
घटा घन होय नगारन घोर, सुनावत संख असंखन सोर।
ढरक्कन नेजन के पट ढील, फरक्कन लागेऊ ऊपर फील[15] ॥१६२८

१ घायल, मृततुल्य। २ दुश्चिन्त = चिन्तित। ३ शक (पानी भरने की)। ४ घोड़े। ५ राक्षस। ६ यूथ = झुण्ड। ७ युद्ध। ८ शेषनाग। ९ उदधि = समुद्र। १० वायु। ११ हाथी। १२ अश्व। १३ चक्षु। १४ दष्ट्रा = दाढ़। १५ हाथी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पताकन[1] सिंदन[2] पाँतन-पाँत, दिखावत तिछ्छन ज्यूँ जमदाँत।
लख्यौ कपि आवत आहव लाग, ऊठी ऊर क्रुद्ध बलाय की आग ॥१६२९
गरज्जन लागेऊ नाद गहीर, सँभाय कै श्रंग ऊतंग सधीर।
बड़े तरू लैंकर बेर ही बेर, फलंगन मारन लागेऊ फेर ॥१६३०
तहाँ कछू चाल अकंपन तेज, मिल्यौ दल बंदर सौं मुहमेज[3]।
करी झर बाँनन की कर क्रुद्ध, अकंपन बीर पराक्रम ऊद्ध ॥१६३१
जबै दल बंदर हू कर जोर, अकंपन घेर चले चहु ओर।
मँडी तरू मूसल हू सिल मार, रुपी बिव ओर बराबर रार ॥१६३२
अकंपन राँवन की जय आस, करचौ बल बाँहन[4] कौ परकास।
चले कपि राँम बिजै कर चाह, अकंपन् पौरुख कौं अवगाह ॥१६३३
भयौ रन संकुल रूप भयाँन, ऊठी रज छाय लयौ असमाँन।
लखावत धूसरी रंगत लाल, कढे मनु बद्दर संधक[5]-काल ॥१६३४
बन्यौ रज डंम्मर छाय बिताँन, पिछाँनहु पाँन[6] न पावत पाँन।
गये छिप स्यंदन कुंजर गात, दसू दिस खेहन छेह दिखात ॥१६३५
घटा घन जेम मचावत घोर, सुनावत राखस बंदर सोर।
प्रहारन देत बिना पहिचाँन, बिराँनेऊ[7] आपने एक बिधाँन ॥१६३६
असंखन सैंन परी कट एम, जुरे रन-बावरे बावरे जेम।
झरे गज ऊँट तुरंगम झुंड, थटे भट ऊपर थंडन थंड ॥१६३७
परे कट आँमख[8] श्रोनत[9] पूर, धरातल दब्बीय-सब्बीय[10] धूर।
बढ्यौ कछू सूरज तेज बिरोक, करंकन ऐचक लागेऊ कोक ॥१६३८
मृघादन[11] जंबुक[12] पायेऊ मग्ग, कुलाहल गिद्धन माचेऊ कग्ग।
भयंकर रूप भई रन-भूंम, घनै घट घायल मंडत घूँम ॥१६३९
भयातुर कातर केक भ्रमंत, अरूझत पावन[13] अंतर-अंत।
महाँबरबीर रहे पग मंड, अनीं निसवारन कीस ऊमंड ॥१६४०
परठ्ठत लोथन ऊपर पाव, घलै हथ बाहन चूकत घाव।
निसाँचर कास रुपे निरसंक, धनी अप-अप्पन[14] की जय धंक ॥१६४१

१ ध्वजा। २ स्यन्दन = रथ। ३ पंक्ति, कतार। ४ भुजाओं का। ५ संध्या। ६ पाणि = हाथ। ७ अन्य। ८ आमिष = मांस। ९ शोणित = रक्त। १० मू. प्र. दबीय-सबीय। ११ जरख। १२ सियार। १३ पैरों को। १४ अपनी-अपनी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करक्कत देखत राकस कीस, सिला तरू ऊपर मारत सोस।
ज्यूँही लख राखस बंदर जूह, भिरैं रिस[1] छाय अमेठत अ्रूह ॥१६४२
करै परघातन मार कुठार, त्रसूलन सूल गहै तरवार।
अकंपन जुद्ध भिरयौ अकुलाय, बनोकन[2] सैन हटी बिचलाय ॥१६४३
ऊभै भट मैंद कुमंद अभंग, जुरे दल राखस संम्मुह-जंग।
प्रहारन दीन पहारन पेल, झपेटन-फेटन दै तरू झेल ॥१६४४
गिरे केऊ राखस चूरन गात, भजे तन दारत ह्वै भहरात।
अकंपन कीस लखे बल ऊद्ध[3], कह्यौ निज स्वारथि सौं कर क्रुद्ध ॥१६४५
जिताहव मैं खल राखस जात, दिती-सुत[4] देवत देख ड़रात।
जिही कपि जात दिखावत जोर, महाँ ऊपहास भयौ ईह मोर ॥१६४६
कहा ईह बापुरे बंदर कीट, दिखावहुँ बाँहन कौ बल दीठ।
खरौ रथ राख करूँ सब ख्वार, झुकाय कै चाप कलंबन[5] झार ॥१६४७
जहाँ रथ थप्पेऊ स्वारथी जाँन, ऊचाँन को जाग[6] कछू अनुँमाँन।
करो झर बाँनन की भर कोह, चिमंटीय चाढ कै चाप चछोह ॥१६४८
परे बहु बंदर ह्वै गति-प्राँन[7], भजे केऊ संगर देख भयाँन।
कुलाहल सद्द भयौ कपि केर, बढ्यौ बल राखस कौ जिह बेर ॥१६४९
सुण्यौ हनूँमाँन जहाँ कपि सोर, चले जब आपने मोरचा छोर।
मिले दल मर्कट फेर मिलाय, भुजंगम जेम फिरे भहराय ॥१६५०
सबै हनूँमाँन के आय सर्सीम[8], नूभै हुय संगर दिन्नोय[9] नींम।
अकंपन मारूत-नंदन ईच्छ,[10] प्रहारेऊ तिच्छन गारध पच्छ[11] ॥१६५१
भिदी सुत-मारूत कै तन भाल, जगी ऊर क्रोध हुतासन-ज्वाल।
अकंपन मारन कारन ऊह[12], बिमाँसन लागेऊ बंदर ब्रह ॥१६५२
हरोलोय होय वढे हनूँमाँन, सबै मिल जूथप जूथ समाँन।
पिले गिर-श्रंग गहै बल पूज, धरा धमचक्क मचक्कन धूज ॥१६५३
हसे हनूँमाँन अकंपन हेर, बकारकै[13] अग्र[14] बढे जिह बेर।
अकंपन श्रंग लख्यौ कर ऊद्ध[15], सनंकृत बान दये लहि सुद्ध[16] ॥१६५४

१ क्रोध। २. वानरों की। ३ अधिक। ४ दैत्य। ५ बाण। ६ जगह = स्थान। ७ निर्जीव। ८ निकट। ९ दी। १० देखकर। ११ बाण। १२ बिचार। १३ ललकार कर। १४ आगे। १५ ऊपर। १६ सीध बांधकर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दुट्यौ गिर-स्रृंग भयौ सत टूक, अनोअन[1] मारेऊ बाँन अचूक ।
अकंपन देख पराक्रम ऊद्ध, करचौ हनूँमाँनहू दारुन क्रुद्ध ॥१६५५

तरू असकर्न बड़ौ लीय तोर, सिफा[2] जुत आँचन[3] ऐच सजोर ।
बहे जब वृछ्छ घसीटत बाट, परे बहु राखस खाय पछाट ॥१६५६

अकंपन देखेऊ बाँह-अजाँन, हले ईम आवत है हनूँमाँन ।
तहाँ दोय ताक चतुर्दस तीर, सबै हनूँमाँन के लाग सरीर ॥१६५७

रुक्यौ हनूँमाँन, नहीं पग रोप, करचौ तिह बेर भयंकर कोप ।
हन्यौ तरू सीस अकंपन हेर, फट्यौ सिर भूँम गिरचौ चख[4] फेर ॥१६५८

दोहा

परचौ खेत लंकापुरी, गिरचौ अकंपन गात ।
हुई जीत हनूँमाँन की, बात भई बिख्यात ॥१६५९

जे कोऊ ऊबरे जुद्ध में, पहुँचे रावन पास ।
मरचौ अकंपन खेत में, खबर कही सोई खास ॥१६६०

मरन अकंपन सुन्न सँमुझ, राँवन चाल्यौ रूठ ।
चाल्यौ देखन मोरचा, कोट पुरी त्रयकूट[5] ॥१६६१

छंद त्रोटक

चल राँवन कोट त्रकूट चढ्यौ, गढ देख सुबर्न की ईंट गढ्यौ ।
जुरे कंगुरे लाल जवाहर के, पुन सोबृन धाँम लखे पुर के ॥१६६२

जर तार पताकन पाँत जुरी, लग मौंतिन झालरी लूँब लरी ।
फुलवारीय हौज फुहारन के, चख[6] देखेऊ पेढ चुँहारन के ॥१६६३

बहु बापीय कूप अनूप बने, चँमकै दुति सोबृन इंट चुँने ।
केऊ चत्वर[7] और बजार किते, अवलोकेऊ द्वार पगार ईते ॥१६६४

परजा बहु भीर लखी पुर में, अवलंचत[8] सोक-ग्रसी ऊर में ।
पुन देखेऊ सैन पड़ाव परी, केऊ बिस्वरहू[9] खर[10] वाज[11] करी[12] ॥१६६५

---

१ अनेक । २ जड़ । ३ हाथों से । ४ आँख । ५ त्रिकूट । ६ आँख से । ७ चौक । ८ भयभीत = घबड़ाई हुई । ९ खच्चर । १० गधा । ११ घोड़ा । १२ हाथी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अवलोक कं खास-अवास[1] अमूँ, चख-बीस[2] लखी फिर कीस चमूँ ।
गल जास अवाज सुनी गहकी, दससीस कै रीस हुयै दहकी ॥१६६६
अवलोक प्रहस्त कौं बोल ऊठ्यौ, रन रोप कै ऊपर रांम रूठ्यौ ।
तिह भार पर्यौ हम पै तुम पै, जुत कुम्भकरंन निकुम्भ जुपै ॥१६६७
घननाद सपुत्र भरोस घनौ, दल कीस बिनासहि भ्रात दुनौ ।
अब तौ चढ़ जाहु प्रहस्त ऊतै, जढ[3] कीस प्रहारहु रांम जुतै ॥१६६८
कपि जांनत ना कल[4] की कल कौं, सिखरी[5] अरु मारत है सिल कौं ।
सँग सिक्षक[6] फौज कौं लेय सबै, ऊत सैनपती चढ जाहु अबै ॥१६६९
कपि जात असिक्षक[7] है कुहनी, रूख जांनत जंगल की रहनी ।
जिनकौं कहा भार है जीतन में, रन को न पिछांनन रीतन में ॥१६७०
रखवारीय राज की सैन रही, त्रती-अंस कौ मालक एक तुही ।
कपि आयेऊ लायेऊ घेर कजा[8], रघुनाथ सँघारहु एह रजा ॥१६७१
सुन रांवन सासन[9] सैनपती, कीय त्यारीय सैनक सैन किती ।
बहु सिंदन[10] बाज गयंद बली, चढ चालेऊ राखस बीर छली ॥१६७२
निहसे बहु नद्द[11] नगारन कौ, केऊ बीरन की किलकारन कौ ।
गज-घंट ठनंकीय जेम घरी, बिसफार[12] अवाज धनंख[13] भरी ॥१६७३
रथ बीर प्रहस्त चल्यौ रन में, बिफुर्यौ मनुं सिंघ महांबन में ।
ऊचर्यौ मुख बांनीय[14] बीर अगै, भय पाय कहुँ नही कीस भगै ॥१६७४
जम-लोक पठावहुँ येक जमै, भख ग्रीध करावहु संग भ्रमै ।
रथ हाक चल्यौ रन रोख-रतौ[15], मन सौं कपि-मारन कीन मतौ ॥१६७५
अगुवा भट चालेऊ च्यार अगै, समुनंत नरांतक जात सगै ।
महांनाद रु कुंम्भहनूं मिलकै, चढ कं रथ आय गये चलकै ॥१६७६
जम कै दल कुंजर जूथ ज्युंहीं, गढ बांध कै पूरब राह गही ।
पहुँचे जब फाटक जाय परा, धुज-ड़ंड ऊछंड कै आय धरा ॥१६७७
पर चाबुक स्वारथि[16] पांनन सौं[17], केऊ जंबुक[18] दौरेऊ कांनन सौं ।
खिसले पग घोरन खाय खता, कर छूट गिरे केऊ कूंत[19] कता ॥१६७८

---

१ राजमहल । २ रावण । ३ जड़ । ४ युद्ध । ५ वृक्ष । ६ सीखी हुई, शिक्षित । ७ अशिक्षित । ८ मृत्यु । ९ आज्ञा । १० रथ । ११ नाद । १२ धनुष की टंकार की ध्वनि । १३ धनुष । १४ वाणी = बात । १५ क्रोध में रत । १६ सारथि । १७ हाथों से । १८ सियार । १९ भाले ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अनसूचक[1] देखेऊ आँख ईतै, पलट्यौ न प्रहस्तहू जुद्ध प्रतै।
अनी राखस देखत कीस अरे, सझ श्रङ्ग ऊतंग भिरे सिगरे ॥१६७९
ठिल कै मिल कै दल ठाट ठयौ, भयकार ऊभै दिस सद्द[2] भयौ।
अबना रघुबीरहू सोर सुनौ, दल अग्र बढे कछू भ्रात दुनौ ॥१६८०
जहाँ देख प्रवेक[3] घने जन सौं, बतरायेऊ राँम बभीखन सौं।
ईह कौन बली चढ आवत है, बिसफार अवाज बढावत है ॥१६८१
चमकावत आयुध ज्यूँ चपला[4], कर बाँन गहै मनु सूर-कला[5]।
गिर कन्दर ज्यूँ रथ के गुमजा, धुज-डंड फरूकत दिघ्घ धुजा ॥१६८२
कहनी सुन राँम बभीखन हू, समुझाय कही ईह बात सहू।
पति-लंक[6] प्रहस्त है सैन पती, मगरूर भरयौ ऊर क्रूर मती ॥१६८३
रघुनाथहू सेनप देख रहे, बढ कै कपिहू मुहमेज वहे।
अत मार परी बिव[7] औरन सौं, कपि राखस बीर करोरन सौं ॥१६८४
परघातन राखस लै पछटै, जहाँ कीस प्रकंडन[8] लेय जुटै।
बहु राखस मारत बाँनन कौं, पुन बंदर देत परवाँनन[9] कौं ॥१६८५
ईत राखस लेत त्रसूल अरै, कपि लै तरु दीरघ मार करै।
मिल राखस आयुध मारत है, गिर कीस ऊखार गिरावत है ॥१६८६
कपि राखस जूझत बीर कला, मँडराय घटा घन जेम मिला।
अटकी भट राखस कीस अनी, बिव और बराबर रार बनी ॥१६८७
कपि राखस पै ऊररे कररे, भट च्यार प्रहस्त के आय भिरे।
मुहमेज[10] भये कपि मारन कौं, करवालन[11] ढाल कुठारन कौं ॥१६८८
ईन च्यारहु कौं लख कीस अनी, घन ज्यूँ ऊमँड़ी घहराय घनी।
तरू लै गिर लागेऊ तारन कौं, मिल मूसलहू सिल मारन कौं ॥१६८९
खल देख नरांतक-खेत[12] खरौ, भट आय दुबिदहू कीस भिरौ।
गिर-श्रङ्ग ऊखार करयौ गररौ, छित[13] राखस होय परयौ चुररौ[14] ॥१६९०
जुर खेत समुंन्नत आय जहाँ, तरू सौं कपि दुर्मुख मारत हाँ।
जंबुवाँन तथाँ[15] महाँनाद जुरे, कल[16] देख जही सिल वार करे ॥१६९१

---

१ अपशकुन। २ शब्द। ३ अगवानी। ४ बिजली। ५ सूर्य-किरण। ६ रावण। ७ दोनों। ८ वृक्ष-गोले। ९ पत्थर। १० सम्मुख। ११ तलवार। १२ युद्धक्षेत्र। १३ भूमि। १४ चूर-चूर। १५ मू. प्र. त्थाँ। १६ युद्ध।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परगौ[1] खल ह्वै पुरजा-पुरजा, सब रार के काँमहु सौं सुरजा[2] ।
गहि बृछ्छ बड़ौ रन कौं गवन्यौ, हनुँकूँम कौं तारहु कीस हन्यौ ॥१६९२
भट च्यार प्रहस्त भरे भिर कं मरनै-डर सौं पग नाँ मुरकं[3] ।
पग रोप कै च्यारहु बीर परे, जब हीय प्रहस्त कै आग जरे॥१६९३
गहि चाँप रथी रथ पै गवन्यौ, बिकराल बलाय कौ रूप बन्यौं ।
पर सोबृन की सर सोक परी, बहु आग आगारीय ज्यूं बिखरी ॥१६९४
करनें बहु लागेऊ जुद्ध कला, जरनें कपि लागेऊ क्रुद्ध जुला[4] ।
बल कीस चमू सब छूट बह्यौ, रन-खेत प्रहस्तहु रूठ रह्यौ ॥१६९५
बिफुरचौ दिखरावत बीर बृती, पग माँड सके नही जूथ-पती ।
मृघराज ज्युँहीं कर गाज मिला, गजराज ज्युँहीं कपिराज गिला ॥१६९६
घट बाँनन लागेऊ घाव घने, बपु कीस बसंत-पलास बने ।
बनचार[5] सरीर गिरी बरना, झरनै रत[6] लाग गये झरना ॥१६९७
निकरै बहुं श्रोनत नारन[7] सौं, धर गार मची सर धारन सौं ।
ईम बाँनन मार प्रहस्त अटा, करनै कहुँ लागेऊ कीस कटा ॥१६९८
दल बंदर पीठ फिरी डर सौं, अकुलाय कै हार रहे अरी सौं ।
जहाँ जूथप नील रह्यौ जम कै, भहराय कै सैन चली भ्रम कै ॥१६९९
मुहमेज[8] प्रहस्त रू नील मिला, जय राँवन राँम कौ बाँध जिला ।
समिले बरखा-रित से हरसे, कँदली-बन के गज केहर[9] से ॥१७००
खित ऊपर देखेऊ नील खरौ, गिर कौं कर पै ईक लेय गिरौ ।
मलप्यौ रथ नीलहु मारन कौं, सब स्वामीय काम सुधारन कौं ॥१७०१
बढ कै खल नील कै साँमैं बह्यौं, रथ सूरज तेज प्रकास रह्यौ ।
धँनुवाँन सुधार प्रहस्त धक्यौ, रथ संमुह दौर कं नील रूक्यौ ॥१७०२
बरसायेऊ बाँन प्रहस्त बली, झर भादव की मनु आय झिली ।
बपु नील कै लागेऊ साल[10] बड़े, गति तिछ्छन कंटक रूप गड़े ॥१७०३
जग-मग्ग[11] सुबर्न की पाँख जुटी, चिनगारीय माँनहु आग छुटी ।
भट लै तरू नीलहु जाय भिरचौ, तरु-संजुत माँनहु सैल तरचौ ॥१७०४

---

१ गिर पड़ा । २ सुलझ गया = निवृत्त हो गया । ३ मुंह मोड़कर । ४ ज्वाला । ५ वानर । ६ रक्त । ७ नालों । ८ सामने । ९ सिंह । १० घाव । ११ जगमग होती हुई ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

झटके खल ऊपर झौरन कौं, मसके रथ-घोरन मौरन कौं।
भननेटीय लै रथ दूर भगा, तितरचौ बितरचौ रथ खाय तगा ॥१७०५

हय सूत[१] सँभार तही हरवयौ कपि ऊपर बीज ज्यूँही करवचौ।
बरखा फिर किन्नोय बाँनन की, अत भालन तिछ्छन ग्राँनन की ॥१७०६

सहि घाव चल्यौ पग देत सनै, गज ग्रासवन[२] ज्यूँ बरखा न गनै।
गहि कै तरू दिग्घ ससीम[३] गिरचौ, झटक्यौ रथ घोरन सीस झरचौ ॥१७०७

हय तूट परे पग नाहि हिले, जिह देख प्रहस्तहु क्रुद्ध जले।
कपि नीलहु तीसर वार करचौ, धँनुं तोर दयौ बिच हाथ धरचौ ॥१७०८

पुन सिंदन[४] कौं तज सैनपती, धर मूसल कूँद परचौ धरती।
ईत नील प्रहस्तहु बीर ऊतै, जम-रूप भिरे मगरूर जुतै ॥१७०९

बिव बैर-भरे ऊर ग्राग बला, कर क्रुद्ध बिसारद जुद्ध-कला।
सिरदार ऊभै दन ऊच्च-सिरा[५], जनु कुंजर ग्राय मदंध जुरा ॥१७१०

चक छोह-भरे बनजात चले, मृगराज ऊभै मनु गाज मिले।
भिर येक सौं एक भजाँवन को, परतीत[६] ऊभै जय पावन की ॥१७११

लख येक कौं एक के रीस लगी, जनु लाय हुतासन[७] ज्वाल जगी।
कर ग्रायुध लै करर करर, ईक पै ईक देखत ही ऊररे ॥१७१२

जहाँ मूसल लेय प्रहस्त जुरचौ, कपि नील के ऊपर वार करचौ।
सिर चोट लगे तऊ ना सिरवचौ, तरू लै खल के ऊर में तरक्यौ १७१३

तरू चोट प्रहस्त सही तन में, रपट्यौ कपि नीलहु पै रन में।
खल ग्राय लख्यौ हुय नील खरौ[८], पटक्यौ सिर ऊपर लै पथरौ[९]॥ १७१४

पथरा लग सीस भयौ पुरजा[१०], ग्ररु मूसल हाथ रह्यौ ऊरझा।
धर धूज प्रहस्त गिरचौ धरनी, कपि नील प्रभूत करी करनी ॥१७१५

दोहा

जूथप मारचौ नील जुध, सेनापती प्रहस्त।
कटे सुभट पर हय करी, सिकक्षक[११] सेन समस्त ॥१६१६

१ सारथि। २ ग्राश्विन = क्वार। ३ पास = निकट। ४ रथ। ५ उच्चकोटि के।
६ विश्वास। ७ ग्रग्नि। ८ खड़ा होकर। ९ पत्थर। १० खण्ड-खण्ड। ११ शिक्षित।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राँम सुनी राँवन सुनी, बीतो सो कछु बात।
हरके[1] ईक धरके ऊवर, प्रफुलत[2] येक पिरात[3] ॥१७१७
मन राँवन मुरछत भयौ, तन सरसायौ तेख।
द्रगन बलाबल देखनै, धरचौ राँम सौं धेख ॥१७१८

छंद मौतीदाँम

परचौ कपि नील के हाथ प्रहस्त, सुनी सोई राँवन बात समस्त।
सभा बिच आयेऊ ईन्द्र समाँन, सभासद ऊठ करचौ सनमान ॥१७१९
सिंघासन बैंठ कछू सुसताय, प्रकासन[4] बात करी पिछताय।
प्रहस्तहू बीर भयौ भवपार, सबै दल राखस कौ सिरदार ॥१७२०
सुरेसुर[5] जीतन कौं समराय[6], हन्यौ कपि नील ऊठाय कै हाथ।
बड़े बलबाँन सबै कपि बोर, घघूँनत लंक पुरी रन घोर ॥१७२१
बलाबल देखन जाहि बिचार, रचावन जावहिगे हम रार।
सबै चतुरंगीय सेन सभाय, बुलाबहु मंगल बाज-बजाय ॥१७२२
करूँ कपि रीछ सँघार कै कीच, बिजै[7] रस चाखहुगो रन बीच।
ईतो कहि रथ्थ मगाय अनूँप, सभायकै चालेऊ काल सरूप ॥१७२३
घनी भय संख नगारन घोर, हरूरत माँनहु सिंधु हिलोर।
हुई चहु ओर न की बँन हाक, करी किलकारीय बोर कजाक ॥१७२४
गयंदन स्यंदन नेमीय गाज, बहें रथ जोर कै केतक-बाज[8]।
निखादीय[9] घंट सुनावत नद्द[10], हले गज ऊपर बंठ हवद्द[11] ॥२७२५
तुरंगीय[12] जंगीय हौय तयार, डरावने चालेऊ पख्खर ड़ार।
चले भट कंकट-बूढ[13] चलाक, धरा चक ड़ोल चढी पर धाक ॥१७२६
टंकारत चाप चले गहि तीर, भई नभ ऊपर भालन[14] भीर।
कतो परघातन साल कुठार, त्रसीरख[15] तिछ्छन लै तरवार ॥१७२७
बिचार कै राँम सौं बैर बिधाँन, भई असवारीय रूप भयाँन।
बन्यौ रज[16] डंम्मर छाय बिताँन, भयौ अँधीयार न दीसत भाँन[17] ॥१७२८

---

१ हर्षित हुए। २ प्रफुल्लित। ३ पीड़ित। ४ प्रकट की। ५ देवता और दैत्य। ६ समर्थ। ७ विजय। ८ घोड़े। ९ हाथी-सवार। १० नाद। ११ हौदा। १२ अश्वारोही। १३ बख्तर पहनने वाले। १४ भाले। १५ त्रिशूल। १६ धूली। १७ सूर्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रसातल धूज दचक्कन रथ्थ, मचक्कन लागेऊ सेस के मथ्थ।
चले अगवाँन किते भट चाह. निचोलक सज्जत भोर सनाह[1] ॥१७२९
अगारीय बाढत लंक-अधीस, करी किलकारीय भारीय कीस।
सुन्यौं रघुबीर जबै कपि सोर, चले दल हेरन[2] डेरन छोर[3] ॥१७३०
बभीखन पूछन लागेऊ बात, असूचक[4] होत घने ऊतपात।
रुकायन[5] धावत आवत राह, ईहै खल कौन कहौ अवगाह ॥१७३१
सुने रघुबर के बायक[6] आँन[7], बखाँनन लाग बभीखन बाँन[8]।
ऊभे चख दीसत जास अरूँन्न[9],बिभात[10]के सूर प्रकास बरंन्न[11] ॥१७३२
निखादीय[12] बादोय जुद्ध निमंध, कँपावत आवत है गज कंध।
अकंपन दूसर जाँनहु एह, दिखावत दिघ्घ सिलोचय[13] देह ॥१७३३
दिखावत आभ अट्यौ धुज दंड, पताक में सिंघ लिख्यौ परचंड।
बन्यो रथ बादर ज्यूं बरसात, डुलावत चाप प्रभा दरसात ॥१७३४
पराक्रम कुँजर आक्रत पिंड, दिखावत सुंड ज्युंही भुज-दंड।
ईहै घननाद है बीर अभंग, अँनी[14] सझ आवत जुद्ध ऊमंग ॥१७३५
सिलोचय दीरघ जेम सरीर, टंकारत चाप संभारत तीर।
रथी रथ बैठकै माँडत रार, करै जमदूनन काल करार ॥१७३६
सोई चढ़ आवत बीच-सतंग[15], ईहै अंतकाय है बीर अभंग।
चढ्यौ गज पीठ कीयैं चख-चोल[16], बकारत बीर भयंकर बोल ॥१७३७
महोदर राखस ऐह मदंध, करयौ अगवाँन जही दसकंध।
ईहै ईक आवत अस्व-अरोह[17], लीयै कर प्रास[18] प्रकासत लोह ॥१७३८
मरीच[19] के आक्रत झालरि मंड़,दिखावत दिघ्घ[20]मही भुजदंड।
करै रन बीच भयंकर काँम, निसाँचर जास पिसाच है नाँम ॥१७३९
चढ्यौ ईह बैल के ऊपर चंड, दिखावत सूल लयै भुजदंड।
निसाँचर है त्रिसरा जिह नाँम, धुरंधर बीर महाँ बलधाँम ॥१७४०
प्रकासत मेघ के आक्रत पिंड, भुजाँतर दीरघ है भुज-डंड़।
पताक में सेस लिखीं प्रतछाँह, बराबर चाप धरयौ जिह बाँह ॥१७४१

१ बख्तर। २ देखने। ३ छोड़। ४ अपशकुन। ५ रोकने के लिए। ६ वाक्य। ७ कानों। ८ वाणी। ९ अरुण=लाल। १० प्रभात। ११ वर्ण। १२ हाथी-सवार। १३ पर्वत। १४ सेना। १५ रथ।.. १६ लाल। १७ घोड़े पर चढ़ कर। १८ माला। १९ किरण। २० दीर्घ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दिपै मगरूर भरचौ ऊरदंभ, कहावत है ईह राखस[1] कुंभ।
जरी परघातन सोबृन जाल, लयौ बहु हीर-कनी बिच लाल ॥१७४२
पताक कै आक्रत सैन प्रवाद, ऊठचौ रस बीर हीयै अहलाद।
सभारत आवत बीर ससुंभ, निरंकुस राखस येह निकुंभ ॥१७४३
जगामग दीसत तेज जहूर[2], प्रकासत रथ्थ चढचौ बलपूर।
टंकारत चाप गहै कर तीर, भजौ सोई आवत आयुध भीर ॥१७४४
समाँनन[3] बीर मिलै समरथ्थ, बिघूनत पब्बय कौं भर बथ्थ।
नरांतक राखस येह निसंक, लहै भुज लाज सदाँ गढ लंक ॥१७४५
पंचानन आँनन के परचंड, मृगावन सूकर कूकर मुंड।
क्रमेलक कुंजर मुंड़ कितेक, हयानन मेरू ऊचारत हेक[4] ॥१७४६
दिखावत रूप ज्युंही जमदूत, भयाँनक संग भरे केऊ भूत।
भयंकर कल्प महेसुर भाँत, दसाँनन दीसत दीरघदाँत ॥१७४७
किरीट है सीस पै कुंडल काँन, अलंकृत अंगद[5] बाहु अजाँन।
प्रचंडत पिंड जहीं पग पाँन, सिलोचय दीरघ पिंड समाँन ॥१७४८
छता सतकाँबीय ऊपर छाय, दुती जिम पूरन चंद दिखाय।
चढचौ जय हेत असंभव छोह, अगंजत आवत रथ्थ अरोह ॥१७४९
सबै दिसपालन राँवन साल, बिलोकहु राघव बाहू बिसाल।
बिभीखन बात सुनी रघुबीर, टंकारन चाप लगे गहि तीर ॥१७५०
विभीखन राँम कही फिर बात, बली दसकंधर बीर-बिख्यात।
सुन्यौ हम बैरीय काँनन सोय, दसाँनन देख लयौ द्रग-दोय ॥१७५१
अचांनक सीय हरी जिह आय, बिगोवत ताहो कौं कंद बसाय।
सीया ऊर बाढत सोक संताप, करै हम हेत अनेक कलाप ॥१७५२
डरावत जाहीय पै दुख देत, खरौ हुय आय चढचौ रन खेत।
भई हम भाग सौं जाही तें भेंट, पचाएऊ दुःख ईता दिन पेट ॥१७५३
भुजाँतर[6] क्रुद्ध की आग भरीज[7], बसी जिम बादर अंतर बीज।
ईहै गवधार लख्यौ खल आज, गिरी अब चाहत ऊपर गाज[8] ॥१७५४

१ राक्षस। २ प्रकट। ३ आमने-सामने। ४ हींस, हिनहिनाहट ५ भुजबंध।
६ छाती। ७ भरी हुई है। ८ गर्जकर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहाँ अब जावहिगो दिस कौंन, सँपेखहु नैन सुन्यौ सोऊ स्रौंन[1] ।
ईतौ कहि श्री रघुबीर अभंग, निकारेऊ तिच्छन बाँन निखंग[2] ॥१७५५
सरासन साध चले गत[3] सीह[4], अगारीय जुथ्थप-जुथ्थ अबीह ।
पछारीय लच्छन राखत पीठ, धरै धनुँबाँन पराक्रम धीठ ॥१७५६
निहारेऊ राँम कौं रांवन नैन, सँबोधन[5] लागेऊ आपन सैन ।
बड़े लघु देख लये कपि बीर, सपेखेऊ लच्छन राँम सरीर ॥१७५७
नही कोऊ मो-सम दीसत नैन, सुग्रींव की मार बिड़ारहु[6] सैन ।
सबै भट राखहु लंक सँभार, दवारन[7] च्यार तथा दरवार ॥१७५८
सुने दसकंधर सासन[8] आँन, गई सब सैन पुरी कर गाँन ।
बढ्यौ रन-खेत की रांवन बाँट, उठ्यौ रथ-नेमीय कौ अरराट ॥१७५९
भये भयभीत सबै कपि भाल, कुप्यौ जिम कल्प अभिंतर-काल ।
जुरी कपि सैन समंदर जेम, तकी दसकंध तिमंगल[9] तेम ॥१७६०
धस्यौ तिह डोहन कौं जलधार, हमल्लन बाँन ऊझल नहार ।
चमाचम-चाप समा-सर चाल, झलक्कत सोवन बाजरू भाल ॥१७६१
दिखावत हाल भुजा दस-दूंन, कढ्यौ जम दच्छन पावक झूंन ।
झुक्यौ रन भींम भुजंगम झाट, डसें सर दिग्घ बनोकन डाट ॥१७६२
लखी निज सैन दुखी कपिनाथ, हले ईक श्रंग ऊठावत हाथ ।
किते तरू जामह कोट कँगूर, अराव के काँम के तेज जहूर ॥१७६३
पट्टकेऊ रांवन लायक पेख, रखी मुरजाद सौं राज नरेख ।
गिरी सिर आवत देखेऊ गैन, दसाँनन लागेऊ बाँनन दैन ॥१७६४
सुबर्न के काँम के नाँम के साथ, हले दसकंठ के संठ कै हाथ ।
कपिस्वर सम्मुह आय करूर, दिखायेऊ डेरन कौ दसतूर ॥१७६५
फिरायेऊ रांवन हाथ न फेर, हितू कपिराज बराबर हेर ।
सरासन बाँनन मार सबाँन, पट्टकेऊ भूंम गिरी पथराँन ॥१७६६
सुग्रींव कौं हाथ दिखाय कै सूर, गरज्जेऊ हीय में छाय गरूर ।
तहाँ ईक दिग्घ[10] गह्यौ कर तीर, भुजंगम-रूप[11] चिमंठीय भीर ॥१७६७

---

१ श्रवण । २ निषंग, तरकस । ३ गति, चाल । ४ सिंह । ५ संबोधन ।
६ भगा दो । ७ द्वारों पर । ८ आदेश । ९ मछली । १० दग्ध, विष में बुझा हुआ ।
११ सर्प ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सरासन सांध चलायेऊ सोय, जमाय कै दिष्ट सुग्रींव कौं जोय।
तज्यौ सर बज्र ज्युहीं ततकाल, कुमांर[1] की सक्ति कै रूप कराल ॥१७६८
कपीस कै लागेऊ घाव कठोर, लट्यौ[2] सोई पाव कौं गात लथोर।
मुरछ्छत होय गिरचो धर मांहि, तहां कपि सैन मची बहु त्राहि ॥१७६९
ऊमगेऊ राखस बीर अभीत, जिताहव[3] रांवन की लख जीत।
गबै नल जूथप देख गवाख, सुखेनहू रिछ्छभ लै तरू साख ॥१७७०
भिले कपि ज्योत मुखी रन मंड, पहारन हाथ गहै परचंड।
पट्टकेऊ रांवन पै कर पांन, ऊठाय कै धाय कै बाहु-प्रजांन ॥१७७१
कढे तब रांवन बीच कलाप, चलावन बांन लग्यौ दस चाप।
अगंजित कीन प्रहार अचूक, तरू गिर तोर करे सत टूक ॥१७७२
पराजित जूथ-पती भये पूर, गरज्जेऊ रांवन छाय गरूर।
लग्यौ दल कोस कौं मांरन लार, रुप्यौ जमदूत बराबर रार ॥१७७३
भये कपि रांवन सौं कर भेट, मनोरथ जीतन की ऊर मेट।
सबै मिल आयेऊ रांन सरंन्न, बनोरूह आंनन लाल बरंन्न ॥१७७४
बिलोक कै रांम उठे बर बीर, टंकारत चाप चढाय कै तीर।
लछ्छमन बोलेऊ पायन लाग, ऊपाय कै बीर हीयें अनुराग ॥१७७५
बस्यौ गृह आपन बात बिगोय, दसांनन देखेऊ नैनन दोय।
हीयें मह है हमरै कछु हांम[4], करचो सोऊ चाहत संगर[5] काम ॥१७७६
बिलोकहु हाथ अबै लघु-बीर[6], धरोज कौं राखहु धारहु धीर।
कही लघु-बंधव की सुन कांन, बिचार कै राघव बोलेऊ बांन ॥१७७७
इहै खल रांवन है बल ऊद्ध, जये दिस-पालन देवन जुद्ध।
अदेवहु नांगन सौं अनभीत[7], पराक्रम अद्भुत होत प्रतीत ॥१७७८
जई जुर जाजुलहू जमजाल, करचो जिह जेर भयंकर काल।
बकारहू आपन राख बचाय, घिराय कै संगर मारहु घाव ॥१७७९
अगारीय चाल अरो तुम आज, सभार कै सूरन-के-सिरताज।
करचो ईह सासन[8] रांम क्रपाल, हितू लघु-बंधव को लख हाल ॥१७८०

१ कार्तिकेय। २ गिरा। ३ युद्धविजेता। ४ साहस। ५ युद्ध। ६ लक्ष्मण। ७ निर्भय। ८ शासन=आज्ञा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चले रन लछ्छन चाप चढाय, बहे संग जूथप पाव बढ़ाय।
परे बहु घायल बंदर पेख, बढचौ ऊर अंतर क्रुद्ध बिसेख ॥१७८१
कलाप[1] सौं लै कर तिछ्छन[2]कंड[3], सँवारीय बाँह ऊभै गज-सुंड।
ईतै हनूँमाँनहू आय ऊमंग, अगारीय लछ्छन चाल अभंग ॥१७८२
मिले कढ रांवन सौं मुहमेज, तरोवर लै कर थंभेऊ तेज।
रुक्यौ सर मारत रांवन रार, झपेटन डारन झारन-झार ॥१७८३
मलंगत[4] कूद परे रथ माहि, तचक्कीय मंच मचक्कन ताहि।
ऊठाय कै दछ्छन बाह उदंच[5], नमाय कै दिष्टीय-मुष्टीय निंच ॥१७८४
करार के जाब कहे कर क्रुद्ध, अहो सुन लंकपती बल-ऊद्ध।
अबद्ध है देवन सौं असुरांन, जिहीं बिध जिक्षहु गंध्रब जाँन ॥१७८५
तथाँ नर बंदर कौ भय तोहि, मिली करसाख, लखौ ईह मोहि।
बस्यौ चिरकाल कौं पिंजर बास, सभार कै मुष्टि निकारहुँ साँस ॥१७८६
सुने हनुँमाँन के बायक आँन, दसाँनन आग हीयै दहकाँन।
कह्यौ मुसकाय अहो सुन कीस, बिलोकहु मेरेहु पाँनन बीस ॥१७८७
चलावहु तेरेई हाथ की चोट, खरौ हुय पोच[6] परौ मत खोट।
जबै हनुँमाँन दयौ सुन जाब, सुनौ ईक मेरीय बात सताब ॥१७८८
चलाय कै हाथ की येह चपेट, अखै-सुत लीनेऊ सास अमेट।
वहै कर मुष्टि प्रहारत आज, धरोज कौं राखहु लंकधिराज ॥१७८९
ईहै सुन रांवन लागीय आग, जरचौ ऊर सोक हीयै रिस जाग।
दई हनुँमाँन कै लात की चोट, चले पग लाग भुजांतर चोट ॥१७९०
अरूझ के छातीय प्राँन अपाँन, मुरछ्छत होय गये हनूँमान।
कछू सुसतायक[7] आय कै क्रुद्ध, ऊठे हनूँमाँन पराक्रम ऊद्ध ॥१७९१
दई ईक लात हीयै दसकंध, बिचालीय खाय गये न सबंध।
धुक्यौ दसकंधरहू सिर धूँन, मुरछ्छत होय लई मुख मूँन[8] ॥१७९२
भये तन ब्याकुल रांवन भूप, रिखीगँन देख सबै अभिरूप।
अनंदत देव भये सिध और, जहाँ हनुँमाँन कौ देख कै जोर ॥१७९३

---

१ तरकस। २ तीक्ष्ण। ३ बाण। ४ हनूमान। ५ ऊँची। ६ डरपोक। ७ स्वस्थ होकर। ८ मौन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कछू सुसतायकै रांवन क्रूर, जई हनुंमांन सौं बोल जरूर।
अहो सुत-केसरी मोर अमित्र[1], बड़ाई के लायक बीर विचत्र ॥१७९४
पराक्रम देख भये हम प्रस्न[2], सुधारहु स्वांमीय काम सहिस्नु[3]।
सुने हनुंमांनहू येह सवाल, कह्यौ सुन लंकपती ततकाल ॥१७९५
लगी हमरी तुमरे ऊर लात, करौ फिर बात रहे कुसलात।
पराक्रम है धिक मोर प्रहार, परे रन-खेत न पाव पसार ॥१७९६
अबै कछु कीजीयै मोहि पै वार, रूप्यौ पग मांड़ कै जाचत रार।
पराक्रम तोहि परै पहिचांन, जुहारहु फेर बलाबल-जांन ॥१७९७
बसावहु फेर पुरी-जम[4] बीच, मिलाय कै जीरन[5] गात कौं मीच[6]।
लख्यौ बलवांन पती-गढ़-लंक, खिसावहु नांहि भये हीय खंक[7] ॥१७९८

दोहा

सुने बचन हनुंमांन श्रुत, रांवन उठ्यौ रिसाय।
मुक्का दीय हनुंमांन कै, छाती में चक छाय ॥१७९९
मुक्का लग हनुंमांन हू, बिहवल भयौ बसेस।
तही लंकपत छोर तहां, आगै बढ्यौ असेस ॥१८००

छंद त्रोटक

बजरंग सरीर लख्यौ बिचल्यौ, चक छाय कै रांवन अग्र चल्यौ।
बिच नील मिले पति-जूथ बली, गिर श्रृंग गहै रन-ताल-गली ॥१८०१
पहिचांन कै नील कौं लंकपती, महांक्रुद्ध घिरयौ द्रढ़संध[8] मती।
कर में गहि तिछ्छन बांन कई, तन नील कै दिन्नीय मार तई ॥१८०२
नहीं नील लख्यौ सर लागन सौं, तन नांहि धर्यौ रन-त्याग न सौं।
कर सौं गिर-श्रृंग तज्यौ कररौ, अंतरीख[9] सौं रांवन पै ऊररौ ॥१८०३
गिर श्रृंग पै रांवन सात गने, चटकाएऊ तिछ्छन बांन चुने।
कट श्रृंग पर्यौ सोई ह्वै किरका, धरनी पुर घूज ऊठे धरका ॥१८०४

---

१ शत्रु। २ प्रसन्न। ३ सहिष्णु=सहनशील। ४ यमपुरी। ५ जीर्ण। ६ मृत्यु। ७ क्षीण। ८ दृढ़प्रतिज्ञ, दृढ़निश्चयी। ९ आकाश, ऊपर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ईतनै हनुंमाँनहु आय ईतें, लख राँवन नील ऊभे लरतै ।
हस बोलेऊ राँवन सौं हटकै, कर तेरहो नीलहु सौं कटकै ॥१८०५
हम धर्म बिचार कै छोर हलै, भरपूर लरौ तुम नील भलै ।
हनुंमाँन चले ईतनी कहिकै, बढ राँवन अग्र चल्यौ बहिकै ॥१८०६
ईतनै फिर जूथप नील अरचौ, सहकार[1] के पेढ़ लयै सँभरचौ ।
पटकै रथ राँवन पै पिल कै, महाँ जुद्ध करचौ समुहा मिलकै ॥१८०७
सर राँवनहू बरसे सर सै, कररे गहि चाप घने कर सै ।
लरनं नहि नील कौ बार लग्यौ, जुभ्रूलाय कै हीय में क्रुद्ध जग्यौ ॥१८०८
धरनी तज बैठेऊ कूद धुजा, पट फार करे पुरजा-पुरजा ।
कर सुक्षम संचर[2] जोग-कला, ईत सौं ऊत पायन सौं ऊछला ॥१८०९
बदलै पग चाप कै आगै बढै, कबहूक किरीट की जागै कढै ।
रथ थूँनी धर्धून मचाँन रूपै, कबहू चढ गुंम्मज काल कुपै ॥१८१०
पग जेम चलाकीय पाँनन[3] की, वहकी मति देख दसाँनन की ।
अवसाँन खता हुय नील अगा, जीव राँवन अप्रीय क्रुद्ध जगा ॥१८११
अगनास्त्र[4] कौं याद करचौ ऊर में, घठ बीत गड़चौ जिमही धर में ।
सर चाप संजोजत कीन सही, कछु राँवन नील सौं बात कही ॥१८१२
कपि जालक[5] तेरी लखी करनी, हित सौं मति सौं चित कौं हरनी ।
डहकाय न राँवन चित्य डरै, किह कारन मायक छिद्र करै ॥१८१३
अगनास्त्र लयौ कहि कै ईतनी, कढने कँह ज्वाल लगी कितनी ।
करारौ गहि बाँन प्रहार करचौ, गत बेग भयौ कपि नील गिरचौ ॥१८१४
पितु अग्नि लख्यौ सुत हेत पखौ, रूख सौं तन प्राँन बहाल रखौ ।
मुरछा-गत होय बचे मृतु सौं, चल राँवन छोर बढचौ चित सौं ॥१८१५
मग ऊपर लछ्छन बीर मिले, सर हाथ सरासन लै समले ।
पथ राँवन रोक कही प्रबृती[6], पग थंभहु खेत में लंकपती ॥१८१६
कहा बवर सौं तुम रार करौ, मम हाथ लखौ रन-खेत मरौ ।
कटु बायक लछ्छन एहु कहे, सुन राँवनहू श्रुत नाँहि सहे ॥१८१७

१ आम्र । २ शरीर । ३ पाणि, हाथों । ४ आग्नेयास्त्र । ५ इन्द्रजाल करने वाला ।
६ वार्ता ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुन लछ्छन बोलेऊ लंकपती, मृतु के बस तूं बिपरीत मती।
मम भाग सौं आज भयौ मिलनौ, द्रढ बाँनन प्राँन करू बलनौ ॥१८१८
रन में जुग पायन रोप रह्यौ, गुन ताँन कै पाँनक बाँन गह्यौ।
मत त्यागहु छत्रीय-धर्म मती, जब जाँनहु लछ्छन बीर-जती ॥१८१९
सुन लछ्छन राँवन बात सबै, जुत धीरज दीन जबाब जबै।
बकवाद सौं गाल बजाय वृथाँ, जलपै कहा बीरत्त[1] बात जथाँ ॥१८२०
बल बीस-भुजा बतलावहुगे, परतीत पराक्रम पावहिगे।
द्रग सौं हम आयेऊ देखन कौं, बल बाँहन बीस-बिसेखन कौं ॥१८२१
पति-लंक दिखावहु बीर-पनौ, घट बीच भरयौ किह काँम घनौ।
सुनकै ईह राँवन बोल समा, कर तिछ्छन बाँनन लेय क्रमा ॥१८२२
द्रढ़ लछ्छन गात पै सात वये, जिह आवत लछ्छन बीर जये।
सर[2] सौं सर[3] काट कै बीच सबै, तल-भूँम गिरायेऊ बीर तबै ॥१८२३
करनी लख लछ्छन बीर-कला, बढ़ लंकपती ऊर क्रुद्ध बला।
सर तिछ्छन लछ्छन दे समल्यौ, मनु राँवन साँवन मेघ मिल्यौ ॥१८२४
बरसाँवन बाँन लग्यौ बरसा, पुर लछ्छन येकहु ना परसा[4]।
अध बीच कटे सब आवत ही, चिमठी केऊ चाप चढावत ही ॥१८२५
लख हाथ चलाकीय लछ्छन की, गत बुद्ध भई रन गछ्छन[5] की।
मन राँवन-मारन कीन मतौ, बढ लछ्छन सिंघ मनौ बिरतौ ॥१८२६
कर बाँन गहे जनु आग-कला, चढ पाँख[6] चला जिम नाग चला।
सोई राँवन काट गिराय सबै, तक लछ्छन दिन्नेऊ बाँन तबै ॥१८२७
ईक भाल में लाग कै बाँन अटयौ, लगतै सम लछ्छन बीर लटयौ।
मुरछा-गत होय छिनेक महीं, ऊठ पूँछ मरोरत जेम अही[7] ॥१८२८
फिर लछ्छन राँवन ओर फिरा, धनुँबाँन सौं तोरकै डार धरा।
धनु तूटत राँवन क्रुद्ध धिर्‌यौ, बहु लछ्छन पै सर लै बरस्यौ ॥१८२९
सर लागत लछ्छनहू समले, द्रढ़ राँवन कौ बपु बाँन वले।
रत छूट बह्यौ अत राँवन कै, बपु दीख परयो बिड़ राँवन कै ॥१८३०

---

१ वीरत्व, वीरता। २ बाण। ३ शिर। ४ स्पर्श किया। ५ गमन। ६ पक्ष, पंख। ७ सर्प।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुरछा हुय जागेऊ खेत महीं, गल गज्ज कै रावन सक्ति गही ।
बिय के उरसौं द्रढसंग्र बनो, अगनो सम तिछ्छन जाहि अनी ॥१८३१
मनि मांनक हीर जुं हार मढी, चमकै बिजुरी सम हाथ चढी ।
दसकंधर लछ्छन ताक दई, भुज अंतर[1] में तिह भेट भई ॥१८३२
लगतै हीय लछ्छन मोह लयौ, भुय पै गिर बीर अचेत भयौ ।
मुरछागत लछ्छन देख मही, तज कै रथ रांवन आय तही ॥१८३३
ऊमह्यौ ऊर गात ऊठांवन कौं, जिह लेय पुरी कढ जांवन कौं ।
सोई रांवन जोर सरासर में, किबलास[2] ऊठाय लयौ कर में ॥१८३४
जिह लछ्छन घलेऊ हाथ जहाँ, तरके धरके कपि देख तहाँ ।
पर लोथ ऊठी नही पांनन सौं, ऊचरयौ प्रबृती दस-आंनन सौं ॥१८३५
पहिचांन बिना कीय बैर-पनो, हट ताही तै लाग कै तोहि हनौ ।
लघु भ्रात हो रांम के लछ्छनहू, बड़ भ्रात है तोर बिचछ्छनहू ॥१८३६
जिनकौं अब देखन जावत हैं, ईह कारन नांहि ऊठावत हैं ।
लख कै हनूंमांनहु लछ्छन कौं, रपट्यौ गत चंचल रछ्छन[3] कौं ॥१८३७
हीय रांवन कै ईक मुष्टि हनी, धर बक्षन जाय टिकी ढकनी ।
मुरछागल होय लयौ मगकौं, पनुंहोन बिसार ऊभै पगकौं ॥१८३८
रथ पै लथरावत जाय रूप्यौ, करनै रन कारन फेर कुप्यौ ।
लीय मारुति[4] पीठ पै लछ्छन हू, अवलोक कै रांवन अछ्छनहू[5] ॥१८३९
लख एह चरित्र कौं चित्त लट्यौ, हनुंमांन सौं संगर-काज हट्यौ ।
हनुंमान तौ लछ्छन लेय हले, महाराज रघूपत जाय मिले ॥१८४०
लख रांम बिहव्वल लछ्छन कौं, बपु कौन बहाल[6] बिचछ्छन कौं ।
कपि फौज बिसास कै फेर कुपे, रघुनायक रांवन जुद्ध रूपे ॥१८४१
रथ में असवारीय रांवन की, पनही[7] बिन राघव-पावन की ।
रघुबीर कौं पैदल देख रसा, पग मारुति हाथ ऊभै परसा ॥१८४२
मोहि पीठ पै होय सवार मिलौ, दसकंधर के दसकंध दलौ ।
ईह मारुति कै सुन कै अरजी, गढ लंकपती जय के गरजी ॥१८४३

---

१ छाती । २ कैलाश । ३ रक्षण । ४ हनूमान् । ५ अक्षि, आंख । ६ स्वस्थ ।
७ उपानह = जूते ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चढ़ मारूति पीठ पै रांम चले, मुहमेज पतो-गढ़लक मिले।
जुत मारूतो राघव जुद्ध जुरे, अरूनानुज[1] मांनहुं बिस्नु अरे ॥१८४४
द्रढ़ मारूती राघव देख दुनै[2], धरक्यौ दसकंधर सीस धुनै।
मुरक्यौ[3] दसकंधहु जुद्ध मतै, जुत राघव हू हनुंमांन जितै ॥१८४५
मिल रांम जबै रन खेत मही, कररी दसकंधर बात कही।
मम भ्रात लछंमन मारन कौं, परठीकर सक्ति प्रहारन कौं ॥१८४६
कररौ हम चांप गह्यौ कर में, अब बांन प्रहारत हूं ऊर में।
पग मांडहु संमुह लंकपती, खर-दूखन ज्यूं रन खेत खिती ॥१८४७
लघु भ्रात कौ बैर लहूं लरकै, कछु बांनन की करनी करकै।
सुन रांवन बात हीयैं सरस्यौ, बहु बांनन राघव पै बरस्यौ ॥ १८४८
सर रांवन लागेऊ रांम सबै, ज्वाल सक्ति भुजंगम रूप जबै।
घट पीर भई जिम रोख[4] घुटयौ, दसकंधर बांनन देय दट्यौ ॥१८४९
हनुंमांन हकार कै राम हले मुहमेज पतो गढ़-लक मिले।
सर तिछ्छन[5] चाप चढाय सबै, तक रांवन मारेऊ रांम तबै ॥१८५०
परगे धर स्यदन तूट पई, मिलगौ सिर छत्रहु धूर मई।
धुज डंड धुजाधर जाय धुके, मर स्वारथी घोरन प्रांन मुके ॥१८५१
ईक बांन दयौ ऊर में अटक्यौ, झल बीजल ज्यूं खटक्यौ झटक्यौ।
सर चाप गिरे कर बीस सबै, तन सौं मन होय अचेत तबै ॥१८५२
रघुनाथ दसा लख रांवन की, घट पीड़त ह्वं घबरांवन की।
कर बांन लयौ अर्ध चंद कला, बिजुली दुति आग झला बिपुल। ॥१८५३
कर घाव प्रहार किरीट[6] कटे, जगमग्ग जंवांहर कांम जटे[7]।
लुरक्यौ दसकंध थक्यौ लरतौ, फंनि[8] ज्यूं मनि हीन रूक्यौ फिरतौ ॥१८५४

दोहा

रांवन रन करतौ रूक्यौ, बोले श्री रघुवीर।
भये श्रमत जुध करत भुज, पुन सर बाढी पीर ॥१८५५
अब लंका जांनौ ऊचत, रन तज कै मन रोख।
छत्र मुकट बिन छत्रधर, देखत लागै बोख ॥१८५६

---

१ गरुड। २ दोनों। ३ मुड़ा। ४ रोष=क्रोध। ५ तीक्ष्ण। ६ मुकुट।
७ जटित। ८ फण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

साझ बदल रन के सबं, स्वारथि हयन सहेत।
रथ चढ आवहु रार कौं, खल तोहि मारहुँ खेत ॥१८५७
लज्जत ह्वै लंका गयौ, राँवन हू तज रार।
आय सबर रघुपत ईतं, लछमन कौं लहि लार[1] ॥१८५८
भाल साल कपि भाल कें, सबै निकारे सोध।
सैना कीय हरखत सकल, बहुबिध दैकै बोध ॥१८५९

छंद भुजंगी प्रयात

पहूच्यौ ऊतं लंक में लंकपत्ती, छिकी राँम के बाँन सौं जाहि छत्ती[2]।
अहंकार खीनौ[3] भयौ मोह[4] आई, सबं इंद्रीयाँ एक साथै सिराई ॥१८६०
करी जाँनकं केहरी कौं कुपायौ, मनौ ब्याल[5] कौं बैनतेई[6] मिलायौ।
दसा लंक-राजाँन ऐसं दिखाई, बिथा राँम पै जाय जैसैं बसाई ॥१८६१
लरे तें बचे जे कोऊ बीच लंका, बुलाये सबै निश्चरा बीर-बंका।
हितू जाँनकं मर्म खोल्यौ हीया कौ, सघ्यौ आय बृताँत जैसैं सीया कौ ॥१८६२
दयौ बेदवती जबै श्राप दुष्टा, रही ज्याँन की होय कै आप रूष्टा।
नरा बाँनरा' भोत ब्रह्माँ बखाँनी, बृथाँ होय नाही सोई सत्य बानी ॥१८६३
कही भूप ईक्षाक बंसी कथा कौं, जहीं नाँम अनरंन्य जाँनौ जथा कौं।
छिती के पराजीत तैं कोन छत्री, ईकाकी करी मोय ही सौं अमित्री ॥१८६४
अरे राँवना तूँ बन्यौ आततांई, खिती जात खत्रीन[7] मारी खपाई।
बिधूँसै[8] तुमं खेत में मोर बंसी, प्रपुत्रं सपुत्रं कोऊ ह्वै प्रसंसी ॥१८६५
जिही बंस में भूप दसरथ जाये, ऊभे राँम औ लछछनं ऊठ आये।
बिदेही वँहीं औतरी बेदवत्ती[9], करचौ हनं ताकौ कमाई कुमत्ती ॥१८६६
करी है दई गत्त[10] औरं करंगे, लखैंगे तऊ खेत बीचं लरंगे।
बचंगे अबै कुंभकर्नं बचाए, जगावौ अहो भ्रात कौं मात-जाये ॥१८६७
जिहीं नैंन हैं रथ्थ के चक्र ज्याँही, महाँ ज्वाल माला धिकै जास माँही।
अठारै अरु तीन सै हाथ ऊँचा, लखावै गिरी-श्रंग[11] ज्यौं लाय लूँवा ॥१८६८
जनावं सोई तीन सै हाथ जाड़ौ, अगारोय छारीस[12] बे नाम आड़ौ।
जिही खेत में देव कं कीस जाती, चढैंगे कहो कौंन से आय छाती ॥१८६९

१ पीछे। २ छाती। ३ क्षीण। ४ मूर्छा। ५ सर्प। ६ गरुड़। ७ क्षत्रियों। ८ विध्वंस करे। ९ वेदवती। १० गीत। ११ पर्वत शिखिर। १२ छयालीस।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कही लंक-कै-धीस ऐसो कहाँनी, महोद्राद जूपाख हू बात मांनी।
जगांने चले कुंभकर्नं जबै हो, सभै निश्चरा साथ घेरे सबै ही ॥१८७०
चछोहे घने बीर भागे चलाको, जुरे चाहि कै जायकै पौर जाको।
बन्यौ ऊद्ध धांमं चहूँ कोस व्यासा[1], तरे भीतरै सौं गुफा ज्यां तरासा ॥१८७१
बढे अगृ कौं बीरहू द्वार बीचैं, प्रस्वासा प्रबाहं परं पाव पीचैं[2]।
बड़े जत्न सौं जाय पूगे बिचाला, चहूँ ओर सौं घेर कै कीन चाला ॥१८७२
पुकारं करै कांन कै लाग खासै, सुगंधी सुंघोवै कोऊ नासका सै।
टटोरै कोऊ पाँन अंध्री[3] टरावै, खिसैनाँ घने बीर आगो खिरावै[4] ॥१८७३
भड़े मूसला मारहू मुग्दरा को, सिला श्रंग डारं ऊपारं सभाको।
किते मत्त हाथी अरू केलकिर्ना[5], चढाये घने चाँप कै कर्न चर्ना ॥१८७४
बजाये किते दुंदभी ढोल बाजा, अयासा[6] रसां[7] छाई अवाजा।
तऊँ नाँहि दूरी भई तास तंद्रा[8], करै सास निर्घोकहू नाँस किद्रा ॥१८७५
जबै जाय कै ताहि नारी जुहारी, किती कुंभकर्नं बरी सो कुनारी।
सुरी किन्नरी गंधृबी आसुरीहू, नगी पंन्नगी दिव्यरूपा नरीहू ॥१८७६
जही जेष्ट कौं कष्ट कै बीच ज्यांन्यौ, पती कौं जगावौं मती सौं प्रमान्यौं।
सबै दिव्य आभर्न सोगंध[9] सींचो, सभी झीन पोसाक बालै सधींची[10] ॥१८७७
बिपंची[11] मृदंगा लई हाथ बंसी, प्रचारयो जहाँ राग नाना प्रसंसी।
गिरा कोकला गायनी गीत गाये, जुरे भाँमनी कुंभकर्नं जगाये ॥१८७८
बिभुक्षा लगी आयकै ताहि बेरी, घसी मिष्ट चीजं मगाँई घनेरी।
सफाला[12] सुसा बर्करा क्रस्न-श्रंगा, करे भुंज आहार केते कुरंगा ॥१८७९
करचौ पाँन बारी सहंसं करीरा[13], सबेसा कछू ताहि त्यागी सरीरा।
मिटी नाँहि कोसीदता[14] नैन माँही, तऊ बात पूछी बिचारे तहाँई ॥१८८०
जरूरी कहौ कौन काजै जगायो, अजौ नीद सौं मैं न पूरो अघायो।
सुनी कुंभकर्नं कही बात स्यांनी, महोद्रं कही और जू पाँखमानी ॥१८८१
महोद्रं कही बात जू पाख मंत्री, सदाँ लंक-को-धीस राजा सुतंत्री।
लई बाँदरा घेर कै जास लंका, बली राँम औ लछ्छनं बीर बंका ॥१८८२

१ व्यास। २ पीछे। ३ पैर। ४ लज्जित होते हैं। ५ गधा। ६ आकाश। ७ पृथ्वी। ८ निद्रा। ९ इत्र। १० सखियां। ११ वीणा। १२ मेंढ़ा। १३ कलश। १४ आलस्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अबीतौ[1] मच्यौ आय कै बिघ्न ऐसै, करै आपसौं बीनती येह कैसै।
परे जूझकै खेत में सैन-पत्ती, कटी राखसी सैनहू साथ कित्ती ॥१८८३
बच्यौ जेष्ट-भ्राता[2] गनौ सो बधाई, कहैगे मिले पै करी सो कमाई।
सुनी कुंभकर्नं ईती हेत सेती, जिहीं देर कीनी न उन्मेख[3] जेती ॥१८८४
भलै आय भेटयौ जबै जेष्ट-भ्राता, सबै रीत भाखी ऊभै ओर साता।
लघू-भ्रात ही सौं कही लंक-राई, लगूला परी आय लंका लराई ॥१८८५
कहो कुंभकर्नं कँही कारना सौं, धरूँ ध्याँन मैंहूँ जँही धारना सौं।
सुनी बंधु की बात कौं बीस-आँनी, कही आद सौं अंत बीती कहाँनो ॥१८८६
जती दासरथ्थी पती-औध-जाये, ऊभै भ्रात नारी बनोवास आये।
सोई स्याँमलं गौर सोहै सरोरा, बड़ौ राँम नाँमै लघु लछ्छ बीरा ॥१८८७
सुपन्खा सुसा[4] काटकै नाक आँना, थिती[5] लोप कै आद बिद्वेख ठाँना।
खरद्दूखनं जाँन कै ताहि खूँनी, सीया बैर में जाय माँगी सलूँनी[6] ॥१८८८
दई नाँहि जापै बढ्यौ फेर द्वेसा, करयौ चाहिकै जाहि ही सौं कलेसा।
जुतै बाँहनी मार डारे जँही सौं, सुपन्खा कही आयकै मोहि ही सौं ॥ १८८९
तिहीं बैर में मैं हरी नार ताही, भ्रमंते रहे अट्टवी[7] जुग्म-भाई।
भये मित्र सुग्रींव के भेद भावै, दल्यौ जाय बाली बली बैर दावै ॥१८९०
कपीसा भयो राँम कौ स्याहिकारी[8], जँहो दूत आयौ तही लंक जारी।
द्रुतं जाय ताही सबै भेद दीनौ, कपी सैन कौं जोर कै गौंन कोनौ ॥१८९१
ऊलंघे जलाधीस कौं वार आई, लगी लंक में ताहि सेती लराई।
घने निश्चरा मार कै नग्र[9] घेरा, समदं करै नित्त संध्या-सबेरा ॥१८९२
मिल्यौ जाय बम्भीखनं सत्रु माँही, सोई ग्रेह कौ भेद देवै सदाही।
तनूं मोहि भ्राता भरोसौ तिहारौ, बनै सिद्ध काजं त्रिवेकं बिचारौ ॥१८९३
सुनी जेष्ट-भ्राता कही बात सोई, सलाहा हृदै में बिचारी सकोई।
जथा कुंभकर्नं कही हाथ जोरै, अगै बात मैंहूँ सुनी एक औरै ॥१८९४
पती औधके दासरथ्थी पुनीता, परंमातमा पुज्ज[10] ह्वै है प्रबीता।
सोई आयकं औतरे राँम साचै, कहे नारदं बाक्य ना होय काचै[11] ॥१८९५

---

१ बिना सोचा हुआ। २ रावण। ३ क्षण। ४ बहिन। ५ मर्यादा। ६ सुंदरी सीता। ७ बन। ८ सहायक। ९ नगर। १० पूज्य। ११ मिथ्या।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तजौ बैर तातै करौ मित्रताई, भयौ मित्र बभीखनं आप भाई।
सीया कै दयै होय लंका सुधारौ, बिवेकं जुतै बात मेरी बिचारौ ॥१८९६
सूनी रांँवनं कुंभकर्नं सलाहा, हीयौ क्रुद्ध भीनौं कह्यौ बंधु हा हा।
सिखावै कहा सीख कौं होय स्यांँना, अहूँ रांँवनं मत्त हथ्थी अमांँना ॥१८९७
किलावै चढ़ायौ नही कुंजरौही, लग्यौ बांँकुरी[1] आंँकुरी नांँहि लोही।
निसा दीह डोल्यौ फिरचौ मैं निसंका. सहै आज कैसं गहै हीय संका ॥१८९८
कहे बोल ऐसै खिज्यौ साप काला, कहे बोल कै बोल केते कराला।
जबै[2] कुंभकर्नं लखी भूप जी को, निदांनं सुनाई सबै बात नीको ॥१८९९
जितै कुंभकर्नं लघु भ्रात जीवं, पती लंक के सत्रु को श्रोन पीवं।
गहै ईरखा तोरसौं रीस गांसै बचै नांँहि जो रुद्र कै जाय बांँसै ॥१९००
करी सत्रुता रांँम नैं स्यांँम काया, जिही तोहि कौं काल सूता जगाया।
कपीसा भयौ ताहि कौ स्याहिकारी, भरी बंदरी सैंन की भीर-भारी ॥१९०१
सुतै जायकं मारहूँ खेत सारा, पती-लंक के देख मेरा पवारा।
मरे भीच केते परे खेत मांँही, तिही नार रोवं जहांँई तहांँ ही ॥१९०२
अगोचान[3] सैं पौंच[4] हू आय अंखी, प्रस्वासा ऊड़ाऊ अरी प्रांँन पंखी।
जम्यौ कुंभकर्नं खवासोस जौलौ, तवाई कहा लंक के धीस तौलौ ॥१९०३
मिलै रांँम पै मार हूँ हाथ मुक्का, बिछोरूं हीयं कालजा और बुक्का।
सगो भ्रात है लछ्छनौ ताहि संगी, चपेटांँन की मार हूँ मार चंगी ॥१९०४
कपीसा[5] जोई पर्बताकार काया, ईती बंदरी सैंन लै स्याहि आया।
भखूँ सो लखूँ खेत मैं आय भेटै, प्रनासूँ बिभुक्षा रही लाग पेटै ॥१९०५
हनूंमांँन जारी पुरी लंक हेरो. करेजं अगीठी धुकै आग केरी।
सिरांऊं तही मारकै मोर सीना, हरांँमी भगै नांँहि जो पूंछ हीना ॥१९०६
करै स्याहि जो इंद्रहू रुद्र कोऊ, पती-लंक तेरे अरी सु लपोऊं।
निसा सेझ पै नींद लैहो नचीता[6], सबै सोक जावै जहांँ होय सीता ॥१९०७
कही बात ऐसी जबै कुंभकर्नं हुयौ रांँवनं हीय को सोक हर्नं।
उठ्यौ आसनं छोर सांँमीप आई, मनी माल मुक्तालताहू मगांँई ॥१९०८
गरै डार कै औ लगाई सुगंधा, बहूटा[7] बिहू[8] हाथ सो हाथ बंधा।
जबै कुंभकर्नं कही हाथ जोरै, महाराज लागी हीयै धंख मोरै ॥१९०९

१ अंकुश। २ जब तक। ३ अंगोछा। ४ पोंछकर। ५ सुग्रीव। ६ निश्चित।
७ भुजबंद। ८ दोनों।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मिलूं रांम सूं जाय कै खेत माहीं, जुरे जुत्थपं जुत्थ ठाढे जहाँ हीं।
सही जाय ना गर्जना कांन सेती, करी लंक पीड़ा हनी सैंन केती ॥१६१०
सबै बैर लैहूं जबै नींद सोऊँ, खरारी[1] जुतैं बंदरी सैन खोऊँ।
बिकासी बड़े-भ्रात के पाव बंदे, ऊठचौ लंक के नाँथ हू कौं अनंदे ॥१६११
लयौ जेष्ठ-भ्राता जहाँ अंक लाई. मगाये घने मिष्ट मेवा मिठाई।
सधाये केऊ कुंभ[2] सोबर्न सुंडा[3], करचौ चुर्बनं मद्य-संधाँन[4] कुंडा ॥१६१२
खुध्या स्वादनं खाय मेटे खुराकी, जनावें कहा लेख संख्या न जाकी।
पती लंग हू अख सख प्रबीना, दकूलं जरी रेसमी जोय दीना ॥१६१३
सुनेरी सनाहं जँही अंग साज्यौ, बिचै भूँम मानो सुमेरू बिराज्यौ।
ऊठचौ जुद्ध कौं क्रुद्ध ह्वै बीर ऐसै, जमी नापनै बाँवना बिप्र जैसै ॥१६१४
सिलासार[5] कौ हाथ लीनौ त्रसूला, बढचौ उद्ध बिद्वैस मानौ बघूला।
चढचौ रथ्थ पै जाय डाँकी चलाकी, कुसाग्रीव-बुद्धी समर्दं कला को ॥१६१५
चल्यौ जुद्ध की नोम दै चौहू चक्के, मही धुज्जकै सेस माथा मचक्कै।
सभी सेन सथ्थी पयादोरु सादी, नियंता रथी-रथ्थ हथ्थी-निखादी ॥१६१६
बकारे सबै धीर पै बीर बुल्यौ, तमंक्यौ भुजा तोक कै सूल तुल्यौ।
चमंक्यौ, सोई ऊद्ध आभा छटा ज्यूं, घनाकार कारौ लखावौ घटा ज्यूं ॥१६ ७
चरा-कांतरा[6] है निसाचार चारौ, ईहाँ आयकै बीर मंड्यौ अखारौ।
घनुर्बान धारैं जती वेखधारी, खरा[7] मारकै नाँम पायौ खरारी ॥१६१८
लघू भ्रात है लछ्छनं जाहि लारी, बिरूपा[8] करी सुप्नखा हू बिचारी।
हीया में बिचारचौ नही होंनहारा, करग्गं चल्यौ पूंछ कौं नाग कारा ॥१६१९
सबै जायकै देखहूं साथ सूरौ, भए एकठे लंक भाखै भरूरौ।
सुनो कुंभकर्नं कही बात सोऊ, ईकाकी चले बीर ह्वैकै अगोऊ ॥१६२०
गरै नाद कीनो मनौ मेघ गाजै, ईभारी[9] करी[10] देख जैसे अग्राजै।
बढचौ मग्ग कौं सूल लीनं बिसाला, मनौ ध्रूमकेतू सिखा ज्वालमाला ॥१६२१
बिचाले त्रपंखा जहीं गिद्ध बैठौ, अगारी गिरायौ तँही माँस ऐंठौ।
परी ऊल्लका खुल्लका नाद पूरचौ. घसी धूंसरी नैन आभा घरूरचौ ॥१६२२
मुरचौ ना तऊ जुद्ध ही जाय मंड्यौ, घटा मेघ की बाँन-धारा घुमंड्यौ।
लख्यौ कुंभकर्नं कपी सैन लट्टी, सबै अंगदं नील पासे समट्टी[11] ॥१६२३

---

१ राम। २ घड़े। ३ शराब। ४ मांस अचार आदि। ५ लोहे। ६ बानर। ७ खर। ८ कुरूपा। ९ सिंह। १० हाथी। ११ सिमिट कर इकट्ठी हो गई।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कुमंदा गवाक्षा चले सर्न[1] केते, लुके ग्राय कै सांकरै[2] सास लेते।
कहे ग्रंगदं बोल जासौं करारा, बड़े जात के बंदरा गोत वारा ॥१६२४
भजे जात हौ कौन के भौन[3] भाई, लगें लाज नाँ बंस गारी लगाई।
बड़े डील के राखसी जात वारे, बली ग्रापने ज्यू न एकौ ब्रिचारे ॥१६२५
धरौ धारना धेख धारै धरोजा, ग्ररौ सम्मुहा खेत में बाढ़ ग्रोजा।
बिचारी सबै ग्रंगदं सूर बाँनी, मड़े खेत में पाव छुंडी मलाँनी ॥१६२६
मिले मत्त हथ्थी ज्युही कीस मेला, पिले राखसी सैन पै रेल-पेला।
गिरी श्रंग लै लै दई मार गाढो, बड़े कंटकी बृछ्छ की तार वाढी ॥१६२७
घने मूसला मार सेना संघारी, भयौ राखसी साथ में सोर भारी।
रह्यौ कुंभकर्नं जहाँ पाव रोपै, जटाधार[4] ज्यूँ कल्प के काल जोपै ॥१६२८
गहै बंदरी सेन कौं लेत ग्रासा, तिही राखसी बीर देखै तमासा।
दही ज्यूँ दहैड़ी मथै काठ डंड़ा, मिलै बंदरी सैन मंथान मंडा ॥१६२६
घने घाव दै दै कपी सैन घेरी, लगे लौटनैं भूँम लै लै लथेरी।
लगै ग्रट्टवी[5] ग्राग ज्यूँ लार लारा, करै छार जैसे तरू की कतारा ॥१६३०
रूपी सैन सुग्रीव की एह रीती, परी तूट कै प्राँन छूटी प्रतीती।
भिदे श्रोन में गात की सुद्ध भूले, परे ढाँक नीचै मनौ फूल-फूले ॥१६३१
जरे के मरे के गिरे के जमी पै, भिरे के डरे भीत ग्राखै भूमी पै।
गुड़ी[6] ज्यों ऊड़े केक ग्राकास गाँमी, परे कूद सामुद्र में मीच पाँमी ॥१६३२
किते किंदरा में धसे रीछ कारे, बढे बंदरा लार लारै बिचारे।
घने कँद कै लाँघ कै सैल घाटा, परे ग्रट्टवी बट्ट लेते पछाटा ॥१६३३
घने खेत की सेत कै जाय घाटै, बही सैन सुग्रींव की ग्राठ-बाटै।
सबै नीत की रीत में सावधाँना, जवै बाल-के-पूत[7] सिद्धांत जाँना ॥१६३४
कही दौर कै बेर बेरी कहाँनी, पिछाँनौ नही राँम सारंग-पाँनी[8]।
बली-बाल मारचौ जही एक बाँना, जित्यौ दुंदभी दैत बाहू ग्रजाँनौं[9] ॥१६३५
थिती कुंभकर्नं लख्यौ हैथली पै, बचैगौ कहाँ राँम जैसे बली पै।
ईतै पै कोऊ भाग जैहो ग्रगारी, पती-कीस के दूत ऐहै पछारो ॥ १६३६
द्रुतं देख कै प्राँन कौ दंड देहै, जनाई कहै पै कोऊ भाग जैहै।
बनोका सुनी ग्रंगदं येह बाँनी, गये ग्रग्ग कौं नाँहि छडी गिलाँनो ॥१६३७

---

१ शरण। २ पास। ३ भवन=घर। ४ शिवजी। बन। ६ पतंग।
७ ग्रंगद। ८ धनुष धारण करने वाले। ६ ग्राजानु-बाहू=घोंढ़।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऊतारू भये खेत में आवने कौं, लगे श्रृंग रूँखावली लावने कौं।
गिराँने लगे मूसला मार गोला, गिरा ली गरामार जैसे गिलोला ॥१६३८
भिरयौ क्रुद्ध सौं जुद्ध लंकेस-भ्राता, प्रलैकाल माहेस[1] जैसे पिराता।
दलै बंदरी सैन कौं पाव दाबै, चढै हाथ में मीज कै दंत चाबै ॥१६३९
पछारै केऊ भूँम पै सूल पोवै, डमाड़ोल पाथोद[2] पाँनी डबोवै।
लग्यौ एम सुग्रींव की सैन लारा, क्रिधू वैनतेई लखे साप कारा ॥१६४०
जिही जुथ्थपं द्वंद देख्यौ ज्वला सौ, कढ्यौ करयौ बीजुरी की कला सौ।
चल्यौ बायु के वेग ज्यूँ अभ्रचाला[3], बड़े सैल कौ श्रृंग लीनै बिसाला ॥१६४१
हनो कूंभकर्नं जही श्रृंग ही पै, जहाँ जोय ठाढौ भयौ जंग ही पै।
भयौ टूक टूका गिरे सैल भाटा, परयौ रथ्थ-हथ्थीन पै भूँम पाटा ॥१६४२
घने घूंम घोरा मरे घेर घेरी, तुरंगी परे तूट लै लै तरेरी।
लगे जुथ्थप द्वंद की लार लारं, कपीसा लुरे[4] तार बंधी कतारं ॥१६४३
सिला बृछ्छ की मार दीनी सबै ही, जुरे क्रुद्ध सौं जुद्ध मंड्यौ जबैं ही।
भिरो द्वंद जैसे हनूंमान भारी, गिरी मार दीनी गिरै ज्यौं गिरारी ॥१६४४
चढ्यौ कूद आकास लै लै छलंगा, मडी बृछ्छ की मार दैदं मलंगा।
करग्गं गह्यौ सूल हू कुंभकरनै गिरी[5] बृछ्छ तोरे लगे भूँम गिरनै ॥१६४५
पयादा परे सैन के सथ्थ पाँही, मरे बीर केते घरी जाहि माँही।
जहाँ कुभकर्नं खिखी क्रुद्ध ज्वाला, बढ्यौ जुद्ध कौं सूल लीनै बिसाला ॥१६४६
दलै बंदरी सैन की लार दौरै, सिखा आग जैसे पतंगा सिकोरै।
प्रलेकाल के काल ज्यूं बीर पिल्यौ, हिलोरा मनौ सात सामुद्र हल्यौ ॥१६४७
गिरी श्रृंग कौं झेल कै ताहि गेले, लग्यौ चोट कौं मारने वार लै लै।
लट्यौ कुंभकर्नं घने घाव लागे, मड़े पाव ठाढौ रह्यौ जुद्ध मागे ॥१६४८
कला चंचला की ज्युही सूल कारौ, भ्रमायौ जही ऊद्ध[6] आकास भारौ।
हनूंमाँन छत्ती दमौ जोर ही तै कढ्यौ प्राँनदा[7] कालजा कोर हीतै ॥१६४९
हनूंमाँन काप्यौ जही लागतै ही, ऊतारू भयौ अंत की आग तैही।
लग्यौ घाव तापै नहीं घाव लागौ, भरोसौ कपी सैन कौ देख भागौ ॥१६५०
भयौ राखसी सैन कौ जोर भारी, डरी बंदरी सैन देखी दुखारी।
जहाँ नील देखी कपी सैन जाती, चल्यौ कुंभकर्नं चढ्यौ आय छाती ॥१६५१

---

१ महादेव। २ समुद्र। ३ बादल। ४ छिपे। ५ पर्वत। ६ ऊपर। ७ रक्त।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऊखारचौ गिरी-श्रंग मारचौ अधो कै रूप्यौ संम्मुहा खेत में राह रोकै ।
गिरी कुंभकनँ लख्यौ सौ गिरंतौ, झुकायौ मुका दै रूकायौ झरंतौ ॥१६५२
फट्यौ टूक-टूका भयौ आग फैली, घटी-जंत्र[1] की जाँन फूटी घरैली ।
जुतैं ज्वाल तूट्यौ गिरी आग जग्गी, लखी बंदरी सैन के रीस लग्गी ॥१६५३
मिले जुथ्थ पंचास कीनौ मता कौं, सभ्मे श्रंग लै-लै सँभारी सता कौं ।
मिले सभेंहू रिख्खभं नील माही, ज्युही गंधमादंन्न आयौ जहाँ ही ॥१६५४
गवाक्षं तहाँ आय कै ताहि गैलै, लता वृछ्छ लागी गिरी-श्रंग लै-लै ।
मिले कुंभकनँ घनी मार मंडी, घटा घोर आषाढ़ जैसे घुमंडी ॥१६५५
दल्यौ कुंभकनँ तऊ नाँहि दरयौ, झल्यौ रिख्खभं आच[2] ऐचै झपट्यौ ।
मही पै पछारचौ तँही दै मुरछ्छा,गिरचौ आँननं ओन[3]औ चेत[4]गछ्छआ[5] ॥१६५६
दई मार मुक्कान की सभे-देही, अरू नील कौं बक्षनं[6] मार पेही ।
गवाखं दई लात कौं भूँम गेरचौ, ज्युही गंधमादंन्नहू कौं जँझेरचौ ॥१६५७
पराजीत ह्वै जूथ-पत्ती पिराये, गहाई मुरछ्छा जमी पै गिराये ।
मिलो बंदरी संनहू ज्वालमाला, बड़े श्रंगहू वृछ्छ लीनै बिसाला ॥१६५८
दई कुंभकनँ घनी मार देही, जरा पीर व्यापी नहीं दुष्ट जेही ।
चहूँटे किते संग में दाब छाँहो, मदाभीर जैसै पसू अग माहो ॥१६५९
चपेटाँन मारै किते दाँत चाबै, दलै मार मुक्काँन धुक्काँन दाबै ।
गनै कीस की धारनाँ बीर गाढो थिरीभूत पाहार[7] ज्यौं खेत ठाढो ॥१६६०
दलै मर्कटी सैन कौं पाव दाबै, चढ़ै हाथ की घातऊ दाढ़ चाबै ।
प्रलैकाल की आग ज्यूँ खेत पिल्यौ, बनोकाँन-थोकान[8] जाहो बिचल्यौ ॥१६६१
जबै बाल कौ पूत दौरचौ जँही पै; सिला-श्रंग की मार कीनो सही पै ।
बली बाल-के-पूत पै सूल बायौ, बली बाल के पूत ताही बचायौ ॥१६६२
छली कुंभकनँ दई लात छाती, मुरछ्छा मँही कुंभकनँ मिलाती ।
मुरछ्छा छुटी अंगदं मार मुक्का, धरा पै गिरायौ तँहीं देय धक्का ॥१६६३
डिग्यौ अंगदं देख सुग्रींव दौरचौ, मिलायौ तहीं मारनै सूल मोरचौ ।
मुरचौ देख सुग्रींव लै श्रंग मोटा, अगारी खरे होय बाँधी अगोटा ॥१६६४
कहे कुंभकनँ बचंन्नं करारा, अहो बीर मेरे लखौगे ईसारा ।
बल्ली जुथ्थपं जुथ्थ कौं खेत बीचै, निहाँरै धरा पै गिराये सु नीचै ॥१६६५

---

१ अरहट्ट । २ हाथ । ३ रक्त । ४ चेतना, होश । ५ चला गया । ६ छाती ।
७ पहाड़ । ८ वानरों के झुण्ड ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

घनी बंदरालो भखी घेर घेरी, फिरैं जुद्ध में क्रुद्ध ह्वै फेर-फेरी।
पराजीत कीने सबै क्रीत[१] पाई, अजौ नीत[२] तेरी न नीकै अघाई[३] ॥१९६६
दुखी और कौं छोर कै मोर देखो, पगाँ माँड कैं चोट एहू परेखो।
कही बात सुग्रींव सौं कुंभकर्नं, लुकोय तऊ आयगे जुद्ध लरनं॥
विधाता जँभाई लई जाहि बेरी, पिता तो ऊपज्यौ सता कर्म प्रेरी ॥१९६७
रिखंरज्जसं नाम जाकौ रहायौ, जिहीं कीस कौ तूं कपीधीस जायौ।
जुरी खेत में तोरहू मोर जोरी, बतावौ कछू बाँह जोरी बहोरी ॥१९६८
सुनी बात सुग्रींव दौरयौ सपाटैं, झुकायौ गिरी-श्रंग छाती झपाटैं।
गिरयौ बज्र ज्यूं लाग कं श्रंग गोला, तऊ सूल कौं सीस सुग्रींव तोला ॥१९६९
हनूंमाँन सुग्रीव की देख हाँनी, करी नाँहि जा तैं कछू आँनकाँनी।
गह्यौ सूल कौं फूल जैसं गिरायौ, भयौ टूक-टूका जमी पैं भरायौ ॥१९७०
सिलासार[४] सौ भार कौ सूल सोई, मढ्यौ रत्न-माला सुबर्नं मिलोई।
परयौ भूंम माही सबै होय पूरौ, घुल्यौ खेत पैं रेत कौ होय धूरौ ॥१९७१
बिजै[५] सोर बाढयौ हनूंमाँन बीरं, पराजै भयौ कुंभकर्नं सपीरं।
गिरी-श्रंग सुग्रींव कै सीस गेरौ, लयौ मोह सुग्रींव खायौ लथेरौ ॥१९७२
मरोरे जही-माँन दीनी मुरछ्छा, रहे धीर ठाढे जहाँ बीर रछ्छा[६]।
भयौ बंदरी सैंन में सोर भारी, पुलाये बनोका पिछारी-पिछारी ॥१९७३
जहाँ कुंभकर्नं बली जुद्ध जित्तौ रूक्यौ ना रुकायौ महा रोख-रत्तौ[७]।
मुरचौ चाँप सुग्रींव दुर्मूल[८] माँही, जितै मारूती[९] देख आयौ जहाँ ही ॥१९७४
लयै जात सुग्रींव कौं देख लिन्नौ भिरयौ पाय कौं रोप कं कोप भिन्नौ।
मिल्यौ तिष्ट कै दुष्ट कौं मुष्टि मारी, डिग्यौ पाव सौं होय लोनी दरारी ॥१९७५
भयौ चेत सुग्रींव कौं मोह भग्गै, लये नासका काँन आयास[१०] लग्गै।
जहाँ कुंभकर्नं प्रथा पाय जोई, सुपन्खा सुसा[११] ज्यूं भयौ भ्रात सोई ॥१९७६
ऊड्यौ जित्त कै सत्रु कौं कीस-ईसा, घरे काँन नासा अगै औघ-ईसा।
निहारी प्रभू जे तहू की निसाँनी, गही कुंभकर्नं हिया में गिलाँनी[१२] ॥१९७७
फिरयौ लंक कौं पीठ दै दीठ फेरं, कपी सैंन कै आय लाग्यौ जु केरं।
गरै मेघ आषाड़ कौ घोर गज्जे, महाँकाल रूठो मनो कल्प[१३] मज्जै ॥१९७८

१ कीर्त्ति। २ नीयत। ३ तृप्त हुई। ४ लोह। ५ विजय। ६ राक्षस।
७ क्रोधरत। ८ बगल, कोंख। ९ हनुमान्। १० दूर होने पर। ११ बहिन।
१२ ग्लानि। १३ प्रलय।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दई मर्न[1] की नीम बेपछ्छ दनैं, कहा बर्न बरनै जही कुंभकर्नैं।
मलै मर्कटी सेन खेही[2] मिलावै, चढै हाथ में देत दड्ढा[3] चबावै ॥१६७६
अरुझै कितै आँनन खाय आँटी, घुलै कै डुलै कै बिचे जोह घाँटी।
सोई नासका स्वास लगै निसारा, प्रही सौं पतंगा मनौ मग्ग पारा ॥१६८०
करे द्योस[4] ऊलूक भलूक कीसा, रह्यौ छाय कै लाय ऊलमूक[5] रीसा।
कह्यौ राँम सोमित्र सुग्रींव काजा, सँभारौ सबै सेन कीसं समाजा ॥१६८१
कली देखहूँगौ बली कुंभकर्नं मंड्यौ आय प्राघात-आघात मर्नं।
ईती बात भाखी सीयानाथ ऊठे, रमाँनाथ मानौ मधू सीस रूठे ॥१६८२
जटाजूट बंधाँन बाँधे जंझीरा, सझे श्रानि[6] भुथाँन[7] बामै सरीरा।
चिला ऐंच ऊच्चाँन सिजा चढ़ाई, डहै लस्तक बाँम हस्तं दिढाई ॥१६८३
करे क्रुद्ध कोडंड टंकार कीनौ, हीयौ जातधाँना कीयो मानहीनौ।
हले रामचंद्रं जहाँ दुष्ट हेरैं, फनी तिष्ट चाल्यो मनौ बिष्ट फेरैं ॥१६८४
बिलोके घटा नाग[8] रूठ्यौ बिरूतौ, सटा[9] धून ऊठ्यौ मनौ सिंघ सूतौ।
अरे सम्मुहे जाय बाहू-अजाँना, जहाँ खेत ठाढे सबै जातुधाँना ॥१६८५
प्रबाहं बढचौ राँम कौ कंक-पत्रं, करे कुंभकर्नं चमू जत्र-कत्रं।
दसूँ ही दिसा बाँनही बाँन दीसैं, रहे छाय आयास ज्यूँ ऊर्ग[10] रीसैं ॥१६८६
कटै सत्रु-सेना मचै श्रोन[11] कादा, ज्यूँही राँम राजा बढै जोर जादा।
हुलै है दलं पैदलं मत्त हथ्थी, रूलै बाँन के वेग सौं रथ्थ-रथ्थी ॥१६८७
कितं घाव लागै ढुरै मासकारी[12], परै तोय की धार जैसे पंनारी।
तुटै तुंड मुंडा मनौ तुंब-डच्चा, मही लोट मंडे बिना नीर मच्छा ॥१६८८
कटै सनं[13] निर्गंन[14] पैजूख[15] कंधा, कहूँ सीस निर्मूल नाचे कबंधा।
सझे बाँन संधाँन साझै सनंका खुटै कंकट व्यूढ बाजे खनंका ॥१६८९
रची चंचला ज्यूझला बाँन रूरं, प्रलै काल के मेघ ज्यूं बेग पूरं।
कला कौसलं कौंसलाधीस कुप्पे, रमै नाग पारिंद्र ज्यौं रार रुप्पे ॥१६९०
छुटै बाँन पै बाँन सौं भौंन छावै, ऊलट्टे सबै बीच भूथाँन आवै।
महाँबीर रच्छ्छा रहे पाव मंडे, खरारी करै मार के खंड-खंडे ॥१६९१

---

१ मरण। २ धूलि। ३ दंष्ट्रा=दाढ। ४ दिवस। ५ उल्का, जलती लकड़ी।
६ श्रोणी=कमर। ७ तरकस। ८ हाथी। ९ गर्दन के केश। १० उरग=सर्प।
११ शोणित=रक्त। १२ रक्त। १३ बाण। १४ गर्दन। १५ कान।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

घटी सैन कौ देख ज्राही घटी पै, चल्यौ ग्रास सौं ग्रास स्वासा छुटी पै ।
गरै नाद कीनौ भरै गल्ल गाढौ, जनावै गिरी-श्रंग के तुल्ल जाढ़ौ ॥१६६२
मंड्यौ ग्राय कै मर्कटी सैन माँही, घुमंड्यौ प्रलै काल के मेघ घाँही ।
चलाकी घनै ग्रस्त्र-सस्त्रं चलावं, दलै कौंसलाधीस ग्रापौ दिखावै ॥१६६३
जुरे कुंभकर्नं जहाँ राँम जुद्धं, बढे ग्राहि[1] तुंडीक[2] जैसे विरुद्धं ।
भरै चाप ग्रावाज विस्फार भारी, खिलावै मनौ दीर्घजिम्भा[3] खिलारी ॥१६६४
करी जुद्ध क्रीड़ा मिलै कुंभकर्नं, प्रचारे दये बाँन सोवर्न पर्नं ।
रहे लीन ह्वै राखसी पिंजरा में, धसै कंचुकी[3] जेम बंब्री धरा में ॥१६६५
श्रवै घाव स्रोनी घनी श्रौंन संगा, परै श्रंग सौं रंग मानौ पतंगा ।
हुक्यौ बंदरी सैनहू कौं ढढोरै, दलै येक कौं येक कै लार दौरै ॥१६६६
बनोका भगे मग्ग लग्गे विसेखै, डरै हुड्डु[4] के भुंड ज्यौं कोक[5] देखै ।
गये राँम की सर्न कौं सारग्राही, मिलै संग जावास ज्यूँ सुंन्य माँही ॥१६६७
बिलोके कपी सैनहू कौं बिसासी, ग्रमी द्रष्टि सौं देख मेटी ऊदासी ।
ग्रनी पिठ्ठ लिन्नी बढे राँम ग्रग्गं, जुरे कुंभकर्नं जहाँ खेध जग्गं ॥१६६८
करे रोख कै मोख पैने कलंबा[6], प्रलै-फूंक ग्रालूक जैसे प्रलंबा ।
गने सोय नाँहीं लगे गात माँही, चल्यौ राँम की ग्रोर ज्यूँ ग्रभ्र छाँही ॥१६६६
ईकै हाथ में श्रंग लीनौ ऊतंगा, ऊठायौ सोई मारनै ऊत्तमंगा ।
जितै राँम पत्री दयौ सिष्ट जोरी, तकैं तिष्ट ताही भुजा पुष्ट तोरी ॥२०००
भुजा लै गिरी दूसरी बेर भारी, खरौ होय कै फेर तक्के खरारी ।
ईतै राँम नाराच छूटौ ग्रभंगा, सुपं हाथ तूटौ वही श्रंग-संगा ॥२००१
कटे कांन नासा ऊभै पाँन कट्टे, द्रुतीदीप्त सौं लीप्त लै बाँन दट्टे ।
तँहीं जीवनौ जाँन धिक्कारता कौ, करचौ घोर चिक्कार साथी कजा कौ ॥२००२
तिही फार पासार कै बक्रतुंडा, प्रभू धार चाल्यौ पहारं प्रचंडा ।
डरांने सबै देव देखे दसा कौं, जही रछ्छ कीनौ तकै लछ्छ जाकौं ॥२००३
किते मार मू-फार माँही कलंबा, जिहीं तोर डारे सबै दाँत जंभा ।
भिदे तालु जिम्भा परचौ नाँहि भूँमै, घुरै रीस बीरासनं[7] बीच घूँमै ॥२००४
ईखू[8] राँम लै ग्रर्ध चंद्रा ग्रकारा, महाँबेग सौं कंधरा बीच मारा ।
ऊड़ायौ जँही मुंड काया ऊछंडा, परचौ जाय लंकेस ग्रागै प्रचंडा ॥२००५

---

१ सर्प । २ सर्प को मारने वाला । ३ सर्प । ४ मेड़ । ५ भेड़िया । ६ बाण ।
७ युद्ध क्षेत्र । ८ बाण ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दलै पाव सौं बंदरी सैन दौरें, ससंकै रुकै रूंड़ काया सकोरै।
खरारी करचौ रूंड कौं खंड-खंडा, परचौ कुंभकर्न जबै धर्न पिंडा ॥२००६
जही की कला निक्कसी ठौर जाही, मिली जोत में जोत श्रीरांम मांही।
ईहीं देख कै देवता ही अचंभा, सबै ही मुनी साथ पायौ संसुभा[1] ॥२००७
बजे दुंदभी भेर आनंद बाजा, रच्यौ ख्याल ऐसौ जहाँ रांम राजा।
करी फूल-बृष्टी जया-सब्द कीनौ, हुयौ निश्चरा-जात कौ साथ हीनौ ॥२००८
फिरे रांम डेरा दिसी सांझ फूली, भये बंदरा संग में पीर भूली।
थिती देह में स्वेद पांनी थस्यौ है, ऊमा-फूल पै ओस मांनौ भस्यौ है ॥ .००९
लसै श्रौंनि[2] भूतांन कोड़ंड लीनै, भ्रमावै तही बीरता रंग भीनै।
प्रभा कोट-कंदर्प राजै पुनीता, संभारे सबै सैन कौं नाथ-सीता ॥२०१०
निवाजे प्रभू कट्ट-पट्टा[3] निवारे, सुसोभै बिचै आप डेरा सँवारै।
भयौ कुंभकर्न सुन्यौ मर्न भ्राता, अँधारी भयौ लंक बाढी असाता ॥२०११

दोहा

कुंभकरन के मरन कौ, सोक बढ्यौ ईक सथ्थ।
देखत सिर भ्राता द्रगन, मन व्याकुल दसमथ्थ ॥२०१२
अंतहपुर अकुल्लाय कै, क्रंदत कर-कर कूक।
ग्रह रांवन लघु-भ्रात ग्रह, ऊर तीय बाढ़ी ऊक ॥२०१३

छंद त्रोटक

मिल रांम सौं कुंभकरन्न मरचौ, पति-लंक हीयैं अत सोक परचौ।
प्रतिघातन जास सुन्यौ पुर में, अत सोक बढ्यौ जन के ऊर में ॥२०१४
घिर रांवन भूप के आय घरैं, सुत भ्रात मिले भटहू सिगरै।
त्रसरा सुत बोलेऊ तात तुहीं, सुर-दांनव जीतन वार सही ॥२०१५
कदरावत रोय बिलाप करौ, हठ कै दिगपालन मान हरौ।
बिध कौ बरदान कहा बिसरे, पन पांतर मोह के कूंप परे ॥२०१६
सुबसै रथ ग्रेह में साज सिलै, चिरमेही[4] सहश्रक[5] लाग चलै।
सकती बिधहू दीय सो अबला, कहाँ जात रही चंद्रहास[6]-कला ॥२०१७
प्रतना[7] घर है घर लंकपुरी, घट में कहा सोक बलाय घुरी।
सुख-दुःख नही कछु संमृथ कौं, श्रुति[8] और विचारहु संमृति कौं ॥२०१८

---

१ विश्राम। २ कमर। ३ कामदेव। ४ खच्चर। ५ हजारों। ६ तलवार। ७ सेना। ८ वेद।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

महाँराज नचिंत रहौ मन सौं, तज ताप बिलाप सबै तन सौं।
जुग तापस है कहा वेख जती, कपिहू बपुरेन[1] की बात किती ॥२०१९
कल कौं हम जात बिदा करोयं, डहकावनि कोस नहीं डरीयं।
मिल पित्रन नीद में खेत मर्चौ अलसावत धावत रार अर्चौ ॥२०२०
मत सोच करौ जिह मारन कौं, कल मृत्तु गनौ सुभ कारन कौं।
त्रसरा[2] ईन् बोल कहे तब ही, सुन रावँन सोक मिटचौ सब ही ॥२०२१
जुध भार दयौ कोय सैन जुमं, अभिमाँन बढचौ सुत कौ ऊर में।
त्रसरा लख मेल सुराँतकहू, तमक्यौ मिल आय नरांतकहू ॥२०२२
अतकायहु संग भयौ ईनकें, जुध को होय चाह बढ़ी जिन कें।
बहि चालेऊ बाप सौं होय बिदा, सग राखसी सैन चली समुदा ॥२०२३
माहापारस और महोदरहू ईह आय मिले फिर आसुरहू।
गज-पीठ महोदर बैठ गयौ, बहु आयुध लै जुधकाज बह्यौ ॥२०२४
त्रसरा रथ बैठ चल्यौ तुल कै, जुग धोराजु पै मिल कै-जुल कै।
सिर तीन में तीन किरीट सजं, रमनीय सुबर्न जराव रजै ॥२०२५
अँतकाय[3] चढ्यौ रथ ऊपर कै, धर धूजत और चढी धरकै।
जुर चाले नरांतक संग जही, उजरे अस[4] पै असवार ईही ॥२०२६
कर कूंत[5] गह्यौ मनु आग-कला, चमकै बिच बादर ज्यूँ चपला।
पुन देवनअंतक लै परघाँ, स्रबला[6] महापारस लै सिरघाँ[7] ॥२०२७
बढ कै खटहू रन बाट बहे, सभ्है दल पैदल संग सहे।
अनीं बाँध चले ज्यूँही जाय अरे, कररी कपि सैन पै मार करे ॥२०२८
कपि श्रंग ऊतंगन लै करने, धरकै बल-बाँहन सौं धरने।
बिव[8] और बढो ईम रार बली थरकै भरकै रन-खेत थली ॥२०२९
जुध बीच नरांतक बेर जही, गिरनै कपि सैन पै बाग गही।
हय हंक निसंक मिल्यौ हलकै, लग पंख चल्यौ कनकाचल कै ॥२०३०
कर कूंत गह्यौ सु बह्यौ करनौ, भरकै कपिसैन भयौ भररौ[9]।
हलचल्लीय नीर तरंग हिलै, प्रवस्यौ जिम मच्छ समुद्र पिलै ॥२०३१
जित ही तित दौरत जाय जुरै, कपि मार असंखन कीच करै।
कपि बृच्छ गहै तिह काटन कौं, द्रढ कूंत मिलावत दाटन कौं ॥२०३२

१ बेचारे। २ त्रिशिरा नाम का राक्षस। ३ परेशान होकर। ४ अश्व। ५ भाला।
६ गुर्ज। ७ ऊँची। ८ दो। ९ भर्राहट पड़ गई।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गिर-श्रृंग कौं जो कोऊ हाथ गहै, बिखरैं कपि सो जम-लोक बहै।
कपि केक[1] मिलै दल कद्दरीया[2], बरसात मिलै जिम बद्दरीया ॥२०३३
दखनी[3] जिम बाव डुलावत है, प्रवसै जित कीस पुलावत है।
चमकावत कूंत अनीन छटा, अस ऊपर सौं असमान अटा ॥२०३४
समल्यौ मनु सेहर साँवन कौ, रन राजकुवाँरहू रावन कौ।
गहै बाग जितै कपि सैन गिरै, फननेटीय लेत तुरंग फिरै ॥२०३५
बहु घाव करै जिस बाव बहै, गति बक्रीय चक्रीय दाव गहै।
अहि फूंकसी हूकसी सेल अनी बिचलावत बंदर सैन बनी ॥२०३६
रहे पाय कौं मंडन खेत रुके, लथरावत पीठ सुंकठ[4] लुके।
चल आय जबै कपि साथ छुप्यौ, कपिराज नरांतक[5] देख कुप्यौ ॥२०३७
चित सौं जिन तैं नहीं रार चही, अपनी न बराबर जान ईही।
जुगराज बुलाय कह्यौ जिह तैं, तुम जाहु नरांतक जाँय तितै ॥२०३८
भहरावत कीस की फौज रूमै, सुत राँवन मम्परहु येह समै।
कपिराज कह्यौ जुगराज करचौ भुज आप भरोस सौं जाय भिरचौ ॥२०३९
बजुला[6] मनी बाँहन बाँधन कौं, समिलै कर सिष्टहु साँधन कौं।
जहाँ जाय नरांतक जुद्ध जुरे, केऊ बोल बकार कहे करेर ॥२०४०
अहो राँवन-राजकुवाँर ईतो, मत क्रोध करो अरू क्रूर मतो।
हम सौं लरीयैं कर हौंस हीयैं, लपकावत सेल कौं हाथ लीयैं ॥२०४१
ऊझकावत खेत फिरो अस कौं, डहकावत कीस दसों-दिस कौं।
पग रोप गहो मजबूत-पनो, जुरनैं हम आवत एक जनो ॥२०४२
सुन अंगद बात ईती श्रबना, गहि सेल नरांतकहू गवना।
हय हक कै अंक में सेल हन्यौ, तिह अंगद तोरेऊ जेम त्रनौ ॥२०४३
हय कै फिर अंगद लात हनी, धर तूट परचौ ऊबरचौ सु धनी।
भरगौ अस खेत में फार मुँहा, गिर मानहु संजुत छिद्र गुहा ॥२०४४
निज अस्व कौं देख नरांतकहू, ऊर क्रोध धिख्यौ जिम अंतकहू।
सिर अंगद मारीय मुष्टि समो, जुगराज परचौ लथराय जमो ॥२०४५
ऊठ अंगद वार अमुक्कीय ती, मझ छातीय विन्नोय मुक्कीय की।
परगौ धर चूर्न भई पँसुरी, बपु सास बजाय गयो बँसुरी ॥२०४६

१ कई। २ कायर। ३ दक्षिणी। ४ सुग्रीव। ५ रावण का एक पुत्र। ६ बाजूबंद।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मृतु देख नरांतक खेत मही, तहँ आय देवांतक दौर तही।
तह आय कै भ्रात मिल्यौ तिसरा, नजदीक महोदरहू निसरा[1] ॥२०४७
सुन राखसी सैन मिली सहबा, तन तूट नरांत परचौ तहबा।
कोय अंगद ऊपर कोप कलै, पग आगै धरै केऊ पाछे पिलै ॥२०४८
रथ बैठ महोदर बीर-रथी, थिर चित्त करचौ रन-खेत थिती।
पुन देवहू अंतक लै परघा, खल केतक लेय चले खरगा ॥२०४९
त्रसरा रथ बैठ हल्यौ[2] तित ही, जुरनै रन अंगद पै जित ही।
तेऊ जाय मिले जुगराज त्रहूँ, ईक बीर बकारीय धार अहूँ ॥२०५०
समल्यौ फिर अगद साखन लै, लरनै कह वारन लाखन लै।
ईक वृछ्छ देवांतक पै ऊछल्यौ, केऊ बाँनन सौं त्रसराहु कट्यौ ॥२०५१
ऊछल्यौ नभ अंगद ऊपर कौं झटभेर मचाईय मूपर कौं।
सिल तोरत है त्रसरा सर सौं, कररौ धनु ताँन जहाँ कर सौं ॥२०५२
परघातन लै तरू पै पछटै, ईत बीर महोदरहू ऊछटै।
तरू पथ्थर अंगद ढेर तुटे, जुर तीनहु राखस जुद्ध-जुटे ॥२०५३
त्रसरा कर चाप लै बाँन तजे, गज बैठ महोदरहू गरजे।
भरमार मचाईय भालन की, बहुरै छर बाँस बिसालन की ॥२०५४
परघाहू देवांतक दे पलट्यौ, सुत-बाल कौ नाहिन नैक सिट्यौ।
नभ कूद कै बंदर-वारी नई, दिपराज महोदर लात दई ॥२०५५
गजसीस फट्यौ दध ज्यूँ गगरी, डग नाँहि दई चलकै डगरी।
गिर-श्रृंग ज्यँही धरनी गिरगौ, पिछराहु महोदरहू परगौ ॥२०५६
तहाँ अंगद दाँत ऊखार तहीं, द्रढ जाय देवांतक मार दई।
ऊगल्यौ बहु श्रोनत आँनन सौं, पुन गाँठ परी निज प्रांनन सौं ॥२०५७
छिन में मुरछा तिह आय छुटी, परघातन अंगद पै पछटी।
गम भूल कै अंगद बैठ गये, भर रीस[3] हीयैं फिर ठाढे भये ॥२०५८
त्रसरा त्रय बाँन दये तिन पै, जेऊ जाग लिलाट लगे जिन पै।
त्रय राखस अंगद येक तहाँ, जुर कीनेऊ जाजुल जुद्ध जहाँ ॥२०५९
लख अंगद येक जनौ लरतौ, बिफुरचौ मनु सिंघ घिरचौ बिरतौ।
हनूँमान मिल्यौ अरू नील हल्यौ, जुरे तीनहु बंदर बाँध जिलौ ॥२०६०

---

१ निकला। २ चला। ३ क्रोध।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

त्रसरा सिर ऊपर नील तक्यौ, झटक्यौ ईक झार पहार झुक्यौ।
त्रसरा नही लागन दीन तँही, मंड बाँन-झरी गिर डार मही ॥२०६१
रटक्यौ सुत दूसर राँवन कौ, हनुमान चले रन हाँमन कौं।
जंभुग्रात[1] मिले हनूँमाँन जही, तहाँ देख दिबांतक झूँम तही ॥२०६२
सिर मुक्कीय की दीय बाँध समी, जुरकै गिरगौ मृतु होय जमी।
ऊत नील महोदर खेत अरे, केऊ नील कै बाँन दये करे ॥२०६३
गिर श्रंग दयौ सिर नील गहे, रूप रार महोदर खेत रहे।
कढ़ दाँत तहाँ त्रसरा-कौकका[2], फट सीस भयौ महाँकाल फका[3] ॥२०६४
त्रसरा हनूँमाँन गौ तारन कौं, निज बंधव बैर निकारन कौं।
हनूँमान पै बाँन दये हरख्यौ, बरसात के मेघ ज्युही बरख्यौ ॥२०६५
हनुँमाँन गहे गिर श्रंगहतौ, त्रसरा सर छिन्नेऊ होय ततौ।
गिरश्रंग गयौ धरनी गिरकै, केऊ होय पखाँनन[4] की किरकै[5] ॥२०६६
हनूँमाँन की बृछ्छन मार हुई, त्रसरा तेऊ बाँनन काट तई।
हनूँमाँन जग्यौ जब क्रुद्ध होयै, नख सौं रथ के हय मार लीयै ॥२०६७
त्रसरा हनुँमाँन पै सक्ति तजी, गहरी धुन मेघ ज्युँही गरजी।
हनुँमाँन गही तिह आवत ही, त्रन जेम प्रहारीय तावतही ॥२०६८
त्रसरा कर खग्ग लयै टटक्यौ, झुक कै हनूँमाँन हयै झटक्यौ।
हनुँमाँन तहीं ऊर लात हनो, फुँनहा[6] की लगी मनुँ झाट फनी[7] ॥२०६९
गस आय कै ऊपर भूँम गिरचौ, खग खोस कै राखस कौं खररचौ।
सिर काटेऊ तीन किरीट सझे, भहराय कै राखस और भजे ॥२०७०
त्रसरा मरनौ सुन वीर तप्यौ कल[8] कौं महाँ-पारस काल कुप्यौ।
सोई राँवन कौ निज भ्रात सगौ, लरनै दल बंदर लार-लगौ ॥२०७१
गहि हाथ गदा सिर गोल गटा, चरबी में चबोरीय[9] रूप-छटा।
मँझ खेत लग्यौ कपि मारन कौं, प्रबला अबला के प्रहारन सौं ॥२०७२
कपि-सैन कुलाहल सोर करचौ, जहाँ जूथपि रिखभ आय जुरचौ।
सोई पूत-बरूँन बरूँन-समा, कोय आय मिलाय कौं रोप क्रमा ॥२०७३
महाँ-पारस जुथ्थप देख मिल्यौ, प्रल-आग[10] ज्युँहो होय में प्रझल्यौ।
जहाँ मार गदा ऊर जूथप कै, अपने जुग हाथन ऊथप कै ॥२०७४

१ जंभाई लेते हुए। २ महोदर। ३ ग्रास। ४ पाषाण। ५ टुकड़े।
६ फण। ७ सर्प। ८ युद्ध। ९ डूबी हुई। १० प्रलयाग्नि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऊर ऋक्खभ चोट लगी ऊभ्भका, महाँ-पारस के ऊर दीय मुका।
गिरगौ महाँपारस चेत गयौ, पुन जूथपहू निज वार पयौ ॥२०७५
लीय खोस गदा कर सौं लरकै. कर-साख[1] मरोर भुजा करकै।
कर रोस कौं कीस महाँ कररी, महाँपारस के हीय में मुररी ॥२०७६
लग चोट गदा लथराय लटचौ, पग रोपकै रिखवः पै पलटचौ।
जुर रिखभहू रन-खेत जई, करनै कहू लागेऊ वार कई ॥२०७७

दोहा

महाँपारस अरु रिखभ मिल, जुद्ध करचौ अतजोर।
ताक-ताक तन ताहि कौं, मारी गदा मरोर ॥२०७८
महाँपारस रन में मरचौ, ऋखभ जीत दीय राँम।
जय-जय बोले कीस जुर, मिल रन-खेत मुकाँम ॥२०७९

छंद पद्धरी

त्रसरा सुन मारचौ तातकाल, सुन मरचौ नरांतक सुरन-साल।
देवांतक स्वाँसा तज़ी देह, सुन मरचौ महोदर निसंदेह ॥२०८०
महाँपारसहू की सुनी मीच, बेला[2] तिह ताही समर बीच।
अतकाय पुत्र राँवन अभीत[3], करनै कौ आयौ समर क्रीत ॥२०८१
रबि जेम प्रकासक चढ्यौ रथ्थ, ताते हय जोरत तरल तथ्थ।
दोरचौ बंदर की भीर देख, बेर कौं लैन कारन बिसेख ॥२०८२
काँनन में कुंडल सिर किरीट, दगदगत[4] नैन जनु काल-दीठ[5]।
टंकार धनुष स्वर ऊच्चताँम, निज जीहू सुनायौ आप-नाम ॥२०८३
जहाँ करी गर्जना सिंह जेम, अरू संख बजायौ फेर येम।
बंदर दल देख्यौ महाँबीर, सब कुंभकरन जैसौ सरीर ॥२०८४
ऊठ-ऊठ कै देखन लगे ओर, चोटेहु बड़े पग छोर-छोर[6]।
बाँमन धर नापन करचौ बेख, द्रग जाँन्यौ ताही साँग देख ॥२०८५
करते आँनन सौं बिखम कूह[7], जूथप मिल भागे जूह-जूह।
श्रीराँमचंद्र के गये सर्न, तन सभय होय तर्नावितर्न ॥२०८६

---

१ अंगुली। २ समय। ३ निर्भय। ४ चमकता है। ५ कालदृष्टि। ६ छोटे। ७ किलकारी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बंदर बिबर्न आक्रत बिलोक, थंभे सुमर्न कर थोक-थोक।
खल ऊठ लख्यौ तहाँ समरखेत, श्रीरांमचंद्र लछमन-सहेत ॥२०८७
पर्वताकार काया प्रचंड, दीरघ तिह दीसत भुजा-डंड।
आरूढ रथ्थ होय भरी आग, मनु ज्वल-जुत चाल्यौ सिखरमाग ॥२०८८
जिम मेघ गर्जना करत जोर, घरराट बढ्यौ दस दिसा घोर।
हमगीर[1] होय रघुबीर हेर, बोले सु बभीखन तही बेर ॥२०८९
मंजर-लोचन कौ सयल[2] मान, बढ आवत रथ बैठो बिमान।
जुप रहे पाँचसै हयन जोर, धुजदंड-धुजा को लगी घोर ॥२०९०
संन्नाह[3] सजत गहि गदा सूल, डोल में पहर राते दकूल[4]।
सोवनी पीठ कोडंड साज, बिसफार अवाजन रही बाज ॥२०९१
तुंन्नीर[5] बाँन तिछ्छन तमांम, कर गहत सहत संग्रांम कांम।
भुज-डंड ऊभय गज सुंड भेस, बजुला[6] जराव सोव्रन बसेस ॥२०९२
बाँनक नैनन की अत विचित्र, नभ ऊदत पुनबंसु मनु नछत्र।
बिच चंद जेम पूरन बिसेख, द्रग आँनन जाको परत देख ॥२०९३
दगदगत काँन कुंडल दुरूह, भिर रही ऊच्च में मुच्छ[7] भ्रूह।
भँडत किरीट ऊतमंग[8] माँहि, चमकै जराव की छटा छाँहि ॥२०९४
भयभीत दिखावत जहीं भेस, मनु भूतन में राजत महेस।
सब सुने बभीखन रांम स्वाल, कर जोर कह्यौ सुनीयें क्रपाल ॥२०९५
जासौं तुम आये करन जुद्ध, पति लंकपुरी रांवन प्रसिद्ध।
रांवनही जैसौ महाँराज, आवत सुत जाको लरन आज ॥२०९६
सोई बृद्धन की बहु करत सेव, भलि बात सुनत तिह लहत भेव।
गहि लेत बिचारत सारज्ञाँन, बिसरै न कबहु ताको विधाँन ॥२०९७
असवारी कुंजर हय अनूंप, चतुराई राखत सदा चूंप[9]।
अतकर्म-कुसल अरु करनकार,[10] परवीन[11] नीत में सब प्रकार ॥२०९८
तरवार-चलावन तथा तीर, बीरत[12]-विधाँन में महावीर।
बसकरन सत्रुकौं ऊर विवेक, पथ धर्म राखसी महा प्रवेक ॥२०९९
बर लीय रिजाय ब्रह्मा बिसेस, दिसपालन जीते दनुज देस।
बिधही[13] रथ दीनौ तिही बैठ, पंछी जिम जावत समर पैंठ ॥२१००

१ अग्रणी। २ शैल = पर्वत। ३ बख्तर। ४ दुकूल = वस्त्र। ५ तूणीर = तरकस। ६ भुजबन्ध। ७ मूंछ। ८ उत्तमाङ्ग = शिर। ९ चुप = मौन। १० कार्यकर्त्ता। ११ प्रवीण। १२ वीरता। १३ ब्रह्मा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बस भवन पतीगढ़-लंक बाँम, निज धाँन्य मालनी जिहीं नाँम।
जिह जन्यौ ईहै जाजुल्य जोध, कर रह्यौ बंदरन सीस क्रोध ॥२१०१
द्वै खड्ग दुबाजू जिह दिखात, है लंबे दस-दस माँन[1] हात।
कबजा तिह लागे स्वर्न केर, है च्यार हात के लेहु हेर ॥२१०२
अठ तीस धनुष है आसपास, तरकस है तेते लखहु तास।
बाँहन[2] के बल सौं ईहीं बीर, सुरराज बज्र रोक्यौ सधीर ॥२१०३
कीय बृथा बरुन की पास केर, है अंतकाय चख[3] लेहु हेर।
बाप कौ लड़ंतौ[4] अत बसेख, ब्रढ भ्रात मृत्यु कौं हीयँ द्वेख ॥२१०४
जिह आतुर करीयै जतन जुद्ध, नहीं पूग सकै जौलौं सनिद्ध[5]।
ईत कही बभीखन राँम एह, अतकाय ऊतै कोप्यौ अछेह ॥२१०५
महाँरथी लयौ धनु हाथ माँझ, सम इंद्र धनुष नभ भोर-साँझ।
तूनीह[6] बर्न रंग पीत ताय, टंकार करयौ तिह टमटमाय ॥२१०६
दस दिस अवाज कौ बढौ दौर, घरराट चढै मनु घटा घोर।
थल-थल पै बंदर देख थोक, सननंकत बाँनन दई सोक ॥२१०७
बन तहाँ बनोकन बूँह-बूँह, जुरने कौं दौरे जूह-जूह।
बढ़ दुविद कुमद अरु मैंद बीर, सझ नोल सरभ मोटे सरीर ॥२१०८
सब एक-एक के होय संग, तरवर गहि मारे गिर ऊतंग।
अतकाय बाँन दै-दै अनेक, अंग पै न लागन दये येक ॥२१०९
भिर गये कीस दीने भगाय, लोह के बाँन तिछ्छन लगाय।
सब भये पराजित कीस संग, अतकाय हीयँ बाढी ऊमंग ॥२११०
ज्यूँ मृगन करत मृगराज जेर, घट कपि-दल पीड़त करे घेर।
बंदर-मारन की तजो बात, आगैं बढ चाल्यौ अकसमात ॥२१११
चल गयौ निकट श्रीराँमचंद्र, सरराय तिमंगल[7] ज्यूँ समंद्र।
सनमुख ह्वै बोल्यौ ईह सवाल, सुत राँवन मैं दिगपाल-साल ॥२११२
अतकाय सुन्यौ तौ लखहु येह, देखन तुम आयौ निसंदेह।
कहा करै कपिन सौं समर काँम, ठहरे बन-बासी ठाँम-ठाँम ॥२११३
हमरै धनु जैसौ तुमही हाथ, निज काँम दिखावहु अवधनाथ।
जाचंन्या[8] मेरी ईह जरूर, सनमुख चढ आयौ महाँसूर ॥२११४

१ माप। २ भुजा। ३ चक्षु। ४ लाड़ला = प्यारा। ५ सन्निधि = निकट।
६ प्रत्यंचा। ७ बड़ा मत्स्य। ८ याचना।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अतकाय सुनत बाँनी अभंग, निज बाँध्यौ लछमन कटि निखंग[1]।
संभार धनुष सर धरचौ साँध, बोले फिर तासौं सिष्ट बाँध ॥२११५
राँम सौं कहा तुम करहु रार, हमकौं तौ पहलैं देहु हार।
पीछैं रघुबर कौ लखहु पाँन, अतकाय अहो बाहू-अजाँन ॥२११६
सुन लछमन के ऐसे सवाल, तिह ऊत्तर दीनौ तातकाल।
बालक बय[2] लछमन बाल बुद्ध, जाचंन्या मोसौं करत जुद्ध ॥२११७
पैहौ न जीत जैहौ पुलाय, जाँन कै काल सूतौ जगाय।
कुंजर मैं पिंजर दये काट, झेलैं हिमबाँनन बाँन झाट ॥
सो सहिहै कैसे तूं सरीर, बपु बेस तिहाँरी बाल बीर।
ईह धनुष मेल कै जाहु अंत, माता मिलनै कौं माँन-मंत ॥२११८
जो माँनत नहि मेरे जबाब, हठ पकर तोहि लरनौ हिसाब।
अतकाय बचन सुनकै अभीत, लछमन तब बोले नीत-रीत ॥२११९
बिक्रांत[3] ईती नहि करत बात, जग पौरुख ही सौं जाँन जात।
मै पौरुख देखन पाय मंड, कोडंड प्रतंछा धरचौ कंड[4] ॥२१२०
महि-तल पै कैसे करूं मोख, राँवन के बेटा धरहु रोख।
पहिचान्यौ चाहत प्रथम पोत, तेरौ सब पौरुख भरचौ तोत[5] ॥२१२१
माया कल राखसि पिंड माँहि, जुध बेला छल-बल करत जाहि।
बिक्रांत सनातन छत्रि बीर, धारना बिचारत सुमति धीर ॥२१२२
अतकाय बिजय कें हेत आय, डहकावत जावत डर डराय।
कुसलात जाय मिलहै कुटंब, द्वै हाथ देख कै मोहि डिंभ[6] ॥२१२३
पैने सर तेरौ भखैंहि प्राँन, जैसौ हूँ तैसौ लेहु जाँन।
विद्याधर गुज्यक बुनत बात, जैंहाँ हरख ऊठे रिखि-देवजात ॥२१२४
सूरमाँ जाँन लछमन सकोय, जय होहु कहत जहाँ जोय-जोय।
अतकाय लगी अत रीस अंग, निज हाथ संभारचौ सर निखंग ॥२१२५
कोडंड तानकै तज्यौ क्रूर, दिक्करन आवतौ जेम दूर।
अर्धचंद बाँन लछमन उड़ाय, गिर जेम पाव रोपे गड़ाय ॥२१२६
रन खेत खरौ लख भ्रात राँम, कीनौ सोई भीनौ देख काँम।
सर पाँच चुने लीने सँभार, तेऊ तजे लखन पे येक तार ॥२१२७

---

१ निषङ्ग=तरकस। २ अवस्था। ३ वीर। ४ बाण। ५ थोथा। ६ बालक।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जिह लछमन देख्यौ जाहि जोर, तेऊ ताक-ताक कै देय तोर।
ईक बाँन गह्यौ लछमन अचूक, फँनिराज[1] प्रलय की मनहु फूंक ॥२१२८
झोक्यौ सुचाप सम्मुह झुकाय, जोई लग्यौ भाल के बीच जाय।
अयलीन राखसी माँझ भाल, बाँबी[2] में जैसे धसै ब्याल[3] ॥२१२९
अतकाय बाँन लागत ऊछंड, पिंजरा काँपनै लग्यौ पिंड।
निज दीनी लछमन बिजय नींम,[4] भेदे त्रपुरासुर जेम भींम ॥२१३०
सुसताय[5] कछू राँवन-सपूत, अवगाह लखन पौरख अभूत।
अतकाय कह्यौ रजपूत आह, बैरी तऊ भाखत बाह-बाह ॥२१३१
अतकाय कहत ईम बढ्यौ अग्ग, महाँ क्रुद्ध छाय कै खेत मग्ग।
पेरे[6] लछमन पै बाँन-पूर, काल की झाल जैसै करूर ॥२१३२
ईक द्वै त्रय दीने पाँच और, जिह सात दये सर सिष्ट जोर।
पंखारन बाढ्यौ नभ प्रकास, स्वर्न पै किर्न[7] लग सावकास ॥२१३३
आवत जब लछमन लखे ऊद्ध, जम-जम करनै कौं लगे जुद्ध॥
बाँनन सौं काटे बाँन बीच, नभ सौं सर धर पै गिरे नीच ॥२१३४
अतकाय देख लछमन अभंग, जुर सनमुख लागौ करन जंग।
चाप पै बाँन तिछ्छँन चढ़ाय, बपु लछ्छँन दोनौ कर बढ़ाय ॥२१३५
छाती में ताही करचौ छेद, भरपूर बर्म[8] तै चर्म-भेद।
मद झरत जेम कुंजर-मदंध, बहनै रत पिंजर लगी बुंद ॥२१३६
निज छाती लछमन सर निकार, निरसल्प[9] भये लोहू नितार।
अतकाय पराक्रम देख ऊद्ध, जहाँ लछमन लागे करन जुद्ध ॥२१३७
सर स्वर्न-पर्न कौ गह्यौ सोय, जोजत[10] अग्नाखहु करचौ जोय।
अभिमंत्रत देख्यौ बाँन आत, कीनो अतकायहू करामात ॥२१३८
सूर्जाख तज्यौ रौद्राख संग, भिरकै अकास में भये भग।
पर गये जमीं पै भये पार, ज्वाला सौं एक न एक जार ॥२१३९
अतकाय होय रन में अधीर, त्वष्टा[11] अभिमंत्रत लयौ तीर।
येखिक[12] लछमन की तज्यौ ओर, ज'ही कौं सिष्टी बाँध जोर ॥२१४०
येद्राख लखन छोरचौ अभंग, सो ह्वैकै निस्फल गिरचौ संग।
येखिक पुन निसफल गयौ ईछ्छ,[13] तव राँवन-सुत लीय बाँन तिछ्छ॥२१४१

१ सर्पराज। २ बिल। ३ सर्प। ४ नींव = बुनियाद। ५ स्वस्थ होकर। ६ प्रेरे। ७ किरण। ८ कवच, बख्तर। ९ निश्शल्य = साल रहित। १० योजित। ११ ब्रह्मा। १२ लोहमय। १३ देखकर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ज़मराज मंत्र के भरचौ जाप, त्यागौ लछमन कौं दैन ताप।
जहाँ बायवास्त्र कौं लखन जोर, तीर कौं तीर सौं दयौ तोर ॥२१४२
साहस कर लछमन एक संग, अतकाय लगाये बाँन अंग।
अतकाय कवच पहरत अभेद, भालन के साल न सके भेद ॥२१४३
अतकाय लखी माया अनंत[1], चित लछमन बाढी महाँ चित।
दरसाव दयौ तहाँ पवन देव, भाख्यौ लछमन कौं गूढ़ भेव ॥२१४४
अतकाय बीर पौरुख ऊदंच, बरदान दयौ याकौं बिरंच[2]।
अंग में कवच पहरचौ अभेद, खल कौं नहिं कल की होय खेद ॥२१४५
ऊपदेस पवन कौ सुन्यौ येह, निर्भीत लखन हुय निसंदेह।
जाँन कै मरन अतकाय जोग, पुन ब्रह्म अस्त्र कीनौं प्रीयोग ॥२१४६
कट गयौ सीस संजुत किरीट, मुनि सुरन असुर मिल लख्यौ मोट।
मर गयौ सुतन-राँवन मदंध, सिर लछमन बाँनन छूट संध ॥२१४७
धर गिरचौ पर्बताकार धर्न[3], निछ्छेद होय कंधर[4] निगर्न।
भागी निश्चरनन बची भीर, सब खंड-बंड ह्वै कै सरीर ॥२१४८

दोहा

जीत भई लछमन जहाँ, कीस करचौ जयकार।
परी खबर लंकापुरी, कीनौ हाहाकार ॥२१४९
राँवन हुयौ ऊदास रुख, भिरे मरे सुत-भ्रात।
मेघनाद समझाय मन, ताप मिटायौ तात ॥२१५०

छंद पद्धरी

मरनौ सुन भ्रातन मेघनाद, बाढ्यौ ऊर अंतर अत बिखाद।
जहाँ अरज करी ईह इंद्रजीत, पितु बचन मोर करीयै प्रतीत ॥२१५१
जीत्यौ सुरिंद्र सुर करे जेर, फहराय धुजा रन जात फेर।
बिद्वेख निकारहु कका बीर, संघार राँम लछमन सधीर ॥२१५२
सेना बंदर कौ कर संघार, जब आय करहुं तुमसौं जुहार।
ईह कहिकं चाल्यौ कर ऊमंग, सेना बिडराँवनि लेय संग ॥२१५३

---

१ लक्ष्मण। २ ब्रह्मा। ३ धरणी=भूमि। ४ ग्रीवा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राखसि मायावी जिते रूप, कीने खर-सूकर केऊ कुरुप।
परघातन[1] हाथन लेय प्रास[2], कोडंड बाँन लै सावकास ॥२१५४
लै साँग सबंला[3] डाँग[4] लीन, परचंड डंड अय[5] लये पीन।
सूरज प्रकास रथ कौं सभाय, असवार भयौ तिह बीच आय २१५५
गदहा तिह जोते दिघ्घ[6] गात, बहनैबारे जे बेग-बात।
चढ़ चाले राखस क्रुद्ध छाय, गज बाज ऊपरै गहगहाय ॥२१५६
केऊ गदहा खच्चर चढे कोक[7], रीछन सिंघन की पीठ रोक।
बैठे सो पीठ केतक बिलार, सपंन जरखन पैं हुय सवार ॥२१५७
अरु सूकर-कूकर कौं अरोह, सल्लकी स्यार रचकै सँदोह[8]।
कीनी तिन बाँनी भयंकार, पुन गूंज ऊठे तिनसौं पहार ॥२१५८
डगमगत होय गिर डाँव-डोल, धमधमे दुंदभी[9] और ढोल।
धसमसत धरा पाताल धाँम, तल-बितल भये चल-बिचल ताँम ॥२१५९
ऊड़ चल्यौ खेह डंम्मर अकास, पर मंद चहूँधाँ रवि प्रकास।
रथ मेघनाद लख द्वैप[10] रूप, भय बिजय भरोसौ प्रजा-भूप ॥२१६०
रन-खेत बीच रथ दयौ रोक, ठहराई सेना थोक-थोक।
ऐसौ प्रबंध कीय आसपास, पहुचै न जहाँ रवि कौ प्रकास ॥२१६१
जहाँ देख्यौ जैसौ परचौ जोग, पुन करचौ होम आहुत प्रीयोग।
अभिमंत्रत कीने सस्त्र-अस्त्र, बपु बगतर भूखन जिते वस्त्र ॥ २१६२
ब्रंह्मास्त्र लेय कै महाँबीर, गर्जना करी घन ज्यूँ गहीर।
ह्वं परगट सैना कह्यौ हाल, बपु सबहि रीत कीनौ बहाल ॥२१६३
आकास ऊपरैं जात ऊद्ध, जय राँम लखन सौं लैन जुद्ध।
बंदर की सैना तुम बिड़ार, लहि बिजय चलहि सब लार-लार ॥२१६४
येती कहि पहुच्यौ अंतरीख, बाँमन जनु दीनी पाव बीख।
जहाँ राखस सेना बढी जोय, रिछ्छन बंदर सौं रार-रोप ॥२१६५
ईत मेघनाद ऊपर अकास, पौरुख बाँहन कौ कीय प्रकास।
नाली कबाँन लै मेघनाद, बिरचन कौं लागौ कीस बाद ॥२१६६
सझ्झ सैन राखसीहू समूह, जुरनै कौं लागी जूह-जूह।
जहाँ बाढचौ चहूँधा सराजाल, कोप्यौ करूर मनु प्रलय-काल ॥२१६७

---

१ बरछी। २ भाला। ३ गुर्ज। ४ लाठी। ५ लोह। ६ दीर्घ। ७ भेड़िये। ८ समूह। ९ नगाड़े। १० सिंह-चीते की खाल से मढ़ा हुआ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सब मरनै लाग्यौ कीस साथ, हेरत पैं नाहिन चलत हाथ।
भय व्याकुल ह्वै गये कीस भाल, तरफरत गिरत खावत तँवाँल ॥२१६८
जूथप मिल कीनौ कछू जोर, अवलोक तहाँ घननाद ओर।
जहाँ मेघनादहू देख जास, सर स्वर्न-पर्न लहि सावकास ॥२१६६
जुथ्थप-जुथ्थप कौं जाँन-जाँन, तीखे सर मोर ताँन-ताँन।
सर दये गंदमाँदन सरीर, अट्ठारह बारह ह्वै अधीर ॥२१७०
पुन मैंद सात गज दये पाँच, खल जाँबवाँन दस दये खाँच।
नील कै तीस दीने निहार, तिछ्छन भालन के येक तार ॥२१७१
सुग्रींव रिखभ अंगद सँपेख, दुबिद कौं खरौ लीय तहाँ देख।
ईन च्यारहु पै सर दीय अनंत, पर स्वर्नभरे जे पंत पंत ॥२१७२
निर्जीव भये जैसे निहार, चल बढ्यौ अगारी दुराचार।
कपि-मुखी[1] जाँन कै और केक, अंन्नेक दये सर येक-येक ॥२१७३
घायल कीय सेना कीस घूंम, भिर परी भरी रन-खेत भूंम।
रनबीच जहाँ घननाद रीस, केसू बंसंत कीय काय कीस ॥२१७४
बसुधा[2] पै ह्वै कै खंड-बंड, झर परे बनोकन झुंड-झुंड।
बरख्यौ जल-धारा जेम बाँन, टंकार चाप गुन[3] काँन ताँन ॥२१७५
घननाद नाँम घन ज्यूं घुमंड, थल पैं कपि-दल भर थंड-थंड[4]।
ऊपर कौं झाँखन करी आँख, पत्री[5] भर दीने स्वर्नपाँख ॥२१७६
अरू कीनी काऊ भुजा ऊँच, लीनी कंधर तैं ताहि लूंच[6]।
गिर गये जिते हुय मृत्यु गात, जिह प्राँन ऊबारे[7] जीव-जात ॥२१७७
कारे रंगवारे सरल काय, गिर परे रिछ्छ धर गुरगुराय।
बल मेघनाद कौ पाय वार, सैन कौं करचौ सेना सँघार ॥२१७८
बंदरी सैन संजुत बिखाद, निज नैनन देखी मेघनाद।
धरहरत गर्जना करी घोर थरहरत रिछ्छ कपि ठौर-ठौर ॥२१७६
जूथप केऊ ठाढे लखे जाग, भयभीत भये नहि सके भाग।
सुग्रींव और हनूंमाँन संग, अंगद सुखेन दधमुख अभंग ॥२१८०
केसरी गंधमादन कुमंद, मिल जाँमवाँन नीलहु मयंद।
गज और गवय जूथप गवाक्ष, सूर्जानन नल अरु पावकाक्ष ॥२१८१

---

१ मुख्य। २ पृथ्वी। ३ प्रत्यंचा, डोरी। ४ समूह। ५ बाण। ६ नोंच ली, काट दी। ७ बचाये।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

देखे हरिलोमा विधूद्रष्ट, बपु जोतमुखी बंदर बलिष्ट।
जिन देख कुप्यौ घननाद जुद्ध, अभिमंत्रत आयुध तजे ऊद्ध ॥२१८२
मूसल परघा तन दई मार, सबंला साँग डाँगन सँभार।
कर घायल ईन कौं रन करूर, पुन धिल्यौ राँम पै बाँन-पूर ॥२१८३
झर हरचौ बाँन जिम आग झार, कीनौ लछमन पै अंधकार।
चितवत मुख लछमन राँमचन्द्र, गहरी बरखा में ज्यूँ गिरंद्र ॥२१८४
बोले लछमन सौं राँम बात, कीय ब्रंह्म-अस्त्र की करामात।
ऊतपत्त करचौ मनु-बंस आद, ब्रंह्मा ही कारन निर्बिखाद[1] ॥२१८५
मनु-बंसी तुम हम ऊभय मित्त, चितना करहु मुरजाद[2] चित्त।
बृह्मांस्त्र सहहु पीड़ा-बिकार, लग अस्त्र-सस्त्र गिर जाहि लार ॥२१८६
खल मृतक जाँन कै तजहि खेत, चल जैहै तबही ह्वै सचेत।
ईह लखन सुनी रघुवर-ऊदंत,[3] मन मान्यौ सोई सिद्ध मंत ॥२१८७
जेते सर दीने इंद्रजीत, ऊर लागन दीने ह्वै अभीत।
गिर परे बीच रन-खेत गात, धारन सौं लोहू थरधरात ॥२१८८
जुग भ्रात देख ईम ईंद्रजीत, पहिचाँन लये ग्रासत प्रमीत[4]।
घन ज्यूँ पुन कीनौ घरघराट, बाहनी[5] लेय लीय लंक बाट[6] ॥२१८९
सनसट करोड़ बंदर संघार, जाय कै करी दससिर जुहार।
पाछलै[7] दीह खट डंड-प्रंत, येतो सैना को करचौ अंत ॥२१९०
बिव राँम लखन की कही बात, कीनी गत जैसी करामात।
सुन कै चरित्र घननाद सोय, हीय राँवन कौं जय-आस[8] होय ॥२१९१
ईत राँमचन्द्र गत भई येह, सो देख बभीखन निसंदेह।
बोले बुलाय हनूँमाँन-बीर पुन बृह्म-अस्त्र तुम सही पीर ॥२१९२
जिम राँम लखन कौं लेहु जाँन, पन बृह्म-अस्त्र पारचौ प्रमाँन[9]।
समीयाँनुसार ह्वै सावचेत खल कौ दलमलहै बीर-खेत ॥२१९३
कछु सोच करहु नाँहिन कदाप, अब तौ संभारहु खेत आप।
सुग्रींव कहाँ है कहाँ सैन, लारै तुम हम ह्वै चलहु लैन ॥२१९४
बच रहे जिते बंदर बुलाय, ऊजयारौ करहू कर ऊपाय।
हनूँमाँन बभीखन जाँन हाल, महताब[10] सँजोई अरु मसाल ॥२१९५

---

१ खेदरहित। २ मर्य्यादा। ३ वार्ता। ४ मृत्यु। ५ सेना। ६ मार्ग।
७ पीछे। ८ आशा। ९ सच्चा। १० बड़ा दीपक।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुग्रीव आद देखे सकोय, जूथप-जूथप कौ जोय-जोय।
सब गिर परे मुरदा समांन, पग नांहि हिलावत पूंछ पांन[1] ॥२१९६
बिध तनय बिचारे जांमवांन, है जीवत तो कछु नांहि हांन।
बय-बृद्ध तथां धीय-बृद्ध बीर, संभार करे ताही सरीर ॥२१९७
मिल भूप बभीखन हनूंमांन, जोय कै खुसी भये जांमवांन।
बतराय बभीखन बारबार, टंटोर पांन पग टार-टार ॥२१९८
बोली पहिचांनी जांमवांन, समुझ कै बभीखन संनिधान।
कलरावत बोले कर-करार, सुन भूप बभीखन समांचार ॥२१९९
ऊघरत नहि मेरी नैक आंख, आपनी सौं नांहिन सकूं झांक।
हनुंमांन कुसल तौ कहहु हाल, बपु होय खुसी मेरौ बहाल[2] ॥२२००
जब कही बभीखन जांमवांन, श्रीरामचन्द्र मैत्री समांन।
सुग्रीव लखन अंगद सनेह, आये न याद कहा बात येह ॥२२०१
संदेह मिटावहु समुझ सोय, हीय तैं जब बिसमय बिगत[3] होय।
अंजनी-लड़ैतौ पवन-अंस, परकास करहि पौरुख प्रसंस ॥२२०२
जब पीरा जावहि जूथ-जूथ, बपु ह्वै बलिष्ट ऊठहि बरूथ[4]।
ईह हेत करयौ हनुंमांन याद, बच गयौ कहौ छूटै बिखाद ॥२२०३
सुन जांमवांन ऐसे सवाल, धोय हात ईसारौ तातकाल।
मारुती गहे पग जांमवांन, हाजर हूं तेरे हनूंमांन ॥२२०४
करहूं सिवकाई[5] कहहु कांम, राख कै भरोसौ सीदारांम।
जब हनूंमांन कें सुन जवाब, सुध जांमवांन ब्यापी सताब ॥२२०५
ज्यूं गजब गिराई इंद्रजीत, पहिचांनत मेरौ होय प्रतीत।
तुम जतन करहु हम कहत तात, बेरा[6] ईह बिसवा-बीस बात ॥२२०६
जावहु ऊत्तर में जरी[7] जोय, लावहु हिम-गिर तै बचै लोय।
सब ऊल्लीकांनी रिखभ शृंग, अष्टापद आगै गिर ऊतंग ॥२२०७
ईन दोऊ पर्बत के आद-अंत, भर रही ओसदी[8] भंत-भंत[9]।
मृतसंजीवनि है जरी मित,, तेऊ मृतक जिवावत है तुरंत ॥२२०८
बिस्सल्या करनी सुनह बात, गहि सूंघत निकसत साल गात।
सोबर्नकर्नि है जरी सोय, धर घाव-बिथा[10] कौं देत धोय ॥२२०९

---

१ पाणि=हाथ। २ स्वस्थ। ३ दूर। ४ सेना। ५ सेवा। ६ वेला=समय।
७ जड़ी बूंटीं। ८ औषधि। ९ भांति-भाति। १० व्यथा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संधानी व्रत बपु करत संध, सूंघ तैं गंध ही के समंध।
सो पवन-तनय लावहु सँभार, चल चपल बेग ये जरी च्यार ॥२२१०
सब जीव ऊठै बंदर सरीर, बल बाँह तूंभ्त हनूमाँन बीर।
बायु के तनय तुम बेग-बाय.[१] ईहीं परी बखत करीयें ऊपाय ॥२२११
सीता रघुबर को मिटै सोच, पर जाय राखसी जात पोच[२]।
सुग्रीव जाँन अवसाँन सिद्ध, पूजहै बाँह पौरुख प्रसिद्ध ॥२२१२
अरु इंद्रजीत जय घटहि आस, अरू राँवन ह्वै है ऊर उदास।
ईह लंका जाँनहु बिजय आज, राजाँन बभीखन भयौ राज ॥२२१३
कारन है येते सुनहु कांन, हीय सोच बिचारहु हनूँमाँन।
सुन जाँमवाँन की बात श्राँन, मन-बेग चल्यौ ऊड़ हनूँमाँन ।।२२१४
सुरपथ[३] की बाढ्यौ बीच सर्न, तन तेज चढ्यौ मनु किर्न[४] तर्न[५]।
मनु गरुड़ ऊड्यौ आकास माँहि, छित बद्दर की जनु चली छाँहि ॥२२१५
किधु चक्र सुदर्सन बिस्नु कूर, प्रेरचौ दैतन पै हाथ पूर।
ऊतरचौ ईम हिम-गिर सीस आय, पहिचाँन न ओखद क्रमे पाय ॥२२१६
च्यार सै कोस में फिरचौ चक्र, सोधनै जरी कारन सबक्र।
पहिचाँन जरी की परी नाँहि, त्रन-बेली देखी दिव्य त्याँहि ॥२२१७
ऐंच कै श्रंग लीनौ ऊचाय, कूँदे नभ मारग दिघ्घ[६] काय।
सोभायमाँन दीसत सरीर, बिच हाथ प्रकासत सैल बीर ॥२२१८
घट दाँनव-जाती करन घात, हरि चले मनहु गहि चक्र हात।
ऊतरे लंक निरसंक आय, बीरासन बिच में बेग-बाय ॥२२१९
गिर पवन लगी सोगंध गात, मिल बंदर ऊठे अकसमात।
सुग्रींव राँम लछमन सहेत, हीय हनूँमाँन सौं बढचौ हेत ॥२२२०
सब बीर करन लागे सराह, वाह रे वाह हनूँमान वाह।
हनूँमान सबन सौं जोर हाथ, नम कै पग लागे अवधनाथ ॥२२२१
आज्ञा लै ताही गिर अमेट, थप्पौ हेमालय जाय थेट।
संका ईक यामें सुनहु सोय, क्यू राखस नाही जीयत कोय ॥२२२२
पहिलै सौं राँवन ईह प्रबंध, मर जाय जँहीं बोरै समंद।
रन-खेत न राखस रहन देत, खित[७] परे ऊठावत बीर-खेत ॥२२२३

---

१ वायु के समान वेग वाले। २ नीची। ३ आकाश। ४ किरण। ५ तरणि=सूर्य। ६ दीर्घ। ७ क्षिति=भूमि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सझ्झ डोरीवारे रहत संग, पातकी[1] न जीवै ईह प्रसंग।
संका की ऐसौ समाधान, बलमींक-मुनी भाख्यौ बिधाँन ॥२२२४

दोहा

जाँमवाँन कौ जाँनपन,[2] माँन कर्यौ हनूँमान।
बृद्धन कौं माँनत बड़े, याहो कारन आँन ॥२२२५
सब ही सैन कर कै समिल, कर्यौ हुकँम कपिराज।
सुनौ सुजन हनूँमाँन सब, अरथ-जुक्त कथ आज ॥२२२६
राँवन-भ्राता सुत मरे, दीयै न अंजुली-दाँन।
ऐसौ करहु प्रबंध अब, जाँनै सकल जहाँन ॥२२२७
मोटे छोटे कीस मिल, जोय मसाल जगाय।
रोकहु फाटक राज कें, सहर पना-समुदाय ॥२२२८

छंद मौतीदाँम

भई अधरात चले कपि भाल, मिलाय कै लाय जलाय मसाल।
रहे केऊ दाटक फाटक रोक, झलामिल कीनेऊ गौख[3] झरोक ॥२२२९
बढ़े बहु राजन-मंदर बाट, कपाटन आटन छाजन काट।
लगाय कै लाय बलाय निकेत,[4] सँभारत जारत बस्त्र-समेत ॥२२३०
सँजोवत सिदल तेल सुगंध, धुकावत जावत धूपहू धुंध।
कढै किसतूरीय और कपूर, जरावत केसर तेज जहूर ॥२२३१
पटंबर[5] अंबर लेय जलाय, गघंबर कंबर[6] कोन गिनाय।
अनूँपम स्वाद अनोअन[7] अंन्न, रखोरीय होरीय कीन रतंन्न ॥२२३२
सुबनं के चाँदीय के अय[8]-साज, कर्यौ बहु सिंदन[9] केर अकाज।
बचे हनूँमाँन की लाय की बेर, ढँढोर कै कीन बराबर ढेर ॥२२३३
जिहीं लख रोवत राखस-जात, अचाँनक होय गयौ ऊतपात।
बिना कोऊ साड़ीय[10] चोलीय बाँम, कढी केऊ नंग-धरंग सकाँम ॥२२३४

---

१ पापी, दानव। २ ज्ञान। ३ गवाक्ष। ४ स्थान। ५ रेशमी वस्त्र। ६ कंबल।
७ अन्यान्य=अनेक प्रकार। ८ लोहा। ९ स्यन्दन=रथ। १० साड़ियाँ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चले केऊ बालक पालक छोर, बकै पितु मात के नाँम बहोर।
ऊठे बहु राखस हीय ऊछंड, तपे तल देख दुखंड त्रखंड ॥२२३५
अजा केऊ खच्चर छोरत ऊँठ, ज्युँही हय हाथीय बँधन जूँठ।
झकोरन-झारन सौं झुलसाय, जरै केऊ बीच अँगारन जाय ॥२२३६
कुलाहल लंकपुरी सुन काँन, उछ्यौ दसकंध खता अवसाँन।
लखी चख लंकपुरी दव[1] लाग, बसंत में जेम पलास को बाग ॥२२३७
निहाँर कै कौतुक श्रीरघुनाँथ, हजारन बाँनन छंडेऊ हाथ।
गिरे ऊलका जिम जाय कै गोम, भरी जन लागीय पत्तन-भोम[2] ॥२२३८
जहाँ केऊ राखस बंदर-जात, बिड़ारन लागेऊ राखन बात।
सुकंठहु आपनी सैन सभ्भाय, खुलासय सासन दीन खिजाय ॥२२३९
पराजय जो कोऊ बंदर पाय, ईहाँ मुख मोहि दिखावहि आय।
दिखावहु प्राँन कौ ताहीय दंड, बचै नहि जाय चढै ब्रह्मंड ॥२२४०
सँभारहु मोरचा-मोरचा सोय, कढै नही राखस बाहर कोय।
सुग्रींव कौ सासन सीस चढाय, बढे सब बंदर पाव बढाय ॥२२४१
घिराय कै पत्तन बाटन घाट, करोरन तोरन और कपाट।
ठिले दल भीतर-बाहिर ठौर, प्रतोलीय[3] रोक चहूँ दिस पौर ॥२२४२
तप्यौ तन रावँन ताप तरुँन,[4] कह्यौ तब अंगज[5] कुंभकरंन्न।
बिचारहु कुंभ निकुंभ बचाव, ईहै ऊतपात कौ होय अभाव ॥२२४३
निदेसन[6] पाय कै कुंभ निकुंभ, सबै भट लै चले संग सतुंभ[7]।
जुपाखरु श्रीनत-अक्ष प्रजंघ, सभ्यौ फिर कंपन पौरुख सिंघ ॥२२४४
गरज्जन लागेऊ नाद गहोर बिध्वंसन[8] बंदर होय बहोर।
ऊँबारन देख बिसेखन आच, तहाँ बनचारीय सिंधन ताच ॥२२४५
पराक्रम एक न येकन पेल, झँमाझम मूसल भालन झेल।
चली अय-गोलन अंगन चोट, कँगूरन छाजन ऊपर कोट ॥२२४६
जहाँ तहाँ होवन लागेऊ जुद्ध, अगारन द्वार पगारन ऊद्ध[9]।
चंमाँचम सूलन हूल चँवोल, धँमाधम मुक्कन बज्जीय धौल ॥२२४७
निसाँचर जूटत कीस नियुद्ध, करै नख मारीय दाँतन क्रुद्ध।
हरोलीय देख खरौ हमगीर, बकारेऊ कंपन अंगद बीर ॥२२४८

---

१ दावाग्नि वन वह्नि। २ नगर-भूमि। ३ प्रवेशद्वार, गलियाँ। ४ तरुण = उग्र। ५ पुत्र। ६ आज्ञा। ७ समान मत रखने वाले। ८ विध्वंस के लिये। ९ ऊर्द्धव = ऊपर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गदा गहि कंपन अंगद गात, दई सिल सारमई[1] अवदात[2]।
लयौ कछू मोह ऊठ्यौ ललकार, पटक्केऊ ऊपर येक पहार ॥२२४९
मरचौ खल कंपन लागत मथ्थ, सझे जुध अंगद सौं समरथ्थ।
जहां लख अंगद कौं रन जीत, चढचौ रन श्रोनत-अक्ष सचीत ॥२२५०
बिड़ारेऊ अंगद कै तन बाँन, भयौ तन घायल रूप भयाँन।
अरचौ रन ताहुसौं संम्मुह आय, बड़े तरू पथ्थर कौं बरसाय ॥२२५१
कटे सर चाप निखंग करूर, सँभारीय खेटकहू[3] खग[4] सूर।
मिल्यौ सोई अंगद सौं रन-मग्ग, ऊठाय कै ढाल कौं खग्ग ऊदग्ग[5] ॥२२५२
गह्यौ तिह अंगद कूद गुसैल,[6] बिलग्गोय मानहुँ व्याल बिसैल।
लयौ खग खोस[7] दयौ ललकार, ढरचौ तिह कंध जनेऊ व ढार ॥२२५३
गिरचौ बिव टूक जुदौ हुय गात, ऊभै चख फेरत ही अररात।
ईहाँ खल मार कै अंगद ओर, मिले खल जाही के फारेऊ मौर ॥२२५४
जुपाखहू आय प्रजंघ जुरंत, दई फिर मार बुहूँन बुरंत[8]।
ऊभै भट राखस अंगद येक, दुबिद रू मैंद मिले ईत देख ॥२२५५
जहाँ परजंघ बढचौ कर जोर, अगंजित आयेऊ अंगद ओर।
करचौ तिह धारन खग्ग करग्ग, प्रहारन कारन थमेऊ पग्ग ॥२२५६
महाँबल अंगद मुक्कन मार, तँही धर डार दई तरवार।
दई खल मुक्कीय अंगद दाट, लगी सोई बीच में जाय ललाट ॥२२५७
परी तरवार कौं अंगद पेख, बकारत लिन्नीय दिन्न[9] विसेख।
तुट्यौ सिर तुंब्बीय[10]ज्यूं तरकाय,[11]गिरचौ तन रुंड धरा गुरकाय॥२२५८
जुपाखहू देख मरचौ परजंघ, सँभारेऊ पाँनप केसरि सिंध।
लयौ तिह खापन[12] खग्ग निकार, लई तिह अंगद की फिर लार ॥२२५९
परचौ बिच दौर महाँभुज पीन, दुबिदय मुक्कीय की ऊर दीन।
महाँबल आय मयंद मिलाय, पट्टक्केऊ भूँम झटक्केऊ पाय ॥२२६०
घसीटत मारेऊ धूर में धूर, बह्यौ तिह स्वास ऊसास बधूर।
सबै फिर चालीय राखसि-सैन, निहार कै कुंभ निकुंभ कौं नैन ॥२२६१
बढचौ रन कुंभ महा बरबीर, तहाँ दीय खेंच दुबिद कै तीर।
गिरचौ कपि लागत हीं गरराय, थँमे नह पांव हियौ थरराय ॥२२६२

---

१ लोहमय। २ उज्वल, तीक्षण। ३ ढाल। ४ खड्ग। ५ उदग्र, तीक्ष्ण। ६ क्रोधी। ७ छीन कर। ८ कठोर। ९ दी। १० तूंबा। ११ तड़क कर, टूट कर। १२ म्यांन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दुबिंद कौं देख मयंदहु दौर, ऊपार कै कुंभ दई सिल और।
दये सर पाँच सिला तिह देख, बिखेर कै कीनेऊ टूँक बिसेख ॥२२६३
हने फिर कुंभ मयंद हकार, सबै सर दिग्धमई[१] सिलसार[२]।
मयंद कै लागेऊ थाँन-मरंम, छिके तेऊ बीच बरंम[३] चरंम[४] ॥२२६४
दुबिंद कौं घायल किन्नीय देह, ईतै फिर देखेऊ मैंद अरेह।
मुरछ्छत मैंद करचौ सर मार, बढचौ खल पाँनप[५] कौ बिस्तार ॥२२६५
लखी गत मैंद दुबिंद की लार, हुई हुई भ्रातन की रन हार।
ऊभै भट अंगद-साँमाय येह सँभारेऊ अंगद पाय सनेह ॥२२६६
ऊबारन कारन अंग ऊठाय, बढे खल सम्मुह चाल बढाय।
जहाँ लख कुंभ महाँ वरजोर, दये सर अंगद कै तन दौर ॥२२६७
सिला तरू मारेऊ अंगद अंग, भयौ नह घायल कुंभ अभंग।
बिलोकेऊ अंगद क्रूर बयंड, चरख्खीय बाँन बरख्खत चंड ॥२२६८
विड़ारेऊ भाल में भ्रूंहन[६] बीच, खुच्यौ[७] तऊ ताहि निकारेऊ खींच।
छुट्यौ चख ऊपर कूरच बिच, निचोवन लाग निमेखन[८] निच ॥२२६९
परे खग[९] जेम कटी मनु पंख, ऊघार न सक्केऊ अंगद अंख।
ईतै लख अंगद की गत येह, कथा कपि राँम सौं जाय कएह ॥२२७०
जवै रघुवीर कही जँमुवाँन, अहो तुम जावहु ह्वं अगवाँन।
सँभारहु अंगद होय सहाय, जहाँ खल कुंभ बिड़ारहु जाय ॥२२७१
सुखेनहु आदक जावहु संग, जुह रहु बेग दरस्तीय जंग।
सबै बिध जूथप बुद्धि सयाँन,[१०] परट्ठहु आतुर क्रुद्ध प्रयाँन ॥२२७२
रजा रघुबीर दई ईम रार, हले त्रहु जूथप सैन हकार।
चले कपि कुंभ पै बीर चलाक, हरोलन बोलन की सुन हाक ॥२२७३
तज्यौ रन अंगद सौं ततकाल, बढचौ कपि सैन दिसा विकराल।
तजे सर कुंभ घने रन तिष्ट, सँभारत मारत धारत सिष्ट ॥२२७४
रूके त्रहु जूथपती बिच रार, बढे नहीं अग्र समग्र बिचार।
थुभै जल बाँधत पालीय थूल, ढबे ईम बंदर ढूलन-ढूल ॥२२७५
समंदर बार बढे कर सोर, छिलै मुरजाद कौं नाँहिन छोर।
हटी ईम देखीय सैन हलंत, बढचौ कपि-राज महाँ बलबंत ॥२२७६

---

१ बुझे हुए। २ लोहा। ३ वर्म=बख्तर। ४ चर्म=चमड़ी। ५ धनुष।
६ भौंहें। ७ चुभ गया। ८ पलक। ९ पक्षी। १० चतुर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मिल्यौ ऋहुँ जूथप सौं कर मेल, बराबर कारन अंगद बेल।
बढे ईन जूथप सौं बतराय, क्निारौय कुंभहु सौं कतराय ॥२२७७
जितै चल अंगद की ढिग जाय, करी तिह पीठ पछारीय काय।
चले फिर कुंभही पै रन-चाह, पराक्रम देखन बेपरवाह ॥२२७८
मलप्पेऊ आय मनौ मृघराज, गिरी पर देख खरौ[1] गजराज।
दए असकर्ण तरोवर दाट, झमेल कै झौरन-मौरन-झाट ॥२२७९
रह्यौ रुप राखस कुंभ रिसाय, सुग्रींव कौ देखत ही सुसताय।
लये सर चाप कोयै चख लाल, घुटी रिस बूँहन[2] ऊपर घाल ॥२२८०
प्रकंडन बृछ्छन किन्नेऊ पात, सतघ्नीय[3] जेम गिरे सरसात।
दए सर बंदर-राज की देह, सुग्रीव की दीख परे जिम सेह ॥२२८१
नहीं घबराएऊ कीस-नरेस, भयानक कुंभ कौ देखत भेस।
गए सनिकर्ष जहाँ कर गौंन, पराक्रम आप दिखावन पान[4] ॥२२८२
मरोर कै चाप लयौ गहि मुष्ट, करे त्रय टूक निवारेऊ कष्ट।
कपीस्वर दीरघ पिंजर कंध, दिखावत कुंजर जेम मदंध ॥॥२२८३
कहे फिर बोल अहो सुन कुंभ, निरंकुस तेरौई भ्रात निकुंभ।
सिरोमन जेष्ट तुहीं सिरताज, सुन्यौ सोई देखेऊ बीर-समाज ॥२२८४
पिता तुंहि कुंभकरंन प्रचंड, पराक्रम जैसौई है तुम पिंड[5]।
दिखावहु बाँहन कौ बल दिष्ट, ऊपाय कै वार बराबर ईष्ट[6] ॥२२८५
जिते रन अंगद जाँमहवाँन[7], सुखैनहु बेग दरसि समाँन।
करचौ अन्न जुद्ध दनो करतूत, बहे सुसताय भए मजबूत ॥२२८६
हमारेई देखत हौ अब हात, खरे हम देख बखाँनत ख्यात।
सुनै कपिराज के बिग-सवाल,[8] जगी ऊर कुंभ हुतासन-ज्वाल ॥२२८७
मिल्यौ कपिराज सौं मार मलंग, करे जिम पंछीय वार कुलंग।
झपेटन-फेटन दै कर झेल, खिलावन लागेऊ मल्लन खेल ॥२२८८
समेटत स्वास-ऊसासन संग, अरचौ कपिराज सौं कुंभ-अभंग।
ग्रसाग्रस दोवन[9] मंड गरूर, घसांमस होवत पाहन-धूर ॥२२८९
अटापट छोर ऊभै भट ओट, चटापट मांरन लागेऊ चोट।
भयौ बहु-बेर नियुद्ध[10] भयाँन, पराक्रम पाँनन सौं पहिचाँन ॥२२९०

१ खड़ा हुआ। २ भौंहों। ३ तोपों, बंदूकों। ४ हाथ। ५ शरीर। ६ इच्छित। ७ जामवंत। ८ व्यंग-वचन। ९ दोनों। १० भुजा-युद्ध।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बढ्यौ कपिराज महाँ बरबीर, समेट कै कुंभ अमेट[1] सरीर।
पट्टकेऊ सागर में गहि पाव, दिखाय कै एह ऊजागर दाव ॥२२९१
चल्यौ फिर नीर निचोवत चंल[2], गही कपिराजहु की तिह गैल।
दई ईक मुक्कीय की हीय दोट, बखःत्तर फाट गयौ अध बोट ॥२२९२
करक्कऊ हाड़ कि मारीय काय, भरक्कऊ रीस हीयौ भहराय।
ऊठे फिर सोचत पै घृत आग, बंधे कर मुक्कीय ज्यूँ बजराग[3] ॥२२९३
भुजंतर मारीय बाँह भ्रमाय, ऊगल्लत श्रोन भर्‍यौ अरराय।
गिर्‍यौ लहि मीच धरातल गात, मनौ गृह मंगल गोदीय-साँत ॥२२९४
छुट्यौ रन प्राँन कर्‍यौ तन छेह, डुलावत बाँहन हालत देह।
निहार कै ताहि कौ भ्रात निकुंभ, दिखावन आयेऊ पौरख दंभ ॥२२९५
खरे कपिराज लखे रनखेत, सबै कपि जूथप बीर-सहेत।
निहार कै आएऊ दौर नजीक[4], अटी पर-घातनहू अंतरीक ॥२२९६
जराव के काँम जरी बिच जाल, मढी पंच-अंगुल कंचनमाल।
लगे केऊ बंधन-संधन लार, जगामग दीसत जोत जुँहार ॥२२९७
कपाट के ठाट पंचानन[5] कंध, बँधे बिहु-बाँहन में भुजबंध।
किरीटहू मस्तक कुंडल काँन, लगी बहु भूखन[6] की लहराँन ॥२२९८
करी अय-कंकट सोबृन-काँम, लुकाएऊ तामह गात ललाँम।
लुहाँगीय ज्यूँ जम-डंड लखात, छटा मनु बद्दर में चमकात ॥२२९९
जगै बिन धूँम हुतासन-ज्वाल, कुमार की सक्तिहु तै बिकराल।
घुमाईय ऊरध ताकह घेर, फिरे कपि भालहु आँखन फेर ॥२३००
डरे रिखी गंध्रब दाँनव देव, भिर्‍यौ कपिराज पै बैर सभेव।
ईतै हनुँमाँन बिचालीय आय, पराक्रम देखन मंडेऊ पाय ॥२३०१
महाँबल देख खरे हनूँमाँन, दई परघातन मार निदाँन।
टुटी लग छातीय ऊपर टल्ल, अट्यौ हनूँमाँनहू क्रोध उभ्भल्ल ॥२३०२
भ्रमाय कै हाथ की साखन[7] भींच, बिड़ारीय[8] मुक्कीय की ऊर बीच।
बख्खतर टूट गये अय-बंध, सबै हीय हाड़न की खुल संध ॥२३०३
ऊठी हीय आग अंगारीय आँच, खरे हनुँमाँन लए कर खाँच।
चल्यौ अवलंबत पावन चाल, बढ्यौ हनूँमाँन कै क्रुद्ध बिसाल ॥२३०४

---

१ पूरे। २ वस्त्र, केश। ३ वज्रतुल्य। ४ पास-निकट। ५ सिंह। ६ आभूषण। ७ अंगुलियाँ। ८ प्रहार की।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दई फिर मुक्कीय की मुख दोट[1], हिले मुख दंत खुले दोऊ होट।
पट्टकेऊ भूँम झट्टकेऊ पिंड, बह्यौ-ऊड़[2] सास गयौ ब्रहमंड ॥२३०५

दोहा

कपिराजा हन कुंभ कौं, पाई जीत प्रमाँन।
जैसी रीत निकुंभ जहाँ, मार लयौ हनूँमान ॥२३०६
कुंभकरन के सुत कटे, खर कौ सुत मकराख।
बैर लैंन बंधव वरग, ऊर धारी अभिलाख ॥२३०७

छंद उधौर

वन तबही कंकट-व्यूढ[3], मकराक्ष बोल्यौ मूढ़।
सुन बढे पितु मोहि स्वाल, कर सासना[4] ततकाल ॥२३०८
रन करत वाजी रोप, कर राँम ऊपर कोप।
मोहि पिता कौं रन मार, बढ़ बैर प्रथम बिकार ॥२३०९
जिह कारनैं तुम जाय, कीय हर्नें सीय बलकाय।
तिह लैंन सीता तीय, बल[5] सझे भ्राताबीय ॥२३१०
आये सु कर ऊदमाद, बढ़ पुरी लंक बिखाद।
कट गई सैन कितीक, सोई भये लूंन[6] सिरीक[7] ॥२३११
मिल गये संगर-माग, ऊर बैर की नहीं आग।
ऊर बैर मेरैं अंत, धधकंत आग धुकंत ॥२३१२
खर बैर लेवन खौंत, अकुलाय मेरी आँत।
कट परे कुंभकरंन्न, तिह नीद आलस तंन्न ॥२३१३
निज बैर कुंभ निकुंभ, खिर परे दोऊ जय-खंभ।
पितु मोहि काज प्रबेक[8], अब भये बैर अनेक ॥२३१४
देखे सो मैं हूँ दीठ, ऊर जरत आग अँगीठ।
त्रसरा परे झर त्योंहि, मर जाहुँ संगर मांहि ॥२३१५

---

१ चोट = प्रहार। २ उड़ गया। ३ बख्तर-बंद। ४ शासन = आज्ञा। ५ सेना।
६ नमक। ७ समान। ८ मुख्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अथवा की राँम अभंग, जुर करहि मोसौं जंग।
खर हन्यौ त्याँही खेत, हन लैहु सैन-सहेत ॥२३१६
पितु होय ऊरन[1] पाप, ईह मुख दिखावहु आप।
सैंना भिजावहु साथ, हित कहत जोरत हाथ ॥२३१७
मकराक्ष सुनत बमंत[2], तहाँ लंकधीस तुरंत।
सझ सैग दीनी साथ, रन मारनै रघुनाथ ॥२३१८
रथ बैठ चाल्यौ रार, हय जोत भट हलकार।
बहु संख दुंदभ बाज, अरू भई भेर अबाज ॥२३१९
चढ़ चल्यौ आतुर चाल, सब अस्त्र-सस्त्र सँभाल।
बोल्यौ सु सुभटन बाँन, बरबीर तुम बलवाँन ॥२३२०
दल कीस मारहु देख, सुग्रींव लौ सबिसेख[3]।
मैं राँम लछमन मार, पितु बैर लेहूँ प्रचार[4] ॥२३२१
जो भई अपनी जीत, फल अमर ह्वै है क्रीत।
दुख मिटहि लंका द्रंग, सुख होय परजा संग ॥२३२२
ईह बात राखहु याद, सुख मिलहि फेर सवाद।
ईह सुनत सैन ऊमंग, सब चली आतुर संग ॥२३२३
भिर परी बंदर भाल, जाजुल्य ज्यूँ जमजाल।
जब होन लागौ जुद्ध, बढ बैर-भाव बिरुद्ध ॥२३२४
मकराक्ष लीनौ माग[5], जहाँ राँम लछमन जाग।
केऊ मार बाँन कठोर, जहाँ कीय प्रकासत जोर ॥२३२५
मुग्दरा भाला मार, धरत्तेसु कपि खग-धार।
सुग्रींव-वारी सैन, लागी ऊसासन लैन ॥२३२६
देखी सु रघुवर दीठ, कपि भये कुंजर कीट।
जब राँम आगै जाय, पथ गाड़ ऊभे[6] पाय ॥२३२७
कर चाप कौ टंकार, संधांन बाँन सँवार।
मकराक्ष देख मिलाय, पुन बचन कहेऊ पिराय ॥२३२८
सुन राँम मोहि सवाल, होय हेर पूरब[7] हाल।
खर-पुत्र मैं मकराख, सब सुभट पूछहु साख[8] ॥२३२९

१ उद्धार=ऋण-मुक्त। २ बात। ३ विशेष रूप से। ४ ललकार कर। ५ मार्ग। ६ दोनों। ७ पहले का। ८ साक्षी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तै हथ्यौ मेरौ तात, अन्याय कर ऊतपात।
खर हन्यौ जब तै खेत, नहीं जाय अजहु[1] निकेत ॥२३३०
रन करत कर-कर रोख, दिन-दिन बढ़ावत दोख।
बिपरीत तेरी बुद्ध, पहिचाँन परत प्रबुद्ध ॥२३३१
तुम करत जैसै तेख,[2] दिल हमही बाढत द्वेख।
मृग-माल[3] ज्यूँ बन माहि, पलभक्ष भूखौ पाहि ॥२३३२
ईम मिले मोकँह आज, धिन[4] भाग अवध-धिराज।
जम-लोक करनै जात,[5] भल जाहु संजुत भ्रात ॥२३३३
बहु सुने रघुवीर बोल, घट भीतरैं रिस घोल।
हस कही प्रबत हेर, फनि जेम आँखन फेर ॥२३३४
खर और दूखन खेल, पुन लख्यौ असरा पेल।
खल वँही देखहु ख्याल, बिच खेत खर के बाल ॥२३३५
बकबाद सौं बिद्वेख, बारचौ सु चहत बिसेख।
सुध भूल नावत सर्म,[6] धिक बीर तेरे धर्म ॥२३३६
जब सुने राँम जबाब, सर लए हाथ सताब।
दीने सु रघुबर देख, बपु[7] ताक-ताक बिसेख ॥२३३७
सर मार राँम सरीर, तोरे हजारन तीर।
ईत राँम जुटेऊ असंभ, खर-पूत ऊत जय-खंभ ॥२३३८
जम जुरे सम-सम-जुद्ध, क्रम[8] रोप कर-कर क्रुद्ध।
घट एक दै ईक घाव, पथ अग्र पर ठत पाव ॥२३३९
नही हटत एक निहार, हीय जाँन अपनी हार।
जहाँ राँम खर-सुत जुद्ध, सुर-असुर देखत सिद्ध ॥२३४०
रिन बढ़े राँम रिसाय, बहु बाँन दीय बरसाय।
कोडंड खर-सुत काट, अरू बाँन मारे आठ ॥२३४१
हय स्वारथी कर हाँन, पीलयौ[9] बाँनन प्राँन।
मकराक्ष रथ कौं मेल, भट ऊतर सूल भमेल ॥२३४२
चमकंत चपला चाल, जँनु कल्प[10] पावक-ज्वाल।
घूँमाय हाथन घेर, बोल्यौ सु ताही बेर ॥२३४३

---

१ अब भी। २ क्रोध। ३ हिरनों का झुण्ड। ४ धन्य। ५ तीर्थ-यात्रा।
६ लज्जा। ७ शरीर। ८ पग। ९ नष्ट कर दिया। १० प्रलय।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

महाँदेव दीनौ मोहि, तन सूल मारत तोहि।
सो लेहु राँम सँभार, ह्वै जुद्ध कौं हुसीयार ॥२३४४
जमपुरी भेजत जीव, पग माँड सीय के पीव।
ईह कहत छोरचौ आच्र,[1] तप-तपत बिजुरी तात ॥२३४५
देख्यौ सु रघुवर दीठ, आवंत तेज अँगीठ।
दीय च्यार[2] सर तिह देख, तक सीध कौं कर तेख ॥२३४६
तिह सूल कीने टूक, ऊलकाँनवारी ऊक[3]।
जगमगत फैली ज्वाल, कढ ऊपरा करवाल[4] ॥२३४७
धर परी मिल कै धूर, बह गई ऊठब धूर।
रन देख पौरूख राँम, कीय बड़ो अद्भुत काँम ॥२३४८
बोले सु जय-जय-बाँन,[5] सब कीस भाल समाँन।
खर-सुतन सुन खिसआय, ऊररचौ सु हाथ ऊठाय ॥२३४९
मुक्का जु बाँधी मूठ, खल गये आयुध खूट।
द्रग राँम आवत देख, अगनाख लीन असेख ॥२३५०
मारचौ सु खल ऊर माँहि, तूट्यौ सु पिंजर ताहि।
मकराक्ष लीनी मीच,[6] खर पिता जैसै खींच ॥२३५१

दोहा

मारचौ रन मकराक्ष कौं, राँमचंद्र राजाँन।
खर कौ अंगज खिर गयौ, पितु कौ बैर पिछाँन ॥२३५२
मरन सुन्यौ मकराक्ष कौ, राँवन दीनौ रोय।
इंद्रजीत आयौ ईतै, गहि पानप रिस गोय ॥२३५३

छंद त्रोटक

घननाद लख्यौ पितु सोक घिरचौ, कछु सोच मिटावन बोध करचौ।
पुन बोलेऊ राँवन पूत प्रतै, हीय की निज बात सुनौ हम तै ॥२३५४

---

१ हाथ। २ चार। ३ ज्वाला। ४ धुंवा ५ जय-जयकार किया। ६ मृत्यु।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खर-कौ-सुतहू खर जेम खुट्यौ, पितु बैर निकार नहीं पलट्यौ।
हम साच कहै सुन लेहु हितू, मकराक्ष भयौ अनकाज मृतू ॥२३५५
धुर दासरथी दोऊ भ्रात भ्रमी, भगनी पति जाचेऊ बुद्धि भ्रमी।
ऊररीकृत[1] नाँहि करी ऊन तौ, मन सौं सीय-भक्षन कीन मतौ ॥२३५६
नकटी कीय लछ्छन[2] सूपनखा, पहिचाँन कै नार अबद्ध पखा।
कुल-भूषन हाँन लखी कुल की, बिन नाक रु काँन सुसा[3] बिलखी ॥२३५७
झलकी खर कै हीय आग झला, बभकी[4] कुल-लाज की बैर-बला।
जब जोर जमाय चल्यौ जुर कै, भिजवाएऊ दूत तऊ भिर कै ॥२३५८
नय-बात कही रघुनाथ नरा, बहनी कौ करचौ ऊपहास बुरा।
तीय बैर में देहु हमैं तुम ही, कुस लात रहौ बनबास कँही ॥२३५९
खर-बात न माँनीय एक खरी, कर कौतुक ही फिर रार करी।
परवाह न राख दयौ पलटौ, वह मार लयौ लरकैं ऊलटौ ॥२३६०
झहराय गिरचौ हम पै झगरौ, सीय-काज बिगार भयौ सिगरौ।
खर बात सुनी मम आँत खिजी, ऊर में सीय-लावन की ऊपजी ॥२३६१
रमनी[5] न बनी[6] मम रावन पै, कहा राँम करे तिहकाँ मन पै।
खर-आद बिखाद की रेख खिचो, जोई बात न छूटत घात जची ॥२३६२
निज भ्रात कौ बैर निकारहुँगौ, धक संगर को ऊर धारहुँगौ।
हटकै[7] खर कौ जिह प्रांन हरौ, मकराक्ष दिखावत राँम मरौ ॥२३६३
खर बैर कौ मोही पै भार खरौ, कुल-राखस जास लिहाज करौ।
खर कौ सुतहू परगौ खिरकै[8], बसुधा पै परै फल ज्यूँ बर कै ॥२३६४
कछु आप नहीं मुख जात कही, रन की ऊर में अभिलाख रही।
अब राँम कौं मारन जात ऊतै, पर कौन दिखावहुँ बैर प्रतैं ॥२३६५
ईह कारन होत ऊदास ईतौ, खर के सुत सौं सुन खेत खतौ[9]।
घननाद घनी घबरावन की, पितु बात सुनी पिछतावन की ॥२३६६
सब रीत पिता समुझावन की, जहाँ बात कही रन-जावन की।
घननाद जितै सुत या घर में, पितु होय नचीत[10] बसौ पुर में ॥२३६७
पुन जाँन संबोधन कीन पिता, कहि कै ईतीहास अनेक कथा।
कीय ईष्ट-अराधन मैं करनी, बिध जुक्त न बात अजौं बरनी ॥२३६८

---

१ अंगीकृत। २ लक्ष्मण। ३ बहिन—शूर्पनखा। ४ भभक उठी। ५ रमणी—सीता। ६ वश में आई। ७ हठ करके। ८ मरकर। ९ क्षत या नष्ट हो गया। १० निश्चिन्त।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दसकंधर ख्याल दिखावहुगौ, जबही लरनै रन जावहुगौ।
किह काज पिता तुम जुद्ध क्रमै, जय राँम करूँ मम काँम जुमै[1] ॥२३६९
घननाद के बोल कढ़े घन से, बरखै घन लाय लगै बन[2] से।
कर कै पन या बिध बात कही, जय आस भई दसकंध जँही ॥२३७०
घननाद कौं दीन असीस घनी, अगवाँनीय राखस जात अनी।
बहुँ राँम बिड़ारीय बाँनन सौं, पलटैं तिह सोखहु प्राँनन कौं ॥२३७१
पहिचाँनहुँ तोर सपुत्र पनौ[3], घननाद है मोहि भरोस घनौ।
ईह राँवन बात सुनी ऊमग्यौ, लरनै की तयारी कै काज लग्यौ ॥२३७२
कीय मंत्रत अस्त्र रू सस्त्र कई, लरनै प्रतना[4] बहु संग लई।
चढ कै रथ चालेऊ बीर छली, थित ढाल जहाँ रन-ताल-थली ॥२३७३
कीय सैन बिदा कपि-काटन कौं, बढ आप लई नभ बाटन[5] कौं।
जुत लछ्छन राँम सौं जाय जुरचौ, धरके नहीं राँम धरोज[6] धरचौ ॥२३७४
लख बोलेऊ राँम लछ्मन सौं, घननाद ईहै गरुवौ घन सौं।
सर ब्रह्म बिनाँ न मरै सुपनै अब याद करूँ मन में अपनै ॥२३७५
तुम नाँ घबरावहु बार तिती, जुध सैन सँभारहु संग जिती।
कहि राँम प्रीयोग लगे करनै, धर धीरज ध्याँन लगे धरनै ॥२३७६
द्रग देख लई घननाद दसा, रघुबीर न छोरहि बीच रसा[7]।
पथ लीन गयौ सोई लंकपुरी, बिच हीय बिचार कै बात बुरी ॥२३७७
प्रतिकाय[8] सीया कर कै पुतरो, क्रतमी ईह मायक जाल करी।
फिर चालेऊ पछ्छम फाटक कौं, इह कावन मारूती दाटक कौं ॥२३७८
क्रतमी[9] सीय कौं संग मैंकु हनी, रूच मायक-जाल ही की रहनी।
हनूँमान लखे तिह आवत ही, समुहा चले सैन सझावत ही ॥२३७९
भट लै संग जाय समीप भिरे, पुन ज्याँनकी ऊपर द्रिष्ट परे।
पथरा पहिचाँन नहीं पटकै, हनूँमाँन सबै भट कौं हटकैं ॥२३८०
तरू-श्रंग गहे सु रहे तस[10] में, बिलखी सीय दुष्ट लखी बस में।
घननाद लख्यौ बल कीस घट्यौ, क्रतमी सीय कौ गहि सीस कट्यौ ॥२३८१
भयभीत जहाँ हनूँमान भये, कपटी घननाद कुबोल कहे।
लखीयें ईह सीय बिरोध लता, पुन पाछै रहे नहीं पेढ-पता[11] ॥२३८२

---

१ जिम्में। २ जल। ३ सुपुत्र–पन। ४ सेना। ५ बाट = मार्ग। ६ धैर्य।
७ पृथ्वी। ८ प्रतिमूर्ति। ९ बनावटी। १० उसी प्रकार हाथ में। ११ पेड़-पत्ता।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कुल राखस जाहि अकाज कीया, सिर काट लयौ हम आज सीया।
कहीयें रघुनाँथ कौं जाय कथा, जहाँ पैहौ बधाई कौ लाभ जथा ॥२३८३
भयभीत भयौ कपि साथ भज्यौ, गज केहर ज्यौं घननाद गज्यौ।
सद[1] ऊत्तर फा क रांम सुन्यौ, हनूंमांन जयौ किधु खेत हन्यौ ॥२३८४
ऊर में हुय संसय रांम ईतै, जम्वांन कह्यौ सब सैन जुतै।
हनूंमांन सहाय कौं जाहु हलै, गरजै घन ज्यूं घननाद गलै ॥२३८५
रघुवोर रजा कीय रिछ्छन कौं, बय बृद्ध बिचार विचछ्छन कौं।
मग पछ्छम फाटक के ऊमड़े, बन के तरू श्रंग ऊखार बड़े ॥२३८६
मग में हनूंमांनहु आय मिले, बपु चित्त की आकृत सौं बिचले[2]।
जंमुवांन मिले अरू संन जितो, पग लागेऊ आय के औघपती ॥२३८७
हनूंमांन कौं देख ऊदास हिया, सुख पूछन लागेऊ नाथ सीया।
हनूंमांन कही हम हार हुई, कछू नाथ सौं बात न जात कही ॥२३८८
सिय के हित ऊद्यम कीन सबै, वँह सीय सँघारोय दुष्ट अबै।
घननाद लखी ईन घातन सौं, बिलखाय फिरे हम बातन सौं ॥२३८९
हम तूट गयौ बल बांहन कौ, ईह बैर कौ फेर ऊगाहन कौ।
करनी करनीय सो आप कही, लरकै घननाद सौं बैर लही ॥२३९०
हनूंमांन की बात सुनीह हरे, रघुबीर सीया सीय नांम ररे[3]।
मुरछागत होय कै सोय मही, रमनी हित आंखन रोय रही ॥२३९१
मझ खेत जहां हनूंमांन मिले, सुन जूथप-जूथ जहां समिले।
रघुबीर उदासीय की रचना, बिलखायन जाय कहे बचना ॥२३९२
चख-वार[4] कोऊ छिरकावत है, सुचि केक सुगंध सुंघावत है।
कोऊ ताड़ीयपत्र[5] बयार[6] करं, पुन हात मलै कोऊ पाय परं ॥२३९३
लघु बधव नै सिर गोद लीया, समुझांवन लागेऊ नाथ सीया।
रघुबीर सधीर सु धर्मरता, खल रांवन अधम कोन खता ॥२३९४
फिर धर्म लहै धरमी फल कौं, कबहूं न तजै बल की कल कौं।
अधूमी फल पावहि अधूम कौ, करता निरनौ[7] गनीयें क्रम कौ २३९५
सुक्रती[8] तुम अक्रती फल साधन सौं, ऊपजे ततकाल अर.धन सौं।
सुक्रती तुम धर्म के सेबन में, दुज-भक्ति सहायक देवन में ॥२३९६

---

१ शब्द। २ विचलित हुए। ३ रटने लगे। ४ चक्षुवारि=नेत्रजल आंसू। ५ ताड़-पत्र=पंखा। ६ पवन। ७ निर्णय। ८ पुण्यवान्।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मिलहै सुख आखर[1] सुद्धमती, मिट जायगौ रांवन क्रूरमती।
धृम धार ना नैक धरोज[2] धरौ, किह कारन रांम बिलाप करौ ॥२३६७
कररे[3] केऊ लछ्छन ज़ाब कहे, रघुबीर जहाँ समुझाय रहे।
मुरचाँन[4] सँभार कै सुद्धमती, बहि आए बभीखन ऊद्धव्रती ॥२३६८
चहु मंत्रीय साथ मिले चलकै, बिच ले रघुबीर सीया बिलकै[5]।
लख एह बभीखन ख्याल नयौ, भ्रम कै क्रम सौं ईह हाल भयौ ॥२३९९
हनूंमांन हकीकत पूछ हितू, जर[6] सौं घननाद की बात जितू।
कपटी छल जाँन लई करनी, बिनती सब राघव सौं बरनी ॥२४००
रूच जाँनत है हम रांवन की, सीय पै हीय कौं सरसांवन की।
सीय कौं घननाद न मार सकै, जिह कारन क्यौं रघुबीर जकै[7] ॥२४०१
मघ खेत लखी सो मरी तौ मरी, क्रतमी[8] कोऊ सीय करी तौ करी।
हनूंमांन गयौ डहकाय हीया, सपनै न मरी अवधेस सीया ॥२४०२
डहकावहु नाथ नही डरकै, कल की अब जीत लहौ करकै।
कपटी घननाद करी करनी, भय दायक जाल कहै भरनी ॥२४०३
हनूंमाँन लखी सोई सत्य हुई, मन जाँनहु जाल असत्य-मई।
ईक बात कहै हम और अबैं, सुनीयैं रघुबीर बिचार सबैं ॥२४०४
घननाद है जालक[9] बीर घनौ, हटकै झटकै तिह प्रांन हनौ।
पहुच्यौ सु निकुंभला-थाँनक[10] पै, जहाँ होम करै बिध जाँनक पै ॥२४०५
कर देबीय पूजन कर्म क्रीया, लरनै कंहुँ अखहू सख लीया।
जुध मारचौ मरै नहीं बीर जई, द्रढ़ संगर की जिह नींम दई ॥२४०६
अब भेजीयें लछ्छन बीर ऊतै, जुर जावहिगे हम सैन जुतै।
सुन बात बभीखन राम सकौ, मनकौ सब संसय सोक मुकौ[11] ॥२४०७
छल छिद्र पिछांन कै जाँन छतौ, मघवाजित[12] मारन कीन मतौ।
कछू सोच सलाह की बात कही, समराथ सदा रघुनाथ सही ॥२४०८

दोहा

निकट बोल सुग्रींव नृप, आंजनेय जमुवाँन।
अंगद जूथप-जूथ अरू, पूछी बात पिछाँन ॥२४०९

---

१ अन्त में। २ धैर्य। ३ कठोर। ४ मोर्चा। ५ विलखे=विलाप करे, रोवे। ६ जड़ से, मूल से। ७ व्याकुल होते हो। ८ कृत्रिम=बनावटी। ९ मायावी। १० देवी का स्थान। ११ दूर हुआ। १२ इन्द्रजित्।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कह्यौ बभीखन हम करचौ, सोक दूर ईक साथ।
बोले नीत बिचार कं, राजा श्री रघुनाथ ॥२४१०
प्यारौ लछमन कठन पथ, जांनौ हम बिन जुद्ध।
मेघनाद कौ मारनौ, समुभहु विषम सनिद्ध ॥२४११

छंद वृद्धनाराच

बभीषनं सुन्यौ बिचार रांमचंद्र राह कौं।
निहार अंजनेय हू सुकंठ की सलाह कौं।
अभीत अंगनादहू जुरे सु जुथ्थ जुथ्थपं।
जहाँ सु जांमवांन जान बेस बृद्ध कौ बपं[1] ॥२४१२
बिचार कीन बीनती प्रबीन जोर पांन[2] कौं।
बनी सु एहु बार मेघनाद के मिलांन कौं।
करै सु हौंम की क्रीया नचीत[3] होय नेम सौं।
बिगार कीस बांहनी[4] खिजाय आय खेम सौं ॥२४१३
जुरै बकार जुद्ध कौं सनिद्ध जाय कै सही।
लयं सु सग लछ्छनं जुले मिले चलै जहीं।
जितीक देर कीजीयै जितीहु हांन जांनीयै।
कनिष्ट भ्रात कारनै अंदेस नाहि आंनीयै ॥२४१४
ऊचार जांमवांन आद बात कौं बिचार कै।
कनिष्ट भ्रात कष्ट में बिदा करे बकार कै।
निहार बायुनंद कौं कपीस सौं कही कथा।
बिचार कै बिसेख बीर जुथ्थपं जथा जथा ॥२४१५
बभीखनं प्रवेक बात मान कै मिलाईयै।
लिवाय संग लछ्छनं बिजै बड़ी बसाईयै।
बिचार रांमचंद्र बात साथ कीस सालु रे।
असंख सैन ऊझली गजाय सोर गाल रे ॥२४१६
चले सुभ्रात रांमचंद्र सैन कीस संग में।
जितै सु इंद्रजीत कौं ऊमंग धार अंग में।

---

१ वपु=शरीर। २ पाणि=हाथ। ३ निश्चिन्त। ४ सेना।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

टंकार चाप बाँन तिछ्छ[1] ईछ्छ[2] लीन आच[3] कौं।
बकार कीस रिछ्छ बीर बोल एहु बाच कौं ॥२४१७
प्रलंब ये कलंब[4] पाँन सिवि ज्वाल के समा।
जराय इंद्रजीत जेम गेरहू गमा–गमा।
अनीन भाल ऊछरीन लाल श्रोन[5] लागहै।
निकार प्राँन मेघनाद भीत दूर भागहै ॥२४१८
बभीखनं बताय देहु दुष्ट है कहाँ दुरचौ[6]।
निकुंभला-निकेत[7] धार-धूंम सौं भरचौ घिरचौ।
जितै–तितै चमूं[8] जमाय आप ह्वै ईकंत कौं।
ऊपास होम आँ मनाय तंत्र-मंत्र-तंत कौं ॥२४१९
बचै न कोट बात सौं छुपै-धुपै जुपै छली।
बढ़ाय सैन बंदरी थपै रूपै थली–थली।
बभीखनं बिसेस बाट घाट पै घुमाय कै।
रजा सु दीन रार की ऊछाह सौं ऊमाहि कै ॥२४२०
लगी सु फौज लूंम कै सुग्रीव की सरासरी।
ऊतैहु इंद्रजीत की भिरी चमू भराभरी।
ऊतंग श्रंग आच सौं ऊखार कै अनी–अनी।
प्रकड कीस प्रेर कै भिरे कपी भनी–भनी ॥२४२१
जहाँ बभीखनं जनाय बात राम बीर कौं।
घिरी सुसैन धार-घेर-धार लेहु धीरकौं।
प्रहार सैन आस–पास जास देख लीजीयै।
जितैक इंद्रजीत पैख राख रीन[9] खीजीयै ॥२४२२
बभीखनं बिसेस बाँन[10] जाँन लछ्छनं जही।
टंकार चाप बाँन तान लार सैन की लही।
वही सु बंदरावली रूकाय फौज रोक में।
लगाय मार लछ्छनं भराय चाप झोक में ॥२४२३
सुनंत इंद्रजीत सोर घोर मार घात कौं।
ऊठ्यौ सु रोस छाय अंग पेखनै प्रपात कौं।

---

१ तीक्ष्ण। २ देखकर। ३ हाथ। ४ बाण। ५ रक्त। ६ छिपा। ७ देवी-स्थान। ८ सेना। ९ रण, युद्ध। १० बाणी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिलोक फौज बंदरी समंदरी हिलोर सी।
जितै–तितै जहाँ–जहाँ लगी सु अभ्र[1] लौर सी॥२४२४
भुलाय होम भावना चलाय रथ्थ पै चढ्यौ।
भुजंग[2] भीम भेस कोन-भौन[3] तैं ज्युही कढ्यौ।
निहार नैन लछ्छनं कहै सु बैन कोप कै।
खरे रहे बिचार खेघ जाय जंग जोप कै॥२४२५
लुकाय कै निलाज[4] आज जंत्र–मंत्र जाल में।
करै जु ब्याज[5] काज कौं करूर अंत–काल में।
धरै न धीर धारना करै न बीर काँम कौं।
बच्यौ चहै बसाय बैर रोक जुद्ध राम कौं॥२४२६
बिलोक मोहि खेत बीच सम्मुहान सालुरै।
धिकार तोहि धर्म कौं कुकर्म होम क्यूँ करै।
सुनी सु मेघनाद आँन बात राँम भ्रात की।
पित्रव्य[6] देख पास कौं प्रकोप कोन पातकी॥२४२७
कह्यौ कका करचौ कहा ऊलंघ बंस आंमना।
मिल्यौ सु जाय सत्रु माहि काज–राज काँमना।
भतीज पुत्र भाव मैम रावनै गही मती।
दुराध ग्रेह भेद देत पाय लोभ प्रक्रती॥२४२८
लिबाय संग लछ्छनं बिगार दीन बात कौं।
रुलाय जात राखसो घुलाय बैर घात कौं।
करार बोल कौं कहै जती ईहै जुरचौ-जुरचौ।
सहेत भ्रात साँकरै मिल्यौ बच्यौ मरचौ-मरचौ॥२४२९
परंतु तूं करंत पाप काँम ये अहो कका।
मिलाय देत मीच में धँधूंन चाप दे धका।
बभीखनं भतीज मेट बुल्लयौ बराबरी।
पिता तिहार पातकी कहै न क्यौं कराकरी॥२४३०
अधर्म कौ ऊपाय तीय पार की सीया तिनै।
बसाय बीच बाग में संकष्ट दे सनै-सनै।

१ बादल। २ सर्प। ३ भवन का कोना। ४ निर्लज्ज। ५ कपट। ६ चाचा, विभीषण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विदेह-जाय[1] तीव्रता रुकी सु सत्य राह में।
कही सु दैन कारनै सबंधु कौं सलाह में ॥२४३१
मिटाय कै मृजाद माँन भंग कीन मोहि कौं।
ऊराहुना[2] कहंत आज तोलनाँ[3] हितोहि कौं।
सतोगुनी सुभाव मोहि तात तो तमोगुनी।
ईहै बिरोध आदसौं सही ऊदंत कौं सुनी ॥२४३२
पिता धरोज पुत्र कौं कहौ न जाय काँयरे[4]।
सुधार रामचंद्र संध नैक हाँन नाँहि रे।
कलंक मोहि नाँहि कोय लोभ नाँहि लंक कौ।
बिनास कीन बंस कौ बिकार बंधु बंक कौ ॥२४३३
धरोज सत्य धर्म कौ सदा हमै सुभाव सौं।
धरोज राँम धारना भयौ सरंन्न भाव सौं।
खिसाय इंद्रजीत खीज बात पै बभीखनं।
चढाय चाँप कौं चछोह लाग कीन लछ्छनं ॥२४३४
जहाँ सु अंजनेय जाँन लेय पीठ लछ्छनं।
अरे सु संम्मुहाँ अभंग बीरता बिचछ्छनं।
बिलोक बज्रकंकट[5] करूर बारता कही।
नजीक मेघनाद कौं निहार कै टरै नही ॥२४३५
पिराय नागपास सौं जराय पूंछ ज्वाल में।
चढाय पीठ लछ्छनं चलंत बक्र चाल में।
सबंधु लेय साँकरै गिराय खेत गाज्जयौ।
जई सु इंद्रजीत सौं संग्राँम आय समझ्झयौ ॥२४३६
कनिष्ट राँम कोपकै करै कहा लरै कही।
जुरै न जेष्ट जुद्ध में निसंक मैं डरौ नही।
जितेक इंद्रजीत नै कठोर बोल के कहे।
बिचार लछ्छनं विवेक क्रूर बात ना कहे ॥२४३७
कनिष्ट राँम कोप कै बदे सु मिष्ट बात कौं।
कहंत आप कीरती हलाय क्यौ न हात कौं।

१ जानकी। २ उलाहना, उपालम्भ। ३ ठोलना, व्यंगवाक्य। ४ क्यों।
५ हनुमान्।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कठोर बोल कै कहै जई न होय जुद्ध कौं।
वृथा कथा बिचारना बिगार देत बुद्ध कौं ॥२४३८
लगे सु बोल लछ्छनं अंगार जेम आगकै।
प्रहार बाँन पाँन सौं जटोस[1] रीस जागकै।
कनिष्ट-राँम[2] काय बायतं[3] दले बचायकै।
दिखाय दाव दूर पै रहे खरे रूपाय कै ॥२४३९
कनिष्ट-राँम कोप मेघनाद कौं मिलाय कै।
दये सु पांच बाँन देख होय पै हुलाय कै।
जरे सु तर्न-किर्न[4] जेम पर्न स्वर्न पूरता।
धरी धरोज धारना संभाय अंग सूरता ॥२४४०
तहाँ कलंब तीन ताक लछ्छनं लगाय कै।
खरौ भयौ बिचाल खेत रथ्थ पै रुपाय कै।
कनिष्टराँम ज्यूं कुपे जुपे सु ईंद्रजीत ज्यूं।
रुपे मनौ मृघंद्र रार अंग सौं अभीत ज्यूं ॥२४४१
सँमाँन मेघ सालुरे बढ़ाय धार बाँन सौं।
ऊझेल एक-एक पै प्रहार देत पाँन सौं।
कनिष्टराँम सिष्टकौं मिलाय बाँन मुक्कयौ।
जक्यौ[5] सु इंद्रजीत धूंन सीस रीस धुक्कयौ ॥२४४२
बिवर्न होय बक्र तुंड[6] धूज अंग घेख सौं।
ससीम आय सम्मुहा भुजंग काल भेस सौं।
घुलाय रीस घूंमकं ऊघार लाल आंख ज्यूं।
दिखायकं डराँवनी प्रसूंन केल पाँख ज्यूं ॥२४४३
लख्यौ न मोहि लछ्छना संग्राँम बीच सबरी[7]।
गन्यौ न नैक गौर बंक रूर जात कर्बरी[8]।
चलाय आप चोक मैं मिलाय बाँन माँरना।
खरे भये रहौ खरे धरोज राख धारना ॥२४४४
भिजाय कै क्रतत-भौंन[9] फेर पीठ फेरहूँ।
चढ्यौ चछोह तोह छोह हीय दीठ हेरहूँ।

---

१ महादेव। २ राम से छोटे, लक्ष्मण। ३ वायुबाण। ४ तरणि किरण = सूर्य-किरण। ५ विकल हो गया। ६ मुख। ७ रात्रि। ८ राक्षस। ९ यमलोक।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बढ़ाय बात बेर-बेर बोल कै बराबरी।
बहाय सात बाँन भेट लछ्छनं भराभरी ॥२४४५
मिलाय सिष्ट मारुती निकार तीर नावकं[1]।
दये सु पंच-दून[2] ते प्रकास जेम पावकं[3]।
बभीखनं बिसेस बाँन सो दये बकार कै।
परे नजीक आसपास लाग कै लिगार कै ॥२४४६
कनिष्ट राम कोप कै जबाब ए कहे जही।
अनाह जेंम बाँन तुछ्छ सूर-मान दे सही।
बिलोक मोहि बाँन बेग सीख लेहु सूरता।
कहै कुबोल नाँहि कौंय[4] धर्म नाहि धूरता[5] ॥२४४७
ईतीक्र बात ऊचरी प्रकंड देय पिंड़ कै।
सनाह तोर दीन संग अंग सौं ऊछंड कै।
गिरयौ रगत्त गात सौं दकूल भीज देह के।
समाँन प्रात सूर कै लखाय लाग लेय कै ॥२४४८
तजे कलंब ताक-ताक लछ्छनं लगाय कै।
बरंम्म तोर बेग सौं चरंम्म[6] लौ चुभाय कै।
अंनीन के मुखी[7] ऊभै-ऊभै भिरे ऊछाह सौं।
बिजै हितू ऊभै बली चले सु चित्त-चाह सौं ॥२४४९
ऊभै भुजंग आकृती ऊभै जनूंन आँनकै।
मिले ऊभै मदोनमत्त व्याल[8] हूँ बिधाँन कै।
ऊभै चलाक आव के ऊभै कजाक अग के।
ऊभै कंठीर[9] ज्यूं अरे रगे सु बीर रंग के २४५०
ऊभै कलंब औसरे[10] झरी तरी झुकाय कै।
ऊभै भरोस आपनै रहे खरे रुकाय कै।
ऊभै करंत बार फंऊ भैत कै ईकै-ईकै।
ऊभै हटै न एक सौं थिराय[11] ना जकै-थकै ॥२४५१
जितै हू मेघनाद जाय मारुती तितै मिलै।
चलाय मेघनाद चोट देख लछ्छनं दलै।

१ छोटे तीर। २ दश। ३ अग्नि। ४ किसी को। ५ धूर्त्तता। ६ चमड़ी ७ मुखिया। ८ मस्त हाथी। ९ सिंह। १० अवसर पाकर। ११ ठहरते।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऊड़े चहै अकास प्रेर बाज सूत पंद ज्यूं।
लगाय अंजनेय लात गेर देत गेंद ज्यूं ॥२४५२
रचंत मेघनाद रार लछ्छनं ज्युंही लरं।
ईलात[1] चक्र आकृती फलंग मारुती फिरं।
ऊभैन जुद्ध आहुटे फिरे न पीठ फेर कै।
लरे अरे लगालगी घुमंड घेर-घेर कै ॥२४५३
ऊते[2] ज बंदरावली इते ज राखसी-अनी।
तमासबीन ज्यूं तकै घिराय साँकरं[3] घनी।
बिलोक कै बभीखनं बदे[4] सु बीच बाहनी।
चमूं मिलाय निश्चरी ढँढोर मार ढाहनी ॥२४५४
करे बिदा अनेक कीस आप चाप आच लै।
तजे अनेक ताक कै निखंग सौं नराच लै।
भजाय दीन भीरु कौं लगाय बाँन लाग के।
अनेक कीस ऊपटे अंगार जेम आग के ॥२४५५
जने-जने जितै-तितै रूपे अभंग रार कौं।
निहार निस्चरावली मड़ी ऊमंग मार कौं।
निसंक मेघनाद कौं कका करूर कोप कै।
कहे सवाल कोप कै रुकाय पाय रोप कै ॥२४५६
भतीज मोहि मंदभाग आज लछ्छनं अरचौ।
बचै नहीं बिचार लेहु मौत के बिना मरचौ।
सुभट्ट सैन-सैनपं कटे कटे सबै कटे।
इहै निखोध[5] ऊबरचौ लरंत पै लटे-लटे ॥२४५७
बिड़ार देहु बाहनी नजीक मेघनाद की।
बिखाद जाय बाट कौं बुन्याद येह बाद[6] की।
बभीखनं सुनत बात जांमवांन जान कै।
हकार रिछ्छ हल्लयौ अगोट लंक आँन कै ॥२४५८
रहे सु कीस राह रोक घाट-घाट घेर कै।
जमात जातधांनु की फसाय बीच फेर कै।

---

१ पृथ्वी। १ उधर। ३ संकीर्ण = पास। ४ कहे। ५ निष्कर्ष। ६ झगड़े।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लगे लराक[1] लार लै कजाक कीस क्रुद्ध मैं।
हड्ड बीर हाक की जराक मार जुद्ध में ॥२४५९
तराक ताक-ताक कै फिराक देत फेट कैं।
धराक धाँम धूँम की भराक[2] सेनु भेट कैं।
अरे अराक आय कै सराक छोर संक कौं।
लगा लगी न जाँन लीन लाख कोस लंक कौं ॥२४६०
मिलाय रिच्छ मालवाँन राखसी अनी रुकी।
रूपे करूर कीस रार मार कै धकामुकी।
बिसाल सैल बृच्छ की झुकी जहाँ झराझरी।
ससीम ईन्द्रजीत-सैन बाहुरी[3] बराबरी ॥२४६१
सँभार डाँग सबेला ईभार जेम आहुरे।
निकुंभला-निकेत[4] सौं बिसेख बीर बाहुरे।
प्रलंब हाथ प्रेर कै कलंब की झरी करी।
मनौ घुमंड मेघमाल आय धार औसरी ॥२४६२
भये सु कीस भालहू बिहाल[5] जाम्हि बेरमें।
लखे सु नैन लच्छ् छनं ईखू[6] घिरे अँधेर में।
मलंग पाय मंड कै जुरे सु ईन्द्रजीत सौं।
जमीन पै जमे जहाँ रचाय रार रीत सौं ॥२४६३
सहाय जाँमवाँन संग मारूती चले मिले।
बभीखनं जुतं बिसेस राखसी चमूं रले।
संभाय साँग सबेला त्रसूल डाँग तोल कैं।
मड़ी प्रकंड डंड मार बाक बोल-बोल कैं ॥२४६४
खनंक बाढ खग्ग की झनंक बर्म[7] झेननौ।
दिखावनै लगे वहूँ खिलार[8] बीर खेलनौ।
जितै-तितै जुरे जिते मतै-मतै मिलाय कै।
प्रहार येक-येक पै जुहार लेत जायकै ॥२४६५
जुरे सु अंध-धुंध जुद्ध आस छोर अंग की।
लराक लुथ्थ-बथ्थ लाग आस जैं उमंग की।

१ योद्धा। २ तत्काल। ३ वापिस लौटी। ४ देवी का मंदिर। ५ विह्वल। ६ इषु=बाण। ७ बख्तर। ८ खिलाड़ी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भिरे सु कोस भालहू कराल क्रुद्ध कर्बुरा[1]।
गुसैल बीर गर्गराय झोक देत झर्झरा ॥२४६६
ज्युहीं मिलाय ईन्द्रजीत लछ्छनं ऊतै लरै।
परै प्रहारं कंकपत्र[2] अभ्र जेम ऊल्लरैं।
ऊठै अकास ज्वाल-आग भाल भाट भेट की।
चमंक बीज ज्यूं छुटै ज्वला कला-क जेठ की ॥२४६७
गिरंत बाँन गैंन[3] सौं अरूझ कै ईतै-ऊतै।
भराय भूंम भार सौं प्रहार के प्रतै-प्रतै।
जनाय सिष्ट जोरनौ न छोरनौ न चाप सौं।
चिहूंट जेह चाढनौ न काढनौ कलाप सौं ॥२४६८
भनंक पंख भ्रंग की सनंक बाँन सोक की।
तमंक ज्यूं तुंजीह[4] की घनंक बाज घोक की।
ईला[5] रू आसमाँन दीठ येक रूप देखीयै।
चलंत दीप्त चाल बाँन-बाँन पै बिसेखीयै ॥२४६९
लखाय मेघनाद नाँहि लछ्छनं लखाय[5] ना।
करूर अंधकार में दिनेसहू दिखाय ना।
मचाय माँस मेदनी[6] रचाय श्रोन रंग सौं।
गचाय गूद गार आसराँन[7] कीस अंग सौं ॥२४७०
कनिष्टराँम कोप मेघनाद पै करचौ मतौ।
मृगिंद खीज कै मनौ चल्यौ गजिंद्र पै छतौ।
ज्युहीं मिलाय जाय बाँन झोक रथ्थ बाज[8] कै।
संघार कीन स्वारथी गरूर नाद गाज कै ॥२४७१
निहार मेघनाद रथ्थ स्वारथी गिरचौ रसा[9]।
बंधाय हाथ बाग दूर देखनौ दिसा-दिसा।
चलाय बाँन चाल-बाज चाल के बिधाँन सौं।
लगाय बाँन लछ्छनं प्रटचौ सु आसमाँन सौं ॥२४७२
लखे जु नैन लछ्छनं ऊभैहू काँम येक सौं।
कनिष्टराँम लाग काँम बीरता विवेक सौं।

---

१ राक्षस। २ बाण। ३ गगन। ४ प्रत्यंचा। ५-६ पृथ्वी। ७ राक्षस। ८ घोड़ा। ९ पृथ्वी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जबैं सु बाग ताँन जात ईन्द्रजीत आच[1] सौं।
मिलाय कै महाँरथी बकार लेत बाच सौं ॥२४७३
चलाय बाँन कौं चलै घलै तुरंग घात कौं।
चलाक बीर लछ्छमं हलाय येम हाथ कौं।
जहाँ सु ईन्द्रजीतहू बिहाल होय बिफुरचौ।
कितीक बेर क्रुद्ध सौं लगाय पैज कौं लरचौ ॥२४७४
जक्यौ कछूक ईन्द्रजीत जाँन जुथ्थ-जुथ्थपं।
लगाय मार घेर लीन कूद कै घनैरूपं[2]।
चपेट कै तुरंग च्यार मार क मलामली।
कुढंग रथ्थ कौं करचौ चले नपै चला-चली ॥२४७५
चल्यौ सु मेघनाद छिप्र[3] लंक रथ्थ लैन कौं।
परी न जाँन आसपास सर्व कीस सैन कौं।
सुबर्न कौ जटचौ सतंग[4] नूत[5] सूत[6] है नये।
अरोह फेर आयगौ जुरंत कीस के जये ॥२४७६
सजोर घोर होय सोर आठ ओर येक सौ।
मंदोदरी--तनै मढचौ भुजंग काल भेख सौ।
खरे लखे बभीखनं लगाय बाँन लछ्छनं।
जितंक देख जुथ्थपं बढ्यौ अगै बिचछ्छनं ॥२४७७
अनेक कंकपत्र आच ऐंच चाप ऊझले।
बनाय लछ्छ बदरा मिले जही दले मले।
ढवे न पाव ढाव कै सताव भाग कै सबै।
लुकाय पीठ लछ्छनं जके कछू रुके जबैं ॥२४७८
कनिष्टराँम कीस कौं लये सु पीठ लार कै।
अगै-अगै बढे अनी धनंक बाँन धार कै।
निहार मेघनाद कौं प्रहार दीन पूर कै।
बढाय दीन बाँन धाँम-धूंम सौं धरूर कै ॥२४७९
कलंब[7] चाप काढ कै दये गिराय दूर कौं।
धनंक और धार कै गह्यौ महाँ गरूर कौं।

---

१ हाथ। २ मेघनाद। ३ शीघ्र। ४ रथ। ५ नये। ६ सारथि। ७ बाण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दयौ सु काट दूसरौ लगाय बाँन लछ्छनं।
दये सु पाँच बाँन देह ताक-ताक तिछ्छन ॥२४८०
बरंम[1] तूट बोखरचो चरंम[2] हाड़ चूर कै।
निसार श्रोन नीसरचौ प्रवाह पूर-पूर कै।
तहाँ धनंक तीसरौ लयौ सु मेघनाद नै।
लगा-लगीय लछ्छनं बह्यौ समूह बादनै ॥२४८१
अनेक बाँन ऊझले कनिष्टरांम काय कौं।
लई न ओट लौट कै प्रचंड मड पाय कौं।
सहे कलंब साल कौं बहे न बीर बिम्मुहा[3]।
जुटे सु ईन्द्रजीत सौं संभार चाप संम्मुहा ॥२४८२
सुभट्ट लीन सौं करै जितेक इन्द्रजीत कै।
प्रलंब के कलंब प्रेर चोट दीन चीत कै।
प्रहार सैन आसपास मेघनाद मेल कै।
अनेक बाँन ऊझले झुकाय चाप झेल कै ॥२४८३
नजीक[4] मेघनाद कौं बिलोक बाँन बाहि कै।
ईभार[5] ज्यूं अग्राज कै खरे भये खिजाय कै।
असक्ति होय इँद्रजीत फेर ऊठ बिफुरचौ।
प्रहार कीन कंकपत्र लछ्छनं घनौ लरचौ ॥२४८४
लगाय बाँन लछ्छनं संघार लीन स्वारथी।
तुरंग भाग रथ्थ ताँन मोर कै महाँरथी।
दये कलंब पंचदून बंधु रांम बर्म पै।
करी भिरी न काट-काट छेद कीन चर्म पै ॥२४८५
तुरंत बाँन तीन सीस मार कै सरासरी।
दिखाय दीन दौर-दौर बीरता बराबरी।
जितैक रांमभ्रात जोप कोप कै कृंतत[6] ज्यूं।
तजे सु वक्र तुंड[7] पै बिढाय व्याल-दंत[8] ज्यूं ॥२४८६
ऊभैहू बीर येक से लरे-भिरे लगालगी।
कराल झाल क्रुद्ध की जगी हीयै जगाजगी।

---

१ बख्तर। २ चर्म=चमड़ी। ३ विमुख। ४ पास। ५ इभारि=सिंह। ६ यमराज। ७ मुख। ८ सर्पदन्त।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लरंत देख लछ्छनं बभीखनं परच्यौ बिचा।
भतीज कौं बकार कै चलाय कै अरचौ चचा ॥२४८७
भतीज औ चचा भिरे करूर पूर क्रुद्ध में।
रिसाय[1] कै खरे रहे जमाय पाय जुद्ध में।
बभीखनं बिलोक तीन बाँन दै तरा-तरी।
जुट्यौ सु जाय जुथ्थपं सँभार कै सरासरी ॥२४८८
बभीखनं अगैं बह्यौ गहै गदा गरूर सौं।
तुरंग अंग ताक कै दई मिलाय दूर सौं।
मुरे तुरंग मार सौं गदा प्रहार सौं गिरे।
निहार मेघनादहू अभीत रथ्थ ऊतरे ॥२४८९
गहाय सक्ति गेर नै चलाय ऊपरै चचा।
बलाय केब :धूरसी बिलोक लछ्छनं बिचा[2]।
अचूक बाँन दै अनेक तोर कीन टूक के।
गिराय भूँम गोम सौं ऊबार जाग ऊक के ॥२४९०
चचा लये चुने-चुने दये भतीज देख कैं।
जुरे हीयै कलंब[3] जाय छेद कीन छेक कै।
रिसाय पुत्र-रांवनं क्रतंत-बाँन[4] काढ़ कै।
बभीखनं दयौ बकार चाप बीच चाढ़ कै ॥२४९१
लख्यौ कलंब लछ्छनं क्रतंत-मंत्र कारनं।
कलब लै कुबेर कौं बहाय कीन बारनं[5]।
अरूझ बाँन ऊपरा धरा परे धकाधकी।
जहाँ सु इंद्रजीत कै परी हीयै सकापकी[6] ॥२४९२
अराध रुद्र-अस्त्र मेघनाद बाँन मुक्कयौ।
लख्यौ बलाय लछ्छनं भरंत द्रंग झुक्कयौ।
निकार बारनास्त्र[7] लेयं लछ्छनं लगाय कै।
अरूझ कै गिरै ऊभै भये सुनष्ट भाय कै ॥२४९३
ऊठाय अग्नि-अस्त्र कौं मंदोदरी-तनै मुक्यौ।
जहाँ सु सूरजास्त्र जोर रांम बंधु नै रुक्यौ।

---

१ क्रोधित होकर। २ बीच में। ३ बाण। ४ यम-अभिमंत्रित बाण। ५ रोकना
६ उथल-पुथल। ७ वरुण-अस्त्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जहाँ सु इंद्रजीत आसुराख पेल आच सौं।
महेश्वराख लछछनं जही हन्यौ सुजाच सौं ॥२४६४
निसंक[1] बीर मेघनाद बंधु-रांम ज्यूं बली।
रूपै सु पैंज[2] रोप कै थपे अनी थली-थली।
जुरे सु जुद्ध जोवनं[3] अदेव-देव आय कै।
मिलाय आसमाँन में बिमाँन कौं बढ़ाय कै ॥२४६५
सुरिंद्रहू मुनिंद्र स्याहि राँमभ्रात संजुरे।
गिरीस देख गौरहू असीस बाच ऊच्चरै।
बढाय ओज[4] बीरता सधीरता संभाय कै।
तूनीर काढ तिछ्छनं चुन्यौ कलब चाहि कै ॥२४६६
बँधे सुबर्न बंध संध-संध में समो-समा।
सुबर्न बाज-संजुता अनूंप-रूप ओपमा।
बिसैल ब्याल बेख ज्वाल-माल ज्यूं जराँवनौ।
बिपक्ष लक्ष बेध दीठ देख तें डरावनौ ॥२४६७
चढाय चाप चाँप कै कलंब ताँन काँन लौं।
निगर्न[5] कौं निछेद कै पीयौ सुपष्ट प्राँन लौं।
ऊड़ाय सीस ऊपरा गिराय दीन गात कौं।
लई सु जीत लछ्छनं[6] बिख्यात राख बात कौं ॥२४६८

दोहा

इंद्रजीत इंद्राख सौं, लछ्छन मारचौ लाग।
सुर मुनिंद्र बरखे[7] सुमन, राँम लखन अनुराग ॥२४६६
साल मिट्यौ सुरराज को, सब दिसपाल सहेत।
भये खुसी कपि भालहू, खल बिडार रन-खेत ॥२५००
सकल कीस लछमन सहित, डरे न आये देख।
बढ्यौ हरख रघुबीर कै, पाँनप भ्रात परेख ॥२५०१
खबर कही रन-खेत की, राँम बभीखन राज।
मोद पाय लछमन मिले, सुध लै कीस-समाज ॥२५०२

१ निःशंक। २ पग=पैर। ३ देखने। ४ ओज=बल, तेज। ५ गरवन।
६ मू० प्र० लछ्छ। ७ वर्षा की।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भज निकुंभला-भवन[1] सौं, राखस जाती रोय।
लंक गये फल अजय लै, करत कूक सह कोय ॥२५०३
सोच रांम कौ समट कै, गयौ लंकपति ग्रेह।
हा-हा-रव[2] होवन लग्यौ, आठू दिसा अछेह ॥२५०४
मत्री पुरजन सब मिले, पहुचे राँवन पास।
मेघनाद सुन मरन कौं, अत चित भये ऊदास ॥२५०५
पुरजन अरु मंत्री प्रतै, बोल्यौ राँवन बात।
मोर ग्रेह बिच में थली, ईह कीनो ऊतपात ॥२५०६
आज मंथली मार अब रांम करहुगो रार[3]।
रांम देखतै रांम कौ, भ्राता भूँजहु भार ॥२५०७
खल ऊठ्यौ लै खड़ग कौं, सीता करन संघार।
औरन बोल्यौ येक हु, देख क्रुद्ध दरबार ॥२५०८
महांपारस मंत्रो महां सतबादी रु सयाँन।
बोल्यौ नीत बिचार कै, प्रथम जोर जुग पाँन[4] ॥२५०९
बेद भेद जाँनत बिवध, राजा राँवन राज।
कहनी ऊचत न आप कौं, अनुचित बाँनी आज ॥२५१०
रांम लखन कौ मारनौ, उचित बात है येहु।
आज चतुर्दसि तिथ अबै, लरनौ हम लख लेहु ॥२५११
काल अंमावस कौं करहु, प्रहरन काज प्रयाँन।
रांम लखन कौं हनहु रन, येह सिद्ध अवसान ॥२५१२

छंद त्रोटक

सीय-मारन-कारन रोख सज्यौ, महांपारस बात सुनी मुरझ्यौ।
सीय-मारन बात तजी सब ही, जीय आग बलाय जगी जब ही ॥२५१३
मरनै सौ बचे केऊ क्लीवमती[5], परचाय बुलायेऊ सैनपती।
जिन कौं दीय सासन[6] जोर जहीं, रनवास त्रीया हम रोय रही ॥२५१४
सुसताय सबै समुझावहुगौ, जुध कौं करनै कल जावहुगौ।
जुध कौं करनें कपि साथ जती, प्रतनाजुत[7] जावहु सैनपती ॥२५१५

---

१ देवी के मंदिर। २ हाहाकार-शब्द। ३ युद्ध। ४ दोनों हाथ। ५ कायर।
६ आज्ञा। ७ पृतनाजुत=सेना के साथ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुन सासन लंकपती सबही, जुध काज तयार भये जबही।
समझै कंऊ लागेऊ सिंदन[1] कौं, गड़ डारन पीठ गयंदन कौं ॥२५१६
पुन बाज पवीन मड़े पखरा[2], तन-त्राँन सझे भटहू तखरा।
अबला ग्रह अंधुस सालन की, कर कूंत लहे कर बालन की ॥२५१७
सर चाप निखग सझे सगरै, दल संगर-खेत लई डगरै[3]।
बिड़रावन[4] दुंदभी ढोल बजे, गजघंट ठनंकन नाद गजे ॥२५१८
जुर चालेऊ सैनप-सैन जहीं, रथ-नेमोय सौं धर धूज रही।
कपि सैन सौं जाय मिले कल कौं, दल के पति हाक मिले दल कौं ॥२५१६
जिन कूंत कता लीय जूझन कौं, सुत-रांवन बैर सरूझन कौं।
तिन मार दई परघातन की, कढ ज्वाल हुतासन की कनको[5] ॥२५२०
केऊ बाँन तजे करर-करर, झर भाद्रव मेघ ज्युंही झरर।
त्रयसोरख औ तरवारन की, कर भालन मार कुठारन की ॥२५२१
कपि-सैन असंखन देख कुपे, रन कौं करनै सब आय रुपे।
सिखरी[6] गहि श्रंग[7] जुरे सिगरे, कररी पथराँन की मार करे ॥२५२२
बहु बृछ छन की कर कै बरसा, समिले कपि साथ जहाँ सरसा।
रढ खेत अरे समुहा चल कै, मनु देव-अदेव जुरे मिल कै ॥२५२३
अत सोर भयौ बिव औरन सौं, हुररै मनु सिंधु हिलोरन सौं।
चढ डंमर खेह[8] बितान छयौ, भुय[9] अंबर लौं ईक रूप भयौ ॥२५२४
मिल बंदर राखस खेत मँही, जल ज्यूं पय में बिलगाय जँही।
मंड मार ऊभै दल रार मची, गहरी रत[10] धारन गार गची ॥२५२५
निकसी मिल नालन निझ्झरनी, भय कातर कौं हीय में भरनी।
जुग सैन करारन रूप जही, कट कुंजर पंजर बाज कही ॥२५२६
केऊ हाड़ भये किरका-किरका, धर छाय रहो सोई धूसरका।
बिच जावत बार सिवार बहे, रचना रथ फेन दिखाय रहे ॥२५२७
तिर चालेऊ पाव तुरंगन के, मिल बिस्वर ऊँट मतंगन के।
झख नक्र तथा अवहार ज्युहीं, तहाँ ढालन कछ छप रूप त्युहीं ॥२५२८
भुज जावत केक भुजंगम कै, सरसीरूह पानन संगम कै।
मिल जंबुक साद[11] मृगावन कौ, वन टक्कर कक्कर बादन कौं ॥२५२६

१ स्यंदन=रथ। २ ऊपर डालने का कपड़ा। ३ मार्ग। ४ भयानक। ५ चिनगारी। ६ पर्वत। ७ चोटी। ८ धूल=मिट्टी। ९ भूमि। १० रक्त, खून। ११ शब्द। १२ कमल।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चहकावत चिल्लन व्योंम चढ़ै, अवली मनु ऊद्ध बकोट उड़ै।
भख आँमख[1] कारन भीर भई, जहाँ काक जुरे जल काक ज्युँही ॥२५३०
भुय पै भयौ कर्दम भेजन कौ, केऊ बुक्कन मेल करेजन कौ।
तन कोनप[2] गिद्ध टटोरत है, लग चाँचन सौं चख लोरत है ॥२५३१
केऊ पाँतन पाँत जुरी किलकै, मुकता जनु हंस चुगं मिलकै।
जहाँ जुग्गँन[3] भूत बिताल जुरे, भरपूर प्रवासीय जेम भिरे ॥२५३२
रन रांवन कै दल ऐम रच्यौ, महि जाँनक[4] चातुरमास मच्यौ।
जहाँ कोस अँनी मिल रार जुरी, तन भीज गये रत धार लरी ॥२५३३
जहाँ कूदन लागेऊ बीर जई, नटहू के बटा[5] जिम रीत नई।
धुज-डंड मरोरत फार धुजा, समिलै कैऊ घोरन देत सजा ॥२५३४
खल आयुध झेल खसोटत है, लग लातन कीतन[6] लोटत है।
केऊ भूँम कै दाँतन सौं कररै, झकझोर भुजा नख सौं झररै ॥२५३५
कपि आँनन काटत काँनन कौं, पग तौरत केतक पाँनन कौ।
ईक राकस देखत सौं ऊररै, धक धूँन पहारन कौं धररै ॥२५३६
कर बृछ्छन मार प्रकंडन की, झकझोरन झौरन झुंडन की।
कपिहू बरजोर रुपे कल[7] कौं, द्रढ मार दई खल के दल कौं ॥२५३७
जुर राखसहू मिल जुद्ध जहाँ, तितरी-बितरी खल सैन तहाँ।
केऊ मारन लागेऊ कूंत कती, अबला तिरसूल अरू सकती ॥२५३८
केऊ बाँनन वार लगे करनै, दल कीसन भाल लगे दरनै।
जुर कोस गये सब रांम जितै, अवलोक ऊठे रघुबीर ईतै ॥२५३९
लरनै रन लागेऊ चाप लीयें, कृतहस्त[8] भयंकर रूप कीये।
सरसाय जहाँ सर पै सर दै, झुक मेघ मनौ झर पै झर दै ॥२५४०
दल राखस देख दसू दिस में, विच कीस अनी लख कै बस में।
जहां गंधृब अस्त्र करी जुकती[9], ऊपजाय कै बीरकला ऊकती ॥२५४१
कर रोष जबै तिह मोख[10] करचौ गन राखस ऊपर जाय गिरचौ।
खननाहट बज्रीय खग्गन की, बननाहट चक्र नरग्गन की ॥२५४२
सननाहट बाँनन संगम की, भननाहट भींम भुजंगम की।
धननाहट धूम धधक्कन की, छननाहट आग चछ्छंकन की ॥२५४३

१ आमिष = मांस। २ मृतकों के शरीर। ३ योगिनी। ४ मानौ। ५ बेटा = नटपुत्र। ६ कितने ही। ७ युद्ध। ८ निपुण। ९ युक्ति। १० छोड़ा, मुक्त किया।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गननाहट मंडीय गोलन की, उमँड़ी बरखा मनु ओलन की।
तेऊ राखस जाय लगे तन में, बिलग्यौ मनु दाव[1] महाँ बन में ॥२५४४
चकचूरन होय चलाचल में, प्रतना खल टूट परी पल में।
पंचदून सहस्र सतांग परे, गजहू नव दून हजार गिरे ॥२५४५
चवदाहु हजार तुरंग छुटे, दुई लाख पयादीय सैन दटे।
ईक गंधृवग्रख सौं सैन ईती. परचंड प्रहारीय ओघपती[2] ॥२५४६
बल सौ रन राँम करचौ बहुरै[3], जिनकी गनती कहतें न जुरै।
घुमड़े रन राघव च्यार घरी[4], भयदायक दीसत भूँम भरी ॥२५४७
घट घायल घूँमत साथ घनौ, मद छाक पीयें मतवारे मनौ।
ध्रुव तूट परे जिन के धर कौं, सोई मारहि मार करें सुर कौं ॥२५४८
दसही दिस रूंड दिखावत है, धर[5] पै दस हो दिस धावत है।
तलफै केऊ अंग तुषार तुटे, फरराट करें मुख नाक फटे ॥ २५४९
खर ऊष्ट्र[6] विस्वर अंग खुले, द्विपि[7] चक्कर खावत पाव डुले।
ऊरझे केऊ ताँतन-आँतन कौं, दम लेत टिकाय के दाँतन कौं ॥ २५५०
रथ केक[8] रथी बिन छूट रहे, बिन सूत तुरंगम जात बहे।
रन देख चलाकीय राघव की, जनु आंच लगी दल जाग्रव की ॥२५५१
दव लागत ही बन देख दसा, सबही मृग भागत सिंघ ससा।
खल भागेऊ एम पुरी खिसकै, दल सैनप दौर दसा दिस कै ॥२५५२
रघुबीर को जीत भई रन में, मुद भालन कोस भयौ मन में।
रिखी गंधृव देव लखे रचना, बिरदाय[9] प्रसंस कहे बचना ॥२५५३
कपिराज सौं श्रीरघुबीर कही, सुनोयै जमुवाँनहू आव सही।
सिव जाँनत ग्रख ईहै सकती, अवगाहन में हूँ करचौ ऊकती ॥२५५४
सुन कै कपि होय प्रसन सबै, जय बाँन कौं बोलन लागे जबै।
ईत राघव के रन सौं ऊबरी, प्रतना[10] पहुँची कछु लंक पुरी ॥२२५५
तन खड बिहंड भये तिनके, जीय की न सँभार रही जिन के।
लख कै पुरबासीय घाव लगे, सुत मात पिता तीय भ्रात सगे ॥१५५६
घर लागेऊ घावन धोवन कौं, रिन-खेत[11] रहे जिन रोवन कौं।
घर ही घर सोक बढ्यौ घुलकै, जुध बात कहै मिलकै-जुलकै ॥२५५७

---

१ दावाग्नि। २ राम। ३ फिर। ४ घड़ी। ५ धरा = पृथ्वी। ६ ऊंट।
७ हाथी। ८ कई। ९ गुणगान। १० सेना। ११ रण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

निरलाज अभागीन सूपनखा, खर दूखन कौं कीय जास खखा।
पुन आय मिली गढ लंकपती, कलहंतरता[1] कर कै कुमती ॥२५५८

कलही नृपहू छल कौं करता, बन सौं सीय आँन पतीबरता।
करनैं तीय जाहि चहै कपटी, हुव बृद्ध घनौ जिम बुद्धि हटी ॥२५५९

सुत भ्रात मराय सगे सबही, अविवेक न त्यागत है अबही।
प्रतना मरगी मर सैनपती, भट भीर रही न कछू भरती ॥२५६०

बिधवा तीय कोऊक वृध[2] बचे, केऊ घायल काहिल बीर कचे[3]।
जुध काज चहै सोऊ जावनहू, रन-खेत मरौ ईह रावनहू ॥२५६१

चकचूर[4] भई जिनकी छतीयाँ, बिललाय करैं बिधवा त्तीयाँ।
परजा नर नार जिते पुर कै, कललाहट हाय रहे कर कै ॥२५६२

दोहा

पुरी लंक-निस दिन प्रतै, राग-रंग की रास[5]।
हाय-हाय होवन लगी, खल राँवन-ग्रह खास[6] ॥२५६३

राँनी सुत-तीय रौवनौ, खल सुन रह्यौ खिसाय।
ऊँधी[7] सासा[8] लेत ऊर, राँवन भूप रिसाय ॥२५६४

सचव महोदर अत सुघर, महाँ पारस भट मेल।
बिरूपाक्ष राखस बिकट, बोल्यौ लहि कै बेल ॥२५६५

सैन करावहु त्यार सब, बची लंकपुर बीच।
राँम-लखन-जुत मार रन, कपि-दल करहूँ कीच ॥२५६६

छंद बृद्धनाराच

सुन्यौ निदेस सालुरी निसंक निस्चरावली।
मिली गरूर मंड ग्रेह छंड कै गली-गली।
बिलोक बीर बाहनी क्रतंत जेम कोप कै।
ब्रकार बीर बुल्लयौ रिसाय पैर रोप कै ॥ २५६७

---

१ कलहप्रिया। २ वृद्ध। ३ कच्चे = अधूरे। ४ चूर-चूर। ५ लीला।
६ स्वयं। ७ उल्टी। ८ श्वासा = सांस।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जुगांत[1] मारतंड जेम चंड कंड[2] छंड कै।
चपेट रांमचंद्र मार लैहुँ जुद्ध मंड कै।
भतीज पुत्र भ्रात कै निकार बैर निश्चरा।
प्रजा प्रमोद पाय कै बसायहूँ बसुंधरा ॥२५६८
घटा-समान घूंम-घूंम चाप बाँन छूटहै।
अकास भूंम वारपार वृष्टि मंड बूठ है।
जितेक जर्न[3] लर्न[4] जाँन मर्न कीस मंडहूँ।
सुबर्न पर्न संजुतं चछोह तीर छंडहूँ ॥२५६९
बिपछ्छ रिछ्छ बाँनरा बिधाँन लछ्छ बेध कै।
श्रृंगाल गिद्ध भछ्छ सोख रार तछ्छ खेध कै।
भरे परे धरा-मँही निसूंभ ह्वै निसाचरा।
रवंत[5] नार रोय कै बिलाय सोक बिस्तरा ॥२५७०
अँगोछ पौंच[6] ऊद्धरू अनेक आँख आँसुआ।
जितेक जुथ्थ-जुथ्थपं जनाय कै जु-आजु-आ।
मिटाय सैन मर्कटो जटीस कौं जुहारहूँ।
छक्यौ सु छोह चाक सौं धिक्यौं सु धेक धारहूँ ॥२५७१
मरोर बीस पाँन मुछ्छ[7] तास खड्ग तोल कै।
निहाँर दंडनायका[8] बकार बाँन बोल कै।
निदेस सैन निश्चरी सुनाय देहु साथ कौं।
हलै हँमार हाजरी प्रचार कै प्रपात कौ ॥२५७२
सुनत सैंनधिक्ष[9] सूर बीर संग संजुरे।
जहाँ तहाँ जितै तितै घुमंड सौं भरे घिरे।
सतंग[10] कौं सझाय कै तुरंग जोर तख्खरा।
झुकाय कंध झूंसरीन पीठ डार पख्खरा ॥२५७३
बजाय कै अडंबरा[11] चल्यौ सु बीर छोह कै।
प्रमत्त गत्त पौरसेय रथ्थ कौं अरोह कै।
अनेक ह्वै असूचका[12] दिखाय भीत-दायका।
गुंजार काक गिद्धनी मंजार सूरमायका[13] ॥२५७४

---

१ युगान्त = प्रलय। २ वाण। ३ वृक्ष। ४ लड़ना। ५ विलखती है। ६ पोंछ कर। ७ मूछें। ८ सेनापति। ९ सेनाध्यक्ष। १० रथ। ११ जुझाऊ बाजे। १२ अपशकुन। १३ स्यार।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पताक तूट पौंन[1] सौं तुरंगहू तरेर कै।
धसे वही बसुंधरा फसाय चक्र फेर कै।
परे सु अस्त्र-सस्त्र म्यांन वस्त्र मंगली।
ठये निकेत[2] ठौर-ठौर जंतु आय जंगली ॥२५७५
अनेक नाहि आदरे प्रयांन विघ्न पेख कै।
जक्यौ न चित्त जोय कै धिक्यौ ऊफाँन वेख कै।
रथी अरोह रथ्थ कौं समथ्थ संग स्वारथी[3]।
अतीरथी[4] सधीर अंग मेल कै महाँरथी ॥२५७६
धुजांन डंड घोर झुंड केत यौम झूंम कै।
गृहावहू नछत्र गेह चेह होत चूंम कै।
बिराव[5] घोर बिथुरचौ चढाव चक्र चाल सौं।
भ्रमाय कै बसुंधरा घुमाय घेर घाल सौं ॥२५७७
कराल व्यालकाल[6]-रूप मंद चाल मंड़ता।
समांन सैल-माल सोह पिंड की प्रचंडता।
पबोन औ हवद्द[7] पीठ बैठ जुद्ध-चावरे।
बिरुद्ध काज बिप्फुरे अरोह कै ऊतावरे ॥२५७८
अनेक अस्ववार अस्व तत्तरे अरोह कै।
पजाय जीन पक्खरा लगांम ड़ार लोह कै।
हड्डड कै पड्ढ होय बर्मव्यूढ़[8] बीरहू।
ऊड़े सु बाग ऐच कैं धरो न नेंक धीरहू ॥२५७९
पताल लौं प्रहार पाव धाव भोम धूज कै।
अमूझ पौन औ हटे गहीर व्योम गूंज कै।
करूर नाद केहरी रवंत सैन-रक्षका[9]।
धिकी सु आग ध्वेख[10] की अंगार-रूप अक्षका[11] ॥२५८०
कढी न कीब हाक केक जाक रोख काय कै।
बढी रजी वसुंधरा चढी अयास[12] छाय कै।
प्रभा रुकी पतंग दोह धूंधरौ दिखाय कै।
डिगाय पाय दिक्करी[13] खिसाय चक्र खाय कै ॥२५८१

---

१ पवन। २ घर। ३ सारथि। ४ अतिरथी। ५ बैरभाव। ६ कालसर्पः=यम। ७ हौदा। ८ बख्तर युक्त। ९ सेनापति। १० द्वेष। ११ आँख। १२ आकाश। १३ दिग्गज।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हजारसीस[1] हाल कै फनाँल भार फैल कै।
परे बिचाल बंध पेल संध छूट सैल कै।
समुद्र-पाथ साथहू छिले मृजाद छोर कै।
ऊमंड आसपास कौं घुमंड सोर घोर कै।२५८२
कहै कितेक बात कीस साथ कौं सँघारहौं।
जती ऊभै जुहार के प्रचार पार पारहौं।
कहै कितेक भाल कीस बीर ना बराबरी।
मरोर मीज मारहौं झपेट कै झराझरी ॥२५८३
कहै कितेक क्रुद्ध सौ निहाँर जात निश्चरा।
जरूर भाग जाँहिगे चलाक कंतरा-चरा[2]।
अधीस लंक उच्चरचौ बकार जाहि बेर में।
बचै न सैन बंदरी ऊजासहू अँधेर में ॥२५८४
सँभार होय सावधान ताँन चाँप तत्परा।
दिखाय हाथ मोद देहु कीस साथ कर्बुरा[3]।
ऊभ जती अभीत आज मारहूँ मलामली।
सँमीक[4] रोक स्वास झीक बाँन दै झलाझली।२५८५
ईतैंहू सेन आसरी ऊमंड औध-ईस पै।
अनीक औध-ईसहू धकाय लंकधीस पै।
ठयौ सु ठौर-ठौर पै मिलाप आप मेल सौं।
पखाँन[5] वृच्छ ह्वै प्रहार छूट बाँन चाप सौं ॥२५८६
बिजं बिराव बिच्छुरचौ ईतैंहू औध-ईंद्र[6] कौ।
अराव ज्यूं बिजै ऊतै रचाय राकसिंद्र कौ।
महांन घोर मार मंड जोर कौं जमाय कै।
प्रहार पै प्रहार होत घाय कौं घुमाय कै ॥२५८७
मुखा ऊचार मारमार रार पाव रोप कै।
अनत[7] बीर आहुरे क्रतंत-रूप कोप कै।
कपी सराहि कर्बुरा ऊभै करै ऊछाह सौं।
अटै सु एक एक सौं बटै न द्वेष बाह सौं ॥२५८८

---

१ शेषनाग। २ कान्तारचर = वन में विचरण करने वाले, वानर। ३ राक्षस।
४ सम्यक् = अच्छी तरह से, निरन्तर। ५ पाषाण। ६ राम। ७ लक्ष्मण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पछार मार पीस-पीस काट सीस कंधरा।
करचौ दुरूह मार कीच बीच में बसुंधरा।
कपाल[1] गाल भाल कूख[2] फोर-तोर फेर कै।
तराप्र अंत तंत[3] कौं खसोट दंत खेर कै ॥२५८६
कक्काल कालखंज[4] केक बुक्क गुल्म बिख्खरै।
फटे कलोम[5] फिफरा निसार फैन निक्करै।
कराल नाद केहरी रबंत भाल रोख सौं।
अटे कपी ऊमंड कै थटे सु थोक-थोक सौं ॥२५६०
अमेठ अंग आसरा[6] झपेट झाट झेर कौं।
लपेट बाज लेत ज्यौं चपेट चाटकेर[7] कौं।
बिहाल सैन बेख कै लंकेस छ्वेस लाय कै।
अरचौ समीक[8] सैन आय बाहुरचौ बलाय कै ॥२५६१
करी झरी कलंब की घटा-समाँन घूंम कै।
रुकाय बंदरावली लगी ससींम लूंम कै।
प्रहार कीन प्रस्तरा कराल का प्रकंड की।
गनै कहा पहार-गात दिघ्घ मार दंड की ॥२५६२
बिसेस बीसहाथ बीच पंच दूंन चापलै।
रहंस पंचदून रोप काढ कै कलाप कै।
अरोह बाँन-आसन[9] चछोह ताँन छूटनौ।
लजाय मेघ-लौरहू बढ़ाय बूंद बूठनौ ॥२५६३
जई सु जंग जोर सौं भिरंत कीस भाल सौं।
घुलाय रीस[10] घेर में झुलाय काल झाल सौं।
समूंह राँमचंद्र सैन मेघमाल ज्यूं मिल्यौ।
ऊमंड लंकईसहू प्रचड पौंन ह्वै पिल्यौ ॥२५६४
प्रहार कँकपत्र कौं लहै न कीस लाग कौं।
सहै न अंग सल्लभा[11] असाध दीप्त आग कौं।
दुंआर धुंधकार देख सैल और सींव लै।
मदोनमत्तहू मतंग जात भाग जीव लै ॥२५६५

१ सिर। २ पेट। ३ अंतड़ी। ४ कलेजा। ५ तिल्ली। ६ राक्षस। ७ चिड़िया। ८ समर=युद्ध। ९ धनुष। १० क्रोध। ११ शलभ=पतङ्ग।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परी गृहीत[1] आसपास आस सौं तपाय कै।
ऊसास लेय सास आस[2] घाव सौं अघाय कै।
भजाय सैन कीस भाल लंकधीस लाग कै।
ससीम राँमचंद्र सौं पहूँच रीस पाग कै ॥२५९६
सुग्रींव जू सुखेंन कौं मुकाँम सौंप मोरचा।
रुकाय लंकराय कौं बलाय काल कौ बचा।
बिसाल हाथ बृच्छ लै कराल काल ज्यौं कुपे।
अनेक कीस आस पास रोष रंग ह्वै रूपे ॥२५९७
दई सु मार दंड की प्रचंड सैल लै पिले।
रिसाय कीसराय[3] कं चमूं नदीस ज्यूं छिले।
करूर नाद केहरी हरूर ह्वै हिलोर की।
रूकाय आसरावली[4] झपेट लाग झौर की ॥२५९८
प्रकंड लै अरीन पिंड दंड कीस यूं दहै।
सिफा[5] ऊखार साल पै बयार चंड ज्यूं बहै।
अरीन सीस ऊपरा परी झरी परवाँन की।
गरार गैन[6] सौं गिरै पतंग हाँन प्राँन की ॥२५९९
बिखंड ह्वै बिसेस बीर पिंड पार पाथरा।
मनौक इंद्रबज्र मार सैल कीन साथरा।
अभंग कीस-ईस अंग जोर जंग ह्वै जई।
भजाय जातुधाँन भीर लार लाग कै लई ॥२६००
बिरूप-अक्ष बीर पक्ष लंकधीस पाय कै।
सतंग[7] छोर संग कौं मतंग कौं मगाय कै।
अरोह कै चछोह आप चाप कौं चढ़ाय कै।
सुनाय नाँम सालुरचौ बिरोध कौं बढाय कै ॥२६०१
निघोक[8] कीन सिंघनाद देख भीतदायका।
समेत सैन संम्मुहा निहार कीस नायका।

१ भगवड़। २ आशु=शीघ्र, तत्काल। ३ वानरराज=सुग्रीव। ४. असुरावली=राक्षसगण। ५ शिफा=जड़। ६ गगन। ७ रथ। ८ निर्घोष।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करी झरी कलंब[1] कोप रोप पाव रार में।
प्रमोद सौं बिनोद पाय बीर जाहि बार में ॥२६०२
मिलाय पाय मंडकै ऊमंड आसरावली।
घुमंड घूंम घेर में ऊछंकें ऊतावली।
सहे सुकंठ[2] बाँनसाल ज्वाल क्रुद्ध जागकै।
निघोक कीन सिंघनाद लार लाग लागकै ॥२६०३
बिसाल हाथ बृच्छ लै सरींम जाय सिंधुरा[3]।
कपोल पै प्रहार कीन कर्न-मूल कन्धरा।
धुक्यौ सु सीस धूंनकै रुकाय पाव रोपकै।
लख्यौ बिरूपलोचना[4] जक्यौ गयंद जोपकै ॥२६०४
अलंग पीठ ऊतरचौ मलंग मार मेदनी[5]।
गहाय हाथ चर्म[6] गाढ चंद्रहास[7]-छेदनी।
बकारकै सुग्रींव बीर चाहि जुद्ध कौं चल्यौ।
सुग्रींवजू सिला संभार घाव ताहि पै घल्यौ ॥२६०५
बचाय चोट बीरबेस कूदकै कपीस की।
कपीस पै प्रहार कीन राच आँच रीस की।
महाँबलिष्ट पाय मोह छोह ह्वै छिनेक में।
मँडो सु मार मुष्टका दुरंत[8] छाय द्वैष कै ॥२६०६
हीयै प्रहार सौं हट्यौ न नैंक पाव निश्चरा।
क्रपाँन झार क्रुद्ध ह्वै भिरचौ महाँभयंकरा।
कट्यौ सुग्रींव बर्म कौं गिरचौ बिछूट[9] गात कौं।
पछार भूंम पार कै लगाय मार लात कौं ॥२६०७
कपीस ऊठ होय क्रुद्ध जूट जुद्ध जोर सौं।
समाँन बज्र सौं धकै घुमंड सोर घोर सौं।
प्रहार लात कीन पै बचाय चोट कर्बुरा।
हंनी सु मुष्टका हीयै दबाय दौर दबंरा ॥२६०८

---

१ बाण। २ सुग्रीव। ३ हाथी। ४ विरूपाक्ष। ५ पृथ्वी। ६ ढाल। ७ तलवार। ८ दुष्ट, अतिकठोर। ९ अलग होकर। १० राक्षस।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खिसाय कीसनाथ खीज लात की ललाट में।
प्रकोप कीन प्रेर पाव घेर बज्र घाट में।
परयौ धरा पसार पाव नैन कौं निकार कै।
कढ्यौ प्रवाह माँसकारि[1] फेफ नाक फार कै ॥२६०९

बिरूप-अक्ष ह्वै बिरूप फेन[2] भास फैल कै।
दिखात सो डरावनौ समाँन अग सैल कै।
रुकाय कीस पांव रोप जाहि बीर जोवनै।
निहार सैन निश्चरी रही सु लाग रोवनै ॥२६१०

बिजै अराव बिथ्थुरयौ निसंक कीस नाथ कौ।
ससंक हाय सब्द होय सौहि लंक साथ कौ।
कपीस औघईस कौं प्रमोद दै प्रभाव कौं।
ससोक लंकधीश कौ ऊपाय जै अभाव कौं ॥२६११

दोहा

कपिपति मारयौ क्रुद्ध कर, बिरूपाक्ष बरबीर।
बिलखत निसचर सोक बस, ऊर जस खोय अधीर ॥२६१२
जिह अवसर घहरात जुर, सोर करत बिय[3] सैन।
ऊभै ऊदध माँनहु अथग, लेग हिलोरन लैन ॥२६१३
बिरूपाक्ष कौं सोक बपु, दाहत जेम निदाघ[4]।
होय दसकंधर ह्वैगयौ, तैसैं सुसक तड़ाग[5] ॥२६१४

छंद त्रोटक

अत सोक पुलस्त[6] बढ्यौ ऊरकौं, दरसाय कै बोल महोदर कौं।
कपिराज ईहै मम सैन कटी, अह जाँनीये रीत भई ऊलटी ॥२६१५
जय आस तिहारेई हाथ जई, तुम रोख[7] कै मारहु सैन तई।
परचंड दिखाबहु पौरुष कौं, दलकीस मिटावहु मो दुख कौं ॥२

---

१ रक्त। २ झाग, बुदबुद। ३ द्वय=दोनों। ४ ग्रीष्मकाल। ५ तालाब।
६ रावण। ७ क्रुद्ध हो।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बरबीर उजालहु बक्षर[1] कौं, ईधके कहा भाखहुँ अक्षर कौं।
समीयौ[2] ऊपकार ईहीं समुझौ, संग धीर बरूथनो[3] बीर सझौ ॥२६१७
तन त्रासत आँच लगै ततीयाँ[4], चिरकाल सिरावहु मो छतीयाँ।
हित बात ऊचार हरोलीय सौं, बिरदाय[5] अमोलीय बोलीय सौं ॥२६१८
सुन कथ्थ महोदर आँनन सौं, द्रग देख ऊचार दसाँनन सौं।
जुर रन जेर करूँ जंम कौं, पुन देखहु मोर पराक्रम कौं ॥२६१९
जुर माँरहुगौ रघुनाथ जती, कपिराज कहा ईह फौज किती।
पग मांड करूँ प्रबिदारनकौं, सझ आवत सत्रु संघारन कौं ॥२६२०
कहिकै ईह आतुर गौन करचौ, धनुबाँन उठायकै हाथ धरचौं।
धर द्वेख[6]धस्यौ ऊर रीस धिखी, सलभा[7]जनुं जावत बीच सिखी[8] ॥२६२१
सझ संगर[9] साँमीय सासन सौं, सर सौंध चलाय सरासन सौं।
दल बंदर कै बहु मार दई, भुव अंबर में सर भीर भई ॥२६२२
तरु कीस लये ईम हाथ तरैं, झुक ताप निदाघहु पात झरैं।
पग मांड रहै तन पाँनप सौं, बरीआई[10] की रीत गही बपु सौं ॥२६२३
समिले कपि लैकर हाथ सिला, मुहमेज निसाचर साथ मिला।
घन जेम घुमंडीय जास घटी, कर कोह[11] बिरोधीय फौज कटी ॥२६२४
जब देख महोदर क्रोध जग्यौ, अरी साझन काज होयै ऊमग्यौ।
सर स्वर्न पंखारन[12] के सबही, तक मारन कीस लग्यौ तबही ॥२६२५
पग जंघहु संग कटी पिंडुरी, अरी हाथ कटे रू कटी अंगुरी।
कपि सैन कौं पींड़त मार करी, ध्रुव धीरज कोऊ न बीर धरी ॥२६२६
दसहू दिस भाग गये डरकै, लहि भीत सुग्रींव के पीठ लुकै।
कपिराज पलायन देख कपी, थिर पायन रोप कै सैन थपी ॥२६२७
समिले कर लिन्नीय हाथ सिला, घट दुज्जन ऊपर घाव घला।
तिह देख महोदर आवत ही, सर मार बिखंड करी सबही ॥२६२८
पुहमी पै परी पुरजा-पुरजा, ऊतरी लख चिल्लनी मृतु अजा।
कपिराज लखी क्रतहस्त कला, बिथुरी जीय में हीय कोह बला ॥२६२९
तरू दिघ्घ ऊखार महाँ तमक्यौ, मन मोद महोदर सोस मुक्यौ।
क्रोय खंड बिहंडहु कंडन सौं पुहमी पर पूर प्रकंडन[13] सौं ॥२६३०

१ बख्तर। २ सामयिक। ३ सेना। ४ गर्म, उष्ण। ५ यशगाकर। ६ द्वेष। ७ चिनगारी। ८ अग्नि। ९ युद्ध। १० जबर्दस्ती। ११ क्रोध। १२ पंख वाले। १३ बाण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खल मारन कौं कपिराज खरे, पर येक ऊपाय न पार परे।
सरसाल महोदर अंग सहे, रन में तहाँ पाय न रोप रहे ॥२६३१
परघा कर लिन्नीय भूँम परी, कर ताहि ऊठाय कै मार क़री।
तन तूट तुरंगन लागत ही, गिर जाय परे जहाँ मृतु गही ॥२६३२
रथ त्याग महोदर खेत रुप्यौ, कल[1] कारन जाँन भुजंग कुप्यौ।
गहि कै सिलसार गढंत गदा, बरजोर सुग्रींव दिसी बगदा[2] ॥२६३३
ऊर कोप प्रचंड हु बीर अरे, जुग तंडत माँनहु संड[3] जुरे।
ईत पर्ध[4] ऊतै हु गदा ऊजरी, बीय बारध[5] ज्याँ चमकै बिजुरी ॥२६३४
बढकै हीय माँनहु क्रोध बला, जगमग्ग प्रगट्टीय आग ज्वला।
ईक पं ईक ताकत दाव ऊभै, चित कंटक बैर कौ भाव चुभै ॥२६३५
गरज्यौ निसचार चलाय गदा, तहाँ देख कपीस प्रहार तदा।
परघा कर भालत हाँप छटी, चकचूर भई दहुँ हाथ छुटी ॥२६३६
परघारु गदा जब टूट परी, जुग बीरन कै ऊर आग जरी।
कपिराज परचौ लख कै करमें, ईक मूसल लै झटक्यौ ऊर में ॥२६३७
गहि हाथ महोदर और गदा, पर फेर चलाईय मृत्युप्रदा।
दहुँ की भटभेर[6] भई दूसरी, ऊड़ टूंग झरी नभ सौं ऊसरी ॥२६३८
जुग आयुध खूट परे जहवाँ, तमक्यौ तन खेत भिरे तँहवाँ।
मिल मुष्ट अभीक्षन[7] मार मची, रत रोख जुतै जुग रार रची ॥२६३९
झुक झूँमत झूँमत लै झटकै, नृत बीर जयंत मंड्यौ नट कै।
रट कै मनु सिंघ बराह रुपे, जुटकै किधु भींम भुजग जुपे ॥२६४०
जुग जेठीय की मनु जोर जुरी, करदंत अरे किधु दोय करी।
लग मार अपारहु लातन की, हुय भेट चपेटन हाथन की ॥२६४१
केऊ बार करार[8] नियुद्ध करे गहि एक कौं एकही भूँम गिरे।
ऊठ फेर खरे हुय आतुरता, किनहूँ न लही हीय कातरता ॥२६४२
पुन देख महोदर पास परी, सझ हाथ कृपाँन गही सफुरी[9]।
असि[10] खेटक[11] लै कपिराज ईतै, मिल सग रमै फिर आप मतै ॥२६४३
विव वीर सधीर प्रबींन बली, खग खेटक खेल रच्यौ खुरली।
केऊ घाव प्रहारत दाव करै, ऊभरै ऊर मंडल बाँध अरै ॥२६३३

१ कलह, कलि=पप, युद्ध। २ वापस आया। ३ सांड। ४ लुहांगी। ५ वारिधि=समुद्र। ६ मुठभेड़। ७ अभीक्ष्ण=बार-बार। ८ कठोर। ९ ढाल। १० तलवार। ११ एक प्रकार का शस्त्र अथवा युद्ध का खेल।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छित[1] चंचच पाव छुऐं न छुऐं, दरसातई लात के न्वक्र दुऐं।
भट भूँम ऊलंघ मलंग[2] भरें, केऊ दाव सिंचाँन बिहंग करें ॥२६४५
ढिंग ओट[3] रचावत ढालन सौं, कर चोट करें करवालन[4] सौं।
भट और भरें ऊर भेखन कौं, दहुँ बीर लगे रन देखन कौं ॥ २६४६
अवसान महोदर कीन ईतैं, कपिराज कौं घाव बचाय कितै।
भटकी खग फूल सु. बाढ़ भरी, खटकी सोई कंकट[5] सीस खरी ॥२६४७
ऊटकी कटकायल[6] में ऊरभी, समल्यौ तऊ फेर नहीं सुरभी।
नम लागेऊ ताहि निकारन कौं, मन कौसपती कीय मारन कौं ॥२६४८
खग पै खग झार कटी खग कौं, पुहमी घिर माँड रहे पग कौं।
करवार कौं दूसर वार करचौ, सिरआँन[7] जुतै कट सीस परचौ ॥२६४९
धर जास गिरचौ धुकके धरनी, कपिराज की उग्र लखी करनी।
रन होय पराजय रॉवन की, अवधेस कौं मोद ऊपावन की ॥२६५०
पतिलंक पलायन[8] देख परी, घट छौभ ऊपज्जीय जाहि घरी।
महाँपारस भेजीय नाहि मतै, परचायकै चाहिकं जुद्ध प्रतै ॥२६५१
बरखा फिर किन्नीय वाँनन की, द्रढ लाय कं भीर दसाँनन की।
भट क्रोध भयंकर भेस भयौ, दल अंगद कौ बिचलाय दयौ ॥२६५२
सरसाय कै मार घनै सर सौं, कीय मुंडन दूर कलेवर[9] सौं।
धर तूट परे सोई ढेरन सौं, सिखरी फल[10] जेम समोरन[11] सौं ॥२६५३
भुज कीस कटी सर भालन सौं, केऊ कंधर दै करवालन सौं।
भुजकोटर[12] जेम निखंग[13] भरी, पसवारन ऊपर मार परी ॥२६५४
महाँपारस की सर मार मिली, चकराय बलीमुख[14]-सैन चली।
लख कं जीय अंगद जाँन लई, भय सौ मम सैन बिहाल भई ॥२६५५
हीय-सागर एहु उमंग हुई, तिथ पूँनम तोय[15] तरंग त्युहीं।
परघातन लै जुवराज पिला, कर माँनहु सूरजदेव-कला॥२६५६
गहिकै सोई मारीय सार[16] गठी, हमगीर सधीरहू बीर हठी।
पसरे रथी स्वारथी भूँम परे, मुरछागत ह्वै तिह चेत मुरे ॥२६५७

१ क्षिति=भूमि। २ छलांग, वानर। ३ रक्षण। ४ तलवार। ५ बख्तर। ६ कड़ी-जोड़। ७ शिरस्त्राण=टोप, पग्घड़। ८ भगदड़। ९ शरीर। १० वृक्ष-फल। ११ वायु। १२ बगल, काँख। निषंग=तरकस। १४ वानर। १५ जल १६ लोहा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

घन जेम घुमंडीय रिच्छ-घटा, चमकै भुज-कंवुक[1] जाँन छटा।
बयवृद्ध बिचार कै अग्र बह्यौ गरज्यौ पतिरिच्छ छुहु पच्छ गह्यौ ॥२६५८
जुवराज सँभारीय पीठ जही, द्रढजाय बिपच्छहि[2] मार दई।
सिल डार सतंग तुरंग समा, चकचूर करे मिल धूर छिमा[3] ॥२६५९
जितनै महापारस मोह जग्यौ, लख अंगद बाँनन दैन लग्यौ।
पुन बाँन दये त्रय रिच्छपतो, भुजअंतर ताक करी भरती ॥२६६०
द्रढ़ सायक मार गवाक्ष दई, रिस अंगद कै हीय छाय रही।
ऊमड्यौ परघा कर लै अरि पै, द्रुत-विद्रुत[4] बारध जेम दियै ॥२६६१
दहुँ हाथ सँभाय भ्रमाय दई, जुत जोर जमाय सभ्भाय जई।
धनु तूट परे सर हू धरतो, ऊछट्यौ सिरआँनहू ऊररतो ॥२६६२
गवन्यौं सुत-बाल समीप गयौ, भर रीस पंचानन[5] रूप भयौ।
पग लात दई कनपाटीय पै, अत जोर सौं घोर ऊछाटीय पै ॥२६६३
तऊ ऊठ खरी हुय कोह तप्यौ, सिल सार कुठार लीयै सरप्यौ।
द्रुत दाव सौं कधर वाँम दटा, चमक्यौ मनु बद्दर बीच छटा ॥२६६४
लख अंगद घाव बचाय लयौ, पितु बाल बली बल बाल पयौ।
ईक मुष्टक बाँध दई ऊर में, पर पार क्रतंत[6] गयौ पुर में ॥२६६५
महाँपारस अंगद हाथ मरे, पग छोर निसाचर भाज परे।
कपि साथ कंठोरव[7] गाज करयौ, भयदायक पतन दुग्ग भरयौ ॥२६६६

सोरठा

बिरूपाक्ष बर बीर, बीर महोदर कीन बध।
सुत जमजनक सधीर, जय पाई सुग्रींव जुग ॥२६६७
जाही बिध जुवराज, महाँपारस कीनो मुगत।
रामचंद्र महाराज, ऊपजायौ आनंद ऊर ॥२६६८
त्रय बीरन ततकाल, मृत्यु देख रन-ताल सह।
भय जुत लंक-भुआल[8], ऊर बिहाल रिस ऊफनी ॥२६६९
सुभट सचव संघार, बिसतारचौं दुख लंक बिच।
राँम लखँन रच रार, मारहुंगौ दहुँ बीर मैं ॥२६७०

---

१ भुजा-भूषण। २ शत्रु। ३ क्ष्मा=भूमि। ४ विद्युद् द्युति=बिजली की चमक।
५ सिंह। ६ कृतान्त=यम। ७ सिंह। ८ भूपाल।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ईह कहि रांवन आप, मैटे सकल बिलाप मन।
चंड गह्यौ भुज चाप, कर सर लये कलाप कढ़ ॥२६७१

छंद हरगीतका

कर बंक भृकुट निसंक करकस[1] लंकपति रिस लायकें।
पर जरचौं मानहु पौंन पावक ऊच्चरचौं अनखाय कें।
तरु हरत रघुवर फूल तामह सीया फल ईक सुंदरी।
सुग्रींव अंगद केसरी-सुत बिबध साखा बंदरी ॥२६७२
जुत जामवंत अनंत जूथप दुबिद और मयंदहू।
नल नील फेर सुखेन बलनिध गयमयंद गयंद हू।
बहु लाल बदन अनेक बनचर छदन[2] पल्लव सम छेय।
पाँनप पसाव प्रवाह सौं निरवाह भर सिर धर नये ॥२६७३
भुज चाप लैं सर बृछ्छ-भेदी काष्ट-तट[3] मैं काटहू।
कर टूक कर करकीन कौ पुहमीन[4] ऊपर पाटहू।
बलकार सूत बकार कें लीय बग्ग[5] हय ललकार कें।
रनधीर खल रघुबीर पै हमगीर रथ हलकार कें ॥२६७४
निरघोष नेमी चक्र नभ सब नदी पर्बत संजुरा।
मृघ कोल[6] कुंजर चकत मति बढ़ तोल ड़ोल बसुंधरा[7]।
मुहमेज जाय मिलाय मुहरा अख' राहु उभेल कें।
जम जोर घोर कठोर जाजुल ठौर-ठौरन ठेल कें ॥२६७५
बनचरन लागे जरन बपु कल करन लागे कूह कौं।
पर घरन[8] ऊपर चरन पटकत मरन मंड़ समूह कौं।
जित तितहु दोरत फिरत जावत घिरत घूंमर घेर में।
अखरत ऊपर एक एकन ऊड़त धूर अँधेर में ॥२६७६
बाँनक बनायो अस्त्रबेघा खलहु खेधा खेत में।
मेघा[9] बिना कपि मरन लागे राख मिल मिल रेत में।
भटकीस भीर भजाय कें, गहराय राँवन गज्जयौ।
कस कंमर सर कोडंड लै सोई समर अद्भुत सझ्झयौ ॥२६७७
राजीव-लोचन रॉम कौं सुभ संग देखे सेस कें।
मनुं गुरड़-गाँमी[10] मिले मघवा[11] धार दनुजन[12] ध्वेस कें।

---

१ ककंश। २ पत्ते। ३ खाती। ४ पृथ्वी। ५ वल्ग=लगाम। ६ सूअर।
७ भूमि। ८ भूमि। ९ बुद्धि। १० विष्णु। ११ इन्द्र। १२ दैत्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कोडंड लै भुजदंड कल बृहमंड चुंबत बाँकुरा।
टंकार कीय झंकार तव अरि कदन को मनु आँकुरा॥२६७८
बिब छेद रावनं बान कौं ज्यासद्द[1] छायौ जोर कै।
घहराय जनु घनघोर गर्जत होय सिंधु हिलोर कै।
पाहार बीच दरार पर पर धरा लग्गीय घूजनं।
घरहरत मानँहु धोम धुज[2] ध्रुव गैन लग्गीय गूंजनं॥२६७९
सीस सुर श्री रघुबीर लछमन सबिध सरनहु[3] सरन में।
दसकंठ सोहत समर द्रग गृह राहु मानँहु गृहन में।
वँह समय लछमन देख अवसर ऊदत भयेऊ ऊतावरे।
जाजुल्य पावक ज्वाल जिम सर दैन लगेऊ संतावरे॥२६८०
क्रतहस्त[4] कर कोडंड लै सर तजेऊ रावन सामनै।
मिल ऊद्ध दुद्धर[5] व्योम मारग मेट लग्गीय भ्रामनै।
व्यवछेद भेद बिधान सौं द्रढ दक्षता दरसाय कै।
ईक एक सौं द्वै दोय सौं सर रोक लीय सरसाय कै॥२६८१
द्रग देख लछमन दक्षता रावन अचंभत ह्वै रह्यौ।
तज जंग चत्वर ताहि कौं गहि चाप रघुवर पै गयौ।
महि पाव जाहि सुमेर मंडीय बाँन छंडीय बेग सौं।
आसार धार ऊमंड कै मनु वृष्ट थडीय मेघ सौं॥२६८२
धनु छुटे सायक देख ध्रुव रघुबीर लागे रोकनं।
प्रासक[6] प्रभाव बताय पौरुख झटत लगे झोकनं।
केऊ बाँन कट्टीय क्रूंत सौं फुंकरन फेर फनीन[7] से।
मुरझाय पर गये धरन मह ऊरझाय अंगु अनीन[8] से॥२६८३
हुमगीर लस्तक हाथ लै धनुबाँन तज अवधेसहू।
लंकेश लगे लरन कौं मनु कल्प[9] सेस महेसहू।
बाँनावली बिद्या बिनै द्रग परसपर बिखरात है।
मगरूरता[10] जुत भूमत मंडल सूरता सरसात है॥२६८४
सम सम हु लागे करन समहर रोप क्रम जम रूप सौं।
ऊद्धरन लागे अपुनपो ईख्वाक[11] सरन अनूप सौं।

---

१ प्रत्यंचा शब्द। २ अग्नि। ३ ब.ए सी। ४ निपुण। ५ दुर्द्धर, कठिन। ६ भाले। ७ सर्प। ८ अग्रभाग। ९ प्रलय। १० घमण्ड। ११ इक्ष्वाकु।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऊलाकाँन पात अनेक आक्रत होन लागे हेर कै।
मत चकित निसचर भये मरकट फिरत लोचन फेर कै ॥२६८५
बढ सोक बाँनन बेग सौं आकास भरगये ओघ सौं।
मनु मेघ मंड घमंड मिल जलबालका[1] दुति जोग सौं।
पवमाँन[2] थक्कीय प्रेरता द्रग रूकीय जोत दिनेश की।
अंधारकारी घटा ऊठ भारी भयाँनक भेस की ॥२६८६
रांवन प्रहारत राँमं पै राँमहु प्रहारत राँवनै।
पर मार गारडपच्छ[3] की दहु लगीय भेस डरावनै।
बढ बृत्तहा[4] अरू वृत्तकै[5] भयकार सहचर जिम भयौ।
परबीन बिव रन धीर पनकै[6] छोह जिनकै हीय छयौ॥२६८७
रनखेत अमित अगाध अनंव बढत बिव हथ बाह सौं।
तन ऊभय तीव्र तरंड[7] से पाँनप[8] हु पाँन[9] प्रवाह सौं।
सोई मग्ग बिचरत तजत सर ऊमंका मानहु ऊझ्झली।
लंकेस ताक ललाट लछ्छहि[10] घात रधुवर कौं घली॥२६८८
सिर झेल लीय तिन सायकंन जे अरे मुगट जटाँन में।
सम नीलनीरज संजुरे सल सूल सिंघ सटान में।
रौंद्रास्त्र पढ रघुबीरं हू झोक्यौ सु चाप झुकाय कै।
सर लगे कंकट पै सबै रनधीर निश्चरराय[11] कै ॥२६८९
घट नहिन दससिर भयौ घायल पती अवध परेख कै।
रथ चढ्यौ देख रिसाय कै सर भाल दीय अवसेख कै।
लागे तऊ तिह कीय निवारन परे पुहमी पैठ कै।
बिल माँहि जावत ज्यूं बिलेसय[12] आड़ दौढहु ऐंठ कै ॥२६९०
कर अस्त्र निस्फल राँम के पर जरेऊ रिस लंकापती।
असुरास्त्र पढ़ प्रेरयौ सु अद्भुत महाँचंडहु दुरमती।
पुन बाँन तामह भए परगट सिंघ व्याघ्र मुखा सही।
मुख घोर-बासी[13]अरू मृघादन[14]आस[15]बृखदंसक[16]अहो ॥२६९१

---

१ बिजली। २ पवन। ३ बाण। ४ इन्द्र। ५ वृत्रासुर। ६ प्रण। ७ नाव। ८ धनुष, ९ वायु। १० लक्ष्य। ११ रावण। १२ सर्प। १३ स्यार। १४ जरख। १५ मुख। १६ वनबिलाव।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुख गृहमृघ[1] अरु केऊ ईहाँमृघ[2] घृष्टमुख[3] गर्दभ घने।
सींचान मुख दाक्षाय[4] वाँयस बदन चिल्लन बक बने।
उल्लूक भृंगकलंग[5] आकृत कंक आँनन भयकरा।
द्रग राँम रचना देखकै कीय कोध ऊपर कर्बुरा[6] ॥२६६२
अग्नास्त्र प्रेरत करचौ अद्भुत बाँन अग्न बिसाल के।
बिकराल द्रंग बिचाल वर्षंत जरत जाजुल ज्वाल के।
मुख तरन बरन अनूंप तामें किरन आभा कल कली।
अर्ध इंदु आनन केऊक ऊलका वेख चंचल बीजली ॥२६६३
तम-तारका[7] गृह बदन केतक मिले नभ मारग मही।
असुरास्त्र राँवन नष्ट कीय वँह लूट जय रघुवर लही।
ऊरजस्व लख अवधेस कौ कपि भाल[8] जय जय रव करचौ।
सुग्रींव अंगद जूथपत सब चरन बंदन अनुसरचौ ॥२६६४
कर क्रुद्ध राँवन जुद्ध कारन मुद्ध मन गहि मोह कै।
मय दनुज कृत लै अस्त्र मोख्यौ समुख राँम सँदोह कै।
सिल मुसल अवला सूल[9] परसुध[10] भिंदपाल[11] भयंकरा।
अस पत्रका करवाल अंकुस वार अय मय मुदगरा ॥२६६५
चल सुसन[12] चंड ऊमड चहुँदिस असन[13] बरखा ओसरी।
ऊलकाँन पात अँनेक आकृत धृवन लागी धूसरी।
परबीन श्री रघुबीर पौरुख जाहि अवसर जाँन कै।
गांधर्व अस्त्र चलाय द्रुत गति मेट विघ्न महाँन कै ॥२६६६
पर जरेऊ राँवन आग पर द्रग देख छायौ द्वेख कै।
द्रढ़ अस्त्र कीन प्रयोग दूसर भूर-मेखन[14] मेष कै।
सिर धरचौ धन्वा सिंजनी बलकार बीर बिधाँन सौं।
प्रज्वलत चक्र प्रचंड पावक ओघ भर ऊलकांन सौं ॥२६६७
तरराय तूठत तारका अरण्य ऊपर आय कै।
गरराय सूरज चंद्र गृह झरराय ताप झुकाय कै।
अनभाँत के केऊ अमित आयुध गिरन लागे गैन सौं।
मरकटी सैना मोह लै अकुलाय पाय अचैन सौं ॥२६६८

---

१ कुत्ता। २ बरगड़ा। ३ सूकर। ४ गिद्ध। ५ गुलंगपक्षी। ६ राक्षस। ७ राहु। ८ रीछ। ९ त्रिशूल। १० फरसा। ११ भाला। १२ वायु। १३ वज्र। १४ भयंकर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तिह अस्त्र कौ कीय हरन तिह छिन सरन असरन स्याँम जू।
दीय जुद्ध की फिर नींव द्रढ राजीवलोचन राँम जू।
कर कोप कै दसकंधरा रन रह्यौ पायन रोप कै।
पाथोद माँनहु ऊप्फन्यौ जल ऊर्मिका गीत जोप कै ॥२६६९
दसबांन दीय तन स्यांम सुंदर राँम देख रिसाय कै।
कोडंड निकसे कठन सौं जोई लगे सबही जाय कै।
भय नहिन[1] घायल अवध-भूपत समर विजई साँवरे।
कर क्रुद्ध मार कलंबकौं[2] जाजुल्य जोधा रन जुरे ॥२७००
सर्बांग घायल कीयौ दससिर अँनी तिछ्छन दै ईतै।
लख अनुज राँमहु लगे लरनै पेख अवसर रन प्रतै।
हीय कुप्त[3] सप्त हकार कै दीय दीप्त सर दरसाय कै।
धुज मनुस सिर धृत धारनी गुन ताँन लयेऊ गिराय कै ॥२७०१
सिर काट डार्यौ सारथी ऊतमंग जुत कुँडल ईतै।
पूरन प्रभाव जताय पौरख मंड रन आपुन मतै।
गज सुँड सम्र कोडंड गुन जुत कंड[4] छंड करार कै।
कीय खंड खंडन काटकै सोमित्र सिष्ट संवार कै ॥२७
कूदे बभीखन गदा लै कर देख अवसर दौर कै।
तोरे तुरंगन अष्ट तन जे लगे स्यंदन जोर कै।
तब विरथ रांवन होय तत्पर सक्ति लीन संभाय कै।
कीय बभीखन पै कोप कर कस दौर दीन दबाय कै ॥२७०३
लख बज्र सम जाजुल्य लछमन तीन सर लीय ताहि कौं।
तब टूक कीनी ताक कै जब परी धरनहु जाय कै।
साबर्न[5] भूखन संजुता कट पर मर्कट देख कै।
जय शब्द कीनौ जोर सौं बिसतार मोद विसेख कै ॥२७०४
ऊलकाँन पात समेत अगनत विस्फुलंग हु बीखरे।
अदभुत पराक्रम राँम-अनुजहि जोय राँवन पर जरे।
ईक सक्त घंटा आठ जुत मय दनुज माया मंडता।
चमकंत आभा चंचला प्रलयाग्न तेज प्रचंडता ॥२७०५

---

१ नहीं। २ बाण। ३ कुपित। ४ बाण। ५ सुवर्ण = सौना।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वँह लई हाथ ऊठाय कै मारन बभीखन कर मतौ।
दसकंध उद्यित देख द्रग सोमित्र पाँनप कीय छतौ।
धनु ताँन मोर बाँन ध्रुव दसकंठ लागे देह कै।
लंकेस ईह सोभा लई सम सूल संचर सेह कै ॥२७०६
ऊच्छछंड व्याकुल होय कै ऊर सक्ति छंडन हो तक्यौ।
दुरबाद[1] लछमन देख कै बाचाल ग्राँनन सौं बक्यो।
मम भ्रात बंसकलंक[2] मारन करी धारन सक्त कौं।
ग्रावत ईहै तुम ऊपरा रुच लाग पीवन रक्त कौं ॥२७०७
कर क्रोध मोघ ग्रमोघ कीनी ताक राँवन तत्परा।
चालो स[3] बज्र समाँन चंचल भयेऊ सब्द भयंकरा।
तिह ग्रधिष्ट त्रह देवता[4] तब राँम ऐसै कहि रहै।
महांदुष्ट उद्यम होय मिथ्या छेम[5] मम बंधव चहै ॥२७०८
ईह कहत रघुवर रहे ईतनै जाय लागी जोर सौं।
दिक्करन विषधर सम दिखाई घंट रव घनघोर सौं।
कीय भेद हृदय भयंकरी छत[6] कीन फिर कीय छेह कौं।
निझ दंत कालीनागनी डस त्याग जावत देह कौं ॥२७०९
ग्रत तरल बासुकी जीह ग्राक्रत सरल धर पर संचरी।
ईत गिरेऊ लखन ग्रचेत ह्वै घट घाव लग ताही घरी।
लघु-भ्रात कौं ग्रवधेस लख होय ऊदासीन दसा हुई।
ग्रखियाँन ग्रँसुवा धार ऊँमड़ी सोक व्याकुल सरसई ॥२७१०
भये मोह लीन महूर्त भर बहलाय दुख गह बीरता।
ज़ाजुल्य ग्रंतक-कल्प[7] ज्यौ धिक धार हीय में धीरता।
रन समय कुल रजपूत कौं करुना न कातरता कही।
बंसाँनुरीत विचारकै जुत सूरता कोपै जेंही ॥२७११
रन लगे करनै ऊठ राघव वैर ग्रवरज[8] वारनै।
ईत टौर मरकट ऊँमड़े सोमित्र काज सँभारनै।
सर भार दीय राँवन सबै समले न कोय समीप कौं।
पर जात ऊड़ जैसे पतंगा देख पावक दीप कौं ॥२७१२

---

१ दुर्वचन। २ वंश का कलंक = विभीषण। ३ वह। ४ तीनों देवता = ब्रह्मा, विष्णु, महेश। ५ क्षेत्र = कुशल। ६ क्षत। ७ प्रलयकाल। ८ छोटाभाई।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

असमर्थ राँम लखी अनी-बनचर[1] बनी नहि बीरता।
धाये सु जब कौसलधनी धर हृद साहँस धीरता।
कर ऊलट पलट कनिष्ट[2] काया सक्ति ऐंच सजोर कै।
कढ. सूल हीय सौं दूर कीनी दूक दूकन तोरकै॥२७१३
दसकंध अवसर देखकै सुकमार राँम सरीर कौं।
कर चाप चाँप कजाक कल ही ताक दीने तीर कौं।
सर पीर सहि रघुबीर संचर[3] ऊर सधीर अपंपरा[4]।
कहि बजूकंकट[5] अरु सुकंठहि[6] धर्म-रीत धुरंधरा॥२७१४
बिक्रांत बनचर ब्रँह[7] बन सब घेर राखहु सेस कौं।
रनताल बीच संभाल रहीयै देख काल रू देस कौं।
बिललात चातक रहै बारध बूँद पवि न बार की।
तिह रीत दससिर प्राँन त्रस्ना रही ऊर बिच रार की॥२७१५
खल खरौ[8] सोई रनखेत में द्रग सामनै दिखरात है।
मद अंध ईह दसकंध मारन अधिक चित अकुलात है।
मति चकित ह्वै नहीं थकत मेरी बखत पोरूख बिसतरी।
कर कै प्रतज्ञा कहत हूँ द्रग देख बिपता दुस्तरी॥२७१६
बिन राँम होय बसुंधरा अथवा क राँवन बिन ईहीं।
मम सत्य बाचा माँनीयै कछु बात मिथ्याँ नहि कही।
बन बीच बास बिनास बैईभव ग्रास तरूफल ग्रहन कौं।
कीनास[9] की फिर त्रास करकस घास छावत घरन कौं॥२७१७
बीते सु बिपत बिलास में सब दिवस मास समास[10] ह्वै।
बिसवास बंधव सोया बिहरत आस छाँड़ उदास ह्वै।
तऊ कष्ट तन मन त्याग हु महाँदुष्ट राँवन मार कै।
जिह कारनै कपि सैन जोरी ऊदध बाँध ऊतार कै॥२७१८
पद दै बभीखन लंकपत सभ्भ समर मारे निश्चरा।
सहचार[11] कर आयुध सभ्भ खल खेत में आगै खरा।
पर द्रष्ट गरुड़ भुजंग पै सुनीयै न ऊबरे आँन सौं।
अथवा क द्रष्ट भुजंग आगै जीयत कोऊ न जाँन सौं॥२७१९

१ बानर सेना। २ छोटा भाई। ३ शरीर। ४ अपार। ५ हनुमान। ६ सुग्रीव। ७ व्यूह। ८ खड़ा है। ९ राक्षस। १० इकट्ठे। ११ युद्ध।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ईम गनहु लकग्रधीस की कुसलात मो ग्रागै कहाँ।
लघु भ्रात कौ सब बैर लैहुँ दोष जुत दुसमन दहूँ।
मम बात सुन सब साथ मर्कट गिरी बैठ गुहान में।
गंधर्ब ग्रादक सिद्धगन बढ देव छाय बिवान[1] में ॥२७२०
पुन राँम के सब राँमपन कौं लखहु नैनन लाय कै।
बिख्यात होय बसुंधरा जग ग्राद अंत जताय कै।
हकार जुत खल हेर कै टंकार कीय धनु ताँन कै।
सर तजेऊ श्रष्ट सँबार कै मनु बृष्ट मुदर[2] महाँन कै ॥२७२१
सम परसपर हथ बाह सरसत बीर रस बरखत बिहूँ।
कोडंड गुन भुजडंड करखत चंड रव भर दिस चहूँ।
मिल ऊभय ग्रोरन जोर जोरन मोर तोरन मंड कै।
घर गिरन लागी मनहु धारा मेघ बार घुमंड कै ॥२७२२
मुहमेज राँवन मारदै ग्रन-पार पीड़त कर वही।
समुझाय कीस सुखेंन कौं कछु राँम बतीयाँ पुन कही।
महाँदुष्ट राँवन सक्त मारेऊ भ्रात लखन भुजंग ज्यौं।
ग्रकुलाय पीड़ ऊछंड ह्वै जाहर ग्रमेठत[3] ग्रंग ज्यौं ॥२७२३
कलधोत[4] थंभ ग्रनूप ग्राक्रत रुधर भोजे ग्ररु रजी।
ऊर बीच मेरै ग्राय कै ग्रत सोक पीड़ा ऊपजी।
गिर घरन लागे धनुष गुन जुत बिगत बिसरत बाँन की।
ग्रत बढी चिंता ग्राय कै होय बीररस कै हाँन की ॥२७२४
दु:स्वप्न देख डरावनै जग जीव ज्यूँ डरजात है।
दुख भ्रात कै मम जीव ड़रपत ग्रमित गत ग्रकुलात है।
तज ग्रवधपुर चाले तही बनवास हम पाछे बहे।
सुख पाय जाहि सनेह सौं रमतीत[5] ह्वै बिचरत रहे ॥२७२५
सो लखन चाले स्वर्ग कौं पथ हमहु पीछै पाँयगे।
द्रुत ताहि बदलौ दैन कौ जमलोक में मिल जाँहिगे।
होय लालसा जय हेत की द्रढ़ दुष्ट राँवन दैहगे।
नहि ईधक याते ग्रौर निरनय कहा रसना कैहगे ॥२७२६

१ विमान। २ बादल। ३ ऐंठते हैं। ४ सुवर्ण। ५ रमते हुए।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मन मात कौसिल्या सुमंत्रा और पुरजन आद कैं।
मम सहित जाँनहु भाल मर्कट परी घोर प्रमाद कैं।
जो टरै टारी जीव सौं कीज न बीर बिलंब को।
कछु भ्रात लछमन जतन करोयै और नहि अवलंब को ॥२७२७
सुन बात रांम सुखैन हू बोले सु चित्त बिचार कैं।
ईह समय नांहिन सोक-को अब धीर रहीयैं धार कैं।
सोमित्र आंनन इंदु सम जुत प्रभा दीसत जोईयैं।
सम पत्र पंकज पंचसाखा द्रगहु सुंदर दो ईयैं[1] ॥२७२८
हीय सभर[2] स्वास सहेत है धरधरत छाती धूज कैं।
अत गाढ मुरछा आयगी ऊस्वाँस मग्ग अरूझ कैं।
प्रभु अरज सुनीयैं प्रजापालक सत्रुघातक साँवरे।
ऊपचार करत बिचार कैं अब ऊठहै लखन ऊतावरे ॥२७२९
सुन अर्ज कीस सुखैन की बिसवास रांम बसाय कैं।
ईत देख फेर सुखैन अवसर पवन-सुत परचाय कैं।
कथ[3] कही पूरब काल में जिम जाँमवंत सुजाँनीयैं।
जिह गिरी कौं फिर जाईयैं औसधी आतुर आँनीयैं ॥२७३०
चहु लखहु दछ्छन[4] श्रंग पै बिःसल्प करनी बल्लरी।
सूँघाव सौं हुय घाव सब सुध सहज निकरै सल्लरी[5]।
साबर्न करनी जिह समीपहि घाव भरहि सुघाव सौं।
संजीव करनी तिह समीप ही पुन सुँघाव प्रभाव सौं ॥२७३१
जीय ऊठत मृतक सरीर जंगम जाहि गुन ईह जांनीयैं।
महाँऔसधो संधाँनो नाँमक बिध सुँघाव बखाँनीयैं।
बलवंत होवत प्रथम तै बढ़ समल[6] जासौं सौ गुनौ।
ईह करहु कारज अंजनेई सीख श्रुत[7] मेरी सुनौ ॥२७३२
सुन सीख कीस सुखेन की कूदे सु नंदन-केसरी[8]।
पुन श्रंग ताही पहुच कै जुत जोर द्रग ढूँढो जरी।
पहिचाँन ऊपजी नीह प्रतीती ऐच श्रंग ऊखार कैं।
परचंड संख्याबीन[9] पौरुष बिवध रीत बिचार कैं ॥२७३३

१ ये। २ संभली हुई। ३ बात। ४ दक्षिण। ५ पीड़ा। ६ सबल। ७ कान। ८ हनुमान। ९ बुद्धिमान् = विवेकशील।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गवने सु सुरपथ[1] गैल कौं आये अफूठे ऊठ कै।
सब अंग पाव समेट कै कर ग्रहन कीनें कूट कै।
सोई मेल अगृ[2] सुखेन कै हनमत दिखाई हाजरी।
तुम जोय लौ ईह होय तत्पर जो जरूरी ह्वं जरी ॥२७३४
करकै प्रसंसा बजृकंकट जरी लीनी जोय कै।
कर चूर्न ताहि सुखेन कपि सूंघाय नाक समोय कै।
जागे सु लछमन नींद ज्यूं मिट पीर अंग मझार की।
अवधेस मेटे अंक सौं सब बनी बात सुधार की ॥२७३५
सुभ मिली क्रीत[3] सुखेन कौं हनमंत कै बलहेत की।
जय रांम लछ्छन ज्यांन की खल अजय त्यूं रनखेत की।
ईतनै पदारथ भये ऊद्यत जगे लछमन जाहि सौं।
सुग्रींव अंगद बभीखन सब तुरत छूटे त्राहि सौं ॥२७३६
बृंदारका[4] सब फूल बरखत मोद करखत होय मँहीं।
बनचरन जय जय धुन बढी गिर व्योम भूतल गहगही।
अवधेस ऊर आंनंद सौं ह्वं गये पूरन हेत में।
लघुबीर हू रघुबीरं कौं लख खेम जुत मिल खेत में ॥२७३७

दोहा

बोले लछमन सौं विहस, सजल नैन घनस्यांम।
खेम ऊठे रनखेत सौं, मुरछा छोर मुकांम ॥२७३८
तुम बिन सीय जय सब तजी, अरु जीवन की आस।
दीखन लागौ जुगन[5] द्रग, ईह जग सकल ऊदास ॥२७३९
सिथल-बांन[6] बोले समुझ, लछमन रांम निहार।
सत्य पराक्रम सांवरे, बोलहु नैक बिचार ॥२७४०
करी प्रतज्ञा बध करन, रांवन निसचर राज।
जाकौ प्राकृत[7] मनुज ज्यूं, ऊर बीसर गये आज ॥२७४१
प्यारी जांनहु प्रांन सौं, सत्य प्रतज्ञा सोय।
प्रांन तजैं जिह पालनै, जो नर ऊत्तम जोय ॥२७४२

१ आकाश। २ आगे। ३ कीर्त्ति। ४ देवता। ५ दोनों। ६ शिथिल वाणी।
७ सामान्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद मोतीदाँम

सुनी लघु-बंधव बात सकोय, गयौ दुख सो कहीयं रिस गोय।
कही फिर लच्छन सौं ईह कथ्थ, अहो बरबीर भये असमथ्थ ॥२७४३
बढ्यौ तुम सोक होये प्रतिबंध, सनात। मातन आंतन संध।
पराक्रम देखहु मोर प्रभाव, कहा कहुँ आँनन आप कहाब ॥२७४४
पंचानन तिछ्छन दंत प्रचार, बचै कोऊ बार न मत्त बिचार।
ततौ गुन बाँनन कौ कर त्याज, इहै खल रावँन बंचहै[1] आज ॥२७४५
जितै असताचल लौं रबो जाय, करूं खल दुष्ट निकंदन काय।
ईती ना कहि पाँनन[2] चाप ऊचाय, झरी कोय बाँनन ताप झुकाय ॥२७४६
चढ्यौ रथ राँवन हू रथचाह, रबो सिस[3] देख बढ्यौ मनु राह[4]।
मड़ी रघुबीर पै बाँनन भार, ऊमंडीय बारध धार असार ॥२७४७
ऊतं खल सिंदन पै असवार, ईतं रघुनायक भूम अधार।
बराबर जुद्ध नही[5] ईह बेर, कही सुन दानव देवन केर ॥२७४८
पुकारीय मातुल कौं पुरहूत, सवारीय राँम करावहु सूत।
चल्यौ रथ मातुल लै कर चाह, बढे तहाँ जोर हरे रंग बाह[6] ॥२७४९
मढी प्रति अंगन किंकनी माल, सतांग[7] के अंगन कील सँभाल।
बनी जर तार किनार बरूथ,[8] गही छिब मोतिन झल्लरि गूँथ ॥२७५०
धरें सिर-श्राँन[9] मई कलधोत, जग मनि माँनक हीरन जोत।
भरे तिह अंतर आयुध भार, निखंग हू आदक चाप निहार ॥२७५१
प्रकासत सूरज जेम प्रकास, परचौ ईक ककट हू तिह पास।
जरूरत जुद्ध कं काज जिनीक तहाँ घर मातुल बस्तु तितीक ॥२७५२
सतावीय मातुल लेय सतंग, ईहां रघुबोर पै आय ऊमंग।
झुकाय कं चाबुक कौं कर झाल, नमायकै सोरख[10] होय निहाल ॥२७५३
करी तिह बोनती राघव केर, बिराजहु सिंदन में ईह बेर।
सदां तुहि दास हुं मातुल सूत, पठायेऊ मोहोय कौ पुरहूत ॥२७५४
करूं सिवकाईय[11] नाथ क्रपाल, संघारहु राँवन देवन-साल[12]।
जिहीं रथ बैठ पुरंदर जात, प्रहारन दाँनव जात प्रजात[13] ॥२७५५

१ जीवित रहेगा। २ हाथों में। ३ शशि। ४ राहु। ५ मू०प्र० न्हीं। ६ घोड़े। ७ रथ। ८ झोली। ९ कलंगी। १० मस्तक। ११ सेवा। १२ देवताओं को पीड़ा देने वाला। १३ समुदाय = सैना।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सोई ईह सिदन सो हम सूत, मिटाथन सत्रुन कौं मजबूत।
ईती अरदास करी ढिग आय, प्रभू सुन आँनन थंभीय पाय ॥२७५६
गन्यौ तन मातुल आपन गात, मृजाद कौं राख नमाय कै माथ।
प्रदछ्छन दै रथ कौं गति पाय अरोह कै ऊपर बैठेऊ आय ॥२७५७
बकारकै रांवन लिन्नीय बग्ग, ऊड़े हय मारग आय ऊदग्ग।
ऊतै रथ रांवन कौ अरराय, धरा नभ सद्द रह्यौ थरराय ॥२७५८
ऊतै खल देवन कौ रन आय, सदा रघुनायक देव सहाय।
चलाकीय रांवन की अत चंड, ऊछट्टीय राक्षस अख्ख ऊद्दंड ॥२६५९
बिलेसय होय कढे बहु बांन, निकासत आँनन ज्वाल निदांन।
तके तन राघव चंदन तेम, ऊड़े मनु पंखन लागन ऐम ॥२७६०
भरे नभ मारग भींम भुजंग, निकारीय गारूड़ अस्त्र निखंग।
सुबर्नं के पर्न लगे सरसाय, चठठीय राघव चाप चढाय ॥२७६१
लगे आहि बांनन कै सोई लार, बिड़ारीय अख्खन अख्ख बिचार।
कीयौ तब रांवन दारुन क्रुद्ध, जुट्यौ रघुनायक सौं फिर जुद्ध ॥२७६२
करी झर और सकतीय[1] कूंत[2] दिखावत रूप मनौ जमदूत।
सहश्रन[3] बांन तजे ईक साथ, निरंतर पीर बढ़ी रघुनाथ ॥२७६३
मँडी तन मातुल कै सर मार परी रथ घोरंन सीस प्रहार।
तहाँ ईक दिव्वधुजा दीय तीर, सिखा तरू तोरीय जांन समीर ॥१७६४
गिरी ईम अंबर सौं गरराय, झुक्यौ घन-संबर[4] ज्यौं झरराय।
सबै गंन गंधृब चारन सिद्ध, बृंदारक दांनव देख विरूद्ध ॥२७६५
महाँ मुनिराज भये बस मोह, संभार न सक्कीय कीस-संदोह[5]।
भुजा जिह बीस प्रलंबत भेस, धरै धनु बांन भरै ऊर द्वेस ॥२७६६
अटै दस सीरख चुंबत आभ, सिलोचय दीरघ जांन सुनाभ।
सहे रघुनायक बांनन साल, जगी हीय बीच हुतासन ज्वाल ॥२७६७
भृगुट्टीय[7] बंक अमेठत अंह, जरावत क्रुद्ध पलादन[8] ज्यूह।
की चख्खयै[9] रोहित रंग करूर, प्रभा रबि गृषिम ज्यौं भरपूर ॥२७६८
हीयै कर संगर-खेत हुलास, पहूंचीया रांवन कै जहाँ पास।
भयौ रघुनायक देख सभीत, बनी मुख आकृत हू बिपरीत ॥२७६९

१ शक्ति। २ भाला। ३ सहस्त्रों। ४ प्रलय मेघ। ५ समुदाय। ६ मैनाक पर्वत।
७ भृकुटी। ८ राक्षस। ९ चक्षु = आंख।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

डिगे गिर लोनीय भूंम दरार, ऊध्यौं जग अंतर घोर अंधार।
लग्यौ दध[1] नीर हिलोरन लैंन, गरज्जत बद्दर बिद्दत[2] गैंन[3] ॥२७७०

करी फिर कूकर जंबुक कूक, ईते खर बिस्वर[4] हुक ऊलूक।
तरेरन तारन की तरकांन, उड़े चहु ओरन सौं ऊलकान[5] ॥२७७१

रच्यौ रन रांवन श्री रघुनाथ, समौ समसुप्त[6] बन्यौ जनु साथ।
डरे नर नार असंभव देख, सबै रिखी देवन आद बिसेख ॥२७७२

तथाँ गृह आद नछत्र तमांम, बढ्यौ ऊर अन्तर आय बिराम।
भयंकर सस्त्र अनेकन भाँत, परै केऊ अस्त्रहू पाँतन पाँत ॥२७७३

सुरासुर बैर अनाद सँभार, रहे दहु देख बराबर रार।
बकारत एकन एक बिसेस, सुधाभुख[7] आदक और सुरेस ॥२७७४

ईहै जय चाहत ओघ-अघीस, चहै जय आसुर हू दससीस।
पराक्रम पाँनन बीस प्रसिद्ध, सदाँ अवसाँनन जाँनन सिद्ध ॥२७७५

प्रहारन आयुध लीन प्रचंड, दुरंतर सूल गही भुज डंड।
समा सतकोटीय[8] ज्यौं द्रढ संघ, बिराजत अष्टन घंटन बंघ ॥२७७६

जगै जिम जोत हुतासन ज्वाल, कढै बिच दाहु निकेतन काल।
किते गिर ऊपर माँनहु कूट[9], खरे तिह तिछ्छन दीसत खूँट ॥२७७७

जुगांत के अन्तक ज्यूं ऊठ ज्वाल, लई तिह हाथ कीये चख लाल।
प्रकंपीय सागर औ पुहमीन[10], परेखीय देखीय लै भुज पीन ॥२७७८

ऊठायकै ताहि लही अजमाय, जुरायकै लायकै जोर जमाय।
भृमायकै ऊद्ध सँभारीय भार, चमकीय दाँमन ज्यूँ दिसच्यार ॥२७७९

लखे दल कीस भये भय-लीन, पलादन साथ बढ्यौ सुख पीन।
बक्यौ प्रत राघव गल्ल वजाय, सबै ईहो बात कहूँ समुझाय ॥२७८०

रचै तुहि मृत्यु सँपेखवहु राँम, मही पग मंडहु बीर-मुकाँम[11]।
करयौ मम-बंधव[12] कौं अनुकूल. सँभारकै भेट लहौ ईह सूल ॥२७८१

मरे केऊ बीर परे धर[13] माहि, जिही बिच आपुन सोवहु जाहि।
गहै तुहि छेदन भेदन गात, ईहै रन खेद मिटे ऊतपात ॥२७८२

ईती कहि सूल प्रहारीय ऐंच, खरौ हुय राघव ऊपर खैंच।
लखी नभ मारग आवत नैन, दुरंतर बाँनन लागेऊ दैन ॥२७८३

---

१ समुद्र। २ विद्युत। ३ गगन। ४ खचर। ५ उल्लू। ६ प्रलय। ७ देवता। ८ वज्र। ९ खण्ड = टुकड़े। १० पृथ्वी। ११ युद्धक्षेत्र। १२ विभीषण। १३ धरा = पृथ्वी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तुखानल-कल्प[1] मिटावन तेम, ऊलट्टत बार पुरंदर ऐम।
सुसोभत राघव ज्यूं घनश्यांम, रहे पग रोप महा बिसरांम ॥२७८४
सँभार कै बाँन दये केऊ सूल, झरे सब दारुन झारन झूल।
पतंगहु आग दवंगन[2] पेख, बरै जिम दौर कै अंग बिसेख ॥२७८५
भये सर राघव के बस मेट, हुतासन ताप गिरे सब हेट।
करयौ तब रांम असंभव क्रुद्ध, जुरे दसकंध बकारत जुद्ध ॥२७७६
सगतीय हथ्थ पुरंदर सोय, जिही रथ ऊपर देखीय जोय।
उठायकै ताहि लखी अघ ऊद्ध, सबै प्रति अंग बिराजत सुद्ध ॥२७८७
बिलोकत तेज महाँबिकराल, जुगंत[3] की मानहु जग्गीय ज्वाल।
प्रहारीय सिष्ट मिलायकै पांन, भई नभ मारग मेट भयाँन[4] ॥२७८८
लगी तिह फेट गिरी सोई लार, छुट्यौ जिह गाढ मिल्यौ सब छार।
लगे रथ तोरन घोरन लार, बिचच्छन तिच्छन बाँन बिड़ार ॥२७८९
परे तन तूट भये गन प्रांन, अगंजित राघव बाहु अजाँन[5]।
बकस्थल[6] बीच दये खल बाँन, त्युही मुर[7] सीस दये धनु ताँन ॥२७९०
भिदे सर अंग बरंम्मन[8] भेद, चुभे सोई जाय चरंम्मन[9] छेद।
रँगी रत धार निसारन रेल, पनारन नीर रही जिम पेल ॥२७९१
थट्यौ सोई बीच निसाचर थोक, ऊठ्यौ मनु फूल कै नील असोक।
रूप्यौ रन तीरन ताक तुरंत, कुप्यौ मनु कल्प के काल क्रतंत ॥२७९२
लखावत लोचन रंगत लाल, बढ्यौ अभिअन्तर बैर बिसाल।
चल्यौ सोई पायन चाल चछोह, भयौ मुहभेज मरोरत भौंह ॥२७९३
बिचछ्छन तिछ्छन दिन्नेऊ बाँन, लगे तन जायकै रांम निदाँन।
सब्ब रघुवीर लगे सरसाय, सरोवर जेम भरै घन छाय ॥२७९४
लखे अवधेस गये तन लाग, जताय न खालीय कोनहु जाग।
प्रकंपोय नाहिन पोरख पीन अखंडत मंडत जुद्ध अहीन[10] ॥२७९५
सिलोचय[11] पायन रोप सधीर, रहे रनखेत खरे रघुवीर।
प्रहारन लागेऊ राँवन पेख, बराबर गारघपछ्छ बिसेख ॥२७९६
जिही सर राँवन रोकत जाय, सँभारकै चाँप बढ्यौ सरसाय।
हीयै रघुवीर के दीन हजार, सबै सर सिष्ट सुवार–सुवार[12] ॥२७९७

---
१ प्रलयकाल की अग्नि। २ दीपक। ३ प्रलय। ४ भयानक। ५ आजानु। ६ छाती। ७ तीन। ८ बख्तर। ९ चमड़ी। १० यथावत = पूर्वपराक्रम से। ११ पर्वत। १२ सम्मेलाकर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तहाँ सर लाग कढ्यौ रसतेज[1], रसाँयन माट फुटी रंगरेग ।
सुसोभत स्याम सरीर सुबास, प्रफुल्लत माँनहु बृछ्छ पलास ॥२७९८
लखे सब गात भिदे खल लोह कीयो तब राघब दारून कोह ।
ऊतै गढ-लंक पति अनखाय, अरयौ रन दारून चाप ऊठाय ॥२७९९
ऊभै कर मारत तीर असंख. ऊठी जहाँ छाय अँधारीय अंख ।
छिपे बिव बीर कलंबन[2] छाँह, बकारत बोल ऊठावत बाँह ॥२८००
कीयौ रघुनायक क्रुद्ध कराल, हसे तब राँवन कौ लख हाल ।
बिलछ्छन नीत करूँ कहा बोध, बिना हम जाँनेऊ कीन बिरोध ॥२८०१
प्रीया मम बास ईकंतमैं पाय, छिपायकै आपुन लीन चुराय ।
पराक्रम तोहि परी पहिचाँन, भग्यौ परिपंथीय[3] लै निज भौन ॥२८०२
कुकर्मन कारक तूं मति क्रूर, सुगृेह कौं आय बन्यौ अब सूर ।
करयौ गुरु कुक्कर कौं ईह काज, लगै नहि तोन्हीय कौं हीय लाज ॥२८०३
बिना पति स्याहिक[4] और की बाँम[5], टँटोरत केस झँझोरत ताँम ।
ईही पुरसारथ माँनत आप पराक्रम तोर लख्यौ परताप ॥२८०४
ऊपज्जीय तोहि ईतो अहंकार, अनच्युत[6] काँम लहै अधिकार ।
लग्यौ फल ताहीय को ईह लेहु, गहो अब एकपदी[7] जम गेह ॥२८०५
जहाँ खर आद जुहारहु जाय, सबै सुत बंधव कौं समुझाय ।
मिलौ अवलंबत[8] होय मुकाम, कछू ईहाँ नाहिन तोसन काँम ॥२८०६
दसू सिर कुंडल जुक्त दिखात, निरंधर[9] होवहि आज निपात ।
फिरं चहु ओरन ऐंव फिरंड[10], जँझोरहि आँतन गिद्धन झुंड ॥२८०७
ईती कहि बाँनन चाप ऊझेल, पराक्रम राँवन को दीय पेल ।
मनोरथ मारन कारन मंड, प्रगट्टीय आय पराक्रम पिंड ॥२८०८
ज्युही बढ अखन सखन जोर, ऊदै सुभ-सूचक बाढेऊ ओर ।
मँडी रघुनायक तीरन मार, सलंगम[11] हाथन लीन पहार ॥२८०९
करी खलपै मिल बृष्ट करूर. पखाँनन बाँनन की भरपूर ।
घटा घन मंडीय घायन घूंम, धरा असमाँन ऊमंडीय घूंम ॥२८१०
मुक्यौ मद छाँह परी जनु नीच, बिहव्वल होय गयो रन बीच ।
गहै कर लस्तक मुष्टीय गाढ, चिमंटीय बाँन सक्यौ नहि चाढ ॥२८११

---

१ रक्त । २ बाण । ३ चोरी से । ४ सहायक । ५ स्त्री । ६ अनुचित ।
७ मार्ग । ८ शीघ्र । ९ निराधार । १० स्यार । ११ बानर ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

रघुबर देख्यौ राँवनहु, महाँ थकत मत मोह।
कीयो धरम पहिचान कर, अवसर जाँन ऊपोह[1] ॥२८१२
लख्यौ सूत लकेस कौ, मुरछागत मन मुद्ध।
कीयौ निकारौ रथ अमन, जिह टारौ दे जुद्ध ॥२८१३

छंद द्वै-अख्खरी

जब मुरछागत जानेऊ जाकौं, ताकौ सूत गयो लै ताकौं।
बाहर जाय लंकपत बोल्यौ, खल ह्वै क्रुद्ध मरम हीय खोल्यौ ॥२८१४
ऊरजस हीन गन्यौ मुह[2] ऐसो, जीव छुद्र असमर्थ हो जैसो।
सत्यहीन अथवा नारी सम, हीय डरपोक न जाँन लयेऊ हम ॥१८१५
अख छाँड नहि भयौ ऊदासी, तज पुरषारथ कहा मति आसी।
अरि सनमुख सौं टारचो ऐसो, जाँन बिकल कातर जन जैसै ॥२८१६
बहुत दिनन सौं सुजस बटोरा, मेट करचो जबही रथ मोरा[3]।
ईधक बात कहा कहूँ अनारी, खेत बीर तज करी खवारी[4] ॥२८१७
मिल्यौ मोह लख बैरी मेरौ, तिन सतकार करचो कछु तेरौ।
भयौ सूत तू दुसमन भाई, सुहृदपनै की तजी सगाई ॥२८१८
खायौ लूंन बहुत दिन खोये, बीज कुकर्म अंतपं बोये।
बैरी सनमुख खरौ बकारै, तूं मेरौ जहाँ तै रथ टारै ॥२८१९
ईह तेरी मति देख अघायो, ले जावहु जहाँ तं रथ लायो।
निज काँनन कथ सुनी नियंता, ऊर बिचार सब आवहु अंता ॥२८२०
करी अरज दसकंधर काजा, मैं अजाँन नाहिन महाँराजा।
मत कछु बिगत भई नहि मेरी, घट में भीत लही कहा घेरी ॥२८२१
मूढ भयो नहि नहि मतवारौ, बृद्ध भयौ नहि नहि मैं बारौ[5]।
कीय सतकार सत्रु मोहि कंसं, अनुचित बात ऊचारत ऐसै ॥२८२२

१. विचार। २ मुझे। ३ मोड़ा। ४ ख्वारी। ५ बालक।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हित की करत अहित मत हेरहु, फँनी समाँन निजर नहि फेरहु।
आद प्रभाव सुभाव अही कै, उसै पिवावत दूध दही कै ॥२८२३
ईहै बिसय मुंह गनत अनारी, हीन दसा कछू भई हमारी।
घोर जुद्ध कौं जोर घनेरौ, भये अमित आयुध भटभेरौ[1] ॥२८२४
भए मत घोरन[2] तन भीनौ, प्रबल बह्यौ परवाह पसीनौ।
बिगत भई सुरभी[3] जनु बलसौं, ज्यूँ दुरभिक में भीजै जलसौं ॥२८२५
ऐसी गत मैं देखी आँखन, पंखी हीन भयौ ज्यूँ पाँखन।
ईन सिवाय कछु लखे अमंगल, जाव निवासी जेतै जंगल ॥२८२६
बोल असूचक रहे जु बाँनी, जब मैं घटी असुभ जीय जाँनी।
स्वारथ[4] के ईक क़रम सयाँनै, जीय सौं बात विचारहु जानै ॥२८२७
देस काल रथरोही देखै, बेला लक्षन आद बिसेखै।
हरख खेद बल निबल हेर कै, निज कारज बिघनन निवेर कै ॥२८२८
मारग ऊँच नीच अनुँमानै, पुन सम बिसम गरत पहिचानै।
अवसर देख सत्रु ढिग आवै लख बिपरीत दूर लै जावै ॥२८२९
पीछै आगे कहु पसवारं, बेला देख लहै बिचवारै।
स्वारथी कारज सबै सयाँनौ, जो ऊपदेस गरू मुख जानौ ॥२८३०
कीयौ काम मैं हेंत क्रतारथ, सबही राज बिचारै स्वारथ।
मुरछागत लख कोऊ रिपु मारै, आय अचानक बीर-अखारै ॥२८३१
टारयौ रथ तातै दै टारौ, स्वाँमी कारज कीयौ सुधारौ।
भयो चेत अब मुरछा भागी, लरन हेत अभिलाखा लागी ॥२८३२
अज्ञा होय सोय अनुसरहूँ, कहहु नाथ कारज पुन करहूँ।
सुन स्वारथि के बचन सयानै. जीय ऊपकारक सब बिध जाँनै ॥२८३३
भये प्रसंन रांवन ईम भाखी, ऊर चिंता समहर[5] अभलाखी।
रन में बहुर दिखावहु रघुवर, पुन बल जाय लखहु सब परकर ॥२८३४
ईतनी कहि ईक हाथ अलंकृत, बगसे रीझ ताहि बहुरै बित।
बिबध सुनत लंकेसुर बोली, हय हके हुय सूत हरोली[6] ॥२८३५
आयेऊ रांमचंद्र जहाँ आतुर, चपल चलाय पवन गति चातुर।
रांवन देख खरो रघुराया, ऊदित भये-रन चाप ऊठाया ॥२८३६

---

१ मुठभेड़। २ घोड़ों का। ३ गाय। ४ सारथी। ५ समर=युद्ध। ६ शीघ्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

देवन रांम भेव दरसाये, अवसर जिह अगस्त मुनि आये।
महाँबाहु रघुबीर मुगटमनि, सुन धारहु धीरज कर सावनि ॥२८३७
आदितहृदयसतोत्र ऊजागर, ईहै पाठ कोजं गुन आगर।
जीतहुगे सब सत्रुन जासै. ईही समर में जाहि ऊपासं[1] ॥२८३८
पुंन्यदाय सोई नास रहित पुन, सिव सरूप जयदायक जन सन।
सत्रु बिनासक करन सु धारौ, ऊर बिसवास जगत ऊजयारौ ॥२८३९
जाप करहु त्रय-तापन[2] जीत हु, अखल जगत मँह होहु अभीत हु।
हरन अमंगल मंगल हेतू, साधन सकल धरम द्रढ सेतू ॥२८४०
चिंता सोक मिटावन चित कौं, बरधक आयु बढावन बित कौं।
ऊतंम रूप सदाँ अनुसरहीं, भुवनन बीच जोत नित भरहीं ॥२८४१
भास्कर बिवस्वाँन नाँमन भज, रघुवर मेटहु दुख अगाध रुज।
किरन ऊदोत प्रकासन करता, हेत जगत सो तम-गुन[3] हरता ॥२८४२
सुर आसुर गन मनुज सहायक, नमसकार करनै के लायक।
पूजा कर तन ताप प्रहारौ, निगम अगम प्रत ईह निरधारौ ॥२८४३
किरन प्रकासन करकै केते, जढ जंगम रक्षक जग जेते।
पोखत निसदिन सबही प्राँनन, आदहु अंत सिद्ध अवसाँसन ॥२८४४
ब्रह्माँ बिसन प्रजापत बासव, बरुन कुबेर सकंद चंद्र भव[4]।
पित्र पती बड़वासुतं पावक, दैत्य देव बसु साध्र मनूदक ॥२८४५
पाँन प्रजा क्रम काल परेखौ, गगन ज्ञान सूरज मय देखौ।
करता खट रितू कारज कारन, बरष मास दिन माँन बिचारन ॥२८४६
जग के ऊतंम क्रम[5] है जेते, येक सूर आस्रत है एते।
जनन हेत ईह नाम जनावत, गहहु ध्याँन धारन मैं गावत ॥२८४७
सुन रघुबीर कह्यौ मुनि सेतो, सो सतंत्र बिध पूर्वक सेतो।
करकै कृपा अनुक्रम कहीयै, लाभ समर जय ज्याँनको लहीयं ॥२८४८
ईह सुनकै मुनि कीय ऊपदेसा, नीत निपुन श्री अवध नरेसा।
धीरज कर सतोत्र उर धारयौ, आद अंत बिध जुक्त ऊचारयौ ॥२८४९
ठाढे भये समुख ईक ठौरं, जुगल पाँन अंजुली पुन जोरं।
तीन बार जप करेऊ तहाँ हो, मुनि की मत अनुकूल महाँ हो ॥२८५०

१ आराधना कर के। २ तीन ताप—दैहिक, दैविक, भौतिक। ३ अंधकार=अज्ञान।
४ महादेव। ५ काम=कर्म।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

काय पवित्र आचमन कीनौ, लरन हेत कोडंड कर लीनौ।
ईत मुनिराज सिधाये आगै, लखन रांम लरनै फिर लागै ॥२८५१
ऊत दसकंधर बीर-अखारै, आयौ समरख[1] छाय अपारै।
श्री सूरजनारांयन स्वामी, हेर कह्यौ लंकेस हरांमी ॥२८५२
रांम प्रहारहु याकौं रन में, मत बिलंब कीजै कछु मन में।
देवन कौ निसदिन दुखदाई, त्रास देत सीता अतताई ॥२८५३

दोहा

मुनि अगस्त अनुकूल मति, साधन कीय श्रीरांम।
सूरज कौ बर तिह समय, भयौ माहां अभिरांम ॥२८५४
ईह पावन ईतीहास कौं, कांन सुनै जौ कोय।
सूरज नारांयन सुलभ, जाहि निवाजै जोय ॥२८५५

छंद त्रोटक

रथ फेर फिर्‌यौ लख रांवन कौं, समल्यौ घन मांनहुं सांमन[2] कौं।
फिर ऊपर दिव्य ध्वजा फरकै, धुन नेमीय सौं पुहमी धरकै ॥२८५६
केऊ किंकनी बीच मढी करीया, झनकार बजै रव झल्लरिया।
मिल दीपत कंचन मालन की, लड़ बीच लगी मनि लालन की ॥२८५७
जिह मेचक[3] रंग तुरंग जुपे, चल चंचल देख कुरंग छुपे।
भय दायक आयुध भार भरे, जिह ऊपर नग्ग अमोल जरे ॥२८५८
दुत व्यदुतयां[4] तिनकी दमकै, चपला जनु बद्दर में चमकै।
लग लस्तक मुष्टीय चाप लीया, दुजराज[5] दिपै तिथ ज्यां दुतीया ॥२८५९
सर स्वर्न पंखारन हाथ सझै, तेऊ सिजनो सीस चढाय तजै।
लग येक चले ईक लारन कौं, धुरवा[6] जनु छोरत धारन कौं ॥२८६०
रघुनाथ लख्यौ खल के रथ कौं, समुझाय कह्यौ हरि-स्वारथ[7] कौं।
केऊ जुद्ध पुरंदर संग करे, अरि पूरब देवन न लाग अरे ॥२८६१

---

१ क्रोध। २ श्रावण। ३ स्याम। ४ मू. प्र.=अस्पष्ट, बिजली। ५ चन्द्र।
६ मेघ। ७ इन्द्र का सारथि। ८ दैत्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गुनबंत प्रबीन बरिष्ट गनौ, परचाय कहै कहा सूतपनौ।
मग बाँमी-कोर[1] मिलावत है, अत आतुर सौं खल आवत है ॥२८६२
तुमकौं हमकौं लहि हाथ तरे[2], केऊ दाव विचार कै घात करे।
ईह बात कौ जाँनहु सार ईही, निरभै हुय बैठहु साथ नही ॥२८६३
अब लै चलीयै रन अंगन कौं, तुम तेज सौं हाक तुरंगन कौं।
रथ सौं रथ जोर मिलाय रमै जय और पराजय तोहि जुमै ॥२८६४
रसमी[3] थिर चित्त सँभाय रहौ, गत ढील करौ कहु ताँन गहौ।
मग ऊरध अद्ध विचार मही, सम अस्म[4] ऊतार चढ़ाव सही ॥२८६५
द्रग दै कर लेखन देखन में, बरताव प्रभाव बिसेखन में।
ईतने तुम काँम धरौ ऊर में, करता रन चाप गहूँ कर में ॥२८६६
घहराय घटा चढकै घन की, सरसाय कै आवत साँमन की।
परवाह प्रचंड बहै पवना, गहि बद्दर गैल करै गवना ॥२८६७
ईन येक ही साथ ऊड़ावहुगो, जब ही रन में जुरजावहुगो।
रथ और तुरंगम फेर रथी, पुर[5] होय बरंगन[6] लंकपती ॥२८६८
परहै धर[7] सीस परेखहुगे, लरनौं हमरौ सिध लेखहुगे।
सुन चालेऊ हाक सतंगन कौं, पुरहूत कौं सूत पमंगन कौं ॥२८६९
रघुनायक बायक[8] ऐम रुची, खल खेलंन खग्गन गग्ग खिची।
रथ राँवन बाँम करचौ रुख में, परबीन सबै बिध पौरुष में ॥२८७०
पवमाँन गही रुख याँन पई, रज ताहि कै ऊपर छाय रही।
क्रतु[9] मातुल राँम लखी करनी, ऊर ऊक[10] मथाँन भयौ अरनी ॥२८७१
करकै रिस चाप गह्यौ कररौ, गुन ताँन कै बान करचौ गररौ।
रघुनाथ लख्यौ खल रोस-रतौ, मन राँवन मारन कीन मतौ ॥२८७२
लख चाप पुरदर हाथ लीयौ, हट क्रुद्ध झलाझल होय हीयौ।
जय की बिब आस करै जुरकै, मनु भौंन भुजंग जुरे मुरकै ॥२८७३
सर येक पै येक सँभारत है, झहरात मनौ विष झारत है।
किधु सिंघ जुरे किधु दौय करी, पुरहूत मनौ दनु रार परी ॥२८७४
बढ़ देवन सिद्ध बिसेखन कौं, रिखी चारन हू अवरेखन कौं।
अचराँन के अंबर याँन अरैं, कुसलाधिप की जय चाह करैं ॥२८७५

१ बायें किनारे। २ नीचे। ३ बागडोर। ४ असम=विषम। ५ शरीर। ६ विवर्ण
७ धड़। ८ वाक्य। ९ कार्य-कुशलता। १० अग्नि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

झुक रांम कै ऊपर फूल झरी, करसौं सब देवन साथ करी।
रसतेज[1] गिरावत रांवन पै, घरपै पुरपै खल धांमन पै ॥२८७६
ऊलकांन गिरी केऊ अम्बर सौं, कढ सब्र परे केऊ कंम्मर सौं।
बढ बांईय ओर बघूरन के, ध्रुव ढेर परे ऊड़ धूरन के ॥२८७७
द्रुत रांवन को रथ दौरत है, झुक गिद्धनीयै झकझोरत है।
फिर बोलत अगृ फिरंडनीयां[2], मुख ज्वाल का रालन मडनीयां ॥२८७८
दिग दाह भयौ फिर लक दिसा, रव घोर रचावत धूज रसा।
ऊतपात लखे निसचार अनी, बढकै हथ बाहन जाहि बनी ॥२८७९
गत बांह सौं रथ्थ करै गवना, प्रतकूल प्रवाह बढै पवना।
जुत स्वेद तुरंगन जंघन में, दरसावत आग दबंगन[3] में ॥२८८०
ऊमड़े पुन आंखन आंसुरवा, कढ कोयन नाल मनौ करवा।
सुभ सूचक रांम भये सब ही, जुध कारन गौंन करचौ जबही ॥२८८१
परतीत भई जय पावन की, निसचै खल खेत नसांवन की।
मन घोरन मातुल मोद मई, जिह रीत प्रसंन्नहु रांम जई ॥२८८२
भयदायक संगर फेरे भिरे, द्रग देखत सैनक साथ डरे।
निसचार तथां बनचारन की, हुव बाकन हाक हजारन की ॥२८८३
ऊड़ खेह छई चढ अंबर कै, समल्यौ घन मांनहु संबर कै।
करखै धनु सिंजनी कांनन लौं, बरखै बहु आयुध बांनन लौं ॥२८८४
अंधियारी भई चहुओरन में, झर बांनन की झकझोरन में।
भट केक भुजांतर[4] भेट भिरै, कपि ओर पलादन जुद्ध करै ॥२८८५
बिललावत कातर मग्ग बहे, रनधीर किते पग मांड रहे।
कल[5] देख रहे केऊ कौतुक कौ, घमचक्कन मेटे हीयै धक कौं ॥२८८६
सुभ रांम लखे चख सूचक कौं, ऊत रांवन देख असूचक कौं।
जीय में ईक आस बढी जय की, पर येकन हांन पराजय की ॥२८८७
भये येक तजे ईक भीत भरे, पुर[6] तेज बढचौ ईक मंद परे।
चिर आयु लखी ईक आयु छुटी, मुद चाह बढी ईक चाह मिटी ॥२८८८
अततासीय[7] रांम रहे अरकै, निरगृथंन काज निसाचर कै।
कीय रांम मतौ बधकौ करनौ, मन रांवन जान लयौ मरनौ ॥२८८९

---

१ रक्त। २ स्यार की मादाएं। ३ आकाश। ४ छाती। ५ युद्ध। ६ शरीर। ७ आततायी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोऊ पाँनप आप दिखावन कौं, दोऊ ओर करै केऊ दावन कौं।
तहाँ राँवन रोख होयै तमक्यौ, झहरावत चाप कलंब झुक्यौ ॥२८९०
धुज काटन ऊपर घंख धरी, क्रतहस्त[1] असंखन मार करी।
द्रढ संघ पुरंदर सिंदन की, बरजोर करोरन बंधन की ॥२८९१
सर मारन सौं नही तूट सकी, जिह् देखत राँवन बुद्ध जकी।
बदलौ तिह् लेवन राँम बढे, केऊ तिछ्छन बाँन कलाप[2] कढे ॥२८९२
अहि-आक्रत[3] लै अवलंबत[4] कैं, गुन ताँन जहाँ कररी गत कैं।
सर येक दीयौ दसकंधर कै, निभ्र सिष्ट मिलाय निरंधर कै ॥२८९३
धुज टूट परी रथ बीच धरा, पुन राँवन देख होयै प्रजरा।
तन ताक कजाक तुरंगन कं, गहि चाप कलंब दये गनकै ॥२८९४
अटकी जिह् पख्खर[5] बीच अनी, घट नाँहिन बाढीय पोर घनी।
निरुधाध लखे हय नैनन सौं, बतराय अभीक्षन बैनन सौं ॥२८९५
घहराय घटा जिम ताहि घरी, झहराय कलंबन कीन झरी।
केऊ जालन[6] काँम लगौ करनै, नहि जाहिकौ होय सकै निरनै ॥२८९६
परघातन[7] और गदा फरसा, बहु मूसल की सिल की बरसा।
चहु ओर तै सूलन चक्रन की, बढ मार कुटार स बक्रन की ।२८९७
भयकार समर्द[8] अपार भयौ, रघुनाथ संभारत साथ रह्यौ।
कछु राँवन अग्र गयौ कढकै, बहु बंदरी सैन दिसा बढ़कै ॥२८९८
बहु मार करी तहाँ बाँनन की, पर त्राहि परी कपि प्राँनन की।
जितही तित बाँनन ज्वाल जुरै, पुहमी नभ आग दवग परै ॥२८९९
रथ हाक तुरंगन राँम रुपै, करी ऊपर ज्यूं मृघराज कुपै।
अपनी गन फौज ऊबारन कौं, मन धंक धरो खल मारन कौं ॥२९००
तन ताक हजारन बाँन तजे, ईक येकन आपुस में अरझे।
अवकास रह्यौ न अकास ईतौ, पवमाँन न लागत गौंन पतौ ॥२९०१
बरबीर ईतै रघुनाथबली, चढ खेत ऊतै दसकंध छली।
सझ हाथन बीच सरासन कौं, बरसावत जावत बाँनन कौं ॥२९०२
ईक नाँहि हटे ईकसौं अरकै. क्रतहस्त समर्द-कला करकै।
मन मोद जुतै रनखेत मँही, रुख येक बरोबह बाँ तरही[9] ॥२९०३

१ निपुण। २ तरकस। ३ सर्प की आकृति के। ४ शीघ्रता। ५ ऊपर डालने का वस्त्र=पाखर। ६ माया का जाल। ७ लुहानी। ८ समर=युद्ध। ९ उसी प्रकार।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

केऊ रांँवन के सर रांँम कटे, द्रढ़ रांँवन रांँमहु रान दटे।
पुहमी पर छायकै जाय परे, जहांँ राघव कै ऊर क्रोध जरे ॥२६०४
तहांँ रांँवन ताक तुरंगन कौं, अत बांँन प्रहारीय अंगन कौं।
बदलौ तिह सांँवन वारन कौ, वह लागीय[1] बाह बिड़ारन कौ ॥२६०५
भयकार महूरथ येक भयौ, रन बीच बराबर हाथ रह्यौ।
द्रग देखत ताहि करेज दहै, कर ता रन की कहा बात कहै ॥२६०६
दहु ओरन बीरन दावन की, जुरजावन ओ फिरजावन की।
रथ बांँमहू दछ्छन रोकन की, बढ सीध रू बंक बिलोकन की ॥२६०७
बिध स्यंदन मंडल बंधन की, सरसै धनु बांँनन सधन की।
रथ सूत रथी रचना रचकै, जय आपन आपन की जचकै[2] ॥२६०८
बढ येकन येक बिचारन में, मन येक कौ येकन मारन में।
रघुनाथ प्रहारत रांँवन कौं, निसचार हू रांँम नसावन कौं ॥२६०९
ईक पै ईक मार करै ईधकी, बरजोरन घोर घमे बिधकी।
बिन गारधपछ्छ करै बरसा, दुई रूप बलाहक कै दरसा ॥२६१०
ईक सौं ईक जाय समीप अरे, भरपूर ऊभै दिस चाहि भिरै।
हय प्रोथन प्रोथन भेट हुवा, मिल स्यंदन सिंदन काग-मुहा[3] ॥२६११
पट जूट पताक पताकन सौं, अवलोकन आंँखन आंँखन सौं।
अवधेस समीप लख्यौ अरि कैं, सझ रोख चढाय लये सर कैं ॥२६१२
घट ताक दये चहु घोरन कौं, धर चाल गये सोई धोरन कौं।
फिरकै रथ लै फननेटीय कौं, चढ चाक सभारीय चेटीय कौं ॥२६१३
अत रांँवन क्रूद्ध भयौ ऊर में, मगरूर सौं बांँन दये मरमै।
रघुनायक नाहि गने रन में, मुद बीरता छाय रहो मन में ॥२६१४
द्रिढ मातुल कै तन मार दई, कर बज्र प्रहार प्रकार कई।
बपु मातुल हू ऊतसाह बढ्यौ, चलकै खल छातीय जाय चढ्यौ ॥२६१५
तहांँ रांँवन कौं लहि हाथ तरै, केऊ धात जहांँ रघुनाथ करै।
बरसाय हजारन बांँनन कौं, अत दाव करै अवसांँनन[4] कौं ॥२६१६

१ मू. प्र. लगीय। २ जांच कर। ३ जैसे दो कौए मिलते हैं। ४ मारने को।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अपने रथ ऊपर क्रूद्ध अरुयौ, जब राघव सौ खल जुद्ध जुरुयौ।
गहि मारेऊ मूसल और गदा, परघातन[1] घातन मृत्युप्रदा ॥२९१७
भरपूर भयाँनक जुद्ध भयौ, रव मारहु मारहु छाय रह्यौ।
बरखात भयंकर बाँनन की, पर हाँन करी केऊ प्राँनन को ॥२९१८
हल चल्लीय सात[2] हिलोरन सौं, बढ सागर की जल बोरन सौं।
पुन सात पतालहु हूक परी, केऊ जंगल जोवन कूक करी ॥२९१९
अरु कप ऊठी बहुधाँ अचला, क्रमसाखीय[3] की भई मंद कला।
थिर होय प्रभंजन गौंन थके, ध्रुव पंन्नगराज सहस्र धुके ॥२९२०
रन गंधृव किन्नर देख रहे, सुर सिद्धहू नागन आद सहे[4]।
द्विज स्वस्ति ऊचारत आसिष दै, रघुनाथ कौं आसिष हू रिख दै ॥२९२१
जय चाह करै सोई ब्योम जुरै, निसचार-पती जय कौं निदरै।
हुय नाँहिन नाहिन होवहिगे, गुनि कीरत कौं पुन गोवहिगे ॥२९२२
सम सागर जाँनहु सागर है, अरु ब्योम ब्योम सौं-ऊजागर है।
रन राँम ज्युँही ईक राँमहि कौ,हठ राँवन लंक के स्याँमहि[5] कौ ॥२९२३
लख देव नदेवन की ललना, किन हूँ न परो पलहू कलना।
ईह बात कहै सब आपुस में, समुदाय कै भाय की नाहि समै[6] ॥२९२४
बर कीरत हू रघुबंसिन की, परताप सौं राँम प्रसंसन की।
जिह चाप गह्यौ कर क्रोध जुतै, अहि रुपीय बाँन संधाँन ईतै ॥२९२५
क्रतहस्त सँवार प्रहार करयौ, पर राँवन कौ सिर टूट परयौ।
जुत कुंडल हू सिरश्राँन जहीं, त्रहु लोक निवासीय देखतहीं ॥२९२६
भय[7] दूर जुंही सिर फेर भयौ, निरख्यौ सबही ईह ख्याल[8] नयौ।
अत आतुर सौं रघुवीर ईतै, पुन कीन प्रहारहु सोस प्रतै ॥२९२७
कट[9] दूसरी बार कलेवर सौं, जोई पार ऊपार भयौ जरसौं।
झटकै कटकै सोई फेर जम्यौ, कर तारन राँवन ताँम क्रमो ॥२९२८
ऊतपाटत[10] ह्वै सिर ऊगत है, पुन राँम कौ दाव न पूगत[11] है।
दसरथ्थ के नंदन देख दसा, गत अद्भूत संसय चित गृसा ॥२९२९
खर दुखन आद हने खल कौं, दोय दंड निसाचर के दल कौं।
त्रीय-लंपट राँवन तारन सौं निसतेज भये किह कारन सौं ॥२९३०

१ सुहागी। २ साथ। ३ सूर्य। ४ सहित। ५ स्वामी। ६ चैन। ७ हुआ। ८ खेल। ९ मू. प्र. कर। १० अलग होते ही। ११ पूर्ण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऊर सोच भयौ अवसासन में, रघुनाथ तऊ न हटे रन में।
धर धीर सरासन कौं धरकै, भुजअंतर बान दये भरकै ॥२६३१
पुन रांवन क्रुद्ध बढ्यौ प्रबला, सभ्भ मूसल सूल जुतै अवला।
निज घात करै रघुनायक कौं, सरसायकं घायक सायक कौं ॥२६३२
कबहूँ पुहमोन अकाश कहूँ, सभ्भ कांनन पब्बय सीस सहूँ।
दिन सात भयौ अत दारुन कै. निसद्योस[1] सदा निगधारन कै ॥२६३३
ऊनमेख रह्यौ नहीं वंध ईतै, परभातहु फैरहु सांभ्फ प्रतै।
द्रग पूर लख्यौ सब देवन हू. अरू नाग पिसाच अदेवन हू ॥२६३४
मघवा रथ प्रेरक मातुल कै, कछु नाहि परी पलहू कलकै।
अवसांन दयौ अवधेसुर कौं, अब क्यांन[2] प्रहारत आसर[3] कौं ॥२६३५
दरसाव सुन्यौ हम देवन सौं, भजमांन बिचारहु भेवन सौं।
बरतावहु काल बिसेसन कौ, खल आय गयौ रन खेसन कौ ॥२६३६
सर बृह्म को सांध सरासन पै, अतसै द्रढ होवहु आसन पै।
करीयै न बिलंब क्रपाल हू. अगवांन खरी ईह आसर हू ॥२६३७
सुन मातुल श्रांन सिखावन कौं, प्रभू बांन गह्यौ कर पावन कौं।
महाँराज अगस्त लयौ मिल कै, भहरावत तेज मई भलकै ॥२६३८
बिध[4] इंद्र के हेत बनावट कौ, सबही गत खेल सभावट कौ।
मुनि के सिर ऊपर कीन मया, तिनकौं सुभ कारन दीन तया ॥२६३९
रिखीराज[5] दयौ रघुराजहु कौं, सवता-कुल[6] के सिरताजहु कौं।
बनवास मिले जब धांम बिचै, खल प्रांन कौ हारक बांन खिचै ॥२६४०
पवमांन कौं थप्पीय पंखन कौं, अरू पावक हू जग-अंखन[7] कौं।
गहिकै पव[8] थप्पेऊ गांसीय पै, बर अंबर कौ गुन बांसीय पै ॥२६४१
मंदराचल मेर गराईय पै, गरवापन कौं लहि गोईय[9] पै।
वहु तेज मई जिह बाज[10] बने, सब तार सँवार सुबन सने ॥२६४२
जढ जंगम तेज जितौ जग कौ, नद और नदीस तथां नग कौं।
गहि के निभ्भ सार तथा गुन कौं, धुर घोर कठोर करै धुन कौं ॥२६४३
पबनासन[11] स्वास सहेत पनौ, गत जाहि भयंकर रूप गनौ।
करवाल जुतै जिम ज्वाल कढै, बिकराल अपूरब चाल बढै ॥२६४४

---

१ रात-दिन। २ क्यों नहीं। ३ असुर=रावण। ४ ब्रह्मा। ५ अगस्त्य ऋषि। ६ सूर्यवंश। ७ सूर्य। ८ वज्र। ९ गुण। १० पंख। ११ सर्प।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सतकोटीय[1] ज्याँ द्रढ़ संघ सदा, गढ पब्बय[2] काट करै गिरदा।
गनती कहा कुंजर घोरन की, बल सिंदन साज बियोरन की ॥२९४५
चरबी रूच कौसक[3] चख्खन[4] की, पुन प्राँनन पौंन बिपख्खन[5] की।
भख[6] काकन गिद्धन कौं भरता, दल दुज्जन के बल कौं दरता ॥२९४६
जम ज्याँ भयदायक जीवन कौं, पर बोरत[7] की रत[8] पीवन कौं।
चित मोद करै बनचारीय[9] कौं, रघुबंसिन के रखवारीय कौं ॥२९४७
गुन चाप चढाय झुकाय गह्यौ, रसमी[10] रब[11] तेज प्रकास रह्यौ।
पच पब्बय तोरन पच्छन[12] कै,तपतच्छ[13]लह्यौ गहि तिच्छन कै ॥२९४८
विध वेद के मत्र बिचारन सौं, सुध सिष्ट मिलाय सु मारन सौं।
तन राँवन ताक कै राँम तज्यौ, गहरी धुन मेघ ज्युही गरज्यौ ॥२९४९
हीय लंकपती सोई पार हुवौ, महा राकस[14] राँवन खेत मुवौ।
महाराजक फेर कलाप[15] मँही, तितहू प्रबस्यौ सर बार तँही ॥२९५०
धर राँवन आय परचौ धर हू, केऊ आयुध छूट गिरे करहू।
पुन राँवन देख परासन[16] कौं, निसचार लगे केऊ नासन कौं ॥२९५१
लखकै बनचारन[17] लार लई, द्रढ[18] मूसल हू सिल मार दुई।
पहुँचे सोई जायकै लंकपुरी, कल-रावत[19] क्रंवत[20] बूंबकरी ॥२९५२
कुसलात ऊचारत भाल[21] कपी, जय राघव देवन साथ जपी।
वहु फूलन कौं बरसावत है, गुन राघव के पुन[22] गावत है ॥२९५३
सुब लंक निसाचर स्वाँमीय कौं, निरगृंथन[23] राँवन नामीय[24]कौं।
दिल अंतर चारन देवन कौं, भल मोद प्रचारीय मेवन कौं ॥२९५४

दोहा

रघुबर राँवन मार रिपु, भूँम ऊतारचौ भार।
सुर नर मुनि हरखे सकल, नैन निहार निहार ॥२९५५
सीया सुन्यौ हीय लाग सर, समर मरचौ दससीस।
बिजय सुनो रघुबीर की, बिध जुत बिसवाबीस[25] ॥२९५६

---

१ वज्र। २ पर्वत। ३ हाड़। ४ चाखने की। ५ विपक्षी। ६ भोजन। ७ बैरियों। ८ रक्त। ९ वानर। १० रश्मि = किरण। ११ सूर्य। १२ पंख १३ इन्द्र। १४ राक्षस रावण। १५ तरकस। १६ मृत्यु। १७ वानर। १८ दृढ़। १९ बिलखती है। २० रोती है। २१ भालू। २२ मुनि। २३ मरण। २४ नामी। २५ पूर्ण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद त्रोटक

बध रांवन को कीय रांम बली, मुद[1] पाय सबै कपि सैन मिली ।
हित लायकै चाहि प्रजा हरखी, सुर भूसुर[2] चारन होय सुखी ॥२९५७
गुन किन्नर गंध्रव[3] गावत है, वर दुंदभ[4] बीन बजावत है ।
बहु अच्छर[5] छाय बिमांनन में, तरथेई रचावत तांनन में ॥२९५८
बरखै कर फूलन को बरखा, कल रांवन रांम कहै करखा[6] ।
बरबीर बिराजत रांम बिचै, रमनीय[7] अनूंपम रूप रचै ॥२९५९
रथ में इंद्र अनूंप जराव जरयौ, धुज डंड प्रचंडत ऊर्द्ध धरयौ ।
हय जूप[8] रहे तिह रंग हरी, कररी गत मातुल बाग करी ॥२९६०
रथ में रघुनाथ बिराज रहे, गुन तांन सरासन बांन गहे ।
जट जूट सुसोभत[9] सीस जटै, अरबिंद[10] पै मांनहु भौंर अटै ॥२९६१
अय भाल में राजत रेख तनी, सत राजस तामस सक्ति सनी ।
चख[11]दोयन तें रसबीर[12]छुट्यौ,अधरांन[13]पै मांनहु आंन अट्यौ ॥२९६२
बिच सोहत दंतन पंत[14] बनी, कुलो दाड़म की किधु हीरकनी ।
जय की रुख की मुख जोत जगी, परभा[15] रबि पंकज जांन पगी ॥२९६३
छिब[16] केहर कंधर छाजत है, बिच फूलन माल बिराजत है ।
भुजडंड मनो गजसुंड भरे, धनुबांन ऊदंचत हाथ धरे ॥॥२९६४
कट खोम[17] रजै पट तूंन[18] कसै, बिच स्वर्न पंखारन बांन बसै ।
जय खंभ[19] ज्युहो[20] जुग जंघ जुरी, परपूर समांन प्रभा पिंडरी ॥२९६५
रज पांवन[21]में कछु लाग रही, जलजन्म[22]बिलाग पराग[23] जंही ।
तलवा बिच ऊरध रेख तनी, सुल भूंम मनौ जय संवलनी[24] ॥२९६६
बपु[25]स्यांमल स्वेद की बूंद बनी किधु नील सरोज पै नीरकनी[26] ।
चिव[27] रांम की देखन सैन चहै, लहरी रव[28] जांन हिलोर लहै ॥२९६७
प्रभू देख फिरै ऊलटा पलटा, घन घूंम रही जुन लूम घटा ।
पुन देखत रांवन खेत परयौ, भटमार जिहो रन-ताल भरयौ ॥२९६८

---

१ मोद = प्रसन्नता । २ ब्राह्मण । ३ गंधर्व । ४ नगाड़े । ५ अप्सरा । ६ मारबिया । ७ रमणीक = सुन्दर । ८ जुते हुए । ९ सुशोभित । १० कमल । ११ आंखों । १२ वीररस । १३ अधरों पर । १४ पंक्ति । १५ प्रभा । १६ छवि । १७ वृक्षों की छाल । १८ तरकस । १९ जय स्तम्भ । २० समान । २१ पैरों में । २२ कमल । २३ पुष्परज । २४ नदी । २५ शरीर । २६ ओस की बूंदें । २७ सुन्दरता । २८ समुद्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लघु भ्रात बभीखन जाहि लख्यौ, घर धीर रह्यौ तेऊ सोक बिक्यौ।
परचाय लग्यौ पिछतावन कौं, रच देत ऊराहना रांवन कौं ॥२६६६
अहो बंधव सूर सुनीत ईला[1], कल कौसल रीत प्रनीत कला।
दससीस किरीट[2] लगे दस कै, बहुटा[3] भुज बीस रहे बसकैं ॥२६७०
मखतूल[4] की सेझ कौं त्याग मही, गम[5] भूलकै दीरघ नोद गही।
हित बात कही तुमकौं हमनै, महाँरांनी मंदोदरि कीन मनै ॥ २६७१
कीय राँम सौं जुद्ध अकारन सौं, मृतु होय गये सर मारन सौं।
घननाद प्रहस्त घमंड घिरे, अतकाय अकंपन बीर अरे ॥२६७२
अहंकार लखौ परनाम[6] ईही, भवतब्ब[7] दसा ईह भ्रात भई।
रचना रन आयुध खेल रता, गरूकर्म[8] बिसारद पारगता[9] ॥२६७३
नय[10] बेद बिचार ऊचारन में, पुन धर्म की रीत प्रचारन में।
गरूवाई[11] की सत्य मृजाद[12] गई, कछु बंधव तो सन जात कही ॥२६७४
रबि चंद गिरे मनु आय रसा[13], दमुना[14] झल सीतल होय दसा।
गहबीरन कौ ऊतछाह[15] गयौ, भर लंकपुरी अंधीयार भयौ ॥२६७५
पथ छोर चले सबही पल में, तुम सोय रहे धरनीतल में।
नव-पल्लव[16] धीरज रूप निरा, सहनाईय-सोल[17] प्रफुल्ल सिरा ॥२६७६
तप धारन सक्ति जिही तन की, जर सूरता पूर रही जिनकी।
भुव जाहर राखस राज भयौ, द्रुम[18] राँम-बयार[19] गिराय दयौ ॥२६७७
द्रढता अरू तेज सदंत[20] दुनौ, गरूवाई पिता परीआई[21] गनौ।
वह रति समूह की पीठ बही, जुग कोप प्रसनता अंग जही ॥२६७८
दसकंध मयंद-मदंध दसा, रघुबीर पछारेऊ सिंध रसा।
रसबीर पराक्रम ज्वाल रही, मिल धूम ऊसासहू क्रुद्ध मई ॥२६७९
बलकै ज्वल सक्ति छतै बहुरं, जग जाहि हुतासन[22] ताप जरं।
महाँ राकस राँवन तेजमई, जलबाह[23] बुझायेऊ राँम जही ॥२६८०
कहनी सुन राँम बभीखन की, जीय की सब जाँन लई जनकी।
केऊ रीत सौं बोध लगे करनै, निज आँनन राँम जुतै निरनै[24] ॥२६८१

१ पृथ्वी। २ मुकुट। ३ बाजूबंद। ४ रेशम। ५ चिन्ता। ६ परिणाम। ७ भवितव्य = होनहार। ८ विद्या। ९ पारंगत। १० न्याय नीति। ११ बड़प्पन। १२ मर्यादा। १३ पृथ्वी। १४ दामिनि। १५ उत्साह। १६ मू० प्र० पलय। १७ सहनशीलता। १८ वृक्ष। १९ राम रूपी वायु। २० सदैव। २१ परंपरा। २२ अग्नि। २३ मेघ। २४ निर्णय।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परचंड[1] भरचौ रसबीर पनौ, घट बिक्रम राँवन दिग्घ[2] घनौ ।
धर धंख लरचौ ध्रुव धर्म धृतो पुन होय निसंखहु[3] लंकपती ॥२६८२
भवतब्ब[4] कौं पाय निचेष्ट भयौ, गरुवाई[5] हु कौ पन[6] श्रेष्ट गह्यौ ।
सब छत्रीय रीत सनातन कौं, बसु[7] राखत कीरत वातन कौं ॥२६८३
तिह हेत समद[8] में देह तजै, बिच खेत लहै अथवा क बिजै ।
दोऊ बात गनौ जसदायक है. बिध नीत परायन वायक[9] है ॥२६८४
गुनि लोग पवारह गावहिगे. जुध राँवन नाँम न जावहिगे ।
जिह लोकप सक्रहु[10] आद जये. बिजयी त्रयलोकन बोच वहे ॥२६८५
परसंस[11] के लायक लंकपती, मृतु[12] सोक करै कोऊ मंदमती ।
मनु आदिक छात्रन नीत मही, करकै निरनौ जिह कथ्थ कही ॥२६८६
महाँ ऊत्तम जुद्ध गनौ मरनौ, कछु सोक नहीं हीय में करनौ ।
जबही रनग्रंगन[13] जावत है, ईक मृतु लहै ईक आवत है ॥२६८७
कुसलात रहै दोऊ ओर कहो, ऊर सोच बिचारहुं बात ईही ।
जुध में कोऊ छत्रीय जूझत है, परीआई[14] की रीत सौं पूजत है ॥२६८८
जिह कारन सोक तजौ जीय कौ, हित जाँन बिखाद तजौ होय कौ ।
करनोय जथारथ[15] काज करौ, धर धीरज और न चित्त धरौ ॥२६८९
रघुबीर दई जब येहु रजा[16], तब भ्रात बभीखन सोक तजा ।
अरजी रघुबीर कौं कीन ईही. अब तौ करनोय है काज ईही ॥२६९०
जिह आद पुरंदर[17] खेत जये, रन में सोई आपके हाथ रहे ।
बहु आतिथ दाँन दीये बित कौं, भरपूरन चित्त भरे भृत[18] कौं २६९१
बहु भोग बिलास करे बिनता[19], हट लाग क दुज्जन कौ हनता ।
सुखदायक मित्र समाजन कौं, समधी सनमाँन के साझन कौं ॥२६९२
कीय होम तथा[20] तपसा करनो,बिध[21] संकर[22] हेत कथा बरनो ।
क्रमकाँड[23] बेदांत बिचार करे, परचंड बली रन खेत परे ॥२६९३
करनी हम चाहत प्रेतक्रीया, द्रिढ सोच बिचारहु नाथ दया ।
मुरजी[24] लख सासन[25] माँगत हूँ, पितु मात समंध[26] परांगत हूँ ॥२६९४

---

१ प्रचंद । २ दीर्घ । ३ निःशंक । ४ भवितव्य । ५ बड़प्पन । ६ प्रण । ७ पृथ्वी । ८ समर = युद्ध । ९ वाक्य । १० इन्द्र । ११ प्रशंसा । १२ मृत्यु । १३ युद्ध क्षेत्र । १४ परंपरा । १५ यथार्थ । १६ आज्ञा । १७ इन्द्र । १८ नौकर । १९ स्त्रियां । २० मू.प्र.त्था २१ ब्रह्मा । २२ शंकर । २३ कर्मकाण्ड । २४ इच्छा । २५ आज्ञा । २६ संबंध ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिधजुक्त[1] बभीखन की बिनती, समरथ्थ[2] सुभान सदां सुक्रती[3] ।
कहनावत कौन बभीखन कौं, जीय जांन निरंतर हू जन कौं ॥२९९५
जबलौं[4] जग बैरीय[5] जीवत है, मन होत बिरोध मई मत है ।
जब जूझ परचौ रन बीच जमी, कोऊ बैर बिचारत क्रूरक्रमी[6] ॥२९९६
कुमती अततांई[7] कौ कांम करचौ, हट लाग जिही हम प्रांन हरचौ ।
पुन तोर हमार सखापन[8] सौं, मम भ्रात बिचारत हूं मन सौं ॥२९९७
सुधरावहु आखर-कौ समीयां[9], करहू बिघबेद सौं प्रेत-क्रीया ।
जन नग्र[10] बुलावहु जा तन कौं, भट और बचे जिह भ्रातन कौं ॥२९९८

दोहा

महाँबाहु रांवन मरचौं, रघुवर सौं कर राए ।
सुनी खबर रांनीय श्रुत[11], अंतहपुर आगार[12] ॥२९९९

छंद मौतीदांम

सुनी रनवास में बात सकोय, रही तीय रांवन की जिय रोय ।
ढुरावत लोचन सौं जलधार, मँदोदरि[13] आईय ग्रेह मभार ॥३०००
मिली तीय झुंडन झुंडन मेल, झुकाय कै घूंगट[14] के पट झेल ।
दुखी हुय चालीय ऊत्तर द्वार, परासन[15] पीर पुकार पुकार ॥३००१
खरी[16] सब आय भई रनखेत, छिके तन पीव[17] लखे बिन चेत ।
जझोरत नैनन नीर झुरात, कुरंकुर[18] नार ज्युही कुररात ॥३००२
पलोटत चुंबत पांनन[19] पाय, लगावत अंक[20] रही लपटाय ।
लखै कोऊ आंनन की चिव[21] नैन, बिमासत बोलत आरत[22] बैन ॥३००३
कोऊ लख कुंडल और किरीट, पुकारत रोय भुजंतर[23] पीट ।
गरै बिच डारत बांह गहंत, करौ हित बात ऊठौ किन कंथ[24] ॥३००४

---

१ विधियुक्त । २ समर्थ । ३ अच्छे कार्य करने वाले । ४ जब तक । ५ बैरी । ६ हृदय हीन व्यक्ति । ७ आततायी । ८ मैत्री । ९ अंतसमय । १० नगर । ११ कानों से । १२ रनवास । १३ मंदोदरी । १४ घूंघट । १५ मृत्यु । १६ खड़ी । १७ प्रिय पति । १८ सारस । १९ हाथों से । २० छाती । २१ सुन्दरता । २२ आर्त । २३ छाती । २४ स्वामी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ईहै कहि लेत है सीस ऊठाय, धरै बिच गोद धुकाय धुकाय।
परै जल नैन पनारन पूर, धुवावत[1] आँनन लागीय धूर ॥३००५
बिधोबिध[2] रोय रही बिललाय. हनै हीय मुक्कन बोलत हाय।
सीया सम और तीया न सरूप[3], भयौ तन भंग तिही हित भूप ॥३००६
घली ईक नार के कारन घात, अनेकन लेय चले अहवात[4]।
भई निरभागनि[5] रावर[6] भाँम, पराईय[7] नार पीया परनाँम[8] ॥३००७
ईतै बिच पट्टपराँनीय[9] आय. मदोदरि[10] देख कह्यौ मुरझाय[11]।
अहो लघुभ्रात कुबेर के आज, रसातल[12] पौढ रहे महाँराज ॥३००८
डरावत इँद्र ही आदक देव, सबै दिसपाल सुधारत सेव।
महाँरिखी गंधृव चारन नाग, भयातुर होय गये सब भाग ॥३००९
मरे तुम माँनव हात[13] मदंध, कहा कहु पीव[14] अहो दसकंध।
लुकावत[15]नैन न आवत लाज[16],बिचारकै येहु कीयौ कहा ब्याज[17]॥३०१०
जती बनवासीय सौं कर जंग, भये पीय कौंन क्रीया तन भंग।
प्रतीत न आवत मोकह[18] पूर, धरा पर सोय रहे बिच धूर ॥३०११
अहो पतिलंक पुरी उजीयाल, करै नही अंखन[19] झखन काल।
इँद्रादिक बापुरे[20] लोकप आय, करै करतून रहे कदराय ॥३०१२
तथा बधकारक श्रीपति तोहि, हीयै मोहि आवत होय-न-होय[21]।
मरे खरदूखन हू बिन मौत, सुनो हम बात कही बिच सौत ॥३०१३
लखायन[22] राघव प्राक्रत लोय, कला अवतारीय है ईह कोय।
ईकाईक[23]बंदर मारुति[24] आय, ज्वला बिच दीनीय लंक जराय ॥३०१४
गयौ कुसलात सोऊ नभ गैल, फिरचौ[25] दिन जाँन लयौ बस फैल।
अरुंधति रोहिनी आदक और, सीया कँह पुज्जत[26] है सिरमौर ॥३०१५
पतीवृत[27] चोरो सौं लाय पलाय[28], बसाईय लंक में आँन बलाय।
भयौ कुल नास निसाचर भूप, केऊ तीय डार चले दुख कूप ॥३०१६
दुखानल[29] सीलवती मन ताप, प्रजारेऊ ताहि पराक्रम पाप।
कछू बिन कारन होय न काज, सुभाखत आपत[30] रूप समाज ॥३०१७

---

१ धोती हैं। २ अनेक प्रकार। ३ सुन्दर। ४ सौभाग्य। ५ भाग्यहीन। ६ आपकी। ७ अन्यकी। ८ परिणाम। ९ पटरानी। १० मंदोदरी। ११ उदास। १२ भूमि। १३ हाथ। १४ प्रिय पति। १५ छिपाते हो। १६ लज्जा। १७ कपट। १८ मुझे। १९ आंखों। २० बेचारे। २१ संभव है ऐसा हो। २२ बाह्य रूप से। २३ यकायक = अचानक। २४ हनुमान। २५ बदल गया। २६ पूजती है। २७ पतिव्रता। २८ भगाकर। २९ अग्नि। ३० आप्तपुरुष।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुभाँमन[1] राँम की नाम की सीय, परेखहु मृत्यु कौं कारन पीय।
सोया सुख साजहि राँम के साथ, ईतो तीय होगई आज अनाथ ॥३०१८
सुबासत चंदन बर्न[2] सरीर, नहावत छीज गुलाब के नीर।
मनोहर भोग लगे, सब माग, अहो पीय छोर चले अनुराग[3] ॥३०१९
सुसोभत सीरख[4] क्रीट[5] सहेत, रमी बिच गूद निसा रन रेत।
बिराजत सुंदर ब्रूँहन[6] बंक, अनूँपम चंचल ईछ्छन[7] अंख ॥ ३०२०
कपोल हू गोल सुहावन काँन. सु धारत कुंडल लोल समाँन।
ऊदंचत[8] नासका दीपक ऐम. प्रभा अधुराँन रचे मद पेम ॥ ॥३०३१
अमोलक[9] हास बिलास कं ऐन, दसूमुख नारिन कौं सुख दैन।
रथांग[10] की धूर रहो जिह रूंद, मही बिच सोय रहे चख[11] मूँद[12] ॥३०२२
बिनोद की तर्क बितर्क सुबात, रचावत खेल रहै दिन रात।
मनोहर हास बिलास मुकाम, ईहै मुख पंकज सौ अभिरामँ[13] ॥३०२३
प्रभा तिह चंद हरीक पतंग[14], प्रकासहु पीव[15] जँहौ पर संग।
भिदी तन राघव की सर भाल, लखावत जावत श्रोनत[16] लाल ॥३०२४
अनूँपम नीलमनी[17] सम अंग, भयौ सोई माँनव कं कर भंग।
ईहै सुपनंतर[18] है कछु आज, सुनौ कथ सूरन[19] के सिरताज ॥३०२५
वभीखन आद कही नय[20] बात, नम्यौ[21] सोऊ पाव दई तऊ[22] लात।
लग्यौ फल ताहीय कौ ईह लीन, पसारकै पाव परे भुज पीन[23] ॥३०२६
ईही परघातन वज्र अनून, धुकावत सत्रुन कै सिर धून।
जरी सोई हाटक[24] झाटक जाल, सँभारत क्यौं नहीं लोकप-साल[25] ॥३०२७
बढी हीय पीर करंत बिलाप. ऊचारत सोक्रत[26] कुष्ट[27] ईलाप[28]।
भई मुरछागत[29] राँवन-भाँम[30], मदोदरि राँनीय बीर-मुकाँम[31] ॥३०२८
परी पत[32] देह कै ऊपर पेख, बिचार कै सौतन आद बिवेक।
ऊठाय कै फेर दयौ ऊपदेस, बिचारहु देबोय ज्ञान बिसेस ॥३०२९

---

१ स्त्री। २ वर्ण = रंग। ३ प्रेम। ४ मस्तक। ५ किरीट। ६ भौं। ७ देखना। ८ उठी हुई। ९ अमूल्य। १० पहिया। ११ आंख। १२ बंद। १३ सुन्दर। १४ सूर्य। १५ प्रिय पति। १६ रक्त। १७ मणि। १८ स्वप्न। १९ शूरवीर। २० नीति। २१ सिर नवाया। २२ तब भी। २३ पुष्ट। २४ सौना। २५ लोकपालों को पीड़ा देने वाले। २६ सिसकारी भरके। २७ कष्ट। २८ विलाप। २९ मुर्छित। ३० पत्नी। ३१ युद्ध क्षेत्र। ३२ पति।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ईतौ जग पाप रु पुंन्य अधार, निहारहु राज बिभौ[1] निरधार ।
ईहै थिर जाँनत बात अलीक[2], थिती ठह रावन मानत ठीक ॥३०३०

अज्ञान सौं जाँनत और की औैर[3], जिही गत काल सौं नाहिन जौर ।
ऊठायकै लिन्नीय[4] लेत ऊसास, निचोवत[5] नैनन-नीर-निरास ॥३०३१

बिभीखन राँम कही जब बात, बिसासहु[6] नारिन कौं बिललात ।
करौ मिल बंधव प्रेतक्रीयाह, दिबाबहु कोनप बिगृह दाह ॥३०३२

बभीखन राँम रजा[7] लहि बीर, हल्यौ जब आतुर ह्वै हमगीर ।
लग्यौ सोई लंकपुरी मग लेह, गयौ अग्नोत्र हु राँवन गृेह ॥३०३३

प्रजारोय ऊत्तंम[8] आग पुनोत, पढाय कै वेद के मंत्र प्रनीत[9] ।
सबै जिग[10] पात्र सँभार सँभार, भरे बहु चंदन आदक भार ॥३०३४

सुगंधत काठ लये बहु साथ, जिते मनि मोतीय ऊत्तंम जात ।
सबै निसचारन कौं लहि संग, भयौ जहाँ रांवन कौ तन भंग ॥३०३५

गये रनखेत[11] जबै कर गाँन, सबै पुरबासीय लोग सयाँन ।
सुबर्न की ऊतंम लै सिवकाहि[12], मरचौ तन राँवन कौ घर माँहि ॥३०३६

बढे दिस दछ्छन[13] की तव बाट[14], ठयौ असवारीय[15] अंतक[16] ठाट ।
बजावत पेटह[17] पट्टह[18] वाज[19], सबै मिल चालेऊ संग समाज ॥३०३७

पछारीय नार गह्यौ तिह पंथ, करंतीय[20] कूक पुकारत कंथ ।
जमी समसाँन[21] की ऊतम[22] जाँन, थपे जहाँ राँवन कौ तन थाँन ॥३०३८

सुगंधत चंदन पद्म ऊसीर, कपूर हू आदक औ कसमीर[23] ।
चिता बहु काठ बनाईय छाय, बिधोबिध राँकवचर्म[24] बिछाय ॥३०३९

करे पढ बेद के मंत्रन काज, रखे तिह ऊपर राँवनराज ।
मिले दुज[25] मंडँन कौं पित्रमेध, भली बिध बेद ही को लहि भेद ॥३०४०

करी तव पूरव दछ्छन कोन, तयारीय बेदीय ऊतम तोन ।
सथापन कीन हुतासन[26] सुद्ध, ऊठायकै कोनप[27] मेलेऊ ऊद्ध ॥३०४१

---

१ वैभव । २ मिथ्या । ३ कुछ की कुछ = अन्यथा । ४ लो । ५ बहारही थी । ६ सांत्वना दो । ७ आज्ञा । ८ उत्तम । ९ प्रणीत । १० यज्ञ । ११ युद्ध क्षेत्र । १२ पालकी । १३ दक्षिण । १४ मार्ग । १५ मू.प्र. असवावारीय : १६ समय की । १७ ढोल । १८ नगाड़े । १९ बाजे । २० करती हुई । २१ श्मसान । २२ उत्तम । २३ केशर । २४ मृगछाल । २५ द्विज = ब्राह्मण । २६ अग्नि । २७ शव ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दही घृत और सुम्रात्रहु देख, बिधाँन सौं कधर मेल बिसेख।
जहाँ अन पाय उलूखल[1] जंघ, सँभारकै दोय पदारथ संग ॥३०४२
धरे केऊ काष्ट के पात्रन धोय, जहाँ अरनो ऊतरारनी जोय।
पदारथ मूसल आद परेख, बिधोगत बेद की देख बिसेख ॥३०४३
महारिखी आदन कौ सुन मंत, परांयन[2] नीत की रीत प्रजंत।
थपे सब जो जिह चाहत ठौर, अनोअन[3] केक पदारथ और ॥३०४४
करचौ बध ऊतंम[4] हू पसु कोय जहाँ कहु चाहत ताहि कौं जोय।
बभीखन आद मिले जनवृंद, अनूपम फूल तथा अरबिंद[5] ॥३०४५
जहाँ सब रोवत डारत जाय, निरंतर सीस नमाय नमाय।
विचारकै अगृ[6] कौं पाव बढाय, बभीखन दीनीय आग बताय ॥३०४६
भयौ जर भस्म निसाचर भूप, सबै ऊठ चाले ऊदास[7] सरूप।
गये नद नालन पै कर गांन, सबासन कीनेऊ नीर-सिनांन[8] ॥३०४७
तिलांजल दीनीय ऊतम तोय, सबै मृतु रीत सौं जांनत सोय।
गये जब नगृ[9] में राजन गृेह, सबै मर नार बिरक्त सनेह ॥३०४८
बभीखन बोल संबोधन बात, सबै समुझास करी ईकसात[10]।
हुले सोई राघव आय हजूर, दहूँ कर जोर खरे भये दूर ॥३०४९
निहारत रांम सबैं कपि नैन, सुगृींव हू आदक जूयप सैन।
बतासुर मारकं दांनव बृंद, अनंदत होय खरौ मनु ईंद[11] ॥३०५०
सुसोभत[12] स्यांमल रूप सरीर, भई भट भल्लुक बंदर भीर।
भयानक बीर तज्यौ रस भाव,सुहावन दीसत[13]सोम[14]सुभाव[15] ॥३०५१
दुरंतर रांवन कौ बध देख, बिजें रघुवीर की नैन बिसेख।
बिमाँनन बैठ सबै सुरबृंद, ऊपायकं चालेऊ हीय अनंद ॥३०५२
पराक्रम राघव को भरपूर, समर्द[16] हु भल्लुक[17] बंदर सूर।
सुगृींव की मित्रता और समाग, ईही बिध मारुति[18] कौं अनुराग ॥३०५३
बली कल लछ्छन बीर बिधांन, ऊचारत बात हीयं अनुमांन।
सिधायगे स्वर्ग दिसा सुरगोय[19], हरख्खत[20] होय घने बिच हीय ॥३०५४

---

१ ऊखली। २ परायण। ३ अनेक। ४ उत्तम। ५ मू०प्र० = अरबिंद = कमल।
६ आगे। ७ उदास। ८ स्नान। ९ नगर। १० एक साथ। ११ इन्द्र।
१२ सुशोभित। १३ दिखाई देते हैं। १४ सौम्य। १५ स्वभाव। १६ समर = युद्ध। १७ रीछ। १८ हनुमान। १९ देवता। २० हर्षित।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दयौ तब सासन[1] मातुल देख, बिचारकै राघव बुद्ध बिसेख।
पुरंदर[2] सिदन लै निज पंथ, सिधावहु सूत निरंतर संत ॥३०५५
गयौ तब मातुल हू निज गृेह, सराहत राँम प्रभाव सनेह[3]।
सुग्रीव सौं राँम मिले सरसाय, लगायकै अंग हीयै लपटाय ॥३०५६
मिले फिर लछ्छन सौं भर मोद, जुहारीय जुथ्थप[4] पायन जोध।
हितेसीय[5] अंगद औ अनूमाँन, परे पद पंकज जोरत पाँन[6] ॥३०५७

दोहा

मार निसाचर मुगटमनि[7], राँवन कौं रन राँम।
आये सूरज[8] अवध के, सवर[9] बीच घनस्याँम ॥३०५८
घरम सत्त[10] बृत धारना, पुन निभ्रू निकट परेख।
बोले लघु-भ्राता बिहस, द्रगन बभीखन देख ॥३०५९
संत सनातन लीय सरन, अरु कीनौ ऊपकार।
देहु बभीखन राजपद, न्याय रीत निरधार[11] ॥३०६०

छंद मोतीदाँम

दीयौ जब राँम निदेस दिढ़ाय[12], चले तब लछ्छन सीस चढ़ाय।
बभीखन संग लयै कपि-बृंद, ऊहासत चालेऊ पाय अनंद ॥३०६१
अनुपम जायकै राज-अगार[13], बुलायकै मंत्रिन कौं दरबार।
महुरथ[14] मंगलदायक मिलाय, सिंघासन थापेऊ[15] आँन सुभाय ॥३०६२
सुसोभत कीन बभीखन सीस, ऊचारत मागध बिप्र असीस।
करचौ कर लछ्छन सौं अभिषेक[16], बिचारकै बेद की रीत बिसेक ॥३०६३
नमे पग आय निसाँचर लोग, जथारथ[17] पायकै आदर जोग[18]।
करी तिन भेट निछावर केक, अनूक्रम आद मृजाद असेख[19] ॥३०६४
सबै जन मंत्रीय लै भट साथ, रहे जहाँ आय गये रघुनाथ।
बभीखन भेट करी अवधेस, बिचारकै मंत्रीय आद[20] बिसेस[21] ॥३०६५

---

१ आज्ञा। २ इन्द्र। ३ स्नेह। ४ यूथपति। ५ हितैषी। ६ हाथ। ७ मुकुट-मणि। ८ सूर्य। ९ शिविर। १० सत्य। ११ निर्धार। १२ दृढ़ होकर। १३ राजभवन। १४ मुहूर्त। १५ मू० प्र० थपेऊ। १६ राजतिलक। १७ यथार्थ। १८ योग्य। १९ अशेष। २० आदि। २१ विशेष।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बभीखन बोलेऊ लंकबरीस[1], अनाथ के नाथ रघूकुल ईस।
बभीखन स्रांन[2] सुनी ईह बांन[3], पसाव[4] कै ऊठ मिले गहि पांन[5] ॥३०६६
कहे फिर राघव येह कथंन[6], सखा हम आज भये सुप्रसंन[7]।
जयों हम जाँनको कारन जुद्ध, सँभारीय नाँहिन ताही की सुद्ध[8] ॥३०६७
कह्यौं हम लंकपती तुहि काज, ईहै अभिलाख मिटी मम आज।
प्रतज्ञा लीन परी सोई पार[9], सँपेखकं नेरत[10] कौ सिरदार ॥३०६८
सुग्रींव हू आव करचौ जय सोरं, दया रघुबीर को बाढेऊ दौर।
कह्यौ हनूँमाँन सौं फेर क्रपाल, बिलंब न कीजियं बुद्धिबिसाल ॥४०६६
बिजोग[11]सौं सीय रही बिललात, कहौ हम जाय तही कुसलात[12]।
चले हनूमाँन ततछिन[13]चाहि, बिचछ्छन[14] ज्याँनकी बास बसाय ॥३०७०
खरे कर जोर भये जय खंभ, बिलोक कं ज्याँनकी[15] पाय विश्रंभ[16]।
निहारत नैनन चालेऊ नोर, सुभागम सात्वक[17]होय सरीर ॥३०७१
लखी सीय चित्र लिखी सीय नैन, बिचारकं मारुति[18] बोलेऊ बैन।
कही रघुनायक येह कहांन, सुनो सुखदायक बायक[19] स्रांन ॥३०७२
संघारेऊ राँवन बंस सहेत, हन्यौ खल खेत सीया तुहि हेत।
सबं बिध है कुसलात सरीर. प्रीया ईक देखन की हीय पीर ॥३०७३
कहो सोई जाय कहूँ कुसलात, बिचार न जाँनत दूसर बात।
सुनी प्रीय-बाँनीय कौं सीय श्रांन, दीयौ जीय जाँनकं ऊत्तर-दाँन ॥३०७४
बिचारत हूँ मन ही मन बात, कहो रघुनायक की कुसलात।
अघाई देवन कौं कोऊ बस्त, सँभारत होय गयौ मन स्वस्त ॥३०७५
त्रलोकीय राज नही सम तूल, भृमावत बुद्ध रही ग्रत भूल।
ईहै प्रीय-बाँनीय कौ ऊपकार. करूं कहा नाँहि घरचौ करतार ॥३०७६
बिचारकं भाखत बारंमबार[20], रहौ तुम जोवत पौंनकुमार[21]।
सदां रघुनायक पाय सनेह. अखो होय बाढ ही आसिख एह ॥३०७७
जई रघुबीर बिजं सुन जंग, सबें दुख मूल गई ईक संग।
ईहै जीय राँम कौ नाँम अधार, बिसारत[22] नाहिन येकहु बार ॥३०७८

१ लंका को प्रदान करने वाले। २ कानों से। ३ वाणी। ४ कृपा करके। ५ हाथ = पाणि। ६ बात। ७ सुप्रसन्न। ८ सुधि। ९ पूर्ण हुई। १० राक्षसों का। ११ वियोग। १२ कुशल समाचार। १३ तत्क्षण। १४ विचक्षण। १५ सीता। १६ आश्वस्त होकर। १७ सात्विक। १८ हनुमान। १९ वाक्य। २० बारबार। २१ पवनपुत्र। २२ भूलता।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिलोकन रांम बिना बिसवास[1], तथा ईह नैनन कौं मम त्रास।
सुभाखहु पीव[2] कौं जाय संदेश, अनाथ के नाथ सदां अवधेस ॥३०७९
नमायकै सीरख[3] केसरीनंद[4], ऊठे अति आतुर पाय आनंद।
मिले रघुनायक सौं कर मंत, विचारकै सीय कह्यौ बरतंत[5] ॥३०८०
बभीखन देख कह्यौ रघुबीर, धरौंज[6] न नैक सखा हीय धीर।
सुधारकै ज्यांनकी[7] अंग अंगार, बुलावहु बेग न लावहु बार[8] ॥३०८१
बभीखन ऊठ चले निज भौंन[9], गये पुरअंतहु[10] में कर गौंन।
कह्यौ निझ[11] नारन[12] सौं ईह काज, मिले सीय चाहत है महाराज ॥३०८२
चलौ तीय बाग मिलौ छल छोर, अलंक्रत[13] वेख सझावहु ओर।
बभीखन रांनीय आद[14] बिचार, निसाचरि सग लई बहु नार ॥३०८३
सीया पँह जाय नमाएऊ सीस, ऊचारीय नारन औंर असीस।
लखी चिव[15] सीय रही ललचाय, भई क्रसगात[16] बिजोग[17] कै भाय ॥३०८४
ऊचंद्रहु[18] बीतत ज्यां अरबिंद[19], छिपामुख मांनहु बीज कौ चंद।
दिपै दुत[20] दीपसिखा सम देह, त्रिलोकीय नंदनी येम बिदेह ॥३०८५
बभीखन तीयन नें बिनतीय[21], सकोच कै हीय करी तब सीय।
कही पत[22] मोर सौं रावरे कंथ, सनातन पावन कौं गन संत ॥३०८६
सीया कह लावहु साझ श्रंगार, बिजोग कौं त्याग करै बिवहार[23]।
दयायति दीन्नीय रावरे[24] दास, ईहै चित चाह करी अरदास[25] ॥३०८७
हलं हम रावरे साथ हजूर, दुरंतर जाय सबै दुख दूर।
निदेसन रांम को मांन निदांन, सीया जल ऊत्तंम कीन सिनांन[26] ॥३०८८
सुवासन[27] धारेऊ सुद्ध सरूप, अलक्रत कंचन हीर अनूप।
बभीखन भूप खरे जहां बार, सहेलन[28] दीन्नीय ठीक सुधार ॥३०८९
जबै सिवका[29] ईक ऊत्तंम जांन, अनूपम हाजर किन्नीय आंन।
चढी मिथिलेस-कुमारीय चाहि, बभीखन मंगल बाज बजाय ॥३०९०
चढे असवारीय बीच बजार, निहारत लंक पुरी नर नार।
द्रगंचल[30] बीरवधू कह देख, ऊचारत जै जय सब्ब असेख ॥३०९१

१ विश्वास। २ प्रिय पति। ३ मस्तक। ४ हनुमान। ५ वृतांत। ६ धैर्य। ७ जानकी। ८ बिलंब। ९ भवन। १० अंतःपुर=रनवास। ११ निज=अपनी। १२ स्त्रियों। १३ अलंकृत=आभूषण युक्त। १४ आदि। १५ सुन्दरता। १६ कृश शरीर। १७ वियोग। १८ पिछली रात। १९ कमल। २० द्युति। २१ विनती की। २२ पति। २३ व्यवहार। २४ आपके। २५ विनय। २६ स्नान। २७ वस्त्र। २८ सहेलियों। २९ पालकी। ३० आंख।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पहूंचीय पत्तन[1] कै जब पार, बभीखन अग्र बढचो सुबिचार।
करी बिनती रघुनायक काज, बिदेहीय आवत यांन बिराज ॥३०९२
बिचार कै रांम कहो पुन बात, खत्री[2] कुल जांनत है सब ख्यात[3]।
विख्यात है सूरज देव को बंस, पिछानत औधपुरी परसंस[4] ॥३९३
बसायेऊ मोहि पिता बनबास, अरंन[5] में डोलत होय ऊदास।
पती संग नार को बास पुनीत[6], सदा निरवाह[7] करे तेह सीत ॥३०९४
इंहीं मुरजाद[8] सदां अनुकूल, महां सुखदायक है जस[9] मूल।
ईही ईक जांनहु दीरघ[10] आड़, बिचारहु चित्त कनातन बाड़ ॥३०९५
बिपत्त[11] मैं जुद्ध सुयंबर[12] बीच, मृजाद न तीरथ कारन मोच[13]।
बिवाह में जिग्य[14] में औ बनबास, जरूरत लाज को नांहिन जास ॥३०९६
सबै बनवासीय[15] बासीय संल, गनौ लघु-बंधव ज्यूं कपि गैल।
सोया पग चाल[16] त्रीयागन साथ, निहारकै बंदर होय सनाथ ॥३०९७
बभीखन जांनकै रांम बृतंत, ऊतारकै सीय कों सैन के अंत।
सुभांमत[17] पैदल लायेऊ साथ, रहे जहां डेरन में रघुनाथ ॥३०९८
पतीबृत चंदमुखी जुत प्यार, जती रघुबीर कों कीन जुहार।
पलोटकै पंकज पावन पांन[18], सीया रघुनाथ मिली सुखदांन ॥३०९९
गयौ धन पावत ज्यां बिच गृह. डुल्यौ जीय आवत त्यां[19] पुन देह।
मिली मछुरी[20] बिछुरी जल मांहि, कुरंकुरी[21] पाय कुरकर[22] कांहि ॥३०९१
छिपा[23] प्रतिबिब प्रभागत चंद, समांगम कोकीय[24] कोक[25] समंध।
भई रघुनाथ सीया ईम भेट, महां दुखसागर को थिति[26] मेट ॥३१०१
सबै कपि सैन करचो जय सद्द[27], निसाचर सैन नगारन नद्ध[28]।
बिराजीय बांमीय ओर कों बांम, रमां[29] हरी[30] जेम सुसोभत रांम ॥३१०२
जई रघुनाथ कही कथ जंग, अनूंपम सीय बढयो ऊच रग।
करचौ अभिबदन सैन कपिंद, बभीखन आद सबै जनबृंद ॥३१०३

१ नगर। २ क्षत्री। ३ प्रसिद्ध। ४ प्रशंसा करके। ५ बन। ६ पवित्र। ७ निर्वाह। ८ मर्यादा। ९ यश। १० दीर्घ। ११ विपत्ति। १२ स्वयंवर। १३ मृत्यु। १४ यज्ञ। १५ बनवासी। १६ पैदल चलें। १७ स्त्रियों को। १८ हाथों से। १९ उसी प्रकार। २० मछली। २१ सारस की स्त्री। २२ सारस। २३ रात्रि। २४ चकवी। २५ चकवा। २६ मर्यादा। २७ शब्द। २८ नाद=ध्वनि। २९ लक्ष्मी। ३० विष्णु।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

बोले सीता सौं बहुर, सकल गीत समुझाय।
संमृथ[1] ह्वं तौहू सरल, निवहै लोकक[2] न्याय ॥३१०४
हित तेरै रांवन हन्यौ, भूंम ऊतारचौ भार।
ईक संका मेरे ऊवर[3] कहत बिदेहकुमार ॥३१०५
हरी दसांनन हाथ सौं, बैठारी गृह बांह।
लायौ तोकह लंक में, कोरा में धर काहि[4] ॥३१०६
करचौ दसांनन चोर क्रम, लायौ तोकंह लंक।
ध्वंस भयौ छत्रीधरम, कुल कौं लाग कलंक ॥३१०७
सैन जोर अरि संघरचौ[5], परी प्रतज्ञा[6] पार।
लंकपती सौं बैर ले, आपुन कीय ऊद्धार ॥३१०८
पर-घर पर-बस[7] होय पुन, बहु दिन करे बितीत[8]।
नहि आवत मेरी निजर[9], पूरी धरम[10] प्रतीत ॥३१०९
तातै मैं तुमकौं तजत, जहां रूचै जहां जाय।
अवध बितावहु आपनी, सबही कहत सुनाय ॥३१००

छंद मौतीदाम

सीया सुन अप्रीय[11] बांनीय श्रौंन, कही रघुनायक सौं तज कांन[12]।
पठायेऊ मारुति[13] कौं हम पास, पराछत[14] क्यां[15] नही कीन प्रकास ॥३१११
जिही दिन त्याग कै जाबत जीव, पतीबृत धर्म पिछांन कै पीव[16]।
बिसास कै[17] रावरे पास बुलाय, दयौ सुख नैनन कौं दरसाय ॥३११२
वया ईह कित्तीय दीनदयाल, हीयै अवगाह कै पूरब हाल।
ईहै कहि लच्छन[18] का झुक ओर, निहार कै बोलीय नैक निहोर ॥३११३
भली कीय सावरे रावरे[19] भ्रात, अखो[20] अब मोहि भयौ अहवात।
निराक्रत[21] रांम कीयौ हीय नेह, दुराक्रत त्याग करू ईह देह ॥३११४

---

१ समर्थ। २ लौकिक। ३ उत्पन्न हुई। ४ शरीर। ५ संहार किया। ६ प्रतिज्ञा। ७ दूसरे के वश में। ८ व्यतीत। ९ नजर = दृष्टि। १० धर्म। ११ अप्रिय। १२ लज्जा। १३ हनुमान। १४ प्रायश्चित्त। १५ क्यों। १६ प्रिय। १७ विश्वास करके। १८ लक्ष्मण। १९ तुम्हारे। २० अन्त। २१ समाप्त।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मंगावहु काठ चिता ईक मंड, प्रजारकै छार करू ईह पिंड[1]।
लखे जब रांम की ओरहु लछ्छ, अंगारन धोम भरो हुई अछ्छ[2] ॥३११५
करी अरजी न जबै कछु कोय, हीयें मह जानीय होय सु होय[3]।
कह्यौ जिम सीय करचो सोऊ काज, मुरज्जीय[4] जाँन लई महाँराज ॥३११६
चिता जब दोनीय लछ्छन छाय, बिदेहीय ऊठ चली बिलखाय।
हुतासन[5] लेय कै आपने हाथ, नमाय कै सीरख[6] श्री रघुनाथ ॥३११७
प्रजारकै आग प्रदछ्छन[7] पाय, दई तब ज्याँनकी[8] देख दिखाय।
द्वजन्मन[9] और जुहार कै देव भली बिध हीय प्रकास कै भेव ॥३११८
हुतासन जोर कै बोलीय हाथ, निरंतर नाथ गेन रघुनाथ।
भयौ पतिबृत्त कदाचन[10] भग, ऊबारहु एह हुतासन अंग ॥३११९
ईतौ कहि बैठ गई बिच आग, सबासन[11]राँनीय सीय समाग।
मिली झल धूम घटा चहुमेर, कुलाहल सोर भयौ जनकेर ॥३१२०
ईहीं अवसाँन पै औरहु आय, निहारीय नैनन देब निकाय[12]।
कृतंत[13] हू बज्जीय[14] और कुबेर, हितेसीय आद परंजन हेर ॥३१२१
बिरंचन[15]धूरजटी[16]रिख[17]बृंद,छल्यौ हीय आय लख्यौ ईह छंद[18]।
पितामह आद करे परनाँम[19], रहे सब घेर नरेसुर[20] राँम ॥३१२२
बिरंचन बोल ऊठे जिह बेर, ईहै गृह सूरज को न अंबेर।
अहो जग कारन आद[21] अनंत, बिचारकै कौन कहा बरतंत[22] ॥३१२३
सनातन रूप बिभू घनस्याँम, कला अवतारीय पूरन काँम।
बसू रित धाँमा भये रघुवीर, प्रजापत[23] मेट करी जग पीर ॥३१२४
भये तुम अष्टम रुद्रअ बेस, बने तुम पंचम साध्य बसेस[24]।
बिराट को रूप ईहै बृहमंड, पसारो है जक्त[25] ईही तुम पिंड ॥३१२५
कृपानिध नासक[26]नासका काँन,बिभा जुत अंबक[27]है ससी भाँन।
महाँप्रभू आदहू अंतहू मद्ध[28], परा पुरसोतम[29] रूप प्रसिद्ध ॥३१२६
चतुर्दस लोकहु के तुम स्याँम[30], रवूपत बिश्व के आतम[31] राँम।
कहो ईह राघव सों करतार, बिसेकत बोलेऊ राँम बिचार ॥३१२७

१ शरीर। २ आंखें। ३ होना है सो हो। ४ मर्जी = इच्छा। ५ अग्नि। ६ मस्तक। ७ प्रदक्षिणा। ८ सीता। ९ ब्राह्मणों। १० कदाचित्। ११ चिता। १२ समुदाय। १३ यमराज। १४ इन्द्र। १५ ब्रह्मा। १६ महादेव। १७ ऋषि। १८ छल। १९ प्रणाम। २० नरेश्वर। २१ आदि। २२ वृतांत = बात। २३ प्रजापति। २४ विशेष। २५ जगत। २६ अश्विनीकुमार। २७ आँखें। २८ मध्य। २९ पुरुषोत्तम। ३० स्वामी। ३१ आत्मा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पिता दसरथ्थ नरेस के पूत[1], करै तन मांनव की करतूत[2]।
ईही हम मांनत है मति येक, बिचार न जांनत और बिसेक ॥३१२८
कहां हम आए है है हम कौंन, समंघ[3] की बात सुनावहु स्रांन।
बिरंचन बोलेऊ सोच बहोर, मधूजित[4] देवन के सिरमौर ॥३१२९
गदा चक्र धारनहार गोबिंद, मक्राक्रत कुंडल कांन मुकंद।
बने तुम कछ्छ रू मछ्छ बराह, प्रलै[5] बिच थापेऊ नीर-प्रवाह ॥३१३०
सदा सत अछ्छर[6] बृह्म स्वरूप अधोक्षज पावन रूप अनूप।
सुधर्म हु जीवन कौं सरजंत[7], चतुर्भुज आतम तत्व अचिंत ॥३१३१
धरै खग नंदक सारंगधार, ईहै जग बिस्वक सेन अधार।
त्रिबिक्रम व्यापक बिस्नु तमांम, नरांयन गृांमनी आदिक नांम ॥३१३२
पदारथ एक सौं एक पुनीत मिली द्रुत[8] म्यासत है जग मीत।
छिमा अरू सुमृति[9] रावंरी छांहि, मती थितो दीसत जीवन मांहि ॥३१३३
महेंद्र हु इंद्र के कर्म मझार, माहा[10]मुनि भाखत एह मुरार।
माहातम बेद पुरांन मृजाद[11]. अहौ सत सीरख आद अनाद ॥३१३४
प्रकासत पंचहुं इंद्रीय प्रांन[12], बनावत तीनहू लोक बिधांन।
माहासिध साधक आस्त्रय[13] मूल, थपे जढ[14] जंगम सुक्षम[15] थूल[16] ॥३१३५
करै ऊर ध्यांन कहै खटकार, ऊपासत रूप सदा ओऊंकार[17]।
तिहारेई[18] नाम सबै जग तात, मुकांम न धाम नही पितु मात ॥३१३६
गऊ[19] द्रुज[20] ग्यातन[21] में तुम गेय,अगाघ[22] अबाद अनंत अजेय।
धरा नभ आगम पब्बय[23] धांम, कला जग कारन पूरन कांम ॥३१३७
सदा जल साईय-सेस[24] सरूप, भयापह[25] देवन के तुम भूप।
सरीर है रावरो एह संसार, होयो हम जांनत जांननहार ॥३१३८
सरस्वती देवीय जीह[26] समांन, सबै सुरगीय[27] हु रोम सुथांन।
असंभव कोप ईहै हरी आग, निसापत[28]प्रसन-दसा[29] अनुराग ॥३१३९

---

१ पुत्र। २ कार्य। ३ सम्बन्ध। ४ मधु को जीतने वाले। ५ प्रलय। ६ अक्षर। ७ सृजन करते हो। ८ द्युति। ९ स्मृति। १० महा। ११ मर्यादा। १२ प्राण। १३ आश्रम। १४ जड़। १५ सूक्ष्म। १६ स्थूल। १७ ओंकार। १८ तुम्हारे ही। १९ गौ। २० ब्राह्मण। २१ जातियों में। २२ अथाह। २३ पर्वत। २४ शेष, शैया। २५ भयभीत। २६ जिह्वा = जीभ। २७ देवता। २८ चन्द्रमा। २९ प्रसन्नदशा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

थिरा थिरता जढ़[1] जंगम चित्त, निरंतर बेद सुभावना नित्त[2]।
निसा[3] उन्मेखन[4] है तुव नैन, ऊदं ऊन्मीलन[5] बासर[6] ऐन ॥३१४०
सुरेंद्र कौं राज दयौ सरसाय, बली दनु-बिंद्र[7] पताल बसाय।
रमा अवतार सीया रमनीय, इंद्रानुज सागर के अयनीय ॥३१४१
मरचौ रन लंकपती माहाराज[8], करचौ तुम देवन कौ सिध[9] काज।
पराक्रम पूरन तेज प्रताप, उदै जग कीन बिसंभर[10] आप ॥३१४२
निहारहु औधपुरी रघुनाथ, सबै जन कीजीयै जाय सनाथ।
ईहै कथ गावहि संत अनेक, परायन[11] पावहि मुक्ति प्रवेक ॥३१४३
ईहै बिध रांम संबाद की बात, करै कौऊ पाठ कंहै कहनात।
पदारथ च्यारहु[12] कौ फल पाय, सुखी सोऊ होइहि संत सुभाय ॥३१४४

दोहा

कही बिधाता ईह कथा, सुरन समाज समेत।
सांत भये रघुनाथ सुन, हीय सीय बाढ्यौ हेत[13] ॥३१४५

छंद भुजंगी प्रयात

बिधाता कही रांम सौं येह बानी, सबै रीत सौं चित्त वृती सिरांनी[14]।
ऊदर्बो[15] हीयं रांम आलोचना कौं, नमा देख स्वर्गीय सारी सभा कौं॥३१४६
लई गोद में रांम की लाड़ली कौं, लसै जेंम[16] बैदेह लीनै लली[17] कौं।
दई रांम कौं आय कै सत्य दांनी, पिताह्वं पुनर्भूत[18] साखी[19] प्रमांनी[20] ॥३१४७
सुधारी मनौ सांति की सूरती सी, तपाई मनौ स्वर्न की मूरती सी।
पसारी सिरोभाग सौं केस पासी, रही नागनो भूल ज्यां स्यां मरासी ॥३१४८
भरी मांग सिंदूर आरक्त[21] भ्यासै, किधौ क्षार कै मग्ग संध्या प्रकासै।
सुसोभै समी केस पाटी संवारी, किधौ हेम कै श्रंग पै बेल कारी ॥३१४९
कढी ताहि कै अद्ध सौं कर्कराला, बिराजै मनौ पंन्नगी काय बाला।
रजै भाल में चर्चका घोर रोरी, करै कर्न में कर्नभर्नं किसोरी ॥३१५०
निकाई जुतं बालका नासका में, जगं जोत मुक्तालता ग्रींव जामें।
बिराजं भुजा बीच कैयूर बधे, सुहावै बलै कंकना हाथ संधे ॥३१५१

---

१ जड़। २ नित्य। ३ रात। ४ खुलना। ५ खुलना। ६ दिन। ७ दैत्यराज। ८ महाराज। ९ सिद्ध। १० विश्वंभर। ११ पारायण। १२ चारों=धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। १३ प्रेम। १४ शान्त हुई। १५ अग्नि। १६ जैसे। १७ पुत्री। १८ फिर उत्पन्न होकर। १९ साक्षी। २० प्रमाणिक। २१ लाल

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जुरी ऊर्मिका[1] अंगुली है जटी पै, कसो मेखला[2] जाल दोसै कटी पे।
तुलाकोट[3] औ किंकनी[4] पाव त्याँही, भ्रगै सिजतं[5] भ्रंन भ्रंकार ज्युँहीं ।।३१५२
सुही[6] रंग को पाट[7] पौसाक सज्जे, रचो गंध धूलोय[8] सो गंध रज्जे।
सिखा दीप कीसी प्रभा अंग सोहै, कलाकेल[9] कै चाप सी बक भौंहै ।।३१५३
निकाई जुतै नैन नीकै निहारै, पती राँम के चित्त कौं फद पारै।
दिपै आस[10] आनंद को कंद जाकौ, पतीरोहनो[11] है मनौ पूर्नमा कौ ।।३१५४
निहारी जबै सीय के पीय नैना, बिचारे कहो होय सौं बीय बैना।
अगाधा अबाधा नहो कोय ऐसौ, जलाकार छायौ चहूँ ओर जैसौ ।।३१५५
थिती में समावै मनौ नीर थारी, अकू पार[12] जावै न जैसै अगारी।
गहै बेद की रीत कौं आत्म ज्ञाँनी, द्रिढं कीरती कौं तजै नाँहि दाँनी ।।३१५६
प्रकासीय-गो[13] ज्याँन त्यागै प्रभाकौं, तजै ज्याँनकी नाहि जो सत्य ताकौं।
सिखी[14] की सिखा कौ सदा तेज साथी, तकै कोन जाकी गहै आच ताती ।।३१५७
त्युहो ज्याँनको आपके तेज ही सौं, करै आप रक्षा न चाहै कही सौं।
नहो मैथली[15] कै कोऊ दोस नेरौ, मुखा[16] राँम नाँमै होयै ध्याँन मेरौ ।।३१५८
पतीजै[17] बिना साँच ना और प्राँनी बिदेही बिलोकै कही क्रूर[18] बाँनी।
सीया की बढी सोह[19] ताते सवाई, निहारी सबै जक्त[20] नैना निकाई ।।३१५९
प्रसंसा करी राँम बैठाय पासै, प्रभा पूर्नमा चंद जैसै प्रकासै।
सीया राँम भ्राजै द्युती[21] गौर स्याँमै, बसै इंदरा[22] ज्याँ हरी भाग वाँमै ।।३१६०
बरांगी सीया कीस नैनाँ बिलोके, धुजा धर्म श्री राँम के पाव धोखै।
मिले बृंद बृंदारका[23] भीर मंडी, घटा जाँनकै मेघ माला घुमंडी ।।३१६१
पधारै जबै अग्र कौं सूल पाँनी,[24] बिचारे कहो राँम सौं येहु बाँनी।
बसू पूर छायौ पती लंक वारौ, ईहैं राँम ध्वांतार[25] मेट्यौ अधारौ ।।३१६२
पिता रावरे दासरथं पधारे, धनी औधके स्वर्ग सौं पावधारे।
गरू तीर्थ रूपी तुमोर सुख्याता, मिलो जायकै राँम जूं नाय माथा ।।३१६३
प्रभू सिभु बाँनी सुनी लाय प्रीती, परं-पुज्य[26] पूरे सुधर्मं प्रनीती।
लये दर्सनं[27] लोचनं पाय[28] लागे, सुखारी पिता पुत्र- ह्वै सानुरागे ।।३१६४
बिराजे रहे दासरथ्यां[29] बिमाना, प्रबोधं कीयो राँम नीती प्रधाना।

---

१ अंगूठी। २ कंघनी। ३ नेवर। ४ घूंघट। ५ ध्वनि। ६ कसैले। ७ रेशमी। ८ कस्तूरी। ९ कामदेव। १० मुख। ११ पूर्णचन्द्र। १२ समुद्र। १३ सूर्य। १४ अग्नि। १५ सीता। १६ मुख में। १७ परीक्षा। १८ कठोर। १९ शोभा। २० जगत। २१ द्युति। २२ लक्ष्मी। २३ देवता। २४ महादेव। २५ सूर्य। २६ परम पूज्य। २७ दर्शन। २८ पैरों। २९ दशरथ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लघू पुत्रहू लच्छनं[1] मैथली[2] कौं, तिहीं रीत सौं बोध दीनौ तिनीकौं॥३१६५
पतीलंक कौं जीत कीनौ पवारौ, तरे दुंद[3] सिंधु ईला[4] भार टारचौ।
सबै स्वर्ग के देव कीने सुखारी, भई हंस बंसीन[5] की क्रीत[6] भारी॥३१६६
ग्रहो पुत्र है तोर मेरी असीसै, बढै बंस बृद्धी प्रजाहू बसीसै।
सिधाये जबै स्वर्ग कौं दासरथ्थं, पधारे तिही वार में देव पत्तं[7] ॥३१६७
करी वर्नना जोर कै हाथ क्रीती, प्रकासो होयं ग्रंथ[8] कौं खोल प्रीती।
माहाबाहु[9] लंकापती खेत मारचौ, अहू लोक भूमाद[10] कौ भार टारचौ॥३१६८
हितू इष्ट मेरे सदा दुष्ट हंता, अगाधा अबाधा अरूपा अनंता।
कछू काज है सो हमैंहूँ कहीजै, प्रभू प्रेम सौं चित्त मेरौ पतीजै॥३१६९
बिड़ोजा बिलोके कही रांम बाचा, सबै मर्कटी बीर बिक्रांत[11] साचा।
परे जूझकै खेत में त्याग प्रांना, अरे येक सौं एक बाहू अजांना[12] ॥३१७०
अबाधा सबै होय कै जीव ऊठै, बसै देस जांही घनौ बार बूठै।
करीजं ऊभै कांम मेरे कहे तैं, सिधावै अजोध्या सीता कै सहेतैं[13] ॥३१७१
जबै इंद्र नै कीस सेना जगाई, मरी जो परी देखकै भूंम माहीं।
निहारी सबै फौज राजीव नैना[14], बिड़ोजा कहे रांम सौं फेर बैनां॥३१७२
भरथ्थं[15] मिलौ जाय सत्रुघ्न भ्राता, मनावौ सबै माय[16] कौं नाय माथा।
कह्यौ इंद्र कौं रांम ऐसै करंगे अजोध्या पुरीं सोक सौं ऊद्धरंगे॥३१७३
सुनै तैं सबै देव ह्वैकै सुखारी, चले आपने आपने लोकचारी।
सोया रांमहू बीच डेरा सिधारे, पतीग्रोघ सीता सती प्रांन प्यारे॥३१७४
बसे रात बासौ भई प्रात बेरी, ऊग्यौ गैन[17] पै भांन[18] बीती अँधेरी।
बिजै रांम लीनी ईकै अब्द[19] बीतैं, नमे ईस[20] कै पाय ह्वैकै नचीतैं[21] ॥३१७५
लगे पाय बभीखनं लंकधीसा, करी बीनती संग लीनै कपीसा।
बनोबास को ओध[22] सारी बिताई, पतीलंक कौं जीत कै सोय पाई॥३१७७
करे माजंना[23] अंग पौसाक कीजै, सुगंधी अलंकार नीकै सजीजै।
निहारं सबै रावरे[24] दास नैना, सुखारी जबै होय है कीस सैना॥३१७७

१ लक्ष्मण। २ सीता। ३ युद्ध। ४ पृथ्वी। ५ सूर्यवंश। ६ कीर्ति। ७ इन्द्र। ८ गांठ। ९ महा। १० भूमि आदि। ११ वीर। १२ आजानु भुजा। १३ सहित। १४ कमल नयन। १५ भरत। १६ माताओं। १७ गगन। १८ भानु=सूर्य। १९ वर्ष। २० शिवजी। २१ निश्चिंत। २२ अवधि। २३ स्नान। २४ आपके।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

बिहस बभीखन सौं बचन, कहे राँम सुखकार।
कीसपती[1] आदक कपन[2], सबन करहु सतकार[3] ॥३१७८

सतबादी[4] सुकमार[5] तन, धरम धुरधर धीर।
भरत करत तप भेटहुँ, बय किसोर लघु बीर ॥३१७९

सुभग बेख[6] लघु भ्रात सब, पेखहु निजर[7] पसार।
सखा मनोहर समुझीयै, सकल रूप श्रंगार ॥३१८०

अवलबत[8] पहुँचे वहाँ, अगम पयानौ अंत।
घाट विषम अरु बन घने, पुरी अजोध्या पंथ ॥३१८१

करहु जतन[9] ताकौ कछू समुझहु सखा सिधंत[10]।
मात भ्रात मिल मोद मय, होय प्रजा हरखंत[11] ॥३१८२

छंद पद्धरी

बिध जुक्त बभीखन सुनी बात, हित बिहत[12] जाँन वहुँ[13] जोर हाथ।
रघुनाथ सुनहु राजाधिराज, कीजै सोई गनीयै ऊचत[14] काज ॥३१८३

बलवाँन भ्रात मम हाथ बीस, ईकपिग[15] जीत अलका[16] अधीस।
पुस्पक[17] बिमाँन लीय तिहीं पास, सो धरचौ लंक मह सावकास[18] ॥३१८४

आरोह पधारहु औध[19] ईस, बिच दिवस एक लंका बरीस।
सुन बिनय बभीखन राँम आँन आतुर मगाय पुस्पक बिवाँन ॥३१८५

आरोहन लागे औध ईंद्र, रुच पाय कह्यौ जब राखसिंद्र[20]।
कपि सैना अद्भुत करची काँम, हित पूजा मेरै हृदय हाँम ॥३१८६

ईह अज्ञा[21] दीजै समय आज, रघुबंस तिलक राजाधिराज।
रुच जाँन बभीखन कह्यौ राँम, कीजीयै सखा मन ऊवत काँम ॥॥३१८७

बनचारन दीने तँही बार,[22] अनगनत[23] पटंबर अलंकार।
सब भई दसहु दिस बिदा सैन, आपने आपने देस ऐन[24] ॥॥३१८८

पुन जूथप राजा रहे पास, अनुकंपा रघुवर दरस आस।
रुच देख सबन की राकसिंद्र, करजोर जबही बोले कपिंद्र[25] ॥३१८९

१ सुग्रीव। २ कपियों=बानरों। ३ सत्कार। ४ सत्यवादी। ५ सुकुमार=कोमल। ६ वेश। ७ नजर=दृष्टि। ८ शीघ्र। ९ पल। १० सिद्धान्त। ११ हर्षित। १२ विहित १३ दोनों। १४ उचित। १५ कुवेर। १६ कुवेरपुरी। १७ पुष्पक। १८ खाली। १९ अवध। २० विभीषण। २१ आज्ञा। २२ उसी समय। २३ अगणित। २४ घर। २५ सुग्रीव।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पद पंकज हमरी हिदय[1] प्रीत, नहि तजत संग ईह सुनहु नीत।
भरथ कौं मिलन अरु मात भेट, थिरता[2] कौं देखहि चाल थेट ॥३१९०
पुरजन मंत्रिन सौं बढहि प्यार, लै चलीयै हमकौं आप लार[3]।
अज्ञा तब दीनी अवधईस, केऊ जुथ्थप लंकापति कपीस ॥३१९१
बिच बैठे सब्र पुस्पक बिवाँन, श्री राँम संग ह्वै सावधांन।
ऊड़ चल्यौ ऊद्ध[4]मारग[5] अकास, पुहमी न गिगन[6] बाढ्यौ प्रकास ॥३१९२
कुनकुनत झींन गत किंकनीय, झलमलत जलज[7] कल[8] झल्लरीय।
रगमगत हीरमनी पद्मराग[9], लगथगत पताका ध्वजा लाग ॥३१९३
सावनं[10]रजत[11] प्रित दीप्त संग ऐंबास सिखर जनु गिर ऊतंग।
मिल इंद्र भवन से भवन माहि, जुर खंभ हेम कंदल जमाय ॥३१९४
बातायन[12] पट्टल[13]अटल बृंद, अरु कोटी कोही जुर अलिंद[14]।
बिच बैठे राघव जिही बेर, किंनर गन लीनै मनु कुवेर ॥३१९५
सीता अरधंगो[15]लसत संग,अभिरांम ऊभय मनु रति[16]अनंग[17]।
बोले श्री राघव सीय बिलोक, नग[18]दिघ्घ[19]अड़ग तिह तीन नोख ॥३१९६
सिर सिखर[20] पुरी लंका सुधार, तिह करी बिस्वकर्मा तयार।
चोचनन बरानन[21] देख लेह, आधीन बभीखन राज येह ॥३१९७
बीरासन[22] देखहु ताहि बीच, कीनास[23]तरस कपि करचौ कीच।
ईह लखहु बरानन ठौर और, जूटे हम रांवन जुद्ध जोर ॥३१९८
खल मारचौ ईह थल बीर खेत, हे पंकजनयनी तोर हेत।
बध कुंभभरन कीय मार बाँन, भ्राता रांवन कौं अत भयाँन ॥३१९९
प्रतिघातन कीनौ फिर प्रहस्त, धूम्राक्ष करचौ हनूँमाँन धूस्त[24]।
बिधुनमाली कौं रन बिहंड, पुन कपि सुखेन बाहू प्रचंड ॥३२००
मारचौ लछमन पुन मेघनाद, अरु अंगद मोर बिकट आद।
माहापारस कौं फिर गरद[25] मेल, जुवराज लयौ रन भार झेल ॥३२०१
बिरूपाख महोदर महाबीर, सुग्रींव मार लीने सधीर।
अतकाय अकंपन असर और, देवांतन रोतहु करे दौर ॥३२०२

१ हृदय। २ स्थिरता। ३ पीछे। ४ ऊपर। ५ मार्ग। ६ गगन। ७ मोती। ८ सुन्दर। ९ मानिक। १० सोना। ११ चांदी। १२ खिड़की। १३ पटल। १४ बरामदा। १५ अर्धांगिनि। १६ कामदेवी। १७ कामदेव। १८ पर्वत। १९ दीर्घ। २० शिखिर। २१ सुन्दर मुखवाली। २२ युद्ध क्षेत्र। २३ राक्षस। २४ ध्वस्त। २५ धूलि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

युधोनमत्त अरू मत्त आद, बिब पुत्र कुंभक्रन[1] परे बाद ।
निःकुंभ कुंभ जिह प्रगट नाम, कीने तिह अद्भुत समर काँम ॥३२०३
बज्राद बज्र दंष्टकहु बीर, सफ समर तीर्थ त्यागे सरीर ।
मकराक्ष माहा[2] दुर्धर्ष मेल, जूझे सौऊ हमरे बाँन झेल ॥३२०४
तन त्याग अकंपन श्रोन ताछ[4], अत बली प्रजंघहु अरू युपाछ ।
जिग[5] सत्रु निसाचर बिपु[6] जीह, सत्रुघ्न पराक्रम समर सीह ॥३२०५
सूरजहू सत्रु अरू ब्रह्म सत्र[7], अरू किते मरे राकस अमित्र ।
सौतन मंदोदर सुंदरीय, पुन ईहाँ पुकारी पीय-पीय ॥३२०६
सामुद्र घाट ईह लखहु सीय, कल[8] काज ऊतर हम सवर[9] कीय ।
सागर पर बाँधो ईहैं सेत, हे पंकजननी तोर हेत ॥३२०७
ईह ऊदध परंजन लखहुं ऐन, निम्नगा-पता[10] ईह कमल नैन ।
नग हिरन नाभ मैनाक नाँम, कीय मारुति[11] को विश्राम काँम ॥३२०८
ऊतरचौ तट सागर कटक आय, पूजे ईहाँ संकर[12] प्रथम पाय ।
ईह सेत बंध तीरथ ऊदार, पूजन सौं भव-दुध[13] तिरहि[14] पार ॥३२०९
ईहाँ मिले बभीखन हमहि आय, पद लंकपति कीनो पसाय[15] ।
बाली कौं मारचौ ईहाँ ब्रहोर[16], मित्रता भई सुग्रींव मोर ॥३२१०
पत्तन[17] किसकंधा ईह पुनीत, निरबाह करत सुग्रींव नीत ।
महि गिरी प्रबर्षन च्यार[18] मास, ईहाँ बैठे तेरे हित ऊदास ॥३२११
पुन कटक जोर कीनो प्रयाँन, अनगनित[19] बंदरी सैन आँन ।
सीय देख कहे जब समाचार, निम्न संग बंदरन[20] लेहु नार ॥३२१२
सब तारा आदक मिलहि संग, अवधपुर देखहै जुत ऊमंग ।
सुग्रींव कह्यो जब राँम सीत[21], पहिचाँन आपनी परम प्रीत ॥३२१३
वसुधा[22] ऊतार पुस्पक बिमाँन, सुग्रींव त्रोयन लीय संग सयाँन ।
चढके बिमाँन दोनो चलाय, द्रग मूक गिरी दीनो दिखाय ॥३२१४
सीय सौं फिर ब्रोले राँम स्याँम, ध्रुव पंपापुर ईह बालधाँम ।
बढ अग्र कही रघुनाथ बात, सवरोय दपायो ह्वै सनाथ ॥३२१५

---

१ दोनों । २ कुंभकरण । ३ महा । ४ उसके । ५ जगत । ६ वृंद । ७ शत्रु । ८ युद्ध । ९ शिविर । १० समुद्र । ११ हनुमान । १२ शंकर । १३ भव सागर । १४ तर जायेगा । १५ अनुग्रह से=द्रवी भूत होकर । १६ फिर । १७ नगरी । १८ चार । १९ अगणित । २० मू० प्र० बंदरनं । २१ से । २२ भूमि ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मारचौ कबंध कौं दीन मोख[1], रूप रह्यौ दुष्ट सोई गैल रोक।
बरगद तरू दीसत जहां बिसेस, दाक्षाय[2] जटायू ईहो देत ।।३२१६
रांवन सौं ता हित कोन रार, पहुच्यौ भव सागर सोई पार।
द्रग[3] पर्न-कुटी अबहूं दिखात, बर पंचबटी थांनक बिख्यात ।।३२१७
दसकंध करचौ तुम हरन दुष्ट, निभ्र पाप आप कुल करचौ नष्ट।
नद गोदावरि[4] जिह बिमल नीर, तरू[5] दीसत ताके[6] तीर-तीर ।।३२१८
मुन[7]कीय अगस्त ईह ठां[8]मिलांन,बध रांवन हित जिह दयौ बांन।
जरभंग ईहै आंश्रम जगाह[9], निभ्र आये ईहीं ठां सचीनाह[10]।।३२१९
सब रिखन[11]बीच सूरज सरूप, अत्री रिख आंश्रम ईह अनूंप।
अनुसुया करचौ ऊपेदस आप, पतिब्रत धरम जो रहित पाप ।।३२२०
मारचौ बिराध हम ईह मुकांम, नग[12] चित्रकूट बिख्यात नाम।
भेटन कौं आये भरत भ्रात, मंत्रीजन आदक[13] सहित मात ।।३२२१
नद जमना[14] दीसत स्यांम नीर, तिरबैनो[15]सरसुत[16]गंग तीर।
बट अक्षय आगै हरत[17] बेस, मुनि भरद्वाज आंश्रम हमेस ।।३२२२
गुह भिल्ल[18]सखा कौ ईही ग्रांम, निभ्र श्रंगबेरपुर जिही नांम।
वह सरजू नद दीसत अनूप, भल रजधानी दसरथ्थ[19] भूप ।।३२२३
प्रिय देख करहु जाकौं प्रनांम[20], ध्रुव सूरज बंसो आद[21] धांम।
सुग्रींव बभीखन आद संग, अवधपुर देख बाढी ऊमंग ।।३२२४

दोहा

अवध दरस कर ऊतरे, तुरत त्रबेनी तीर।
पांन स्नांन कीने प्रथम, निरमल[22] संगंम नीर ।।३२२५
बीते जब चवदह बरख पंचम क्रम[23] पाटीय।
भरद्वाज सौं भेट कीय, श्री रघुबर जुत सीय ।।३२२६
पूछी भारद्वाज प्रत, खबर अवधपुर खेम[24]।
सुभख देस कैसो समय, जनवहु[25] मुनवर जेम ।।३२२७

---

१ मुक्ति = छुटकारा। २ गिद्ध। ३ दृग। ४ गोदावरी। ५ वृक्ष। ६ तट = किनारे। ७ मुनि। ८ स्थान। ९ जगह। १० इन्द्र। ११ ऋषियों। १२ पर्वत। १३ आदिक। १४ यमुना। १५ त्रिवेंनी। १६ सरस्वती। १७ हरा। १८ भील। १९ दशरथ। २० प्रणाम। २१ आदि। २२ निर्मल। २३ तिथि। २४ क्षेम। २५ बताइये।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मात भ्रात है कुसल मम, गुरजन मंत्री गेह।
करग जोर रघुबर कही, सबकी सीहत सनेह ॥३२२८

छंद पद्धरी

सुन रांम बचन मुनिबर सनेह, ऊर हरख[1] भरथ[2] कथ कही येह।
भ्राता लघु तुमरे परम भक्त, जप ताप करत नित जोग जुक्त ॥३२२९
सिर जटाजूट बलकल सुबास, ईक तुमहि मिलन की दरस भ्रास।
पादुका करत सेवा पुनीत, नित राज–काज निखाह[3] नीत ॥३२३०
सुख भ्रवधपुरी राजी सकोय, सिख[4] भ्रावत जावत कहत सोय।
महि भार टार भ्राये मुकाँम, राजीव नयन सीय सहित रांम ॥३२३१
सब सुखी करे मुनिवर समाज, रांवन कौ कीनौ नष्ट राज।
भ्रातिथ्थ[5] गृहऊ पूजा ऊदार, दिन भ्राज बिराजहु हमहुँ द्वार ॥३२३२
भ्रज्ञा[6] मुनि पालक भ्रोघईन्द्र, चिब-धाँम[7] बिराजे रांमचंद्र।
मुनि कहे फेर ईह समाचार, बरदांन लेहु रघुबर बिचार ॥३२३३
करजोर कह्यौ पुन सीयाकंथ, पथ भ्रवधपुरी वहुधाँ[8] भ्रनंत।
बन फूल–फलन जुत होय बृछ्छ, रूच पाय रहै सब कीस रिछ्छ[9] ॥३२३४
मुन[10] तथा भ्रस्तु[11] कहि भयौ मोद, कुट[12] फूल ऊठे जब चहुँ कोद।
श्री रांमचंद्र मुनिबर सराह, रमनीक[13] भ्रजोध्या देख राह ॥३२३५
बोले हनमत[14] सौं जिही बेर, होय भरत भ्रात की दसा हेर।
पन[15] भ्रोघ[16] करी सोई भई पार, सुभ जाय कहो सब समाचार ॥३२३६
कल मिलन करहि हम प्रात काल, हित सहित कहहु तुम कुसल हाल।
गुह भील रहत ईक बीच गैल, मुहि सखापनौ[17] राखत सुमेल ॥३२३७
जिह कहहु कुसल मेरी जरूर, पूछै सोऊ बृत[18] पेम[19] पूर।
ईहीं कहो जबै रवुबर ऊदार, पहुँचे हनुँमाँनहु ंग, ंपार ॥३२३८
पुर श्रंगबेर पथ बोच पेख, बर रांम सखा जं:नै बसेख[20]।
गुह प्रतै करी हनमंत ज्ञात, बिध जुक्त रांम को कुसल बात ॥३२३९

१ हर्ष। २ भरत। ३ निर्वाह। ४ शिक्षा। ५ भ्रातिथ्य। ६ भ्राज्ञा। ७ सुन्दरता के स्थान = छबिधाम। ८ दोनों भ्रोर। ९ रीछ। १० मुनि। ११ तथास्तु। १२ वृक्ष। १३ रमणीक। १४ हनुमान। १५ प्रण। १६ भ्रवधि। १७ मैत्री। १८ वृतांत। १९ प्रेम। २० विशेष।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गये तहाँतैं हनमत नंदिगाँम, धरमग्य[1] धुरंधर भरथ धाँम।
बपु[2] दुरबल[3] धारै जतो बेख, लघु भ्रात राँम के भक्त लेख ॥३२४०
करजोर बधाई राँम केर, हनमंत दई जब भरथ हेर।
माहा[4] राखस[5] राँवन खेत[6] मार, भूम को ऊतारयो राँम भार ॥३२४१
सब मित्र वरग[7] लीनैं समाज, आश्रम मुनि भारद्वाज आज।
रहिहै सब बासुर[8] जहाँ रात, पद कमल ईहाँ धारहि प्रभात ॥३२४२
सुख दाँनी बाँनी सुनी श्रौंन, मुख भयौ प्रफुल्लत गही मौंन।
आँनद के असुवा[9] ऊमड़ आय, भर छाती सात्वक[10] प्रगट भाय[11] ॥३२४३
भेटे हनमत सौं भुजा भाग, सुख पाय सुभागम साँनुराग।
माँगीयें बधाई अहो मित्त, [12]चाहै कछु बंछत[13] सोय चित्त ॥३२४४
बोले नही हनमत कछू बात, हाजरी खरे[14] रहे जोर हाथ।
जब करी भरथ बगसीस जाँन, दोनी सुरभो[15] ईक लक्ष दाँन ॥३२४५
सात[16] ग्राँम ऊबंरा[17] ईधक सीम, सइ औधपुरी बाहर ससींम[18]।
बिधु बदन कुमारी त्रीया बेस, कमलाक्षी[19] गूघरवार[20] केस ॥३२४६
ऊन्नत ऊरोज जघा अरोम[21], सुच अंगी सोरह सहस सोम[22]।
ईहीं देत बधाई मत ऊदार, सुख दायक सुनकै समाचार ॥३२४७
पूछी हनमत सौं सहित प्रीत, श्रीराँम लखन अरु खबर सीत।
बोले जब हनमत बिमल बाँन, सुन लेहु हकोकत भरथ आँन[23] ॥३२४८
निज पिता दयौ दसरथ नरेस, बनवास चतुर्दस बरख बेस[24]।
दसरथ नृप त्यागी फेर देह, सोकाकुल[25] ह्वैकै सुत सनेह[26] ॥३२४९
जिह दिनन रहे ननिहार[27] जाय, वहतै तुम पहुचे ईहाँ आय।
मंत्रिन मिल माता कीयं मिलाँन, सब चित्रकूट पहुचे सुथाँन ॥३२५०
साँपन[28] तुम लोग राजश्रीय[29], कछु अंगीकृत[30] नही राँम कीह।
पादुका सीस धर ऊभय[31] पाय, आज्ञा लै तुम तौ ईहाँ आय ॥३२५१
सीय राँम लखन त्रहु[32] जने साथ, नग[33] चित्रकूट तज चलें नाथ।
डंडकाँरन[34] मग लयौ देख, बतरात[35] चले बातन बसेख ॥३२५२

१ धर्मज्ञ। २ शरीर। ३ दुर्बल। ४ महा। ५ राक्षस। ६ युद्ध क्षेत्र। ७ मित्र वर्ग। ८ दिन। ९ आंसू। १० सात्विक। ११ भाव। १२ मित्र। १३ वाञ्छित। १४ खड़े। १५ गायें। १६ सौ। १७ उपजाऊ। १८ पास। १९ कमल नयनी। २० घूंघर वाले। २१ रोम रहित। २२ सौम्य। २३ कान। २४ वर्ष। २५ शोकाकुल। २६ स्नेह। २७ ननिहाल। २८ सोपंने। २९ राजगद्दी। ३० अंगीकृत = स्वीकार। ३१ दोनों। ३२ तीनों। ३३ पर्वत। ३४ दंडकारण्य। ३५ बातें करते हुए।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पारंद्र[1] जंतु अरू पुंडरीक,[2] दस-दिसा जूथ गज परत दीख।
तरु तरल सरल गिरवर तमाँम, ठट मृघगन[3] बिचरत ठाँम-ठाँम ॥३२५३
बन सघन घोर कुंजत बिहंग, ईक लख्यौ निसाचर दिघ्घ[4] अंग।
अघवदन ऊठायै उद्ध[5] बाह, अघरूप भयंकर बल अथाह ॥३२५४
मारचौ तिह रघुबर बाँन मार, पापी बिराध भव[6] भयौ पार।
सरभंग गये आश्रम सिधाय, पुन मुनिवर भेटे मोदपाय ॥३२५५
राजीव नयन कर दरस राँम, धर ध्याँन गये मुनि परमधाँम।
श्रीराँम गये फिर जन स्थाँन, अह[7] केऊ कर हे बाहू-अजाँन[8] ॥३२५६
भगनी राँवन की अत भयाँन, कल्पन[9] कीय लछमन नाक काँन।
आये जु निसाचार सुन अहेत, खरदूखन मारे त्रसर खेत ॥३२५७
बिलखाय कुकर्मा गई बहोर, सुरपनखा[10] कीनौ लंक सोर।
मारीच संग दससिर[11] मदंध, छल सौं मृघ सोव्रन[12] करचौ छंद ॥३२५८
रच कपट दिखाई दई राँम, भाबी[13] बस बोली सीया भाम।
मृघ अद्भुत लावहु महाराज[14] अवलोकन चाहत जिही आज ॥३२५९
लोग धनु लैकै राँम लार,[15] मृघ भागे त्याँही बन मझार।
अत दूर गये नाये अपूठ, पुन लखन सोया पहुचाय पूठ[16] ॥३२६०
वँह अवसर राँवन गयो आय, सोता कौं लेगौ बिन सहाय।
बैठारी रथ में पकर बाँह, रथ हाक चल्यौ पुन लंक राह ॥३२६१
रपट्यौ तिह देखें गृिद्धराज, बहु झपट्यौ ताही मार बाज[17]।
मारचौ तिह राँवन बाँन मार, धरनी पै गिरगये मोहधार[18] ॥३२६२
लैगयौ सीया कौं लक बीच, नय[19] त्याग अधृमो[20] महाँनीच।
ललचाई सीता बहु निलाज[21], सीता न तज्यौ पतिव्रत सुकाज ॥३२६३
आश्रँम तिह दीनो बन असोक, थप्पे[22] त्रीय राख्सि थोक-थोक।
मृघ[23] मार राँम आये मुकाँम, वैदेही नाहिन लखी बाँम ॥३२६४
पुन खोजन लागे आसपास, अत[24] सीया बिरह ह्वैकै ऊदास।
प्रभु कंतर[25] अंतर लयौ पंथ, सु बिलोक जटायू रत[26] श्रबंत[27] ॥३२६५

---

१ सिंह। २ छोटी राक्षसों की स्त्रियां। ३ मृग = हिरन। ४ दीर्घ। ५ ऊपर। ६ संसार। सागर। ७ दिन। ८ आजानु भुजा। ९ काट डाली। १० सूपनखां। ११ रावण। १२ सोना। १३ होनहार। १४ महा। १५ पीछे। १६ पीछे १७ पंखों। १८ मूर्छित। १९ नीति। २ अधृमी। २१निर्लज्ज। २२ मू.प्र. थपे। २३ मृग-हिरन। २४ अति। २५ बन। २६ रक्त। २७ बह रहा था॥

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तब पूछो रघुवर कही ताहि, बिरतत[1] दयौ रांवन बताय।
ग्रीध[2] की मोक्ष कर करचौ गाँन[3], मेट्यौ कबंध राखस[4] भयाँन ॥३२६६
बिच अटवी[5] मारचौ ऊभय बीर, तीखी[6] बहु भालन मार तीर।
आगे कछु चाले ग्रीध-ईस, पहुचे गिर मूक्कहि[7] मिल कपीस ॥३२६७
मित्रता भयौ तासौं समंध[8], सीता की पाई फेर संध[9]।
हित पाय कह्यौ सुग्रींव हाल, बाढ्यौ बिरोध जिह रीत बाल ॥३२६८
मारचौ बाली कौं महाँराज, राजा सुकंठ[10] कौं दयौ राज।
सुग्रींव सखापन[11] के समंध, पुन खोजन सीय कीनौ प्रबंध ॥३२६९
दूतन कौं भेजे चहूँ देस, बलवंत कीस अगनत[12] बसेस।
दख्खन[13] दिस हमहू गये दौर, अत निरभय साथे कीस और ॥३२७०
बिध्याचल पहुचे जिही बेर, दिग भूल गये तब लगी देर।
द्राक्षाय[14] जटायू भ्रात देख, बिस्मयत[15] भये तिह छिन बसेख ॥३२७१
संपात नाम पहिचाँन साथ, बिध-बिध-सौं लागे करन बात।
राँम की कथा सुन गिद्धराज[16], सीता की दोनी खबर साज ॥३२७२
पुर लंक बीच दध[17]भरचौ पाथ[18], सब फसे पहुचे जहाँ साथ।
पुन भये अकेले हमहि पार, ज्याँनकी[19] मिले पुर लंक जार ॥३२७३
आयकै पास फिर ग्रौधईंद्र, [20] करजोर बिनय कीनी कपिंद्र।
कीय राँमचंद्र जब माहा[21] क्रुद्ध. अहि रूप बाँन गहि धनुष ऊद्ध ॥३२७४
आहव[22] कै कारन जुत ऊछाह, रघुनायक लीनी लंक राह।
नल-नील कीस मति के निकेत, सागर पं बाँधी जाय सेत ॥३२७५
ईतनेहु बभीखन मिले आय, भ्राता राँवन को भेद पाय।
कपि कटक ऊतारचौ अकू[23] पार, राँवन सौं माड़ो जाय रार ॥३२७६
पुन नील मार लीनौ प्रहस्त, गढ लंकपती ह्वै सोक ग्रस्त।
भट कुंभकरन दै संग भ्रात, बिच सगर आयौ बल बिख्यात ॥३२७७
खल मार पछारचौ बीर खेत, हट लाग सीयाबर[24] बिजय हेत।
घननादहु कौ लीय लखन घेर, द्रुत मार लयौ बहु बाँन देर ॥३२७८

१ वृतांत। २ गिद्ध = जटायू। ३ गमन। ४ राक्षस। ५ बन। ६ तीक्ष्ण। ७ ऋषि मूक पर्वत। ८ संबंध। ९ समाचार। १० सुग्रीव। ११ मैत्री। १२ अगणित। १३ दक्षिण। १४ गिद्ध। १५ विस्मित १६ संपाती। १७ समुद्र। १८ जल। १९ सीता। २० राम। २१ महा। २२ युद्ध। २३ समुद्र। २४ सीता पति राम।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रांवन रघुवर कै भई रार, तव सात दिवस लग येक तार[1]।
माहा[2] दुष्ट-तिष्ट[3] दीनो मिटाय, सकुटंब रांम राजा सुभाय ॥३२७९
ईत इंद्र बरुन जमराज आय, पमरेष्टी[4] सिव बरदांन पाय।
पितु दसरथ दरसन लै पुनीत, कीनी जग ऊपर अमर कीत[5] ॥३२८०
रघुबीर बभीखन दयौ राज, ध्रुव लग अड़ग[6] राजाधिराज।
बृद[7] पाय बिसद लंका बरीस,[8] आये तुम मिलनं अवधईस ॥३२८१
पुस्पक[9] बिमांन आरोह[10] प्रात, सज्जन गन लीने सबहि साथ।
मुनि भरद्वाज सौं कर मिलांन, पुर औध[11] करहि निस्चय[12] प्रयांन ॥३२८२

दोहा

समाचार आगम[13] सुने, भरथ रांम लघु भ्रात।
दई बधाई दूत प्रत, सह अवरोधन[14] साथ ॥३२८३
गुर मंत्री पुर ग्रेह में, गली-गली सुभ गाथ।
आवत लंका जीत ईत, राजा श्री रघुनाथ ॥३२८४

छंद पद्धरी

सत्रुघ्न भरथ सासन[15] सुनाय, जुर करहु तयारी सहर[16] जाय।
सुधराय देव-मंदर[17] सकोय, सोगंध[18] पुस्पमाला समोय ॥३२८५
बाजंत्री बंदी जन बसेस, पोरांनक आवक आय पेस[19]।
गनका सुच अंबर[20] पहर गात, पथ रांम दरस चालह प्रभात ॥३२८६
सेना चतुरंगी भट सभाय, मंत्रीगन चालै गन मिलाय।
रघुवर अगवांनी लखे रूप, भल्लुक कपि औरहु लंक-भूप ॥३२८७
सत्रुघ्न जाय कीनी संभार, लाखन मजूर कौं लीयै लार।
घंटापथ[21] चौहट बाट घाट, ऊन्नतो करी पुन हाट-आट ॥३२८८
धौराय धवर हर दाव धूर,[22] पुन छीज[23] सुगंधत नीर-पूर।
रचना फिर कीनी चित्र रंग, सितरंजन पिंगल[24] सित सुरंग ॥३२८९

१ लगातार। २ महा। ३ दुष्ट। ४ ब्रह्मा। ५ कीर्ति। ६ अडिग=अविचलित। ७ विरद=यश। ८ लकेश्वर बनाने वाले और उसके अधिपति। ९ पुष्पक। १० सवार-होकर। ११ अयोध्यापुरी। १२ निश्चय। १३ आगमन। १४ स्त्रियों। १५ आज्ञा। १६ नगर। १७ मन्दिर। १८ सुगंधित। १९ उपस्थित होकर। २० वस्त्र। २१ राजपथ। २२ धूलि। २३ छिड़काव। २४ पीला।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बहु बंदन माला बार-बार, माला फूलन की तिह मझार।
ध्रुव धजा[1] पताका धाँम-धाँम, लगथगत पौंन[2] लागत ललाँम ॥३२९०
दसहू-दिस पत्तन[3] निकट दूर, जगमगत जोत दीसत जहूर[4]।
पुन राज-पंथ में पौर-पौर, जर तार किनारी जोर-जोर[5] ॥३२९१
गुच्छा[6] मोतिन के गोय-गोय, पन्ना मनि लालन[7] पोय-पोय।
सोवर्न[8] तार जामें सँवार, वहुधाँ[9] मग[10] बाँधे द्वार-द्वार ॥३२९२
बापी तड़ाग अरू बाग बृच्छ,[11]सब बीथी[12]थाँना करे स्वच्छ[13]।
जहाँ तहाँ निसीथनि[14]बीत जात,प्राची[15]दिस आगम लख्यौ प्रात ॥३२९३
जुर मंत्रीगन धृष्टहु जयंत, सिधार्थ बिजय साधक सिधंत।
अरू मिले अर्थ साधक असोक[16], थिर चित्त मंत्र पालक सथोक ॥३२९४
चढ चले सुमंत्रहु जुत-ऊछाह[17], रघुवर अगवाँनी काज राह।
औरहु प्रधाँन कुंजर[18] अरोह, सझ धुजा पताका निझ संदोह ॥३२९५
हयसादी[19] चाले हयन[20] हाक, चहुँ ओर मेदनी चढी चाक।
आरोह चले रथ-रथी आद, निस्सरन[21] होत घरराय नाद[22] ॥३२९६
पैदल मिल चाले पंत-पंत,[23] अत देत दिखाई अंत-अंत।
अनगनत रतन मनि ऊल्लरीय, झलमलत कुंजरन झुल्लरीय ॥३२९७
जर तारी सिंदन[24] जगी जोत, आभा रबि किरनन मनु ऊदोत।
जगमगत जँवाहर हयन जीन, सोवर्न तार मंडत सबीन ॥३२९८
माता सब बनीतक मझार, लसकर कर आगे चली लार।
प्रोहित गुर आदक सबै पास, सौविदल प्रत्तयत सावकास ॥३२९९
अरू झुंड-झुंड दासी अनेक, बपु मंगल रूपी करै देख।
माला अरू मोदक मंगलीक, कर लीयैं धुर्न धारन कितीक ॥३३००
सहनाय नगारे बजत संख, डाँडीये भेरीयन लगत डंक।
गायन मिल गायक रचत गाँन, बज बीन पखावज सुभग बाँन ॥३३०१
पादुका सीस धर चले पाव, भ्राता रघुबर के भरथ भाव।
सोवर्न डंड का चमर सेत, सुभ छत्र लीयैं माला सहेत ॥३३०२

1 ध्वजा। 2 पवन। 3 नगर। 4 रौनक। 5 जोड़। 6 गुच्छा। 7 लाल। 8 सोना। 9 दोनों ओर। 10 मार्ग। 11 वृक्ष। 12 गली। 13 स्वच्छ। 14 रात्रि। 15 पूरब। 16 शोक रहित। 17 उत्साह सहित। 18 हाथी। 19 असवारोही। 20 घोड़ों। 21 मार्ग। 22 ध्वनि। 23 पंक्तियों में। 24 रथ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बपु खोन सुधारैं जती बेख, रघुबीर भ्रात-लघु धर्म-रेख।
सुच बाँमदेव बासष्ट संग, ऊर राँम दरस धारैं ऊमंग ।। ३३०३
सझ नंदिग्राँम सौं चली सैंन, ललकंत राँम अगवाँनि लैंन।
रथ कुंजर पावन पंथ रूँध, खुर तारन धोरन भुँम्म खूँद ।। ३३०४
बढ आगैं चाले दूर बाट, धुन बाढी चँहुधाँ धरधराट।
फहरह निसाँन नभ चहूँ फेर, घहरत अवाज घन बाज घेर ।। ३३०५
दल हैदल गैदल मिल दिखात, सालुरे मनहु सामंद्र सात।
सब अवधपुरी बासी समाज, दिस देखत आश्रम भरद्वाज ।। ३३०६
चिब[1] सरदचन्द आवत चछोह. याँन[2] कौं देख कीनौ ऊपोह[3]।
सब भये पयादे येक-संग[4], अवधेस दरस बाढी ऊमंग ।। ३३०७
परनाम[5] करत बहु[6] जोर पाँन,[7] भव हेत क्रतारथ[8] ऊदय भाँन।
ईतनैं में राघव निकट आय, पुरजन अवलोके मोद पाय ।। ३३०८
सीय राँम लखन सब सखा संग, अवलोक भरथ बाढी ऊमंग।
अवनकौं[9] ऊतारयौ याँन आय, भरथ सौं मिले सात्वक[10] सुभाय ।। ३३०९
बैठार गोद में लयौ बीर, भेटकै अंक सौं अंक भीर।
पुन लखन भरथ कीने प्रनाँम, भरथहू दरस कीय राँम-भाँम[11] ।।३३१०
सुग्रींव मिले फिर भरथ संग, पुन, जाँमबँत प्रीती प्रसंग।
अंगद मयंद कपि दुबिद और, नल-नील रिखभ नीकैं निहोर ।।३३११
गज और गंधमादन गवाछ, अरु सरभ पनस सौं पकर आच[12]।
पुन संख्यावीन[13] सुखेन पेख, बतराय कुसल बाँनी बसेख ।।३३१२
पतिलंक बभीखन मिल सप्रीत, राजन की जिह बिध आद रीत।
सत्रुघ्न राँम पद साँनुराग,[14] ललंचाय लखन जुत पाय लाग ।।३३१३
ज्याँनकी पाय कीनो जुहार, पूछकै[15] कुसल कथ सहित प्यार।
कौसिल्या माता प्रनत कीन, अवधेस सुमंत्रा पद अधीन ।। ३३१४
केकई दरस कर कुसल साथ, मन मुदत[16] तीन सै साठ मात।
बंदन कर रघुवर बार-बार, निझ गुर बसष्ट[17]दुजवर[18] निहार ।। ३३१५

---

१ सुन्दर। २ बिमान। ३ विचार। ४ एक साथ। ५ प्रणाम। ६ दोनों। ७ हाथ। ८ कृतार्थ। ९ भूमि पर १० सात्विक। ११ सीता। १२ हाथ। १३ बुद्धिमान। १४ सप्रेम। १५ समाचार। १६ मुदित। १७ वंशिष्ठ। १८ द्विजवर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जन अवधपुरी सब करग जोर, ठाढे भये अगनत[1] ठौर-ठौर।
भरपूर निछावर करी भेट, मन बर्ष चतुर्दस सोच मेट ॥ ३३१६
पादुका राँम की राँम पाँव[2], पहराय भरथ कीनी पसाव।
आपको राज बाहू अजाँन[3], मो पास धरोहर धरचौ माँन ॥ ३३१७
कीजीयै गृहन[4] रघुबर कृपाल, प्रभु मोर अरज[5] ईह प्रजापाल।
बन चले गये ईक दिवस बीच, कल[6] गई अजोध्यापुरी कीच ॥ ३३१८
ऊधार[7] कीयौ पुन[8] आप आय, सुख मोद हमहु बाढचौ सवाय[9]।
ईह कृपा करी रघुबर अपार, बिनती सुभ मेरी बार-बार ॥ ३३१९
सब देख भरथ रघुबर सनेह[10], लोचन दुख मोचन लाभ लेह।
अत भये अनंदत[11] जुत ऊछाह, रघुबीर भरथ गृह[12] लई राह ॥ ३३२०
गुनधाँम[13] ऊतरे नदिग्राँम, सुख पाय सलोने अवध स्याँम।[14]
सेना सब ऊतरी राँम साथ, पुस्पक[15] बिमान सौं समय प्रात ॥३३२१
पुस्पक विमान सौं सहित प्रेम, निज राँम बचन बोले सनेम।
ऊड़ जावहु अलका पुरी आद, सब कहीयौ लंकापुर सँबाद[16] ॥३३२२
पति तोहि कुबेरहि लोकपाल, बैठावहु करकं चित बहाल[17]।
पुस्पक बिमाँन दिस ऊतर-पंथ,[18] तब गयौ पुरी अलका तुरंत ॥३३२३
सबहिन[19] कुबेर निध देत साज, कीनौ रघुबर तिह अभय काज।
बसु[20] रघुबर की रचना बिचत्र[21], चित सुद्ध करे पावन चरित्र ॥३३२४

दोहा

बिहस राँम बासष्ट[22] गरू, पाव पलोटत पाँन[23]।
सोहत माँनहु सुर सभा, बृहसपती मघवाँन ॥३३२५
महाँबाहु रघुबंस मन, सखा देव गरू साथ।
राँम बिनय कीनी भरथ हरख जोर बिन हाथ ॥३३२६

छंद अर्ध हरगीतका

पथ धर्म रीत प्रमाँनीयै, माहाराज अरजी माँनीयै।
रघुबीर बंधव रावरौ, अनजाँन बुद्धि ऊतावरौ ॥३३२७

---

१ अगणित। २ पैरों में। ३ आजानु भुजा। ४ ग्रहण। ५ विनती। ६ सुन्दरता। ७ उद्धार। ८ पुनि। ९ सवाया। १० स्नेह। ११ आनंदित। १२ घर। १३ गुणधाँम। १४ स्वामी। १५ पुष्पक। १ संदेश। १७ स्वस्थ। १८ उत्तर-दिशा का मार्ग। १९ सभी को। २० पृथ्वी। २१ विचित्र। वशिष्ठ : २३ हाथों में।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अनं जुवा मेल ऊतार कै, धोरेय बोझा धारकै।
जोतै सु बछ्छर जाहि कौं, पथ केम थंभै पाय कौं ॥३३२८
ईह बीनती अब धारीयें, ध्रुव राज भारहि धारीयें।
प्रभु प्रजा पालहु सौं, निरवाह नय को नीत सौं ॥३३२९
आधीन है हम आपके, परवाह पुंन्न प्रताप के।
नहि पोखहै निज नेम सौं, खुस रहिहि कैसै खेम सौं ॥३३३०
बनवास दुःख बितायकै, ईहाँ दरस दीनौ आयकै।
परभाव सूर परेख कै, द्रग सफल करहै देख कै ॥३३३१
मन जनन गन कै मोद की, अभलाख पूरहु ओध की।
बादित्र मधुरे बीन के, झनकार नूपर झीन के ॥ ३३३२
सुन सयन करीये सांवरे, ध्रुव धवरहर चिब धाँम रे।
सुनकै नगारन सोर कौं, भल जागीयें प्रभु भोर कौं ॥३३३३
सुन भरथ बात सनेह की, गरू आद मातंन गेह की।
आसन बिराजे आय कै, लावंन्य[1] चख[2] ललचाय कै ॥३३३४
जब कह्यौ रघुवर जोय कै, हीय. सौं अनंदत होय कै।
तुम जती बृत कौं त्यागीयें, अवदात[3] मत अनुरागीयें ॥३३३५
लघु बंध लालन लेख कै, पुन पायहूँ[4] सुख पेख कै।
जब जाँन रघुवर जीय[5] की, हित सांच सौं मति हीय को ॥३३३६
बुलवाय दास खवास[6] कौं, ऊर भरथ लाय ऊहास[7] कौं।
अनवाय[8] जलसो आय क, बपु जती बेख बिहाय[9] कै ॥३३३७
कर लखन मंजन[10] काय कौं, प्रभु आय परसे[11] पाय कौं।
सत्रुघ्न कीनो स्नांन कै, जीय रॉम की रूख जाँन कैं ॥३३३८
कीय स्नांन फेर कपिंद्रहू[12] जिह रीत पुंन्यजनिंद्रहू[13]।
नर इंद्र रॉम नहाय कै, आँनंद हीय ऊमगाय कै ॥३३३९
तन बसन[14] बलकल त्याग कै, पट-पाट[15] बोदर[16] पाग कै।
रमनीय[17] केसर रंग कौं, अवधार तंत्रक[18] अंग कौं ॥३३४०

---

१ लावण्य। २ आंख। ३ उज्वल। ४ प्राप्त करूँगा। ५ हृदय। ६ नार। ७ प्रफुल्लता। ८ स्नान करके। ९ छोड़ कर। १० मज्जन। ११ स्पर्श किये। १२ सुग्रीव। १३ विभीषण। १४ वस्त्र। १५ रेशमी। १६ सूती। १७ रमणीक। १८ नये वस्त्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बगसे अलंकृत[१] बीर कौं, सब सखा आद सधीर कौं।
सोगंध[२] फूल सनेह[३] को, दुत[४] बढी तासौं देह की ॥३३४१
सुभ सिंघ-आसन स्वर्न को, जगमगत रत्नन जरन को।
थिर भरथ थप्पे थाँन कौं, अवधेस भुज-आजाँन[५] कौं ॥३३४२
बैठार गृहकै बाह[६] कौं, ऊर लाय अमित ऊछाह कौं।
लघु भ्रात लछ्मन लेख कै, पुन भरथ प्रति परेख कै ॥३३४३
सतकार[७] कीनो सौगुनौ, घट लायकं आँनद घनौ।
सब मातहू ईक साथ सौं, होय हरख अपने हाथ सौं ॥३३४४
सीय बधू-सुत[८] श्रङ्गार कै, सुच बेस अंग सँवार कै।
कीय संसकार[९] कितेकहू, जसवाय सुभग जितेकहू ॥३३४५
मुदपाय कौसल मात[१०]हू, श्री बंदरन की साथ हू।
पवसाक[११] पट पहराय कै, श्रङ्गार तन सरसाय कै ॥३३४६
सत्रुघ्न बोल सुमंत्र कौं, तिथ महूरत लै तंत्र कौं।
सत्तंग[१२] साफ्र संवार कै, बुलवाय लीन बिचार कै ॥३३४७
द्रग दिव्य रथ कौं देख कै, बिनती सु कीन बसेख कै।
चढ अवधपुर कौं चालीयै, बाजार पंथ बिचालीयै[१३] ॥३३४८
जन देख है द्रग जोरकै[१४], भज भाव दिनमनि[१५] भोर कै।
ऊठ चले रांम ऊतावरे, सिर मुकट धारे सांवरे ॥३३४९
कुंडलहु सोहत कांन में, मीन[१६] माल गल मुक्तांन[१७] में।
बहुटा[१८] कटक[१९] भुज बीय[२०] में, अरु ऊमंका[२१] अंगुलीय में ॥३३५०
पुन श्रङ्खला जुग पाव के, जगमगत स्वर्न जराव के।
आरोह रथ में आय कै, मूतांन स्रौंन भिराय कै ॥३३५१
कोडंड[२२] लै भुजडंड कै, मध[२३] बैठ आसन मंड कै।
सीय बैठ रथ में सुंदरी, बहु नार लै संग बंदरी ॥३३५२
द्रग नगर सोभा देखनै, बर हृदय मोद बिसेखनै।
मंत्री पुरोहित मेल कै, ठट सुभट चाले ठेल कै ॥३३५३

---

१ अलंकार = आभूषण। २ सुगंधित। ३ तेल। ४ द्युति। ५ घोंटू तक लम्बी भुजाओं वाले। ६ भुजा। ७ सत्कार। ८ पुत्र-वधू। ९ संस्कार। १० कौशल्या माता। ११ पोशाक। १२ रथ। १३ बीच से। १४ आंख जोड़कर। १५ सूर्य। १३ मणि। १७ मोतियों। १८ भुजबंद। १९ कड़े। २० दोनों। २१ अंगूठी। २२ धनुष। २३ मध्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

महाराज[1] बैठे रथमही, जगमगत अत[2] सोभा जहीं।
स्वारथी[3] बाग सँभाय कै. ईत भरत बैठे आय कै ॥३३५४
ध्रुव छत्र रघुवर धार कै, सत्रुघ्न पाँन[4] सँभार कै।
बर लछ्छन[5] करत बयार[6] कौं, सोगध[7] मंद सुधार कौं ॥३३५५
धर करग लंकाधीसहू, सित चमर ढोरै सीसहू।
द्रग राँम सोभा देखनै, बढ प्रेम नेम विसेखनै ॥३३५६
ऊप बाभय दसरथ ईस कै. चढ सत्रुँजय गज सीस कै।
संग करचौ मग संचार हू कपि इँद्र[8] पवनकुमार[9] हू ॥३३५७
चढ बिमाँनन नभ छाय कै, अनगिनत[10] सुर मुनि आयकै।
कर स्तुत[11] जय जय कहत है, लख लाभ लोचन लहत है ॥३३५८
गज चले माँन गिरंद[12] के, नव सँहस राँम नरिंद के।
भट चढे आवध[13] भीर कै, सभ्भ सिलह[14] बेख सधीर कै ॥३३५९
गनती[15] न है दलगात की, संख्या न पैंदल साथ की।
रथ-रथी चाले राह सौं, अतरथो[16] रांम ऊछाह सौं ॥३३६०
अतचली सैन ऊमंड कै, मनु घटा भादब मंड कै।
बुक[17] पंत सम बहुलात[18] है, फीलन[19] धुजा फहरात है ॥३३६१
कर हेत दमकत रवि[20] कला, चमकंत माँनहु चंचला[21]।
घन जेम नभ घरराय कै, आवाज दुंदभ आयकै ॥३३६२
धुन मिली धू-धू धूक ज्यां, कर नाल मोर कुहूक ज्यां।
बिथुरी पपीयन[22] बाँन की, गुन गायकन के गाँन की ॥३३६३
बरतंत बाजत बीन की, झनकार झिल्ली झीनकी।
हाकनन की बन होल कै, बढ सोर दद्दुर[23] बोल कै ॥३३६४
चिब[24] रंग कुंकम[25] चैल[26] कै, फूली सु संध्या फैल कै।
झुक मुदर[27] चहु दिस लग झरी, आनंद धारा औसरी ॥३३६५
चित अवधबासी चाव सौं, भीजे सु रघुवर भाव सौं।
आयौ मनौ सुर इंद्र कै, निज नग्र[28] अवध नरिंद्र कै ॥३३६६

---

१ मू. प्र. माहाराज। २ अति। ३ सारथी। ४ हाय। ५ लक्ष्मण। ६ वायु = हवा। ७ सुगंधित। ८ सुग्रीव। ९ हनुमान। १० अगणित। ११ स्तुति। १२ पर्वत। १३ अयोध्या। १४ वस्त्र। १५ गिनती। १६ अतिरथी। १७ बंगुलों की पंक्ति। १८ बाहुल्य। १९ हाथी। २० सूर्य। २१ बिजली। २२ पपीहा। २३ मेंढक। २४ सुन्दर। २५ केसर। २६ वस्त्र। २७ बादल। २८ नगर।

CC-0. RQRI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चढ अटा ऊपर चाँदनी, मुद पायकै मोती मनी।
वारैं सु कर-कर आरतो, प्रज[1] देखकै कोसलपती ॥३३६७
केसर कुलोनसु[2] कुमकुमा, झर करत पुरजन भमझम।
गावत बधाई गीत कौं, पहिचाँन रघुवर प्रीत[3] कौं ॥३३६८
करजोर प्रभू दरसन करचौ बनवास कौं दुख वोसरचौ[4]।
हरखे अनंदत[5] होय कै, जनु कमल दिनकर[6] जोय कै ॥३३६९
बतरात आपस बात कौं, संबोध कर-कर साथ[7] कौं।
प्रभु लक्षमन[8] कै प्रेम की, निज भरथ भ्राता नेम की ॥३३७०
सत्रुघ्न साधक साच की, जन मंत्रिगन के जाच की।
सीय पतीबृत[9] की साधना, अरू पवनसुत[10] आराधना ॥३३७१
पुन वार्नरिंद्र[11] सखाननौ,[12] जुगराज[13] अंगद समुझनौ[14]।
जुरनौ सु जूथप-जूथ कौ, बाख्यान कीस बरूथ कौ ॥३३७२
अरू बभीखन कौ आवनौ, पद लंकपत कौ पावनौ[15]।
सागरहू बाँधन सेत कौं, सिव परम पुज्य[16] सहेत कौं ॥३३७३
रन[17] लंकगढ कौ रोपनौ, कल[18] सीयाबर[19] कौ कोपनौ।
जिम निसाचर कौ जूझनौ, ईत कीस सैन अरूझनौ[20] ॥३३७४
अतकाय आदक आवनौ, जमलोक के पथ जावनौ।
घननाद लछमन घेरनौ, चढ कीस दल कौ छेरनौ[21] ॥३३७५
अरू कुंभकरन अहेत में, खल राँम मारचो खेत[22] में।
दसकंध मारचौ दाव सौं, घट ब्रह्मसर[23] के घाव सौं ॥३३७६
जय पाय रघुवर जंग की, समुदाय बंदर संग की।
लंका बभीखन दैलई, जग कीरतो[24] रघुवर जई ॥३३७७
ऊर सीया सौं अनुरागनौ[25], तहाँ नेटफे फिर त्यागनौ।
ऊठ सीया प्रवसी[26] आग में, महाँ[27] ज्वाल-माला आग में ॥३३७८
विघ[28] आदसुर तिह बेर पे, आये न कौन अबेर[29] पे।
अवधेस कीन ऊराहना, सीय करी बहुत सराहना ॥३३७९

---

१ प्रजा। २ जल। ३ प्रीति। ४ भूल गया। ५ आनन्दित। ६ सूर्य। ७ साथियों। ८ लक्ष्मण। ९ पतिव्रत। १० हनुमान। ११ सुग्रीव। १२ मैत्री। १३ युवराज। १४ समझ। १५ प्राप्त करना। १६ परमपूज्य। १७ रण = युद्ध। १८ युद्ध में। १९ राम। २० उलझना। २१ छेड़ना। २२ युद्ध क्षेत्र। २३ ब्रह्मास्त्र। २४ कीर्ति। २५ प्रेम करना। २६ प्रवेश किया। २७ मू. प्र. माँहा। २८ ब्रह्मा। २९ विलम्ब।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दीय अगन[1] साखी देवहू, भल जाँन रघुवर भेवहू[2]।
पुन ग्रहन कीनी पतिब्रती, सुख पायकैं सीता-सती ॥३३८०
पितु दरस लै पग पूजकैं, बाहुरे[3] रघुवर बूझकैं।
पुस्पक बिमाँन प्रयाँन कौ, दत रितोदर सख[4] दाँन कौ ॥३३८१
कोऊ सुनत कोऊ कथ कहत है, बाजार रघुवर बहत[5] हैं।
अवधेस देखत औध की, सोभा झरोकन सौंध[6] की ॥३३८२
परजा[7] सु निजर[8] पसाव[9] सौं भर मोद कै हीय भाव सौं।
पहुंच सु राजन पौर कौं, घन दै नगारन घोर कौं ॥३३८३

दोहा

कुल राजा ईख्याक[10] के, भये दसरथ लौं भूप।
जोवत चाले जायगा, राज भवन के रूप ॥३३८४

छंद त्रोटक

चल राँम गये जब चत्वर[11] में, घन आँनद सौं पितु के घर में।
ललना बहु भद्रकरीर[12] लीयें, सब ही अवरोध[13] मिली सखीयें ॥३३८५
गुन-गीत बधाईय गावत है, सुख नैनन कौं सरसावत है।
नग कंचन तार[14] निछावर कै झर साँमन-भाद्रव[15] ज्याँ झरकैं ॥३३८६
सीय देखत पै सब होय सुखी, महलै बिच लैगई चंदमुखी।
मिलकैं मुद पावत है महला, कमनीय मनौ विधू[16] दूज कला ॥३३८७
लुर सासु के पायन लागत है, अहवात असीसऊ[17]पावत है।
अत सोह[18] बढो राय[19] अंगन की, मधुरी धुन बाज मृदंगन की ॥३३८८
धवरोहर[20] धाँमन-धाँमन में, मुलकै मिल काँमिन[21]काँमिन में।
निझ दासि खवासन नायनीयें[22], गहरै सुर गावत गायनीयें[23] ॥३३८९
बिनता[24] कहि बात बिसेकत है, द्रग सौं कोऊ आँनन देखत है।
कोऊ पूछत है कुसलात कहै, ललना मिल लाड़ली मोद लहै ॥३३९०

---

१ अग्निदेव। २ भेद। ३ वापिस लौटे। ४ कुबेर। ५ चले जाते हैं। ६ महल। ७ प्रजा। ८ दृष्टि। ९ कृपा, अनुग्रह। १० ईक्ष्वाक। ११ आँगन। १२ कलश। १३ रनिवास। १४ चाँदी। १५ सावन-भादों। १६ चन्द्रमा। १७ भी। १८ शोभा। १९ राज। २० प्रासाद = महल। २ कामिनी। २२ नाइयों की स्त्रियाँ। २३ गाने वाली। २४ वनिता = स्त्री।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सब सीय सखी लखकै सीय कौं, हरकावत[१] आय मिली हीय कौं।
कोऊ बिझन[२] झेल बयार[३] करै, धुरबोरीय भाजन केक धरै ॥३३९१
सित चौंर ऊड़ावत भौंर सही[४], रूख देखत कै मुख रीझ रही।
पुन पंकज पाव पखोटत है, घनसारहू[५] चंदन घोटत है ॥३३९२
वँसुरी कोऊ बीन बजावत है, दुति[६] दर्रन लै दिखरावत है।
मुद पाय रही सब ही मिलकै, पुतरी-चख[७] ढांकत ना पलकै ॥३३९३
अवरोध[८] भयौ सीय आवन कौ, परवाह[९] बढ्यौ सुख पावन कौ।
महाँराजहू[१०] इंद्रक भौंन[११] मही, जन संजुत[१२] ठौर बिराज जँही ॥३३९४
भईया लघु देखकै भारथ[१३] कौं, कपिराज सराह[१४] कही कथ कौं।
चहुँ भ्रात ज्युँही ईह पंचम है, सब मात के अंगज[१५] के सम है ॥३३९५
परनाम[१६] करावहु मात प्रतै, जुगराज[१७] तथा हनुंमंत जुतै।
महिलायत[१८] भोर निवास मही, तुम जाय ऊतारहु भ्रात तँही ॥३३९६
गहि हाथ सौं हाथ जबै गवने, सुगरींव[१९] भरथ्थ सनेह सने।
सब मात जुहारकै होय सुखी, रचना अवलोक कै प्रेम रुखी ॥३३९७
बहुरै बिव[२०] आयकै बाहर में, ठहरे रघुबीर के ठाहर में।
सुभ जोग[२१] महूरथ[२२] देख सही, कपिराज सौं बात भरथ्थ कही ॥३३९८
करीयं रघुबीर सु कारीय[२३] कौं, अभिसेख[२४] दिवाकर[२५] आरीय[२६] कौं।
द्रढ़ बंदर भेजहु च्यार[२७] दिसा, जल सागर लावहि कुंभ जिसा ॥३३९९
कपिराज सुनी सुभ येह कथा, जल सागर सौं मगवाय जथा।
नद और निवांनन नालन सौं, तट तोय[२८] अनेकहु तालन सौं ॥३४००
कपि लायेऊ स्वर्न करीरन[२९] कौं, निज उतंम ऊतंम[३०] नीरन कौं।
कपिराज भरथ्थ सौं जाय कही, सब हाजर है जल कुंभ सही ॥३४०१

दोहा

कही भरथ सत्रुघ्न कौं, बुलवावहु गरु बिप्र।
करहु रांम अभिषेक क्रत[३१], छित मंडल कौं छिप्र[३२] ॥३४०२

---

१ हर्षित होती है। २ बीजना = पंखा। ३ वायु = हवा। ४ सहेली। ५ कपूर। ६ द्युति। ७ आँख की पुतली। ८ रनवास। ९ प्रवाह। १० मू. प्र माहांराज। ११ राजमहल। १२ संयुक्त = सहित। १३ भरत। १४ प्रशंसा करके। १५ पुत्र। १६ प्रणाम। १७ अंगद। १८ महलों। १९ सुग्रीव। २० दोनों। २१ योग। २२ मुहूर्त। २३ कार्य। २४ अभिषेक। २५ सूर्य। २६ आर्य। २७ चार। २८ जल। २९ कलश। ३० उत्तम। ३१ कृत्य = कार्य। ३२ शीघ्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद अरध हरगीतका

सुन भरथ बात सुकाज की, रघुबीर चर्चा राज की।
सत्रुघ्न मंत्रि समाज कौं, रचना सु कहि गरूराज कौं ।।३४०३
बसिष्ट[1] बिप्र बुलाय कै, बेदी अनूप[2] बनाय कै।
धर छत्र कौं कौसल धनी, बामाँग श्रीसीता बनी। ३४०४
बासिष्ट[3] कस्यप[4] अरु बिजै, रिखी[5] पुनर्बसु गोतम रजै।
जहाँ मिले बहु दुज[6] जायकै, अरू बामदेव हू आयकै ।।३४०५
जल कुंभ ऊत्तम जोर कै, घनसार[7] केसर घोर कै।
अभिसेख[8] बिप्रन आद कै, बचनात आसीर्बाद कै ।।३४०६
धुन[9] बेद करकै धारणा, कीय रॉंम मँगल कारना।
जहाँ सुनी रित्वज[10] जोरकै, अभिषेक कीनौ औरकै ।।३४०७
कंन्या कुवांरी पुन करचौ, अभिसेख रघुवर अनुसरचौ।
अरू मंत्रि वर्ग असेखहू[11], कीय रॉंम कै अभिषेकहू ।।३४०८
सब सुभट आदक संग कै, अभिषेक कीन ऊमंग कै।
पुरजनन गन सुख पाय कै, अभिषेक कीनौ आयकै ।।३४०९
सुर आय सुरपथ[12] संजुरे,[13] कल[14] गाँन धुन जय जय करे।
अभिषेक कीन अरंभ सौं, आकास-गंगा[15] अंबु[16] सौं ।।३४१०
चहु लोक पालन चाहि कै, अभिषेक कीय ऊमगाय कै।
अभिषेक जैसै इंद्र कौ, निरवाह[17] रॉंम नरिंद कौ। ३४११
बसु आठ कीनौ जिह बिधी, सरसाय कै सुख संमृधी[18]।
ईम रॉंम को अभिषेकहू, प्रज हेत कीय नय पेखहू ।।३४१२
अभिसेख पीछे आरती, पुन करी जन कौसलपती।
धुर दयौ बिध मनु धारनै, सोई गरू मुगट सँवारनै ।।३४१३
मनु बंस राजा मंडता, ईश्वाक आद अखंडता।
सोई धरचौ रघुबर सीस कै, अत गरू बोल असीस कै ।।३४१४

---

१ वशिष्ठ। २ अनुपम। ३ वशिष्ठ। ४ कश्यप। ५ ऋषि। ६ द्विज = ब्राह्मण। ७ कपूर। ८ अभिषेक। ९ ध्वनि। १० ऋत्वज। ११ अशेष। १२ आकाश। १३ इकट्ठे हुए। १४ सुन्दर। १५ आकाश गंगा। १६ जल। १७ निर्वाह। १८ समृद्धि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बासष्ट के पग बंद कै, अवधेस पाय अनंद कै।
हीय सत्रघन प्रीय हेत कौं, सिर छत्र धारचौ स्वेत कौं ।।३४१५
कर चँवर लेय कपीसहू, ढोरै सु लंकाधोसहू।
उभे दुबाजू आयकै, गुन रांम के पुन गायकै ।।३४१६
सुरपती सासन संध सौं, नोयराय रांम नरिंद सौं।
मनिजुक्त मुक्तामाल कौं, पवमान दाय प्रजपाल कौं ।।३४१७
द्रुत देवता दरबार कै, आये सुक्रीत ऊचार कै।
गंध्रबं लागे गावनै, प्रभु दरस सौं सुख पावनै ।। ४१८
श्रंगार कर कर स्वच्छछरी, अरू नटन लागी अच्छछरी।
जाचकन[1] बिप्रन[2] जोर कै, बित[3] दाँन दीन बहोर[4] कै ।।३४१९
अनगनत[5] भूखन[6] आद सौं, मनि बसन[7] राज मृजाद सौं।
बगसे अलंक्रत[8] वेख कै अवधेस कै अभिषेक कै ।।३४२०
सतकार[9] कर सुग्रींव कौ, हनुमान कौ हित हीय कौ।
जिह रीत जूथप-जूथ कौ, बहु बिदा दीन बरूथ कौं ।।३४२१
पुन लंकपत सुख पायगे, सब धाँम-धाँम सिधायगे।
रघुनाथ अपने राज की, मंभार कोन समाज की ।।३४२२
चित येक[10] भ्राता च्यार[11] कौं, बर राज काज बिचार कौ।
अनभीत[12]जय सारी ईला,[13]कीय राज बहु कौसल[14]कला ।।३४२३
कीय निकंटक प्रज[15] कारनं. ध्रुव[16] राज पदवी धारनै।
जन और मंत्री जात कौं, भजमाँन[17] बोले भ्रात कौं ।।३४२४
भये किते पूरब भूपती, मंडलीक पालक बसुमती।
प्रज पालना कीय प्रीत सौं, निबाह नय[18] की नीत सौं ।।३४२५
छित[19] राज भारहि चाहि कै. प्रज हेत दीय सुख पाय कै।
कुल रीत अंगीक्रत करचौ, सुबिचार सासन[20] अनुसरचौ ।।३४२६
हम नीत नय के हाल की. पहिचाँन मति प्रजपाल की।
हम करत जैसै हेर कै, पुहनीन[21] सासन प्रेर[22] कै ।।३४२७

१ याचकों। २ ब्राह्मणों। ३ वित्त = धान। ४ बदले में। ५ अगणित। ६ भूषण। ७ वस्त्र। ८ मर्यादा। ९ सत्कार। १० एक। ११ चार। १२ निर्भय। १३ पृथ्वी। १४ कुशलता। १५ प्रजा। १६ अटल। १७ सर्व समर्थ। १८ न्याय नीति। १९ पृथ्वी। २० शासन। २१ पृथ्वी पर। २२ प्रेरणा देकर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ईह राज भार उपारीयै, ध्रुव हुकम[1] मेरौ धारीये।
सब भ्रात बोले साथ सौं, रूच जाँनकै रघुनाथ सौं ॥३४२८
करनीय जैसौ काज है, लघु भ्रात की प्रभु लाज है।
पुन करहि जैसी प्रेरना[2], हित चाहि कर है हेरना ॥३४२९
सुन भ्रात बात सयाँन की, गृहमंत्रि जुत गुरु ज्ञाँन को।
जुगराज[3] पदवी जाँन कै, दीय भरथ निज सुखदाँन कै ॥३४३०
अरु भ्रात मंत्री आद कौं, महि भार राज अजाद कौं।
कीय सबै कायम[4] काँम पै महाँराज[5] अवध मुकाँम पै ॥३४३१
परजा बढी दिन-दिन प्रतै, जय कीरती संपत[6] जुतै।
कीय अस्वमेध कितेकहू, जिग[7] पांड़रीक जितेकहू ॥३४३२
पुहमीन सागर पार कै, ध्रुव सीम[8] कीय छत्रधार कै।
हजार ग्यारह वर्षहू, कीय राज जग ऊतकर्षहू[9] ॥३४३३
आजाँनभुज[10] अवधेस कौ, सब बरतमान[11] सुरेस कौ।
भईया सु लछमन भाव सौं, अरु भरथ राज ऊपाव[12] सौं ॥३४३४
सत्रुघ्न साधक साच सौं, बरबीर रघुबर बाच सौं।
कल्याँन[13] कारक कारना, धर रही अवचल[14] धारना ॥३४३५
अन्याय[15] चौर न येकहू[16], बरताव न्याव[17] बसेखहू।
कपटी न बंचक क्रूरता, सरसाय सुभय न सूरता[18] ॥३४३६
नारी पतीव्रत नेम सौं, पति सहित भीनीं प्रेम सौं।
ईती[19] न दुख अहिं[20] आद कौ, बाचालता जुत बाद कौ ॥३४३७
बिसनी[21] न दुज्जन[22] बारता, सठता न लंपट सारता।
संताँन वृद्धी सौगुनी, गरूकर्म[23] साधक अरू गुनी[24] ॥३४३८
पितु मात पुत्र प्रसाद सौं, अपक्रीया[25] बिगत असाध सौं।
दुरभख्ख[26] कौ दुख देस में, बरत्यौ न काल बिसेस में ॥३४३९
जन धर्म निज निज जात कौं[27], निरवाह स्वक्रीय[28] न्यात कौ।
कृषी[29] कर्म बिक्रीय काँम कौं, सुबिचार सासन स्याँम[30] कौ ॥३४४०

१ आज्ञा। २ प्रेरणा। ३ युवराज। ४ स्थिर। ५ मू. प्र. महाँराज। ६ संपत्ति। ७ यज्ञ। ८ सीमा। ९ उत्कर्ष = वृद्धि, उन्नति। १० घोंटू तक लम्बी भुजा वाले। ११ वर्तमान् = उपस्थित। १२ राज्यकाल। १३ कल्याण। १४ अविचल। १५ अन्याय। १६ एक भी। १७ न्याय। १८ शूरवीरता। १९ क्षतिवृष्टि = अनावृष्टि। २० सर्प। २१ व्यसनी। २२ दुर्जन। २३ विद्या। २४ गुणी। २५ दुष्कर्म। २६ दुर्भिक्ष। २७ जाति। २८ स्वकर्म। २९ कृषि। ३० राम।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अवनी बढी अत ऊंन्नती[1], मिल राज परजा[2] संम्मती[3] ।
श्री रांमचंद्र सुभाव सों, भुंव[4] प्रजा बाढी भाव सों ॥३४४१

दोहा

नवरात्री पूजा नीयम[5], वाहन पूजन वीर ।
रांवन मारन जेम[6] रन, विजय दसम रघुवीर ॥३४४२
देवी विजई दंनवन[7], राखस[8] विजई रांम ।
छत्री पूजत चाहिके, कलह विजह के कांम ॥३४४३
कछू ऊक्त तुलसी कही, व्यास ऊक्त कछू बात ।
जुद्ध कथा बरनी जिती, बालमीक बचनात ॥३४४४
कथा राम सुभकारना, जांनत सकल जहांन ।
बुद्ध सुकब[9] वरनन करी, करन हेत कल्यांन ॥३४४५

---

१ उन्नति । २ प्रजा । ३ सम्मति । ४ पृथ्वी । ५ नियम । ६ जिस प्रकार । ७ दानवों पर । ८ राक्षस । ९ सुकवि ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

चतुर्थ स्कंध

दोहा

सुनकें त्रतीय सकंध की, कथा अनूपम[1] कांन ।
जनमेजय नृप कीय जहाँ, प्रश्न व्यास परमांन ॥१
सूरसैन नृप के सुतन, दुज[2] पुज्जक[3] बसुदेव ।
क्रश्नचंद जाके कुवर, देवन हू के देव ॥२

छंद त्रोटक

परमातम[4] क्रश्न के मात पिता, बसुदेव हू देवकी लै बिपता[5] ।
बंधुवा[6] हुय कंस के कैंसे बसे, ग्रह कैद के खेद[7] में अंग ग्रसे ॥३
जिनके खट[8] पुत्र भये जिनकौं, तन[9] नासत कंस करे तिनकौं ।
धृमहीन[10] कहा अपराध धरचौ, कुल भूप जजात[11] कौ नास करचौ ॥४
ऊपजे पुन क्रश्न[12] ईही अरसे, बिच गोकुल जायकें कैंसे बसे ।
प्रगटे कुल छत्रीय[13] में पहिले, मभ्फ[14] गोपन[15] बंसीय जाय मिले ॥५
गृह नंद घनें दिन बीत गया, दुखीया पितु मात न कीन दया ।
जनमें जिह कूख[16] में क्रश्न जई, भवतव्य कहा ईह खेद[17] भई ॥६
करेरे जिन कोनसे कर्म करे, वँह क्रश्न पसाव[18] नहीं ऊधरे[19] ।
भगनी ईक क्रस्न कैं और भई, दुक्रती[20] जिह कंस पछाट दई ॥७
सट[21] भ्रातहु क्रस्न की येक सुसा[22], महाँदुष्टहू कंस नै प्रांन मुसा[23] ।
कहा कीन जहीं बिपरीत क्रीया, जनमे पै नहीं दीरघायु[24] जीया ॥८

---

१ अनुपम । २ ब्राह्मण, द्विज । ३ पूजा करने वाले । ४ परमात्मा । ५ विपत्ति
६ बंधन में । ७ दुःख । ८ छह । ९ शरीर । १० धर्महीन । ११ ययात । १२ कृष्ण ।
१३ क्षत्री । १४ मध्य । १५ गोपालक=ग्वालियों । १६ गर्भ से । १७ दुःख ।
१८ कृपा । १९ उद्धार हुआ । २० दुष्ट कर्म करने वाला । २१ छहों । २२ छोटी बहिन ।
२३ मार दिया । २४ दीर्घायु ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ईह पूरब जन्म के कोन ईते, बय[१] बालपनै में सरीर बिते[२]।
कहीयें फिर क्रश्न बिभौ[३] कितनौ, जुवतीगन ग्राद भयो जितनौ ॥६
नर ग्रोर नाँरायन रूप नृभं[४], ईह ग्रर्जुन क्रश्न भये सु ऊभं।
प्रगटे जिह रीत कहौ प्रवृती[५], चित्त जाँनन की ग्रभिलाख छती[६] ॥१०
बदरी[७] में बने रहे रूप वहाँ, ग्रथवा तन त्याग कै ग्राये ईहाँ।
बिव[८] ब्राँमन[९] होय के खत्री बने, हित कोन बिचारकै सत्रु हने ॥११
ऊलटा-पलटी कौ बिचार ईहो, जर पेढ़[१०] सौं पूछत बात जंही।
हरि-पूत प्रदुम्न[११]तही हरनो[१२],कहा कारन ब्याज[१३]भयो करनो ॥१२
जदुबंस बढ्यो ग्रत जाहीय कौ, ततकाल भयो खय[१४] ताहीय कौ।
भरपूर जहाँ ऊतपात भये, गऊलोक[१५] कौं क्रश्न सिधाय गये ॥१३
हरी[११] के रनवास[१७] कौं लेय हले, मग ग्रावत ग्रर्जुन चोर मिले।
कुमती मिलकै धन लूट करी, घबराय गये नर[१८] ताहि घरी[१९] ॥१४
नही स्याहि[२०]बनी हरिनारन[२१]की,रनवासहु कौं रखवारन[२२]की।
ग्रवतार भौ[२३]बिश्नु कौ क्रश्न ईहीं,जगती[२४]कौ ऊतारन भार जंही ॥१५
द्रढता बिन सत्रुन के ड़रतै, मथुरा तज द्वारका चाल मतै[२५]।
नजदीक[२६] बने रहे चोर लुका, पहिचाँन लये नँहीं सत्रु पका ॥१६
जिनकौं न संघारेऊ कोन जथा, कहीयै बिध संजुत ऐहु कथा।
सतवादीय[२७]भीसम[२८]द्रोन[२९]सही,जुध[३०]ग्रापुस में करवाय जही ॥१७
कुल छत्रिन कौ हरि नास करचौ,तिह मारनतै भुव[३१]भार टरचौ।
खल चोरन मारेऊ भार खिती, कहा जाँन बचाय लये कुमती ॥१८
पंच पंडव सौं पहिचाँन पखा, सोई ग्रर्जुन के भये क्रस्न सखा।
जिग राजसू फेर कराय जंही, बनवास भयो दुख फेर वही ॥१९
नही क्रस्न लखो ईह घात नई, हरि की मतिहू कहा ऊँनी हुई।
द्रुपदा ग्रवतार रमा दुसरी, बिपता भुगती सुख कौं बिसरी ॥२०

---

१ ग्रायु। २ नष्ट हुए। ३ वैभव। ४ निर्भय। ५ वार्ता। ६ छाती = हृदय। ७ बद्रिकाश्रम। ८ दोनों। ९ ब्राह्मण। १० पूर्णतया। ११ प्रद्युम्न। १२ हरण होना। १३ कपट। १४ क्षय। १५ गोलोक। १६ कारण। १७ स्त्रियों। १८ ग्रर्जुन। १९ समय = घड़ी। २० सहायता। २१ कृष्ण की स्त्रियों। २२ रक्षा। २३ हुग्रा। २४ पृथ्वी। २५ विचार। २६ पास। २७ सत्यवादी। २८ भीष्म। २९ द्रोणाचार्य। ३० युद्ध। ३१ भूमि = पृथ्वी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हीय संसय येहु बड़ौ हमरै, कहियै निरनै भ्रम दूर करै।
सुक्रती सब पंडव येक समा, जुधमें कीय छत्रीय जात जमा ॥२१
कुलनास भयौ किह कारन सौं, निज बात कहौ निरधारन सौं।
पुनवाँन परीक्षत मेहि पिता, रहनी करनी द्रुज भक्ति रता ॥२२
ऊपहास करचौ गल डार अही, तन श्रापत होयकै खोय तही।
ईतने सब संसय है उरमें, भय व्याकुल चित्त सदा भरमै ॥२३
सुन व्यास निवारहु होय सुखी, ऊर में ऊ जै मोहि ज्ञाँन-अखी।
जितने हम प्रश्न करे जिनकौ, ततकाल प्रबोध करौ तिनकौ ॥२४
श्रवना नृप बाहक व्यास सुने, क्रम की गति गूढ लगे कहनै।
गिरबाँन न जाँनत कर्मगती, मनुजाद लखै कहा मंदमती ॥२५
क्रम ही ईह ईंह इंड़ कटाह करै, परपंच जतौ जग जाँन परै।
कछु जीव की रीत न जात कही, नही आद न अंतहु मध्य नही ॥२६
क्रम बीज सरूप में बेद कहै, ऊपजै बिनसै नित जीव अहै।
क्रम-जोग तै देह संजोग करै, भ्रम मूल सुभासुभ भाव भरै ॥२७
प्रारब्ध तथा क्रीयमाँन पखै, लहि संचत[1] तीन प्रकार लखै।
ध्रुब संगही संचर[2] धारन कै, क्रम जीव सदा तिह कारन कै ॥२८
बिध[3] आदक देव जिते बहुरै, क्रम[4] सौ सुखहू दुख भोग करै।
हरखै[5] कहु सोक गृहै हीयरा[6]. जिह देह के सग लहै जीयरा[7] ॥२९
ऊरमी[8] ऊरपंच प्रकार ईहै, गुन देह के संग ही जीव गहै।
पसु पक्षिहु माँनस के पुतला, केऊ,देव बनावत ऊद्ध कला ॥३०
क्रमतै भ्रमना रबि ब्योम[9] करै, धुर रोग कुचाँवली[10] इंदु[11] धरै।
गवरीपति[12] मुंड की माल गलै, पुन मागत भीख सदा प्रचलै ॥३१
लछमीपति[13]हू अवतार लहै, सोऊ संकट जोनीय[14] नित्त[15] सहै।
जग जंगम थावर जीव जिते, रचना क्रम बंधन बीच रते ॥३२
पुन नित्य अनित्य बिचार प्रतै. मुनि बूढत तैरत बुद्धि मतै।
ऊर नित्यता माँनत पक्ष अजा, परतीत प्रकासत ईस प्रजा ॥३३

---

१ संचित। २ शरीर। ३ ब्रह्मा। ४ कर्म। ५ हर्षित होता है। ६ हृदय। ७ जीव। ८ काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह। ९ आकाश। १० कफ। ११ चन्द्रमा। १२ महादेव। १३ विष्णु। १४ यौनि। १५ नित्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जितनै नित कारन[1] जाँन जही, निज कारज[2] ताहि अभाव नही।
ईहतै जग जाँनहु नित्य अहै, क्रम ही वँह बीज-बिचार कहै ॥३४
भव कर्म के बंधन माँहि भ्रमै, जीव जोनीय-जोनीय में जनमें।
तिह कारनतै मुनि भोग तजै, जय ज्ञाँन अराधन जोग[3] जजै ॥२५.
दुख ना गृभवास[4] तै और दुऐ[5], मुरझात रहै जनमै रु मुऐ[6]।
जनमे जग अंतर जीव जिते, रचना बस प्रेरत कर्म रते ॥३६
सुकृती तप कै मख[7] साधन तै अथवा कहु ईस अराधन तै।
कहू मानव तै पुरहूत[8] करै, पुन छीन[9] भयै दुख कूँप परै ॥३७
अवतार सीयापत भौ ईतनै, बर अंम्मर[10] बंदर-रूप बनै।
जनमै फिर जादव कश्न जबै, स्वरगीय भये फिर जाय सबै ॥३८
जिम प्रेरत ब्रह्म जनार्दनहूँ, किसना[11] अवतार भयौ सु कहूँ।
क्रतु कारज कै मुनि कस्यप नै, बित चोरन कौं परपंथी बनै ॥३९
जिह लायकै गाय परंजन की, मख कारन सिद्ध करी मनकी।
सुरभीन परंजन बात सुनी, मग खोजत आयकै पास मुनी ॥४०
सुरभी तिह माँगीय कस्यप सौं, बित दैन नटे ममता बस सौं।
घट क्षोभ ऊपज्जीय ताहि धरी, कमलासन जाय पुकार करी ॥४१
कमलासन[12] बोलकै कस्यप कौं, रिसकै बस श्राप दयौ रिस कौं।
सठता कर चोर लई सुरभी[13], ईह मागत पै नही देत अभी ॥४२
स्त्रीय संजुत[14] जाय बिपत्त सहौ, कुल बल्लव जादव होहु कहौ।
बिध श्राप दीयौ जिम बारुनहू[15], ध्रुव कस्यप कीन सु धारनहू ॥४३
अदिती दिती श्राप दयौ ईम हूँ करकै बिसतार सुनौ सु कहूँ।
दुहिता[16] परजापत[17] दछ्छ[18] ही की, कमनीय दहू[19] त्रीय कछ्छप[20] ही की॥४४
अदती सुत इंद्र जबै ऊपजा, रिख सौं दिती माँगीय पुत्र रजा।
दिती नार रजा[21] मुनिराज दई, सुत हेत पयोबृत कीन सई ॥४५
बृत साधत केतक औध[22] बिती, द्रढ़ धारन गर्भहु कीन बिती।
अदिती हीय क्षोभ सुनै ऊपजी, तिह पुत्र के हेत सौं सूक[23] तजी ॥४६

---

१ कारण। २ कार्य। ३ योग। ४ गर्भवास। ५ दूसरा। ६ मरता है। ७ यज्ञ। ८ इन्द्र। ९ क्षीण। १० देवता। ११ कृष्ण। १२ ब्रह्मा। १३ गाय। १४ युक्त, सहित। १५ वरुण मू० प्र० बारन। १६ पुत्री। १७ प्रजापति। १८ दक्ष। १९ दोनों। २० कश्यप। २१ आज्ञा। २२ अवधि। २३ बया।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुत इंद्र कह्यौ मम मंत्र सुनौ, हर-येक[1] ऊपायतै गर्भ हनौ।
सोई बासव[2] मात सलाह सुनी, कर ब्याज[3] चलाय गयौ कुहनी[4] ॥४७

बृत क्षीन[5] भई फिर गर्भवती, सुनीयै अरजी[6] दिती मात सती।
हम भ्रात तथा भगनी ह्वयहै, लख कै तब आनंद कौं लहिहै ॥४८

सुत हेत सदा सिवकाईय[7] तै, जननी ढिग चाहीय जाहीय तै।
कहिकै ईह जाय दबावन कौं, पुरहूत लग्यौ जिती पावन[8] कौं ॥४६

सुत जाँन कोयौ बिसवास[9] सुतै, अत सुप्त[10] भई तम घेर ईतै।
सोई गुर्बिनी[11] बृत लहै समकौं गुरबो तन भूल गई गम कौं ॥५०

तनकौं कर सुक्षम[12] रूप तही सतकोटीय[13] कौं गहि इंद्र सही।
चुपकै गृभ काटन काज चह्यौ, बन सुक्षम रूप पिचंड[14] बह्यौ ॥५१

कीय सात टुका[15] सतकोटीय सौं, खल रूप बन्यौ मत खोटीय सौ।
सोई लेस[16] कलेस[17] कौं पाय सबै, जुन भीत[18] कै रोवन लाग जबै ॥५२

करुना तज बासव कीन कटा, बट[19] येकहु के फिर सात बटा[20]।
ऊनचास भये गृभ[21] येकही तै, पवमाँन[22] सरूप तै भिन्न प्रतै ॥५२

पुरहूत सौं बोल ऊठे पवना, गृह रावरे[23] क्यां[24] न करौ गवना[25]।
कबहूँ तुम द्वेष करैं न कहू, सुनीयै[26] हम रावरे भ्रात सहू ॥५४

कर इंद्र चल्यौ निज काजही कौं, समल्यौ सोई देव समाज ही कौं।
दिती जाग ऊठी ईतनै दुख सौं, रचना अदिती की लखी रुख सौं ॥५५

कर क्रोध दिती अदिती सौं कह्यौ, सुत[27] राज के कारन पाप सह्यौ।
पुन राज कै वैभव हीन पनौ,[28] सुत तोर सहैं मम श्राप सुनौ ॥५६

तुम बंधन में परहै अदतो, पिछतावहुगो[29] लहि संग पती।
मम श्राप अभीक्षन[30] पुत्र मरैं, करुना कर नित्त[31] बिलाप करै ॥५७

सुत सोक कौ दुःख घनौ[32] सहिहौ, लगए तरू के फल कौं लहि हौ।
सुनकै दिती इंद्र कहौ सुनीयें, गुनकौं तज औगुन[33] ना गुनीयें ॥५८

ऊनचास प्रभंजन[34] होय ईहैं, बलवंत महाँ मम भ्रात बहै।
तब श्राप मृषा[35] नंहि होय तहू, अठबिसत[36] द्वापुर[37] में ऊतहू ॥५६

---

१ प्रत्येक। २ इन्द्र। ३ कपट। ४ धूर्त। ५ क्षीण। ६ प्रार्थना। ७ सेवा। ८ पैर। ६ विश्वास। १० सोगई। ११ गर्भवती। १२ सूक्ष्म। १३ वज्र। १४ पेट। १५ टुकडा। १६ टुकडा। १७ क्लेश=कष्ट। १८ भय। १६ खंड। २० टुकड़े। २१ गर्भ। २२ मरुतगण। २३ अपने। २४ क्यों। २५ गमन। २६ मू.प्र. त्थाँ। २७ पुत्र। २८ अभाव। २६ पश्चात्ताप करोगी। ३० बार-बार। ३१ नित्य। ३२ अधिक। ३३ अवगुण। ३४ वायु=मरुत। ३५ मू.प्र. माहां। ३६ मिथ्या। ३७ अट्ठाईसवें। ३८ द्वापर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जननी मम मांनुखी जोन[1] जही, सुत को दुख देखहिगी सबही।
दुसरौ तिह बारुन[2] श्राप[3] दीयौं, अनभोग नही मिटहै ऊभयौ[4] ॥६०
मिटहै दुख अल्प ही काल मही, सुन लीजीयें मान ऊदंत[5] सही।
ईतनें मुनि कस्यप आय ईनें, समझाय बुझाय कही सबनें ॥६१
अदती सोई देवकी रूप ईही, निरसंसय श्राप लीयें निवही।
ईह पूरब जन्म की बात ईती, ईतीहास कह्यो अवतीहू विती ६२

दोहा

कही नृपत सौं व्यास कथ, समरथ बुद्धि सयांन।
कीयौ प्रश्न दहू जोर कर, ईहघू कवन अयांन ॥६३
कस्यप सुत कीय पापक्रम, पतित लोक पुरहूत।
सेवा मिस कर मात के पाव छेवे परसूत ॥६४
नृपत जुधष्टर धर्म-निध, करन भीरम तज कांन।
द्रोनाचारीय आद द्वज, प्रहरन बिनसे प्रांन ॥६५
जरासंध बध हेत जहां, बने क्रस्न तहां विप्र।
बिजई ऐसे बीर कौं, छल कर मारचौ छिप्र ॥६६
करी ढिटाई बिजय क्रतु, कीयो क्रूर तिह कर्म।
फल पायौ बिपरीत फिर, धर्मराज पथ धर्म ॥६७
सत्य प्रथम पद धर्म सो, सऊच दुतीय पद सोय।
दया त्रतीय चौथौ सुदत, कोविद कहत सकोय ॥६८
पाद[6] हीन किम धर्म पथ, चाल सके नही चार।
जांनेंगे कैसे जिनहि, को ठग साहूकार ॥६९
बल[7] राजा दांनी बहुर, छल बावन[8] कर चाह।
सुतल पठायौ क्रतु[9] समय, रही कहां ध्रम-राह[10] ॥७०

कवित छप्पय

सुन ऊदंत[11] नृप श्रवन, व्यास कहि तास बिचारे।
त्रयलोकी-पत[12] तऊ, हरो[13] सोई बल सौं हारे॥

---

१ योनि। २ वरुण। ३ शाप। ४ दोनों। ५ वार्ता, समाचार। ६ चरण। ७ राजा बलि ८ भगवान वामन। ९ यज्ञ। १० धर्मपथ। ११ वार्ता। १२ त्रिलोकीपति = विष्णु। १३ विष्णु।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुतल जाय तिह संग, द्वार-पालक भये देखौ।
लघुतापन[1] तन लहिहु, बनीपक[2] बने बिसेखौ॥
त्रिबिक्रम नाम तिनहि, भार[3] दाँन झेल्यौ सुभुव[4]।
नीकै बिचार लीजे नृपत, धर्मं सत्य कौं जाँन ध्रुव॥७१
माया प्रबल महाँन, जाहि निर्मत[5] जग जाँनौ।
बिघ आदक बिस्तरै, मिले त्रहु-गुन[6] मय माँनौ॥
काँम क्रोध मद मोह, लोभ ऊरमी[7] ललचावत।
अहंकार आरूढ, प्रमापन[8] संचर[9] पावत।
जिह हेत जाहि लीनौ जनम, कारज जैसौ करन कौं।
चल[10]बल ऊपाय तैसो चहत,[11]जोत जुक्त[12]पटु नरनकौ॥७२

छंद पद्धरी

ब्यास पुन कहन लागे बृतंत,[13] ऊर समुझ लेहु नृप आद अंत।
बारता कहा हम कहु बिसेस, पर द्रोह बुद्धि जाकै प्रबेस॥७२
जग थावर जंगम भरे जीव, सब राग-द्वेष संजुत[14] सदीव[15]।
देवता कपट छल रचत द्रोह, मानबी[16] कहा बस सदा मोह॥७४
द्रोही सौं जो कोऊ करत द्रोह, सम-धर्म[17] ताहि जानहु समोह[18]।
बिन द्रोह-द्रोह की करै बात, खलता[19] की जाँनहु ईही ख्यात॥७५
रिख[20] ध्यांन करत केऊ ज्ञाँन रंग, बिद्वेष करत तप जाय भंग।
जब देवराज[21] ईह रचत जाल,[22] हर येक सुरन के कहा हाल॥७६
थिर[23] गनहु बासना धर्म थान, ह्वै मलिन ताहि तै धर्म हाँन।
बासना-मलिन मूलही विनास, जाँनहु निरसंसय सदा जास॥७७
ईतिहास कहत नृप सुनहु एक, बिध-जुक्त[24]बिचारहु लहि बिवेक।
परमेष्ठी[25] होय सौं ऊपज पूत, ईक धर्म नाम जानहु अभूत॥७८
धरमात्म[26] सत्यबादी सधीर, निरमल[27] तप मानहु गंग नीर।
बस सुता प्रजापत[28] दक्ष दीन, पति धर्म प्रीया जाँनहु प्रबीन[29]॥७९

---

१ छोटापन। २ भिक्षुक, भिखारी। ३ बोझ। ४ पृथ्वी। ५ निर्मित। ६ तीनों-गुण सत, रज तम,। ७ काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह। ८ मृत्यु। ९ शरीर। १० छल। ११ चाहता है। १२ चतुर। १३ वृतांत। १४ संयुक्त। १५ सदैव। १६ मनुष्य। १७ समानधर्मी। १८ मोह-सहित। १९ दुष्टता। २० ऋषि। २१ इन्द्र। २२ छल, कपट। २३ स्थिर। २४ विधियुक्त। २५ ब्रह्मा। २६ धर्मात्मा। २७ निर्मल = पवित्र। २८ प्रजापति। २९ प्रवीण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नर नारांयन जनमे निदांन, ऊनले[1] हरी क्रस्नहू भये आंन।
तप करन बद्रकाश्रम[2] सहेत, नर नारांयन[3] रच बन-निकेत ॥८०
परब्रह्म[4] चित्त चिंतत सप्रेम, निरवहत[5] जोग-अभ्यास नेम।
अनुबच्छर[6] बीते सहँस एक, बपु[7] तेज-पुंज-मय भये बिसेख ॥८१
आखंडल[8] ऊपजी संक आंन, मम थांन[9] स्वर्ग लैहै महांन।
जिह हेत जत्न कीजैं जरूर, दुस्साध[10] तपस्या होय दूर ॥८२
गज ऐरावत चढ कीयौ गौंन, थित[11] जास लखे रिख बिपन-थांन।
लवलीन भये परबृह्म लाग, रिखराज[12] लखे द्रग बिगत राग ॥८३
धगधगत तेज थिर[13] जोग ध्यांन, भ्राजत तन दीपत[14] मनहु भांन[15]।
बोले तब बासव कर बिचार. सुनीयें ईह हमरे समाचार ॥८४
बंचत[16] मन लेवहु ऊभय बीर, पुर कवन हेत तप सहँत[17] पीर[18]।
बासव कीय बिनती बार-बार, नारायन बोले नही निहार ॥८५
तब बिघ्न करन लागे तुरंत, ऊलकांन पात नाना अनंत।
बृक सिंघ[19] मृघावन[20] बर्नबिलाव, बिकराल घोरबासी[21] बिराव[22] ॥८६
व्याघ्रनिस[23] भल्लुक अरू बराह ऊल्लूक हूक बर्जंत ऊछाह।
चलचंड[24] प्रभंजन[25] दिसा च्यार, बिन बद्दर[26] गजंत बार-बार ॥८७
भूकंप डार तरु होत भंग, सकपकत सिलोचय[27] डुलत श्रंग।
अनेक भयांनक कीय ऊपाय, द्रढ जोग-बृत्तका[28] सों डराय ॥८८
गवने सु हार पुरहूत[29] ग्रेह, ऊर संसय बाढ्यौ तब अछेह।
माया निज साधत बीज-मत्र, तप भंग करन कहा करैं तंत्र ॥८९
अब और ऊपाय न बनैं येक, बासव बिचार सोचेऊ बिसेक।
बिषमायुद्ध[30] बोले अरू बसंत, मम कारज सिघ कीजैं महंत ॥९०
नर नारायन हत[31] करहु नेम, ऊरबसी आद संग लेहु एम।
तप ऊभय करावहु जाय त्याज, राखहु तुम मेरौ अचल राज ॥९१
सुरराज श्रवन कारज सुनाय, मधुदीपन[32] मधु[33] चाले मिलाय।
रितुराज चल्यौ बढ प्रथम राह, अतसय[34] ऊर धारं चित ऊछाह ॥९२

१ छोटे। २ बद्रिकाश्रम। ३ नारायण। ४ परब्रह्म। ५ निर्वाह करते थे। ६ वर्ष। ७ शरीर। ८ इन्द्र। ९ स्थान। १० दु:साध्य। ११ स्थित। १२ ऋषिराज। १३ स्थिर। १४ दीप्त। १५ भानु। १६ वाञ्छित। १७ सहते हो। १८ पीड़ा। १९ सिंह। २० जरख। २१ सियार। २२ शब्द। २३ गेंडी। २४ भयंकर = प्रचण्ड। २५ वायु। २६ बादल। २७ पर्वत। २८ योगवृत्ति। २९ इन्द्र। ३० कामदेव। ३१ नष्ट। ३२ कामदेव। ३३ वसन्त। ३४ अतिशय।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अन अंतर कंतर[1] जाय आद, बिसतारी माया हित विवाद।
अंकुरत भये आगम अनंत, बिध-बिध बहार बाढी बसंत ॥६३
कोमल नव पल्लव[2]-गुच्छ केर, लहलहत प्रभंजन[3] संग लेर।
परछाँह परत तापं पतंग,[4] रक्तांक[5] झरत जनु लाल रंग ॥६४
अनीयारी कोमल-कली और, काँमो हीय वेधन कौं कठोर।
ऊत्फुल्ल[6] प्रभा ईम ऊद्धरीय, संजोगन[7] आनन सुंदरीय ॥६५
निद्रान-पुस्प[8] कोऊक लखाय, बिरहीन भुजांतर[9] गनहु भाय।
लपटाय रही तरू लता लाग, पीय कांतीय भेटत प्रीत पाग ॥६६
वर तरवर पर मंजर बिसाल, किधू सेखर[10] सोहत पुस्पकाल।
बिस्तार बढी बेली बिसेख, येक सौं समिल[11] पुन रही येक ॥६७
ऊरझाथ रहे गत तंतु एह, सुकीया तीय मानहु पीय सनेह।
कहु रुस्व[12] साख आनंद-कंद, वृष नार सहेली मनहु बृंद ॥६८
द्रुत गुंज भरत रोलंब[13] दाँम,[14] कर गौन जगावत मनहु काँम।
सोगंध मंद सीतल समीर,[15] भट विजई माँनहु जराभीर ॥६९
सुन परत मंजु कलकंठ[16] सोर, बिरदावत रितुराजा बहोर।
चटकत गुलाब कलिका चमेल, खटकत खग खुरली[17] समर खेल ॥१००
पुन पुहप मुकल फंलत १ राग, फागुन रितुराजा खिलत फाग।
सोगंध-संग सरसत समीर, ऊड़ रह्यो मनहुं चहुधाँ अबीर ॥१०१
मधु[18]पाँन करत मधुकर[19] मदंध, मधुवार[20] लेत परकर समंध।
कहु मृदुल बीजकोसी[21] अँकूर, मुग्धा मनु पीय हीय प्रेम मूर ॥१०२
किघु बिरही पिंजा[22] करन क्रूर, रितुराजा आयौ सराकूर।
मनु सिसरकाल सिंधुर[23] मदंध, कंठीर[24] मरोरन जास कंध ॥१०३
पंने नख मनिवक[25] तरू पलास, हीय पुस्पकाल धारै हुलास।
बिसतारी माया ईह बसंत, जुर[26] काँम चढी सब जीव जंत ॥१०४
नर नारायन जागे निदाँन, मिट गई जोग-निद्रा महाँन।
नारायन ऊघरे जुगल नैन, बोले नर सेती ईही बैन ॥१०५

---

१ बन। २ नये कोमल पत्ते। ३ पवन। ४ सूर्य। ५ मूंगा। ६ प्रफुल्लित। ७ संयोगिनी। ८ अधखिले अथवा संकुचित फूल। ९ छाती, हृदय। १० आभूषण। ११ मिली हुई। १२ ह्रस्व = छोटी शाखा। १३ भ्रमर, भौंरे। १४ समूह। १५ वायु। १६ कोमल। १७ एक खेल। १८ पुष्परस। १९ भ्रमर, भौंरा। २० मनोहारी करना। २१ फली। २२ पीड़ित करने, मारने। २३ हाथी। २४ कंठीरव = सिंह। २५ फूल। २६ ज्वर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बृत भंग करन आयौ बसंत, लक्षमी बिपन[1] सोभा ल ंत[2]।
साखी[3] असोक पल्लव[4] सुरंग, चिब[5]-धाँम पंचसाखा[6] सुचंग ॥१०६
बर चरन अरुन किंसुक बिनद्ध, अरू नील असोकहु बार[7] ऊद्ध।
अतमंजु कंज-आँनन अनूप, सुच लोचन इंदीवर[8]-स्वरूप ॥१०७
कली कुंद दसन[9]-चिब हसन केर, पुन ओष्ट दुपहरी पुस्प फेर।
तुलसी मंजर तिह करन[10]तेम, जिह करज[11]बज्र-तरू[12]तिछ्छ तेम ॥१०८
अंबर[13] कदंब तिह लसत अंग, स्वर मधुर कोकला-मोर संग।
घूघरू छुद्रघंटा जु घोर, सारस बिहंग चलचंचु[14] सोर ॥१०९
मदमत्त अनूपम पद मराल,[15] चित चोर लेत सोई मंद चाल।
इहीं इंद्र कीयौ ऐसौ ऊपाय, भेजौ बसंत ब्रत भंग भाय[16] ॥११०
बतरावत आपुस ऊभय[17] बात, सब आय गयौ कंदर्प[18] साथ।
मैनका[19]-हास मुख मंद-मंद, चित चोरत रंभा[20] बदन-चंद ॥१११
सरसात पुस्पगंधा[21] सुगंध, सुंदरी सुसीके[22] प्रेम-संध।
अतरमा[23] महास्वेता[24] अनूप, सोमा[25] रुचरांगी जुत स्वरूप ॥११२
गीतज्ञा[26] मोहत चित्त गाँन, अरू मनोरमा[27] मन-हरन आँन।
पुन प्रमदबरा[28]ऊर सहित प्रीत, सुच सोमा[29]रस राचत सुचीत ॥११३
बपु चंद्रप्रभा[30] जिम प्रभाबृंद, कंचनामाल[31] आँनंद कंद।
कोकल-इलाप[32] मंड़ता कंठ, गत मंद घृताची[33] गुनन-गंठ ॥११४
बर बिद्युनमाला[34] दुति बिसेक, अंब्रजाअक्ष[35] सोभा असेख।
मुख चारुहासनी[36]पास[37]मोह, द्रग देखत मंजुल हिदय द्रोह[38] ॥११५
सोड़स सहस्र सत-पंच[39] संग, अनुराग ऊदत जोवन[40] ऊमंग।
अभिबंदन कीनौ आय पास, हीय जुंगल मूर्ति धारें हुलास ॥११६
कीय आदरपूर्वक ससकार, अभ्यागत[41] पूंजा-बिध अपार।
इंद्र कौ लख्यौ परपंच[42] येह, अहंकार हीयैं बाढ्यौ अछेह ॥११७

---

१ बन। २ सुशोभित होतो थी। ३ वृक्ष। ४ पत्ते। ५ छवि। ६ अंगुली। ७ केश। ८ कमल। ९ दांत। १० कान। ११ नख। १२ थूहर का वृक्ष। १३ वस्त्र। १४ चकोर। १५ हंस। १६ भावना से। १७ दोनों। १८ कामदेव। १९ से ३६ तक अप्सराओं के नाम हैं। ३७ पाश। ३८ क्षोम, उथल-पुथल। ३९ पाँच सो। ४० यौवन। ४१ प्रतिथि। ४२ प्रपंच, षड्यंत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हम मोहित होवहि इनही हेर, ऐसौ तप अंतर कहा अंधेर।
इन तै हम सुंदर करहि आँन,[1] नर नारायन समझे निदाँन ॥११८
थित जंघदेस[2] पै हनी थाप,[3] पुन प्रगट भई ताही प्रताप।
अच्छरी[4] प्रथम आई इतीक, जंघ तै भई ऊतपत[5] जितीक ॥११९
श्रीनारायन परताप सोय,[6] कर सकै न समता अवर[7] कोय।
ऊरबसी[8] नार ता में अनूप, रचना गुन भूधन[9] रग रूप ॥१२०
सेवार्थ और सब सुँदरोय, षोड़स सहस्र सतपंच कोय।
श्रीनाराँयन परसंस[10] साथ, हाजर[11] हजूर[12] पुन जोर हाथ ॥१२१
बोले नारायन बिमल बाँन,[13] नूतन नारन[14] कौं तब निदाँन।
बरदाँन लहहु सो कहहु बात, सब जावहु तुम ऊर्बसी साथ ॥१२२
इंद्र कौं रमावहु जुत अनंग,[15] सुख पाय रहहु तुम जिहीं संग।
नाराँयन्न सेती कह्यौ नार, आँनन सौं सुन कै समाचार ॥१२३
तुमकौं हम कैसै जाय त्याग, रमनी न राजपद साँनुराग[16]।
ऊरबसी जाय सुर-लोक ओर, जाचत हम तुम कौं हाथ जोर ॥१२४
सोड़स हजार हम चहै संग, पाँचसत[17] इधक[18] समुझहु प्रसंग।
पति होय भजहु हम सहित प्यार, इह त्याग करहु जन[19] अनाचार ॥१२५
पुरष सौं चहै रति-सीहत पेम,[20] नारी कौं त्यागन नही नेम[21]।
नय-परपाटी[22] देखहु निहार, आद सौं अंतु प्रबृत[23] अधार ॥१२६
बस रहहु सुरालय[24] बिपन बास, पर रहिहै हम तौ तुमहि पास।
अच्छरी[25] सुधारस[26] सत अमोल, बिनती-जुत बोली मधुर बोल ॥१२७
सोई अंतरजाँमी सुने आँन, प्रीत की रीत हीय की पिछाँन।
नारायन समुझे ऊर निदाँन, इह अहंकार बाढयौ अज्ञाँन ॥१२८
संसार-बृक्ष कौ मूल सोय, कल[27] अहकार बिन नहिन कोय।
तरू-धर्म[28] काटबे काज तेम, जाकौं बृक्षादन[29] गनहु जेम ॥१२९
ऊतपत्त करी नारन अनेक, इह अहंकार ही कौंम येक।
हमही सौं चाहत रति-हुलास, बनहै पुन कैसै सुख-बिलास ॥१३०

---

१ अन्य। २ जाँघ। ३ थप्पड़। ४ अप्सराएँ। ५ उत्पन्न। ६ प्रताप। ७ और। ८ उर्वशी। ९ शरीर। १० प्रशंसा। ११ उपस्थित। १२ सेवा में। १३ वाणी। १४ नारियों। १५ कामदेव। १६ से अनुराग। १७ पाँच सौ। १८ अधिक। १९ नहीं। २० प्रेम। २१ नियम। २२ नीति की परम्परा। २३ वार्ता। २४ देवपुरी। २५ अप्सरा। २६ अमृत। २७ कलि = संसार। २८ धर्म रूपी वृक्ष। २९ कुल्हाड़ा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

निज आँननतै तंतव निकाल, जंतव फिर बाँधत जेम जाल।
आपहि बिच बंधत जेम आँन, नहि निकसन कौं सूझत निदाँन ॥१३१
हम कुसुम कीट के होय हाल, जाँन कै आप सौं फसे जाल।
इह अहंकार फल भयौ येम. जापै फिर करहै क्रोध जेम ॥१३२
कर क्रोध छाँड़ जावहि कहूँक, आप कौं देहगो त्याग सूक।
अब अहंकार फल लहे एम, जाहि पै क्रोध फल मिलहि जेम ॥१३३
काँम अरू लोभ फिर बढहि क्रूर, धर्म औ कर्म सब मिलहि धूर[1]।
धाँनुख[2] पुन ह्वैहै त्याग धीर, पर नरक-मध्य तन सहहि पीर[3] ॥१३४
नर बोले नारायन निहार, अब तौ तुम जीतहु अहंकार।
सुर-अब्द[4] सहँस[5] तप कीयौ सोय बस क्रोध प्रथम बैठे बिगोय[6] ॥१३५
प्रहलाद लरे जब क्रोध पाय, बहुरं बाढहिगी वँह बलाय।
अहंकार जीत कै ह्वै अभीत[7], बिचरहु नारायन दंभ बीत ॥१३६

कवित्त

नर नारायन निकट बारता कही सु बीती।
जनमेजय नृप जाहि प्रस्न[8] कीय लाय प्रतीती ॥
प्रथम जुद्ध प्रहलाद भयौ सो कैसैं भाखहु।
व्यास देव मति बिमल रंज जन हीय में राखहु ॥
चित सांत ऊभय[9] पंडित चतुर भये क्रोधबस सोऊ भलैं।
निक्रमन धर्म पाँवर[10] नरन चित बिचार कैसैं चलैं ॥१३७

छंद मोतीदांम

कही नृप व्यास सुनी सोई काँन, बखाँनन लागेऊ ज्ञांन बिधांन।
भलै कहु कारज[11] कारन[12] भेद, निहारहु भाव लहै निरबेद ॥१३८
कहै कोऊ कंकन कंचन केर, बिलाय[13] न कंचन[14] ता कहु बेर।
बिचारहु या बिध[15] सौं बृहमंड,[16] मंडी अहंकारहू सौं ईह मंड ॥१३९

---

१ धूलि = मिट्टी। २ हिंसक। ३ पीड़ा। ४ देवताओं के वर्ष। ५ सहस्र। ६ खोकर। ७ निर्भय। ८ प्रश्न। ९ दोनों। १० नीच। ११ कार्य। १२ कारण। १३ नष्ट। १४ सोना। १५ तरह। १६ ब्रह्मांड।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अजा[1] गुन[2] तीन जुतै अहंकार, स्वयंभू आदक येह संसार।
वसष्टहु नारद आद बिसेख, अहंक्रत-बीत[3] न जाँनहु येक ॥१४०
जिते जग संचर[4]-धारक जीव, सबै बस[5] कांम रू क्रोध सदीव।
ज्युंही फिर लोभ रू मोह जँजाल, बढै मद मछ्छर[6] होय बिहाल ॥१४१
सँपेखहु मोह बिना कोऊ संत, महाँ मद मछ्छर[7] हीन महंत।
सुनौ प्रहलाद-कथा कहु सोय, जथा इतीहास बिचारहु जोय ॥२४२
तबै नरसंघ भयौ अवतार, मँडे रन हाटक-कस्यप मार।
सिंघासन राज दीयौ निज संत, अखी प्रहलाद ऊधार अनंत ॥१४३
मँडे अधलोकही राज मुकाँम, करचौ मन-बंचत पूरन काम।
बसै द्विज भक्त निरंतर बास, हरी-पद ध्यावत जुक्त हुलास ॥१४४
जबै कथ येक भई बिधजोग,[8] बिसंभर[9] आश्रत[10] जोग-बिजोग।
भृगू-सुत चिम्मन[11] हू मुनि भेस, अराधन तीर्थ गयौ ऊपदेस ॥१४५
गये तट तीरथ पूरब गंग, अराध कै लागेऊ मंजन अंग।
धसे जब मेकलजा[12] बिच-धार, बिलेसय[13] बंध परे तिह बार ॥१४६
लपट्टीय देह कपट्टीय[14] लाग, महाँद्रह अद्ध सपट्टीय माग।
पताल कौं ब्याल लह्यौ जिह पंथ, करे मुनि याद जबै श्रीयकंथ[15] ॥१४७
रसातल बीच गये मुनिराज, बिना बिष संचर[16] ह्वै निब्याज।
भई प्रहलादहु सौं मुनि भेट, मिले सुख पाय कै संसय मेट ॥१४८
कह्यौ मुनि आगम-भौ[17] किह कांम, मिले अधलोक[18] कै आय मुकाँम।
कही मुनिराज भई जिम कथ्थ, तहाँ प्रहलाद बिचारीय तथ्थ[19] ॥१४९
मिले हरीभक्त लह्यौ मन मोद, बढचौ ऊर आय ऊदंत[20] बिनोद।
महाँतम[21] तीरथ पूछ मुनिंद्र, दना रस सांत जबै दनुजिंद्र[22] ॥१५०
सुके प्रहलाद के बायक[23] स्रौंन,[24] दयौ प्रति ऊत्तर संत निदाँन।
सदाँ मन बाँनीय[25] संचर सुद्ध,[26] पिछाँनहु पैंड़[27] ही पैड़ प्रसिद्ध ॥१५१
लहै नित तीरथ कौ सोई लम्भ,[28] सदाँ हीय ज्ञाँन पिछानहु सम्भ[29]।
बसै तट गंग मलेछ[30] हु बास, दिपै खस हूँन[31] अभीरहु दास ॥१५२

१ माया, प्रकृति। २ गुण। ३ अहंकार-रहित। ४ शरीर। ५ वश। ६ मत्सर। ७ सदैव। ८ दैवयोग से। ९ विश्वम्भर - परब्रह्मा। १० आश्रित। ११ च्यवन। १२ नर्म्मदा। १३ सर्प। १४ कपटी। १५ विष्णु भगवान्। १६ शरीर। १७ आगमन हुआ। १८ पाताल। १९ तथ्य। २० वार्ता। २१ माहात्म्य। २३ प्रह्लाद। २३ वाक्य। २४ कान। २५ वाणी। २६ शुद्ध। २७ पग। २८ लाभ। २९ पण्डित। ३० म्लेच्छ। ३१ हूण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नहावत लावत पीवत नीर, सुधातम[1] नाँहिन होत सरीर।
सुधातम लाभ लहै मन सुद्ध, इही थित-तीरथ जाँनहु ऊद्ध ॥१५३
तया भुव[2] मंडल तीरथ तौन, जथारथ होहु क्रतारथ जौंन।
सबै जग तीरथ को सिरताज, रसा-मध[3] ऊत्तम पुस्कर-राज[4] ॥१५४
ज्युंही निमखांरन[5] तीरथ जाँन, सबै अध नासन जास सिनान[6]।
ऊजागर तीरथ है इह आद, बिनासन अक्रम[7] और विषाद ॥१५५
सुनी मुनि भासन तीर्थ सराह,[8] रसातल ऊद्ध लई धर[9] राह।
पहूँचोय आय जबै प्रहलाद, इहाँ निमखारन तीरथ आद ॥१५६
जहाँ बिध पूर्बक पुज्जीय जान, गह्यो सुख सांत अपूरब[10] गात।
सरस्वती तीरथ कीन सिनान, गये प्रहलाद सु पूरन ज्ञाँन ॥१५७
अराधकै ब्रह्मसुता[11] पुन अग्ग, महाँ गिर ऊद्ध लखो तिह मग्ग।
हिमाँचल बद्रीयनाथ के हेत, सबै दनुजातन सथ्थ समेत ॥१५८
जहाँ हरी मूरत पुज्जीय जाय, ऊपज्जीय मोद अनंद-अघाय।
लखे बहु-पात [12]करालक[13]नैन, अनूपम बाँन[14]धरे बिच ऐन[15] ॥१५९
भये तिह देख अचंभत[16] भाव, इहै इखू[17] राखत कोन ऊपाव।
कहा मुनि आश्रम आयुध काँम, बिलोकत बाढत चित्त बिराँम ॥१६०
बिधोबिध[18] सोचत औ बतरात, नरायन[19] आय गये नर साथ।
बिलोकीय सीस जटा मुनि बेस, असंभव बाढेऊ होय अंदेस[20] ॥१६१
बसे बन त्यागीय बेस बनाय, रखे इखु अक्षय दंभ रचाय।
बिलोकत धर्म बिरोधीय बात, इनंतस[21] देख होयै अकुलात ॥१६२
प्रकासीय येह कथा प्रहलाद, बढचो उर आयकै घोर विषाद।
नारायन बोलेऊ ताहि निहार, संबोधन भासन में कहा सार ॥१६३
करै चित[22]नीक[23]लगै सोई काज बिचारहु कोन इहै हम ब्याज[24]।
जनावत आप हमै कछु जोर, चले तुम जावहु आश्रम छोर[25] ॥१६४
चहै हित जीव इहै चित-चाह, रहै बिच धर्म चलावत राह।
अधर्पन[26] देखकै दंड ऊपाय, करै हठ लाग सदा बल काय ॥१६५

---

१ शुद्धात्मा : २ भूमि। ३ पृथ्वी के मध्य। ४ पुष्कर राज। ५ नैमिषारण्य। ६ स्नान। ७ दुष्कर्म। ८ सराहना। ९ तीर्थ यात्रा। १ अपूर्व। ११ सरस्वती। १२ बटवृक्ष। १४ बाण। १५ स्थान = अयन। १६ आश्चर्य, चकित। १७ बाण। १८ अनेक प्रकार से। १९ नारायण। २० सुरक्षित। २१ धूर्तता। २२ चित्त, मन। २३ अच्छा। २४ कपट। २५ छोड़कर। २६ अधर्मियों।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भये बच[1] केतक संकुल[2] भाव, चढे रस बीर बढ्यो रन[3] चाव।
इतै प्रहलाद ऊठ्यौ अनखाय, बिचारकै येह कही जब बात ॥१६६
इतै प्रहलाद बली असुरेस,[4] भिरे नर आय भयाँनक भेस।
हटै नहि पाँव जुटै हमगीर,[5] भई दहु ओर कलंबन[6] भीर ॥१६७
अनेकन होन लगे ऊतपात, परै मनु पब्बय[7] बिद्रुत[8] पात।
मँडे घमचक्क मिटे जग माँभ, धरा अकबक्क पतालन धाँम ॥१६८
बढ़ी त्रहु[9] लोकन में इह बात, सुरासुर मानव लौ इक साथ।
कही तब नारदहू इह कथ्थ, परेखहु जुद्ध मुनी परबत्त[10] ॥१६९
भयौ मधु कैटभ जुद्ध भयाँन, मँडे रन ब्रत्त[11] तथा मघवाँन[12]।
जुरे प्रहलाद ज्युहीं नर जेम, बढै रन वाँन ज्युहीं पटबेम ॥१७०
पराक्रम येह लखौ प्रहलाद, बढै हरी अंस के तुल्य बिवाद।
जुरे स्वर[13] देखन कौं सोई जुद्ध, अलोकिक देख पराक्रम ऊद्ध ॥१७१
मँडे भर फूलन अंबर[14] मग्ग, इतै भर[15] बाँनन होत ऊदग्ग।
रचै रव[16] गंध्रुव सिंधव राग, इतै बिसफार अवाज अथाग ॥१७२
बिवाँनन[17] अच्छछर[18] गाँन बिसेख, इतै सननंकत बाँन[19] असेख।
नृभै[20] नर अक्षय बाँन निखंग,[21] भये प्रहलाद किते धनु भंग ॥१७३
इतै नर जोग-बली अप्रमाँन,[22] ऊतै दनुविद्रहू[23] बाहूअजाँन[24]।
पहै नही दोऊन कौ बल पार, रूपें बिव[25] ओर बरोबर रार ॥१७४
इतै नर धोर सुतै हरी-अंस,[26] पतीदनु भक्त हरी परसंस[27]।
चढै इक येकहु सौं बिवछेद[28] भलै बिध लच्छत[29] दीपत[30] भेद ॥१७५
झुकै सर दिग्घ सौं दिग्घन झेल मुकै[31] कहु तट्टल-तट्टल मेल।
छुरप्रन हूँत छुरप्रन हेर, खिचैं गुन तोरन-तोरन खेद ॥१७६
महाँ क्रतहस्त[32] हीयै मगररूर, चलावत बाँन करै चकचूर।
करै चख[33] लाल जुरै अत कुप्त,[34] समा मनु[35] आय गयौ समसुप्त[36] ॥१७७

---

१ वचनों के। २ परिपूर्ण। ३ रण। ४ दैत्यराज। ५ अग्रणी। ६ बाण। ७ पर्वत। ८ बिजली। ९ तीनों। १० पर्वत। ११ वृत्रासुर। १२ इन्द्र। १३ देवता। १४ आकाश। १५ झड़ी। १६ शब्द। १७ विमानों में। १८ बाण। २० निर्भय। २१ तर्कश। २२ अप्रमाण = अपरिमित। २३ प्रह्लाद। २४ आजानुबाहु। २ दोनों। २६ विष्णु भगवान का अंश। २७ प्रशंसित। २८ प्रहार करने में। २९ निशाना लगाते। ३० शीघ्रता से भेद करते। ३१ छोड़ते थे। ३२ हस्त कौशल युक्त। ३३ आंख। २५ क्रोधित। ३५ समय। ३६ प्रलय।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बढ़ी अत चित असंभव बात, हरी[1] चक्र संख गदा लीय हाथ।
प्रभू प्रहलाद के आयकें पास, बिलोकीय द्रष्ट-अमी[2] बिसवास[3] ॥१७८
बली दनु बिद्रहु बुद्ध बिसाल, कीयौ अभिबंदन बिस्नु क्रपाल।
करी हरि सौं बिनती कर जोर, मिट्यो किह रीत पराक्रम मोर ॥१७९
जये सत-बछ्छर[4] देव जितेक, इहाँ भिर जुद्ध करें नर येक।
समापत ह्वैगये अब्द[5] सहंस, तपस्वन बीर लखे अवतंस ॥१८०
हटै नहीं वाज लौं मानत हार, कहौ गत कान[6] भई करतार।
जनार्दन कथ्थ-कही जन[7] जाँन, अहो प्रहलाद बली अप्रमाँन ॥१८१
करयौ जुध-तुल्य[8] बढी करतूत, असंभव बात इहै अदभूत[9]।
इहै मम-अंस सरूप[10] अनाद, पराक्रम ऊद्ध लखौ प्रहलाद ॥१८२
सुनी प्रहलाद इहै कथ श्रौंन[11], ऊदै निरबेद ह्रिदै भय श्रौंन।
गयौ प्रहलाद तबै निज ग्रेह, अहंक्रत[12] निंदत भाव अछेह ॥१८३
नारायन फेर गह्यौ व्रत-नेम, अराधन जोग लगे रिख[13] येम।
पतीदनु संत महा परबीन[14], लखी अहंकार ऊतै फल लीन ॥१८४
सुनौ इह राजन कथ्थ सयाँन, बिना अहंकार न तंत व बाँन।
सतोगुन ओर रजोगुण संग, अहंक्रत[15] जाँनत मो गुन अंग ॥१८५
लगे सोई आयकें जीव की लार[16], ऊदै जग येह करें अहंकार।
कीयौ अहंकार ही के इह काज, तिही मुनिराज करें किम त्याज[17] १८६
मुनी भृगु श्रापत देव मुरार, अनेकन आप लेय अवतार।
बिवस्वत जास मुनंतर[18] बेर, हकीकत[19] श्रौंन[20] सुनौ हीय-हेर ॥१८७
बने बपु कच्छछ रू मछ्छ बिसेस, धरे ऊर दानव जात सौं ध्वेस।
सुनी जनमेजय ब्यास सौं श्रौंन, असंभव संक[21] हीयं अनुमाँन ॥१८८
जनार्दन[22]स्यापक[23]बिप्रन[24]जोन कहौ अपराध कीयौ मुनि कोन।
बिचारकें ब्यास कही इह बात, भयो नृप भू हिरनाँख[25]को भ्रात ॥१८९

१ विष्णु भगवान। २ अमृतदृष्टि। ३ विश्वास। ४ सौ वर्ष। ५ वर्ष। ६ कौनसी = क्या। ७ भक्त। ८ बराबरी का युद्ध। ९ अद्भुत। १० स्वरूप। ११ कान। १२ अहंकार। १३ ऋषि। १४ प्रवीण। १५ अहंकारयुक्त व्यक्ति। १६ पीछे। १७ त्याग। १८ मनवन्तर। १९ वास्तविक घटना या बात। २० कानों। २१ शंका। २२ विष्णु। २३ शापदाता। २४ ब्राह्मणों। २५ हरिण्याक्ष।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अनेकन जाहि करे ऊतपात, सुधाभुक[१] बिप्रन हू मुनिनाथ।
मुनी द्वज[२] देवन काज मुरार. इतै नरसिंघ[३] भयौ अवतार ॥१६०
प्रहारीय हाटक कस्यप[४] प्राँन, दीयौ प्रहलाद कौ राज निदाँन।
जिही प्रहलाद गह्यौ बल जोर, मँडे रन बासव[५] मुच्छ-मरोर[६] ॥१६१
भयौ सत बच्छर[७] जुद्ध भवाँन[८], मिली जय संगर में मघवाँन[९]।
पराजय देवन लै प्रहलाद, बढी ऊर अंतर आय बिषाद ॥१६२
तज्यो पद-राज बली कह तत्र, प्रभूपन[१०] दीनेऊ आप पऊत्र[११]।
गही तब आश्रम बद्रीय गैल, सोऊ तप हेत ऊतंग ही सैल ॥१६३
बली प्रथमी-पत[१२] होय बलिष्ट तिबिष्टप-बासिन सौं रन तिष्ट।
सिहायक[१३] पाय हरी सुरगीथ, दले दनुजात[१४] पराजय दीय ॥१६४
दिती-सुत दंत गरू[१५] अरदास[१६], भये सरनागत[१७] बेदना-भास।
अभै पद[१८] दीन मघाभव एम, जितौ दनुबिंद्र भरोस ही जेम ॥१६५
सदेसन-हारक[१९] सौं सुन आँन, महाँ ऊर सोच गयौ मघवाँन।
बिचारीय इंद्र सलाह की बात, निरंतर बिस्नु अनाथ के नाथ ॥१६६
जुहार कै कथ्थ कही कर-जोर, ऊपद्रव बाढहिगौ द्रढ ओर।
गये भृगू-सिख्ख सबै भृगू ग्रेह, अभै पद दीन सुनी हम येह ॥१६७
सबै स्वर्गीयन सथ्थ समेत, हरी कीय संम्मत[२०] संगर हेत।
लगे दनुजादन के कुल लार[२१], प्रहारीय[२२] ठौर ही ठौर प्रचार ॥१६८
भगे दनु फेर किते भयभीत, परे कुज पावन[२३] प्राँनन प्रीत।
जबै दनुजात घट्यौ लख जोर, चले सुर संगर की तथ[२४] छोर ॥१६६
कही भृगू-सिख्खन सौं कुज कथ्थ, सिहायक देवन बिस्नु समथ्थ[२५]।
हनै हरनाक्ष कौं होय बराह, ऊधारीय प्रथीय सिंधु अथाह ॥२००
सदा हरी देवन[२६] काज सहाय, करै नही जत्न कहूँ किह काय।
नही हम मंत्रन स्क्ति निदाँन, बचाव[२७]कों बिस्नु के अगृ बिधाँन ॥२०१
समै[२८] लख बैरिन सौं कर संध, बचाव के कारन बाँधहि बंध।
बिचारहि मंत्र कछू हम बेस, मिलायकै जायकै पास महेस ॥२०२

---

१ देवता। २ ब्राह्मण। ३ नृसिंह। ४ हरिण्यकसिप। ५ इन्द्र। ६ मूछें मरोड़कर। ७ वर्ष। ८ भयानक। ९ इन्द्र। १० राज्यपद। ११ पौत्र=नाती। १२ राजा, भूमिपति। १३ सहायक। १४ दैत्य। १५ शुक्राचार्य। १६ विनती। १७ शरणागत। १८ अभयपद। १९ दूत। २० मंत्रणा। २१ पीछे। २२ मारा, बध किया। २३ पैरों, चरणों। २४ पृथ्वी। २५ समर्थ। २६ विष्णु। २७ रक्षा। २८ समय, अवसर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मिले रहौ देवन सौं तुम मित्त[1], तितै लहि आवहिगे हम तत्त।
कहे इह सुक्र गये कयलास[2], विचारन कारन मंत्र बिसास ॥२०३
सबै प्रहलादिक दाँनव संग, प्रकासीय[3] देवन सौं परसंग।
करौ सुर देव ज्युहीं तप कर्म, धरैं हम सब्ब गहै तुम धर्म ॥२०४
कही प्रहलादक आदन कथ्थ[4], सही सोई माँनोय देवन सथ्थ।
लगे स्वय[5]कारज में स्वर[6] लेख, बिश्रंभ[7] कौं पाय कै राह बिसेख ॥२०५
वईतन[8] सथ्थहु पूर्बक दंभ, सबै तप साधन कीन ससुंभ[9]।
सबै सरनागत जाँन सहेत, दयौ ऊपदेस ज्यूही गरू देत ॥२०६

दोहा

सुक्र[10] गये कयलास कौं, मिले जाय माहेस[11]।
आगम पूछौ सिंभु अरू, मतलब कह्यो मुनेस ॥२०७
सुराचार्य[12] तै इधक[13] सोई, मंत्र बतावहु मोहि।
मम सिख्खन[14] कौं जय मिलै हुथ देवन जय होय ॥२०८
सोचे मन में सिंभु सुन, कथ्थ मघाभव केर।
मंत्र दीयैं दनु जय मिलहि, जिग्यभुक्त ह्वै जेर[15] ॥२०९
सरनागत[16] हू सलाह कौं, जो कछू पूछै जाब।
बाकौं हित कैबो[17] ऊचत, है परीग्राय[18] हिसाब ॥२१०

छंद भुजंग प्रीयात

बिचारै कही सिंभु कैलासबासी, अहो सुक्र मेटौ हीयें को ऊदासी।
करै तै तपस्या सरै[19]सर्ब काजा,सुपर्बा-गरू[20] स्याहिं[21] राखै समाजा ॥२११
बतावै तपस्या अनूपं बिधाँनं, परं बछ्छरं लौं करौ धूंम्र पाँनं।
सतं बछ्छरं होयगी पूनँ संख्या, अखौ सिद्ध मंत्रं मिलैगे असंख्या ॥२१२
हमी दहगें औंर कौं काँम हैना[22], इही हाथ दैना जिहो हाथ लहैना।
सुनी सुक्र नैं सिंभु की बात सारी, पीयैं धूंम्र[23] आगं तपस्या प्रचारी ॥२१३

१ मित्र। २ कैलाश। ३ प्रकट की। ४ कथा = बात। ५ अपने। ६ देवता। ७ विश्वास। ८ दैत्य। ९ अंगीकृत। १० शुक्राचार्य। ११ महादेव। १२ बृहस्पति। १३ अधिक। १४ शिष्यों। १५ नीचा-दिखाना, पराजित करना। १६ शरणागत। १७ कहना। १८ परम्परा। १९ पूर्ण हो। २० बृहस्पति। २१ सहायता। २२ नहीं है। २३ धुंवा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुपर्बं[1] सुनी सुक्र की बात सोई, हीयै द्वेष बाढचौ महाँ क्रुद्ध[2] होई।
धरै अस्त्र-सस्त्रं सबै ऊठ धाये, अदेवं[3] छली जाँनकै रूठ[4] आये ॥२१४
अदेवं जबै कथ्थ ऐसी ऊचारी हथं[5] कीजीयै ना तपस्या हमारी।
हनौ देख कैसे हमै सस्त्र-हीनं, प्रपांटी[6] कहूँ नीत लेखौ प्रबीनं ॥२१५
जथा बोल ऊठे सुपर्बं जहाँ ही, कथा सुक्र[7] कैलास साँची कहाँ ही।
सुनी पूर्वदेवं[8] जहाँ बात सारी, चले भाजकै ब्याज[9] छंड्यौ बिचारी ॥२१६
सुपर्बं लगे पीठकौं दौर सारै, मिलै आसुरं जाहि कौं चाहि मारै।
चले सुक्र की मात की सर्न[10] चाही, सुरं-आसुरं बैर बाप्यौ[11] सबाँहीं ॥२१७
कही सुक्र की माय सौं स्याहि[12]कीजै छतै[13]रावरे आसुरं बंस छीजै[14]।
धरै सस्त्र-अस्त्रं सबै देव धावै, दलै दाँनवी जात कौं बैर दावै[15] ॥२१८
सुनी सुक्र की मातनै बात सोऊ, कह्यौ दाँनवी जात त्रासौ[16] न कोऊ।
भली-भाँत कै दीन बिस्रंभ[17] भारी, सबै वेदना छेद डारी सुरारी[18] ॥२१९
निपाई जबै सुक्र की मात निद्रा, सुपर्बं मिटे चेत आदं सुरंद्रा[19]।
गही बिस्नु की चर्न[20] की सर्न ज्ञाता, महाँनोद बिक्तं करी सुक्र मात ॥२२०
सुनी बिस्नु नै जिस्नु की बात सारी, महा मंत्र कौ जत्न कीनौ मुरारी[21]।
हितू जाँन कै सर्न आये हमारै, सुपर्बा करौ देह परबेस[22] सारै ॥२२१
सुपर्बं भली-भाँत बिस्नु सरीरं, धरी पीर मेटै सुनासीर धीरं।
जहाँ सुक्र की मात ने बात जाँनी, परी दौरकै भक्षनै चक्रपाँनी[23] ॥२२२
लखी आवती सुक्र की मात की लेखा, बढ्यौ सोक बिस्नु पुकारे बिसेखा।
हरी कष्ट में स्याहि[24] कीजै हमारी, मुरारी[25] मुरारी मुरारी मुरारी ॥२२३
कीयौ चक्र कौं याद लै मुज्जकेसी, कट्यौ ताहि सौं सीस दुष्टा कलेसी।
भृगूनार कौं मारकै मेट भीती[26], प्रकासो सबै देव बिस्नु प्रतीती ॥२२४
भृगू बात ऐसी भाँमनी[27] की, हीयं क्रुद्ध ह्वै ओर चाले हरी की।
द्रगं देखतै ही मुनी श्राप दीनो, लगी ब्रह्म-हथ्या[28] महाँ पाप लीनो ॥२२५

---

१ देवता। २ क्रोधित। ३ दैत्य। ४ रुष्ट। ५ मारो। ६ परंपरा। ७ शुक्राचार्य। ८ दैत्य। ९ कपट। १० शरण। ११ व्यापगया। १२ सहायता। १३ जीवित-रहते। १४ नष्ट हो रहा है। १५ वैर-भाव। १६ भयभीत न हो। १७ विश्वास। १८ दैत्य। १९ इन्द्र। २० चरण। २१ विष्णु। २२ प्रवेश। २३ विष्णु। २४ सहायता। २५ विष्णु। २६ भय। २७ स्त्री, भार्या। २८ ब्रह्महत्या।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तज्यौ सातुकी[1] धर्म मारी त्रीया कौं, हरी ज्ञान कैसे न आयौ हीया कौं।
बसू[2] जन्म लेहौ सही बार-बारं, सदां गर्भ कौ दुःख पैहौ संसार ॥२२६
हरी कौं भृगू श्राप दीनौ जेंहो तै, कमो धर्म की ह्वै जमी पै तहो तैं।
लखै तै सदा विस्नु औतार[3] लेवै, भली-रीत जांनौ पुनि श्राप मेवं ॥२२७
भृगू श्राप दंकै चले आप भानं[4], मरी देख स्त्री सोक बाढ्यो महांनं।
जिते पुंन्य[5] के काज कीने जहां हीं, त्रीया[6] हेत संकल्प दीने तहां ही ॥२२८
मुनी भारजा जीव ऊठी मिलाई, प्रमीला[7] मनौ नैन छूटी पलाई[8]।
भृगू कौं इहो कांम कै देख भारी, अंदेसौ[9] परचौ आयकै आसुरारी[10] ॥२२९
पिता सुक्र की मात क्रामात[11]पेखी, द्रुतं[12] आय है ताहि कौ पुत्र द्वेषी।
कहा हाल गिर्बांन[13] जाती करैंगे, इहै दुःख सौं कोन तै ऊद्धरंगे ॥२३०
सुनासीर[14] ऐसी सुनी बात साची, जयंती-सुता[15] इंद्र की इंद्र जाची।
अहो अंगजा सुर्ग मेटौ असाता, गहौ सुक्र[16] की सेव कौं जाय ज्ञाता ॥२३१
जबै सुक्र की आगन्या लै जयंती, चलो सुक्र कै पास ह्वैकै नचिंती[17]।
मुनी जाय देखी तपस्यां महांनं, पीयै नासका[18] आंननं[19] धुम्रपानं ॥२३२
करं पत्र[20] लीनौ हरी तत्र केली, करै सुक्र कौं पौंन[21] ऊभी अकेली।
महां मिष्ट लावै फलं कंद-मूलं, त्रनातल्प[22] राचै इला[23] तुल्य तूलं[24] ॥२३३
मुनी आश्रमं स्वच्छ[25] रखै मही कौं, जिही रीत सौं सुःख ह्वै देख जी कौं।
करै भावना-भाव सौं कांमना कौं इकै सेव रूपी लीयै आमना कौं ॥२३४
सतं[26] वर्ष बीते जबै सुक्र सारे, पती पार्वती अष्टमूर्ती[27] पधारे।
द्रढं देखकै सुक्र बरदांन दीनौ, पदार्थं जिते-जक्त[28] जांनौ प्रबानौ ॥२३५
रहैंगे बसीभूत[29] तेरी रजा[30] में, परंपुज्ज ह्वै ईस हू की प्रजा में।
दये सुक्र बाचा गये सिभु दांनी, जयंती कंहू सुक्र पूछी जबांनी ॥२३६
कहा चाहती हो कहो तोहि कांमं, भली-भांत सेवा करी मोहि भांमं।
जबै चित्त बृतंत भख्यौ जयंती सुनासीर को हेत जांमैं सिद्धंतो ॥२३७
सुनं सुक्र बोले जयंती सभागी, सही कांम की कांमना सानुरागी।
कछू काल तोसौं बिहारं करंगे, हीयै कांम-की-कांमना[31] कौं हरंगे ॥२३८

---

१ सात्विक २ पृथ्वी। ३ अवतार। ४ भवन, घर। ५ पुण्य। ६ स्त्री, भार्या। ७ निद्रा। ८ भागकर। ९ शंका। १० देवताओं ११ करामात, चमत्कार। १२ शीघ्र। १३ देवता। १४ इन्द्र। १५ पुत्री। १६ शुक्राचार्य। १७ निश्चित। १८ नाक। १९ मुख। २० पत्ता। २१ पवन, हवा। २२ सेज। २३ पृथ्वी। २४ रुई। २५ स्वच्छ। २६ सौ। २७ महादेव। २८ जगत। २९ वशीभूत। ३० आज्ञा। ३१ कामवासना।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चले सग लैके जयंती छलाये[1], लखै ठौर येकंत[2] आगार लाये।
जयंती बिहारं रच्यौ सुक्र जाई, रूचो लायकै कांम-क्रीड़ा रचाई ॥२३९
लगी सुक्र की ठोक[3] पाताल–लोका, अभै[4] सिभु बरदांन दीनौ अदोखा।
ऊमाहे सबै सुक्र के द्वार आये. परी ठोक नांही कहूं दर्स[5] पाये ॥२४०
लगे सोचनै सबं पाताल–लोका, धरयौ चित्त की चाहि में आय धोखा।
जबं सक्र नै सुक्र[6] की बात जांनी, गरू[7] कौं कह्यौ काज-कीजं सुज्ञांनी ॥२४१
गरू सुक्र को रूप कीनौ सुज्ञाता, दिती-पुत्र[8] कौं जाय ह्वं दर्स[9] दाता।
सबै आयकै पाय लागे सुरारी, करी बर्नना[10] चाहिकै स्याहिकारी[11] ॥२४२
गरू सिख्ख[12]सथं कही कथ्थ ग्यांनी.नबीनी लई ईस[13]बिद्या-निधांनी।
करैंगे सुखी ताहि सौं सिद्ध काजा, सबै बोध दैकै सुरारी-समाजा ॥२४३
गरू को सुनी सिख्ख कै साथ गाढी, चह्यौ क्षेम नेमं रजा[14] सोस चाढी।
परंपुज[15] मांन्यौ गरू को प्रभावं,भृगू-सिस्य[16]जांन्यौ गरू-सुक्र[17]भाव ॥२४४

दोहा

श्रवन कथा जबही सुनी, गरू-इंद्र की गाथ।
जनमेजय पूछी जबही, बिहस ब्यास सौं बात ॥२४५
साख बेद स्त्रुति सुमृती[18], पढे जु सकल पुरांन[19]।
कपट बेख[20] तिह गरू कीयौ, ऐसे भये अग्यान[21] ॥२४६
अमर-गरू सुत अंगरा, पूरन कला प्रवीन।
कीनौ जिह ऐसौ कपट, निज तत कहहु नवीन ॥२४७
बांम देव बासष्ट वर, मुनी गरू बिसवामित्र[22]।
धर्म बिसय[23]में बचन ध्रुव[24], मानहिगे किह मंत्र ॥२४८
जगत पिता बिध[25] जांनीयें, अग्न इंदु[26] अरू इंद्र।
परदारा[27] रति[28]जिनहु पुन चाहि करै छल-छंद्र[29] ॥२४९
हंसग और हर[30] हरी, धरी जथा ऊर ध्यांन।
ब्यास कथा बहु बिसतरी, परी न धरम पिछांन[32] ॥२५०

१ ठगेजाकर। २ एकान्त। ३ पता। ४ निर्भय। ५ दर्शन। ६ शुक्राचार्य। ७ बृहस्पति। ८ दैत्यों। ९ दर्शन। १० स्तुति। ११ सहायक। १२ शिष्य। १३ शिव। १४ आज्ञा। १५ परमपूज्य। १६ दैत्यगण। १७ गुरु शुक्राचार्य। १८ स्मृति। १९ पुराण। २० वेश। २१ मूर्ख, अज्ञानी। २२ विश्वामित्र। २३ विषय। २४ अटल। २५ ब्रह्मा। २६ चंद्रमा। २७ दूसरे की स्त्री। २८ प्रेम। २९ कपट-छल। ३० शिव। ३१ विष्णु। ३२ पहचान।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ब्यास नृपत इह सत बचन, सरल कही समुझाय।
देह धरैं देखहु द्रगन[1], जानहु रागी जाहि ॥२५१
पुन ये सकल प्रवीन पन, पंडत परम-पुनीत।
ऊधरन[2] देत है ऐब[3] कौं, जग में पाव न जीत ॥२५२
कथा सुरगरू कहत हू, इक सुनीयै इह और।
त्रीया हरन कर ताहि सौं, चंद लेगयौ चोर ॥२५३
लघु भ्राता भ्रा नर्तकी, लई त्रीया ललचाय।
गृहन करी ताकौं गरू, इह कीनौ अंन्याय ॥२५४
जनमे जेते जगत मैं, मरहै सोऊ मुरझाय[4]।
वय[5] दीरघ[6] कोऊ अल्प[7] वय, लखहु भेद चितलाय ॥२५५
सबही रागी समुझीयै, नहो बिरागी नेम।
द्वेखी[8] सबहो दुखन कैं, पुन सुख चाहत पेम ॥२५६
ऊर धारहु पद ईस्वरी, जग में जाकी जोत[9]।
ताको इच्छा[10] तें तिही, इह जग कीयौ ऊद्योत[11] ॥२५७

छंद मौतीदांम

सुने जनमेजय बायक[12] स्रांन,[13]गह्यौ ऊर सौंत तजी मन ग्लांन।
वने गरू[14] चित्र सिखंडज बेस, दयौ कहा दंतन[15] कौं ऊपदेस ॥२५८
जबैं सुन ब्यास दीयौ नृप जाब[16], सबैं बस दांनव कीन सताव।
बिते दस वर्ष बिहार बिधांन, जयंतीय सुक्र तोया निझ[17] जांन ॥२५९
कह्यौ हम जावहिगे हित काज, सँभारन कारन देत समाज।
जयंतीय बोल ऊठी कर जोर, भलैं तुम बेर सिधावहु भोर[18] ॥२६०
भवाभव[19] ऊठ चले जुत मोद, बिचारत दंतन बात-बिनोद।
सँपेखीय आयकैं दांनव सथ्थ, बने सुक्र वेख लखे बृसपत्त ॥२६१
बदे[20] जहां ब्याज[21]सरूप बखांन,गहे सब दांनव केवली[22] ग्यांन।
कही जब दंतन सौं कवी[23] कथ्थ, बन्यौ मम रूप इहे बृसपत्त ॥२६२

---

१ आंखों। २ उदाहरण। ३ दोष। ४ जीर्ण होकर। ५ आयु। ६ दीर्घ, बड़ी। ७ थोड़ी। ८ द्वेषी। ९ ज्योति। १० इच्छा। ११ प्रकाशित। १२ वाक्य। १३ कान। १४ गुरू-बृहस्पति। १५ दैत्य। १६ उत्तर। १७ अपनो। १८ प्रभात। १९ शुक्राचार्य। २० कहते-थे। २१ कपट। २२ कैवल्य, मोक्ष। २३ शुक्राचार्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गहो मन ज्ञान लहै गीत गूढ, मनां[1] पिछतावहुगे मति मूढ।
गरू[2] तुम है हम सुक्र गभोर, सदा दिती-पूतन काज सधीर ॥२६३
लखे इक रूप ऊभं[3] चितलाय भये दितीपूत अचंभत[4] भाय।
गरू तब खोलीय गूढ गिराह[5], अमोलीय बोलीअ सौं अवगाह ॥२६४
अरे इह देवन कौं गरू आद, बढावत दैतन सौं नित बाद।
सुनी हम जावन की कयलास[6], इहाँ फिर आवन की अभिलास ॥२६५
लग्यो सोई आवत मोपह लार[7], सिधंत कौ देखन कौ ततसार।
तुमारेई अर्थ लीये हम तंत्र, महाँ केऊ ओसध[8] हू फिर मंत्र ॥२६६
तजौ तुम देवन कौ भय तात, बिचारत ज्ञाँन ऊचारत बात।
सुनी इह दाँनव ज्ञाँन सकोय, हमैं गरू येही जु होय तौं होय ॥२६७
न माँनीय सुक्र की बात निदाँन, सराप[9] कौं दै चले ऊठ सुथाँन[10]।
पराजय देवन सौं तुम पाय, निरादर होवहुगे इह न्याय ॥२६८
जबै पहिचाँनहुगे कवि[11] जीव[12], कहै हम कथ्थ कही दनु क्लीव[13]।
इहै कहु बात न माँनीय अग्ग[14], मघाभव[15] रूठ[16] गये निझ मग्ग ॥२६९
रही थिर चित्रसिखंडज राह, अदेवन[17] ज्ञाँन गह्यौ अवगाह।
लगे स्वय कारज में लवलीन, अनूपंम ज्ञाँन के जाँन अधीन ॥२७०
गये तब देवगुरू कर गाँन[18], प्रकासीय[19] आपन रूप प्रधाँन।
जबै सुरराज[20] मिले गरु जाय, सबै कथ ज्ञाँन कहो समुझाय ॥२७१
बिना भय जाँन कै दाँनव बृंद्र, इतै बल जोर चढ्यौ जहाँ इंद्र।
पहूँचीय देवन लाग प्रपात[21], घनीं दनु जातन सौं बनी घात ॥२७२
जहाँ तहाँ ढूंढत मारत जाय, परे तब दाँनव हार पलाय[22]।
जबै गरु-देवहु कौं लीय जाँन, भगे सोई भार्गव के गये भाँन ॥२७३
कही प्रहलादन आदन कथ्थ, परी पहिचाँन हमैं बृसपत्त।
निरादर आप कीयो लख नैंन, ऊपज्जीय आय कै एहु अचैन[23] ॥२७४
सँपेख कै सुक्र कही कथ सार, लगे तुम धूरत[24] की सठ लार[25]।
जहाँ बृसपत्त तहाँ तुम जाहु, संबोधन कारन लेहु सलाह ॥२७५

---

१ मनमें। २ गुरु। ३ दोनों। ४ आश्चर्य चकित। ५ वाणी। ६ कैलाश। ७ पीछे। ८ औषध। ९ शाप। १० अपने स्थान। ११ शुक्र(बने हुए)। १२ बृहस्पति। १३ कायर। १४ आगे। १५ शुक्राचार्य। १६ रुष्ट होकर। १७ दैत्य। १८ गमन। १९ प्रकट किया। २० इन्द्र। २१ सेना। २२ भागकर। २३ बेचैनी। २४ धूर्त। २४ पीछे।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जबै प्रहलाद कही कर जोर, ग्रहो गरू[1] जानत ग्रोर की ग्रोर।
निहारकै रूप तथा तुम नाँम, गहे पद जाँन गरू गुन-ग्राँम[2] ॥२७६
पिछाँन न पाईय मूल पसाय, इहै हम चूक परचौ कछु ग्राय।
क्षमापन[3] लायकै चाहिकै खेम[4], निभावहु ग्राद मयाभव नेम ॥२७७
त्रकालग[5] जाँनत बीतीय तथ्थ[6], बनायकै ग्रौर कहै कहा बत्त[7]।
बसै थिर होयकै बंस बचाय, पताल की जावहि राहि पलाय[8] ॥२७८
सुने प्रहलाद के सुंक्र सवाल, बिसासकै किन्नेऊ चित्त बहाल[9]।
नहीं घवरावहु दाँनव-नाथ[10], बिचारहु एक कहै हम बात ॥२७९
हुवै सोई जो कछु होवनहार, सुभासुभ नाँहि बिचार कै सार।
मिटाय न सक्किहि[11] बिस्नु महेन[12], इतै पर कोन करै ऊपदेस ॥२८०
भये इह बेर कहू हथभाग[13], लरौ जन देवन सौं हट-लाग[14]।
बसौ ग्रधलौक[15] लहौ बिसराँम[16], समै लख जीतहुगे संगराम[17] ॥२८१
कीयौ पंचदून ग्रहो जुग काज, रसा पर देवन ऊपर राज।
मुनंतर साबरनीक महाँन, इहै सक्र ग्रासन लेवहु ग्राँन ॥२८२
बली बर दीनेऊ बाँवनदेव[18], भली बिध ताहि बिचारहु भेव।
मनू-नवमे[19] महँ बुद्ध महाँन, बली सुख देखहुगे बलवाँन ॥२८३
सबै विध नीत की रीत सलाह, जहाँ प्रहलाद करी कहि जाहि।
गही प्रहलादहु धीरज गात, बली सन येक भई नइ बात ॥२८४
बली निभ्र[20] पालट[21] रूप बिधाँन, चले कहु होयकै चक्रीय[22] बाँन।
मिले कहू सूंन्य[23] के सुथाँन के माँहि, पिछाँनकै[24] इंद्र कही परचाय ॥२८५
कहौ इह रूप कीयौ किह काज, बड़े हुय राचत हौ छल ब्याज[25]।
बली तहाँ बोल बिवेक बिचार, महाँप्रभू जाँनन नाँहि मुरार[26] ॥२८६
भये सोई मच्छ रू कच्छ के भेस, बराह के रूप कहूँक बिसेस।
जहाँ विध[27] पाप लग्यौ कहु जोर, दुरे[28] तुम पंकजनालीय[29], गोर ॥२८७
बढचौ दोऊ ग्रोर तै बात बिनोद, बिचारकै इंद्र गह्यौ हीय बोध।
गये दोऊ ग्रापनै ग्रापनै गृह, ग्रहो परमाँतम[30] की गत येह ॥२८८

---

१ गुरू। २ गुण = निधान। ३ क्षमाभाव। ४ क्षेम। ५ त्रिकालज्ञ। ६ तथ्य। ७ बात।
८ भागकर। ९ स्वस्थ। १० प्रहलाद। ११ सकते। १२ महादेव। १३ भाग्यहीन।
१४ हठ करके। १५ पाताल। १६ विश्राम। १७ संग्राम। १८ वामन भगवान। १९ सर्वर्णिक, मनवंतर। २० बदलकर। २१ ग्रपने। २२ गधा। २३ शून्य = एकान्तघर।
२४ पहिचानकर। २५ कपट। २६ विष्णु। २७ प्रकार। २८ छिपे रहे। २९ कमलनाल
३० परमात्मा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इहाँ प्रहलाद सजै असुराँन[1], कही जिम सुक्र की सत्य कहाँन[2]।
बनै जुध देवन सौं इहबार, हलै तऊ पावहिगे मिल हार ।२८९
बसै अधलोक[3] जहाँ कर बास, हृदै[4] बिसवास[5] कौं पाय हुलास ।
नमूँचीय[6] आदक बोल निहार, रचै नही देवन सौं फिर रार ॥२९०
कहै सब बीरहु आदक क्लीव[7], जबै सुख कोन लहै हम जीव[8] ।
इहै कहि लै प्रहलाद कौं अग्ग[9], ऊठे दनु आयुध धार ऊदग्ग ॥२९१
बकारीय आसुर देवन बृंद, दसूँ दिस मार मचाईय दुंद[10] ।
प्रपातहु[11] दाँनव की भरपूर, सँघारन लग्गीय देवन सूर ॥२९२
कुलाहल सद्द[12] भयौ दहुँ कोद. जहाँ तहाँ दाँनव जुट्टत[13] जोध ।
पललट्टीय दीह ऊछ्छट्टीय पाव. दुघट्टीय घट्टीय लट्टीय दाव ॥२९३
भयौ सत बछ्छर[14] जुद्ध भयाँन, न-पुज्जीय[15] देवन घाव निदाँन ।
हुई, रन देवन की जब हार, पहूँचीय श्री जगतंब[16] पुकार ॥२९४
चढी अरुनानुज[17] आयकै चाल,. निहार कै देवन कीन निहाल ।
संबोधन दै बिसवास सिवाय, चलो फिर दाँनव के दल चाह ।२९५
तहाँ प्रहलाद लख्यौ जगतंब, दहू[18] कर जोर कह्यौ तज दंभ ।
ऊभै[19] हम देव अदेवहु येक, बिचारहु रावरौ[20] भाव बिसेख ॥२९६
जबै जगतंब[21] कह्यौ तज जुद्ध, पताल कौं दाँनव[22] जाहु प्रबुद्ध[23] ।
समौ[24] तुम आवहिगौ ततसार. बिचारकौं पावहुगे तिह बार ॥२९७
इहै कथ बैस्नबी[25] की सुन आद, पताल कौं जाय बस्यौ[26] प्रहलाद ।
सबै दनुजात गये तिह सथ्थ, अभै[27] सब देव भये असमथ्थ[28] ॥२९८

कवित्त

जनमेजय नृप जहाँ, श्रवन प्रहलाद चरित सुन ।
व्यास करी फिर बिनय, अहो कछु कथा कहहु अन[29] ।
मुनी भृगू श्राप मुरार[30], भये अवतार किते भुव[31] ।
सख्या तिनकी सुनन' हृदै अभिलाख[32] अधिक हुव ।

---

१ दैत्यगण । २ कथन, बात । ३ पाताल । ४ हृदय । ५ विश्वास । ६ दैत्य ७ कायर । ८ आत्मा । ९ आगे । १० द्वंद्व । ११ सेना । १२ शब्द १३ जुटते थे । १४ वर्ष १५ पूर्ण नहीं हुई । १६ जगदंबा । १७ गरुड़ । १८ दोनों । १९ दौनों । २० आपका । २१ जगदंबा । २२ दैत्य । २३ बुद्धिमान । २४ समय । २५ वैष्णवी । २६ बस गये । २७ निर्भय । २८ असमर्थ । २९ अन्य । ३० विष्णु भगवान । ३१ भूमि, पृथ्वी । ३२ अभिलाषा ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कर कृपा व्यास लागेऊ कहन, सुनत सभासद श्रवन सब।
बिस्नु के भये अवतार वर, येते सुनोयै नृपत अब ॥२९९

मन्वंतर चाक्षक[1] महाँन, सुत धम भये सुन।
नर नाराँयन[2] नाम, महा तप तेज ऊभय मुन[3]।
सुत अत्री दत बिस्नु[4], मुनंतर[5] बैईवस्वत[6] मह।
इंदु बिरंचन अखल, उगृ[7] दुरबासा आपह।
अनसुया ऊदर सोइ ऊपजे, ब्रह्म देव जाँनहु तँहो।
अवतार सोइ गुनजुक्त ये, कथा पुराँनन मैं कही ॥३००

जुग चौथे मह जाँन, हिरनकस्यप[8] मारन हित।
श्री अवतार नृसंघ[9], महाँ बलवंत क्रूर मत।
बल[10] छलनं कौं बने, जहाँ बाँवन[11] त्रेता जुग।
कस्यप अदती निकाय, दनुज भय-दाय लखेऊ द्रग।
उन ईस[12] फेर त्रेता अखल, क्षत्रीय कुल कौं करन खय[13]।
भये परसराँम अवतार भुव, जांनदग्न गृहजुद्ध जय ॥३०१

रघुकुल दसरथ राज, सुवन[14] तिह परम सयाँनौ।
राँमचंद्र महाराज, जिहो पावन जस जाँनौ।
अष्टाबिसत[15] इही. जिही जुग द्वापुर जाँनौ।
नर नाराँयन क्रस्न, बिजय अवतार बखाँनौ।
ह्वै धरम हाँन जबही हरी, आय आय जग अवतरैं।
इछ्छा प्रभाव सोइ आदनं, कर बिहार लीला करै ॥३०२

दोहा

पूछो कथा सु व्यास प्रत, जनमेजय राजाँन।
नर नारायन तेज निध. करन सदाँ कल्याँन[16] ॥३०३
इंद्र पटाई[17] अफछरा[18], जुगल मूर्ति ढिग जास।
काँमातुर लख काँमनी, अत चित भये ऊदास ॥३०४
अहंकार ऊतपत हुव, नाराँयन लख नैन।
श्राप निवारन कीन सुन, बिमल कहे नर बैन ॥३०५

---

१ चाक्षुष। २ नारायण। ३ मुनि। ४ दत्तात्रेय। ५ मन्वंतर। ६ वैवस्वत। ७ रुद्र। ८ हिरण्य कशिपु। ९ नृसिंह। १० बलि। ११ वामन। १२ ईश। १३ क्षय। १४ पुत्र। १५ अट्ठाईसवें। १६ कल्याण। १७ भेजी। १८ अप्सरा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कीयौक तिनसौं द्वारक्रम[1], बेमुख[2] करी क[3] बाँम ।
बासव[4] की बारंगना[5], कीयौ कहा तिन काँम ॥३०६
बिदा करी बारंगना[6], नारायन तज नेहु ।
तजकै बिसय[7] जु करत तप, अब हमरौ पन येहु ॥३०७
अठ-बिसत[8] द्वापुर[9] अबै. बिधवत समय बसाय ।
वँह जुग में हम अवतरहि[10], जदुबंसिन[11] में जाय ॥३०८
जब तुमही लैहौ जनम, हम त्रीय तबही होय ।
सिद्ध मनोरथ करहु सब, मिथ्या[12] पन[13] नहि मोहि ॥३०९
स्वर्गलोक कौं अप्सरा, गई पुरंदर गृह ।
सकल कह्यौ बृतांत सुन, अचरच[14] भयौ अछेह ॥३१०
नाराँयन अरू धन्य नर, जिह तप साधन जोग[15] ।
ऊखसी आदक अच्छरा, प्रगटी ताहि प्रीयोग ॥३११
वँह नारायन नर वँही, अरजुन[16] हरि[17] अवतार ।
भृगू श्राप सौं ऊभय भये, नृप समुझहु निरधार ॥३१२

छंद त्रोटक

अरजी[18] नृप हू जुत[19] आतुरता, चित कीन बिचारकै चातुरता ।
क्रसना अवतार चरित्र कहौ, अघ-हारक[20] तारक[21] मंत्र अहो ॥३१३
मिट जाय सदेह सबै मन कौं, तिन सौं सुख लाभ मिलै तन कौं ।
बसुदेव तै देवकी गर्भ बसे, तिनकौं बहु रीत सौं कंस त्रसे[22] ॥३१४
कहौ क्रस्न प्रभाव गयौ किनकौं, तिह भ्रात मरे जितकौं तितकौं ।
गवेन मथुरा तज गोकुल कौं, कीय पावन गोपन[23] के कुल कौं ॥३१५
कंस मातुल[24] मारकै कीन कहा, मधुपन्नपुरी[25] सुख रूप महा ।
गृह छोरकै पच्छम[26] लीन गली, थित कोन इकंत[27] कुसस्थ थली[28] ॥३१६
अरू विप्रन श्राप लगाय इतौ, कुल आपनौ गारत[29] कीन कितौ ।
हट लागकै भूम कौ भार हर्यौ, कुल छत्रिन जात संघार कर्यौ ॥३१७

१ विवाह । २ विमुख । ३ क्या । ४ इन्द्र । ५ वेश्या = अप्सरा । ६ मू० प्र० बराँगना । ७ विषय । ८ अट्ठाइसवें । ९ द्वापर । १० अवतार लेंगे । ११ यदुवंश । १२ झूठ । १३ प्रण । १४ आश्चर्य । १५ योग । १६ अर्जुन । १७ कृष्ण । १८ प्रार्थना । १९ युक्त । २० पापनाशक । २१ उद्धार करने वाला । २२ दुःख दिया । २३ ग्वालियों । २४ मामा । २५ मथुरा । २६ पश्चिम । २७ एकांत । २८ द्वारका । २९ नष्ट ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परलोक गये बयकुंठ-पती,[1] केऊ जात पुलिंद[2] मिले कुमती।
हरके अवरोध[3] कौं बित्त हरचौ, कहौ ताही को नास हू क्यांन[4] करचौ ॥३१८

द्रुपदा अवतार रमां[5] दुख सौं, सपनं[6] नहि भेट भई सुख सौं।
सुभद्रा बहिनी-लघु[7] के सुत[8] कौं, जुध में न बचाय सके जिन कौं ॥३१९

इन आद सँदेह घने ऊरकं, तिह व्यास मिटावहु आतुर कं।
जब व्यास कही जनमेजय कौं, इह चित्त बिचारहु आसय[9] कौं ॥३२०

जब दुष्ट नृपाल भये जगती, महा पाप रता अरू मंदमती।
धर धेनु[10] कौ रूप गई धरनी[11], बिच लोक तिबिष्ट[12] पवै बरनी ॥३२१

तब इंद्र कही कहा कष्ट तुमं, भहरावत पाप के भार भूमं[13]।
धुर बोल ऊठी तिह बेर धरा, भरपूरत पाप नरेस भरा ॥३२२

सिसपाल ज्युही मगधेस सही, दुख कासीयराज कै फेर उही।
रुकमी रुच फेर गृही जु रसा, नरकास्वर साल्व कुहू की-निसा[14] ॥३२३

कहुँ केसीय[15] धेनुक वच्छ[16] किते, रचना क्रम निदंत पाप रते।
स्वय कर्मं न जांनत धर्म सहो, निस द्योस[17] विरोध अघात नहो ॥३२४

मगरूर[18] में सूर मदंध महा, पुतला बस ओगुन के सुपहा[19]।
नृप दुष्टन भार नहो[20] निवहै, रजनी दिन में अकुलात रहै ॥३२५

बिच वार रसातल डूब वही, कीय रूप वराह ऊधारक[21] ही।
अब तौ हम निदंत है ऊन कौं, कर और पुकार कहै किन कौं ॥३२६

जब तैं न्हो लावत तौ जल मं, तब तैं गलजात रसातल मं।
नृप दुष्टन कौं दुख देखत ना, बढकं बहु भार बिसेकत ना ॥३२७

कलि[22] अबतौ कालहु आवत है, भय सौं मम बुद्धि भूमावत है।
सुरराज[23] सहाय करौ सुनकं, परभाव[24] गहौ तुमरे पन कं ॥३२८

सुन इंद्र कह्यौ अवनी सुनीयं, भल भेद विरंचन[25] सौं भनीयं[26]।
संग लीन चले जब बृद्धश्रवा, अवनी हित चाह बने अगुवा[27] ॥३२९

---

१ कृष्ण। २ भील। ३ जनाना = स्त्रियाँ। ४ क्यों। ५ लक्ष्मी। ६ स्वप्न में। ७ छोटी-बहिन। ८ अभिमन्यु। ९ आशय। १० गाय। ११ पृथ्वी। १२ काशिराज। १३ राजा-नरक। १४ अमावस्या की रात्रि। १५ केशी। १६ वत्सक। १७ दिन। १८ घमंड। १९ सरदार। २० मू० प्र० नहीं। २१ उद्धार करने वाले। २२ कलियुग। २३ इन्द्र। २४ प्रभाव। २५ ब्रह्मा। २६ कहो। २७ अग्रणी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुरजेष्ट[1] के लोक गये सबहो, सुरराज[2] कह्यौ इह भेद सही।
अचला[3] बिचला[4] कीय नाथ अबै, सिसपाल हु कंस के आद सबै ॥३३०
महि कौ कहु जाविध[5] भार मिटै, दुखदायक भूप घटै रु दटै।
कंमलासन हू कहि कारन कैं, असमर्थ भार ऊतारन कैं ॥३३१
मिलकैं चल बिस्नु[6] के लोक मही, बिपुला[7] बरतंत कहै सबही।
गवने सुर बिस्नु के लोक गये, प्रभू पूरन ब्रह्म[8] के दर्स[9] पये ॥३३२
नुत[10] कीनीय श्रीजगँनाथ हु की, रचना धरनी बरनी रुख की।
सुरजेष्ट कही हरो आँन[11] सुनी, नृप भूँम कौ भार दयौ निगुनी ॥३३३
अब द्वापुर[12] अंत सु आय गयौ- कलिकाल हू चाहत फैल कीयौ।
अवतार चहै हीर कौ अचला कम भार कौ कीजीयै पूर्नकला[13] ॥३३४
सुनकै बिधसौं हरी बात सबै, तिन उत्तर येहु दीयौ सु तबै।
तुम हू हम हू सिव आद तितै, जम धीद[14]परंजन जिस्नु[15] ..त ॥३३५
परब्रह्म सनातन औ प्रक्रती, सब ताहि अधीन गनौं सुक्रती।
सुरराज बिरंचन बात सुनी, प्रक्रती परभाव[16] गह्यौ निपुनी ॥३३६
गुन ताहीके गावन लोग गिरा[17], पुन बिस्नु प्रसंसाय कीन परा[18]।
भगवंतीय देख प्रसंन[19] भई, करुना सुन देवन बात कही ॥३३७
मगधाधिप आदक मंदमती, जिह भार दयौ कतसै[20] जगती।
तिह मारन कारन देव तितै, अवतार लहौ तुम जाय इतै ॥३३८
सगती[21] हम जुक्त चलौ सबही, मिल भार ऊतारहि जाय मही।
अदती जुत सस्यप जाय वहाँ; जदुवंस लहै अवतार जहाँ ॥३३६
बसुदेव रु देवकी होय बसै, दिती श्राप निवारन त्याँ दरसै।
हुय है भृगु श्राप सौं पुत्र हरो, पुन होवहु मै जसुदा पुतरी[22] ॥३४०
करहू हित देवन काज हू सौं, इल[23] भार ऊतारव आजहुसौं।
गृह गुप्त निकारहु गोबिंद कौं, बसुदेव त्रीयाहु तजै बँध[24] कौं ॥३४१
गृभ देवकी सेस[25] हू काँ गहिकै, बिच रोहनी गर्भ धरू बहिकै।
कुल गोपन गोकुल दिव्य कला, ऊर आनद गोपीय लै अबला ॥३४२

१ ब्रह्मा। २ इन्द्र। ३ पृथ्वी। ४ विचलित। ५ जिस प्रकार। ६ विष्णु भगवान। ७ विस्तृत। ८ पूर्ण। ९ दर्शन। १० स्तुति। ११ कान। १२ द्वापर। १३ पूर्ण। १४ कुबेर। १५ इन्द्र। १६ प्रभाव। १७ वाणी। १८ परा-प्रकृति = जगदंबा। १९ प्रसन्न २० अतिशय। २१ शक्ति। २२ पुत्री। २३ पृथ्वी। २४ बंधन। २५ शेष नाग।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बलदेव रु क्रस्न[1] कौ नाम बढ़ै, महिमा जगती बिच जाहि मढ़ै।
नृप दुष्टन भार निवारहिगे, अवनी दुख ताहि ऊधारहियगे[2] ॥३४३
अरू इंद्र किरीटीय[3] होय इहै, दल दुष्टन कौं सर[4] मार दहै।
जमराज[5] जुजष्टर[6] ह्वै जनमै, किरमीर-निसूदन[7] बायु[8] क्रमै ॥३४४
नकुलौ सहदेव बड़े निपुना[9], सुरबैद[10] के अंसहु तै सगुना।
बसु अंस सौं भीसम[11] देव बनै, सुत सांतन गंग अभंग सनै ॥३४५
महिमाय[12] कही जब बात मुखी[13], सब देव चले सुन होय सुखी।
गवनी अवनी[14] निज बिब[15] गह्यौ, लवलीन भई बिसवास[16] लह्यौ ॥४४६
अवतौ मम भार ऊतारन कौं, कहि दीन सबै सुरकारन कौं।
कुरुक्षेत्र मैं कैरव[17] बंस कटै, जदुबंस प्रभास[18] में जुद्ध जुटै ॥३४७
ऊर कौ सब सोक गयौ अचला, कीय सक्तिहु धारन आप कला।
गृिह[19] कौं सब ही गिरबाँन[20] गये, सुन सासन[21] सीस चढाय लये ॥२४८
भगवंतीय[22] अंतर ध्याँन भई, सब देवन कारज कीन सही।
द्रढ ह्वै बिसवास हु देवन कौं, उपज्यौ अनकाज[23] अदेवन[24] कौं ॥३४६

दोहा

भार ऊतारन भूम कौ, कथा सुनहु दे कांन।
क्रस्नचंद्र[25] अवतार की, माया कारन[26] मांन ॥३५०
अमर नांम निरजर[27] अवर, कहत जु देव कहांन।
जुरा[28] पायकै मरत जोई, माया क्रत अनुमान ॥३५१
करता बेदहु जगकमन[29], होनहार बस होय।
भये बिकल लख भारथी[30], माया संजुत मोहि ॥३५२
सती जरी मख[31] दक्ष मह, करे बिथत[32] कंदर्प[33]।
दिगवासा जल में दुरे, दूह छांड़ मन दर्प ॥३५३
अघ मेटत जग आप सौं, पावन क्रस्न प्रसंग।
कारौ जल जमना कीयौ, अजौं[34] न पलट्यौ[35] अंग ॥३५४

१ कृष्ण। २ उद्धार करेंगे। ३ अर्जुन। ४ वाण। ५ यमराज। ६ युधिष्ठिर। ७ भीम। ८ पवन। ९ निपुण। १० अश्विनी कुमार। ११ भीष्म। १२ महामाया। १३ मुख से। १४ पृथ्वी। १५ स्वरूप। १६ विश्वास। १७ कौरव। १८ युद्ध क्षेत्र। १९ गृह = घर। २० देवता। २१ शासन। २२ भगवती, जगदंबा। २३ अहित। २४ दुष्ट, दानवगण। २५ कृष्णचन्द्र। २६ कारण। २७ वृद्धावस्था रहित। २८ वृद्धावस्था। २९ ब्रह्मा। ३० सरस्वती। ३१ यज्ञ। ३२ व्यथित। ३३ महादेव। ३४ आज तक भी। ३५ बदला।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भृगु वन में आये भ्रमत, फिरत रहे चहु फेर।
विकल भये सोइ कांम वस, हरहू त्रीया रिख[1] हेर ॥३५५
भृगु रिख दोनौ श्राप भव, तवही सेय[2] गये तुट।
जथा पुरांनन कहीय ज्यू इह इक कथा अनूठ ॥३५६
प्रेरक माया है परा, जाहि ऊपाये जीव।
सुर नर मानव असुर सब, भृष्ट[3] हु आद सदीव[4] ॥३५७
प्रथम वनावत पुत्तरी[5], निरख नचावत नाथ।
सैलूखी[6] माया सुनहु, रही जगत सोइ राच ॥३५८

छंद ऊधोर

अवतार क्रस्न[7] अनूप, भल चिरत[8] सुनीये भूप।
तट सूर्यजा[9] नद तांम. तभ्रदीक[10] मधुवन नांम ॥३५९
मधु दैत[11] सुत वृज मांहि, तिह लवन नांम तथांहि।
द्वज[12] जात कौं दुख दात, रत[13] पाप अत दिन रात ॥३६०
दिग बिजय पर्म[14] दयाल, सत्रुघ्न दुष्टन साल।
वंह ठौर[15] निकरे आय, तहां दइत मारचौ ताहि ॥३६१
दनु मार मधुरा द्रंग[16], आवाद कीन अभंग।
सुत राज दै सरसाय, स्वस्थांन गयेऊ सिधाय ॥३६२
रघुवंसीयन[17] कौं राज, केऊ दिवस रहेऊ सकाज।
भये नष्ट सोऊ किह भाय[18], जदुवंसीयन[19] लीय जाय ॥३६३
कुल जास में तिह काल, भये सूरसेन भूआल।
अवतार कस्यप येव, द्रढ पुत्र भये वसुदेव ॥३६४
उग्रसेन नृप के ओर, जिह कंस भये सुत जोर।
कंन्या सु देवकी केर, हुव अदति[20] जिह घर घेर ॥३६५
निम्र देवकी तिह नाम, सोइ मात हूव घनस्यांम।
वसुदेद संग विवाह, कीय देवकी कंन्याह ॥३६६

---

१ ऋषि। २ लिंग। ३ सृष्टि। ४ सदैव। ५ पुतली। ६ नटिनी। ७ कृष्ण। ८ चरित्र। ९ यमुना। १० निकट, पास। ११ दैत्य। १२ द्विज, ब्राह्मण। १३ लीन। १४ परम। १५ स्थान। १६ मथुरा नगर। १७ रघुवंशी। १८ यदुवंशी। १९ भाव, कारण। २० अदिति।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परनाय[1] हरन-पसाय[2] दीय, सीख ताहि दिवाय।
पत-बहन[3] बहनी[4] प्यार, संग कंस चलेऊ सिधार ॥३६७
रथ बैठ लीनौ राह अस[5] हाँक सहत[6] ऊछाह[7]।
हित अहित होवनहार, नभ गिरा भईय निहार ॥३६८
मिल कंस तूं मतिमंद, संग बहन जात समंध।
इह गर्भ अष्टम अंस, कर व्यथत[8] मारहि कंस ॥३६९
इह सुनत भयेऊ ऊदास, वढ वयर[9] तज विसवास।
संकलप बिकलप साथ, अत बढ्यौ जहाँ उतपात ॥३७०
देवकी-मारन दुष्ट, कीय मतौ[10] कंस कलिष्ट[11]।
वसुदेव दक्ष[12] विचार, तिंह पकर[13] लीय तरवार ॥३७१
कर तुमहि बहनी[14] कांन,[15] मम वचन लेवहु मांन।
इह प्रसव[16] ऊपजहि आय, तुम लाय सौंपहुँ ताहि ॥३७२
वसुदेव की सुन बात, विसवास[17] हृदय वसात।
मांनी सु कंस मलिष्ट, दहूँ[18] छाँड़ चलेऊ दविष्ट[19] ॥३७३
वसुदेवहू तिंह वार गवने सु गयेऊ अगार।
बिहु संग वसत बसेर,[20] केऊ दिवस बीतत केर ॥३७४
सुख दंपती रति साद, आपंन्नसत्वा[21] आद।
निभ्र देवकी तिह नांम, बसुदेव जांनी बांम ॥३७५
सुख अवध जात सिधाय, ऊपज्यौ सु अगज[22] आय।
मुखँ देख देवकी मात, ऊर हेत सां न अघात[23] ॥३७६
वसुदेव कौं तिहवार, अकुलाय बोल अगार[24]।
तुम पुत्र देखहु ताहि दुत[25] कहा मुख वरसाय ॥३७७
सुत देख कै वसुदेव, भल कंस जानत भेव[26]।
सुत देहुं आवहु सूंप,[27] क्यूं मोह डारत कूंप[28] ॥३७८

---

१ विवाह करके। २ दहेज। ३ बहिन के पति = वसुदेव। ४ भगिनी, देवकी। ५ घोड़ा। ६ सहित। ७ उत्साह। ८ व्यथित। ९ वैर। १० विचार। ११ क्रूर। १२ चतुर। १३ पकड़। १४ बहिन, देवकी। १५ सम्मान। १६ गर्भ। १७ विश्वास। १८ दोनों। १९ दूर। २० घर। २१ गर्भवती। २२ पुत्र। २३ तृप्त। २४ घर। २५ द्युति। २६ भेद, भाव। २७ सौंप। २८ कुंआ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जो लिखी विध कै जोग, सुख-दुःख हरखहु[1] सोग[2]।
वसुदेव की सुन बात, वस दुःख कै बिललात ॥३७६
दीय सौंप सुत वसुदेव, चाले सु गृह कर चेव।
गये कंस कै सोइ ग्रेह, ग्रह पुत्र लेवहु येह ॥३८०
वसुदेव कंस बिलोक, सुध साच-वाच[3] स-सोक।
सुत तोहि अष्टम सोय, हम ताहि सौं भय होय ॥३८१
इह कंस सुनीय ऊदंत,[4] चालै सु लै तज चित।
सुत देवकी दीय सूंप, अत बढ़ीय हरख अनूप ॥३८२
इत कालकारक[5] आय, सिद्धांत कंस सुनाय।
जब आठ मिलहै जोग, अरी[6] वनहि कर ऊद्योग[7] ॥३८३
सब होए जाय समाँन, आगै न पाछै आँन।
मम कही माँन मगाय तुम सत्रु मारहु ताहि[8] ॥३८४
सुन कालकारक[9] सीख, तिह कंस समुझी तीख[10]।
मगवाय तिह सिसु[11] मार, निर्हचित[12] भयेऊ निहार ॥३८५
नृप व्यास पूछीय न्याय, इह पिसुन कीय अंन्याय।
मुनिराज होय महाँन, इहाँ वनै क्याँ अज्ञाँन[13] ॥३८६
सुन व्यास बोलेऊ सत्य, पुन नृपत हू के प्रत्य[14]।
पुन कलह तै मुनि पेम[15], नारद ही जाँनौ नेम[16] ॥३८७
हीय देव कारज हेत, सो करत प्रन[17] ही समेत।
सो पूर्व जन्म ही श्राप, पुन मरे अपने पाप ॥३८८
सुत मरीची के सोय, जिह बालपन वय[18] जोय॥
वस काँम होय विरंच,[19] ब्राँह्यो सु-कन्या वंच[20]।
बढ चले देख विचार, येह सै छहहु अपार ॥३८९
सुन दीयौ ब्रँह्मा श्राप, तन भोगहौ तुम पाप।
दनु-जाय[21] पावहु देह, इह हास[22] कौ फल लेहु ॥३९०

---

१ हर्ष। २ शोक। ३ सत्य, वचन। ४ वार्ता, बात। ५ नारद। ६ बैरी। ७ उपाय। ८ उसको। ९ नारद। १० तीखे, तीक्ष्ण। ११ शिशु। १२ निश्चित। १३ अज्ञानी। १४ प्रति। १५ प्रेम। १६ नियम। १७ प्रण। १८ अवस्था। १९ ब्रह्मा। २० इच्छा की। २१ दैत्य। २२ हँसी करने का।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सो कालनेम सुतंन[1], इक जन्म भये ऊतपंन[2]।
भये हिरन कस्यप भौंन, सुत ताहि के सुग्यौंन ॥३६१
वॅह जन्म दूसर आय, तप करेऊ विध हित ताह।
विध दीन तिह वरदांन, सब रीत सौं सुखदांन ॥३६२
द्वै जन्म भुगतहु दोख, मिलहौ तुमहु फिर मोख[3]।
सुन ब्रह्मबांनी सोय, सरसात हरख सकोय ॥३६३
गवने सु पितु के ग्रेह, दुख मेट आपत देह।
सुन हिरन कश्यप श्रांन,[4] वस क्रोध भये बलवांन ॥३६४
मम पुत्र होय मृजाद[5], तुम मेट कीय इत्पाद[6]।
विन हुकम[7] तप कीय वेह, द्रढ दमन कीनी देह ॥३६५
पाताल छहहु पलाय,[8] जहाँ वसहु केऊ दिन जाय।
पितु प्रथम जन्म प्रधांन, निज कालनेमी नांम ॥३६६
जोई कंस ह्वै है जाय, पुन वॅही अवसर पाय।
सुत देवकी इक साथ, हृथ[9] होहु ताके हाथ ॥३६७
जिहो पाय ऊपज्यौ जोग, सोऊ मरे श्राप[10] संजोग।
वरदांन विध[11] ही बिचत्र, नभ जाय भयेऊ नछत्र[12] ॥३६८
सोइ वसे अवस सुतंत्र, कहु मिटहि नहि कलपंत्र[13]।
सिस[14] मरे छह श्राप, पुन प्र थम जन्म ही पाप ॥३६९
भई देवकी निझ भांन,[15] आपन्नसत्वा[16] आंन।
सप्तमहु गर्भ संपेख, सो आय स्थिती[17] भये सेख[18] ॥४००
जब जोगनिंद्रा[19] जाहि, आकर्ष[20] कीने आय।
गहि रोहिनी के गर्भ, वॅह जाय मेल्यौ अर्भ ॥४०१
कहि चले जन[21] सब कोय, हृथ[22] देवकी गृभ[23] होय।
जान्यौ न ताकौं जात, इह भयौ कहा ऊतपात ॥४०२
सुन कंस वानी सोर, ऊर भयौ विस्मय और।
अरू आठमें प्रभ आय, श्रीक्रस्न आप समाय ॥४०३

१ पुत्र। २ उत्पन्न। ३ मोक्ष। ४ कानों से। ५ मर्यादा। ६ उत्पात। ७ आज्ञा।
८ भागकर। ९ नष्ट। १० शाप। ११ ब्रह्मा। १२ नक्षत्र। १३ कल्पांत।
१४ शिशु। १५ भवन। १६ गर्भवती। १७ स्थित। १८ शेष=अनंत। १९ योगनिद्रा।
२० निकाला। २१ लोगों में। २२ नष्ट। २३ गर्भ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सोई निगुन[1] ब्रह्म स्वरूप, भये सगुन जांनहु भूप ।
कही व्यास ऐसी कथ्थ, सोई सुनी भूप समथ्थ[2] ।।४०४
बिध-जुक्त पूछी बात, सुर अवतरे हरी साथ ।
किह अंस इंहाँ भये कौन, तुम कहहु संख्या तौन ।।४०५
वाले सु व्यास विचार, नृप सुनहु इह निरधार ।
सुर-असुर जनमे साथ, खल साधु जाँनहु ख्यात[3] ।।४०६
वसुदेव क्षत्री विचार, इह कस्यपा[4] अवतार ।
अदिती सु देवकी आप, सो भई दिती वस श्राप ।।४०७
बलदेव सेख[5] बलिष्ट, जे भ्रात हरी[6] के जेष्ट ।
नारायनाय[7] सुनाँम, श्रीक्रस्न[8] भये घनस्याँम ।।४०८
अर्जुन हु नर अवतार, धृम जुधष्टर[9] निरधार ।
अरू भीम मारूत[10] अंस, पुन भुजा बल परसंस[11] ।।४०९
दुइ नकुल अरू सहदेव, सुखंद[12] लखहु समेव ।
भये कर्न[13] अंस जु भाँन,[14] ऊद्दीर्न[15] बल अप्रमान[16] ।।४१०
जम अंस विदुर जनाय, गुन नीयत कुसल गनाय ।
गरू[17] द्रोन भयेऊ गरिष्ट, सिव[18] अस्वथाँमा श्रेष्ट ।।४११
साँतनु[19] समुद्रहु सोय, जिह गंग त्रीय भई जोय ।
गंधर्व पति गुन ग्राँम निभ्भ चित्ररथ तिह नाँम ।।४१२
वसू[20] भस्मि[21] भये बलवाँन, वैराट[22] पवन[23] बखान ।
नेमी-अरिष्ट[24] सु नाँम, सोई दनुज जित संग्राँम ।।४१३
हुव ताहिं अंगज[25] हंस, वँह भयेऊ ताकै अंस ।
क्रतवर्म क्रप धर काय; सोऊ पवन अंस सिवाय ।।४१४
नृप सुजोधन[26] निरधार, इहाँ कलू कौ अवतार ।
सकुनी सु बर्चंहु[27] सोय, जादव हु जैसे जोय ।।४१५
प्रद्युम्न[28] बीर प्रसंस, उपजे सु अग्न ही अंस ।
निभ्भ तन सिखंडी नाँम, कऊमार-समत[29] सकाँम ।।४१६

---

१ निर्गुण । २ समर्थ । ३ ख्याति । ४ कश्यप । ५ शेष । ६ कृष्ण । ७ नारायण । ८ धर्म । ९ युधिष्ठिर । १० वायु । ११ प्रशंसित । १२ अश्विनी कुमार । १३ कर्ण । १४ सूर्य । १५ उदार । १६ अप्रमाण । १७ बृहस्पति । १८ रुद्र । १९ शांतनु । २० वसु । २१ भीष्म । २२ विराट । २३ मरुत । २४ अरिष्टनेमि । २५ पुत्र । २६ दुर्योधन । २७ द्वापर । २८ धृष्टद्युम्न । २९ सनत्कुमार

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नृप द्रुपद लेहु निहार, इह वरुन[1] कौ अवतार।
अरू द्रुपदजा अनुरेह, इंदरा[2] जांनहु येह ॥४१७
सुत पाँच द्रोपदी सोय, हितु बिस्वदेवो[3] होय।
कुंन्ती सु सिद्धी[4] काय, माद्री सु धृती[5] महमाय ॥४१८
गंधारजा मती[6] गूढ, विधी-जुक्त पतिवृत व्यूढ।
श्रीक्रस्न तीयहु सुवेस, वारांगना सु बिसेस ।४१६
अरू दुष्ट केतक आंन, भये असुर अंस भयांन।
सिसपाल[7] आद बिसेस, भये हिरनकस्यप[8] भेस ।४२०
अरू जरासंध अभीत, इह विप्र-चित्त[9] अनीत।
पुन साल्व[10] भये प्रहलाद, अरू धृष्ट-ध्वज[11] अनु-आद[12] ॥४२१
पुन कालनेमी पेख, केसी हु आदक केक।
भगदंत भेस भयाँन, अवतरे बास्कल आंन ॥४२२
हयग्रींव दानव हृष्ट, अघ पूर गनहू अरिष्ट।
ये गनहु याही अंस, बढ दाँनवन के वंस ॥४२३
अरू लंब और प्रलंब, खर धेनु[13] पातक खंभ।
बाराह अत बल वंड, चानूर[14] मुख कर चंड ॥४२४
कुवलया[15] पीड़ कितेक, बपु दुरद[16] पुष्ट बिसेख।
दनु[17] बकासुर अत दूष्ट, अस्वत्थथाँमा इष्ट ॥४२५
बल-सुता[18] उपजी वांम, निज पूतना जिह नाँम।
इह दनुज[19] अंस[20] अभंग, सब भये परगट[21] संग ॥४२६
विध देव गये वयकुंठ[22], अचला[23] हु साथेहु ऊठ।
जब करी बिनती जाय, श्री रमापत[24] रसाय ॥४२७
वरदाँन ह्वै तय वार, सित[25] क्रस्न[26] रंग सु धार।
श्रीक्रस्न भये तन स्यांम, रंग गौर सोई बलराम ॥४२८
पुन क्रस्न[27] जन्म प्रसंग, ऊत्तपत्त पालन अंग।
सब सुनहु श्रोता आंन[28], वर व्यास कीय व्याख्यांन[29] ॥४२६

---

१ वरुण। २ लक्ष्मी। ३ विश्वेदेवा। ४ सिद्धि। ५ धृति। ६ मति। ७ शिशुपाल। ८ हिरण्यकशिपु। ६ विप्रचित्ति। १० शल्य। ११ धृष्टकेतु। १२ मनुह्लाद। १३ धेनुक। १४ चाणूर। १५ कुवलय नामक कंस का हाथी। १६ अरिष्ट। १७ दैत्य। १८ बलि की पुत्री। १६ दैत्य। २० अंश। २१ प्रकट। २२ वैकुंठ। २३ पृथ्वी। २४ विष्णु। २५ श्वेत। २६ काला। २७ कृष्ण। २८ कानों। २६ बखान, वर्णन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुत देवकी के सोय, जिह कंस मारे जोय।
बलराँम कौं गृभ[1] बीच, खल भीत[2] सौं लीय खींच ॥४३०
जब जोग-निंद्रा[3] जाय, रोहिनी गर्भ रचाय।
अव क्रस्न गृभ ऊत्तपत्त, सोई ऊदर देवकी सत्त ॥४३१
गृह नंद गोकुल गाँम, नारी सु जसुमत नाँम।
देवकी वचन सु दीन, इह ईस कै आधीन ॥४३२
तुव पुत्र ह्वै तो ताहि वँहाँ मोहि सौंपहु[4] आय।
पुन पालकै जुत पेम[5], तुम गेवगी हम तेम ॥४३३
जीय जोगमाया[6] जाँन, वँह ऊदर थित भई आँन।
गत देवकी भई ग्रेह, अब सुनहु प्रवृत[7] येह ॥४३४
आकासवाँनी[8] आद, सुन कंस भये सविषाद।
हीय अष्टमौ गृभ हेर, बहु जतन कीय तिह बेर ॥४३५
देवकी पग[9] वसुदेव, बेरी[10] सु ड़ार सभेव।
गृह देख कारागार, विन लाग ताही वार ॥४३६
बैठाय दीने बीच, मन समुझ कारक मोच[11]।
पहरूआ[12] आसुर पास, खल जाँन अपने खास[13] ॥४३७
मेले सु चहुधाँ मग्ग, आयुधन झेल ऊदग्ग।
मिल हाक मारत मूढ, गीत नहिन जाँनत गूढ ॥४३८
दिन रैन[14] बहुधा दुष्ट, पुन फिरत पापी पुष्ट।
सभ दिवस रहे केऊ सेस[15], सुर आद आय सुरेस[16] ॥४३९
कीय वर्नना[17] श्रीक्रस्न, पुन चले सोऊ ह्वै प्रस्न[18]।
दस मास गयेऊ दुरंत[19], अब भयौ दुख कौ अंत ॥४४०
मिस-प्रोष्ट-पद[20] लग मास, अष्टमी छुंद ऊजास[21]।
ब्राँह्मी[22] नछत्र[23] बिसेस, सुभ घरी वरतत सेस ॥४४१
देवकी बोली देख, वसुदेव वात विवेक।
अब प्रसव[24] वेला आय, रूख दूर जाय रहाय ॥४४२

१ गर्भ। २ भय। ३ योगनिद्रा। ४ सौंप देना। ५ प्रेम। ६ योगमाया। ७ वृतांत। ८ आकाशवाणी। ९ पैर। १० बेड़ी। ११ मृत्यु। १२ पहरेदार। १३ विशेष। १४ रात्रि। १५ शेष। १६ इन्द्र। १७ स्तुति। १८ प्रसन्न। १९ कठिन, कष्ट के। २० भादों का कृष्ण पक्ष। २१ उजाला। २२ रोहिणी। २३ नक्षत्र। २४ बच्चा होने का।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुख फेर रहि गहि मूंन[1], धर कांपकै सिर धून।
द्रुत[2] दूर गये वसुदेव, भाँमनी[3] लखकै भेव ॥४४३

ऊतपंन्न[4] भयेऊ अनूप, श्री क्रश्न[5] स्याँम सरूप[6]।
मुख देख बोली मात, तुम प्रसव आवहु तात ॥४४४

इह वचै करहु ऊपाय, जसुदाह[7] सौं पहुचाय।
कीय जाहि हमसौं कौल[8], बिध[9] नीत-रीत सु बोल ॥४४५

वचै सु जीवत बाल, लख लैहगी सुख लाल।
वसुदेव कहि तव वात, सुन देवकी सिसु[10] मात ॥४४६

परचरी[11] घेर प्रचंड, झिल रहे झुंडन-झुंड।
केऊ खड्ग लीनै क्रूर, गहि भिंडपाल[12] गरूर ॥४४७

केऊ सर कोड़ंड[13], द्रढ दंड लहै भुजडंड।
फरसा, सु धारै फेर, घनसूल[14] लीनै घेर ॥४४८

करपालका[15] धर केक, धर परघ[16] धारै, छ्वेक।
धर सबंला[17] गहि धूप, सब दुष्ट काल सरूप[18] ॥४४९

फिर रहे सोई चहु फेर, अवसर्प[19] बीच अघेर[20]।
गृह बीच चावहि[21] गौंन[22], पंछी न पावहि पौंन[23] ॥४५०

पुन लहै नांहि परेख, इहाँ आय चीटी येक।
कीय द्वार बंध कपाट, थित रहे आटन थाट ॥४५१

पहराय वेरी[24] पाय, बहु कष्ट-दुष्ट बसाय।
बसुदेव बोले बांन[25], सोई देवकी सुन स्रांन ॥४५२

भई सुस्क-तरू[26] दल[27] भेस, ऊर कष्ट आय अंदेस।
जब भई अवसर जांन, आकासवांनी आंन ॥४५३

सब सुनी दंपत[28] सोय, होय अभय हरखत होय।
इही कही कथ्थ[29] ऊचार, कढ जाहु खोल किवार[30] ॥४५४

१ मौन। २ शीघ्र। ३ स्त्री। ४ उत्पन्न। ५ कृष्ण। ६ स्वरूप। ७ यशोदा। ८ प्रतिज्ञा। ९ विधि। १० शिशु। ११ पहरेदार। १२ भाला। १३ धनुष। १४ त्रिशूल। १५ छुरी। १६ लुहानी, वरछी। १७ गुर्ज। १८ स्वरूप। १९ संदेश वाहक। २० अँधेरा। २१ चाहें। २२ गमन जांना। २३ पवन। २४ बेड़ी। २५ वाणी। २६ सूखे वृक्ष। २७ पत्ता। २८ पति, पत्नि-वसुदेव-देवकी। २९ कथा, वाणी। ३० किवाड़।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पर सबही पातक-पीन,[1] लखहौ प्रमीला[2] लीन।
श्रीक्रस्न जसुमत[3] सूँप[4], इह ग्रेह श्राप श्रनूँप ॥४५५
वस रहहु निर्भय वास, ऊर भरहु नहिन् ऊसास[5]।
इह सुनत वाँनि[6] ऊचार, बेरी[7] झरी तिह बार ॥४५६
लीय माँग देवको लाल, वसुदेव चित्त वहाल[8]।
गवने सु तज निझ[9] ग्रेह, लालहु[10] ऊछंग[11] ही लेह ॥४५७
खुल ग्ररर[12] पाये खेम, जब बढे श्रग्रहु[13] जेम।
सब लखे दनुज सबेस[14], श्रनचेत जुक्त श्रसेस ॥४५८
वसुदेव लीनी वाट[15], श्रतवेग सहित ऊचाट।
जमुना सु तट लीय जाय, पर ठयौ जल में पाय[16] ॥४५९
बढ जाँनु[17] वक्षन वार[18], नही परचौ ऊद्धं निहार।
जब पार ऊतरे जाय, हीय हरख[19] मन हुलसाय ॥४६०
गही गली-गोकुल-गाँम, त्वर[20] जाय पहुंचे ताँम।
तब भगवती श्रवतार, वर ऊपज ताही वार[21] ॥१६१
बन जोग माया[22] वीय[23], कुटहारका[24] कमनीय।
लै सुता जसुमत[25] लाय, वसुदेव हाथ वसाय ॥४६२
ब्रजनाथ[26] कौं तिह बार, निझ हाथ लीय निरधार।
जसुमतहि श्रागं जाय, कमनीय सयन कराय ॥४६३
दत किन्यका[27] वसुदेव, देवकी दीनी देव।
जाँनी न काहूँ जाँन, इह ईस सिध श्रवसाँन ॥४६४
किन्या सू रोदन कीन, पहरुवा पापी-पीन।
जब कंस कौं कहि जाय, श्ररी[28] ऊठचौ श्रत-श्रकुलाय ॥४६५
गृह-सूतका कीय गौंन, जनम्यौ सु श्रंगज[29] जाँन।
गृह बंध श्ररर[30] गरिष्ट, द्रुत देख बोल्यौ दुष्ट ॥४६६
वसुदेव लावहु बाल, कर देहु हम ततकाल।
सुन कस वाँनी सोर, दीय कंन्यका लीय दौर ॥४६७

१ पा २ निद्रा। ३ यशोदा। ४ सौंपकर। ५ दुःख से ऊर्धस्वाँस। ६ वाणी ७ बेड़ी। ८ स्वस्थ। ९ निज, अपने। १० शिशु कृष्ण। ११ उत्साह। १२ किवाड़। १३ आगे। १४ निद्रामग्न। १५ मार्ग। १६ पैर। १७ घोंटू। १८ पानी। १९ हर्ष। २० शीघ्र। २१ समय। २२ योगमाया। २३ वही। २४ सेविका। २५ यशोदा। २६ कृष्ण। २७ कन्या। २८ वैरी। २९ पुत्र। ३० किवाड़।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

झटकी[1] सुमन मुरझाँन, पटको सु सीस पखाँन।
कटकी[2] सु विद्दुत[3] कीन, छुटकी[4] सु नभ गई वीन ॥४६८
भटकी[5] सु आग भयाँन, हटको न पाई हाँन।
कछु भयौ बिसमत[6] कंस, धर धीर कै मति ध्वंस ॥४६९
जब जोगमाया[7] जास, बोली सुवाक विलास।
मतिमंद मोकह[8] मार, नही कुसल तोहि निहार ॥४७०
तन कदन-करता[9] तोर, अवतरेऊ ठौरहि और।
जिह मारहै कँहु जोय, तव कुसल जाँनहु तोहि ॥४७१
कहि वचन कर करतूत[10], वँह चालगइय[11] अभूत।
जब कंस जीय में जाँन, हम करी दंपत[12] हाँन ॥४७२
पुन देवकी गये पास, वसुदेव दै विसवास।
निझ भवन गवनौ नीच, बैठ्यौ सु दुष्टन बीच ॥४७३
बक मिले केसी बछ्छ, रहि धेनुकासुर रछ्छ[13]।
पूतना बैठी पास, अत होय चित्त ऊदास ॥४७४
हित कंस समझहु हीय, क्रम[14] है इहै करनीय[15]।
दिस विदिस जावहै दौर, मारै सु बाल[16] मरोर ॥४७५
केऊ गये किस दिस क्रूर, पूतना पापनी[17] पूर।
गवनी सु गोकुल गाँम, मध[18] करे जाय मुकाँम ॥४७६
सिसु[19] हथन काज सलाह, ऊर करत इह अवगाह।
जनम्यौ सु अंगज[20] जाँन, ग्रह नंद मंगल-गाँन[21] ॥४७७
सु सुनी कंस सपष्ट, कछु ऊपज[22] हीय में कष्ट।
वसुदेव मित्त[23] विचार, संदेह सोक सुमार[24] ॥४७८
बँह बात कर कर याद, बढ कंस ऊवर बिषाद।
नारद्द[25] कहीय निहार, इह गोप सुर-अवतार[26] ॥४७९

---

१ झड़क दी। २ कड़की। ३ बिजली। ४ छूट गई। ५ भड़क उठी। ६ आश्चर्य चकित। ७ योगमाया। ८ मुझे। ९ मारने वाला। १० चमत्कार। ११ चली गई। १२ दंपती, वासुदेव-देवकी। १३ राक्षस। १४ कर्म। १५ करने योग्य। १६ बालकों को। १७ पापिन। १८ मध्य, बीच में। १९ शिशु। २० पुत्र। २१ मंगल-गीत। २२ उत्पन्न। २३ मित्र। २४ विचार कर। २५ नारद। २६ देवावतार।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हीय कंस निश्चय होय, सुत-नंद[1] वैरी सोय[2]।
कर कंस क्रोध करूर, जोय रूठ ऊठ जरूर ॥४८०
बोले बकासुर बीर, धर धेनुकासुर धोर।
बछछाहु सुरस विषाद, अरू प्रलंबासुर आद ॥४८१
कहि दाँनवन सौं कंस, वसुदेव ऊपजे वंस।
नही नंद के इह नंद[3], ऊर लखहुं मोहि अरंद[4] ॥४८२
जिह तिह ऊपाय सु जाय, तुम करहु प्रसमन[5] ताहि।
जब सुनी दुष्टन जाल[6], कर धाव दाव कराल ॥४८३
नित फिरत रहत सु नीच, बढ सीम[7] गोकुल बीच।
पुन करत सिसु[8] पय[9] पाँन[10], पूतना सोख्यौ[11] प्रांन ॥४८४
वपु[12] पुष्ट भये बलराँम, श्री क्रस्न सुंदर स्याँम।
सिसु भये पुष्ट सरीर, बछरा[13] चरावत बीर ॥४८५
मिल बकासुर कौं मार, वपु वछ्छ रछ्छ[14] विड़ार।
धेनुक मिलायौ धूर, परलंब पापी पूर ॥४८६
परबत[15] ऊठायौ पाँन[16], इह आद परचय आँन[17]।
सु सुनी कंस सभीत, पर[18] बढ़ी होय परतीत[19] ॥४८७
अरू मरन केसी येह, ऊर सोक ग्रस्त अछेह।
कर ब्याज[20] सौं करतूत, धनु ज्याग[21] कीनौं धूत[22] ॥४८८
बिहूं क्रस्न अरू बलराँम, क्रतु हित बुलावन काँम।
सिंदन[23] सुधार सवार, अक्रूर भेज अगार ॥४८९
संग जाय लायेऊ सोय, आये सु निर्भय होय।
सोइ स्याँम गोर सरीर, बिच जज्ञ आये बीर ॥४९०
अत कंस कीय ऊतपात, घनस्याँम ऊपर घात।
कुवलया पीड़क केक, पेल्यौ सु कुंजर[24] पेख ॥४९१

---

१ नंद का पुत्र। २ वही। ३ पुत्र। ४ मुख्य वैरी। ५ मारो। ६ कपट, षड्यन्त्र। ७ सीमा। ८ शिशु। ९ दूध। १० पीना, स्तनपान। ११ सोख लिया। १२ शरीर। १३ बछड़े। १४ राक्षस। १५ पर्वत। १६ हाथों पर। १७ अन्य। १८ वैरी। १९ विश्वास। २० कपट। २१ यज्ञ। २२ धूर्त्त। २३ रथ। २४ हाथी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वँह हन्यौ दंत ऊखार, चाँनूर[1] दयेऊ' पछार।
मारे सु श्रावक मुष्ट. द्रढ हाथ गहि गहि दुष्ट ॥४६२
तोरयौ सु धनुष तुरंत, ग्ररू कंस कीनौ अंत।
पितु मात दुख्खत[2] पेख, बंधनहु काट बिसेख ॥४६३
उग्रसेन बैभव ग्रप्प[3], थिर राजगादी[4] थप्प[5]।
बसुदेव ग्रह गये वीर, सुभ स्यांम गौर सरोर ॥४६४
सुत रांम[6] क्रस्न सुभाय, मिल देवकी निझ[7] माय।
सुत देख आँनन[8] सोय, हीय लाय हरखत[9] होय ॥४६५
बसुदेव करेऊ बसाय, जग्योपवीत सु जाहि।
कीय ग्रौर हू सुभकार[10], बिध-जुक्ति[11] कुल विवहार[12] ॥४६६
कासी सु गवन ही कीन, पढ भये ग्रत परबीन[13]।
वय[14] भयेऊ द्वादस वर्ष, क्रम[15] छत्रि-घ्रम[16] ऊतकर्ष ॥४६७
नृप जरासंध निदाँन, जामातु-हंता[17] जाँन।
ग्रछोहनी[18] दल ग्राय, तेईस संख्या ताहि ॥४६८
जिह कीय भयानक जुद्ध, ग्ररी दाव कर कर ऊद्ध।
इहाँ रांम[19] क्रस्न[20] ग्रभंग, जीत्यौ न कोऊ जंग ॥४६९
विढ[21] सोय सत्रह वार, हट गयौ फिर फिर हार।
पुन कालजवन पठाय, ग्रायौ सोई ग्रकुलाय ॥५००
मुनि स्राप सौं मुरझाय[22], जदुवसीयन कोऊ जाय।
नही जुद्ध दीनी नीम[23], सब हार रहे बल-सीम[24] ॥५०१
जब क्रस्न जीय में जाँन, थित छोर मथुरा थाँन।
गये द्वारका रच ग्रेह, छित-विरज[25] सौं कर छेह ॥५०२
वस रहे सुवस वसाव, पुरी दुवारका[26] सुख पाय।
थिर करे जन सब थाप, ग्राये सु मथुरा ग्राप ॥५०३
जहाँ कालजवन ही जाय, द्रग ग्राय रूप दिखाय।
ग्रागै सु भागे ग्राप, पर लग्यौ पाछै पाप[27] ॥५०४

---

१ चाणूर मल्ल। २ दुःखी। ३ ग्रर्पण कर। ४ राजगद्दी। ५ स्थापित कर। ६ बलराम। ७ निज, ग्रपना। ८ मुख। ९ हर्षित। १० शुभकार्य। ११ विधियुक्त। १२ व्यवहार। १३ प्रवीण। १४ ग्रायु। १५ कर्म। १६ क्षत्रिय-धर्म। १७ दामाद का मारने वाला। १८ ग्रक्षौहिणी। १९ बलराम। २० कृष्ण। २१ भिडकर। २२ उदास होकर। २३ बुनियाद, प्रारम्भ। २४ ग्रत्यंत बली। २५ व्रज-भूमि। २६ द्वारिका। २७ पापी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पत अवधपुर सुख पाय, मुचकंद सूतौ[1] माँहि।
जिह किंदरा[2] जीय जाँन, पहुंचे सु सारंगपाँन[3] ॥५०५
वँहाँ जाय दीयेऊ ऊढाय, तन पीत-अंबर[4] ताहि।
धुर भये अंतरध्याँन, जहाँ जवन[5] पहूच्यौ जाँन ॥५०६
बृजनाथ[6] जाँन बलिष्ट, तिह लात मारी तिष्ट।
लख रिष्ट द्रष्ट नरिंद, वँह नष्ट भयऊ अंरिंद ॥५०७
हरी काज अपनौं हेर[7], वपु प्रगट ह्वै तिह वेर।
गिरधरन देव गोविंद, कीय वर्नना[8] मुचकुंद ॥५०८
द्वारावती निझ्र द्रंग[9], सुझ्र वास कीय सुख संग।
सिसपाल रुकमनी साथ, वसुदेव-सुत सुन वात ॥५०९
इतनै हु अंतर आय, पातीहु रुकमनी पाय।
जब क्रस्न जहवाँ[10] जाय, कंन्या हरी[11] बलकाय ॥५१०
बिध-जुक्त[12] कीनेऊ व्याह, दीय चेदपति[13] ऊर दाह।
अरू जामवंती आँन, पुन करेऊ पीड़न-पाँन[14] ॥५११
वर सत्यभाँमा वाँम, सुभ करेऊ व्याह सकाँम।
निज मित्र-विंदा नार, ब्याही सु ताहि विचार ॥५१२
लछमना भद्रा लाय, परने[15] सु तिह सुख पाय।
अरू नग्नजिती अभिराँम, भज व्याह जाहि सुभाँम ॥५१३
ए पट्टराँनी[16] अष्ट[17], श्री क्रस्न ग्रेह सपष्ट।
प्रदुम्न[18] रुकमनी पूत, अवतार काँम[19] अभूत ॥५१४
कीय पुत्र जातिक-कर्म[20], ध्रुव रीत सौं निज धर्म।
पुन कहू अवसर पाय, इहाँ सबरासुर आय ॥५१५
जोई भूतका-गृह जाय, सिसु[21] लै गयो सरसाय।
इह क्रस्न सुन अकुलाय, मन याद कीय महमाय ॥५१६
देवी सु दरसन[22] दिंन्न[23], श्रीक्रस्न हुय सु प्रसंन्न[24]।
कीय स्तुति देवीय केर, बृजनाथ[25] हू जिह वेर ॥५१७

१ सोया हुआ। २ गुफा। ३ कृष्ण। ४ पीला वस्त्र। ५ कालयवन। ६ कृष्ण। ७ देखकर। ८ स्तुति। ९ नगर। १० जहाँ। ११ हरण की। १२ विधियुक्त। १३ शिशुपाल। १४ विवाह किया। १५ विवाह। १६ पटरानी। १७ आठ। १८ प्रद्युम्न। १९ कामदेव। २० जातककर्म-संस्कार। २१ शिशु। २२ दर्शन। २३ दिये। २४ प्रसन्न। २५ कृष्ण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बृजनाथ पूछी बात, घट भई सुत कहा घात।
प्रदुमन्न हुय ऊतपंन्न[1], छित भयौ कहाँ अप्रछंन्न[2] ॥५१८

सुन अंबका निज आँन, सुत रावरौ सुखदाँन।
मत करहु सोच मुरार, वँह काँम कौ अवतार ॥५१६

हर संवरासुर हाथ, सो लेंगयौ निज साथ।
सब रीत कुसल सुभाय, सो सुता हित सरसाय ॥५२०

मायावती पति माँन, इह कीयौ तिह अवसाँन।
सोइ अब्द सोरह संग, वँह करहि व्याह अनंग ॥५२१

पहुचाय है तुम पास, ऊर नहिन होहु ऊदास।
सुख पाय सुनीय सु बात, हीय क्रस्न कीय हरखात ॥५२२

कर इही रीत कहाय, मघ-लोक गइ महमाय।
गोंबिद पुलकत गात, महमाय कीय जगमात ॥५२३

नृप कहीय ब्यास निदाँन, इहां क्रस्न भये अनजाँन।
इह ईस सुनीयत आव[3], सो बने क्यौं सविषाद ॥५२४

सो करहु मेट संदेह: गति गूढ मति के गेह।
श्री सुनीय व्यास सुजाँन[4], नृप कहीय बात निदाँन ॥५२५

ईस्वरी माया आद, जो प्रबल जाँनहु ज्याद[5]।
सोई वीच इह संसार, नही मोह करत निहार ॥५२६

इह माँनुखो[6] तन[7] आय, बढ तीन गुन[8] विलगाय[9]।
सुर आद असुराराद, सब मोह वस सविषाद ॥५२७

जुत सुधा त्रस्नाँ[10] जाँन, निंद्रा सु भयहु निदाँन।
है सोक संसय[11] हर्ष, अभिमाँन मद ऊतकर्ष ॥५२८

अरु वृद्धता अज्ञाँन, इम मरनहू अनुँमाँन।
अंसुया[12] म्लाँनी ओर, अप्रीत प्रीत अथोर ॥५२९

---

१ उत्पन्न। २ अदृष्ट। ३ आदि। ४ चतुर, ज्ञानी। ५ अधिक। ६ मनुष्य का। ७ शरीर। ८ गुण। ९ अलग-अलग हो जाते हैं। १० तृष्णा। ११ संशय। १२ असूया, निन्दा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ये होत ऊदय अनेक, सब जानीयै सविवेक।
अवतार राँम अनूप, भये अवधपुर के भूप ॥५३०

सीय हरन भयेऊ सुभाय, जहाँ मरन आद जटायु।
अंन्नेक[1] भये ऊतपात,[2] सब देह मानव साथ ॥५३१

सव पूच[3] और सुकर्म, परठे सु कारज पर्म।
श्रीकृस्नहू तन साथ, हित–काँम[4] कीने हाथ ॥५३२

सो सत्यभाँमा सीख, तीय वात राखी तीख[5]।
दुश्चवन[6] सौं कर द्वेख[7], लीय पारजातहु[8] लेख ॥५३३

जीय जामवंती जाँन, सो पुत्र-हित सुखदाँन।
मन-वंचना[9] महाराज, करीयै सु पूरन काज ॥५३४

सुन चले पर्वत सीस[10], गहि ऊवर हित गवरीस[11]।
कीय मंत्र ग्रहन सकाँम, नित जपत सिव के नाम ॥५३५

करने लगे तप काय, खिर[12] पेर वनफल खाय।
इक मास बीत्यौ येम, जलपान दूसर जेम ॥५३६

तीसरे मासहू तौन, पुन करेऊ भक्षन पौंन[13]।
अंगुष्ठ[14] पाव अड़ोल, तन रहे तार्प तोल ॥५३७

छह मास कीय सुत छाह, तप सिभु हेत अथाह।
सब संग लै सुरगीय[15], द्रुत आय दरसन[16] दीय ॥५३८

कीय ऊगृ तप तुम कृस्न[17], पै भये हम वहु[18] प्रस्न[19]।
ज्यूं मनोवंचत[20] जाँन, वंह लोजीयै वरदाँन ॥५३९

पदवंद[21] कृस्न प्रवीन, कर जोर विनती कीन।
धुर मूल गृही धर्म, करनीय[22] कारक कर्म ॥५४०

स्त्री प्रथम जात सुभाव, चित आपने हित चाव।
ईरखा[23] सौतन[24] आद, वस रहत वाद विखाद ॥५४१

---

१ अनेक। २ उत्पात। ३ नीच। ४ हित-कार्य। ५ तीक्ष्ण, तीखी। ६ इन्द्र। ७ द्वेष। ८ कल्पवृक्ष। ९ इच्छा। १० शिखर। ११ महादेव। १२ मड़क कर-गिरे हुए। १३ पवन। १४ अंगूठा। १५ देवता। १६ दर्शन। ७ कृष्ण। १८ बहुत। १९ प्रसन्न। २० मनोवाञ्छित। २१ चरणों की वंदना। २२ करने-योग्य। २३ ईर्ष्या। २४ सौतों, सपत्नियों।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हम रहे व्याकुल होय, गृह-काज में चित गोय।
भय[1] रुखमनी[2] वस भाग, वह करत सुत अनुराग ॥५४२

जिह जांमवंती जोय[3], मन बिकल इंह कहि मोहि।
सुत होय मोहि सुहाय, इह करहु सीघ्र[4] ऊपाय ॥५४३

अब कीयौ तप हित आप, जज[5] आपही कौ जाप।
मन मुवत[6] होय महेस[7], बरदांन दीयेऊ बिसेस ॥५४४

निज गनहु इक इक नार, दस दस हु पुत्र दवार।
अब होयगे ऊतपात, मम वाच सुनहु महात[8] ॥५४५

सुन गवर[9] बोली संग, धर ध्यांन सिव अरधंग[10]।
परवार बाढहि पूर, जदुवंसीयनहु जरूर ॥५४६

सत वरख[11] पाछे सोय, हथ[12] स्राप विप्रन होय।
पश्चात कर कुल प्यार, नहि सोक करहु निहार ॥५४७

निज लोक आवहु नाथ, भज रूप निज जुग भ्रात।
कहि गये सिव कयलास[13], ऊर क्रस्न पुज्जीय[14] आस ॥५४८

गवने सु हरि निज गेह, लीय द्वारका वर नेह।
माया सु वस जग मोह, हित रहे पर-वस होय ॥५४९

सोइ रचत इह संसार, विसमता रहित विकार।
सोइ पूर्व जन्म प्रसंग, सुख देख देही संग ॥५५०

सब देत जीवन साथ, है निमत न्याय स्वहाथ।
जुत प्रेरना नित जीव, संसार रचत सदीव ॥५५१

ऊतपत्त पालन आद, मिल अंतलौं मरजाद।
बृहमाद[15] देव विसेस, ऊर गनहु नहिन अंदेश[16] ॥५५२

आधीन माया येह, द्रग लखहु धारें देह।
सो नाहि गनहु सुतंत्र,[17] परीयाय[18] सौं परतंत्र ॥५५३

---

१ होकर। २ रुक्मिणी। ३ देखकर। ४ शीघ्र। ५ यज्ञ। ६ मुदित। ७ महादेव। ८ महान् बड़े। ९ गौरी, पार्वती। १० अर्धांगिनी। ११ वर्ष। १२ नष्ट। १३ कैलाश। १४ पूर्ण हुई। १५ ब्रह्मादिक। १६ शंका। १७ स्वतंत्र। १८ परम्परा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भक्ती सुभाव हू भेव, सक्ती-पराश्रित[1] सेव[2]।
इतीहास वाचत येह, सोऊ सुनत सहित सनेह ॥५५४
लहि अंबका निज लोक, वस रहत होय विसोक।
सो कहीय व्यास सुभाय, सोइ कौरविंद्र सुनाय ॥५५५
इह सूत कहीय ऊदंत, सुन सौनकादिक संत।
भय क्रतारथ सुन भाव, भुवनेसुरी जुत भाव ॥५५६
हीय जांन हरखत होय, गुन कहै देवी गोय।
सुख लहै संपत सिद्ध, इतीहास इह अविरुद्ध ॥५५७

इती श्री चतुर्थ सकंध संपूर्ण

---

१ नित्य। २ सेवा करो, सेवन करो।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला
के
नवीनतम प्रकाशन

नाम	सम्पादक	मूल्य
१ बालशिक्षा-व्याकरण	मुनि जिनविजय	७-७५
२ नृत्यरत्नकोश भाग २	श्री आर. सी. परीक	६-७५
३ चान्द्र-व्याकरण	पं० बेचरदास जे. दोसी	७-९०
४ गोरा-बादिल-चरित्र	मुनि जिनविजय	४-००
५ हम्मीरमहाकाव्य	मुनि जिनविजय	१५-००
६ मुंहता नैणसी री ख्यात भाग ४	श्री बदरीप्रसाद साकरिया	८-७५
७ मधुमालती सचित्र कथा	डॉ० फतहसिंह	१८-७५
८ आगमरहस्य पूर्वार्द्ध	श्री गंगाधर द्विवेदी	१५-००
९ शकुनप्रदीप	डॉ० फतहसिंह	१-००
१० पाठ्यरत्नकोश	श्री गोपालनारायण बहुरा	३-७५
११ ए कैटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मैन्युस्क्रिप्ट्स, पार्ट III-B	मुनि जिनविजय	४८-७५
१२ नन्दोपाख्यान	डॉ० फतहसिंह	१-००
१३ राठौड़ां री वंशावली एवं राठौड़ वंश री विगत	डॉ० फतहसिंह	२-१५
१४ चण्डीशतक टीकाद्वयसहित	श्री गोपालनारायण बहुरा	५-२५
१५ कविकौस्तुभ	डॉ० फतहसिंह	२-००
१६ मीरां बृहत्पदावली प्रथम भाग	पुरोहित हरिनारायण	७-५०
१७ स्थूलिभद्रकाकादि	डॉ० आत्माराम जाजोदिया	१-७५
१८ राजस्थानी वीरगीत-संग्रह प्रथम भाग	श्री सौभाग्यसिंह शेखावत	६-५०
१९ गजगुणरूपकबन्ध	श्री सीताराम लालस	९-००
२० वैताल-पचीसी	डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया	३-५०
२१ राजस्थानी वीरगीत-संग्रह द्वितीय भाग	श्री सौभाग्यसिंह शेखावत	६-२५
२२ मारवाड़ रा परगनां री विगत प्रथम भाग	डॉ० नारायणसिंह भाटी	१५-५०
२३ देवीचरित, प्रथम भाग	श्री हुकमचन्द चतुर्वेदी	१३-२५
२४ राजनीति रा कवित्त	डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली	—

प्रतिष्ठान का त्रैमासिक मुखपत्र 'स्वाहा'

का प्रमुख आकर्षण

"सिंधुघाटी-सभ्यता में ब्राह्मणों और उपनिषदों के प्रतीक"

(धारावाहिक)

प्राप्ति स्थान

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर.

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy